खेड़ै-रपट

(क्षेत्रीय पुरावृत्त)

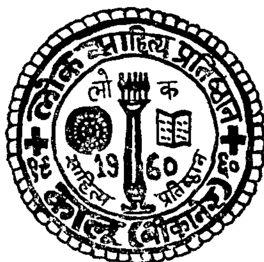
लेखक

सा० महो० नानूराम संस्कर्ता

सम्पादक

शिवराज संस्कर्ता

एम०ए० एल०एल०बी०



प्रकाशक

लोक साहित्य प्रतिष्ठान

कालू, बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक
लोक साहित्य प्रतिष्ठान, कालू
बीकानेर (राज०)

प्रथम संस्करण
26 जनवरी, 1984

पृष्ठ संख्या 592

मूल्य सौ रुपये

प्रूफ संशोधन
सा० महो० नाथूराम संस्कर्ता

मुद्रक
लाईट प्रेस 15 ए हाथीखाना, आजाद मार्किट, दिल्ली 110006

KHEDAI-RAPAT

(AREA HISTORY)

By

NANU RAM SANSKARTA

SAHAITYAMAHOPADHAYA

Edited by

SHIV RAJ SANSKARTA

M A LLB

Published by

Lok Sahaitya Prtisthan

KALU (Bikaner)

RAJASTHAN

Published by :
LOK SAHAITYA PRTISTHAN
Kalu (Bikaner) Rajasthan

First Edition
26 January 1984

Total Pages : 592

Price 100/ (One hundred)

Proops reading by
S M NANURAM SANSKARTA

Printed by :
LIGHT PRESS
Hathi Khana, Azad Market Delhi 110006

संसद सदस्य
(लोक सभा)



11A पण्डित पन्त मार्ग,
नई दिल्ली

दिनांक 15 11 1983

श्री सस्करताजी मां सरस्वती के वरद पुत्र हैं इनका सम्पूर्ण जीवन साहित्य और जन सेवा में लगा है। श्री सस्करता जी की 'खेड रपट" (अप्रछपी) पुस्तक देखने को मिली।

श्री सस्करता जी ने अपनी सांस्कृतिक मनस्विता एवं लगन पूर्ण कर्मठता से इस ग्रंथ को तैयार किया है।

ग्रंथ का सामाजिक प्रबंध ऐतिहासिक होते हुए भी पढ़ने में उपन्यास जैसा लगता है।

कालू का अत्यधिक विवरण लेखक की जन्म भूमि होने के कारण स्वाभाविक था।

इस विविध विषयक सद्ग्रंथ की रचना के लिए सस्करताजी लोक साधुवाद के पात्र हैं।

—कुम्भाराम आर्य



उप मंत्री
निर्माण और आवास,
भारत
Deputy Minister of
Works and Housing,
India
नई दिल्ली

सन्देश

दिसम्बर 16 1983

अपने दौरे के मुताबिक दिनांक 21 जून 1983 को मौजा कालू में हाजिर हुआ। वहां के लोग मेहमान की खिदमत के शौकीन मुझ से मिलने आये। उनमें राजस्थानी जुबान के मशहूर शायर श्री नानूराम संस्कर्ता भी मुझसे मिले। मैंने उनकी करीब छः सौ सफा (पेज) की एक खूबसूरत व ताजा हाथ से लिखी 'खेड रपट' देखी। जिसको पूरे पढ़ने का तो अवसर नहीं मिल सका लेकिन इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि गांवों में ऐसे "गुदड़ी के लाल" भी रहते हैं जो इन्सानियत के प्रतीक हैं और इस जमाने में भी ईमानदारी से पेश आते हैं। गाँवों की आबरू बनाये रखने में ऐसे काबिल आदमियों की जरूरत होती है। मुलाकात से मैं बहुत प्रसन्न हुआ। मालिक सस्करताजी को तन्दुरुस्त एवं सुखी रखे। समाज और साहित्य की सेवा के लिए दीर्घ आयु करे।

मोहम्मद उसमान आरिफ

Dr L M SINGHVI
Senior Advocate
Supreme Court of India,
2 8, South Extension Part II,
New Delhi 110049

श्री नानूराम सस्कर्ता राजस्थानी रा पुराणा कवि लिखार है इणारी कळायण म्हायी अर राजस्थानी लोक साहित्य जटी अनकू कृतिया है । गाव गिगरथ अर खेड रपट इया नूवी पोथ्यां छपाइ है जके वास्त म्हारी घणा मानसू बधाई है । रचनावा मोनू सुहणी अर मन भावणी है ।

डॉ० लक्ष्मी मल्ल सिघवी
11-10 83



नई दिल्ली

15-12 83

Indian Services Civil
& Administrative Parliament
एल० एन० गुप्ता

प्रिय श्री सस्कर्ता जी

मुझे प्रसन्नता है कि आप खेड रपट' के माध्यम से राजस्थान के बीकानेर लनकरनसर क्षेत्र का वृत्तात एक अनूठे ढग से प्रस्तुत कर रहे हैं। आपकी अन्य कृतियो के साथ यह एक नई कडी होगा । मुझे विश्वास है कि पाठक इस पुस्तक को न केवल पसन्द करेंगे, वह यह भी अनुमान लगा पायेंगे कि इसकी पृष्ठभूमि मे कितनी लगन, कितना परिश्रम एव कितना त्याग है। कितनी कठिन परिस्थितियो मे आपने साहित्य की सेवा की है, का मुझे थोडा ज्ञान है। अन्तकरण से आपको बधाइ एव शुभ कामनायें।

भवदीय
एल० एन० गुप्ता

श्री नानू राम सस्कर्ता

वक्तव्य

'खेडै रपट" कस्बे कालू का इतिवृत्यात्मक रिपाताज ग्र य है। यह आचलिक मस्कृति तथा पुरातन वता त के साथ वर्तमान चेतना का प्रगतिशील कदम कहा जा सकता है। क्योकि आवश्यक और यथेष्ट जानकारी देने वाले ग्रयों का अभी यहाँ अभाव चलता है। प्राचीनता से दबी सामग्री को प्रकाश मे लान का सही काय और सत्यावलोकन कडे श्रम तथा विघ्नो का जजाल जानकर एसे ग्रयो का सजन मुश्किल होता है। श्री नानूराम सस्कर्ता का मात्र एक स्थानीय अभिरुचि सकलन अपन परिश्रम म इस अभावपूर्ति का अद्वितीय उदाहरण हैं। इसम आपन, साहित्यिक चर्चा, राजनीतिक प्रश्न, सामाजिक उलझन, पुरातात्विक विवेचन आदि क्षेत्रीय विषया पर अपन मौलिक मत खास तौर स लिखे हैं जिन पर लोक मानस की अनुरक्ति बनती है।

खेड रपट" कालू (बीकानर) का सास्कृतिक व महिमावान ग्र य है। लकिन क्षेत्रीय खोज तो उनकी बडी यशस्कर जान पडती है। लेखक ने पर्याप्त लग्न एव अपने अनुपम श्रम का व्यय किया है जो किसी शोधार्थी तथा साहित्यकार का माग दशन होगा। सस्कर्ता के इस काय पर बीकानर मडल को गव है।

ग्रथ मे कालू, तहसील लूनकरनसर और जिला बीकानर के मध्यकालीन इतिहास प्राचीन सस्कृति राज्य व्यवस्था, वाणिज्य, व्यवसाय धर्मो और वतमान राजस्थान के सगठन तक क इतिहास का उल्लेख है। इसके अलावा लोक साहित्य एव सास्कृतिक प्रचलन का भी प्रकट किया गया है। लोक धम, लोक विश्वास, समाज एव रीति रिवाज आर्थिक कायकलाप, कला-कारीगरी तथा जानकारी और क्षेत्रीय सस्थाओ क विषय सबद्ध वणन भी स्थान स्थान पर दिये गय हैं। लेखक न तत्कालीन और अ य बाद की भी सामग्री शोधन मे सम्पूण काय करन का ध्यान रखा है। प्राचीन एव अर्वाचीन, धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक मा य प्रथाओ की लोक विश्वासी व्याख्या ऐतिहासिक सदभ म वर्णित की है। अत पुरातन पद टिप्पणिया क उपयोग से इसका महत्व बढ गया है।

श्री सस्कर्ता का यह श्रम साध्य काय वस्तुत श्लाघनीय है। मुझे अभिदप्ति है कि विद्वद्वर इस ग्र थ का समुचित आदर करेंगे।

नरोत्तमदास स्वामी

(ज माष्टमी 2036)
बीकानेर

(नरोत्तमदास स्वामी)

दो शब्द

पिछले कुछ दशकों से क्षेत्रीय इतिहास और संस्कृति विषयक ग्रन्थ लिखने और प्रकाशित करने की एक नई परम्परा प्रारम्भ हुई है जो उचित ही नहीं अत्यधिक वांछनीय भी है। इस प्रकार प्रदेशों के इतिहासों में पाये जाने वाले बड़े बड़े अन्तरालों को दूर कर उनका परिपूर्ण विवरण प्रस्तुत किया जा सकेगा। चूरू के श्री गोविन्द अग्रवाल कृत 'चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास' एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उसी क्रम में इधर राजस्थान के झुंझनू जिले पर भी ऐसा ही एक ग्रन्थ लिखा जा रहा है। भूतपूर्व जयपुर राज्य की तोरावाटी आदि विभिन्न इकाइयों पर भी ग्रन्थ रचे गये हैं।

यह प्रसन्नता की बात है कि बीकानेर जिले की एक तहसील लूनकरनसर के कालू ग्राम निवासी श्री नानूराम संस्कर्ता अपने खेड़ क्षेत्र के पुरातत्व, इतिहास व संस्कृति आदि पर अपनी "खेड़ रपट' तैयार कर रहे हैं। प्राचीन लिखित व विभिन्न प्रकार की अन्य आधार सामग्री का उपयोग कर प्राचीन से लेकर अर्वाचीन तक की उस क्षेत्र की गतिविधियों के साथ ही उस क्षेत्र विशेष के धार्मिक सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन का भी विवरण इस 'रपट' में प्रस्तुत किया जा रहा है। पिछले पांच वर्षों से लिखी जा रही यह 'खेड़ रपट" अपने आप में एक विशिष्ट कृति है जो भावी शोधार्थियों के लिए उपयोगी और लाभप्रद होगी।

आशा करता हूँ कि अन्य शोध कर्ता भी अपने अपने क्षेत्रों का ऐसा ही विवरण प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेंगे।

डा० रघुबीरसिंह
एम०ए०, डी० लिट०
सीतामऊ (मालवा)।

24 6 1982

Dr. Hiralal Maheshwari
M A L.L B D Phill D Litt
ASSOCIATE PROFESSOR
Department of Hindi,
UNIVERSITY OF RAJASTHAN
JAIPUR-302 004

Phone 64 125
B 174A, Rajendra Marg,
Bapunagar, Jaipur 302015
Date 27 12 83

प्राक्कथन

खेडे-रपट

खेडे रपट गाव काळू के वयोवद्ध सुप्रसिद्ध कवि लखक श्री नानूराम सस्कर्ता की कृति है जो बडी खोज और परिश्रमपूवक लिखी गई है। 'खेडा' शब्द सस्कृत के खेट' (खेड, खेडा) शब्द से निष्प न है जिसका तात्पय है—गाव, किसानो का निवास-स्थान या छोटा कस्बा आदि। इसके अतिरिक्त राजस्थानी म बोलचाल मे गाव के निकट के खेत को भी खेडा' कहते हैं। 'रपट' अग्रेजी के रिपोट' का प्रचलित रूप है जिसका मतलब है—वत्ता त, विवरण प्रतिवेदन आदि।

प्रस्तुत पुस्तक म गाव काळू (तहसील लूनकरनसर जिला बीकानेर राजस्थान) और उसके आसपास के क्षेत्र का अनेकविध भौगोलिक सामाजिक धार्मिक साहित्यिक और सास्कृतिक दष्टियो से—परिचय दिया गया है। साथ ही दो पथक अध्यायो म पास के लूनकरनसर क्षेत्र का भी सम्यक दिग्दशन कराया गया है। यह सब व्यक्तिगत जानकारी, खोज, प्रचलित परम्पराओ की छानबीन और पुराने कागज पत्रो के आधार पर किया गया है। इस सदभ म कतिपय ताम्रपत्रो और शिलालेखो का भी परिचय देते हुए, उनका आधार ग्रहण किया है। इस प्रकार, यह पुस्तक अत्य त प्रामाणिक है। एक प्रकार से इसको काळू लूनकरनसर अचल का एक छोटा मोटा गजेटियर कह सकते हैं। इसस लोक सस्कृति, साहित्य समाज और इतिहास विषयक अनक नई बातो का पता चलता है। गाँव काळू "कालिकाजी का खेडा कहलाता है और यह ग्रथ इस गाव का ता दपण ही है।

राजस्थान एक विस्तृत भूभाग है। इसके सकडो खडो मे न जाने कितनी और किस प्रकार की महत्वपूण सामग्री बिखरी पडी है। उस विरासत और वभव को उजागर करना और सजाना नितान्त आवश्यक है। इस दृष्टि से यह खेड रपट' एक अत्य त सराहनीय और अनुकरणीय प्रयास है और जिसके लिए लेखक बधाई का पात्र है।

दिनाक 27 12 83

हीरालाल माहेश्वरी
(एसासिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर)



जयपुर
राजस्थान

प्रो बी डी कल्ला,
राज्य मंत्री
पर्यटन कला एवं संस्कृति
पुरातत्व व उच्च शिक्षा

अ०शा०प० संख्या 1953/SMT/83

दिनांक 9 12 83

श्री नानूराम जी

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप द्वारा 'खेड़ रपट' नामक ग्रंथ के रूप में क्षेत्रीय इतिहास प्रकाशित किया गया है। मुझे विश्वास है कि इस ग्रंथ में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं सम्बन्धनीय क्षेत्र के इतिहास का सूक्ष्मतम परिचय प्राप्त होगा।

आप एक अच्छे प्रबुद्ध साहित्यकार हैं जिन्होंने अपने जीवन के लम्बे समय से राजस्थानी भाषा साहित्य के विकास के लिए निरन्तर सृजन कार्यों में समर्पित भावना से कार्य किया है तथा अपने इस कार्य में संलग्न हैं।

मैं "खेड़ रपट' की सफलता की मंगल कामना करता हूँ एवं आशा करता हूँ कि आप द्वारा सृजित साहित्य पाठकों को रुचिकर होगा।

—सधन्यवाद

सद्‌भावी,
बी० डी० कल्ला

लोक संस्कृति शोध संस्थान
नगरश्री चूरू

7 अगस्त, 1982

श्रीयुत नानूरामजी संस्कर्ता कालू (बीकानेर)

आपने चिकित्सकों की कड़ी मनाही के बाद भी एक मोटा ग्रंथ तैयार कर लिया सो बड़ी अच्छी बात है। आपकी पुस्तक लोकप्रियता प्राप्त करे यही कामना है।

भवदीय
गोविन्द अग्रवाल
नगरश्री चूरू

राजस्थान सरकार

जन सम्पर्क कार्यालय बीकानेर

क्रमांक 1092

जन सम्पर्क अधिकारी
बीकानेर
दिनांक 22 12 80

प्रिय श्री नानूरामजी,

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आप भौगोलिक ऐतिहासिक सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा औद्योगिक तथ्यों को समाहित करते हुए खेड़े रपट" का प्रकाशन कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि आपकी इस अमूल्य दृष्टि से जनमानस निश्चय ही लाभान्वित होगा।

इस कार्य में आपकी सफलता की कामना करता हूँ।

मनोहर चावला



श्रीमती कमला
शिक्षा एवं ऊर्जा मंत्री

जयपुर
राजस्थान

दिनांक 19 नवम्बर 1983

मैने राजस्थानी भाषा के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री नानूराम संस्कर्ता द्वारा द्वय भाषा में लिखित एक गांव पर आधारित 'खेड़े रपट' नामक पुस्तक पाई। इसमें चार पाठ राजस्थानी भाषा के, नौ हिन्दी के हैं। ये प्रकरण बड़े रोचक एवं सारपूर्ण हैं। उनकी दुर्बलावस्था में भी यह साहित्य सेवा अत्यन्त ही सराहनीय है। इस प्रकाशन के लिए मैं अपनी शुभ कामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

श्री नानूराम संस्कर्ता
पो० कालू तहसील लूनकरनसर
जिला बीकानेर

ह० श्रीमती कमला
शिक्षा एवं ऊर्जा मंत्री

श्री नानूराम संस्कर्ता लिखित पुस्तक 'खेड़े रपट" के लोक स्वीकृत और लोक प्रिय होने के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

नये साल की छपाई के लिए सधन्यवाद!

वर्ष नव हर्ष नव
छवि उत्कर्ष नव

4 जनवरी 1984

डॉ० हरवंशराय बच्चन
'सोपान' भवन
8 बी, गुल मोहर पार्क
नई दिल्ली

झाबरमल्ल शर्मा
इतिहासानुसधानगृह
ई 6, कान्तिचन्द्र रोड
बनीपार्क जयपुर 6

दूरभाष 73488

दिनाङ्क

अभिमत

मुझे यह जानकर अतिशय प्रसन्नता हुई है कि कालू (बीकानेर) के निवासी श्री नानूरामजी संस्कर्ता ने, जो राजस्थानी साहित्य की अनेक विधाओं के ख्याति प्राप्त विद्वान हैं, अपने क्षेत्र के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पक्ष को उदभासित करने के उद्देश्य से 'खेड रपट" नामक एक जनपदीय सर्वेक्षण ग्रन्थ तैयार किया है। इस प्रकार के उच्च स्तरीय अनुसंधानात्मक और सुरुचिपूर्ण कार्य के लिए मेरी अनेकानेक शुभ कामनायें।

दिनांक 9 6 82

(पद्मभूषण पं० झाबरमल्ल शर्मा)

कार्यालय प्रधानाध्यापक
रा० उ० मा० विद्यालय
कालू (बीकानेर)
राजस्थान

दिनांक 22 12 83

श्री नानूराम संस्कर्ता सेवानिवृत अध्यापक हैं। रा० उ० मा० विद्यालय कालू में ये द्वितीय श्रेणी अध्यापक रहे। उच्च कक्षाओं को पढाना, बोर्ड की कापियाँ जाचना और साथ में सतत साहित्य सृजन भी चलाते रहना। इनकी गद्य तथा पद्य एवं शोध में अनेक पुस्तकें हैं। नवीन ग्रंथ 'खेड रपट' क्षेत्रीय इतिहास है, जो पढने में रुचिकर एवं मनोहारी है। ऐसे विशद व गवेषणात्मक ग्रंथ के लिए श्री संस्कर्ता साधुवाद के पात्र हैं। उनकी वृद्धावस्था में भी यह साहित्य सेवा अत्यन्त ही सराहनीय है। मेरी बधाई स्वीकारें।

जयनारायण पारीक

रूचि सम्पर्क-सकलन

राजस्थान म बीकानर का थली क्षेत्र प्राचीन काल से ऐतिहासिक एव महिमान्वित रहता आया है। इसमे प्रागैतिहासिक सस्कृतियो के प्रमाण भी पाये जाते हैं। यहाँ की इतिहासकालीन सामग्री अत्यन्त श्रेष्ठ एव विस्तृत है। इस अपार समुद्र का दूसरा किनारा देखना तो महा दुर्लभ है, किन्तु जिले के एक छोटे से गाव रूपी तलया को तर लेना भी हमारे लिए लोहे के चने चबाने के समान रहा है। मेरे परम पूज्य पिताजी अवस्थानुसार इस काय मे काफी अस्वस्थ हो गये हैं। वे इस छ साल के समय म कोई मौलिक सृजन भी नहीं सभाल सके।

मनुष्य विभिन्न शक्तियो का ही नहीं अनत शक्तियों का स्रोत है। मैं इतिहास का छात्र होने के नाते वृद्धश्री की आज्ञा से प्रोत्साहित होकर उनके सहयोग हेतु पाण्डु लिपिकार बन गया। उनके पास 'जागती जोत के लिए लिखा गया "सेठै-रपट" नाम स कालू ग्राम का एक राजस्थानी निबध (रिपोर्ताज शैली में), जो ऐतिहासिक आलोक सहित बिखरे पन्नों मे जुगनू रूप झिलमिला रहा था। गाव की सस्थाओ के सचलाइट जैसे सेवा काय उनके किये-कराये सुने सुनाये सामने थे, सो वे उनको शोधने जुटान लगे। लोक साहित्य प्रतिष्ठान' (कालू) की भाषा, साहित्य, शोध व सस्कृति आदि की प्रमा प्रवत्तियाँ भी पूरा सहारा दे रही थी। किन्तु गाँव की अल्प साधन सामग्री एव कतिपय अन्य अभावो का पश्चाताप तो हमारे मन को अब तक जलाता रहा है।

सग्राहक शक्ति अन्वेषण प्रधान होती है, जो वृत वणन के लिए बड़ी उपयोगी बन जाया करती है। कालू की प्राचीन लोक कथाएँ श्रेष्ठ जनो के जीवन चरित्र और प्राचीन ऐतिहासिक महत्व की सस्थाओं सबधी जानकारी तो पिताजी का स्मरण थी, परतु समय की प्रामाणिकता को प्रकट करने के लिए पुराने पट्टे परवाने बहियाँ, ताम्रपत्र,सिक्के एव लेख प्राप्त करने आवश्यक जानकर क्षेत्रीय सस्थाओ, घरा के भी अनेक चक्कर लगाने पड गये। कुछेक महानुभावों से उनके वशजो की जन्म तिथिया तथा चित्र प्राप्त करने बाबत निरतर दो वष लग गये। कुछ सज्जनों ने हमारे इस काय का स्वागत भी किया और कालू से सबधित सामग्री उपलब्ध कराने म सामर्थ्यानुसार सहयोग दिया। बैराग मडल के महंत श्री विष्णुदास से दो ताम्रपत्र (वि० स० 1852 और 1900) राजस्व तहसील से गावों का मानचित्र (नक्शा) सरकारी स्कूल का पुराना हाजिरी रजिस्टर (सन 1908 से 1912) और ठिकाना छत्रगढ से कालू अधीनस्थ गावों का नक्शा (सन् 1946) एव चित्र आदि सामग्री मिली हैं। गाव के पुस्तकालय के अतिरिक्त राज-कीय क्षेत्रीय पुस्तकालय बीकानेर से, गाव महाजन से और डूगरगढ पुस्तकालय से भी ग्रथ उपयोगी सामग्री मिली। लालगढ के अनूप सस्कृत पुस्तकालय और अभिलेखा-गार बीकानर से भी अलभ्य सामग्री मिली हैं। इससे अधिक "सेठै रपट" (कालू क्षेत्र) की सामग्री कहाँ मिलती ? इस सकलन समय म चित्र, ब्लॉक साज सज्जा आदि हेतु यात्रा बाबत आर्थिक सहायता की बहद आवश्यकता महसूस करते हुए यहाँ के कुछ समय नागरिकों का पुस्तक परिचय करवाया गया। बहुत से लोगों ने बाह्याचरण से घटनाएँ सुनी अपने नाम देखे और प्रोत्साहन करने के नाम पर वे धन्यवाद भी नहीं

दे सके। फक्त समय अपव्यय म कहावत मिली—

विद्या न वर नार, सम्पत अन सरीर सुख।
मारया मिल न च्यार, पूरब दत प्रगासिया॥

नाम क नता तथा पिताजी के सुहृदवर श्री जवरीमल नाहटा न और उनक पुरान स्टुडे ट श्री नदलाल राठी ने प्रथम अवश्य कुछ पत्र पुष्पम सहयोग देकर उत्साह वद्धन किया। श्री नाहटाजी के घर से हम कालू के नाहटा का वशक्रम भी प्राप्त हुआ है।

गाव के शासन कर्ताओ का इतिहास विशेषकर, पिताजी क श्रुति स्मरण तथा बीकानेर राज्य के इतिहास से सबधित करके लिखा गया है। तहसील क गावा का वातावरण और भौगोलिक स्थिति ज्ञात करने म मास्टर श्री तीथराज सस्कर्ता (एम० ए०) तथा राजस्व विभाग क पटवारिया का पर्याप्त सहयोग मिला है। तहसील क फौजी वणन म ले० कनल श्री जगमालसिंह की दी गई जानकारी से काफी सहयोग मिला है। श्री हसराज आय क पत्रोत्तर एव श्री रतनसिंह राठोड द्वारा चित्र सहायता यथा समय प्राप्त हुई। इस तरह क्षेत्र क अ य अनक लागा स उक्त समय मे हमारा सम्पक बना रहा है। कालू क चौतरफे स्थानो म खारडा करणीसर मोहलाणिया गजनर, बीकानर अनूपगढ़, विजयनगर पल्लू अटसीसर तारानगर, सरदारशहर चूरू श्री डूगरगढ पूनरासर प्रभृति गावा—शहरा के नाम भी हम प्रसग वशात् उल्लिखित करन पडे हैं। बीकानर के श्री अगरचदजी नाहटा, चूरू क श्री गाविन्दजी अग्रवाल के साथ हमारा आत्मविश्वास फलित हुआ है। इतिहास क मुविन विद्वान श्री नरोत्तमदासजी स्वामी तथा डा० श्री मनाहर शर्मा का माग-दशन भी हम समय समय पर मिला है। महाजन क श्री शकरलाल यादव न कुछ प्राचीन साहित्य भिजवाकर हमारा मन मुदित किया है। शेप बाहर के अनक सज्जना एव साहित्यकारा का सदभावनाए लेने का हमारा अथक प्रयास रहा। क्षेत्र क राजनतिक लागा म श्री चन्द्रनाथ योगी, गोपालचद डूढाणी, हरिराम विश्नोई और कामरड दुर्गाराम से भी कुछ जानकारियाँ मिली हैं। गाव के वृद्धजना म श्री मूलारामजी पारीक गणेशारामजी आया और मगतमलजी कोठारी ने पुरानी बातें बताकर कुछ काय सुलभ करवाया है। उनका बिना यश कामना के प्राचीन वातावरण का कथा कुशलता के साथ परिचय देना हमार लिए हप का विषय है। गाव के शेप महानुभावो की नीति उदासीन हा रहा।

अब ज्ञात हुआ कि कालू जसे एक स्थान विशेष का विस्मृत वणन करने म प्राचीन एव ऐतिहासिक सामग्री का अभाव ता नहीं पर मात्रा म कमी पडती है। किन्तु पिताजी तो अपनी जान हथेली पर लकर इस 'खेड रपट' ग्रथ मे चार वर्षों तक लीन रहे। व आस पास के अनक गावों की यात्रा करत भी फिरत रह। लूनकरनसर तहसील मे 210 गाव मान जात हैं। मगर वतमान समय म राजस्व तहसील के आकडे—141 गाव आबाद और 30 गाव उजडे हुए बताते है। इसलिए वे (पिताजी) पुराने पटवारियो से और तहसील के कुछ अय बुजुर्गो से मिले एव 39 गाँवो के नामो का सही पता लगाया, जिनकी नामावली लुप्त होती जा रही थी।

उजडे हुए खेडो व खडहरो को पिताजी न लकडी क सहारे जा जाकर दखा और जिस स्थान को उ होने देखन को कहा, मुझे उन्हे वही लेकर जाना पडा। घर जलाकर तीथ दखन वाली कहावत की तरह घर के काम धधा को भी एक बार तिलाजलि देकर

इस काय मे जुट जाना पडा । हाथ मे पेन मुह में गोली और गले म पट्टा लगाकर वे पेन्शन कम्युटेशन के पसे लेकर विगत की खोज म इस काय म व्यय करने लगे ।

लूनकरनसर क्षेत्र और काल म जो सावजनिक काय हुए हैं, उनका विवरण जसे मदिर, कुए, कुड (छोटी बावडी), तालाब, घाट धमशाला, चिकित्सालय, विद्यालय, छात्रावास प्राचीन छत्रियाँ, देवलियाँ तथा राजकीय कार्यालया आदि के परोपकारी कार्यो के विस्तृत वणन और राजा महाराजा, धर्मात्मा महत, समाजसवी पडित डाक्टर, अध्यापक, व्यापारी, उद्योगपति, कवि, सनिक व स्वतत्रता आंदोलन म किसी भी रूप मे भाग लेन वाले एव कायकर्त्ताओ के परिचय भी उन्होंने एकत्रित किय है ।

वे लिखते पीडा से कराहते रहत, लकिन व्यसनवशात लिखना नही छोडते । हमारे परम हितैषी डॉक्टर, अध्यापक सव सबधी एव बधु बाधव उनके साहित्य सजन को मना करते रहे, पर वे नही मान । उनकी सुमति स्मृति की सुधा ज्योत्सना सबधित जन पात्र हित निशाकर रूप निर तर प्रसरित होती रहती । उनका लिखना इतना नसगिक बन जाता कि वे एक कम योगी की तरह तन-बदन कष्ट तक की परवाह नही करत और अपने इस लेखन सत्कम का सतभाव सहज सर्वद्धित कर देते ।

गाय बछडे को चाम चाटकर दूध देती है, मयूर अपनी मस्ती मे जन मन को नृत्य मग्न करता है और भक्त जन भी सहजभाव से ईश्वरोपासना करते हैं । मेरे पिता जी का जीवन भी रपट लिखते रहने से ही विद्यमान है पुरस्कार सम्मान की ओर उनका ध्यान नहीं । हम घर वालो ने उनके कष्ट बढने के समय लिखने के साधन जब भी छीनें तब वे इस "खेड रपट' के चिन्तन म बिखरत नजर आये हैं । कार्याधिक्य कारण से असम्य रात्रियाँ उनके लिए अनिद्रारूप रही हैं । ऐसे अवसरो पर हमने मदव मालिश करके उनकी गदन वाली धमनियो मे हल्कापन तथा रक्तगति ओज सचालन उपजाने का यत्न बल उपयोग किया है । विशेष दवा, फल, दूध और मौसम के अनुसार पेय पिला पिलाकर यथासमय परिचर्या द्वारा उन्हे आराम पहुँचाने के सेवा काय हुए हैं । चन्द्र कुमार जन (कलकत्ता) न ठीक लिखा है—"खून खटा पाणी करै सो पठ इण माय ।"

मेरा रजिस्ट्रेशन (बार कौंसिल जोधपुर स एडवोकेट का) हुआ पडा रहा एव प्रतियोगी परीक्षाओ के काय को भी प्रमुखता न देकर पाण्डुलिपि लिखने और फिर लिखन तथा यात्रा मे साथ जान के लिए सदैव इनके पास रहना पडा है । इस अर्से म अनेक बार पी बी एम हास्पिटल बीकानेर तथा स्थानीय चिकित्सालय म इन्हें दिखाना तथा भर्ती भी करवाना पडा । अभी हर दूसरे महीने इनकी ई सी जी (इलेक्ट्रिक कार्डियोग्राफी) करवानी पडती है । पी बी एम हास्पिटल बीकानेर के फिजिशियन डॉ० श्री हेमचन्द्र सक्सेना तथा रा० प्रा० चि० केन्द्र कालू के प्रभारी डा० श्री जगदीशसिंह गोखला एव डॉ० किशनलाल बोथरा का चिकित्सा निदान भी पिताजी के स्वास्थ्य सुधार म सदव तत्पर रहा है ।

पिताजी के मित्रो एव शिष्यो न बहुत से स्थानो से सदभ ग्रथ उपलब्ध करवाये । उनके स्वय के प्रकाशित शोधग्रथ के अलावा कालू मे लिखे गये अन्य शोधग्रन्थ भी प्राप्त हुए, जिनमे डॉ० किरण नाहटा का प्रकाशित ग्रन्थ तथा डॉ० बद्रीनारायण रमन और श्यामसु दर स्वामी के लघुशोध निबधो की टकित प्रतियाँ भी खेडा रपट' के क्षेत्र सबध से देखनी पडी हैं । भू०पू० सरपच श्री मोहनलाल सारस्वत न अपने पिता प० गणेशराम

जी के संग्रह से अनेक कागजात दिये। श्री नरपतसिंह साखला ने खेड रपट के मुख पृष्ठ का चित्र बनाकर दिया। तहसील मुख्यालय लूनकरनसर के काननगो श्री मोहनराम गोदारा श्री शिवराज बिश्नोई (बी० ए०) और भवरलाल पवार (पटवारी) ने क्षेत्रीय नक्शा और गावो के नाम दिये तथा भू० पू० महा० कुमार श्री अमरसिंहजी और गोपालचद ढूढाणी ने अपने स्नाव दिये। इसलिए सभी सहयोग दाताओ के प्रति हम कृतज्ञ हैं।

हमारी सस्था स्वय दुबल परिस्थिति में हमारी क्या सहायता कर पाती। उसके पास न कुशल कमचारी और न ही आधुनिक साधन ! टाइपराइटर, टेपरिकार्ड, कमरा आदि का अभाव तो बना ही रहा। इनके अलावा प्रकाशन के भी तो तब मात्र स्वप्न ही थे। मगर हमने लग्न एव समय को बरबाद करने मे किसी प्रकार की कमी नहीं रहने दी।

'आज्ञा गुरूणाह्यविचारणीया" के अनुसार पूज्य पिताजी के दढ प्रतिज्ञ स्वभाव के कारण इस अव्यवसायिक दुष्कर काय में मुझे भी उलझकर अपने सहपाठियो से सर्विस मे, परीक्षाओ मे तथा वकालत की प्रक्टिस करने मे बहुत ही पीछे रह जाना पडा, जिसका अफसोस मुझे सदैव के लिए रहेगा। यद्यपि हमारा घर सयुक्त परिवार मे है और मेरे द्वय ज्येष्ठ भ्राता उसका व्यय उपार्जित करने मे समथ भी हैं तथापि—

वर वन व्याघ्रगजेन्द्रसेविन द्रुमालय पत्रफलाम्बुसेवनम्।
तृणेषु शय्या शतजीर्ण वल्कल न बन्धुमध्ये धनहीन जीवनम्॥

मैं तो इस ग्रथ मे बावन बराबर पिताजी के आदेश की सपूर्ति करता रहा हूँ। पर कारणवश एक बार मुझे भी सर्विस की खोजना हेतु द्वय भ्राताओ की भाति अल्पकाल के लिए अय स्थान पर चला जाना पडा। तब वे एक दिन हमारी अनुपस्थिति मे चुपचाप ग्रथ प्रकाशनाथ यात्रा पर बाहर चले गये ज्ञात होने पर घर मे सनसनी मच गई। उनके रोग की स्थिति को स्मरण करके सब उदास हो गये एव सकुशल लौट आने की प्राथना करने लगे। अनुमानिक स्थानो पर पत्र और तार भी दिये। किन्तु वे तो अब दशो बार दिल्ली गये आये हैं और "खेड रपट' भी प्रकाशन रास्ते आ गया है। अतएव हम अब मान-बडाई को भूलकर विशेष गौरव का अनुभव हो रहा है कि कालू जसे साधन हीन कस्बे की सत्य रिपोर्ट विस्तृत रूप मे प्रकाशित करवा रहे हैं, जो एक क्षेत्र के लिए है एव अयत्र अभी कहीं ऐसा काय देखने मे नहीं आया है। इसके पष्ठ 552 और प्राक्कथन अवलोकन अभिमत, विषय सूची 30 तथा ग्राम चित्र पट के 2 और अय योग 584 हैं। पाठक इसके सोलह प्रकरण एव अनेक परिशिष्टो मे अभिव्यक्ति के नये-नये रग और चेतना के विभिन्न स्तर पायेंगे। अपने पूवजो का दिल पहचान सकेंगे। फिर भी यह पुरावत्त मे ज्यादा सामाजिक तथा साहित्य वत्यात्मकता का अनुसधान ग्रथ है। मैं तो कालू लूनकरनसर क्षेत्र के नागरिको का ही नही, समस्त बीकानेर मडल के निवासियों से भी रुचि मुजब यह खेड रपट' ग्रथ पूरा पढ लेने का अनुरोध करता हूँ। कालू के कुछ नागरिक प्रकाशन के विलम्ब पर मुह बनाते हैं। परन्तु उन्हे जानना है कि पहले कविराजा श्री श्यामलदानजी ने उदयपुर राज्य की ओर से "वीर विनोद" नामक इतिहास ग्रथ लिखने मे एक युग का लम्बा समय और लाखो रुपयो का व्यय किया था। डा० गौरीशकर ओझा ने भी 'मेवाड राज्य का" के इतिहास पर दश वष लगाये थे। इतने ही समय मे श्री नाथूरामजी खडगावत ने आजादी

का इतिहास लिखकर राजस्थान सरकार को सौंपा था। श्री झाबरमलजी शर्मा तो "राजस्थान और नेहरू परिवार" के छपवाने में वृद्ध भी हो गये। जब कि उन महानुभावों का सब राजकीय साधन सुलभ थे। साधन विहीन होकर हमने स्वान्त सुखाय मात्र एक गाव पर पूरा गवेषणात्मक ग्रन्थ तयार किया है। इसके प्राचीन महत्त्व की पूरी छान बीन करके जो तथ्य प्रस्तुत किये हैं उनके सुदृढ मूलभूत आकडे एव प्रमाण दृष्टव्य हैं। अपने निवास के पुरातन महत्त्व का जानने के इच्छुक नागरिक बन्धु एव प्रवासी सज्जन तथा साहित्य-संस्कृति के प्रेमी "पथिक खेड रपट' ग्रन्थ को सहष अपनायेंगे, यही आश्वस्ति है।

शिवराज संस्कर्ता
एम० ए०, एल एल० बी०
मन्त्री
लोक-साहित्य प्रतिष्ठान कालू
बीकानेर (राजस्थान)

मकर सक्रांति स० 2040
कालू—बीकानेर
राजस्थान

सत्य सकल्प

मैं सेवानिवत शिक्षक, पसठ का वृद्ध पहले की सोची हुई सारी बातें विस्मरण कर गया। चाहता था—पसन प्रारम्भ हो जाने के पश्चात, सुख शांति से घर बठकर हिन्दी राजस्थानी और सस्कृत मे कभी कभाम थाडा बहुत लिख लिया करूंगा। किन्तु कतिपय स्थानीय नवयुवको ने इधर उधर की स्मारिकाओ के सदभ मे अपना अबोध आरोप मेरे पर मँढ दिया कि— 'गुरुजी आप राजस्थानी भाषा म कालू री एक स्मारिका लिखिये।' उधर मे 'जागती जोत' के बने छ माही सम्पादक ने लिखा कि— 'आप अपन कस्ब का पूरा 'रपट नामा' लिख भेजिए, हम रिपोताज अक निकाल रहे हैं।' तब रही पढा पढाया वाक्य— 'इतिहास जहान की महान निधि होती है" मस्तिष्क म प्रवेश पा गया और मैं जन साधारण के जीवन की जानकारी रखता हुआ तथा अपने क्षेत्र के उत्सव, मेले भूख-प्यास, अकाल तटाइया और महामारियो जसी सुख दुख की अनेक घटनाओ को निकट मे देखने वाला व्यक्ति इस भयकर मघन वन इतिवत के रास्ते—'खेड रपट' धर चल पडा। 'कुव नेवेह कर्माणि, जिजी विषेच्छतम समा' ।। वेद ।। (मनुष्य सत्कर्मों को करता हुआ सौ वष पर्यंत जीने की इच्छा रखे)

जो व्यक्ति लिखने के लोभ क्षोभ मे सुविधाओ से दूर पडा, कुढता भुनता है उसकी दशा पख कटे पक्षी की भांति होती है। पर अपना दढ स्वभाव आव देखता है न ताव निजू निणय के अतद्द्वद्व मे भारी मानसिक पीडा भोगता है। गाव म कहाँ पूरी स्थान सामग्री सहायता तथा यहा कहा शिलालेख व प्राचीन ख्यात वात? पर मैं तो 'साठा पर पाठा' बीते जमाने का मृत इतिहास स्थानीय ग्रामीण ज्ञान गुमान के आधार पर लिखने बठ गया। मन्दिरा की मूर्तिया उत्कीण चरण पादुकाएँ ताम्रपत्र और निकट स्तरीय गावा के सीमावलोकन एव बचपन म बडे बूढा म सुनी कालू की बातें वारदातें कहावतें जो अपनी यादाश्त जुटाने के लोभ मोह म अथक लगन से जुट गया। कालू वास व्युत्पति विषयक पुरानी वहिया थेहो के सस्थान चिह्न गाढी ढोलिया क कथे जोड चोकड और बूढी औरतों के लम्ब लोकगीत किंवदतिया इत्यादि के सग्रह-श्रवण मे निशिवासर एकाग्रचित, चितक विचारक बन गया। भाषा व्यवहार साधना चिन्तन और आचरण की यथाथ दष्टि से जितना मैं औरा के लिए चितक हुआ, उससे कही अधिक स्वय के लिए अचितनीय हो गया। गदन दुखती रही भोजन आ गई और पीडा से शरीर जकड गया। पर गले के पट्टा लगाय अतमग्न होकर लिखता रहा। फलत जल्दी से साथ परमात्मा के घर का जमानती नाटिस आ गया। हृद्राग प्रवाह म बह चला। दिल का दौरा पड गया, काय अधूरा रह गया। फिर पाण्डुरोग! मौत के मह पडे मेरे मन म वही बात घर किये रही— 'कालू एक अद्भुत कोटि का ग्राम है!

पी बी एम हास्पिटल बीकानेर म दो बार भर्ती रहा वापिस घर आकर खाट मे पड गया। पर लिखने का रोग साथ चिपके चला। खाट पर उठ बठना और घर वालो

की नजर बचाकर कुछ न कुछ स्पट हालात लिखना। पुन पड रहना ! चार नाटकें लिखी, दद और पीडा पाच पक्तियां पढी, कराहट बुखार ! सप्ताह विवशता आराम करना पडता। दवा, पथ्य और फल पूरे चलते रहे। डॉक्टरो मित्रों, सम्बन्धियों तथा पारिवारिक लोगों ने भांति भांति से मुझे बहुत बार समझाया— मालिक गवनमेंट का वारंट गिरफ्तारी आने वाला है, आराम करो ! जीवन ही सब कुछ है अच्छा हो दो चार वष और जीते रह लो।' किन्तु कहावत सत्य—"लाली रे तो वा ही हवाली।" मेरे मन तो वही बातें बोलती रही—"कालू एक पुरावृत्तीय कस्बा है।'

है जान के साथ काम, इ सान के लिए।

बनती नही है जिन्दगी, बेकाम के लिए॥

सन् 1937 की बात—श्री सेवा सदन सरस्वती पुस्तकालय कालू म किसी सज्जन द्वारा कलकत्ता से भेजा हुआ टॉड का राजस्थान ग्रथ आया था। मैंने उसे पढा और अपने राज्य ग्राम आदि क्षेत्र के भू भाग का विषयगत अवलोकन किया था। ऐसे तवारीख ग्रथ मिलते, शौक से पढ लेता। फिर शक्षणिक योग्यता बढाने हेतु अपने शोध प्रब ध (राजस्थानी लोक साहि य) के लिए भी ऐसे अनेक ग्रथ पढने पडे थे। "बीकानेर राज्य का इतिहास (दोनों भाग)" तो अब मिला है। लेकिन मैं तो पुस्तकालयो म बहुत पहले से ही जाता रहा हूँ। जब कभी किसी नगर मे जाने का सयोग बनता, पहले पुस्तकालय खोज का नियम पालता। अनूप संस्कृत लाईब्रेरी बीकानेर म मुझे कई बार बठकर अध्ययन करने का सुअवसर मिला हुआ है। उक्त सस्थाओ म मुहणोत नणसी, कविराजा बाकीदास, दयालदास सिंढायच, रामकरण आसोपा, विश्वेश्वरनाथ रेऊ, सूयमल मिश्रण, कविराजा श्यामलदान जगदीशसिंह गहलोत मु० देवीप्रसाद र हैयाजूदेव आदि के ऐतिहासिक ग्रथ तथा ख्यातें और विशेषकर राजपूताने के इतिहास की कुछ जिल्दें मैंने सरसरी तौर देखी पढी थी।

अब आइने अकबरी (अबुल फजल), राजस्थानी रनिवास (राहुल सांकृत्यायन) तवारीख राजश्री बीकानेर (मु० सोहनलाल) ऐतिहासिक निबध राजस्थान (डॉ० गोपीनाथ), पाणिनीकालीन भारतवष (डॉ० वासुदेव शरण), मेरी विश्व यात्रा के सस्मरण (श्री टाटिया) भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास (ताराचद) राजस्थान का सक्षिप्त इतिहास (डॉ० सुखवीरसिंह) चूरू मडल का शो० पू० इतिहास (श्री गोविन्द अग्रवाल), चूरू दशन (श्री वनराज) राजस्थान की जातियां (बजरंगलाल) रजिस्टर देहात रियासत बीकानेर (चान्दमल बडक) शिवनाथ भास्कर 1 भाग (शिवनाथसिंह सेंगर) बीकानेर राज्य की ख्यात उदू मे (मिर्घसिंह) कवरसी साखलो (स० डा० मनोहर शर्मा) जाम्भोजी विष्णोई सम्प्रदाय और साहि य 2 (डा० हीरालाल माहेश्वरी) बौद्ध सस्कृति (श्री राहुल) आगम और त्रिपिटक एक अनुशीलन खण्ड 2 भाषा और साहित्य लेखक मुनि श्री नगराजजी (डी० लिट०) बीकानेर जन लेख सग्रह (श्री नाहटा) तेराप थ का इतिहास (मुनि बुद्धमल) सत काव्य (परशुराम चतुर्वेदी) अलखिया सम्प्रदाय (श्री चन्द्रदान) ऊमर काव्य व राम स्नेहिया की हस्तलिखित पुस्तकें सिद्ध चरित (श्री सूयशकर) गोरखनाथ और उनका युग (रागेय राघव), श्री गुरुभक्ति प्रकाश (स्वामी चरणदास) करनी चरित्र (ठा किशोर सिंह) राजस्थान (यादवेन्द्र शर्मा) बीकानेर नरेश (मेजर के एम पनिक्कर) बीकानेर राज्य का सक्षिप्त इतिहास

(दीनानाथ खत्री), बीकानेर के राज घराने का केन्द्रीय सत्ता स सम्बन्ध (डा करणी सिंह सन 1465 से 1949), मरुधरा के भागीरथ (गिरधारी दान) बापू कथा 1920 1948 (श्री हरि भाऊ उपाध्याय) राजस्थान और नहरू परिवार (श्री शावरमल शर्मा) आदि के सुविध ग्रन्थ इसके लिए मैंने पढे है। मनुस्मृति (भाषा टीका समत) एव वैद्य सजीवनी टीका सहित, भाव प्रकाश (भाव मिश्र)—टीकाकार शालिग्राम (सवत 1963), वहदि द्र जाल (श्री कृष्ण लाल) स 1952 तथा रसराज महोदधि (भगत भगवान दास) सूय सिद्धा त (मध्यमाधिकार), अथववेद आदि (चारो) भाषा भाष्य सम्पूण (दयानन्द सस्थान नई दिल्ली 5) नियमित रूप से खोजकर पढे और साथ मे हिन्दी राजस्थानी के शब्दकोश, हिन्दी साहित्य का वहत इतिहास, साहित्य कोश कहावत कोश राज स्थानी भाषा और साहित्य (1 डा मोतीलाल मेनारिया, 2 डा० हीरालाल माहेश्वरी), हिन्दी भाषा और लिपि (डॉ धीरेन्द्र), कला सन्दभ और प्रकृति (सम्पादक—प्रेमचन्द गोस्वामी), राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन (डॉ कन्हैयालाल सहल) तथा कल्याण के पुरान अक (गोरखपुर) राजस्थानी (पत्रिका), राजस्थान भारती, परम्परा, वरदा, विश्वम्भरा, शोध पत्रिका मरुजागल, मरुभारती, वीणा मरुश्री मरुवाणी राजस्थान बीकानर बुलेटिन, शिविरा पत्रिका प्रभति अवलोकन स भी मैंने आवश्यकतानुसार सामग्री का चयन किया है। अ ततोगत्वा—विद्वानो की सारगर्भित बातो के अध्ययन से रग छा गया और मे स्वास्थ्य से बिल्कुल बेपरवाह होकर गाव का खेड रपट ग्रन्थ लिखता रहा। कालू[1] ऐतिहासिक ग्राम दूर दूर तक प्रख्यात—इसके गीत वात एव नामो कामो की पुरानी कहावतें भी प्रचलित है।'

1 'कालू बडी द्वारका मखा दीनानाथ। प्राचीनकाल म यहाँ एक मखा नाम का उदार दानवीर एव भक्त चौधरी था। उसकी आदशता विषयक उक्त कहावत है— रिद्धि गाढा ताऊ बिलन्त सवा की शिवनाथ।
कालू बडी द्वारिका मखा दीनानाथ॥

2 कालू आडी कालिका, वासी आडी बाड।

आशय—गाव कालू की सरक्षक देवी कालिका है, पर नु पास वाल गाव 'वासी" की रक्षक केवल काटा की बाड है।

3 'कालू की गणगौर —एक युवक बटाऊ गण गौरोत्सव पर कालू होता हुआ "कळकळियाँ' (भडाण का एक गाव) ससुराल अपनी नवविवाहिता पत्नी को लिवान जा रहा था। रास्ते मे किसी न बताया— ससुराल कळकळिया का क्या देखेगा ? कालू का गणगौर मेला तो देख ले।" बटाऊ मान गया। पर वह कालू का गणगौरा मेला देखकर ससुराल को बिल्कुल विस्मरण कर बैठा और वापिस अपन गाव चला गया तभी से यहाँ उक्त कहावत चलती है— क देख कळकळिया सासरा देखना कालू की गणगौर।

दूसरी—इसी प्रसग पर कविता— गौर कालू री करल्य नी।

---

1 (A) कालू गाव ऊकारात है जो ऐसे गाव अति प्राचीनता की निशानी होत हैं। जसे—आबू झूझनू बिसाऊ, हरपाळ, बापेऊ फरसनऊ कऊ टेऊ अगणेऊ, जड़ेऊ राजेड धनेरू चौमू कक् कूदसू कुल्लू जम्मू बम्बू पलू चूरू आदि।

(B) इस तरह स आद शब्द क गावा म पाटाद सातलाद डूडलाद और उदा (उदय) श द म बाद दा गोगदा इत्यादि गाव बस है।

4 कालू मेड का माय ! ताल का धिरणी !" देवी कालिका के लिए यह स्थानीय कहावत प्रत्येक कार्य के श्रीगणेश में बोली जाती है।

5 कालू का मा ज्याणी"—कालू मे जाणिया रा एक बास (मोहल्ला) है। सदियों पहले उसके जाणी जाट अपने खान पान, जान जपान एवं जवान बहादुरी म बडे प्रसिद्ध थे। एक बार रात के समय ओडी मेलते हुए कालू के कुछ जवान 32 मील उत्तरीय गाव सूई पहुँच गये। प्रात वहा पूछा—'गाव ?' उत्तर मिला—'सूई !" तुम्हारा गाव ?"— कालू !" तब सूईवाला न इन बहादुर खिलाडियों को गोठ दी। ये कालू के जाणी जाट थे। इसलिए उनकी यह कहावत—'कालू का सा ज्याणी।" चल पडी।

6 'कालू का नाणि मिथुन है"—श्रेष्ठ कार्यों म सिद्धिदायक। कहकर हर किसी का प्रभावित कर लेती हैं।

7 का कालू का कलम म दानो चूहड दोय ' कालू में चूहडगोदारा और कलम के बामा मे अथ कहड ! दो विशेष व्यक्ति हुए हैं।

8 "कालू का वग बिलाव"—कुछ आदमी यहाँ के शिकार करने मे (एक-दूसरे को मात देन म) उस्ताद एवं तक विजयी हैं।

9 'कालू गाव रा धागा टाट रूळणा त्यागा।" कालू की त्यागी परम्परा है कि प्राय प्रौढावस्था के लाग गाव के चौहटे घूमते मस्त मिलते हैं।

10 "कालू गाव वडा घर पूरो मिनखा म चतराई।
आधमाण आदर अपणावे, आया मू रूळनाइ॥"

कालू के लाग बडे कलाकार एव चतुर हैं। वे अपने गाव म आये मेहमान का विनयी भाव से सम्मान करते हैं।

11 "सुख देवाळ घणो मन भाव, दूर न जावा जी अकुळाव।
हर हित मिमना हेत रिझाळू क्यू सखि कथो ? ना सखि कालू।"

एक नायिका अपने पति का वर्णन कर रही थी कि वह सदा सुखा का देने वाला और मेरा मन बहुत रंजित करने वाला है। मैं उससे थोडी अलग हो जाऊँ तो मन नही लगता। दूसरी सखि ने कहा— अपने प्रियतम का बात बता रही हो ? नायिका न चतुराई से बात छिपाते हुए तत्काल उत्तर दिया —' नही ! मैं साहबजी की बात नहीं कहती, अपन गाँव कालू का वतात बता रही हूँ। (सत्य बात का निषेध करके असत्य बात बना देने से कह मुकरणा एवं छेकापह्नुति' अलंकार बन गया है।) (मम स्वय द्वारा)।

12 'औरा गावा मेह वरस कालू चाले आँधी।
मोटियार बापडा के कर ? लुगाया कमर बाधी॥"

यहाँ की नारी का अपना एक निराला व्यक्तित्व है जो मातृ ममता शालीनता महिला मनोवृत्ति रहन-सहन नियम आचार चाल चलगत सज्जा लज्जा, उठ-बठ गीत राग एव कला कारीगरी में अभिव्यक्त होता है। पूजा-अर्चा व्रत उपवास तथा धूप दीपकीय तपस्या म गाव की सब महिलाए बडी तत्पर हैं। धार्मिक संस्कृति उनके हृदय म घर किये रहती है। भौतिक सुख सुविधाओ की प्रगति क लिए पुरुष राजनीतिज्ञ हैं किन्तु नारिया धर्मनिष्ठ हैं। नारियों की यह विशेषता नई संस्कृति मे पुरुष

कमजारी का स्वय परिचायक है। पुरुप का मदीना मग्रहणीय स्वभाव और नारी के धार्मिक कार्यों म अधिक व्यय देखकर ही किसी न उक्त भाव व्यक्त किय हैं—औरा गांवा मेह् वरस, काल् चाल आंधी।

13 "मर का साठ, कालू का आठ' पहल इस राज्य मे भटिण्डा रल लाइन विस्तार (वि स 1968, सन् 1911 स) था। तत्समय सरदारशहर आदि कस्बा के व्यापारी, बगाल आसाम जाने हेतु लूणकरणसर आकर गाडी चढत थे। लूनकरनसर को जन साधरण सर' नाम से ही संबोधित किया करत। यात्रियो के लिए 'सर खारे पानी वाला मङचूस मन व्यक्तियो का गाव था, किन्तु उसके पडौसी गाव कालू के निवासी पौरुपवान एव हर तरह से दिलदार थे। इन विशेप व्यक्तिया के लिए बटाऊवों के मुह लूनकरनसर की तुलना म कालू की कहावत बोली जाने लगी—"सर का साठ, कालू का आठ।"

14 'काळू खारडो भाई भाई, रिटी विग्गो, मद लुगाई'—पहने दा गावो के नाम एक साथ बताकर परिचय करवाया जाता था। उनम कई पुरुप और स्त्रीवाचक नाम के दो गाव एक साथ मिलकर बोल जात और कई पुरुप पुरुप के साथ। जस रिणी-राजगढ रिडी बिग्गो नोहर भादरा, खेजडा फोगा, गोड् बज्जू चोडियो राजासर, कालू-खारडो। इसी पर उन गावो के किसी दो निवासी सबधियो न अपने अपन गाँवो की तुक मिला दी— कालू-खारडो भाई भाई, रिड़ी विग्गो मद लुगाई।'

15 'रग काळू री काळका रग खेड री माय।
भगत कटार ले खडा अमल करावो दाय॥
कामा कुवर सुलच्छणा गिरधारी गोपाल।
दुरगादत्त सा वेदिया, रग कालू चौपाळ॥"

(राजस्थान का लोक साहित्य पृ० 128)

लोक कथा क बाच अफीम की घटना आने पर मनुहार क समय रग के दोहे बाल जात है। कालू म कालिका के श्रद्धापूण दोहो के साथ कुछ सभ्य नागरिको के माँगलिक रग बडदाव भा प्रचलित है सो समयानुसार नाम बदलत चलते हैं।

16 'काळू काळ री वासो" यहाँ अकाल बहुत पडत है तभी तो किसी ने 'पग पूगळ धड कोटड' वाल दोहे की परोडी बना डाली है—

'का काळू का खारडो का रूणिय रा वास।
इत्ती जागा नी लाधू ता लूनकरणसर जाम पास॥'

17 'काळू फुरणियो ग्राम —बात का कच्चा कहलाता है।

18 काळू फुदकणियो ग्राम"—इसके वास, बार बार जगह वदलकर बसने वाल प्रसिद्ध ग्राम रहे हैं।

19 काळू ने जुवांया अर भाणजा भेळ दिया —गादारो के जा दू भाणज और जाडुवो के जाणी जाणियो के भादू! इनके वाद तो प्रत्येक जाति म पर्याप्त भाणजे और जँवाई यहा आकर बस गय है।

20 काळू आयाडा न फळाप!'—नया आकर बसता है, काल् म उस आदमी की एक बार बडी समृद्धि होती है।

21 काळू तेरी धर धुरी, पाणी राही, ब्रह्मपुरी'—कालू म मुख्य सुख पानी,

रोही (जगल) और ब्रह्मभोजो की बहुतायत के हैं। (अब सिवाय पानी के सब विपरीत हैं।)

22 'काळू भोपत वाळो' [1]—गाव काळू में मेखा के बाद उसी गोदारा वश म एक भापत नाम का चौधरी भी प्रसिद्ध हुआ था। उस समय से काळू का परिचय भापत के साथ होने लग गया।[2]

23 "काळू का आगा शेर का सा' —काळू के लाग किसी भी सावजनिक काय को पहले पहल बडे बल व साथ शुरू करते है। फिर ठडे पड जाते हैं, तभी यह कहावत चली है— काळू को आगो (उत्साह) शेर को सा पीछो सियार को सो।"

24 "काळू कलास"—सब सुला के लिए।

25 "काळू रिझाळू' —शौकीनाई के अनुकरण हेतु।

26 "बाळू मूह काळू, हरपाळू"—सन् 1950 52 से राजस्थान के गावा म अधिक विद्यालय खुलने लगे और शिक्षा विभागाधिकारी शहरी शालाओ के शिक्षको का गावो के विद्यालयों मे भेजन लग गये। तत्समय शिक्षकों ने काळू और हरपाळू (राजगढ क्षेत्र का एक कस्बा) दोनो का असुविधाजनक गाव विख्यात कर दिये। कई बाहरी लाग तो यातायात कमी के कारण काळू को काला पानी तक कह दिया करत थे। किन्तु अब व बातें नही रहीं। इसी वर्ष (1980) म यहा 30 कमचारियो न अपने क्वाटस लाखो की लागत स तैयार करवाय है।

27 'गरळाऊँ पड गोद म माता करदे म'र।
काळू सू तू काढ दे भळे न आसी भैर॥'

जुलाई सन 1941 मे गाँव काळू का स्कूल एग्लोवर्नाक्यूलर (पदोन्नत) हुआ। तब हैडमास्टर पद पर रामपुरिया हाईस्कूल बीकानेर स शीक्षित श्री भरूदान आढा (सिथल) काळू आय। बीकानेर म विद्यार्थी जीवन बिताने वाले श्री आढा ने काळू से अपना तबादला करवाने के लिए तीन वर्ष प्रयत्न किये और इसीलिए उ होंने कालिकाजी की स्तुति हेतु अनक दोहे बनाय थे— गरळाऊँ पड गोद म माता करदे मर।"

28 "काळू गाव कुलखणा होग्यो औरत जात अकडो।
ब्याह सावा म हुक्म चलाव पुरस पगथळी ठडा।'

सन् 1932 की बात—स्थानीय श्री काळराम करनाणी की लडकी की बारात पेडीवाल जात सूरतगढ म काळू आई थी। वह खबरो की धमशाला मे तीन दिन रही और गाव का पहले पहल मूक सिनमा भी दिखाया था। गारे साहब, साइकलें और कारा के चित्र, पट पर देखकर लोगो को बडा विस्मय हुआ। पर बारात का एक ब्राह्मण नेगचार रीति से अकड कर गाव काळू की साखी ठाक बता गया—"काळू गाव कुलखणा होग्या "

29 'ल जीया लगन काळू दिस टुरियो।
सुण बर खूटया तो पाछो हो मुडियो॥'

(सिद्ध जसनाथजी रा सिरलाका पृ॰ 177)

---

1 किसी के प्रवास म गाव काळू बताने पर वतमान में अपरिचित साहित्य प्रेमी लाग पूछ लेते हैं—"नानूराम सस्कर्ता वालों के ?'

2 पूत कपूत वाली बात—
भापत र लाभू सुत जाम्यो, घाटै घाल गिडाया।
घर री नारयां फिरी दारतर डागर ज्यू अरडाया॥

मवत् 1530 के पाम री वाना लानमदेसर गाव रा जियोजी ब्राह्मण एक ववाहिक राय के बाबन काळू आ रहा था। उमने रास्ते के गाव कतरियासर मे जमनाथजी के दशन किये और काल्‌ जान का रारण भी बता दिया। श्री जसनाथजी ने जियोजी के बाय मे पापपूण फलाफल का सकेत किया। उसके अनुसार काल्‌ पहुँचने पर ब्राह्मण को तुरत वापिस लौटना पडा।

30 यह आजादी बरबादी का काळू म एक अखाडा है"—सन 1952 म पचायत चुनाव हुए। तब यहाँ कुछ उम्मीदवार लोग चुपचाप अफसरों से मिलकर पच सरपच बन गये। गाव की जनता के साथ वे खूब मन माने काम करने लगे। उनके विरोध म गाव के नवयुवको ने समाचार पत्रो म कविता प्रकाशित करवाकर जयपुर तक बातें पहुँचाई उसका अतिम पद—

> पर काळू की पचायत है, अन्याय का फटा नगाडा है।
> यह आजादी बरबादी का, काळू म एक अखाडा है॥

31 जूत छत्रगढ वाळा काळू म ही पड।' पुरान समय मे छत्रगढ ठिकाने का शासन प्रबध अच्छा था। चोर बदमाश भय खाते थे। कई लोग दूसरे को धमकाते तब कहते— 'आ गाव काळू है—जूत छत्रगढ वाळा अठै ही पड। यह कहावत कठोर प्रशासन हेतु दूर दूर तक प्रसिद्ध थी।

32 "काळू मे कीडी न कण अर मँगळ न मण मिल।" गाव काळू प्राणियो की उदर पूर्ति के लिए उपयुक्त स्थान है। वे कहते हैं – अगले ज म मे सूअर कूकर भी करें तो नाथ! काळू म करें।

33 'गाव काळू रो यो विगमाव, मात भगना रो इधक उच्छाव।"

(मार ससमरण परिच्छेद म)

34 'काळू लूणकरणसर तहसील का मुखिया गाव"—तहसील के दो सौ दस गावो मे काळू बडा समृद्ध गाव रहा है।

35 'काळू वाळा इन समाळो' —एक समाचार पत्र म सरस्वती पुस्तकालय काळू के लिए छपी सु दर कविता— पाथी खाना पाळ रूखाळो काळू वाळो इन सभाळो।'

36 'काळू रा० उ० मा० माळा है यह ग्यान कळा—गुण माळा है। '(प्रेरणा) विद्यालय पत्रिका म प्रकाशित कविता! (सन् 1964 65) काळू के अपने गीत भी अनेक हैं। एक आधुनिक लोक गीत सिपाइडो देखें।

37 मैं तन बूझू रे सिपाइडा, सडक पर बँगलो कुण चिणायो जी?
आज शहर म अमरसिंहजी पधारया काळू म बँगलो बाँ चिणायोजी॥ 1॥
मैं तन बूझू रे सिपाइडा, सडक पर मोटर कुण चलाई जी?
म्हाँर शहर म लालजी आवसिया, काळू म मोटर बाँ चलाई जी॥ 2॥
मैं तन बूझ रे सिपाइडा, सडक पर अस्पताळ कुण खुलाई रे?
म्हाँर शहर म शेरमलजी बठा काळू म अस्पताळ बाँ खुलाई जी॥ 3॥
मैं तन बूझू रे सिपाइडा सडक पर टकी कुण चिणाई रे?
म्हारे शहर म गोपालजी सरपच, काळू मे टकी उवा वणवाईजी॥ 4॥

आगे सब सख्याओ के नाम ले लेकर रातीजगे (रात्रि जागरण) म गातरणें उक्त गीत को बढावा देती हैं।[1]

38 काळू के छोटे कद विषयक गीत तो दूर-दूर तक प्रसिद्ध हैं। एक—
काळूगढ रा बालमा कोई साधूसर री नार, छोटो बालमो।

39, 'काळू भोमी हद वण वण कविता मद।" प्राचीन समय स लेकर आज तक गाव काळू म और उसके कांकडवीवाडी गावा की भूमि में अनेक कवि एव गुणीजन उत्पन्न होते आये हैं। इन पक्तियो के लेखक को स्थानीय कवि श्री पुरखाराम और ऊमा राम सारस्वत की बहुत रोचक कविताए सुनने को मिली हैं। वर्तमान समय म प० श्री दुर्गादत्त शास्त्री की हिन्दी, राजस्थानी म अनेक गभीर कविताएँ पत्र पत्रिकाओ म प्रकाशित हुई हैं। लेखक की दजन भर काव्य पुस्तकें तथा इतनी अ म प्रकाशित हुई हैं। इस तरह अनेक स्थानीय कवि लेखक काळू की प्राचीन काव्य परम्परा मे प्रयत्नशील हैं। तभी तो किसी ने कहा है— काळू भोमी हद वण वण कविता मद।"

एस उन्नतिशील गाव का इतिहास गीता गाथाओ तथा कथा कहावतो स सुसज्जित कुछेक व्यक्तियों के हृदय मध्य स्वभाव अनुभाव अवस्थित है। मैं तो गत सात वर्षों स सारी पीडाएँ भूलकर इसके प्रत्येक चरण का पल पल पर विचारर्थी बन रहा हूँ। स्वप्न हो या जागत इसी का ध्यान चलता है। मृदु स्वभावता, आत्मिक कामलता अल्पच्छता सहज सतुष्टि, उदारता विशाल हृदयता, विश्वास पात्रता, ईमानदारी और निर्मल बुद्धि स मैंने गाव के इस नये पुरातन अलिखित चारित्र्य का प्रकाश्य रूप दिया है। यह अपनत्व की दृष्टि है, जिसके चिन्तन तनाव से मैंने शारीरिक कष्ट सहा है। फिर भी गाव के नागरिकों म मेरे इस काय के प्रति कभी रुचि होगी तो मुझे कही न कही अवश्य सांत्वना मिलेगी। क्षेत्र के बिखरते प्राचीन महत्व को पुन प्रकाशित करना तभी सम्भव होता है जब सारे लोग परस्पर सहयोग और सहिष्णुता का काम मे लाते है। मैं तो केवल इतना ही लोभ सवरण कर पाया हूँ कि इस साहित्यिक पुरस्कारो के युग म एक ऐतिहासिक ग्रथ लिखने म स नद्ध एव सफल हो गया हूँ। मैं सदा का घर घुसिया मास्टर, एक बार श्री ए० एस० दवे (शाला इन्स्पेक्टर) से ग्रेड बाबत जाकर मिला। उन्होंने कहा—"काळू म आपका क्या उपयोग है? हम भेजें आपको जयपुर तथा जोधपुर।" मैं ठडा होकर लौट आया। अगले वष शिक्षा निदेशक राज० ने सहृदयता से एक सकिण्ड ग्रेड काळू विद्यालय म आवटित करके मुझे घर जमा दिया। पर 'लेड रपट' के प्रकाशन हित व्यसन सालभर

1 आदरणीया भू०पू० महिला पच, वालीबाई द्वारा पूरा गीत सकलित किया गया।

2 राजस्थान साहित्य अकादमी के तीन पुरस्कार (मीरा स्मृति पुरस्कार नौ हजार पृथ्वीराज राठौड स्मृति पुरस्कार सात हजार माघ स्मृति पुरस्कार तीन हजार रुपय का) राजस्थानी भाषा साहित्य सस्कृति सगम के गद्य पद्य मे दो दो हजार रुपयो के दो पुरस्कार विष्णु हरिडालमिया पुरस्कार दिल्ली, बम्बई के दो हजारी दो पुरस्कार, केन्द्रीय सा अ तथा कलकत्ता के पाच हजारी आदि पुरस्कारो में सम्मिलित होने के लिए मेरे पास हर वष सूचना पत्र आते रहे हैं। मगर नवीनतम कृति कहा? मैं तो केवल काळू का ही दास कवि गुरु एव समाज सेवी हूँ गाँव की पुरानी गुण ग था को छोडकर और क्या लिखू?

की भयकर सरदी एव गरमी म बिना दाता तन्दूर के टिक्कड निगलता हुआ भी सुरक्षित बच आया हूँ। यह ईश्वरीय पुरस्कार (जीवन दान) ही मानता हूँ। दिल्ली तो दिलवालो की है मेरे दिल कहाँ ? दिल का तो दौरा पड गया। अस्सी वर्ष ले लेता अब सत्तर ही मुश्किल से ले पाऊँग। । दिल्ली म 10 वष की उम्र घट गई और इसके लिए क्षीणावस्था म बड़ी विपन्नावस्थाएँ भोगना पड़ा है।

हमारे तहसील क्षेत्र मे ऐसे ग्र थ का अभाव था जिसम लोक सस्कृति विषयक विभिन्न प्रकार की प्राचीन सामग्री का सकलन हुआ हो। पर तु विषय न सब पुराने अच्छे होते हैं और न सब नय हो बुरे। जहा तक क्षेत्र की ऐतिहासिकता का प्रश्न है उन तथ्यों की ओर इगित कर देना मैंने उपयुक्त माना है एव यहां की विकसित नवीनताओ से भी प्रभावित हुआ हूँ। मुझे अपने मडल मे बाहर के सस्कृत हिन्दी, गुजराती राजस्थानी के अनेकश नये पुराने ग्रथ शोधने पडे हैं। मुद्रित के अतिरिक्त क्षेत्र की हस्तलिखित प्रतियाँ और प्रतिमाओ के उत्कीण लेख भी देखे है। इसलिए इस लेखन म मैंने सामाजिक आशाओ एव आकाक्षाओ की पूर्ति के लिए दोनो प्रकार की गवेषणा से सामग्री सकलन करके विचार पूण तथ्य प्रस्तुत किए हैं। इसके माध्यम से मैंने कालू के लघु से लघु गुणो तक का अभिन दन किया है। यह जिले और तहसील क्षेत्र के उजागर अस्तित्व को यथोपयुक्त पुनर्ज्योतित करने का सत्य प्रयास है। इसे मेरे कवि हृदय की भले ही कोइ महानता न माने पर तु मैं वद्ध लेखक अपनी इस आधारभूत मातृ धरा के अणु अणु का गुणगान करना अपना पूण कर्तव्य समझता हू।

'**खेड रपट**'—कालू अपने क्षेत्र म कालिका माता का खेडा' कहलाता है इस लिए ग्रथ के नाम म पहले मैंने खेडा शब्द लिया है। खेडा छोटा गाव[1] या नजदीकी खेत को कहते हैं। दूसरा शब्द देशी रपट, जिसका सम्बन्ध रिपोर्ट से है। ऐसा फ्रांसीसी भाषा का रिपोर्ताज शब्द भी हिन्दी मे चलता है।

खेडा पाणिनीकालीन खेट[2] शब्द है। उनकी लिखतानुसार कुत्सित नगर को खेट कहा गया है। 'राष्ट्रकूटो का इतिहास' के पृ० 72 पर प्राचीन 'मा य खेट" का उल्लेख है और 'जन महापुराण' मे महाकवि पुष्पद त न मान्य खेट' के लूटे जाने का हाल लिखा है। यह दक्षिण पूव मे स्थित मलखेड माना गया है। खेट स खेड बना है। जसे कल्याण तीर्थांक म— खेड ब्रह्मा (425) खेड (क्षीरपुर 292) और 'खेडपा' रामधाम तीथ मान है।

राठौड राज्य की बड़ी गददी खेड थी।[3] उसके बाद खेडा शब्द नगर के लिए प्रयुक्त होने लगा है। जसे—राजाखेडा (जिला धौलपुर) सादुल खेडा (चित्तौडगढ) जस्सा खेडा (उदयपुर) खेडा चोरटा (भीनमाल) कलरखेडा रत्तखेडा (श्री गगानगर), डगर खेडा (पजाब), सवताखेडा (जिला सिरसा) बीरम खेडा भवानी खेडा (हरियाणा) तेंदु खेडा आदि अनेक कस्ब खेडा नाम से प्रख्यात हुए हैं।[4] यहाँ खेड की जय बोलते हैं तथा

1 नाल शब्द कोश—मुकुन्दी लाल श्रीवास्तव
2 पाणिनीकालीन भारतवष पृ० 78 (6/2/126) ना०प्र० पत्रिका वष 56 से।
3 मरुजागल पृ 73
4 चौताला रोड के पास आशा खेडा, तेजा खेडा आदि नामो के कुछ नय खेडे भी बस हैं।

राजा महाराजाओ एव बडे आदमियो को औलाद का खेडा वसो' कहकर सम्मान-सूचक आशीर्वाद दिया जाता है। राजस्थानी म खेडा के लिए कहावत है—

"उजड मेडा मुड वमै, निरधनिया धन होय।
गया न जोवन बावडे मुवा न आव कोय॥[1]

'रपट" नाम मैंने अपने ससारिक लाभो से ऊचे उठकर निरपेक्ष भाव मे जागरूक रहकर घटनाओ म निहित स्वार्थो तथा पात्रो की मानसिक गतिविधियो का सही विश्लेषण किया है। इसका घटना प्रधान उल्लेख, जो सत्य, शिव, सुदरम स्वरूप वाचक व द को ददिव्य भाति से हर्षित करेगा, वह ऐतिहासिक वणन साहित्यिक चित्रण के साथ कहानी और निव ध के लगाव से उज्ज्वल ध्येय की काल्पनिक पृष्ठभूमि का वस्तुगत विशुद्ध आश्रयावास होगा। क्षेत्र की घटित घटनाओ को लिखन म उत्तरदायित्व-पूण पद गरिमा के अनुसार ही शब्द भाव व्यवहार किये हैं। इसके लिखते समय मुझ अस्वस्थ का मानसिक सतुलन अक्षुण्ण रहा और सवेदनशीलता के साथ तमाम घटनाओं का पूरा अध्ययन करके 'खेडे रपट" का सृजन सवारा है। विभि न घटनाओ के समन्वय से कथ्य रोचकता का अपना आतरिक सार सक्षिप्त ढग से लिखा है।

इस रपट के घटना चयन म मैंने अपने खेड और क्षेत्र के सामान्य पाठको की आवश्यक वाछा का पूरा ध्यान रखा है। इसको उनके लिए सुख प्रद, रुचिकर तथा उपयोगी बना देने के परम प्रयत्न किए हैं। इसी से लिखत वक्त म अस्वस्थ रहा हूँ और समय तथा व्यय वद्धि हुई है। व्यय और विगाड तो इसके बाबत अनक तरह के सहे हैं पर एक गाव के लिए इस प्रकार की सामाग्री का ग्रथ रूप म सजो देना और आकार प्रकार की विस्तृत रूप रेखा बना कर काय पार करना मुझ वृद्ध की असाधारण बात है।

प्रस्तुत ग्रथ जो राजस्थानी और हिन्दी दो भाषाओ मे है। इसम केवल कालू ही नही लूनकरनसर तहसील क्षेत्र के प्राय दो सौ दस गावो का शोधपूण वणन (दो प्रकरणो म) विवचन ढग से किया है। बीकानेर मडल से सबधित प्रकरण भी इसम रखे हैं। विशेषकर कालू के प्राचीन एव अर्वाचीन (भौगोलिक एतिहासिक, सामाजिक सास्कृतिक, साहित्यिक, राजनैतिक, आर्थिक और औद्योगिक आदि) विषयों का इस गाव में लोक साहित्य से गुम्फित कर पन्द्रह प्रकरण और अनक परिशिष्टो म समाहित किए हैं। पर तु कायादर्शो का एक प्रकरण (विगत के स्वरूप वतमान परिस्थितियो तथा भावी भावनाओ सहित) प्रामाणिक आधारो के सदभ म सग्न सलग्न "राजस्थान और कालू" का साथ लिखा गया है। इन सभी के लिए मेरी अभिलाषा रही है कि नागरिकों को गाव का नया पुराना गौरव ज्ञात रहे।

फिर भी पुस्तक म अनेकश खामियाँ रह गई होगी। इसलिए क्षमायाचनार्थी हूँ। अभावो का भाडागार यह रपटनामा, मुझ अकेले मे गाँव की बहुत सी विभूतियो का वणन परिचय नही द सकेगा। कतिपय तथ्य प्रकाश मे आने मे वचित रह हैं तो मैं अस्वस्थता वशात् विवश हूँ। छात्रो ने जार काय किया है वक्त का मूल्य समझा, उसने मुझे बचाया है।

---

1 प्राचीन काल म मेडे की तरह नागल और थाळी शब्द भी गाँवा के रूप में प्रयुक्त होते थे। गावो के घणी को थोळी का सिरदार कहते थे जिसकी राजधानी ढाणी शब्द म सम्बोधित की जाया करती थी। हरियाणा की तरफ आज भी गावो के समूह को थोठी तथा नागल नाम से पुकारते हैं।

कुछ धनीमानी एव राजनीतिज्ञ व्यक्ति जिनका गाव के प्रति ईर्ष्यातिरिक्त स्नेह सहयोग नही है—उन लोगो का उल्लेख इस रपट मे नही मिलेगा, चाहे वे कितने ही बडे एव नेता क्यो न हो। खेड रपट मे तो वे ही व्यक्ति प्रतिष्ठित एव अभिनन्दनीय माने गये हैं जिनके रोम रोम मे जन हित का प्रेम प्रवाहित है। खाते पीते उठते बैठते एव चलते फिरते हर समय क्षेत्र विकास की बातें सोचते रहते हैं चाहे वे धन सम्पत्ति तथा शिक्षा दीक्षा मे अत्यन्त दुर्बल स्थिति ही क्यो न हो। गाव के गौरवान्वित मनो कुलपति कहलायें हैं।

खेडे रपट के लिखने मे बुजुर्गों से ली हुई मेरी पुरानी जानकारी है जिसमे मेरा अनुभव और शोध सम्मिलित है। शासको और महान व्यक्तियों के नाम जहा तक पत्ता लगा पुस्तक मे लिए हैं। मेखा, भापत, फूसाराम झवर, गणेशाराम पडित जसे उदार व्यक्तियो के आचरण मैंने प्रत्यक्ष अनुभव ज्ञान से लिखे हैं। छत्रगढाधीशो की जानकारी मेरा स्वय की तथा बीकानेर राज्य के इतिहास से सम्बद्ध है। फिर भी कालू की कुछ बातें पुस्तक मे नही ले सका हूगा, इसका दोष, मात्र मेरे पर न माना जाय। बीमार एव मुझ बुजुर्ग का प्रश्न भाव (जन्म तिथियां चित्रो की मांग और पारिवारिक परिचय सेवा भाव) नागरिको द्वारा अवश्य पूरा कर देना चाहिए था।

इस पुस्तक प्रणयन मे मरना पडता मैं जिस किसी से सहायता बटोर लाया उन महानुभावो का अत्यन्ताभारी हूँ। तत्काल सहयोग करने वालो मे परम आदरणीय प० श्री नरोत्तमदास जी स्वामी विद्यामहोदधि और डा० श्री रघुवीर सिंह जी सीतामऊ (मालवा) ने रपट के कुछ ही प्रकरणो से श्रमण व्यक्त य और दो शब्द लिखकर दिये हैं तथा मेरे इस प्रयत्न को प्रोत्साहित किया है। पदम भूषण प० श्री नाबर मल जी शर्मा अपनी 96 वर्ष की दुर्बलायु मे मरुवाणी के सम्पादक श्री रावत जी सारस्वत के साथ मुझे देखकर खाट से उठकर मिले और सौहार्द्रपूर्ण इस पुस्तक के एक दो प्रकरण देखे पढे पूछे तथा बडी उत्सुकता से अपना अभिमत लिखवा दिया। मनतर वष के विद्वान डा० श्री हरवशराय बच्चन ने खेड रपट पर गद गद होकर शुभ कामनाएँ प्रकट की हैं। माननीय (आ० मेजर) श्री राम प्रसाद जी पोद्दार बी०ए० ने मम पत्र देखते ही प्रकाशन सहयोग भिजवाया है। श्री जवरामल नाहटा ने रपट सबधी हरक ब दोबस्त के लिए हार्दिक हा दे दकर मेरा मन प्रफुल्लित बनाया है। फिर तो कालू के कलकत्ता प्रवासी सज्जनो ने भी ग्रथ प्रकाशन के लिए सहयोग पहुँचाया। जिससे दिल्ली रहने का मेरा साहस बढा। वहा श्री जे० के० नाहटा और एल० के० ब्रह्मेचा ने पूरा श्रद्धा भाव बनाये रखा, तब जाकर यह प्रकाशन काय पार पडा है। उक्त महानुभावो के लिए मैं हृदय की असीम श्रद्धा व्यक्त करता हू।

मैं आदरणीय डा० हीरालाल माहेश्वरी एम ए, एल एल बी पी एच डी डी लिट आचार्य हिन्दी विभाग राजस्थान विश्व विद्यालय जयपुर के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रदर्शित करता हूँ, जिन्होने अपने अस्वस्थ एव व्यस्त वातावरण मे समय निकाल कर इस ग्रन्थ का प्राक्कथन लिखा है।

वसे मुझे अनेकश पुण्य मति विद्वानो से भांति भांति की सहायता, सम्मति-सुझाव और विचार विमर्श आदि उपलब्ध हुए हैं जिनके लिए मैं अन्तरमन से कृतज्ञ हूँ। कृषि बक मनेजर, माननीय खुर्शीद अहमद खान० ने गाव धीरदान की दरगाह को लिखने के लिए

मुझे लालायित किया कि कुछ तथ्य भी लाकर दिए हैं। राज० उच्च० माध्य० विद्यालय कालू के श्री विजय कुमार अग्रवाल श्री रामचन्द्र सोलकी, श्री सुशील प्रकाश गोयल श्री चिरंजी लाल मानी प्रमति वरिष्ठ अध्यापक महानुभावों के सत्परामर्शों से मेरे इस कार्य की जीवतता तथा मधुरता बनती रही। अत मैं मुदित मन उनके सुखी जीवन की कामना करता हूँ। श्री जयनारायणजी पारीक (प्रधानाचार्य) ने ही मेरे कार्य में सहयोग बक्सा है, अत धन्यवाद देता हूँ।

ग्रथ की प्रेस कॉपी के लिए प्रकरण एवं चित्र, यथा स्थान सजा देने के लिए आत्मजा सौभाग्यवती राजबहिन और पौत्र इन्द्रचन्द एम०ए० ने मुझे कुछ विश्राम दिया वे द्वय स्नेह तथा शुभकामनाओं के अधिकारी हैं। कक्षा कक्षा 11वीं के विद्यार्थी कमल नाहटा ने भी ग्रंथ की प्रेस कॉपी के पेजादि लगवाने मे कार्य करवाया है। मेरी शुभाशीश है। विशपकर कुछ महानुभावों ने मेरी ऐतिहासिक विभिन्न चाहनाओं का बडी सहृदयता के साथ समाधान किया है उन्हें मैं कभी नहीं भूल सकता।

(1) भवरलाल जी नाहटा, जगमोहन मल्लिक स्ट्रीट, कलकत्ता ने उत्कीर्ण लेख पढ़न म
(2) डा० गिरिजा शकर शर्मा राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर ने अक्षांश मिलवाने मे।
(3) डा० सत्यनारायण स्वामी (रा० रा० अभि०) ने ग्रन्थ उपलब्ध करवाये।
(4) डॉ० क्षमा शर्मा पुरालेखाधिकारी ने बीकानेर क्षेत्र के तापमान आकड़े भेजे।

अपने आत्मज द्वय जुगराज सस्कर्ता एवं शिवराज सस्कर्ता एम ए, एल एल बी से मैंने इसका काफी लेखन कार्य करवाया है। मझला लडका मास्टर तीर्थराज सस्कर्ता एम ए (इतिहास) दूर रहकर भी राशि व प्रेरणा से कार्य में सम्मिलित होता रहा है। वह प्रेरणा ही नहीं, बल्कि बार बार प्राचीन सामग्री खोज लाकर न सौंप देता—तब तो सभवत यह सकल्प अपूर्ण ही रहता। उसके सत सहयोग से हमारा कार्य सफल हुआ है अत उसका भी नामोल्लेख करता हूँ। अन्त मे उन सभी के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे सेहू स्पट के अन्वेषण में यत्किंचित सहयोग किया है।

उत्थातव्य जागतव्य यावतव्य भूति कर्मसु
भविष्यतीत्येव मन कृत्वा सततमव्यथ

अर्थात्—'उठो, जागो और कल्याण कारी कार्यों में लगो। घबराओ मत, मन में निरंतर यह धारणा रखो कि यह कार्य तो होगा ही।"

सत्य सकल्प का यह वास्तविक स्वरूप है। (महर्षि व्यास)

—महाभारत—

नव वर्ष प्रथम जनवरी (सन् 1984) सा० महो० नानूराम सस्कर्ता
विद्यमान प्रवास
फ्रना मार्केट तीस हजारी कचहरी के पीछे (कालू बीकानेर)
दिल्ली 110006

विषयानुक्रम

प्रसार, मडाण रा फल मरस मतीरा पशु परिचय वत, खोजी भेटा की विविधता क्षेत्रीय कन्द्र स्टेट ऊन मिल बीकानेर ऊन उद्योग बहुतायत का कारण डेयरी प्रोडक्टस खजूर की खोज क्षेत्र का ऐतिहासिक परिशिष्ट चौदहवीं शताब्दी की बात, यह लूनकरनसर है परिशिष्ट (पूर्व प्रकरण) तहसील के कुछ उपेक्षित ग्राम व सस्थाए तहसील व उपेक्षित एव समाप्त ग्राम एव सस्थाओ के सबध म प्रयास लून० क्षेत्र क मत और सम्प्रदाय—जसनाथी सम्प्रदाय और दूसरा नाथूसर का जाम्भा धारा वगाग मस्ल और महत कालू म सेवानाथजी, शेख फरीद और दरगाह क्षेत्रीय प्राचीन कला और शिल्प सदभ कालू का परिशिष्ट वृत्तात—महानता के अस्तित्व देव स्थान एव सावजनिक सस्थान बनाने वाले महान हृदय वतमान प्राथना भवन ओसवाल श्रीसघ पचायत गुराजी का उपासरा श्री जैन श्वेताम्बर तरापथी सभा हरिरामजी का मदिर इस्लामी धम स्थान प्राचीन छत्रियाँ, सारस्वतो की मावडियाजी का स्थान पानीक कुड एव प्याऊ जल की धर्मोइया जल स्टैंड गाव मे चुग्गे के लिए पक्षी पीजर गाव नाथूसर और कूआ कालू मे यात्री विश्रामालय, जकात थाना परिवर्तित पटवार खाना पुण्य सस्मरण धार्मिक व्यक्तित्व, सुख पूर्णा देवी चवर, मन्नन परिवार नाहटा काठारी अतिथि सरकारी समाज सेवी पुरुष सेवा प्रवृत्ति और ग्राम अगुवे प्रबुद्ध युवक बौद्धिक जन, विलक्षण प्रतिभावान जन वाक्पटुमानम श्रद्धा वचन अकद्र के कुहास म, लेखककीय वणक्रम और साकेतिक परिचय, चित्रो की अनुक्रमणिका ।

खेड़-रपट

(राजस्थानी रूपाग)

पैलो पडतग

काळू अर रिपोताज—

काळी माई री वार मझ खबूम खट खपती मेडो काळू जद मातर म्हणिय रा बारा वास, रूगडिय वाव रा पूनराम्र खास अर सेवडू मांवरा मोनळिया धोरा सू आरो पार उनाळ सियाळ बरोबर टम सू आवती जावती म्हारी खोटी पटारी काळका मेळ सी नवर R J F 2851 सीधा बस बीकानेर सू रोजाना रात री दस वज्या कळजुग री व्याण सी दाड जडीक आ-खडी हुव। इयाग्यि जायर आयोडा मा मोनी ग्यानी सेठ भगिया मुरमाया मुसाफिर ग्यार वज्या ताणी आप आपर ग्रिस्थी-गुवाडा रड अर घरआळाग बीकाण बकुण्ठ की बतळ लाग्मा रूलोळ। मोटर स्टडिया लोग ही मोड वग च्यारा कानी सू आवती जावती मोटरा नेगी थोडी चाग्वड मार अर सटाक हथाई छोड वग र जा सोव।

धट्टो ग्राम मक्ति पीठ धाम मेठा रोळा भाठा वायो हैठ नी पड। राई दसक पल्या ग्वाड म गाय अर गोवर र सिवाय रात री सफा मूनार रवती। वा-कोई वासावू कुनियो भुस ग्यिा करतो। हमैं रात्यू चळ पल, रग राग अर जागरण गातीजगा गीत झिलारीज वाकर। वस वड भेजै रस गाण भिजाव पड। पण देवी र गाना ही जस-जोत जातरी अर मातरा भाव वखाणीज। जुवा म बळिदान ममा भर परागम री कथा अर भवन मोभा छिब भाखीज। गीन गाइज जवे अनूठी अर अचरज भरी अतिहासिक परम्परावा सुण्या ही वण—

काळी बदळा वीजळ चमक, मेहला वरस ताल छनीज डेडर डरप मोर झिलार चातक सुरगा बोल कोयल कुल्क अर भवानी र जातीडा री जीवडा हुल्स।'[1] इसी रूाग जाण अठ आवणिया बटाऊ जगदम्बा रा जातरी हुव। उब दिनु ग सग दरसणा जायर जी जजमाव।

इय गाव रा नाव काळिका जी री ख्यात आस्था आप। टाबरा रै जल्म रा नावां ही काळिया काळनी, देवुडो देवली अर दुरगिया दुरगली राखीज। पाळणा-रुखाल्ना री मा यता गारू अठ देवी री अनोखी दरस कथावा चाले—'धरती फाडर अरडाट करती दवळी अूपडी। चरती गाया चिमकर भाजी। गुवाळिये हियो ।। हियो। र हेल घेना ठमाई। अू ची वधती देवळी ही जठ ही ठरगी।'

1 मेरा, राजस्थान का लोक साहित्य पृष्ठ 100

काळू री जोवणी मीर जगल मार गारबदेसर रतासर रासीसर, खारबारा, नरादेसर नाथुसर चादसर पुनिधा रावांसर अर डेरवा मा रचा ग्राम गावा रदभग ।



श्री सभा मदिर श्री मुरळीधर जी

पण प दर कीलोमीटर सू कोट जळगो नी बस । गारबदेसर म दसनीय मदिर, जीमे रदी मुरलीधर मूरत मुख सुविया मुख सवाभर सोना जुगळना । जुवो हेम, ठाकरा रुग नित हमेस द्विज जणा न दिखणा दिया जावतो । जेकरम ठुकराण्या जी' विटळा लिया—ठाकरा न कया— या मानो पीळा घणा सोणो है म्हे इय री नथ घडावस्या । था अेकर दून मोन री दखणा दरा देवा मा । ठाकरा वणा मा या पण मानो अुन दिन सू ही वार आणा बद । ओजू मुवड अड यो पड यो रूम रटव । आया गया जातरी वडी नीखी निजर झाक निरग ।

देत दुजा वा दिक्खणा सुवरणसर्ण हमेस ।
मिल सवाभर मूरत मुख कनक रच विसनस ॥ (किसन प्रकाश)

गारबदसर रा ठाकर किसनसिघजी री परमा भगता विस जसगू चमत्कारी वाण्या मिर । मती री साख ही घणी बाता चिर । बाद वागडी, डूढाणी, बाहती सुनार, लुहार मग रठ सू जायर जठ वस्या है । पण इय रपट सार गावा री घटनावा क्या समावू ? न्यारी है ।

काळू री पीठ लार दिखणादा गाव मानीपुरा जाडसरिया ल्हाडेरा अर बीका

सर । म्हाराज डूगरसिंघजी र पार सू बठ अेक पूच्योड फकीर लाखो बाब रा जीवत समाध पूजीज । गगासिंघजी ज्णा रो औतार मानीजता ।

काळू र आथूण डाव हाथ पाम चिपती सूनी वामी, जका म कदई तीन सौ घाणा तल्या रा चालता । हमैं इयै दिस री जरीब जेवटी, वगती ल्ण ल्टी-खारडो सजरासर कुजटी सुरनाणी अर भोपाळाराम री ढाणी जिसा गाव खारै मीठ पाणी र भेळ, माण मेळ, रम वस । लोक मणा मोसा वधार—

गाव ता कुजटपरो और सब ढाणी ।
ज न ग जकार कानी खाग यर पाणी ।।

लूणकरणमर न लेयर उतरादी भडाणरी भाम पाणी खारा खारा इलाको है । ठाकरिया घरारी लाटी माटी र अजण पाणी वेगा टाढी लमूटी वगती । इय वास्तै— रियासती हकूमत मे लूणकरणमर अर अनूपगढ दानू ठाळा पाणी वाजता । सन् 1938-39 म रघुवरदयाल गायल न लूणकरणसर अर हनुमानसिंघ दूधवा-खारा न अनूपगढ, गगासिंघजी काळ पाणी री सजा दी । जद ही नो लोक विमराईजणो कवता कहीज—

"राखेवा, विरमेचा सवग, भळे जागिया भाट ।
ज सरिय (लूनकरणसर) मे गुण हुव तो क्यू वस नी कोई जाट ।।'
(भडाण री जाई मघी गादारी सू)

दा दा तीन तीन कास री छेती भेती सू—मुकळेरा, हसेरा, दुल्मरा घीररा, खीयरा मणेरा, कळरलिया, सावेरा भाडेरा जुवाईडो, जुदेसिया, गाटा, राझा, फूलदेसर अर जेसा जिसा अेक जोडरा छाटा छाटा राही र कन लागता घणखरा गाव हमैं न री नाळा खाळा आया हाल हुया है । नी ता खाटा म खोटी बोचती—

म्हू ता हँसेरागी हूँ, मेरा वार खिटाया क्यू ।
ब ता चुगद वूगा बू नी तो बावलिय न घू ।।'

पण पाणी खातर सर' सू छव कास ओठा, सदीन कुळ सरगळ जळ कोठो विदवो वस्वा काळू है । अुव र सनमुख उतरादा चिपता गाव काळवासियो नायवाणा, नायाळी ढाणी किसनासर, राजपुरियो करणीसर अर सती माताळो र जामर थेह राजै ।

म्है माल डेढ साल ताई राज र मदरस गया । च्यार पाथ्या पढ या, पाचवी अधूरी रगी । जक दिना किसी जाच ही ? पली पढता ही गुरुजी दूसरी पोथी मगा दिया करता । पण उव सम अठ सठ, जीमवाळर मेसरी हाडाहोडी खाली अेक साल वैगी आप-आपरा घर गम ल जाया । मिरकाम मास्टर नै टाला बठा दखर पट्टाला आपरो पाछा वला लियो । टावरा बिना राज र माय म किसी खाज जाव ही जका प दर बीस रा मूको जूना अर दडीड खा वाकर । म्हार ता पढण री टववाळमी जागी ।

स्याम्याळा पावटो देवर सीधी गढ गई है। अे पट्टिया मडया पड या देखल्यो सू घल्यो। तेल री सातरी सौरम आवै।' दब्या म्हे गढ कानी, आग भीडसा सारा आदमी भाज्या वगा। मगरियो मडरयो। मिनखारा झूल्रार ल्हैटूर, मक्ड़ पावडा अळगा खड़ या मटर देखा। "गढ अर मटर दाल्डा डर। कन काई नी जाव— के भरोसा? मटर माणमा र मायन आपड अर खतरो पुगा देव।' अुणरो दरपणियो लिग्ड अर चिलकणी आस्या आगल पास खडा जका मिनख चाखीतरा जोवा। माटो म्पो कोटवाळ गढ म गिडतो मज मू देखली। स्टाट हुयो, मटर मुडर चाली। लोगा रो हुड काट धार सू हग्ड दणीस हेठ ढळग्या। कळा री देवी कार्ईठा मटर मारणी हव अग हुग्डको कर र भीछाग गाय दाद माय आय पड। मार नाख। पण अुवा ता परला कानी सू सररर दणा सरकर सर (लूनकरणसर) हाळ गेल जा लागी। थाडी ताळ न वाडाया—अुमाया लाग पाछा मटर देखण घोर चढिया तो अळगल ताल सू कढती रा माडा सा झबकाग पट या। दखणिया अचभो करया— आग फुर इती ताल मे कठ गइ है। सिञ्या रा लोग खेता सू आया अर मटर नी दख सवया वडो धोखो करया।

ठिकाण रा गढ, छाकाटा। गिरदावळ पटवारी हुवालदार चौधरी सिफाई चौकीदार कोटवाळ घाडी वछेरा जूट टोरटा इत्याद जमला अुव वखत अठ र गढ रवता। धणी री सावालिगी ताम इय छत्रगढ ईस्टेट री सरवरा सारु श्री जीसाव भादर ठा० हरिसिघजी सत्तासर वाळा न निग दास्ती नजर सुपरवाईजर जमा राख्या। अुवा नीच—दो कामदार नौ दस गिरदावळ, सैकड़ू पटवारी हुवाल्दार सिफाई सारा सासण जावत अूटा घाटा सू आप रा गाव गढ कोट सभाळ। चौधरी रमचारी जच ज्यू जाच जाच आपगो अत्यायदो न्याव तपास इड जरवानो कर। राड झगड तसील्दार थाणदार इया र गावा सू पाघरा ही टपता जाव। धणी जूनियर म्हाराज कु वार साव जका रा बाप रो ताप, धूँवा अूपड थरका पड। पट्टा रा आठ गरकल 84 गाव अुवा म सिर नाव काळू सामो कुण झाक सक। फूक सू घास बळ नाव सू हिरण खाडा हुव गाव रा थड्डो चाल। गगनर र चद (करज) वगी ल्गायाडा नाजम एस० आर० श्याम आया पण अुवारी कडाई लार गावाळा भेळा हायर चट्टा अुथळी द दीन्हा। छेकड नाजम साव सव्वासळी नरमाई ठगा परनायर उदार नाव छावड वर्या अर चोखी अुघाई पल्ल पाडी। अुव दिन सू काळू वत्ता नामुनदार हुया। लागा आपरा फूटेडा ढमढेर ढगळा मा बूरेडा चूकल्या चाटिया सू मल्कार पचम जार्ज र चर सिक दीपता चादी हाळा मोकळा रिप्पड काढ काढर उणा आग आल्या गिणदी। धनवता ववको चदो दियो, गरीव गुरव रो कण ही नाव नी लियो। पण आज अुवा अुदार हवा कठ? टोकरी सोध चूखा अुडग्या भिठोरा जोकड अड वायरा वाज।

गगासिघजी नतिक वुवारी नरपत, धम रा पूरा जाणीकार अुवा रो मुखाणद सासण, पूर्णिमा री च्यानणी ज्यू फग्यो फळाप्यो। अुवा— म्हारी प्यारी प्रजा' र सबोधण नै कदी जीभ सू नीच नी अुतारया। दीन दुबळा अर अवळावा रा सागीडा

सायक, रयत री राम रूप पाळणा रुखाळना राखता। उणा र राज्य म अयामी नण अर विलासी वण, हर्गिज नी पनपता। म्हाराजा साव आपर लाडेमर बेट न ही अेक गुनो नी वखस्यो। अुवा री धाक सू काळू गाव रा धणी जूनियर म्हाराज कुवार साव विजसिंघजी वि० स० 1988 माघ सुदी 5 (ई० सन् 1932 ता० 11 फरवरी) सध्या म खुदाखुद पिस्ताल रा घोडा दावर खतम हुग्या। गाव नै घणो दुख हुया के—'धणी अडीक्ता सावालिग हुआ अर आठा अलाक पधार गया। काळू किस्मतरी चालती चक्री म पाछा नाबालिगी र नाव आग्यो। पण म्हाराजा साव आपरै मोटै दुख न मायरो माय पीयर, पौत्र अमरसिंघजी न विजसिंघजी री गोदी र दस्तूर छत्रगढ ईस्टेट री गादी माथ फौरन आसीन कर दिया। उब म।बालिग हुया जत्त नै प्रजातत्र रा माक्ळा वादळ मटरा अुठया। ठा नी वरम्या, न वरम्या, काळू ता बीजळी विना ओजू काळो मगसा ही है।

अया ता इय गाव र वारकर ही काळामर काळवाण अर काळवासिय, जडा अडा माक्ळा नाव गाव है पण काळू आणदपुर काळू केवीन अर कुल्लू इत्याद अळगला गाव तो गजव री रामनी पळाका पळक। म्हारा ता अधेर विडरणा कागज-पत्र ही चमक-चू घर अुवा च्यानणिया डाकखाना गळत चल्या जाव। इयै वास्त वाचणिया डाकपाल पाठक छ्पा न रपोट है के म्हारा काळू तो वीकानर जिल मे सडक सुविधा सू आघा अुलातर घर लोरी वसा र रास्त माथ अेक कूण म रस वस। या वीकाण नगर सू अस्सी कीलोमीटर अगूणा, सरदारसर सू इत्ता हा आयूणो; श्री डूगरगढ सू चाळीस कीलोमीटर अुतरादो अर लूणकरणसर सू बीस कीलोमीटर दिखणादो बीच सटर सुगणो सजग स्याव। ओजू ताई तार टेलीफून अेव बीजळा सू जावक क्नार पड। रेल रा तो जिक्र ही कठ? पण अुजाड गला गरूर ट्रक गट्टूडा जरूर वीकानर, डूगरगढ सरदारसर आद नगरा सरा न जोड टकराव। रेल ठेसण, थाणो तसील इय र लूण करणसर लाग।

पला दो दो साला अठ समचो मेता दाणा नी दीख्या काळू काळ रो वासा वाजग्या। काळ पर काळ लाक क०्या रा कोकड जाळ! काळ आपरो पत्तो बुडवुडो देंवतो कव—

"वा काळू वा खारड का म्णिय रा वास।

देखा लोक काळ री स्वारथी लाला। पण हम्मैं उवा वात नही। आज रो काळू वडा वापारा, छाती ठोक खुमहाल कस्वा है। हाल गी घडी जन गणना री अडीक जन-सख्या आठ हजार र अेढ ढूक। घर मकाना ही पन्दर सौ धूवा इधको वधका, पाडौसी गावा मे सत पीढिया नाढूखा अर हार नामून नगर है।

घरा धाक। अठ आवा जाग। सता मूरा अर भगता री पुराणी अलोकी घटनावा माथ घणी लोक काव्य कड या लाध—

गारवदेसर गाव म सब बाता रा सुख।
अूठ सवार दखिय, मुरळीधर रा मुख॥

परापरी सू काय कहीजता काना सुणा । तरवी मगी म नागवमी क्षत्रिया सू दान पुरस्कार म मिली धरा री काकड वधी क ता काळू री काळका र मढ कनकर



श्री कालिकाजी र मंदिर भक्तजन

बिना धार कढता मरसजी म्हाराज री माही टोड इय तळटी म ही टूटी । मार्फी पुकार माथ माता मोन चाँदी रा मेखा खोला सू पाछी माघी । जक स्या री स्याग्यात साख साढ र अेढ जायर पडता ही मिली । अडी चमत्कारी वाता सू ही काळू आटी काळका र वासो आडी वाड वाज ।

भगवती र भो गाव रा लोग सा काल ताई आपर कच्चा घर मुकामा रवता । पुराण मढ री जगा दाठीक देवरा चिणाया पछ हा हल चौभीता चून झकाया झिल । कूवा-मूवा जिमा खतर रा कार सरु करता मिनख पलपात काळका न सिवर— 'तालट्टाळा ' खंड री धिराणी जागमाया । डोकरी माजू ' तेरो ही सरणो है । बाजे वाज रळ मरी गाव बार कर काच दूध री अखड धार, गाज बान सू मायड कार ओजू कढाइज । मह वेगी हाम हव । इय खेड, जगदम्बा सतजुगी माय है—कर पाटवा र झगड जूनी गाइज ।

भवानी रो भव्य भवन अनाण सरावर री पाळ तळ डाग फुटराप फग गळ । भमाण नड खडा वडा भेजडा री सोणी जाडन लोक-लाड केरल कोचान री रूखा हरियाळी साभा तोलीज मालीज । धरती रा भाग जाग दोवा नवरात्रावा मेळा लाग । आलर ताई सू आयर जातरया जमघट जुड । भण्या गुण्या जुवाना रा अूछव आयाजण वण । जाणू या ज्वाळा माई रा पळगोड खेडो कळकत्त ताई री होडगाई काली माइ री धोक पूज पळ ।

म्हे बाद। आग्या सू नूवा नजरिया जावू, लाग्गा मुण्या गुण्या मा चिनराम चेत वन्न। कर्दे पिचतर पगा जूटा मू जठ नानर्रे आयी। च्यार मौ घर अर पादरमौ मिनखा सू यो सेटा 'रिणी राजगट दाद' बाळूम्यारडे र नाव दान्डी ओळखाण धापाट मुधान वास वसता। ओ गाव रो जेर वास जन्दाजन दो मौ सात (स० 1834) र अडै गट पल्या वनन्न उतराद पाम थेह म वस हो। ज्व रा सदर दवरा ज्होडा कूवा अर जिराण मुमाण इयै चिपनी दिखणादी (हणै र गाव री जगा) डरडी म ही ढाणी मग हूता। म्हाराजा गजसिघ जी र सपूत सूरतसिघ जी रै राज्यराट म इय नै विय थह मू बाठिका जी री म्रमू मिला सूरत नामै अठ गायर बसायो। वि० स० 1900 र नड व्य गाव न सिरदारसिघ जी राग्यो। पछ धानाइ मर्घानघ जी री धिणाप म या गाव केई माला ग्यो।[1] जुगा राज र चाल्न चाग्यो। जाबर म्हाराजा गगासिघजी आपरो मौजूदा म्हाराणी र वीरवनाळ जूनियर लान कुवार सिरी विजसिघजा र ठिकाण छनगट र गावा भेळा छाटर आपरो अूजळा नह वधारया।

म्हे आठनौ वरमा रा पामाळ पटण हूवया। मन्न म सू जावता जावता भणनिया स्याणा टारग र मूट— ल्हाम म पकड ले नाण री काळा म काळ पाणी अुतारण री अर जिद वोदगा जळोग्या, नागण्या री नागर्णी वाना मुण्या करतो। श्री रामजीलाल गर्मा मू सपादित इडियन प्रेम लिमिटन प्रयाग सन 1925 र तीमर चौथे भाग म पल्डी ल्डान री पुरम्कार गवरा हो पटण थाता— सिपाही खुदादाग्खा ल्मनायक लालसिघ को विक्टोरिया क्राम का तमगा मिला। इत्यान। अग्रेजा रा च्हाळो—पचम जारज चमर लेण चर्चिल अर वडा वडा लाट मारा री वनाया गाव री हथाया टवती रती। गगासिघजी म्हाराज री आपर राज्य रै मोरा आरा— पोलो साव, रिडरण साव स्जवा साव जानपगी मव री वी० ए० इग्लिम नॉ० वुल्फ डा० टोम्म जिसा जनर अग्रेज गावता। उवा रो लेण ल्याव ती हार्निज वजन दुर्विन इत्यान लार्टा सू घणा ग्या।

हम्मै म्ह पाटा जपुराठिय प्रमा माथ मरच आनू अर सन 1927 28 ी विगत बाग्ना कहू के— अेकरम श्रीजीसाव र हुक्म विज भवन सू ठिकाण रा कामदार क्षा इजीनियर अग्रेजा न न्येर कूवा तळ जळ जाच स्कीम माथ वळ विछावण वेगी राल्म कार सू काळू पौंच्या। आयण री अेका मुहाळनी हुइ छुट्टी लागी। म्हा घरा जावता छात्रा न कूटवाळी गळी म गडी गोगा विराणी चम्भा चाल्या के— 'आज गाव म मटर आन ह। अुवा म्हान बोली— म्है ताळियामर भन बाव री नाम गर्द वठ मटर स्यो अुवा मानी ह। बिना ऊट वळदा र तेल सू चान। जवान

---

1 गत ग्राम थेह प्रख्यात हुआ
रक्षित नव ग्राम के निकट जो
अभी आध मोर उत्तर की ओर
हैं चिह्न जमीन व दिखन वर्नो। (नटाही 49)

घरोडिया गुर वडा मिनखाळा बाळवा मवाय दूजोडा नै पढार किसा याल करा। इय वास्तै म्हारी नेम री भणाई हुई जिसी हुई। आग जायर परिस्थितया बदळगी। जीविका छोड माल दियो। पोसाळ र नातै तो म्हार गुराजी रो अुपामरो, रामस्नेहाळी जगेरी अर जगात थाणदार वकी हवाई, मोटा कालेज बणग्या। गीता भागवत हाथ रा लिखेडा सस्कृत रा पोथा अर राधेस्याम रामायण रा भजना ही विद्या विगसाव करयो। मदाना घूमणै, टोपडिया चराण अर तलाव हाणै, खेता जावणै जिसा घणा ही हाथ लाग्या। गाणा वजाणा, रास रमता अर नाटक चेटका मे भाग लेवणो तो म्हारो जलम उछाव रयो है।

काळू, लूनकरणसर तहसील र दो सौ रम गावा म वडो रडीब र जगी गाव! यो जटायती गरिमाळ इतिहास मु जडियोडो आपरी अवक्ल अमीरी अजे अगवा राज। जातरा मुसाफरी म गया ठाला चौखळ म जाणीज। जठ कठ ही आग म्हा लोगा न गाव काळू वताया बठरा नागरिक बाच तार्ई पूछता अर पूछ—' काळू किसा ?

म्हे वतावता— काळू खारडा।'

नागरिक— काळू भापत वाळा ?'

म्हे कवा— हा।

पछ आगलो दूजी वात भला ही छेडो।

सौ वरस परया यो गाव 'काळू भोपतवाळो' नाम सू घणो प्रख्यात हो। इय म आद जुगादी चौधरया रा गोदारान, जाणियान, जाखुवान अर भादुवान बाट च्यार वास वसता। च्यारा रा कूवा ज्हाडा, मिन्दर थाम, रेख रवीना काम कळाकार अर दादा आप आपरा याग याग! भापत भूपतियो गोदारा जाट अगूण क्षान्ती ऊपरनी गवाडी वाखळ लूठी थेडी मिवरूप मठो घाळो धाकड धाया माज्यो साथ सँवार माळा माथ ऊचा बठा सियाळ तावडो करतो। पाणी न आवती जावती लुगाया रा लसकर हजार बार कण पर ही आगवर नी कढता। गळी र काना किनारा आदर माण सूलरा अूभ जावता। डाकरो उवा न देखर घर मे जावता कवतो— बेटा मन थे तावडो नी करण देवो।

म्है नानर लाडेसर भापत री मूनी मेडी ढमढेर (भग्न) माइना टाबरा भेळो घणी लुकमीचणी खेलयोडा हूँ। म्हार नानरो घर गादारा र वास, अर गोदारा र दाद पडदाद घणी विभूतया जस काज चस। गाव म गोदारा र कूव मिन्दर कन अेक मोटी छतरी मेख गोदार री समाध माथे वण्योडी ही, वा सवत 1990 री झडी म्हारी देखणी द पडी। पण भगत मेख रा सुवाज काळू नाव र साथ माथ जनाना सीसफूल रै कुदण जडाव ज्यू जगा जगा जुडियोडा जुगानजुगा आपता रसी। राजस्थान भर म कोई उजारता री अूची वात चेत करता हा— काळू वडी द्वारका मेखा दीनानाथ' री दूहा कडी तुरत बोलाज जाव। मेखा रा भगती भावना अर सवा री अनेकू वाता म सू अेक अचूकी घटणा आज र ठेठ नता ताणी काळू रा जूना ठाट वतावण वेगी ठरक

मू उवरीज— सावण सावो, भातरी जाना अरण्य हाती परणीजण पाण गाव काळू पौंच रयी।" धार ऊपर बैठा अेक कुवारी अेवड रो गुवाळियो पूछना रया—

"जान कठै जाव ?"

"काळू।"

'जान किम गाव जामी ?"

'काळू।"

'जान किस गाव परणीजमी ?

काळू।'

'जान कठ वळमी ?'

काळू।" 'काळू।' 'काळू।!' काळू।!!

(धापर) जान किनग गिडमी ?"

काळू।'

वारम्बार काळू ही काळू जान परणीजण रो उथळो सुणर उव रो मतो वणग्यो। आपरी अेवडिया दूसर गुवाळिय न सूप दिया अर भन्क र गाव जायर बीन वणग्या। काळू र गुवाड जंचेरी जाना भेळो वखत र वळ रळ वठा। मग वराता आप आपर सगा र बुलावा तारण मेळा ढूकण गेइ, पण गुवाळियो बीन लार अेकलो ही अुवर र बठो रया। चौधरी मेख वन या खवर गइ तो वाल्यो— भडा हुई। बापडा कोई आसग बीन वणर आग्या हुसी ? बटा रा काई पट दूखर मर जाय जाट र बेट न ही न्णी है। काई जाड री छान्री टावा कर ल्यावा अर च्यार आगा दे देवा। नही ता गाव री हूळकी न्मी। न्नोगा नायर उव बीन न पाणा पत्तो पूछया उवा ही बात निकळी। के—' वार वार काळू रो नाव सुणर म्है ही परणीजण आग्या। चौधरी मेख जात गात पूछायर कड़ूव मू छक स्याणी मी डावडी वलाद अर आपर घरा चॅवरी माडर परणाली। माकळो धन मन अर दायजो उव बीन न दीनो। अडी अनकू उदार कयावा अठ भगत मेख री चाल। म्हैं नमून रूप अेकूव कवत माडू।

रिध गादी तजू विन्त, मवा की सिवनाथ
काळ वरी द्वारका मखा दीनानाथ

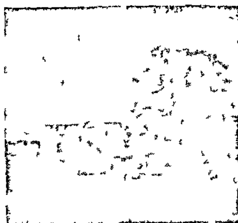
आवा धाव मिल अवस, मन आणद चिन्ता मिट।
मागया जाव काळू नखन, मखावन नाही नट॥

निरामणा म सारसुता अर पारीका रा वग धडा है। इया पछ अठ खडेल्वाळा री रूम्बर है। वेद धर्मिया गुजरगौडा रा वस। पण पिंडताइ म पारीका अर सारसुना म सदीना होड चाल्नी आई है। आजकळ अगवा प० दुर्गादत्तजी शास्त्री सारस्वना म सम्कृत रा टाळवा वत्ता अर विद्वान है।

बैरागियां अर सूईवाळा, दो बास म्हार साथ में ही आयर बसया। बैरागी गारबदेसर सूं अर पारीक गाव सूई सूं आया। बैरागियां रै महंत सेवादासजी आपरै बास में अठै ठाकुरजी रो पक्को मिंदर कूवो अर कुंड बणा लिया। ठिकाणै नूंई मंडता नै जमीन मिंदर लारै डोळी रूप में दी भाड़ो मगरो सब माफ करया।

कूवा मोठा पाणी गाव रै चार च्यारूं मेर मोटा नाडा जका में मोरखो तळाव ज्हाडा, तीन बावनी जमीन खुल्ली सळा धन नै पाळ अर मोटी चरणोई। जका वास्ते लोग काळ कूसम अठै मजूरी करण आया पाछा नहीं गया। आलर ताईं रा लोग सुखा रूंखाया अर बस बठा। सुनार-सूथार चूनगर चेजारा डाक्टर कम्पाउंडर हैड मास्टर, पंडित-पूजारी अर पटवारी तकात पट्टा लेली हा। दो घर नी मुसलमाना रा सौ घर हुग्या।

काळ में नाकरिया बास गाव री नूंई बास्ती बाजै। इण में नवा-पुराणा अनेक संस्थान देखबा जोग। आखा रा आगावू उन्नति लखाव। सन् 1956 सूं रा० उ० मा० विद्यालय सन 1964 सूं रा० प्रा० स्वा० चि० केन्द्र परिवार कल्याण केन्द्र प्राथमिक शाळा भवन कालिकाजी (सलग्न ब्रह्माणीजी) रो मंदिर रामदेवरो हरिरामजी रा मोटा अर जातरा आरामदेह नुवा भवन पंचायत भवन (सलग्न न्याय पंचायत) पुलिस चौकी (पशु चिकित्सालय) मेल रो मैदान गुराजी री साळा पक्को तळाव जनाणा मरदाणा अर खेनळा बाबो री थेह करणीजी अर सती माता रा मढ रामस्नेहियांळी रमणीक जगां इत्याद इयै बास ओपै। पारीका रै बास में उवा रा धरमसाळा सोभै। हरिजना रै बास उवा रा मंदिर सड़क सारली सुहाणी छतरी, मुस्लिम मोहल्लै मस्जिद स्टेट बैंक आमवाळा रा धरमसाळा रा० उ० प्रा० कन्या पाठशाळा, ठाकुरजी रो मंदिर जैन मंदिर अर उपासरा, सत्यनारायणजी रै मंदिर में शिव शीतळा अर हनुमान बाबै री मूरत पूजीजै। गादारा रा मंदिर ही पूजारा नै सरण देवै।



शीतळा माता

सन् 1963 म इण गाव मयळ गाडर गम प्लान लागा। सन 1935 सू पत्या री सम्वनी पुस्तकालय, नम बाबा भानीनाथ री जगा-समाध भळे शिव अर बजरग भवन। मारस्वा री मावड या रो मदिर ठिकाणे रा गड (वतमान छात्रावास) वभूत सिद्ध रा मदिर अर पचायती भवन रा मदिर। अलावा इया रै खालाळा जहाज ही गुमाइजा रा थान मकान, भर जी भोमिया अर मेनरपाळा रा चौकिया गाव र स्याम-मेग सधारमगती मानीज। बाच चौवट पाणी री वणी टकी अर मारा माहल्ला म पाइप लेण रो पूरो प्रबध है। आट री चावया अर वरपाळी चक्का ता गाव म जानी जोन वपराव।

आजकळ गाव न जुवाया अर आणजा वसर भेट नाख्या है। कांग्रेस, कम्युनिस्ट जनता आर० एम० एम० र याद सगळी पारटियाँ रा मुख्य नता वा आणजा अर वा गाँव रा जुवाई! जाण हवो अनाई सूनार, माती हवा चाह नाई, सग माहिनी मलामी रै वराड खडा जमात री वगारी रमभाव। महरागी राज्य अर ग्रव मू गाया गाडा अर ऊँट वटणा र नाव वूडा ववाड, टाड अूभा मम्नी मार। पवालिया विमाण हळफळा हरिजण अर भाडेती गाडाळा रा डाग ठाट है। वूढ धमर री घटी पिमियोडा दादा धोळा बुगला वरगा चाळाधारी धनी, आछो रवम वोपारी, अक्कडवाज अय वग जिना भराम मल्ला घमणिया भणेडा गुणी, मतलव री वास वाढना अ नवा-नवोर नवाक्ट्र नना, वाळू र पुराणे नाव न डोब अर आपर मनमोब भाग न नाव माव। त्यारर पोग री उद्यमी वाता न आज री आळसी विसगत्या मे मिलायर वाड विस्मत वीरम मवार ठा नी? पण इण मेर रा अूवर्यो सूवर्या टाडा इना रमवत ह वे वडू व-वळाप मनी दिनग आयण दो गल्का वात्णा हा पर।

नाळू वळवर्त्तं रो अेक टुकडो सौ-सौ वोमा गेठ जाण अूच अूजळाप आण रग भळव। मारा समाज तन मन धन सदा काज वधार। माल्खरया रा आजू सो घर पूरा नही पण आज सू करीब अम्मा माल पत्या स्व० फूसारामजी ववर अूचा आया अर मरवजनीना सुग उपाव वरमाया। गाव र बीचाळ सू राजगे गर जुटायर् आयूण घाट टुवाया अर अुव री जगा जमीन, सगी गाळ भोन बडी धरमसाळा वणाई। जका 50 वरम वरोवर गाव वुळ मदरम री मिक्षा साम वाम आई है। साग उव जमी माय मत्यनारायण जी रा मदिर अर कु ड भळे चिणा दिया। सुद गोवर माटी रै कच्चै घर म वस्या पण वि० स० 1964 म तूणवरणसर र अधविचाळ राम्त जनता री दुग फोनी मटण सम री खूबी खमर टूटी प्याऊ वणागिया। अनाण मगेवर न पक्को करावण रा काम पत्या फूसारामजी माल्यो। पुण्य री वाड सदा हरी हन। धन वध्या अर ग्राम कवि पुरखाराम कथ्यो — फूमा नागी रे तर अर धरम री रगी। उव समै आछा वाज करावण साम फूमाराम जी रा सलाकार सजागी दिल दरियाव सेठ भेरूदानजी कोठारी रघुनाथराम जी राठा अर दयाल पन्ति गणेसाराम जी सारस्वा हा। फूसारामजी री लीव माय वतमान सम म मेरमलजी दूढाणी गाव म जन हिताय अेक वग अस्पताळ भवन वणार दियो है। उवा ब्रह्माणीजी रो मदिर वभूतसिद्ध री साळ अर स्कूल रा कमरा इत्याद काम अठ पूरा कराया है।

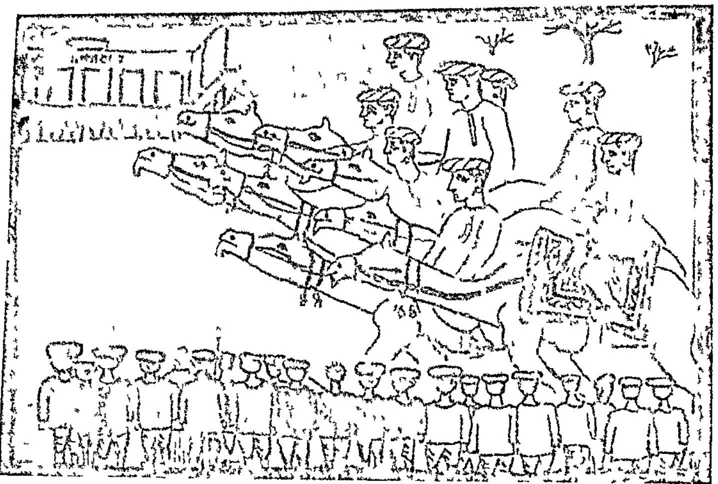
एक सेठ र घरा हथाई मारा र होक चिलम खातर हर हफ्त तम्बाखू रा घरट पीसीजतो। ब्याह साव री अेक वनोरा म दस मण पक्का गुड वाटाजतो। ओसवाळा रा ढाई सौ घर। पर उवा म सेठ मुगनमल नाहटो वाज्या। पसठ साल पल्या ही आज र बगला न मात करणी टाडाळा हली चुका मेला। नाव माम चौकी ठाण ऊट घटाजू टाढा आवता अर च्यार साग अर चारा राटी गादी पार पावता। सठ सठाणी मिव पारा र रूप छैकट अूनरी मूनगी लूगी लाणी रसोई जीमर सनुम्ट रवता। उणा र अजास नाहटा रा वास ढार्ज विघा वाज्या है।

मनोहर सस्कृति साम काळू पिटता वासा काज्या कावा कँवळाठा कासमीर अर सौदागग्यिा दलाला र कानपुर रा काज मार। इय री जपरी मोनियाण नखलजू नवावी तथा काळका माता री स्रद्धा भावना मुमई माता रा ठाट दिखाळ। अठरा माठा मतीरा दोहदवाळयान कावुर मवारी हूस विसराव। गावावू सस्कृति म गजटा भगेडी तथा माज र सवगा री टाळया कातण भजना जुवया री जूला अर रीगला री रीला चलावँ। माधा रा हरजस भानानाथ रा जाण्या पुरख-ऊम री सारया सुण्या ही जाण्या। दूहा-सूवा वभून रा टाल, वसर क्वर रा छिया देम्या मन टुल। अठ र छोट कथ गीत री दस प्रसिद्धि है—'काळू गटरा जाल्मो काई गधूमर री नार छोटा वाल्मा।' घूमर घिदड भावा रमता जागीडा सारगी जजम जी जनता। म्हामानखा अपजावणी या गेडा डरी सदा सू सरी सुखा राना माता अर लूमी झूमी रवनी आइ है। इय भोम रा माणस हर काम म अगवा अर दूर दूर— काळू रा सा जाणी वाज।

काळू वगा लठो धींगड गाव, आजू बाजू वासा मिर मोड कहीज। कवत म— सर (लूनकरनसर) रा साठ अर काळू रा आठ तीखी लाकत वरोबर मानीज। गाव री ममा च्यार कूवा, अुवा सू अडर लामा चौटो गुवाड। कार नाणी डाढा टाडो दरसावता। दस साल पल्या गणगौरया र त्यूहार माथ ऊटा री दखण जाग दौड घुडदौड हुया करती। पल्लू रा ढोल मूडव अर चुटाल री दणघट तथा काळ रा गौर इय कारण वागड वाजीती ही। के दस कटकळिया मासरा दस नी काळू री गणगौर।



गण-गौर



गणगौरोत्सव पर काळू म ऊंटो की दौड़

इसो नावड या जद च्यारा कूवा रा मारग ही निलाम करा नाख्या। ईसर गौर मारीणा कूदा आव, पण अूठा री दौड बिना अटूणा ही विला जाव। घुडदौड री रगा मिनखा री पौड वाज। इय दिन गळी म अेक अखाडो पहलवानी रो पाटो छाज। कार्ठा हर्म्मी काळू राजक राज।

रम्ब काळ रो बाद बखाण? अवा रा कल्याणी आत्म है काळू! नी तो अठ कोई करोडपति-अरबपति अर नी भूख मू मरटा करतो ठिय मू ठरकायर खावणिया ठोठ कुमाणस! देवी चोखी दाळ रोगी मेर गज मज रो गुजरान चार।

धरती री निछरावळ अर मारी रा टीका म्हार माथ जी सूणा। राजस्थान अर राजस्थानी री दोना ववता आरती उनारा माला फेरा। जगदम्बा री जै जकार काळू रा खासो खिर। चारन्यू वारा मागर या मूरा रग री डारी मनवारा उड।

काळू रो याम इत्ता सरजीवण के, गाव रा भाणजा अर जुवाँ मग स्य र अभमान मे अकीड मकीड ज्यू आरा टुरड हुया फिर। नेखक न गुणा लाध! हवा च्यानणी अँधेरा-तावडो वणराय वरमाळा मास मवरा वग गिगण सूरज चाँद सग वत्ती उदारता वखेर। पण आज री गुण बिगावर वारी बागदी राजनीति प्रकरनी रा जूना सुग खोस खिगाव। साहित्य सास्कृति समाजी अर धरमी भावना र अूपर चढ। इयँ वास्त जी मारो नी रव। सरस्वती पुस्तकाल्य र सेवा विकास कामा म भाग लेणो चावा पण हण री घडी इय री पुस्तक तथा पत्र-व्यवस्था प्रमाणिकता अर एड सग बद, सन 1951 तारी 25) रु० मासिक सू गट मिरघाठी फाडला रा अजडगी। उवा री पाछी पूरणी आमा कीर माग लागैं? चौधर तो अठ उवा री चाला अर चालसी जवा घणगिणत कडूव र घमड निरगुण लाठा विणज करता फिर। सा सस्थावाँ न सजाग कामा सू पूरी करी पण हम्म कुण जाण? मन रा टूवा लागू सेवा री भूख वगा मिट? पण जाणनिया जाजू जाण।

हू काळू म मिनख और मिनखा रा जाया
करता आया काम मिनख पण सदा परगाया
बुरा कामडा बिसर, मिनख गत मारग चाल
धरम नीत वावार, करम गुण सुगणा झाल
सेवा नीत सुवार र पण जन जन कारज सारता
दूबळा न दाव दगावण प्रभु चरणा चित्त धारता

दूजो पडतग

सस्मरण अर सूझ—

गाव र उतराद नाक काळू रै दूसर वास री पुराणी थेह म सगळिया टीगरा माथ टोपडिया चरावता घरा री भीता-बीळा, राख धोळी रा दडवा कुडकुडी, कुव री मेळ्या रा सनाणा जूनी जाळ थाडवया, घट्टी रा फूटेडा पाट पुडिया, भाठा दगडा थेड, गळ्या रै गेड घूम फिर'र ताम्बाला बादसाही वडोडा टक्का, गोटिया पइसा अर नारळी-रा चूडी विलिया कचकोळया रा टुकडा टाम घणी विरिया म्हैं हाथ फेर्‌या है। हम्मैं यो थेह खेडी रूप है।

गाव र आथूण कराड वसती वासा गाव रा थह भळे बणग्या। वासी म करीब बीस पच्चास घर वसता मन चेत है। वनमाल म वासी जर काळू आपसरी म अन्न मिलग्या क न्ना वास जिसा नी दीख। वासी रा केई घर बठीन सू अठर अठीन आ बस्या अर दानू गावा री काकड अकामेक हुगा। खतळाइ ज्हाटा वासी रो ह अर अनाणा काळू रा, पण हण दानुवा माथ काळू रा पमुखत जर गट रम नजार पाय। मानाजा री का र कनार चिपत गाव वासी र थह री रयात वनमान सम म गाव वासी अर काळू दा ना है। वासा री मुमाण भोमकाळी जगा ता काळू म आम्थाटा टावर मोटा हायर यारा मरक वस्या। पल्या काटू री तीन बावना गाही ही, हम्म रहार चिपती वासा अर भानीपर री राही भळ माय रळगी। वासी सफा सूनी (उजड) होगी। वया ता सुणा कन्ही वासी भोत वडो गाव हो, इय म हो तीन मौ घाणा नो तेल्या रा वसता। वासा र पुराण कूव रा बेळी मोठा अेक कोम जायूण आधा सामाण धोर री जडा म बूरीज्योडा म्‍या है। पण केई घर म्हारी देखणी मे काळू नडा वसता। काळू र कूव पीवता तथा जादुवा र कूव म खरच लगाव रो साचो राखता। लेखा पढ़ी रो कागज हो चार आना खरच रा पातीवाळ हा। ओसर मोसर ब्याह साव अेक दूज र जीमता। एक जगा सू दूसरी जागया हला मार्‌यो सुणीजतो। सवत् 1976 म वासी र माट लेघ लार काळू अर वासी र वामणा न लूठी विग्मपुरी हुई। उव मम गाव काळू र गोदारा अर जाणा री दो बेटी रेघा म परणायोडी ही, जिकी वग थापरै घण्या न लेयर पीहर आ वसी। लेघा जाटा रा सात आठ घर, घेडू अर जांघुर जाटा रा घर, चारणा रा घर मगवाळा नायका रा मोकळा घर अर अेक जसू ता नाई तथा सिवलाल विरामण ही वासी म वसता। हम्मैं वासी म अेकर खड्या करणीजी र मन्दरै काळू रा लाग आज दरसणा जाव। सती माता रा थान ढह पड यो। वासी र मालर बीकानेर रो गला वग, पण हम्मैं इय री थेह म लोग खेत जोत। वन चिपत माघाळ धार (जगरा) शौकीन लाग वाज वाजे गोठा तथा घूमाइ कर।

वासी चारणा न हीं। ठाकर उद्दीदान री काटडी गराड गजड कन धार रै ऊचाव आछी आपना। दूजा पातीवाळ राजस्थान र प्रसिद्ध रयात लेखक दयाल्दासजा[1] रा पडपाना गाव कुबिय रा ठाकर आवडदान हा। न्या आपरा गाव न्यारो वसाण खातर इयर वास खिल्रे र उहाड माथ सवत 2000 म नू वा कूवा खुदायो। कूव रा पाणा मीठो दूध जिसा निकळ या जिको अड य भड य अेवड बाळा र आजू काम आव। पण वामी रा मारा वासि दा काळू म आ वस्या। सवन 2011 मे या गाव सफा उजड'र थह हुग्यो।

वस्व काळू रो बाजार गाव र वीचाळ। दुकाना कपड रा गल्ल री मणियारी अर मिठाई री माळळी है। चाय रा हाटल सब्जी री दुकाना, मोच्या, सुनारा वा खाती-सुथारा अर सस्त अनाज री दुकान काळू ग्राम सहकारी समिति री कानी सू चाले।

अठ रा घणा लोग मती खडिया है। खेती र साथ पसु पाळण घास फूस दूध घी अर उन विक्री, वोपार नौकरी, मजदूरी तथा केई पुराणा पसा ही पेट चलाव। पुरख अूटा सू खेत वीज अर गाटा ही वाव। नारया उवा री मदत रर। प दर सान वन्या लुगाया रा घणखरा जावण पाणी ढावण म बीततो। इय वात पर पल्पान मन 1960 म श्री गिरधारीलाल जी नबर ध्यान दिया अर गाव न सार गल घाल्या। उवा पाइप लगाया अर क्यारु कूवा वोरिंग करवाई। तठ री मसीन सू कूआ चळायर पाणी री वहुनायत उपजाई। कूआ र कारण काळू म रात री गैनक चोखी रगीन वण। आयात निर्यात यातायात रा टक, आर्थिक लाभ लेवण काळ र टाड आव जाव। कुदरती उपज भाटा चूना पण उद्याग व कळ कारखाना भटा अर आन रा चावया ही है। दूध री सहकारी समिति अर फकार जिस एक रा हरिजन री बुनाई डेयरी व्यवसाय अर कुटीर उद्याग रा कारज कर। पण वड व्यवसाय र अभाव म डू गरराम जडा मिस्त्री, माटा वोपारी अर माव्ळा मजूर ठाला सा बाला बाला डोलता दरम। का बार जायर माण मोथाब पाव। गिरधारीलालजी नबर री गाव हितचितकी आत्मा जठ कठ ही है इय कमी वगी कास कुढण करती हुवली।

भळे ही पण इणा अभावा मे खेड री माटी अठ जगमग जात मोटी आत्मावा उपजाव। हेठ थोडा पुराणा अर न वा नावा जताव्।

काळू र पारीक ब्राह्मणा म स्व० सग प० सगरामजा जगन्नाथजी प० चेतराम जी पारीक वखत रा पडित अर माटा मिनख मानीज्या। सारस्वता म प० गोधूरामजा भूराराम जी अर श्रीरामजी जोड रा पडित हुया। प० गणेशारामजी वद पुराण व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष अर आयुर्वेद रा प्रकाण्ड विद्वान हा। सन 1939 40 र कन पारीका म लाधूराम पारीक अर रमाकान्त त्रिपाठी आयुर्वेद री भणाई भणर आया। इय साल ही स्व० सूरजाराम पारीक हाइ स्कूल पास करी अर वक री नौकरी झाली। सारस्वता भ श्री दुगादत्त सारस्वत अर रूघराम पुजारी अनक उपाध्या

1 सुणा—सिढायच दयालदास रा जरम गाव वासी रा हा।

- विभूषित होयर शिक्षा नान, कम काढ ई याद भू चा कामा म आगीवाळ पंडित बण्या। प० दुर्गादत्तजी तो अंग्रेजी अर बंगला साहित्य रो ग्यान ही लिखण बोलण मे चावा बणा दियो है। प० चेतराम जी पारीक रो डावडा स्व० जनारायण पारीक सन् 1940 र मसै डूंगर कॉलिज र फैल्ड स्नातकी बच म इंटर पास करी। उवै मस बाड री परीक्षा ही अजमेर जायर देवणी पडती। पछ मान श्री गिरधारीलाल मवर इत्तो पढाई छोडर आया पण जमनारायण मम पन्डो कान्जी टावर भळे आया। गाव म मनोविनोद, सुधार, रचना अर राजनीत रा काम्ज पूरा होवण लाग्या।

इया सू पल्या माहेश्वरिया म आदू नागरिक बद्रीदास जी राठी पूमाराम जी मवर जीवणरामजी डूढाणी इत्याद गाव रा आछा कामा चढया। पछ गै ठाई र बाळायत मारु बीजराज जी नाहटा अर भन्दानजी कोठारी आग बढ्या। माहेश्वर्या जुग धम प्रथा-पथ गाव सैंरसारणी अर चिरमपुर्या माथ जार लगायो। आमवाळा वधका ब्याव-सावा रे आवा-जावा तामून कमायो। उव वखत एक जाट अमराराम मारण ही वाणिया समत सार गाव न खाड र सीर अर चिणा चावळा गै सम्मारणी री जीमणवार करी। मूळचदजी मवर आपर बाप बीजरामजी र नाव माथ बीझाणो ज्होडो वणा दिया। मूळचदजी न खेता री कुड बावडी अर तळाई खोदणन जावता कोई वसळा लेवो उत्तर नी देवता। उवा स सग इरता। वै आपरो सागीडो सहारो देवता थका पाणी री ठाव माटा वधावण री टाक लगाया जावता। कोई अनाथ सनाथ री लाध जावता अर कमी-समी माम आपरो मच्याडा पूरा काठ दिरावता। म्हारा मामोजी राळूरामजा चिचतर री सग मू लगायर मरया जठ ताई वाथ नावता जावता जुड्या। वतमान मम म हरखचदजा, राठी इय रण मार चालर आपरा नावा अधाड्या। आसवाळा म लोगाचदजी कोठरी (नाटोडा) काम काज म आग रवना। आजकाळ भरू दा न माट इय काम पण पर पाळा नी माट। अ भाईजी राठ, राफण अर मसाणा रा सावजनीन सस्या वणाणी चाव।

अठ गाव विकास सू परया चिकित्सा चलण मर गगाजी श्री गणेशलालजी जति आपर मार्ट मिस्य श्री किसनलाल नै आयुर्वेद री पूरी पढाई करवा दीनी। श्री किसनलालजी वि० स० 1975 म ही वैद्य वणर काळू आग्या। उवा न तो लाग देखता—वि० स० 1985 86 नैड श्री डूगरगढ, सरदारसहर इत्याद मग कस्बा सू ठेवण पुगावण न कार आया जाया करती। रणा आपर माइना म नूवा मनोरजण करावणं मोटर ही नही चूडीवाजा पेटीवाजो दडा (फुटबाल) अर गोठ गफाटा री तजवीजा ही शौकिया मरु पात करणी पळाई। रणा रा गुर गणेशलालजी हत आया हर साल गुड्डी उडाया करता। उव र पूछ मे छोटी लालटण जळायर ऊची चडा देवता। आस पास र गावा ताई दीखती। गुराजी रा दूसरा छोटा चेला गोविन्दरामजी ही आयुर्वेद मे चोखा चतर हाग्या अर उपासर र औषधालय सू घणा बरसा ताई जनता री आछी सेवा चाकरी सभाळता रया। इया दोनूवा गुरू भाया रा भरासा अर जस अळा ताई जमग्यो। लोग इया न बाबा नाव सू सबोधण करता। श्री किसनलालजी न लेवण खातर दूर दूर सू धनवान सेठा री मोटरा आया करती अर व जायर झट रागी न स्वस्थ कर र सुख लाभ पावता। सम री करामात गुरू अर भाई मान दिया। इमै वरसा सू या औषधालय वद हा। लाखा री नगदी अळेवण

अर उपासरा जन समाज र जिम्म करता थका श्री बिमनलालजी ही सन् 1977 अप्रल मास माय स्वर्गं सिधार गया। उव आपर उपासर मे सस्कृत, प्राकृत अर हिन्दी साहित्य रा पुराणा हस्तलिखित दुरलभ ग्रथ ही सावत छोडग्या। व कवता—' म्हारै वन अेक पन्नो अर पुखराज ही घण मोला है।"

महत श्री सेवादासजी रा चेला श्री मघदासजी स्वामी ही आपर आसण बठा आछा वद हा। व कडू-चिरायतो, चूरणफाकी, अर गाळी गुटको हाथ रै उत्तर वरताव बुगचडी बाँध गमता। उवा रो सम्पक सेठ श्री रामगोपालजी मोहता बीकानर सू हा। माहताजी इणा र हाथ दवाई वगरह सायता, हरिजना अर गरीबा न अठ बटावता। पण मादगी र सम स्वामीजी हरेक र हीड हाजर रवता। राज म पण हा पट्टाला ऑफिसर इया न चावता। अ प्राय बीकानर आवता जावता। उवै वखत गाव मे दूजी ठौड चग अर धीदड खुल्या नीं हा, पण स्वामीजी वाळ मिदराग, हाळी रा जडा सोल सालीणा पूरा हावता। वि० स० 1994 र उतरत फागण मे पूरण वराग्य मना श्री मेघदासजी रा पडदा इहलाक सू सजड ढकीजग्या। खेल तमासा, जागण हरजसा गाव म अेकर ढववाळ आई अर उवाँ सता री वकुठी जवान सेवका रै काधा गाव गारवदेसर पौंचाई। उव सम महँताई री गादी आठ वरस रै इया र चेलै श्री विष्णुदास महत वणर सभाळी। श्री विष्णुदास सत त्यागी ध्यानी भजनीक अर आदर्श कथावाचक हैं। हम्मै अ ही बोखा बडोड अर जाट दाता वारा जोजर-जीवण वद है।

सेठ सुगनमल नाहटा र आपरा हवली र अेक कमर म पजाबी पागाधारी वद्य वू टारामजी सभ्य आयसमाजी बारमासी (वि० स० 1980-97) रवता। फूसारामजी सवर रा बटा री हवली अेमारी बमारी र मौकै बीकानरसू प० भरवदत्तजी आसोपा आया जाया करता। आपरा घर औषधालय खोल्या चूरू रा श्री ईश्वरी प्रसादजी सारस्वत(इया ता माथ मास्टरी करी—सन 1933 34) अर रतन नगर रा अजुनलालजी महर्षिया (सन 1939 42) तथा यूनानी हकीम (सन 1931) आद अठ रया।

घणा वरसा सू अठ रा वद्य श्री लाधूराम रामगढ तथा श्री रमाकात बीकानर सू पढर आया अर आप-आपरा श्रम सू दवा-खाना (श्री भवानीशकर औषधालय अर श्री कालिका औषधालय) खोल्या जका वि० स० 1996 (सन 1940 41) म चालो चाल्या। श्री काळूराम जी वर्मा आपर अनुभवाधार माय बी० श्रेणी रा विदवा वद्य हा। उवा स० 1987 88 म पडित गाधूरामजी सू पसारी री सारी दुकान माल ल ली अर सन् 1954 55 म उव न० 3152 म रजिस्टड हाग्या। इण आळया रा लखक ही बोड ऑफ इडियन मडिसन राजस्थान रजि० व० श्रेणी बी० न० 3898 है। पण लिखण र लालच मे आयुर्वेद न असतोषा सा दगाग्या है। डा० गर्मासिघ री चौधरी क्लिनिक आजकळै जहर सेवा सलग्न ह।

इमैं काळू र मौजूदा लाक जावण सती पढाई वढाई, धम अर ग्यान वृद्धि र वधेप साम्ह जके सस्थावा चालू काज है, उवा रो थोडो बग विवरण माडू—साधा सता अर गुरुवा री पढाई ता काळू म आल जुगाद सू चालती आई है। पण राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय काळू री विकास मारफ सन 1933 मू ही अटूट है। पल्या रा अेक

पुराणा रजिस्टर (सन 1908 9 रो) म्हार हाथ लाग्या है, (रजिस्टर हाजरी वगरा विद्यार्थियान पाठशाला काळू राज श्री बीकानर बावत माह नवम्बर मन् 1909 ई०) जक म गाव रा बूढा सू बूढा मिनखा रा छात्रा र रूप म हाजिरी समेत नावा मडियाडा है। उव छात्रा रा बटा पोता है पण खुद जीवता मे ता कोई गिण्या मिण्या अेक-आध मसा लाध। बाकी रा री जिनडी कदेगी पूरी गई। हैडमास्टर र खान आग नाथूलाल ता० 1 2 सन् 1909 ई० ह। इय रजि० म वल्दियत अर कौमियत रा घणो ध्यान राखीज्योडा मिल अर छाटा नावा रो चलण घणा दीख। जया सेतिया मघला, चूनिया रखला। हैडमास्टर री जगा मन 1910 म अेक अध्यापक (T Singh) हैडमास्टर र खान ऊपर अंग्रेजी रा दस्तखत करया है। आग शिवबक्स व नानकचद रा ही दस्तखत हुयोडा है। हैडमास्टर रा दस्तखत एक जगा उर्दू म ही आव। मन 1911 म अंग्रेजी मे Babu Ram ता० 30 4 11 ई० हैडमास्टर रा दस्तखत है। पण काई हैडमास्टर रवता अर किमा दूसरा मास्टर हा अेक हा अध्यापक लखाव।

आग जायर रतनगढ रा निवासी आदर जोग आचार्य श्री गुरुदत्तजी पडित झवरा र बुलाव सू टाबर भणावण काळू आया। अ लालावती र हिसावा रा जाणी कार अर सस्कृत रा विद्वान हा। प० श्री गणेशाराम जी रा पठ सू सठ अठ ल्याया। गणेशारामजी रा रतनगढ पूगी जाव जाव हा अर व अठ वगी पडित, पुजारी वद्य र हकीम बठ सू ही ल्याया करता। श्री गुरुदत्तजी मन 1914 15 नेड रयर पाछा रतनगढ उठ गया। उव मम इया रा आधूता चेला तुळसीराम मवर लालचद राठी हा।

सन् 1928 म महाराजा गगासिंह जी बीकानर राज म अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा लागू कर दी। उव बग्मही अठे पट्टे री तरफ सू राजरो मदरसो खुल्यो। पण म्हैं सन् 1928 29 ताई उव मे पढियो हूँ। म्हारा गुरुजी श्री आसारामजी शमा रवाडी रा निवासी हा। टाबरा माथ चोखो आकम राखता। बदमासी करता जावता ता रास म गाळा ठोकता अर डडा धरकावता।

गुरूजी ठिकाण र गढ म रवता। दस बज्या गढ र धार दरज सू ढळता म्हे दखता, डूढ घाल लेवता। व वृद्ध रामायण पाठी हा राजीना आवी छुट्टी मे दाहा चौपाई री राग सू रामायण बांचता। सिर सिरखा र सम दुवारे दवण टाबरा र घरा पौंच जीवता। टाबर सग जमावस पुन्यू रै परव पूरा रमाई पुगावता। वटी क्लासा म कन्हैयालाल डूढाणी जेठमल मोहता रामश्वरलाल पारीक, रामरिख पारीक ईसरचद गोल्छा पनालाल बाथरा कासीराम लिछमीनारायण राठी, गुमानदास बरागा अर कानाराम सारस्वत जिसा कग त्याग पढता। उव वक्त दूजी श्रेणी में मघाराम राघाणी मघाराम मारस्वत मघराज मठिया काठारी अर मघराज झवर आद मघा, नक्षत्रा छात्र पढ्ता। पाचवो मघदास बरागी मदरस भणन जाया जाया करता। म्हे छाता वाळव वठई लार अ० व० म बठता। चौथी री परीक्षा बीकानर लागती। म्हे थोडा बडा हुया अर गुरुजी गया। उवा पछ यू०पी०रा० श्री भगवानदासजी हैडमास्टर आया। छेकड सन् 1930 म श्रा परमानदजा र जमान राज आपरा मदरसो मफा उठा दियो। जामवाला अर माहश्वरिया रा धमशाळावा म आप-आपरा प्राइवेट मदरमा पाछा चाल्या। सन 1930 31 म श्री गुरुदत्तजी न मवरा भळ बुला

लिया अर श्री सुगनमल नाहटा र घरा श्री शिवप्रताप जी पुष्करणा बीकानेर सू नथा ताराचन्द अर चाणक्यप्रसाद भठे ल्याया गया। हमक गुरुदत्तजी रा खास सिस्य श्री दुगादत्त, रामकिसन नीथाराम अर रामू उठी रया। म्है ही उवा कन गीता, शिव मन्दिर तथा लघु सिद्धा न कौमुदी रा श्लोक सूत्र कठस्थ किया करतो। शिवप्रतापजी[1] रा मुखिया चेला भीखमचद राजमल, जवरीलाल नाहटा लाभाचद दूगड मगतमल विरधीचन्द गोलछा राधूराम भवरलाल वारड हा। दोनवा मदरसा मे कदे ही लडाई रा वातावरण ही वण आवता।

अठ गाव म प्राइवेट स्कूल किता क दिन चाल हा ? सन 1933 ताई दोनवा मदरसा रा मफाया दिखाव लिया। विजसिघ जी र पट्टे री तरफ सू काळू म पाछी राज री स्कूल खुली। भाग जाग सू आदश अध्यापक श्री सूरजमलजी पालीवाल मकमा तालीम सू भिजवाया गया अर सन 1937 म अठ वाळा डाईरेक्टर बी० ए० इग्लिस न बुला ल्याया। सात अेक अध्यापक (श्री मगळराम) न भळे मन्या अर मायता सरुप स्कूल री मा यता वकसाई। सन 1940 म अेक तीजा अ यापक (नारायणदत्त शास्त्री) ओजू वधाया। सरकारी अेड दवण र साग पट्टा स्कूल काळू मकमा तालीम र हेठ आया। खरचा पट्ट अर मैकम सू वराबर भेळा लागता।

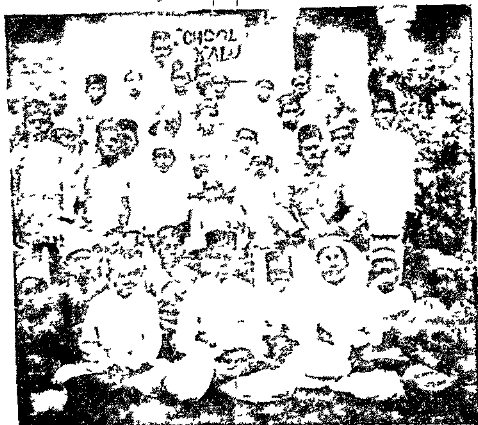
सन 1941 जून मास पट्ट रा मौजूदा सुपरवाईजर श्री जसवतसिंघ (बीकानेर राज्य रा मिनिस्टर आफ पब्लिक वर्कस डिपाटमट) वर ठाट सू काळू पधारया। स्कूल न अंग्ला वनावयूलर प्राइमरी री वचन फरमाया। उवा र हुक्म आगली जुलाई म डाईरक्टर श्री जुगलसिंघ खिची एम० ए०, बार अेट ला स्कूल देखण आया अर अपरला वचना न साचा करया। मास्टर पद तीन सू वदर च्यार हुया जिका म डणा लाइणा र लेखक नानूराम सस्कता री स्थाई नियुक्ति हुई। राज्य री सेवा मास्टरी सारू सस्कता रा काळू मे ही नहा आखा तसील म पलो नावो है। थाडा सो चेत आवै— महाजन गाव रा श्री लालचद खवर उव वखत भाऊ राजकीय विद्यालय चूरू म वाणिका मास्टर वण्या हा। वाकी जगन्नाथ (जतपुर) भगराम (लूनकरनसर) वद्य लाधराम (काळू) आद सग पछ लागोडा है।

सन 1941 म पली कलास म घनराज डागा रिद्धकरण पूगलिया वशीलाल नाहटा शिवनारायण डूडाणी सुगनाराम सारस्वत जेठमल नाई लूणकरण भीखमचद विरमचा हरिराम स्वामी कानाराम वरागी आदि लडका पढता हा। दूजी कलास म गोपाळचद डूढाणा, जेठमल राठी मगलचद भादानी माणकचद साड गिरधारी लाल नाहटा भवरलाल, साड गोवधन गजरगौड फूसाराम खाडल भवरलाल किसनाराम खडेलवाल गिरधारी मल, बुधमल बाथरा रामेश्वरलाल तावणिया पूनमचन्द खवर, मोहनलाल, सोहनलाल (द्वय) पारीक मालचन्द सेवग मोहनलाल दर्जी आदि लडका पढिया करता।

सन 1947 र अप्रल सू या स्कूल स्टेट, पट्ट सू कावर आपर आधीन ले लियो। पाचवो कक्षा खालर स्कूल लोअर मिडल वणा दियो अर साथ अेक चपरासी री जगा

---

1 शिवप्रतापजी काळू सू श्री डूगरगढ जायर आपरो मदरसो खाल्यो।



सन 1936 म प्राइमरी स्कूल रा अध्यापक, भणनिया टाबर जग जय ।

1 जोरमल राठी

बाय स्यू दाय (1) भीखमचन्द सठीया, पन्नालाल मवग जवरीमल नाहटा गणेशमल माट अस्थायी अध्यापक एन० आर० ईशरचन्द साड माणकचन्द नाहटा गाधूराम मवर गढ का चपरासी

(2) अर्जुनराम पारीक, बुद्धमल गोलछा, लाधुदास बरागी बुद्धाराम पारीक कन्हैयालाल सुनार निहालचन्द दूढाणी कुर्सी पर श्री मगलदास (अध्यापक) भवरलाल वैद (B) हनुमानमल दूढाणी माणकचन्द गोलछा श्री सुरजमलजी पालीवाल (प्र० अ०) मेघराज साड (B)

(3) नीचे पक्ति म बठे हुए

भीखणचन्द बारड, मालचन्द बोथरा, रामेशरलाल भवर, भाखाराम खाडल बद्रीनारायण झवर, मागीलाल (T) मोहनलाल झवर, मानमल लोढा, मदनचन्द दूटाणी ।

दे दी। सन 1951 म कक्षा छ अर 52 म सात सू सठ क'र'र पूरी मिडिल कर दी। उवें समें मास्टर नौ अर रजिस्टर म छात्रा री सख्या 225 लिग्योडी ही। सन् 1953 म आठवी रै पैल बच म हसनान द्रय (स्टाग्री सिधा) घमचद विरमेचा मालीराम खोडिल गारधन (त्रिदासर) स्यालीगाम मानी (गणेशगढ) शिवराजसिंह रधावा (बीकानर) इत्याद छात्र हा। उवै समय श्र. जुगलकिशोर भारद्वाज रामचद्र मालकी, रामप्रसाद सुदरिया, कुदनमल शमा, नानूराम मस्कता अवतारसिंह अर दाऊदहमन आदि मोटा मास्टर मानीजता थका बडी मन्नत सू पढाई करावता। हैड मास्टर श्री जयनारायण रया।



रा० मि० स्कूल कान्रा अध्यापक (सन 1954 म) बाये स दाये — सवश्री रामचन्द्र मोल्वी श्री नानूराम मस्कर्ता श्री कुदनमल शमा श्री वीरबल शमा (च श्रे०) श्री अवतारसिंह श्री नानूनाथ योगी, श्री जयनारायणजी भार्गव (प्र० अ०) श्री जुगल किशोर भारद्वाज श्री शमसुद्देन श्री रामप्रसाद मुदरीया।

सन 1955 री छात्र सख्या

कक्षा	8	7	6	5	4	3	2	1
छात्र	12	18	18	16	20	26	33	75

सन 1954 म छात्रावास वगो श्री अमरसिंघ जी काळ म वण्योडो आपरो सुहणो अर रमणीक गढ सगळ सामान समत सूप दिया। लालगढ र शादूल निवास महल म बढ्या काळू र गव र सारा कमरा री चाब्यां म्हा लागा न थलाय दीनी।[1]

1 इयें गढ़ रा छात्रावास र नाव एक काळ सन र मास्टर आपर परिवार समेत मास मात लाभ लिया अर गाव वाळा न भोळायर राज री सस्था नी वणण दियो।

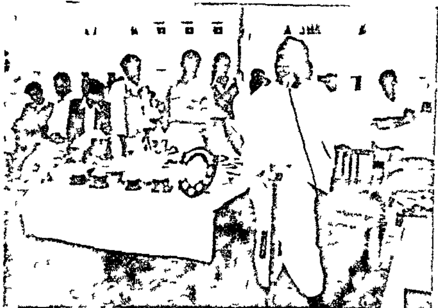
उठै सम मिडिल स्कूल रा अनुशासन आछ्या हा अर प्रधानाध्यापक श्री जनारायण भार्गव हा। सुशील बाळक उवा री आग्या पूरक मदद करता। अठै सन् 1944 सूं बालचर शिक्षा में बाळक भाग लेवता। ड्रिल वालीबाल फुटबाल अर देसी खेल भी करवाया जावता। पुरस्कार प्रतियोगिता अर पाडोसी गावां सूं मैच लिया जावता। सन 1954 रै सत्र में अठै तसील रा टूर्नामेंट घणै उछाव सूं पूरा होया। उवं साल स्कूल में ऐन० सी० सी० भी पळाट गई। बारै सूं आवणिया छात्रां नै अठै गांव सूं वजीफा दियो जावतो।



टूर्नामेंट रै समै छात्र मार्च पास्ट करता हुआ (दिसम्बर सन 1954)
श्री दुर्गाराम श्री जुगराज, श्री मालचन्द माड श्री हनुमानमल, श्री डालचन्द
श्री भंवरलाल आदि।

1 जुलाई सन् 1956 में स्कूल हायर सकेण्डरी हुगी। डाकूराम डूढाणी, दुर्गाराम जोतकी बंशीलाल बिरमेचा जुगराज नाहटा अर हनुमानमल राठी पांच लडका सूं नवीं कक्षा सरू हुई। पैल्यां वाणिज्य अर कळा रा विषय राखीज्या। पछै वाणिज्य री जगां (ई० सन् 1966 में) विग्यान रा कक्षावां खुली।

सन् 1955 ताईं स्कूल सवर धर्मशाळा भवन में ही लागती रही। स्कूल रा आपरा भवन अधूरा पड्यो हो जका री नींव श्री अमरसिंघ साहब सन् 1946 में आपरै नजराणै रा दस हजार रुपया देयर लगवाई। गांव रा धनी मानी लोगां रुपिया हजार पच्चीस आपरा अर दस हजार सादूल बार फंड रा जोडर भवन नै सन 1954 में पूरो करवायो। पछै तो उदात्त नागरिकां री ओर सूं इय में केई कमरा बणाया गया। आज रै इस भवन—19 कमरा सूं ओपै। लारै खेल रो पूरो मैदान उवं री पक्की चौड़ी नं चार नै भवन सूं पता थका आवदन पत्र रै साथ जोड दिया जको 75 000 गज जमीन रो है।



सन 1954 म श्री चिमनलालजी जनी खेल रा पुरस्कार बाटता हुया

अठ खेलाँ रा अनाखा चाव है। जाता खेल नम मू टम वध्या सेलीज। नग नेला रा प्रतियोगिता र खातर अभ्यास चाल। वाद विवाद, लोकगीत लेख मुलेख विविध वेशभूषा, नाटक इत्याद श्रेणीवार बरोबरी री जाँच रा आयोजन ही हुव। चाल सभा पुस्तकालय अर छात्र ससद जिसी सुविधावा मू बाळका न पूरा लाभ दिरायो जाव। छात्रा रा परीक्षाफळ हर साल चोखो र वै। सन 1978 79 मू यो स्कूल माध्यमिक शिक्षा बाड राजस्थान री परीक्षावा रो केन्द्र ही वणग्या है। आखी तहसील र गावावू विद्यालया रा पढेसरी अठ परीक्षा देवण न आव।

राजकीय उच्च प्राथमिक बालिका विद्यालय काळू रो भवन तो अर सन 1975 मे जायर वण्यो है पण बालिकावा तो बाळका साथ सन 1941 मू ही नमानम पटती रयी है। उव सम म श्री भरू दान जी आरा ज० वी० पट्टा स्कूल काळू म हैड मास्टर आया। उवा रै आपरी अेक जणची नाव रा भाणजा भणाणी जरूरी ही। उवा गाव म बालिकावा न स्कूल भेजण वास्तै आन्दोलन चला दिया। बात री वात हाथू हाथ कराव 30 लडक्या रा नावा स्कूल रजिस्टर म लिखीजग्या अर महशिक्षा री परम्परा वणगी। —ामश्वरी अवर सरस्वती नर्मा सरस्वती माहश्वरी परमस्वरी जानी वागरी माहना कमला राठी हीरा दुगा डढाणी, बुद्धमति जठी पुगलिया, शान्ति भवरी करनाणा, किरण भाणी काठारी, सिरकवर, गीता गालछा मागादेवी सठिया इयाद क यावा सम री वडी कक्षावा ताइ पढी। इय मू पत्या गावाळा पचायती मिदर रा पुजारा रामरतन जी जोगी न या हौला भुटा राग्यो। घणी मुस्कला र, बाद सन 1948 री जनवरी म उदयपाल अग्राल नाव रा अेक हैडमास्टर आया। उवा अेक पढा लिखी वहन

नै बुलवायर ओसवालां री धर्मशाला में मा-म्वा सा लक्ष्मण रा जनमा मनायर उवा री स्कूल त्यारी खुलवा दी अर अध्यापिकावा भेजण वेगी शिक्षा विभाग म कागज चला दिया। अध्यापिकावा आवती रयी पण जा रया स्कूल बद ओसवाला री धर्मशाला कर माहेश्वरिया री धर्मशाला म घेरा घालती वगी। जान बरात आया छुट्टी करणी पडती। अेकरस सन 1973 म पचायत री रुपिया ऊपर म जमा देवर उपसरपच श्री मोहनलाल सारस्वत उच्च प्राथमिक कन्या विद्यालय रा भवन वणा दिया। सुतन्त्रता री हवा म आज री कन्यावा ईं तो पर लिखर काल री घर लिछमी ही नी, निस्व री लाड लिछमी वणला।

वरसा री वात सन उगनीस सौ उणसठ साठ रहैं ग्राम सेवा सघ काळू रै निमाण काज कन्या विद्यालय भवन वगी वगाल बिहार आसाम अर नेपाळ सू दस हजार नड द्रव्य सग्र कर'र लगाया। वट स्कूल अर अस्पताळ भवन कन नाहटा रो अेक नोहरो लेयर तीन कमरा वणाया। पण लडकी लडका र आण जाणे रा रास्ता अेक ही होवण साथ यो भवन कन्या विद्यालय खातर नी राख्यो गयो। समय री बात इय म पचायत राज्य सू सचालित लडका री अेक राजकीय प्राथमिक विद्यालय ग्यान-प्रसार हेतु सचेस्ट घणा वरसा सू चाल। चार सौ वत्ता छात्र भण अर भवन ही रा० उ० मा० विद्यालय सू होड लेव। इम्में वड हॉल समेत कमरा नग दस अर पाणी पड्या री प्रबध है। प्राईमरी स्कूल खातर या भवन जिग में पैलो है।

अठ छोटकिया मुनी मुना र समूच विकास वास्त लघु लगन कम व्यवस्था श्री रामरिख बाल वगचो चाल। पण मान्टसरी पगा सचालित बाल मदिर रो पाखा आलो उघाडो ह। इयैं कमी न पूरण रा उपाव स्व० गिरधारीलाल पवर गाव रै बीच टाइ टाला वणा राख्या। भगवान री मरजी, उवा मनसा उवा र मन म ही गई। गाव राजनीतियागळो वणग्यो, नूतन शिक्षा-सस्कृति आजू सूना सपन्तग नाच। गाया भस्या रै चराई लेण सू बीस अर तीस, पण फूल सी कवळी मग काळजा री कारा-मिनुवा री भणाई रा तो चार रुपया ही भारा दीस अर रामरिख कन आल्या अदीठ करै। आज रा अगवा धनवता न ग्यान वावळा कया जावै का अलगरजी ? पण व साच मन सोच तो अड अूजळ कारज री रोपो रोपण म साल पूरो नी लगाव। गाव म टेट सू म्हाप्रबळ जान रो वासो है पण चेनावणियै अगव रा सासो पडग्यो।

काळू र विल्कुल मध मदान जनता मे ग्यान विग्यान फलावण खातर सरस्वती पुस्तकालय रो भवन ह। या सठ मोहनलाल दूगड र दान द्रव्य सू सन् 1959 60 म वणायो ह। पुस्तकालय री अकुरित स्थापना वि० स० 1992 (ई० सन 1935) म गाव सू पाथी अर पईसा भेला कर'र करीजी। या अमर बेल श्रीमान् सूरजमल पालीवाळ (तत्कालीन हैडमास्टर स्कूल काळू) र मठ साहित्य प्रेम सू सींचीजती वधी-सधी आई है। इय रा नावा पल्पोत सेवासदन सरस्वती पुस्तकालय रया। धर्मशाळा री आलमारी म सौ पुस्तका मेलीजी। तुरत प० गणेशराम जी इय नै सेठ सूरजमल नागरमल रा क नी सू 150 पोथ्या रो पूरा सट गीता प्रेस गोरखपुर सू भिजवायो। पडित जी पुराणा अेर नला, उवा आपरी सलाह ही साथ भेजी के— राज विरोधी पोथ्या अर छापा

कतई मत मगाया, मारया जावागा। इय कामाळा माकळा लाग वरसा सू क्रिष्ण मिंदिर र पालणा हीटा खाव।

उव मम मूळचद जी राठी रा जुँवाई श्री छगनलाल जी बागडी राजगढ वाळा कळकत्ते सू अेक पोथी अर तीन चाद री फायला (फाँसी अक बलिदान अक मारवाडी अक अर पजाब हत्या काट) भिजवाई। या साहित्य उव ममै जब्त होवण र कारण म्हा लोग घरा कच्चा कोठलिया मे लुकाया राखता। पर हर सातव राज पुलिस री इ क्वायरी आया करती अर हर महीण पुस्तकालय री पत्र पत्रिकावा तथा पोथ्या रो माहवारी विवरण टाळर थाण मे भेजणो पडता। वि० स० 1996 म या पुस्तकालय शिक्षा विभाग सू प्रमाणित हुया अर कामु टा री कूड कास मिटी।

श्री फूसाराम रामनारायण थवर श्री सुगनचद लाधूराम नाहटा श्री मातालाल करनाणी, मेघराज गाळठा काशीराम राठी माहनलाल बागडी चम्पालाल नाहटा बिरधीचद कवा, प० दुर्गादत्त मारस्वत, जयनारायण पारीक नानूराम सम्कता, प० श्रीराम खाडल, जयचदलाल बिरमेचा, बालचद सठिया लालचद लोढा इत्याद मज्जना आपर दान अर परिस्रम सू गाव र बाळका न इय सस्था मे ग्यान ववेप आग वधाया। इमैं पुस्तकालय रो भवन देखर जी मे खुसी रा मार नाच जाव पण पोथी अर पत्र पत्रिकावा सरकारी एड एव पुराणा रिकाड गुम तथा पोथ्या र पगा न जायर पाछा कास म वळप अुठ। इय रा कारण आर्थिक कठनाई नही, गाव री थगडालू राजनीत है।

पाडौसी कस्ब श्री डूगरगढ रो सावजनिक पुस्तकालय आज काळू र पुस्तकालय सू घणा ऊची तरक्की पर है। उव न दखा जद वि० स० 1995 96 रा अेक घटणा चेत आव। श्री तोलाचद कोठारी री बेटी अर पदमचद नाहटा री बेटी (दानवा) रा जाना श्री डूगरगढ सू आई। उवा म बठ रा डा० जेठमल जी भसाळी रा बडा भाई हीरालाल जी भसाळी आया। मान भावा बलाया, पुस्तकालय म आया। पण मीरा नाव री पत्रिका मे सेवासदन सरस्वती पुस्तकालय काळू री ममा खबर बाचर रीस सू रात रीग आग्या अर बीच म ही अुठ भीर हुया। खबर या ही कै—'डूगरगढ दसनोक मोमासर मूरतगढ न सरम वाली बात है कै आजू लाईब्रेरी नही"। गाव काळू र कार्य-कर्त्तावा रो प्रयास सराहनीय है।' व बोल्या—'अपण आप बडाया छपा लेणी अर आया गया न देखावणी भळे।" म्हे कया— मारा र सपादक श्री जगदीश प्रसाद जी माथुर हाफेही लिखी है। म्ह कद नी भेजी। खर! चोथ दिन जान चढी अर पुस्तकालय र चदरी रात कटी। बात रो बतगड बणग्यो।

श्री डूगरगढ लखपत्या सेठा रो कस्बा पाच-चार करोडपत्त ही लाध। श्री कन्हैयालाल शर्मा (आसोपा) र प्रयास साथ श्री हीरालाल जी र पल्ल हल्ल ही मीटिंग आ जुडी। स० 1997 म पुस्तकालय री स्थापना हुगी। आज हजारा पाथ्या मय बजारा मकान, राज री एड ही पचास रुपिया मीणा मिळ। श्री डूगरगढ रो पुस्तकालय आपर खेतरीय कस्बा र पुस्तकालया रो हाड बराबरी खासो विगस खिल।

आजादी र बाळ, बाट रोग आयो जातवाद जुडया अर काळू न निसाणा बणायो। गाव र ओसवाळा अर माहेस्वरिया, मदरसा दाई पोथी खाना ही यारा कर लिया। भुव अूगटी पोथी जगरी म ही नी छाटा। लाधी जठ ही खोज लुकायर अुडा

ल्याया। गुराजी न ही छावड कर'र थाडी कबाड लीनी अर अुठावू हाटडया ज्यू आप-आपरा यारा पुस्तकालय माड बठा। अेकरसै अया पलडा माणस, पडितजी इत्याद म्है ही गाव र कारज बीकानर गयोडा हा। विजय भवन सू श्री सरस्वती पुस्तकालय वेगी गाडो भर हिदी अग्रेजी अर गुजराती की पाथ्या ल्याया। दिरावणै मे ठाकुर श्री निहालसिंघ जी रा लामा हाथ हा।

काळू रा वारजसीळ लोग सदा मूज गावाळ, जमान री हवा मुजब आथूणी चिकित्सा री जरूरत जाणर अेलोपैथी अस्पताळ खुलवाण खातर खट रच मचाया अर सन् 1953 54 म डिस्पेसरी खुलवाण गे हुकम करा ल्याया। गाव रा उदार मनवाळा नाहटा आपरी मोटी दुकान अस्पताळ न दे दीनी। सामण वाळी आपरी, जकै सू थोडी जमीन राठी परिवार मूप दिन्ही जक म् अस्पताळ रा रूप उघडग्या।

श्री के० महता पी० एम० ओ० बीकानर र हाथा सू डिस्पेसरी रा उद्घाटण हुया अर चपरासी समत एक अनुभवी कम्पाउडर श्री रामप्रताप मेहरा न कार भार झलाया। दिनाक 23 9 54 न श्री पी० एम० ओ० माहब रै साथ श्री एच० शर्मा टी० आई० जी० पी० बीकानर ही पधार्‌या। सन् 1955 मे उवा रा मेल्योडा डाक्टर वी० डी० गग (एम० बी० बी० एस०) अठै आयर चाज लियो अर बडी अस्पताळ वेगी कागज चलाया।



सन् 1953 म काळू रा डिस्पसरी रा पला डाक्टर श्री वासुदेव जी गग, श्री रामप्रताप जी मेहरा (कम्पाउडर) अर श्री हीरालालजी (सी० आई० डी०) तथा गाव रा मानीता सज्जन।

1 ईस्वी सन 1956-57 58 म पुस्तकालय रा काम जक कार्यकारिणी (वणीविगडी सरमा लखमणादि री पारटी) चाल्यो उव कमटी इण सस्था गे नाळजा काढ लियो। पुराणा रिकाड, फायला अर मारो साहित्य पार कररया।

जक दिना आयूण पाकिस्तान म पाट रा आछा काम चालता । श्री शेरमल जी डूढाणी रो मन वध्यो अर सन 1960 मे अस्पताळ भवन बणावण रो आपतो काम पळायो । करीब डेढ लाख री लागत सू (सरव सनातर) मकान साल भर मे बणायर (वि० स० 2018 म) जन हितारथ खड़ा कर दी हो । पण राज्य सरकार दो साल ताई नी ता स्टाफ वधाया अर नी प्रा० स्वा० चि० केन्द्र स्वीकार करयो । कारण लूणकरणसर वाळा रा कवणा हा—'प्राइमरी हैल्थ सेंटर अर हायर सकेण्डरी स्कूल जिसी सस्था तसील मुख्यालय माथ हाणी चाय । जका सू लाक लाभ घणा हुव । जके सग सस्थाना सू, कोरी भवन मकान री ममा दिखायर काळू वाळा आपरी खूबी-खींचताण क्यू सफळ हुव ।" अडी उळझयोनी अनकू वाता गाव रा भाई श्री गिरधारीलाल यवर सदाव सुळझावना रता । व गाव री स्यान अर गाव र मान न ऊचा राखता । जद ही चौधरी गिरधारीराम जाणी जसा बूढा माणस उवा न विजसिंघ जी अर कई लाग रामजी वगैरह मान लिया करता । अस्पताळ री अगियाडी आटी माथ भाईजी आग आया अर तसील री पचायत समिति र प्रधान श्री रघुवीरसिंह (महाजन राजा) सू मिल्या । प्रधानजी भाईजी रो पूरो सम्मान करता । उवा भाईजी र कवण मुजब सन 1963 64 समिति री माहवारी मीटिंग काळू राखणे रा आदेस कर दी हा । बदोवस्त सारा भरपूर सरपच काळू आळयी । आवा लागा न रयावण—पुगावण रम रा इन्तजाम करया अर राजकीय प्राइमरी हैल्थ सटर काळू खालावण रा प्रस्ताव पास करवायर जपर भिजवाय दिया । आज इय राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र काळू म तीन डॉक्टर दो गाडया, अनेकू कम्पाऊन्डर नर्सां, मिडवाइफा लिपिक अर इस्पेक्टर मलेरिया तथा परिवार कल्याण नियोजन अधिकारी आदि पचासू कमचारी जन सेवा काज मू लदूया-उतावळा वग है ।

काळू रा पुस्तकालय पताळास साल पुराणा है, जक र भवन म हजारू तान री किताबा पडा है । पुस्तकालय म अनकू पत्र पत्रिकावा ही सम बधी आव । यो पुस्तकालय गाव मे सरस्वती रो माटो धाम ह । गाव र बीचाळ मोटा भवन काळू र लोगा री शिक्षा अर सभ्यता री सान है । पण पुस्तकालय री पुरातन व्यवस्था नै ही देखर इय म सगाधन रा आवश्यकता तरा समया जाव । काळू रा लाग गाव र मुखिया सू या आसा राख के पुस्तकालय म नू वा सुधार होवणो चाहीज । इय र भवन री अर पुस्तका री आछी भली त्वभाळ करणी जरूरी ह । पुस्तकालय न सजाणो गाव रा धण माणेता आगीवाळा रो किरतव्य ह । किरतव्य रा आज जुग है । इण खातर हर्मी नूवा नूवा तरीका सू पुस्तकालय री भळे मोटी भलाद पळाणी चाय । खारा-खाटा, रगदा मू इय न दूर राख्या जासी तो पुस्तकालय री कीरत गाव री वडाई अर सुख-सुविधा, सदा साव या सस्था चिरस्थायी वणी रसी ।

पोथीखाना पाळ रुखाळा, काळू वाळो इन सभाळा ।
काळू गाव वडाप मोमी, बगला, हेली, महला वाळो
इय भवन न भूलो मतना, जो सगळा रा गुर कुवाव
ग्यान किरणाना सूर चमकतो रात अधेरी करण उजाळो ।

इण री सीख राष्टर री गरिमा, इण री कळा सूय ह साची
इण री कोसळ लोक वाङ्मय जात अनोखी, इण री वुद्ध सस्क्रित्या री पूरी तरक्की
इण री जड़ता पाख अघेर री गोटाळो, इण री मद गति, प्रगति मे अवनति ल्याणी
इण री नीवत राज्य रीत री परतख, पूजा इण र बँधणा समचा सागी मीत बलाणी
जमडो ही द जाव इण सू अेक्र टाळी, काळू वाळा इन समाळो 2

इण र बीच सुरग लोक रा भाव सळूणा, इण रै भीतर उद्यम री खेती हरियाव
इण सू जुग री हार करारी मिट बेकारी, इण सू पाठ सोनळियो सभी सुण सुणाव
इण री अवहेला ही ल्याव फूट ईरसा, इण री इज्जत नू वा नगर वसावै व्हालो 3

जिण म विमल विनोद विगसता मोद वधार, जिण सू लाभ उठाव नूतन दुनियादारी
इण रा मिटणा जे ठाणा ता वुरी वात है इण री उठणो आदसता रो पाठ अडूडो
मन मत राखा इण सू काळो, काळू वाळा इनै सभाळो 4

बेटा पाता, भ्रात भतीजा स हा इणरा, पण थाया टिड्डीदल सा वादळ गरजणिया
पाप पेट ले अदर जावण काड अूमड, तो वार रजाणा चाखो तावस तणिया
निज निव हिडद खाल्यो ताळा, काळू वाळा इन समाळो 5

काळू गाव पाढया सू लोकरजण, पुण्य स्थली, समाण, धाक पूज, सू पळता आया है। अठ री सग सस्थावा रा जस राज अू चा है। इयै परापरी रो सरस्वती पुस्तकाल्य खातर ही गाव र नतावा न पूरा ख्याल गाखणो पड।

अठ रा भण र आयाडा जुवाना री काट कासिसा सू 26 माच सन 1950 ई० न 'ग्राम सवा सघ काळू" री स्थापना हुई। गाव रा अेकल्या दुबळा, निरधना, पिछड्योडा अर राज समाज सू काठन्दवाव सवणिया लोगा री मदत साह सन् 1960 तक या सस्था चाल्ता रयी। इण सस्था माकळा कामा म विगसाव री लर वधारी।

सघ प्रौढा खातर कई केंद्र चलाया तथा स्कूल भवन अधूरा पडयो जक वेगी माकळी मिन्गिा वला र अर कमी पूरी करवाई। 'विकास' नाव री हस्तलिखित पत्रिका निकाळी। दवाया र वाजिव दामा साह अेक दवाखाना खाल्या। सन् 1953 म आस-पास र गावा म मलेरिया फल जाणमाथ पॅल्योड्रान, मपाक्वीन, कामाक्वीन इत्याद पाच हजार गोळया महायता खातर वाटी। डाक राजाना री करावण, इ स्यारेंस लगावण, सेविग्स अेकाऊट खुलाण सेती सघ ऊँचा कागज चलाया। सन् 1953 मे शादूल वलफेयर एण्ट पब्लिक फी वाटर गप्लाई फड सू गाव र तळावा री खुदाई खातर सघ आठ हजार रिपिया ल्यायर लगाया। सघी जुवाना तावड तपर बिना मजूरी काम कर्या। स्व० हुकमचद बोथरा, गगाबिसन वागडी जिसा घणो फुर्ती दिखाळी। जी० सी० डूढाणी जडा कवळाठा रा पटपडा री सारी चामडी लूवा सू बळर अळगी उडगी। डूढाणी मस्ट्राळ वणाण पमट करवाण जिसा सग वाज आछी ईमानदारी सू पार न्हाया।[1] सघ दा बिरिया भिवाणी सू डाक्टर बलायर गाव म आम्या र अल्लाज रा कप लगाया। लूला लगडा अर पटदाळी औरता न मग्नाग मायता दिराई। सन 1953 मे मारवाडा रिलीफ सोसाम्टी रा कामू कळकत्त सू अकाळ पीडिता री सवा साम्ह आयर बीकानेर म आपरा कम्प लगाया। ग्राम सवा सघ उवा सू आपरा गरा सम्परक वणायर पचासाँ गावाँ न सभाळया। मजदूरा न आपरी परची सू सघ पमट दिराया। जगा जगा

गौसाळावा खुलाई। माडा न गुवार देवण रा काम पळाया। रग्नाम मामाइटी अर मारवाडी रिलीफ सोसाइटी सू मघ वाळा पाउडर दूध लेयर गरीब मजदूरा र टाबरा, बूढा अर पटमूई लुगाया न हाथा वरावा उकाळ अर टार'र पाया। ग्राम सेवा सघ घण गावा पाणी र अभाव रिपिया खिरवाया। पठारत सू आयाडा श्री रामप्रसादलाल जी टाटिया श्री मातादीन जी मेतान अर श्री बद्रीप्रमाद जी मोदाणी सघ री काय प्रणाली री घणी घणा सराहणा करी। इय मस्या म अेक मागा किशोर सघ री मेट मनोरजण सार हा चालती। हिन्द बल्ब जिमा मठा मनोरजण हा। आया गया आला मारा अफसर अर मत्रा पला सघवाळा सू साच समचार चावता।

1 आडसर, रावासर अर गान्वदेसर आद पाडौसी गावा म ही इय कामा माथ ग्राम सवा सघ वाळू र काय कर्त्तावा रा प्रबध चालता। तत्समय आडसर अर नायूसर म श्री काळूराम जी वमा जडा घद्ध व्यक्ति सुपरवाइजर हा।

तीजो पडतग

रेखा चित्र—

गाव रो नाव काळू, काळी माता रै नाव माथ मग्राग्नि है। इय रा लाकपाट लाग, पिरथ्वी रा दूजा सपूता दाई धरणी नै मायड र माण जाण वखाण अर धाव-ध्यावना कर। भोमी साचेरी माऊ है जकर रै धीरज री साधणा सू गुणी गीगला रा विगसाव र प्यार पोखणा रव। गाव भाम री या उत्ताई ग्यी है क ऊड थाग नीर अर चाम्वा-तीखा खेता रा तीर ही अठ र गाव मानख वई परालब्ध मानीज। कुदरत र इय सजळ, सजीव गाव री भोमी माथै गीसर ही ता किणी कवि काळू न वडी द्वारका बतायो है। इय री रेत रणरा अर सेन तीरथ है।

पाधर पावण सरळ मदान, मधर धारा मञ्ज अर मोटी माटी वेला पीपळ जाळा वोरटया री जाड लीप्या पात्या दूढा पडवा धोळी गारा रा माडणा, कोठी कोठा तथा माडा छज्जा छाजा बाग भीता घरकाटा छियाधार कुदरती सोभा सम्प वधको विरान्री, मताग धाप र घन मनोविग्यानी मना ग्याना रूडो रतनागर, बीकानर राज्य र थळी म्हाभाग आपरी तमीज रो काळजो मनोहर, मुखिया गाव काळू कहीज। इयै रा या रेखाचित्र माडूक, कर चितराम, म्हार दवना देखता थूपा ठेरा देगा उवा री जाग्या जगला खास बैठया।

इय गाव म कोई करोडीधज अर अरवपत नी है, पण मनाभावा कारजा म अरवपत्या सू आगकर काढ। भलाई किता ही वडो मिनिस्टर विद्वान धनवान अर आफिसर मेहमान गाव म आवा, काळू री छाप तस्वीर, आप र हिडद माथ लिया ही जासी। जे कदास किणी कारण सू आतिथ्य सम्माण तथा आघमाण रा अभाव ही रै ज्याव तो हो गाव कानी सू नो उत्र वत्ता ही विचार भाव ल्यो जाव। बातडी या है कै काळू रा कुसळ करामात जागमाया री अलोकी औकात है। रेल न कोई रूडी सडक, पण काळू जावणिया रा जात तवियत उठ फडक।

या बात ही अठ नी है के काळू री कव रच कोई नी कर। मुख्य बाजार चौवट बीच पेडा री दूकान पाच सात जणी टया री भेंट-वारता म राजीन रवोड रव। गाव-गरिमा न गाळता गुडकावता विदसा री सुणी-सुणाई नूवी चरचा वधारता अर मन री हसी-हमता वात सदीव सुणा। अमरीका, रूस अर विस्व सू इत्र भग ही अळगा ना सरक। काळू न विस्व र मान नसा सू ताल जाख। कव—'के है काळू ? वतमान में विस्व अेकता रो भाव हाणा चाय। अमेरिका र छोटस एक सुविधाळ गाव माय सकडू काळू खवारया जा सक।।'

'नूइ अर घरू राजनीति सू प्रभावित हुया लोग कया ही समथो काळू रो महत गुणगाण तो गावता ही रव। साच माच इय गाव री धरा सजीव है। या दा'र

विभाग अर सजोर दिमाग दवणी आल भवानी री बाण है। काई आ वत्ताई नही ? के इण मरुधरा रा बेटा पोता रा मन माथा, हजारी खनागी रा भरपूर भाव बाट।

बीकानेर राज्य र मध्य भाग बसतो या काळू ग्राम देवी रो देस धुरी धाम है। बीच मदान होण र कारण बार बारला गावा सरा सू सज ऊचा है। या कुदरती वत्ताई काळू रा जन मना न एक सुभाविक ऊचापण अर गौरवता सू इय रा ऊची भावना म साचोट है अर उवा सहिृदयता तथा उदारता वरमाव। प्रकरती मिनख न कोरी सळी अर सेळी छित्र मू ही नी छटाव उवा मिनखाप र फाड तोड अर आण दामाव मे निजू नीवत सू माग रल। मूक अुथळा धोरजूबाघ अलस आस्वासना हँस रोव। काळू री भोम दयाल अर मिनख मेळू डाढी है। बेमाता आपरी पतळी आगळया मे तीखी पसल्डी झालर मिही नोकडी सू सारी गाव काकड रो झीणो फूट-रापो कोर कस अर सरूप निखार। अठ रा बिदामी टीला माडणा माड। सिझ्याळ सूरज रो सिंदूरियो अनुराग, खेजडा री जाड सू कढता हिरणा रो हरखीलो बाग, दिन री चचल लू रात री भोळी चादणी अर परभात री मधुर परमळ री झोली काळू न कुदरती लूठी देण है। जिक म भाठ री ऊजळी खाण अर सुरखी रा लाल खदेडा ही रग उपजाव।

ज्होडा अर सरावर—धूँघळियाँ गाळारी खा ळ बगत इय गाँव र लोगा री सूझ बूझ बोलगत, वाद विचारा पडछावा तथा हाजर जबाबी तखमीना रा उपजणी ताकत क अर ळ दोना आखरा सू भिळी मिस्री मिल। भाम विभव अर सुख साधण बखाण हुव, बठ ही इय वास न सजीवण दीठ जात जोम्या जाव। गाँव सिरमौड जीवण ज्होड, सरोवरा म अनाणा घरा र अडर वडो पक्को जळ ठाव है। धन पसु अर खेता र पीछ खातर सूरजाणो ही डाढी झट झाल। गाँव नड गरी गिणत दूजा ही घणा तळाव है, पण गणगौरा रा ढोवळा अर आखातीजा रा खीचडला सीजण ताई जळ देवाळ अनाणो धनाणो अर सूरजाणा ही सठा ल्ठा दाठोक दरियाव हा। पण गाँव म पाइप लण खिच जाण पछ पाणी रा बालगत सू इया र ताला री देख रेख ही सफा मारी-जगी। मील मुरजादा गई लारली गळी धनाण र मूक ताल बीचाळकर लामी सडक काढदी अर धोळण माटी खातर खदेडा ही खदेडा खोल नाख्या। सुणा लोगा नै पट्टा ही दीन्हा है। बरमाळ ताल रा पाणा परिया ही पड यो चुस सूक, बगत री वा ज्होड मे जळ ही जा सक नही। कदेई ताला म पसुवा न नी ठरण देता।

'सतळाई बामी रो नाव राख काळू रा आयूणी सीव रुखाळ खिलेरो' नवो सुदियोडो आपरो कूओ सभाल अर 'तजाणो' तीन कोस अळगो, पाळा[1] र ध्याऊ रा काज सारै। वरजाण[2] चूनो बीझाण भेस्या वाडण रो थूनो, बाघाणिया उदाणियो, आसाणियो टोडाणियो अर ल्टडो काळू रै दिवणाद पाख गाव र गुवाळियाँ तथा

---

1 ऊँफाला—पैदल। 2 चौ० मेख आपरी बेटी बरजी न बरजाणो गाव, दायजै दियो। वरजी बेट साथ सती हुई। वश क्रम (1) मेखो (2) टीकू (3) भोपत (4) लाभू।

पसुवा रा पीछ, पाणी पाव । अगूणी कांकडवाळी ज्होडी माथै वि० स० 2011 म गाव नाथूसर आवर नवो वस्यो है । 'भीखराणा' करमा री भायप अेकलियो ऊभो हाळ्या री जळ ताम सनोख । डावळै जडा अगूणिया खेता रा मनडा मोवै । जोगयाळी ज्होडी अर नाथआळो ज्हाडो गारवदेसर अर काळू री काकड रेखा रो माण वधार । हिराणी अर काजरवाळी, टाघडिया पाडिया चरावणिया र लोटडी कूजिया घीसण रो टटो मेट अर उट्टोड विहूणी अलूणी उतरादी दिस आता जाता पसुवा न निरमळ नीर छकाव । जाडुआली ज्याडी अर खणा आयूणीत्तर खेताळा रा वरसाळै, नड नीर भरण रा मुख काज सार । सजराणा, बूडाणी जिसा केई नाडी नाडा अर दिखणादी चोभडयाँ काकड मू बार पड । तिलोकाणै अर तोलाण[1] रा मुख गया, नडा घर अर खेत आ खस्या वस्या । ताला री तार मारी गई ।

पाळ अर धोरा—काउ र खेता री पाळा रा नाव लोगा सदियाँ मू आपरै अनाण मनाणा राख राख्या है । जया गामी मोटी वळाळी पाल, धोळ ढावाळी पाळ इरणाळी पाळ अर पासुआळी पाळ इत्यादि लोकभाळ भली सधी है । भळे गाँव री लामी गोरी मे मोटा भाखर तो घणा नीं पण टिरला (टीला) तथा धोरा मोकळा खोरा खड्या सामर स्थान सज गाव री च्यारू कूटा चौकीदारी कर । टोकी माथै चूपरी, डूचिया तथा मुचिया मूता ननार नींद लेव जरा लोग गत भली जाण ।

उतराद पास अडी धोरा वळाळा गोगाणी धारो, सुरतोतियो धोरो अगूण परल तार गारवदेसर री काकड तवटिया धोरा है । गाव र नजीक अडर सुग्वीआळो लाको, हाळा धारा मुम्माणियो धोरा दिखणाद डाकीडो धोरो आडसर मारगाळो धोरा दिखणाद भानीपर री काकड बडियाळो धोरो, डेल्वा र मारग चिडीचाटी धारो, आथूण खारड र मारग मोटी सोमाणो धोरो (सामागो होया पार, देखो बीकाण रा द्वार) माझाथळी धारो, वेडीआली टोकी, रेल धारो, जम्मो धोरो, इकथळी आळो धोरो गाव कनार साघाळो धारो, ढेढाळो धोरो अर गढाळो धोरो है । अ सारा काळू रा धोरा भौगोलिक धरातळ री सुभावी वडाई अर गांव री अेकात्मकता र साथ निर्माण री परख प्रेरणा लेयर ओप ।[2]

रूख पूजा—म्हारी मात भाम घणी सरस अर सळूणी है । अेक ही मेह सू रूखा महक अर पछया चहक उछळ उठ । शिव भगवान री तरा आख लोक सिर आढर दातार तथा तूठमान है या धरणी । सूका ठूठां लकडा न ल्हैला देव वूढा मन न हरिया राख । कीकर कर, वावळिया आक खेजडी अर सगळा जाळ बोरडी सदीव रग रमील छिब छिब । कासा सू दीखवाळी अठ री डूमाळीकेल देखणियो माणस जाण सक के काळू भोमी री रूख दिसत मे सूकी, कोझी अर सूझळी, पण माय नै सू अटूट रमबळ ढळी, जस जोस नामा कामा भोत निराळ तेज तन गिगण पौंच है । बाजार र

1 सूरज अर तोळ (भाया) री राड सूरज री वहू सती हुई ।

2 इमैं गाव सारला धोरा माय लोगा घर बणा लीना है ।

बीच गले खडी सबरक दाल्डी करा, गाव र म्ड गौरव न पीढया सू पाळ उजाळ। आया गया गाडाळा र ऊटा न, पवटयाळी हग्जिन हाद्या न मिराखा अर पसुवा न जापरी छिया सरण, सुख रिछपाळ पौंचाव। म्हैं म्हार बचपण सू दया र मोट डाळ लाव सू मडियोडा हीडा री ऊँची उछाळा गाव र लागा न जुगा हरख हीडता जोया है। ऊभळी मचावता अर लॅवग ल्यावता याद वग पाथी इय जगा सू सरुआत रा रपटबात लिखणी पळाई है।[1] भळे ही घणा गावसणा अर राहील्ना म्ब खेजडा टाला नामूनदार है। थोना रा नावा माडदयू ता क हग्ज है ?

काळू री जनता आपर सुभाविक धम सू लोक दवतावा अर पीरा रा रूख पूज। नारेल वधार, धजा चढाव। भरूजी वाळी गळी म गल्ल खेजडो अूभली गाळ वाळो धाधळियो खेजडो कूवाळो खेजडा वभूतसिद्ध भामियाजी भरूजा गागाजी केसराजी कॅवर वणापीरजी, अळायभरू रो, रिगनिय भरू रा बायाजी अर गुसाईजी इत्याद देवतावा रा अठ तल सिन्दूर, सरगल सधा पूजा खेजडा रूखा रा नाव पड। देवळया चौकिया, भगता री वणाई भीता समेत खेजडा दिप दरस। कवत चाल—'गाव गाव गूगो खेजडी हव।' इया सू अूध भो ठाग फासा हाळ खेजड, किरियाळ खेजड, भूत भूतणयाळ अर चूडावणवाळ खेजडा सू टळर अळगकर कढ। वापडा कया रा कोरा नावटा ही आव। काटिया खेजडा खावर खेजडा जाटळी खेजडी हाथी हाळा खेजडो, झबरखियो खेजडा हिरणियो केलिया आसाम्डिया केल्यिो अर ब्यार केलिया जिमा केलिया अठ नावा—अनाणा आळखीज।

काळू री मा बनावा रूखराय पेड पौधा री पूजा ध्यावना भोत राख। थाडा नाव बतावू—वाती म तुळसी परणाव बमावसा म पीपळ सीच अर जेठ री अमावस्या न बड पूजा (बडसायत) कर। इय वाम्न अठ रा बड पापळ अर जाळा रा ही नाव बोलीज। इया रूखा सू रात विरात अणजाणा न अेढो मुदा अर मारग बताया जाव। जया, अनाणाळो बड पीपळ सूरजाणाळा पीपळ निराणन्दासवाळो पीपळ बद्रीदास वाळो पीपळ सारसुताळो पीपळ उपासराळो पीपळ, सीतळामाताळा पीपल पचायता मदिर रो पीपळ ढेराळ धागळा पीपळ (हम्म गुटग्या) गढहाळो पीपळ इत्याद पीपळा रा बात बात म नावा लेइजर कामचाल। कया वासा बायाजी री बारडया ही मानीज। केई जाळा र, नामा रा नावा हा घणा विरिया जाभ चढ। जया गोपीहाळी जाळ नाथजी हाळी जाळ, पूगळियाळी जाळ स्यामीजी हाळा नीम अर ससू पली लेखक र घरा लागया सफेदो (यूकिलिप्टस) रो रूख गाव रा नामजादीक रूख है।

खेता रा नाव—काळू रा च्यारू मर र बीसिया तीसिया खेता री जाड सनाणा सारू साख भाख आप आपरा यारा यारा नावा वाज जका राज र खेवगु रकाड

---

1 हम्में केला कट चुकी हैं।

2 काळू म बीझराज सवर पीपळ खेजडी (वभूताजावाळी) रो विवाह करवाया अर बठ ब्रह्मभाज कियो।

अर बन्दावन्न र कागजा तवात लिखाज। गाव रा लामी राही हाण सू थाडा थाडा गेनर खान्र मग्रानी टुकडा रा अ अन्दाजमुग रखी रखावा रा नावा पणा है। अठ कवत चाल—पली री बासू अर सर्म लुगाया मुधिया वगा काम र लोभ भाता (धाक) ऐधर अेकरी मता दव जाया करता। मिइया पूठा आवती दूजया न वतावती—"तू वळ (धार) ही जर हूं बाग (पागा) हो त बाग ही जद हूं बाट (वाटा) हो' मुतळब इतो आग चालना। स्याम-स्याम मतरिया नाव माडू जवा मर्दाना बोलीज अर अया चार।

उतराद पाम राजपरिय अर राजामर र माग्ग नडा चिडी डाडावाळा गडिया वळ हठ पागा अर रिडिया (मत वाया गिडिया धान हुया अेक घडिया), टावा, वाडिया मोयन भिडाणा, ऊचा वाट वासरा, स्पादवळा, राजपरा, डर राळा डहरी गायवाण र गल्ल रिरताणा भूतिया, विमनामर र गले ऊँचा मातीहाळा, कुड वन कानरी, चिडापटा दावटिया आमलिया वाडिया, काजलिया आयूणा गिडिया अर लीलावाळा नाळिया गिदराणी रिनगणा काळवान र गल वन गाव र चिपती थट् आयूण मुग्नाण र माग्ग मढाठा (वठ जाणिया र गुमानजा रा मठ है), मजरासर र माग्ग भाद्रवाणा, राहिडाळा गाव, मू दिखणाद मानिपर आडसराळा, अगूण नाथूसराळा, डावला जसायन, नाव्ना, झिगाळनी अर मदेडाळा खेडा बग। फागट गोग्वे धान अर फळा फमला लाटीज। आजकळ लाग मात्र[1] मन ही खेत खड।

उनराला मता रा रागजड मरम मतीरा माळाप म अठ ही नहीं, जठ-कठ ही नाव, मव अर मिमरी न माल कर। कावडिया काचर, वार फळा अर टीडमी नामी फळ तथा माग हव।[2] बाजरा माठ गुवार, तिल मूग चँवळा इत्याद नीपज। आयुर्वेद वर्णित अन्न औषधा री काळ रा राही आछी उपज है जवै सग ईमी रा वाग्ज सार।

औखद अर अन्य

अरणा या अरणी—अरणा रा पानटा गाळ थोडा नुकाला, कवळा, फूल धाळा गुच्छाळा पानवा, गध आव मारया भिणभिण अर वाळया नीची लूळी रव।

अरड—कवत है—'कुळगाव म दरडिया हा रू ख।'' पानडा कगुरिया मोट

---

1 रळ मिळ रटता वाळिया खागर मागर जाय।
घड घड घूम मचावना पागर म पट ज्याय॥
(कळायण प० 30 द्वितीय सस्करण)

2 तिल काकडा टीन्मा माठ काचर मतीरा।
घा गुड सखर मवाद क मिमरी क मीरा॥
सुघड पण वहु मर चूप मू सिट्टा चाव।
सुगम सिर घर सार सकल परिजन सुख पाव॥
धारड वस धुनिधार धुर, फिर फिरन खाव फली।
तिण कहै हम करतार न थिर सू निर वरज्यो थली॥

आकार कपास र पानरा सिरस्यो। धोळालाल फळ बीजा धोळा गोटा, जका म तेल कढ अर काजळ बण। टावर कोड करता गाटा ल्याव अर मस्टेटा घस।

आकडा—आवडा जगल अर गाव, दोनवा जगा लाध। करीब पाच छ फुट ऊचो हुव। फूल फळा ल्दयाडा, पाना अर दूध वड री बरोबरी करै। फळ मुरण पर रूई अर बीज कढ।

रोहिडो—रोहिड रा फूल अनार रा फूल सा लाल हुव। पण सौरम बिहूणा। कपूता कवत चोखो—'रूप रूड, गुणबायरा, रोहिड रा फूल।'

धतूरो—धतूरो गाव गळया, गुवाडा, खेना-खोडा खडो हाल। पानडा पान सा फूल धोळा घटी र रूप फळगोळ काटीला घणा बीजा हुव। जरीला गुण जक खातर साहित्य मे कनक नाव जाणीज।

> कनक कनकते सौगुनी—मादकता अधिकाय।
> वो खाये बौराय नर—यो पाय बौराय॥ (विहारी)

नीम—अठ नीम रा रूख मोटा फलयाडा है। पानडा कागणी अणी अर घूमणी नोक रा हुव। धोळा फूल चमेली री सी सौरम भरिया, फळ निम्बोळी बाज। निम्बोळी पावया मीठी मायन गाटा अर उवा म तेल हुव। या साख, सावण मास फळ फूल।

जावासो या धमासो—जवासो अठै ताला म हुव। काटा मोटा पानरा घणा छोटा वरमती वरसा म हा बळ जळ जाव। हाथ भर मोटा खुप (पौधा)। म्हार गाव ताला है ववाथ काढा म काम आव।

तुलसी—तुलसी र पौधे न लाग घर ग्रिहस्थी री पूजा वेगी लगाव। पानडा लामा कवळा सुगधित चरपरा, कडवा तथा हितकारक। डाळ डाळ मजरी महक। ताव तप काम आव जद चाय वणायर पाव।

मरवो—मरवा बाडया म घणा लाग। सौरम आवणा पान तुळसी जडा। वात पित्त, कफ रा दोस मिटै। बिच्छूरो जर मिटाव।

सख पुस्पी—सखपुस्पी दस्तावर, मेधा, बळ वीरज वधाणी मना रोग नासणी र कसली हुव। काति'र तेज रा देवाळ। कोढ भूत आद रा दोस उतार पानडा मे दूध कढ, म्हार अठ रा खेता म घणी ऊग। एक जात दूधेली कव।

ताल मखाणा—ताल मखाणा रा खुप जळ कराड ताला ऊग। अेक तर रा जळ मोथ हुव। ताल मखाणा धनाण भीखराण, निराण अर खणा मे खूब ऊपड।

नागरमोथो—नागरमोथो ऊँडी डर्‌या री पीळी माटी म मोटा धाडा माथ हुव। उवा री सुगधित जडा म गाठ गठेना उळया लाग। लाग खोद र काढ ल्याव। सुगधित पदारथां मेळा काम आव। कपूर काचरी छडछडील चन्दण र बूर माथ देवा र जिग म होमीज। पाणीवरा अर नमनिय र नुकमा काढा कूट भळा रीट। हारा पीवणहार तम्बाख र ममाला रळाव। टाढी सुगध आव।

बूर—बूर गे बूजो इळायची री सी तज खुशबू देव, अक सू दवाया वणै, पेट री बेमारया वट। खेता-खोडा पसुधन चर। काळू में पत्या राज वद्य बूटारामजी बूर सू पेट री दवा वणावता।

भागरो—भागरा तीख तिजारै उहोडा वनार हुव। पाणी मूवया घन्नाणै री चोव म घणा ही ऊग। चरपरा, रूखा हुव, पीळिय म अर आख आद र रोगा मे काम आव।

दूब—दूव र रस न मूघण स नकसी (नाक का खून) रुक।

उटगण—उटगण (भगरी या मिनीपजिया) ऊट खाव। वळ वीरज वधाप काम आव। गाली इया र गोटा न दूध म नाखर पीय। गोटा फूलर दूध न गाटो करद्य। खेता बूगा ऊग-अड।

कुरड—कुरड रो नाव अठ चामधस वाज। चेपदार फळया सू छोटा बीज कढ। लाग तात्त खातर पीस पीस र पीय। केई लोग इण र महीण काळा बीजा न असाळियो ही कव।

रतनजोत—रतनजोत न अठ रा लाग साटा कव। चौमासे गाव-गुवाडा हरियो-भरिया मन मोव। रतनजोत आख री दवाई म भागी काम आवै।

फूबी या खूबी—आयुर्वेद म फूवी न हृदय रोग वगी तात्विक दवा वताव। केई लाग खूवा रा साग भी वणाव।

गोखरू—गोखरू अथात भाखडा। काढा उकाळी म काम आव। अठ र खेता घणो हुव। मावरू न ऊँट चर।

कटेरी—कटरी (रीगणी) री काटाळा वल हुव। पीळा फल लाग। गुलाबी फूला माम्या तितल्या मडराव।

चिडधणियो—चिड़ीखेतियो वाज। सिर सिरवा अर आरी माता म ऊकाळी र काम आव।

लोलरू—लालरू दूखणिया माथ रगड धाटर लगाव।

निवलगी—निवलगी अर अवफोड री वल फोगा माथ चढ, सगती वाळा छोटा फळ लाग, इय न ऊट खाव।

इद्रायण—इद्रायण (तूम्बा) सू पेट री दवा वण। इय रा फूल वपूरी अर फळ मौसमी री भांत हुव। वद्य लाग जगा-जगा काम लेव। अठ ऊटा पसुवा रै अजीण-आफर अर नी चरण र कारण तूबा उवाळर लूण सायै देव।

भफोड—भफोड वमत र साथ रूखा री जडा मायै फील ज्यू ऊपड। टाबरा री ओरी माता मे सूकी फूली उकाळर पाव। जाना जमाना मे भी मजाकिया साग वणाया जाव।

पींप—पीप वरसाळ म फागा म वध। पीप रो साग वण।

छाछ—छाछ गाय भैंस्याँ जाट भाट म रूनी म गाडा पाणी गाळ र माटी र विलोवण म मथर बणाईज। या मिनख री भूख वधाव भोजन पचाव। पेट रा मारा रोग मेट अर मन निरपत कर। इण म भूंजी हींग जीरो लूण, काळ मिरचा र पाण सूं पेट रा आखा रोग कट अर आरवळ वध। छाछ पीवणिया आदमी सौ बरस जी सक। छाछ सूं अजीण कब्ज, दस्त खुजली चौथइयो ताव जठीघर रक्तचाप दमा, गठियो अर्धांगवाय गरभास्य रा रोग जसिन जिसा रोगां म घणी राहत मिल। अजवाण मिलायर पीवण सूं दस्त रुक ज्याव। छाछ पीवणिय मिनख न रोग नामणा तावत मिल।

तिलसकरिया लाडू—तिलां न छाट पटर भिजोय रगड अर सक्कर तथा गुड रळा र लाडू बणाव, उवां न तिल सकरिया कव। अ लाडू खाया बाय वारी जाव ताजापण आव अर घण पेसाव करण रा रोग मिट। या आवत सीयाळ री सौगात, बार बन-बेटयां न ही भेज्या जाव। काळू रा यो धाय रगड र बणायोडा काळो धोळो पाव मिस्ठान है। खासकर र मनी वाव र भाग चढाया जाव अर मकर मक्रांति रो प्रसाद बज।

भोजन—भोजन तो गाव म साधारण दाळ रोटी रो ही चाल, पण वार त्यूंहारा चावळ, लापसी अर सीरा ही घुटा लिया जाव। गोगरी खीर, तीजा रा मगर मातू गौरा रा ढोकळा सढळ रा दळिया अर आखातीज रा आमली रस खीचडो रा अठ मुख्य भोजन वण। कालिवाजी रा ऊजळा भोजन वण अर पुत्र होण री आस पर घेवर गूघरी वाटाज। ब्याहा मावा अर ममाण आवां साथ हलुव तांई हाथ घाल। गाया रो घी अर भस्या रा दही देखण जोग इमरत अठ साधु साधु।

चाय पीवण खातर म्हां काळवासी खेता नाद आगीवाळ हा। जेठ रै सीण बूजा जिसा करडा काज करता ही नी चूका। खाड नी ना गुड री बणायर ही दाफारा दो-तीन बार पावता नी चूका। जद ही ता कान्या काथ वण—

रोग्या र खातर वणी, जका चायडी ठीक
बुढळा बुढळी पीवता वा ही ना बेठीक
वा ही ना बेठीक नीर सार वस पीता
पाणीवाळी प्याम जीत जुग अवकल जीता
म्हारोड सिद्धा न पीया हा काळवाळा।
कर आदर सत्कार माण आगत सभाळा॥

मतीर र बीजा री खोराद पदारथ—अठ मतीरा रा बीज खोरा वध हुव। इया रा भात्र कदे-बदे मोठ बाजरी सूं अूचा चल्या जाव। सुणा इया रा तेल मसीना मे लाग। म्हार अठ बीजा रा तेल गाया भस्या अर ऊँटा रा माछर मावा तथा कीचड भजावण र कामे जाव। बीज पमानी लाग ठण्डा म रळाव। बीजा री रोटी बडा सुवादीली वण। धाय-सुकायर भूज कूट छाणर इया र आट न दूज आट र भेळ

पळोथण सू रूडी रोटी पोइजै। बीज सेक'र छाछ साथ लूण रलाय'र टाबरा खातर चरको चबीणो ही बणाया जाव। बीजा र आट न पाणी मे ओल'र कपड छाण कर'र खीर बणाव। भोत सा माळाया मिनख गोटा रा माल जीम। काजू कतरया र मेळ बीजा रा गोटा पण घणा चालै। तुम्बा र बीजा न मीठा करा'र 'बरटव वाटी बणाई जाव।

भुरट री रोटी—भुरट रा काटा खेता-खोडा सू हूजर (भडकायर) ल्याया जाव। पछ खाट खडवर दाणा काढ अर पीस लेव तथा रोटी वणाव। यो दाणो भुरट बाज। भुरट री खोडी री अेकादसी र व्रत म स गार करीज। इन अठै अन नीं मान, फळाहार समझ।

राबडी—राबडी छाछ अर बाजरी र तथा मिस्स या ज्वार रै आट सू बण्योडो अेक खट मीठो पदारथ हुव। कवत चाले—"म्हानै आछी लाग राबडी जाम दांत लाग न जाबडी।' आजकल म्हार अठ 'काळू दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति र हो जाण सू सार गाव री दूध बिक्री मे चरयो जावै जद छाछ दही अर राबडी रा पुराणा सुपणा माव।'

अठ धन पसुवा आहार, भुरट रो घास, सेवण रो घास, इचावडो मडूसी, गठीलियो अर लापडी रा घास घास है। नीरा पाला, फोगा रै फोगलो, ल्हासू धिटाळ खेजडा र सागरी करा र केरिया ही घणा हुव। फळी, फोफळिया खेलरी, मिफळती काचरी, गोटकिया रा मिनखान साग हुव।

पसुवा म सिरमौड धन, अठ गाय माय रो है। गाया रा वाग कूदर। पण भस्या री छिब ही ज्हाला र पाणी पाण तिरती देखवा जोग है। अ-सावण म रिडकती घरा आव जद काळू म साचलो गगट्ट माच। दूध दही रा नद्या वुवाव। अठ र भस्या र दूध री खार अर दही जिनडा म अेकवर तो खार्णं जाग पदारथ हैं। सीयाळ छाछ री अर उनाळ डोव री राबडी रा ही अठ आछो आहार है। कूटेडी राबडी रा तो स्वाद ही यारा है। छाछ री पुराणी कवत है—"सीयाळ री पूता न चौमास री भूता नै।" पण वतमान मे "दूध दही रा पावणा, छाछडलो अणखावणा" है। लूणकरणसर तसील री अेक वडी दूध सहकारी समिति काळू ही कहीज। दोना टेमा भरी पूरी टक्या, टुकडा गेडा लगाव ढोव। ऊटा रा गुवाळा रवारी अठ वस। उब तीना जिला (बीकानेर, चूरू गगानगर) ताई रा साढटोडिया चरावणा झाल। गाव म टोळी करया राव। एक दो महियो[1] ही टाळ मे रव। कदेई ऊटा न अठ रा मिनख जाना जपाना, मेळा डोळा जात जुवाया चोपी सजाया-भजाया ले जावता। हम्म घूड ढोवणा गाडा म बापडा अवाला री रात काट।

रेवडधन अठ ज्होडा अर खोडा र कारण लूठो है। या धन अठ पाच हजार री गिणती म अेकलो ही आव। ऊन अर वधेप आछी चढ योडी है। मालका रा गुवाडा

---

1 ऊट, जव सू कोई काम नी लियो जाव। उवो नस्ल सुधार खातर खुल्लो (स्वतत्र) चर।

ठाकाटा ठर्रा दरया है। बया तो अेवड रा गुवाळा दुनिया म सदा म् भोळा वाज। रोहीं रा रीझ जगळी अर इकळखोरिया बागदा मिनखा म गिण्या जाव। अेवड रा, याळ अर टरडीवाळ र नाव औळखाज। कवत है—"फलाणा मुवडा मेरी के लरटी चरायोडी है के ?" पण काळू म अेवडवाळा गुवाळिया रा छटवी बाता छोगो है। लाक कव—"भेडा री अर ढेढा री ऊँची है जाट अर टाट आळा घर गमक है।" नूई वातां अर नेतागिरी म चोसा चाखा रा कान कतर। ठगाणो नो अळगो रया, आपर कुदरती अर अलबेल बिग्यान सू गिळगिच गपफा कर। क्यू नी चतर वण ? चाळीस पुरस ऊढ कवा काळू रा पाणी पीय।

अठ रा बिदवा अलौकी अस—काळू रा सौखीन अर स्याणा लोगा री तरियां अठे रा मौनी साजणिया, आत्मग्या या री गिणती मे आव। लारले सैईक सू कोई इसो जुग खालो गयो नी सुण्यो-गुण्यो, जका मे कोई लाल अठ जाम'र आपरी बसाई नी प्रगटाई हुव। छप्पन बारकरला बरसा पल्या चतरा चौझो, पैमो आसू खेना, पन्नो सिरीराम अर भोमा अठ जाम्या अर आपरी ऊडी स्याणप रा जस-कीरत नाव नामून काडया। बीजराज नी खाट वणत पम रो पडणा, आसू रो पाणी ढोवणो अर खेत रा कज जावणो मन ही चैन आव। खेत री फूटरी खाटी वाता तो अठै घणी अथळीज। खेत रा हलो खेत रो भाता खन री हाजरी, खेतै रो वागो अर नेत र पट्टू खुसाण तथा भुजिया खाण वगरा री मोवळी घटणावा घट्याडी चाल। खेत र घर खन एक खगो ही खूब अन्वेल माय रा माटयार हुयो। वतमान म बालूराम री नतागिरी मोभ रा सेवा-पूजा, सिंचियालाल री दुकानदारी अर जुग-भवर री कामू क्रती तथा मूळिय री गाव प्रसिद्धि चौडे है। मूळिय न कुण कानी जाण ?' न्द्रिकरण री मरळ अर सनभावी रिगला सू काळू रा ही नी आया गया अळगला लाग हो सठा रीव भीज। रिघूवाळ ब्रमचारी हाथा धानी नी बाघ जाण पण चालत काम हरदम गुरुवा रा गुण गाव अर भजन सुमरण कर। भोळा ब्रह्मग्यानी आपरी आखी असुविधावा रा टावरा न हूंकारा दिराव क—"गाव बिगडग्या, मन गाव रा टीगर मारै। पण काइ आछा माडी वाता री उव न काइ उल्टा माख दव तो बो क्तई नी मान। कव—'जा रे! म्हैं तर जिमी कई पावूटी पडी दखी है।

सुधिया नित्य माताजी री टीकी स्याव अर बाट

काळू बीकाण भाम म भवाना रा जात रा पळाको है। पळाक सू ही वधका अर अल्बेला मिनख उपन आव। मा-या ध्या या गू गा रा जित्ता गुण गम्भिाळा आन्रम दिल दिमाग इण गाव म पाया जाव, उत्ता और कठ ही नगी। अठ अमा तीजा, पाग सोना अर मूली, जिसी भगवती महिमावा माया-बाया रा स्वर व्यजा ही ल्ठी सद्धा अर ओपरी आम्या म्हामू भूल्या नीं जाव।

काळू रा ग गा, देवादिक जुस्ट उगमादो हुव। उव देवगिर प्रमित ग्यान माम्ह सतास राग। आपर भूजळाप फूटरा मन भावणा साचा वचन बोल, चेनणा मू चाल तेजपारी तथा अचचळ ल्यायणा जाक वरदान रेव अर गुम्बा री सवा साज! वारी

बूढा रां दरसण मळा री मातरी जात लाग।

देवरो, नवरात्र, जागरण अर भोपा—काळू म हरक मीण री च्यानणी आठयू माताजी री माटी तिथ मानीज। आठयू न अठै रा साग घरा म दूध दही अर खीर रा थअू गखीज। पूजणी कर अर व्रत अेकमणाळा लाग थान जाव। अूजळ पख ही गाव म जागरण लाग। माताजी रा मुख्य भोपा, सेवका र घरा जागरण देय र भेंट लेव। नवरात्रा म अठ आछी चळ पळ वण। धूप अर अगरबती रा गाट अूपड।

देवी रो भवन—पुण्यताल भोम सू अपण आप अवतर्योडी (अूपड मोडी) सदीनी-जूनी दिव्य, आकषक देवी री देवळी माथ भव्य भवन अर उव साथ बरोबरी र जाड अेव जागण, माँ ब्रह्माणी रो मदिर है। दोनवा रा सभा मडप छत्र वस्त्र सौभायमान है। दोनुवा भवना र बराडा आग लाम चौड चौभीत घिरियो विसाळ चौक, जक म सगीत चौकी हवन वदी अर च्यानणी मडप बाधण रा आखा हक मौका मिलायाडा साभ। छात र जळ वगी मोटो कुड, जळ प्रदाय विभाग रा पाइप अर चौफेर मोवळा मकान तथा सौतरी पटया रोपर खुल्ला जागा घेर्याडी है। खास प्रोळ दरवाज र बराबर दोना कानी जातरी ठरण खातर फसनदार आलीसान जाळी झराखाळा स्यात सात कमरा बण्योडा है। भीतरी नाहर र छाटकिया पौधा री क्रिया मोर ढेल्डा जिसा पछी बठा कलाठ कर। रमाईघर, स्नानघर टूटी अर टकी तथा माय बार मोटी चौकी है। ऊपर मुकटी माथ लाल धजा फराव। मामण चौवट चिडी कमेडया अर कबूतरा जडा पछी, पारया री पाळणा वगी चुग्गी नागण न लाह लकडी रा चोखो पीजरो है। असवाड पसवाड देवा दवतावा रा थान अर गाव रा शिक्षा स्वास्थ्य सस्थान है तथा कळी रामरजरग, राज रा क्वाटर राज। मदिर र पाठ पाछ पचायत भवन अर टाव पाम अनाण री पाळ है।

नवरात्र—काळू म चेत अर असाज सुदा १ (स्थापना) सू सुदी ९ ताई हर साल माताजा रा नभ नवरात्रा अठ अनक आयाजण आलर जाप। भवन कळी रग अर वारणीस सू सजाइज। माइक लागै दम्जा वण फररया टग अर कथा स्रावका र आराम मडप लाभ लगै'र विछायता विछाइज। दिन म देवी भागवत रातरी माहरा तथा अखड जात घा अर सुगधित पदारथा रा होम चम चाल। रामलाला नाटक अर सिनेमा बलाव तथा केई विरिया कवि सम्मेलण ही रखावण रा कंवरा विचार झाल राख। आसाज र नवरात्रा म झाकी काढ रावण जळाव अर कद बदे जगदेव ककाळी रा ख्याल ही करा देव। पण भागवत बाचणिया पडित अर ग्यान रा खिल्धारा हमस बार सू बलाया जाव जको जगदवा समिति र लोगा री वता लखपताई लीला है।

समिति री केई सावावा—स्वय सेवक रळ चदा उघावू पार्टी हिमाब परीक्षक जुगम अर सास्कृतिक आयाजणा रा प्रबधक तथा अध्यक्ष अर महामत्री इत्याद कायकारी महानुभाव महीण भर पल्या ही आपरी मीठी नींद उडा लेव। मिनखा मेळा मड अर उत्साही भगतवर अगुवा रव। गाव र बारकर काच दूध री अखड कार गिणा भेदा सामूहिक जमार समेत वडी धूमधाम सू दिरवाई जाव।

जागरण—आठयू री रात रा जगदवा भवन मे भारी भीड समेत जागरण जुड। भोपा तथा गवया वार सू ही जावै बलाया जाव। इया मे तीन तरा रा गायक हुव। माताजी रा स्थानीय छिंद गावणिया भोपा नू ई चिन्त री सगुण राग रागणी रा भजनी अर बाणा गावणिया निरगुणी सत्सगा, अ सग बारी वारी सू मिल्र माइक माथ आप आपरा साज-बाजा सू भेळा बोल्। गाव सू चौतरफ आठ आठ किलामीटर ताई ऊँची उवाजा चीसा काढ नाख। गाव र काना भक्ति रस पड आधीरात मोकळो मान्खो खड भड। ख्यालामृत घुळ, टाबरा टीगरा तकात राल्यू रावता जुळबळ। आज र विग्यानी जुग म बकार बरबादी वाळी अ पचासा साठा माला लारली ख्याल तथा रावण बाळण जडी वाता नास्तिक लोगा न जावक नी सुवाव।

बीकानर राज्य र सम नवरात्रा री सुदी ६ री रात रा गट म जागरण लागता। पछ गाव म आख चानण पख जागण चालता। जागरण म देवी रा सूणा छद, ढोल अर छिया आवणी अठ री सदा सू प्रसिद्ध है। कई लाग आपर अचभ सारु आग सू लाल करायर भोपा सू साँकळ ही सूतात्र। छिया ता हर किणन ही आ जावै अर बो आपर सिर मे साँकळा रा गडीड खावता परचो देव। छि म वाळडा नाव रो कारुणिक कथा छिंद देवी र हरक जागण री माग है।

भोपा— अया तो बागा, त्रिमूल अर डरू (डमरु) माताजी र भोपा रा खास बाना है, पण काळू म कालिकाजी र भवन, देवी री आरती पूजा परम्परा सू अठ रो अेक भादू जाट परिवार बड चाव सू कर। दानू टम सना मदिर खोल, बुहार झाड ढोल वजाव धूप दीप कर अर घण हरख कोड धूपन म धूपिया सजायर लूम झूम-लपट-लो आरती लुळ। बीकानेर राज्य र सम दोनू नवरात्रा म भोपा न पक्का पेटिया अर देवी रै धूप दीप धजा नारेळ सत्कार सू माहवारी मिलना। गाव सू ही ब्याह साव आसर मोसर जीमण रा पक्का बधाण हा। हम्म नवरात्र विसजण र बाद, केवल गाव सू ही उगाही करण रो इधकार है। भोपा बाना पर धजा त्रिमूल हाथ लेव अर सागडद लाग ढोल डरू, थाळी बजावता गाव र घरा देवा रा जुहारा देवण जाव तथा हरेक घर सू अेक अेक रिपियो अुघाव। कोई मानीतो मिनख भोप रा करतब देखण रो क दव ता उण रै घरा सेग बठ। भोपो गोळा गिटर निकाळ, त्रिसूळ गाल सू पार काढ तथा थाळी न डक सू ऊँची उछालकर उब सू ही चिब, इत्याद चमत्कारी करतब दिखाळ। लोक घण विस्वास सू हाथ जोडता अचभा निमस्कार कर अर की उपज कराव। बाकी गाव री तरफ सू भोप रा कोई बधाण नही।

इय भोपा कुटुम्ब-केड री अेल म हम्मैं देवीलाल अर अजुनलाल भादू, भाई भाई माताजी रा भोपा है। इया रो बाप राधाकिसन स० 2036 म गुजरग्यो। राधाकिसन रा बाप मघाराम भादू ही तीसा बरसा पला तेज तराट नामी भोपो हा। गाव र लोगा न आजू चेत थाव। उब सम अेक भाई भामो भादू जीभ रो देवी खड करयाडो जटा बधाया अस्पस्ट सबद बोलतो मदिर री सेवा पूजा करतो। राधाकिसन रो दादो काळू पडदादो जतो अर लडदादो लाखो भादू आद नामी भोपा हुया है। कथा रा बणायोडा छिंद ही गाइज।

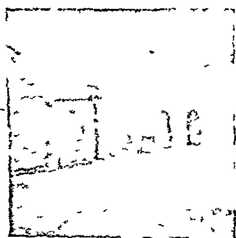
काळू राजस्थान री कुळ देवी कालिकाजी रा मोटो धाम' इय वेगी काळी मथा री रसती विरपा अठ इय बस्ती माथ उल्ळती सामी दीख। कुदरत र फबत मुरधरियै

फूठराप म अध्यातम अनोकी छिव रूप रमणा लाध्र । इय गाव र मुर्णा प्राण, आपै-चिन्व ही आत्म गौरव तत्व प्रतग पागरनो पळक । काळू र मुपी वीसठ अर कला-राधणा र पाठ समूचे राजस्थान रो रूप-माया थीव भ्रमर । राळू म री वळजुग दुरळभ, उदार मेळू मना ध्यानण री जान रपट सिरमिर । यो गाव उव मातरी थाळ बिरणा मू ही आया गया रगा सदीना मीठा पाणी अर माण मनवार माज-अरपै । काळू लाव माण मनवारा मारू पान पडोसी गावा न मिनसाव री ऊँची मुरजाला रा घोल भळे वताव । सा या आपरा चाग परिपाटी मू निरपव भाव सींपता यरो मौविया सुवा रा आधार करान । गाव रा मायड नाम मू वडो ममार म मनै दूजो प्यारो वाई सवद ना दीस । रूण रो भाँत भँतीला रग रगीलो मरम रूप री इय री अनुपमना रो सजीव नमूना है । अठै ता रूप नाव रा मारूठा गाव काळू आपरी ममा मिमता मू अजब उजागर है । पण या काळू ना खुद नगरकोट री ज्वाळा धोळागढ री धिराणी रा वास रैवासो हू मा रूर अेक मिंदर मरथा अर घर द्वार नरान आपरी वत्ती तावत तीरथमान स्थान मानीज । अठ रो हरव मरद माँटी आपर नामा रामा दवन दीठ, काळी माता र लार राग्या नौवटा चरिताथ कर । पण काळी दुगा भगवती सरस्वती तथा देवी रा नावा ही अठ री मा-वनावा आपरी चतराई कठा पावण कीरत मूणा पाळ उजाळ । इणा आखा नगनारया र पुण्य परताप या काळू भोम आद भवानी र ओज तज अर तपा नीया थान मुकाम ह ।

काळू मे रामस्नेही सम्प्रदाय री जगेरी—जगेरी रामस्नहिया रा जूनी साध सस्था है । इय म पाच सात वडा साध अर रो चार चेला हर हमेस रवता । या जागा चौकमरामजी, रामनारायणजी, भगवानदासजा जिसा प्रसिद्ध वध गीव सिचळ, वीतानर वाळा महन्ता र रामद्वारा हठ उवा री भाखा मरूप गाती रयी है । या आपर नग री अेकली अडी जागा ह जव सदा मू देसणिया लोगा रा मनडा मोया है । या साधा रो आसम काळू र आथूण नार वगाड रन रूी रेत वठ ऊँच धोर माव भान रमणीव आकषक अेव देखवाजोग सान महाभाग धाम है । इय री स्थापना वनमान वास राळू गाव र वधेप मर्मै स्नार रा माजम हव । अठ रवणिया साध आपर अयव उद्योग अन्ळ लगन तथा माची निस्ठा मू धाक्ड टाकी धागो म मोरळा महणा वठादार चित्र सार मन्ता रूखराय, वना वड श्रीराम मदिर पगलिया सुमरण गुफा मोगे परकोटा अर गुम्यान पगळिया र याद आस्रम सावण स्थापित कर'र सता जाग अरण्य मगळ उगा बाया । वाजे वाजे साध-रवाण मू भाठो आपर मान्ता साय हो ढोयर सरव मनरजण भडो पक्को आस्रम आपाया जवा आज यारा पन्या ही राळ वाम्या न सगीत सम्मेलण हास्य विनोद तथा पथ-ख्यूटारा र वन भाग्य वगी सीच घलाव । इय आस्रम रा सूना पड या मरान ढमढेर वणग्या[1] पण उवौ रामस्नही साधा र पुण्य परताप काळू री ममा म या स्थान जीवना जागतो गौरव प्रतीक है । जगेरी वासी र चिपती उतराद नाकै, गाड धरकोट रै बाचाळ, गूदी टाळी, जाळाँ अर कूमटा र झुरमुट म हरसनाराम

1 जया—राजस्थान व माल्व मे कालिका वगाल म सुदरी, असम म कामारया नेपाल में गुहेस्वरा केरल म कुमारी काची म कामाक्षी, गुजरात म अम्बा, प्रयाग मे ललिता, विन्ध्याचल म अस्टभुजा कागडा म ज्वालामुखा, वाराणसी मे विसालाक्षी गया म मगलाचडी नावा मानीज ।

देवणी जीवट री जगा है। या गांव काळू री बीकड रसा मे जमीं इणें वास्ते काळू सूं ही साधां री थोळी पनवाड़ा अर परसाद जगरा पूगतो। गाव रैं ओरौ-मेडा माथ नगरकीना, चटावा अर धान (अनन) रा याळ पीतिया पुगाइजता। साधा रैं धार आळी री ठाँ राख्या रा बटाव भरया रवता। भूखा तिसा गुवाल्यिा तथा आया गया सता नैं कूटर'र ध गटया दी जावती। साधा री नाळी (गाचग) म दूध दही, माग अ- बढी रावडी जिमीं मावळी तैव- जावतो। साध पीमाळा हावता। अ ल्गा रा इयाद् सावा अर आसर मानर करावता। धुरिया आसामी रा सात पाळता। कथा रा गुरु ही वणता अ- आठ आधमाण पूराजता। नित हमेस भजन कारतण ध्यान चरचा वगी माद्यार ल्गाया री सगत जन्मी अर टावरा री पौमाळ लागती। माल म दो बार (सिगल- अर चत रैं महीण मे) माया रा वडा भडारा हावता। इय न वरसा कवता। माल्पुवा (अपूप) अर जळवी करता। ठाई ठार्‌ ना नूता लागता। बार सूं ही माथळा रामस्नह्रा जर वारा माग गुरू काळू री नगरी पधारता। साधा रा तकडा सम्मेलण मजता। तीन दिन नाई बधवा वखाण भजन, सुमरण तथा सुवाल-जवाब चाल्ता रता। हिमाव निर्गदाम्नी हावती। नगर भगत लाग साधा र माथ पूरा भाग लेवता।



जगेरी का श्रीराम मदिर

काळू री ममूं पुराणी मस्था या साधा री जगरी है। इय म पीढ्या सू शिक्षा ग्यान धरमभाव अर मिलण वाजार पटना पमरता आया है। काळ म वरसमाळ जिसी मानळी मावजनीना सस्थावा बणावणिया जूता लाना सेठ कुमाराम थवर साधा री जगरी भव्या गुण्या अर वाम गिणिया उवाग नेयर मतात्म आमीरवाद सूं पल्पात परदेस (वगाल) गया। धन कमायर पाछा आया अर आछा वाम तथा नाम कर्‌या। भळे आज र वरतार अस्पताळ जिसा माटा सावजनिक स्वास्थ्य मस्था भवा खाल्गवणिया सेठ सैरमल डूगाणी म्हारी जगरी जायर पनियाना है। दया रा गुरू नगोतमदासजी रामस्नही हा। अ मत आछा हसमुख, माठा बोल्ता अर ठिणक वावार पाळता। साहूकार म आण जाण राखता अर पढना पलावता रता। पीडया नै खेती करावता,

घान चून तालावता तथा हळ बीज रा सामान साजता। म्हारी देखणी म भक्तिरामजी रै सम अठ मोकळा साध चेला रवता। उन्न सम गोपाळदासजी अर बना भजनीक गळावाग अर भण्या गुण्या अमीर साव हा। गाव रो ल्गा उवा सू चोखो प्रभावित हो। सीताराम पोथी पानडो माण्ता। दुर्गादत्तजी सारम्वत भीखमचद नाण्टा अर म्हैं कई बिरिया साधा र धोरै जावता अर उवा साथ समस्या पूर्तिया करना। म्हा मे सू दुर्गादत्तजी आपरी बाल सुल्भ कवितावा सू उवा नै खुसकर देवता। खाडिया साध (गुमानीरामजी) सुरट गाय सू झाळी फेर र लावता। उवा रा दूध दही रा घर वध्योडा हैंता। हुक्मदास नाव रा छोटा सा फूटरो चेलियो उवा साथ दूध री तूमडया लिया वगतो। भगतीरामजी जागा रा मॅहत हूता। उपर रा मत मॅहत वरसी (वार्षिकी) र वखत लाया जाया करता।

अेकरग म्हैं (लेखक) सन 1952 53 म श्री गगानगर जिल री स्कूला मे म्हारी पळायण, बटोही अर समय वायरो नाव री पोथ्या बेचतो थको ग्रामोत्थान विद्यापीठ सगरिय जा पूग्यो। बठ परम मानेत, साहित्यविद स्वामी श्री केशवानदजी आपर सस्था पुस्तकालय म उक्त पोथ्या दिरावता थका म्हन घण लाड चाव सू राग्यो। साहित विस चर्चा नमीहत दी अर रात र सम विस्तर आपर कन लगायो। स्वामीजी गाव काळू री काण आपरो पुराणो जीवण चितन बतावणो पळायो के— म्हैं अेकरम छोटी ऊमर म गाँव धोळिय अर डेलवा हूतो काळू जा ढूक्या। उव सम छोटा गावा म गोरव गळगळ सूणा घास ऊग्यो ऊभो रवतो। गलो गुम्या मिनख र चालणो भारी पडतो। रात र सम भेडिया गाँवा म आ जाया करता अर चारी नाव बाडा कूद र बाछडिया मार मोस ल जावता। काळू बडो लठा गाव सामण दीख म्हैं डरतो सा साधा री जगेरी वामी रातवास रियो। छेहवा हुया सुधिया सुगनाराम पारीक र घर सू म्हार खातर आइडा (भाजन) पनवाडो आया। वो रातवासा ओजू वणाई चेत आ जाव, जद मन म्हारो पाछलो परिच भरपूर प्रमण कर दव।"

इमैं इण सस्था रा पडकाटा घरकाट बाड रा जगा डोळी री धड रा हिस्सा ठर्यो ठिव। चीजा वस्ता ही गई गुजरी हालत माडी है। कोई अडा उदार आदमी हव जको थ्यारा रिदिया र जुगाड सू इय री मरम्मत करवायर इय भ याश्रम री जावती सोभा नै पाछी बाडा बाडर अमिट आदर ओपाव उघार।

काळू मे सत कवि भानीनाथजी री समाधि—महापुरखा न मन लोग आप रा मान अर उवा रै वम म वडण हाचक। "बीकानेर म मन जनपदीय सत और उनकी वाणी" नाव री पोथा भॅट म मिली। उव रै पृष्ठ चोइसा माय श्री ओभा आपरी सुणा सुणाई जाणकारी सू भानीनाथजी री समाधि अमरसर कूव (पश्चिम पाक बीकानेर) मन बतावण रा चेस्टा करी है। पण नाथ सम्प्रदाय रा गहन ग्यान पायर राजस्थान र लोग माणस ताँई आपरो रचना वाणी पौंचावणिया सत कवि भानीनाथजी री जागा अर समाधि तो गाव काळू मे है। उवा रा परपरित चेला धूणीनाथ, सेवानाथ अर भोळानाथ इत्याद अठ हुया है। सत गुराबनाथजी जडा गुम्वा री क्रिया अर हठयोग री साधणा सू भानीनाथजी रो जीवण अगम-अलोकी तथा प्रकाशमान धाम ताणी काळू री समाधी सू पौंच्यो है।

वि० स० 1994 95 में काळू री इणी नाथा री जागा म गाव पूनरासर सू स्वारी वाळा सेवानाथजी ने ल्याया गया। पारीका रै वास रा भजनीक लोगा उणा नै अठ बैठाया अर घणै हरख कोड सूदो चिट्ठो कर परा'र जगा र आसरा री मरम्मत करवाई । ~~बाणी—गायक~~ भक्त रमजान खाँ मिस्त्री मानीनाथजी वाळी गुफा न सुधारी अर शिवजा रो मदिर बणायो । वि० स० 2032 मे सेवानाथजी रो ही सरीर आगीनै गयो ।

प्रामाणिक जाणकारी र अभाव म चूकलाया ता किणी न क्यां जावै ? पण पचामा वरसा पैल्या वाणी गावणिया बूढा नाथ भक्ता र मुखडा सू माची सुणी चमत्कारी क्यावा रै आधार माथ लिखणो पड । श्री मानीनाथजी 19वीं शताब्दी र समै गाव काळू में मौजूद हूता । व आखै राजस्थान म रम्याडा हा । हर्मै उणा री वाण्या आघड सता-नाथा र गठ जमै रमै । बीकानेर जसळमेर जाधपुर जपुर अर अलवर तकात उणारी चरणाई वाज ।

गाव काळू र आथूणै कराड अनाणी तळाव री पाळ मार जागा म इणा री समाध चौकी हैं । इय र सागै दूजी चौकी भठै है जकी मानीनाथजी री चमत्कारी वाना सू चकित-आकर्सित होयर अेक वगतै वटाऊ री जीवत समाध लियोडी जागा माथ है । इया दोनवा साथ ओजू मानानाथजी रा पगलिया पूजीज । समाध रै कनै मकराणै रा सदीना ऊजळा मिव नादी सिवलिंग गणनाळी, भठै चरण चित्र इत्याद नाथ सम्प्रदाय री प्रतीक वस्तुवा अठ ममाधान दरसणा विद्यमान है । ममाध चौकी रै नजदीक नाथजी र तप जाग मोटी गुफा ह । मानीनाथजी वराग पथ पाम बारै वरम अठै बैठर मौन साधणा करी । साधणा फळी मन्व वाज्या अर भुर मे त्रिमनाद, त्रिमगाण वघ्यो— 'विग्म आवाज हुव घट मौन" मख पचायण वाज ।"

नाथ गुणाव मिल्या गुरु पूरा मस्तक धरिया हाथ ।
घुरै नगारा जीत का गाव, मानीनाथ ॥

इणी अलौकी जीत र आधार सारू ठा लाग अर मत मानीनाथजी री वाण्या रा अनक प्रेरणादायी सदेसा गाव काळू र नड-तैडै दो सौ साला सू राजस्थानी भासा रा च्या चोखा चाल्या पमर्या पाया जाव । उव समै सता री कठिनाई माथै राजा-महाराजावा आल इया रा परतख परचा गाव काळू सू सीवा हुयोडा है । चमत्कार नै नमस्कार कवत र अनुसार कालै ताई इण मानीनाथजी री जगा रार बीकानेर राज्य रा ताम्र-पत्र, डाळी अर धोक-पूज सामगरी नेमानम बंधी चाल्ती । पण कौर पुजारी काननाथ र वगत सवत 1965 70 रै सम राज्य री मग मान्यता अठै र गिरदावर पटवारी रा सिफारिस पर जब्त करवादजगी ।

मानीनाथजी री ममाध जगा म देखणजाग गुफा चोखा-चोखा रू खराय, जालरी मता र ठरण वगी आसराम पाणी रो कुड मोटो धूणो चीमटो, सिवजी रो मदिर मूळाराम पारीक री चेस्टा सू बणायोडो पक्को चौभीतो-चौक द्वार है । नाथद्वारै री भींत भेळा हडमान बावै रो मनोहर मदिर अर आग पखेरूवा र चुग पाणी खातर लोलक्कड रो पीजरा है । चिपतो ही माताजी जावण रो मारग, कन बेसरै जी क्वर रो थान अर आर हरिरामजी रो नव्य वणियों भव्य भवन ।

कालू मे जन मिंदर अर साथ उपासरो—राठौड़ा र राज्य म जन मिंदर उपासरा अर दादावाड़ी जिसी अनेक जन मस्थावा अठ घणी सजी सुधरी वणी। जन गुरवां, भट्टारका, जत्या मु या रा प्रभाव राज्य तथा प्रजा दोनुवा माथ मोकळो न्यो। बीकानेर नरश सुजानसिघजी (वि० म० 1757 92) श्री जिनच द्र सूरिजी र पामी फागावाळा जिनसुख सरीजी सू बटी सधा भक्ति गखता। म्हाराजा रा आपरा सूरीजी न लिखियोडा दो कागज, श्री अगरचदजी नाहटा बीकानेर र मग्रहालय म है।[1] बाचणं सू ठा लाग के महाराजा साब उणा रा कितो डाढो सम्माण करता।

श्री जिनसुख सूरिजी रा पाटवी श्री जिनभक्ति सूरिजी श्री डूगरगढ तसील र गाव इन्दपाळसर रा हा सुजाणसिघ जी इया री ही घणा अदब कायदो पाळता। "श्री जिनकुशल सूरी स्तवन" म सूरि जी री क्रिपा मारफत म्हाराजा री बरया सू ररया सखाळा करण रा ही बखाण मिल। सुजाणसिघ जी म्हाराजा रा उतराधिकारी श्री जोरावरसिघ ही श्री जिनभक्ति सूरी जी रा पूरा भक्त हता। वखत बरतार मुजब काळू कनल जेरिय री जनता ही जन धरम न आपरो पुरा जोगदान करती। लूणकरण सर अर काळू रा पुराणा जन मिंदर तथा उपासरा इण वात रा साचेला साखी है।

काळू म खरतरगच्छ रा लू ठो उपासरो आठव तीरथकर रो मदिर अर उण म अनेक तीरथकरा रा धातु मूरत्या है। इण मस्था रा निमाण सम तो पूरा भ्रम मे है, पण इत्ता जरुर क्या जा सक के—वि० स० 1550 र नैड जन मिंदर अर उपासरा दानू वण चुक्या। मिंदर म मुख्य नायक मम्प दव श्री चदप्रभू स्वामीजी रा सफेद अर भगत रजण भव्य मकराणी सूरत है। जका माथ लिग्या सवत् मिति पूरा ना अूघड। दूजी धातु प्रतिमावा माथ *जिम्ब प्रतिष्ठावा माथ लिखियोडा लेख है*, जका रा सबत मिति इत्याद पढण म आव।

सुण्याटा दतकथावा र अनुसार काळू रा जन मदिर जेक हरिया नावरी विराणा आपर खुरल दिल टवरा खरच र वणाया। हरिया जन धम न मानती अर सधा भाव समत राजीना मिंदर जावती। उपासर र सार (जारुं न्निा ताई जठ गुराजा गणेशलालजी आपरी भस्या राखता) उण रो घर हो। मरता वकी वा ही उपासर न देयगी। सम सम माथ इण मिंदर री मरम्मत अर देखभाळ काळू गाव री ओसवाळ पचायती सू हुई अर साथ उपासर री निगरास्ता रवता आई है। उपासर रा गुरानी अठ सग घणा समथ हुया है। जिनजित सूरिजी अर जिनदत्त सूरिजी र स्वगारोहण अथवा म० 1866 र पछ जमान रा प्रवल प्रधान जति श्री श्रीपाळजी रा चेला जेमराज जी (दिक्षा 1880) उवा रा चेला गुणेशलालजी[3] अर गुणेशलालजी रा किसनलालजी गोविन्दरामजी हुया है। सगळा आपर गुरवा रा पगल्यिा जरुर घडवाया-जडवाया है।

---

1 नाहटाजी इया कागजा न कद रा बीकानेर जन सग्रह म छपवा दिवा।

2 (क) परनिख परचा पाथियो, श्री बीकाण नरेस।
(ख) सुजाणसिह भर राज न अरि भव लिया उबार॥
(गुरु गुण रत्नावली पृ० 72)

3 गणेशो नाम उदय।

उपासरै म वधकी कारीगरी रो काम गुरांजी गणेशलालजी वि० सं० 1980 सूं 84 ताई पूरा करवायो। इण आपरै जुदाल चेल वद्य श्री किसनलालजी वगो अेक आली-स्यान कमरो, खुदवाई रै काम रो मुख्य गेट, दूजो माळियो अर मातरी न्ईन्ड चीजा बणवाई, जका मूं किसनलालजी नै आपरो आयुर्वेदी औषधालय चलावण म काई दुवधा ना रयी। उपासरै मे पुराणी पोथ्या रो ही संग्रै हो जको म्हैं (लेखक) जनि श्री किसनलालजी र मर्मं देख्यो है। इण पोथ्या म विपाक सूत्र (पत्र संख्या 81 लिपिकाल 1798 मान विजय) भगवद्गीता (पत्र संख्या 27 लिपिकाल 1856-श्रीपाल) हेमी नाममाला (लिपिकाल 1876-मत्यनन्दन मुनि) योग चिन्तामणि (पत्र संख्या 144, लिपिकाल 1878 मुक्ति धीर) सिद्धान्त चन्द्रिका (पत्र संख्या 145, लिपिकाल 1879 रिद्धि विलास मुनि) नारचन्द (पत्र संख्या 23 लिपिकाल 1885 ज्योतिष) प्रियमलक (पत्र संख्या 10 लिपिकाल 1895—कनकधम) इत्याद पोथ्या खास है। इण र अलावा दूजी हाथ सू लिख्योडी पोथ्या म उपस्या पत्र विधि, कल्पसूत्र बालावबोध गुरु गीता स्तोत्र चौमास रो वखाण जम्बूद्वीप गणित, दिवाळी कथा धनेरी चौपी पाल्दा री चौपी मौन एकादशी, रोहिणी कथा रामविनोद वद्यक ग्रथ, वदितु सूत्र वहन शांति, सिंदूर प्रकर, चती पूनम कथा पत्र जाव विचार, मस्तयादशा कालिकाचार्य कथा कल्पान जिणरस भाव उपदेश माला, सप्त-स्मरण रघुवंश टीका, भुवन दीप, नमिऊणा, कम ग्रथ सनात्र विधि चन्द्रराजा चौपी मरु त्रयोदशी नेवराज वच्छराज, चौपन मिन्याय सुखेण वद्यक इत्याद घणमाली पोथ्या है। इन्द्रजाळी, ज्योतिष अर आयुर्वेद रा अनोखा पाना हा। हाथ रा लिखियोडा जैन सूत्र बताया करता। जका वास्त श्री अगरचदजी नाहटा बीकानेर सूची बणावण बनाण खातर मन कई विरिया कागज दी हा। पण किसनलालजी र कटनाट पोथ्या रा संग्र लिखावण बगी अळगा मळता बनाता रया।

जनाण तळाव री पाळ माथ उपासराळा री वगची रूप दा उधारी माटा वणी ह। उण म श्री श्रीपाळजी अर जेसराजजी रा पगल्या रोप्याडा हूता। श्री किसनलालजी सू याद र भी उजाड वै पगलिया वठ मू मगायर जन मिंदर म स्थापित करवा दिया।

गुरांजी री उपासरा गाली मात्र श्रीपाळना धर्मशास्त्र व्याकरण, काव्य अर मशीन सूं डाढो मोव राखता। चेला जेसराजजी वडा इन्द्रजाळी गुणा। उणा आपरी करामात सू गिगणवगनी धान रा राम उपासर खास माय उतरायली अर गाव गारवदेसर र वागडा परवार म हुई अेक सती माता न सपर ले आया। उव समै जत्र-मत्र तत्या रा धमा हूता। 1835 नडै चारण कवि वर्णीदान (काठियाड) जत्या री पाल्ड लीला खातर जती रासो" लिख्या—

'जत्र मत्र सहजादवा, मल बीर अजमद।
तथा गोरा खरतरा, बीजा जती बहद ॥[1]

काल्ू म ही अेग तात्रिक चिमत्कारा रा घणा काय-सुमरण लोगा री जबान माथ चाल। जेसराजजी रा चेला श्री गणेशलालजी पसुवा रा टूणा टसमण जत्र मत्र

---

1 मरुवाणी—वर्ग 1 अक 12 स०—रावत सारस्वत।
2 आज का लुच्चा लगवाडा' शब्द 'लुचित केश व नागा नाटक" दो शब्दो से उस समय का बना मान हुआ है। श्री सारस्वत ने बताया।

अर झाडा झपटा कर्‌या करता । इया गुराजी र दोनवा सिस्या ही जत्र मन्त्र विद्या न नी भुलाई, पण जति श्री किसनलालजी री प्रसिद्धि अेक जसकर वद्य र रूप म वधी । जतिजी आपरी कुसळता सू अनेक असाध्य रोग्या न जीवण दान वक्साया । किसनलालजी रै गुरु भाई गोविंरामजी आयुर्वेद र अनुभवाधार माथ गाव काळ म वडा उपकार कर्‌या । इया री जति दीक्षा स० 1993 र अड मच हुई अर स्वगवास म० 2032 मे हुयो । हम्मैं उपासर अर मिन्दर अेक ट्रस्ट चाल ।

श्रीपाळजी रा सिस्य गणेशलालजी जलम सू माहस्वरी जात रा वाणिया हा । उवा रा मोटा चेला किसनलालजी गाव खियेंरा रा बोथरा ओसवाळ हुता । अ छ मीणा री ऊमर म ही अठ र उपासर चढा दिया गया । छोटा चेला गोविंदरामजी मालाणी रा विरामण हा जका री जती दिख्या अठ म० 1983 आसाढ सुदी 15 न हुई । बनोरा जीमीज्या अर ब्याह रा सा उछब हुया । उव मौक बीकानेर सू श्री पूज्य (वडा आचाय) चरित्र सूरिजी समेत जत्या री मोटी पाळटी आई । झवरा रा धमशाळा अर ओसवाळा र नाहर म ठरा । दूज दिन दीक्षा देण र मथ श्री पूज्य न उपासर वाड्‌या, पण चरण घरण नी धरण दिया । दोवटी रा पाट विछावता थका वठ ताई जति लोग ल्‍या । गोविंदरामजी रा साथी-सार्ना म्हा लागा देया—मलमल री मोळियो, सोन रा टड्डा इत्याद गणा गाभा उतरवा लिया अर घाळा वमतर परायर ओघा पातरा दे दिया । गाविंदरामजी री मा, अठ वामणी नाव सू रवती जकी बट ग दिरया देखर गळगळी सी वणगी ।

जत्या न अठ ओसवाळ पल्या थितिया राज गोचरा (भोजन) बरावता । अेढा मढा इया न पुरस्या विना जीमण रा पातिया नी पडता । पण जमाने र अनुसार दलता दलता इणा री सग रीत मनुवारा टूटगी । आखिर अ जमार रायजादा जति उपासरो अर लाखा री माया मता ओसवाळ समाज खातर छाडर मर खूटया । हाल म मदिर रा सवा सीताराम सवग कर ।

लूणकरणसर र जन मिंदर उपासर रा गुराजी खेमचदजी अर मगनारामजी हुता । खेमचदजी रा चेला पनालालजी जका आपर अधीनस्थ सूरतगढ र उपासर न सभाळता वठ रता । मगनीरामजी रा चला भूरामलजी एम० एम० बीकानेर पुरातत्व विभाग मे सवारत है । उपासर न ओसवाळ समाज सघ लूणकरणसर समाज खातर आतिथ्य घर वणा लिया अर जन मिंदर सेवगा द्वारा पूजीज ।

काळू र असवाड पसवाड नाच लिख्य अनुसार उत्र समैं जन मिंदर हुता—
1 सरदार शहर म पाश्वनाथजी रा 2 मिंदर 2 दादा वाडी । 2 पाछ श्री डूगरगढ म श्री पाश्वनाथजी रो 1 मिंदर । 3 बिग्ग म शातिनाथजी रो मिन्दर । 4 राजलदेसर म आदिनाथजी रा मिंदर । 5 लूणकरणसर म सुपाश्वनाथजी रा मिन्दर अर उपाश्रय । 6 महाजन अर पूनरासर म ही जन मिंदर हा ।

काळू मे जना रा ढूढ़िया अर बाईस टोला सम्प्रदाय—काळू म दिगम्बरी ता बया नी हा पण परणीजर आवण वाळी बहुवा 'ढूढिया' सम्प्रदाय री वधती साखा 'बाईस टाळा" पथ मानण वाळी बाया तो बीकानेर कानी सू वेई आई । इय सम्प्रदाय रा स्थानकवासी आचाय श्रीलालजी, ज्वाहरलालजी इत्याद सता रो गाव र आम पास

विचरण हुता रयो, पण काळू आवण रा जाग नी बठा। इया मु या र स्थानका म वर्ण र कारण ही स्थानकवासी नावा ठर्‌या। सवत् 1984 म जवाहरलालजी रा मासो सरदारशहर अर 1985 म चूरु हुया।

स्थानकवासी अर तेरापथ —स्थानकवासी सम्प्रदाय सू ही स० 1817 म तेरापथ उजास न्याडा है। पथ री पली किरण रा आचाय श्री भीखणजी यो पथ चलाया। णा री गुरु पीढी लगोतार भारमलजी रायचदजी (स० 1887 र नड) जयाचायजी स० 1908 आचाय पद) मघवागणीजी माणकगणीजी (स० 1953 म मघवा मुजस च्या), डालचदजी अर अष्टम आचाय श्री कालूगणीजी (11 वरमा री ऊमर म स० 1944 म दीक्षा लीरही अर स० 1966 म आचाय पद समाळ्या) हुया। इया तरापथ सस्कृत र अध्ययन अर साहित्य निमाण र काम वत्ता जोगदान दियो। उवा रो सासन वरण-सम वाज। काळूगणीजा न आपर जीवण मे सर्व सारू काळू गाव सू डाढी मोह-मिमता रयी। इय गाव री जिक आवता ही व फरमावता— या भाई म्हारा नाव रासियो गाव है।"

म्हारी दवणी म आचाय श्रा काळूरामजी स० 1979 म काळू पधार्‌या। सुडौल सरीर माथ लामी गरदण अर लामी भुजावा सारु वखाण दवता जद हजारा दरसका नै आपरी कानी खीच लेवता। दूसरी वार व वि० स० 1988 म ओजू काळू पधार्‌या। गाव रा जुवाना गातिका गाई—' छागाजी वे नदा परम सुख कदा। शीतल चदा र सोभा हर लानी काम का। प्यारी लागीजी सूरतिया मारे शाम की॥"

उवा रा महाप्रयाण गगापुर सिटी म हुया।

श्री काळूगणी जडा जगत विख्यात धरम नना र अनुसासण म तेरा पथ री वडी वढाया चढी। हमैं तेरा पथ रा नवम आचाय श्री तुलसीगणीजी हैं। आपरा जन्म नगर लाडणू म स० 1971 कार्ती सुदी 2 नै हुया। 11 वरमा री ओसथ्या म साधपणा धार्‌यो। स० 1993 र भादव 22 वरमा री ऊमर पायर आचाय रूप मे तेरा पथ सासण रा भार साम्या। आपरा गुरु श्रा काळूगणी सरगा लोप होणै सू पला साधी सूत्र बूत्र सू एक पाना श्री तुलसी र नाव रा गादी नीच छाडग्या। तद—"कना सुरगो रग छाय रयो गगापुर म" गाइज्या।

आप सू तेरापथ न मावजा धरम ताकत मिली है अर जन सम्पक मोट रूप म पसर्‌यो है। भारतवष रा माटा माटा थान मुकामा ताई आप देस भर रो पद विहार कर्‌यो है जिणा म चार बार काळू रा ही नम्बर आया है। जद कया जाव के काळू म जन धरम न घणो बार मान्यता मिली ह। अठ रा भाई वना र दीक्षा साधपण री वाता सू तो काळू री मा मान्यता और भी वडी लखाव।

काळू रा दीक्षारथिया री टाप्पण—

1 वि० स० 1890 म वदा र घर री अेक औरत पग्पान काळू म दीक्षा लेयर साधपणा पाळ्या।

2 वि० स० 1956 म श्री जमनाजी अर पाचाजी नावरी दो महिलावा तेर पथ र छठा-मानवा आचाय रा निगराणा म अेक माथ अठ (माताजी र मदिर म) दीक्षा

ली ही। श्री जमनाजा समार पाव लूणकरणसर र विरमेचा री बेटी हा अर तोलाचद जी नाहटा री बडिया।

3 पछ इया तोलाचदजी जवरमल नाहटा राळ र कडूम्ब सू मग्दारमलजी नाहटारी मसारी सायधण न्छिमाजी (देसणोक र भूरा री बेटी) तेरा पथ म साधणी बणी। इया र साथ भाई रामचन्दर भूरा ही साधपण म दीक्षित हुया।

4 सं० 1973 म स तानचदजी अर मूलचदजी (पला) वश र कडूम्ब सू हीरालालजी नाव रो उणा रो एक भाई काळूगणी र हाथा सरदारसहर म माघु वण्यो।

5 सं० 1994 मे कार्ती री आठयू न बीकानेर नगर म 31 दीक्षावा र साथ काळू र बीमराज पुगलिया रा बहिन न्छिमाजी साधपणो लीन्हा।

6 सं० 2000 म श्री राजमल नाहटा (काळू) री बहिन तथा समार पख सुखलालजी कोठारा र बेट री बहू (श्री जानीदेवा) री दीक्षा गगासहर म नानाजी नाव सू हुई। इणारी आग्या ही सं० 1999 र विहार मौके माय काळू म आचाय श्री तुलसी रै श्रीमुख ही फरमाइजी हा।

7 सं० 2006 उणी तोलाचदजी नाहटा र भाई टीकचद नाहटा र सपूत रूघलाल री दीक्षा जयपुर म हुई।

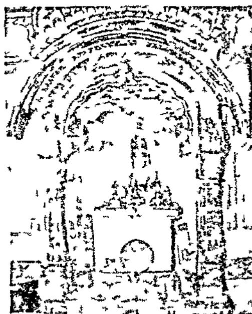
8 सं० 2026 कार्ती मे बीमराज पूगलिया (काळू) री बटी (वन्नू) विजयमाला री दीक्षा बगलोर मे हुई। इम तरा सू काळू रा भाणजा भाणजा मोकळा दीक्षित हुया है। इण सग पुण्यातमावा सू गाव काळू घणा गौरवमान्नी वण्यो है।

तुलसीगणी 16 बरसा री उम्र माय गाव काळू सं० 1987 म गुरु माराज काळूगणी र साथ पली बार पधारया। जद आपर गुर री मिमता भरी वाणी— या भई म्हारा गाव रामियो गाव काळू म्हन डाढो आछो लागै रूवारै। अनाजी मूल बूथ वाळी गुरु री या निराळी वारम्बार री भायखा वाणी श्री तुळमा र मन मायन खनगी। इम्मैं तो उव श्रावकारी अज विन माय सदीव परमाण लागाक काळू तो म्हार गुरु र नाव रो गाव है।

तेरा पथी अर गाव—इय परम्परा किरपा र कारण राजलदेसर बीदासर सूमासर चाडवास पडिहारा रतननगर रतनगढ तारानगर जडा कस्बा री तरा गाव काळू ही तेरा पथ री गतिविधिया रा केन्द्र कुहाण लागा है। अठ इया आचार्यावा रा घणी विरिया हाळा चौमासा अर मोछव हुया है। श्री तुलसी (सं० 1987 1999 2009 तथा 2035) चार वार इय घोराळ वास आपरा पदापण किया है के काळू म्हार गुरु र नाववाळो गाव है। श्री तुलसी माच माच सम्बन्ध है। इणा र यायरारी सासण सू तेरापथ नै वटी व्यवस्या तथा आनरी ताकत मिली है के उव काळू तवान गावा नावा रा गुण चेतै राख।

कण सका के म्हार इय काळू लूणकरणसर र क्षेत्र सू तेरा पथ मघ न साध साध्वी भावा सार अनेकू दीक्षारथी सौंप देइज्या है जका र पावण कारजा समेत सघ रै माण विस्तार म लठो उजळापो वण्यो-उघडयो है। अठे-ग्यान धरम काज म्हार गान्धदेशर, पूनरासर अर महाजन जेंडा गाव ही लार नी रया है। इय जागु अगोड री धारणा मुजब म्हार इलाक र श्रावका ही जन धरम र वधाव म आपरो पूरो स जोग

करयो है। अठ गावा म भावका घनी मानी सद्धावाण सावक हा हाया—अर है। काळू रा सरवश्री सुगनचदजी नाहटा तथा लूणकरणसर रा श्री जेठमलजी बोथरा वगैर रा नाव ऊच भाव, आग लाइज। काळू म श्री तालाचदजी साड हजारा र खरच सू अनेक बार गाव रा असग्य लोगा न रिजव मोटर बसा सू दिल्ली बम्बइ जडा धणसरा दूर-दूर रा सहरा ताई लेजायर पूर इ नजाम (प्रवध पातिय) मू आचायश्रा रा दरसण सुल्भ करवाया। उवा रा भाई भर दान साद रा नाव हा महीण महीण री मोकळी बार निराहार तपस्या पव सू गिणण जाग है। पण इय पथ सावका मू स्राविकावा आग जाण चाव। अठरी महिलावा घरम काज म मिनखा सू ऊची आस्था निष्ठा राख अर उवा री गिणत डाढी गिगण दिस याक। बा महिलावा रा सपूत ही साचा सावक वण अर तेरा पथ धरम रो माण कनवा वधार।



जन मदिर अर मूर्ति

चौथो पडतग

कालू री ख्यात नावो—

गांव री मूळ कथा—जकी धरणा र मो मो कोसा ताई चौफेर गाव री सुख सोभा तथा गौरव गाथा गूज गरणाव, उव गाव रो रामराज्याणद वडो विचित्र अर विरालो है। गांव घणा पुराणा अर प्रख्यात आस पास केई जगा जनाण मनाण मिळी पडी थेडी निजर चढ। काई अेक रो नावा विदासर ही बोल। पण पुराण सम म अठ केई वास वसता जिका रा याग-न्यारा नावा हुता। काळू र कुआं म पाणी मीठा अर मोकळो होवण सू सग वासा राम राजी हा। सम री बात घणा काळ अर इया वासा र लोगा म फोडा पड्या। धाडवी, लूटेरा तथा कटक ही घणा आया-जाया करता। व रिपिया पइसा हा नही, लोगा रा वरतण वासण अर गाभा चीरडा नवात सारी अळेवण खासर ले दवता। कटक आवतो नद पोरायती नगारो वाजतो। गांव रा लोग अेक ठोड भेळा हा जावता। बन्दूक छोडता अर सग मद मोटियार मिलर उवा न गाव सू काढता। लुगाया लुर जावती टाबर गुघा उठता तथा पल्ो ठा लाग्या वरतण भाडा, कासी जसद रा कडी कडिया अर फावडा कुवाडा जडा जरूरी चाजा हो धूड म ऊडी वूर दिया करता। वरतार वधरी अ मग वस्तुवा रात री रोजीना लोगा न जमीदोट करर सावणो साँपजतो। माटी रा कुल्डियां सू पाणी पीवता अर पत्ताणिया परातिया सू जीमता जूठता। काळा कटका र दुला सू दाझ्योडा सग वास उजडग्या। अेकलो काळू ही कूआ ज्हाडा, मदिर अर गढ माताजी रो मढ तथा राजा सुघड र विवुधव्रत वण्याडा मीठ पाणी र ब्यारु कवा ताण आख फोडा जूझता आपरी जाग्या थिर रह्या।

भोम वसत चाकीदारी—वतमान सम म काळू गाव धारा मडळ मझ अेक मदानी भाग म कस्बे री रगत रस वस। इयं सू नडो नूचा अुतरादो पाणो अेक वास रा उजड पुराणो थेह है। थेह सू भळे थोडी उतरादी लागती 'घाळ ढाव' नाव री माटी पाळ है। इय पाल र विपतो ही अगावू निगण रूपनो वडी धोरो' नाव रो अेक वडा लाको है। इय री टोकी अूपर कटक डाकुवा री निगदास्ती सारू, कदेई थेह वसतं वास और दूज वासा तथा काळू गाव वेगी तत्कालीन राज्य रो बन्दोवस्त चालतो। ऊंची टोकी माथ अेक माटा मचाण, उवा चाटी राज र झड अर नगार वध गाव समेत गाव कोट सोभती। मचाण फौज र मोरच री भात वणायोडो हूतो। गावावू जान माल री रुखाळी खातर इय चौकी थाण म रात दिन जटळ पोरदारी रवती। जदे-कदे पोरायतिया लोगा न कटक आवता लखावता अर वै मचाण सू मोरचो ले लेंवता अर भडाभड वदूका छोडता थका गडागड नगारा निसाण वजा देवता। गाव रा वासिन्दा माणस यो लडको भडको सुणर कटक रो आवणो जाण जाया करता अर

आपरी चीज वसता साडा गडन कर'र[1] सोटा, भाला बरछा मू सगळा माथ सामणो करण मच जाया करता। इस तरा कटक रै धाव कावै, काळ गाव रो बचाव उपाव वणतो ग्यो। 'घाळ ढाव' गी पाळ अर वडी घार' री टोक। थेह री जूनी राव रस्थापन ओजू वठ अडी ऊभी ज्यूँ वात गी माख भर।

जटायत रो मध्यवर्ती वास कालू—काळू वासत या वात कवणी दोरी है के यो गाव फलाण साल मे ही वस्यो। जाणा यो तो चार जुगा सू स्थायी है। सतजुग री देवी माता काळिकाजी र नाव माथ इय रो नावकरण सस्कार हुयो है जको यो थळी मझवास काळू माता काळिकाजी रो सदीनो सुखदायी अमर निवास है।

काळू गाव बाकानर डिवीजन रो थळी प्रदेस जटायत वाम सू जाणीज पण उव सू पल्या राजस्थान म बीकानेर राज्य भोम रो पुराणो नाव जागल देस बाज्यो। म्हाभारत र पोर जागळ देस कुरुराज्य' र हिडदैगत स्थान पायो हो। कुरु राज्य पछ अठ किणा रो राज्य इधकार रयो। पण मध्यकाल मे नागवशी क्षत्रिया री राजधानी अहिच्छत्रपुर (नागौर) हुती। जक वरतार गाव काळू र ताल म वगती मरसजी महाराज री माही टोट काळिकाजी र मढ कन टूटी। इग्यारव सईक रै मम-सार अठ जोइया चवाणा साम्वला, भाटिया अर अनेकू जाटा रा राज्य इधकार जम्योडा हा। इय जागळदेस रै रेतीला टीला वाळ धरण प्रदेश माथ न्हानकिया ठिकाणा-पाणा, आज रा चौकी याणा सा जाटा रा खुल्ला राज्य इधकार चालता। आपरै बचाव खातर जाट जबरदस्त अर साधणपाण नाजरूतिया हुता।

थळी रा यो प्रदश जाटा री मोकळी जातया म बट्योडो रवतो। इय पोर गाव काळू रै ताण गोदारा जाट चोखळ चतर सुजाण राजता। जया—लाधडिय सेखसर रो मालक पाण्डू गोदारा कगव माडी तीन सौ गाव भोगतो। कुमारपाळ कसबो ही इणा र बरोबर गावधार्‌या लूटी धाक पाळतो। रायसलाण रो रायसळ वेणीवाळ सईकड़ू गावा रो धणी हो। वळूदी रै कान्ह पूनिय कनै ही सईकडू गाव हुता। सूई गाव रो चोखो सिहाग ही डेढ सौ नडा गावा गो घणी हो। इया बाता रो पूरो पत्तो जाटा र भाटा री बहिया तथा गावा मे जनी रूपियोडी देवळिया सू मिलै। पण अ सारा जाटा रजवाडा आपर ही वळगार सुभाव मू आखर हठा वैसग्या।

अेक ढाढी र दान री हाड न लेयर पूळ अर पाण्डू री तकडी लडाई हुई। पूळसारण री लुगाई मळकी पाण्डू गोदारै रै घरा जाती वगी। समै रीत मळकी र नावै मळकी-मर अर पाण्डू पुत्र नकादर र नाव सू नकोदेमर, दो गाव काळू नैडा नूवा वस्या।

अड गडै जाइया रै सघ राज्य सू लड र बीरमदेव जी आपरा गात्र वन्रेण छोडर केई जुग काळू र कन वागामर अर कँवळामर कडूर्स समेत टिक'र रया। पडौसी गण राज्य अवसेस समै जाट सघ राज्य बीकानेर री थापना र वखत पचायती राज्य ग्रामिया र राज्य सू मिलतो। अ राठौडा मू पैल्या जागलदेस मे हिसार ताणी फैल्योडा हा। बिलोचा कयाम खानिया रा गाव अर इयै साथ भोम माथ छोटा-मोटा केई

1 गाडूया धन घरती म रसी वा कोई कटक सघारे। (जसनाथजी र सबदा म)
सिद्ध चरित्र, पृ० 3 ले०—मूयशकर पारीक

2 बीकानेर राज्य गो इतिहास, भाग पहलो पृ०—69 श्री ओझा।

जागता भोगता आप आपरा खेडा नावा इधरार जमाया वठा। जागळू र सासक माणकराव री सपूत नापो साखलो मुसळमाना र टर मू राव जोधा र कने जायर उणा र कुंवर री मनसा मुजब वि० स० 1522 म उणी कुवर बीकाजी न अठ चढा ल्यायो। बीकाजी आपरी याव नीत तथा भा रा जान सू इय आख देस न सासण जावत ढाब लियो। आपसरा रा वरा नाटिया, जाट, जाइया खीचीडा, पठाण, बाघाड बलूचिया भुटा इत्याद सगळा न भिडता ही हरायर बीकाजी आपरी लूठी हिम्मत, जुद्ध चातरी अर भरपूर भादरा री धाक बानकी दिखाळ दी। पाण्डू अर पूळ री लडाई म राव बीकाजी पाण्डू रा पख ल्या। पूळो हारयो हो, सो वो ही बीकाजी रा सरण म जाय वट यो। जाटा री ताकत टूटगी। पछ मग जाट, भोम त्यान देवना थका बीकाजी री रयत वणर रवा लग्या।

मरुस्थल री पुण्य भोम काळू—काळू इय पुराण 'जागळ देस' तथा वतमान बीकानर डिवीजन र थळी प्रदेश म उव सम रा जूनो जुगीन अर आपरा जागा बळबूत वसवाळो करामाती छातीधर गोदारो गाव है। इय री पवित्र धरण र चौफेर परम पूज्य सगत पुरखा देवा सती दे या अर रिषी मु या रा सतजुगी पग जगमग रयाता मडया मिल।

गावा गावा सती मातावा वायल वायाजा अर दमाण करणीजी इत्याद रा लोक पूज्य थान है। तोळियासर, लखासार, कोडमदेसर अर अळाय आद थाना कालिकाजी रा अनुचर श्री भरूडा विराज। काळू र नटा पूनरासर हडमानजी अर खियरा रामदवजी रा मेळा लूठा लाग।

श्री कोलायनजी र काठ, कन कपिल मुनीस्वर साख जाग दरसण रा उपदस दीन्या। याग्यवल्क्य, च्यवन तथा दत्तात्रेयजी जडा गुरवा आपरी तप साधणा अठ ही वदर साधी। जागरा नाव रा तळाव, चिमनगुफा अर दियातरा गाव इ याद ठोड ठाव इयै वारता रा सग साखी है। इय पाम भठे कनरियासर जमनाथजी अर मुकामा जाम्भजी रा आत्मधाम है। पल्टू माताजी रा दूजो स्थान है। काळू स अगूणा नाहर र नडो महाभाग स्याम पाडिय री धारा, उतराटा पीळीबगा कन पुराणी सभ्यता री सोध सार लाखा धारा तथा दिखणाद द्रोणपुर रा जागा हडमान बाब रो सालासर अर स्यामजी री खाटू इत्याद देख मेडा है। आथूण करणीजा रा देसनोक तथा कोलायत जा जिसडा तीथस्थान सौभ। गागाजी पाबूजी तजाजी अर आज र जुग रा हरिरामजी जडा लोक देवतावा री इय भोम, गाव काळू र वारकर घणा मट या मिल। फागा (फोग पतन) मे शृ गी रिसी रो धूणो बाज। दसाण र वासा म भरथरी सुगडवास नाव रा वास अर उणा म सुकदेवजा रो निवास बताइज।

थळी र गावा म ओजू मडी दीसनी सता मातावा री दवळया म पुराणी वि० स० 1013 री देवळी, घनेरू गाव मे, वि० स० 1560 री देवळी रीडी गाव मे अर वि० स० 1798 चेत बदी 11 वार अनीतवार री लिखियोडी देवळा काळू गाव मे, पुरातात्वी सोध कारया र जोवण जोग है। धनेरु अर रीडी गाव री दोन देवळया अंकस व्हैर री कोरियोडी धोळ सपाट पाथर माथ घण ओज आभ अूभी साफ अूधडै। गाव काळू म कालिकाजी री स्वयभू शिला देवळ सतजुगी है। या सौ-सस साला, आदजुगादी, ससू

जूती लोर जाच रथा मार्वीज गा"न ।

काल् रो जूनायो घर जाण—वाळिकाजी री जान मरुठाड र पाप दुर्गोति में गाव वाळू रा नाव घणी जामा लिवियाडा लाध । वि० स० 1539-60 सम ा दा बात्रा 'सिद्ध चरित्र" (श्री मूलशकर पारीक) री पृ० 49 अर 82 म मा'वाडा मिल । (1) मेक बार गाव वाडे ो हरिसिंग ब्राह्मण श्री वाळिकाजा री जान गाव वाळू जा रयो । मारग म उव न वाळिकाजी री किरपा सू साचो परचो हुया । परच म बतायो गयो के—"ब्राह्मण तुम्हारे घर बच्चा जन्मा है किन्तु उसकी माँ मर जायगी । दिढ रहना, घबराना मत । तुम्हारी यात्रा सफल होगी । बालक, कतरियासर के हमा'जी को सौंप देना ।"[1] बात (2) अेक बार जियोजी ब्राह्मण आपर गाव लालमदेसर सू अेक जनमान र बधाहिव काज वगी काळ जा रयो हो । रास्त म गाव कतरियासर आया । जसनाथजी सू प्रभावित होयर ब्राह्मण पाणी पीवण हत उवा री वाणी विमूणी ली । जसनाथजी उव न टोक्यो—"लग्न ठीक देख लिया है क्या ?" उव पाछो हो भर'र काळू रो मारग लिया । जियेजी गाव सू परया जगळ रैं गुवाळिया न समचार ही पूछ्या । तो उवा वो ही लडको आज र दिन खतम हुया बतायो ।

अठाँ कविता कथावा चीजा देवळया अर थेह री सामग्री र आधार सू ठा लाग के गाव काळू माता वाळिकाजी री जान जुगादि वास है ।

काळा रो काय, मनवाळी स्यात, वि० स० 1843 देस म अकाळ री काळी छाया छाई । गाव रा लो पजार कानी सू धान रा कतार ल्यावण लाग्या । सरसै कानली गैलो सैधा कर्‌यो अर काळू न काळ सू उबारण रा उपाव वणायो । अेकरसैं कतार सू आवत गाव र मुखिय मेख गोदार मारग र अेक गाव म होय पाणी बेगी अेक घ र नारणागै आपरी कनार ठामी अर घर म सू होक री बास्ल ल्यावण वडयो । घर री लुगाया काम करती निजर चढी । पण नीची नजर चूल्है सू चितमिया लिया मेख वठ अेक गोवनी अबरा उभ। जोर्ट, झट मेख उव री सिर बुचकार दियो । पूछण सू वेरो पडियो के— या गोदारा रा वेनी है, जक रा अक डावडा रो कार्ज बडा री टावडिया सायें आवती आखा तीज रो ब्याल होसी । उवा रा मामा रा पीगळा मोकळ पीमाळा र पण दय गादारी र पीर म भात भरण वाळो कोई कुटम्बी नी ह । उदमवार सग दराण्या जेठाण्या दय न मोसा मणा मार, जक बास्त या रोअ रया ।" मेख उव रावनी ऊबला नै वचन दिया क—'म्है गाव काळू रो गादारा जाट हूँ, तेरी डावडा र ब्याह म भात भरण जरूरपण आवलो ।"

कतार चाल्दी, मना बढ माणस, मरमा भाज र अग न नावड्‌या । आपण धान री छाटया लिया आपर घरा पुग्यो । पण घर अर गाव धंधा म भातवाळी बात सफा भूल्यो । केई दिना पछ अचाणचक हा मिनखा र मढ सुणा—"आज आखा बीज र दिन अब मा'री भरण रा कोन वचन है तेरा सा मनर चा'या तो पौवा ।' धन र्‌ाय री रकम अधायाड़ा पना । आवाजाज न क्. रकम राज्य पोतदार बानर न भर'र रसीद लेवणी । पण बेरया अर पाळया भात भरण वगी भरीज चाली ।

---

1 लोक साहित्य म अेक प्रसिद्ध दत कथा ।

दूज राज डोकरो मौट ह्लमाण सू भाई भतीजा अर बटा पोता समेत भातवी वणर ब्याळ घरा जा पूग्यो । पण बठ कुण जाण ? दूजोडा सगा— परसग्या न मौकळ माण अदब ले जाव, टिकाव अर मनवारा कर, पण इया री कानी काई आस नी उठाव । छेकड बठ अेक जातीय पच आखतो हायर मेख न पूछयो— ये कुणजी ? किणरी अडीक लिया ताळ मृ ओज अूभाहा ?" डोकरो उव न बताव .. "थार इय ब्याळघर मे म्हा गोदारा री अेक छारीटी है । अेकरग क्तार सू मढता, उव न म्हैं इय मौक भात भरण रा बचन दिया, जके पूरण आयो हूँ ।" कण ही पडूत्तर नी दियो ।

इया गोदारा न ठरण वेगी अेक वादा सूनो ढमढेर घर बता दिया । माहेर री वेळा जेठाणी अर देराणी र पीराळा परसग्या न तेडा बलावा दिया पण बठला इया न कूड मन ही कवणो भूलग्या । जद मेख रा जाया ठीक वखतसर मैंढाळ घर आया । बाप वत्ताई, आपरी भण तथा उण रै सासराळा न अर भाणजी न इतो गणो गाभा'र रिपियो दियो के दूजोडा दोनू सबधी मिलर ही इणा सू आधो नी दे सक्या । इया कानी सू गाव भर नै लूठी जीमणवार अर कारूवा न कारू दाई रिप्पड बाटीज्या । दूजोडा सगा सरमीजता गाठ बाधली अर इया री हेठी करावणी चायी । इणा र डेर मागणियार जाचका न मेल्या तथा बेवखत (माळा फेरण र सम) दान अर बिना रूत रा फळ (मतीरा) मागर भाडी करण खातर सिखाया । पण भवत मेख सू सारा जाचका मूढ मागी चीजा दान दिखणा र रूप मे पाई अर भाडी री जगा आछी कीरत री कवितावा वणाई । व कवितावा गोदारा जाटा र भाटा अर ढाडिया र मढा ओजू रयात रूप बोलीज । कई कड या मौक मौक लोक मुख ही भणीज—

1 मेखा वास वसू पातळ रा, धीर बधावण धीरा
काइन बखसो कडा गोखरु काइन बखसो चीरा
मन देवो बार हाय रो खेसळा बाधू मोठ मतीरा

2 भज जगत भगवान, सूय किम मिट उजासा
सकट तज न ध्यान वेद त्रिमा घर बासा
डूगर भर न डिग मील सायर किम मुक्क
वदण तज न वास, नीर दरियाव न चुक्क
माग्या योक मिल अवस, मन आणद चिन्ता मिट ।
माग्या जोध काळू तखत, मेखावत नाही नट ।।[1]

मेखै भात रो काम पूरयो अर दळबळ सू घरा पूग्यो, जक मू पैल्या ही कोई नरसी रो सावरो मेखो वणर राज्य री रकम खजान मे जमा करवा आयो । रसीद मिली अर मेख र जी री कळी खिली । भवत गे भरोसो भगवान माथ लूठो जमग्यो । वढ मेख घर रा धधा सू किनारो करतै उबाणा पगा गऊवा चरावण रो काम झाल लियो । अेक रोज वन सू आवतै उव गऊ भक्त बूढ गुवाळ न साप लडग्यो । उवा काया मारग मे ही दे पडी । ठा—लाग्या काळू अर आस पास रा गावा सू लोग आया अर मेख री ल्हास नै गाव ल्यायर गोदारा र कूव कन दाह सस्कार करयो । तीज दिन भस्मीर फूल तीरथा गलै भिजवायर उव चित्ता माथ अेक मोटी छतडी बणाण रो काम पुळायो । सामण भगवान रो मिदर अर लारै कूव नै सुवारण रो काम पूरयो ।

1 एक ढाढी सू ।

सम वग वहाण वग लाग न ठा ना लाग । करीब सईकड़ साल पल्या आसै-पास रा केई वास गाव काळू म आ मिल्या । ख्यात बाचणिया माणस जाण के उवै वखत दस मे छोटा गावा वेगी सुख शांति जाबक नी ही । जागळ देस वासी मध्यकाल माफक साचो गैलो छोड चुक्या । लूट खोस अर अपहरण री घटनावा सू प्रजा भारी पीडित रती । मिनख साल र अेक पख ई सुख सू सोरो सास नी ले सकता । जाणा के बीकाजी आयर वरीडा न काबू कर्या, पण लोक हिडदा सू भो नी भाग्यो । कारण— वैरया न बीकाजी तो लूट्या पण उणा गे ध्येय पीडित प्रजा न सुख सू बसावण वेगी लूटणिया डकत' न रगड नाखण रो हो । सो बीकानर रो राज्य ही पूरी तरा जमणे-जचण म सौ-डेढ-सौ साल बितातो वग्या । वटक रै वठेस, आबरू अर धिगाणी धिणा-परी वटाई र दुखा गावडिया लोग ऊँचाळो घाल्ता थका आपरा पूरिया पटकता ही रवता । इय स्यान सीमा आण सू काळू गाव ही वास.ऊ वधेप वधतो रयो । जाटा रो राज्य गया जकी वान चितारी अर देस रो नवो राज्य जमतो खमतो जोयो ।

माराजा सूरतसिह—*लोका री आस्था भगवान भरोस वधा । जमान री नूवी-नूवी वाता सुणती थकी जनता रा सतोख देवी-देवतावा कानी लग्या । भगत मेख री* चमत्कारी घटनावा चेत करना काळू र मिनखा री भावना उजळगी । उवा री मान्यता ठैरी— 'भगवान सनातन सग ताकत देवाळ, सरब व्यापक अेव सरबग्य है ।'' इय सोचना सारू गाव रा लाग परम पिता परमात्मा तथा महामाता कालिकाजी रै मिन्दर-मढ सार फळ्या-फूल्या । जक दिना अेक दो बार गाँव-वास अवलोकण वेगी महाराजा बीकानेर श्री सूरतसिघजी (वि० स० 1822 सू 1885 तथा सन् 1765 सू 1827) अठै पधारिया । काळू गाव र वधाप अर फूटराप वेगी अठ मुखिया लोगा न महाराजा साब घणी साबासी दी अर आप राज्य रो बडो गढ घलाण री इच्या प्रगटाई । माताजी (देवी) री थोक पूजा रो साल्गीणा बधाण बाध्या, जको वि० स० 2004-05 ताई राज्य सू सदामद मिल्ता रयो ।

मुसळमानी राज्य मे हिदवाणा गरब-गुमान अर उछाव रो हाण-नुकसाण हुवग्यो । आपरी वीरता सू निरास हुयोडा लोगा कन दीन बधु तथा देई-देवतावा रै बळ-बूत अर दया भाव रै सरण जावण र सिवाय दूजो कोई गलो ही नी रयो ।

सूरतसिघजी आछा राजा हा । देवी-देवतावा माथ उवा री पूरी आस्था वणी हुती । कई बिरियाँ, बीकानेर राज्य रा सिरदार महाराजा सू समत नी रया, पण उणा ऊपर आत्मविस्वासी सुभाव सू सग काज अपण आप सुधारया, जको अेक दो बात माडू ।

पल्या राव उमरावा र दरबार म बीकानर राजा रो राजतिलक केवल सेखसर रो चोधरी, गोदारा जाटा रो मुखियो ही करतो । पछै महाराजा सूरतसिघजी री गादी नसीनी र वखत (वि० स० 1844) सिरदारा मे मत भेद हुग्यो । महाजन अर भादरा र सिवाय उणा रो राजतिलक करण म दूजा सिरदार हगिज राजी नी हुया । ब बीकानेर बड या तक नही । पण सूरतसिघजी रो राजतिलक गोदारै जाट र पाछ महाजन अर भादरा र ठाकरा कर्यो तथा उवा आपरी औकात सू सूरतसिघजी न राजा बणावण री जिम्मो आप माथ अवस ओढ़ लीन्हो ।[1]

1 मारवाड रो इतिहास पृ०—182 ले० श्री रेऊ

2 राजाजी सू रीसा वळता सिरदारा जगा जगा उपद्रव करावणा चालू करा दिया। कठ ही कर बन्तारी रो कारण दाग्या, कठ ही गढन नींया री धारणा बताई अर जनता न सागीडी व कायर लूट खाम मद करवाग दीनी। कई माचा केई कूडा, पण कारण बध्या अर सूरतसिंघजी कापी हाकीज्या। चूरू गो ठिकाणा इय विरोधी काम म सदीव आगीवाळ रयो। केई मौर्ता भादराळो ही भेळो आ रळया। चूरू रो ठा० स्योजीसिंघ ता इय वड राज्य री लडाई सारू सवत 1871 (ई० स० 1815) म ही काम आयो।[1] उव न आपरी सरवजाण जनता री तन मन धन सू पूरा स्य रवती। छेकड चूरू अर भादरा, दोन ठिकाणा खाउस हुया। इय घम लडाई मातर महाराजा सूरतसिंघजी न अग्रेजी राज्य सू पूरी मदत लेवणी पडी। बधन विद्रोह र कारण राजनीत ध्यारी सू घिरिया सूरतसिंघजी न घणी बार राज्य र मध्यस्थ गाव काळू म कम्प राखणो पड यो अर खुद आपन रवणो पड यो।

उव समै काळू र कन वसता गावा म ही मोरळा गुणी कळाकार अर काजबीज मिनग मिलता।

आसोजी रा वशज आसावत चारण, सिवदानसिंघ बारठ, गाव नाथूसर र मारफत महाजन र राजा अमरसिंघजी नै पख मे राखीज्यो। इय कारण शिवदानसिंघजी न गाव मोकळेरा अर नाळी राठ शिवपुरे बखसाया। अडी वखत काठपील र मौके गाव रावासर मे बसता गुसाई, (जका हर्मै झूमियाळी वर्मै) नाथूसर रा स्यामी अर काळू रा मुखिया लोग रुपियो पीसो भेळो करण खातर घणी बार राज्य रै काम आडा आवता। शिवदानजी रा हुक्मसिंघ उवा रा करणीदान पछै रामदान अर रामदान रा बटा बल्देवदान रा मोकळरा माथ कालै ताई इधकार चालता।

उव सम काळू सू चार कोस र फासलै गाव कुविय म वि० स० 1855 र नेड सिढायच चारण दयाल्दास जी वडा जोग अर विद्वान महानुभाव हुया। अग्रेज सरकार सू सधि होया पछ राजपूतान र राजावा न आप आपर राज्या रा इतिहास लिखावण री गरज पडी। जद सूरतसिंघजी अर रतनसिंघजी दोनवा र भगेस सारू दयाल्दासजी न यो काम सूप्यो गयो। दयाल्दासजी पुराणी बसावळिया, बहिया, साहीफरमान जूना कागज पतरा, पट्टा परवाणा इ याद सू सगळा मसालो भेळो कर'र वटी लगन स बीकानेर राज्य रो पूरो इतिहास लिख्यो। वा प्रमाणिक इतिहास ओजू स्याल्दासजी री ख्यात वाज। ख्यात र सिवाय देस दपण" आद अनेक पोथ्या दयाल्दासजी लिखी। ब नब्व बरसा सू ऊपर होयर चल्या। सूरतसिंघजी रतनसिंघजी सरदारसिंघजी अर डूगरसिंगजी महाराजा ताई ब राज रा मरजीदाना म हा। बीकानर राज्य री तफ सू उवा रा पडपोता आवडदान न गाव कुवियो खापरसर अर वासी रा भोगता देरया है।

चूरू र ठिकाण साथ सकडा जग लडाइ चाली। म्हाराजा न केई विरिया दिनमान दिखाळणा पड या। अेकवार हरद्वार र नड कथल गाव र अेक पडित महाराजा न चूरू फत्तह कर लेण रो आसावाद दिया।वो वचन साचो हुया पछ काळू र कन बसतो

---

1 "पत्रो के प्रकाश मे" स्वामी गोपालदासजी का व्यक्तित्व एव कृतित्व पृ०—35

गाव रावासर उव पडित न इनायत किया, जको एकीकरण ताणी उव गाव नै पडित ब्राह्मण रा वस भोगता ।

बीकानेर महाराजा रो कालू कम्प—बीकानेर राज्य मे मराठा रै उत्पाता रा ही भो वण्या रवता । उव जद कानी सू आवता अर चूरु जिले मे बडर लूट खसोट करता। बीकानेर म्हाराजा सूरतसिंघजी वि० स० 1850 म कालू पधारिया । काळू सू उवा दक्षणिया र धाव न दाटण बेगी साहडा सरदार ठा० ईसरीसिंघजी न अेक परवाणो भेज्यो । इय भावना री लूण-रुडी स ही म्हाराजा साव श्री सूरतसिंघजी आपरै नाव माथ सूरतगढ सुवार वसायो, पण काळू न उवा कदी हिवड सू हेठ नी उतार्‌या । इय गाव र गल ही आप तीरथा पधारया अर सवत 1868 मे सपरवार श्री काळिकाजी र दरसणा आया ।

सवत अठारह सौ अडसठ म
नीतिज्ञ नृप का ध्यान हुआ ।
दवी दशन परिवार सहित,
फिर काळू को प्रस्थान हुआ ॥

वि० स० 1885 (सन 1827) म महाराजा सूरतसिंघजी रा देहावसान हुयो । उवा र लार म्हाराजा श्री रतनसिंघजी अग्रेजा र चौके स जाग राज्य सभाल्यो । इणा रै नाव गढ समेत रतनगढ वस्या, मोकळा आछा काम हुया अर पछ म्हाराजा श्रीसरदारसिंघजी गादी विराज्या । सन् 1854 म सती प्रथा, जीवत समाध आद माथ रोक लागी । वि० स० 1912 (सन् 1955) मे म्हाराजा श्री सरदारसिंघजी सागी गाव काळू र गल हरद्वार जातरा पधार्‌या । गाव र टाड केला हेठ तम्बू तण्या अर रात वास विराजण सू अठ रा मुखिया चौधरया द्वारा जोग फरियादी लाग मिलिया । निसहाय अबलावा तवात सामण अभर अरज कर सकी । म्हाराजा साव मोकळी दाद फरियादा सुणी । इय जुग गढा री परम्परा सरदारसहर अर श्री डूगरगढ बसिया । हम्मैं गाव काळू लूठा गावा री गिणती म आवण लागग्या अर इय न आपूता छुटभाई थुथकारण पिर पडया । सुणा गाव झराया राठाकर, म्हाराजा बीकानेर र नड नातेला मान्य सरदार हा । उवा र लार सतान नी हो । राज्य रीत सारू उवा रा गाव खालस म मिलावण बगा राजाजी कई निना वास्त काळू उवा काकासा र नाव कर दियो । ब ठाकर वट काळू र गढ आ जम्या ।

गाव मझ गढ, बीच लाम लाभू, च्यारा कूटा बुरज अर चौभीतो माथू । तिरबारा-गुभारा, ऊचा मेडी माळिया सारा अमीना-हुवाळदारा सारू अड्ड खुल्ला आमरा गाव सूरत-रूप आपा । माच राज रा आया गया अफसर सिपाही उतरता अर ऊपर ठाकर साव आपरा दफतर राखता । गढ सू अगूण वसतो अेक वाणिया रा घर बठ सू पाघरा दीखतो । ठाकर साब आथण दिनूग ऊपर टैल्णा घूमणा करता । पण सवेर सदा उव घर सू अेक लुगाई झूल्र सामण उगाची निजर चढती । अेक दिन ठाकुर

सात उवै घर धणी न बुलायर हुक्म दियो के वा आपर घर रा वारणा दूजी दिस फोग लेव। वाणिय हा भरली अर घरा आग्यो। जद घर वाळी भोळी, आग मानी नी। बोली—"म्है म्हारै घर मे बठया क्यू वारणो फोग ? कीर उजाड करा ?" या बात ठाकरा कन पूगगी के वाणिय र घर रा वारणो फुर नी। दूज दिन मुधिया वा लुगाइ हायर घर म जावण लागी, ठाकर तार ग्राथ र फडद दणी ब दूर चलाय दी। लुगाई रा दो टोल हुग्या अर वाग म खून रा हाका माचग्यो। पण जोर ग्रइ चार। हुक्म अदूली हुगी। गाव सू ठाकर री सिकायत वीकानेर म्हाराजा सामैं पेग हुई। म्हाराजा साब ठाकरा न ओळमा दिया, ठाकर हुक्म अदूली रा कारण वतायो। काळू न थलाय सू उतार र खालस कर लियो।

काळू बीकानेर राज्यर खालस—गाव खालस हुया अर गढ म गिरदावर पटवारी तथा हुवाल्दार सिफाई अठ रवण लाग्या। गाव र नूई भोम आ वसण र वाद उतरादै वास री हालत सुख सतोखमयी लगभग लगी ग्यी। अंग्रेजा रो राज्य देस म पूरी तरा फैल जाण सारू चोर डाकुवाळी चिता मधा मिटगी अर कूवा ज्होडा र कन आ वसण र पाण पाणी ढावण वाळी दूरी री दुबधा कटगी।

राज्य न्याव नेम री वत्ताई सू मारा लोग सामण री अेक डोर प्रेमाणद रो अनुभव करण लाग्या। नूवो गाव, नूई सिक्षा नूव सईक नूई भावना रो नूवा विगसाव हुयो। रेल, डाक तार, डाकघर इत्याद देस मे चालती वधती वाना सू अठ रै लोगा री समझ, धम अर सेवा-सुधार कानी चाल्गी। गाव रा ग्यान गौरव अगाबू मग सरक लाग्यो। मिदर देवरा, तीरथ व्रत, ज्होडा कूवा पाप पुण्य ओसर मोसर अर मेळा मेढा आद वधती मुरजादावा साथ लागा रा मन वधवा लाग्या। जनता जाणगी के काळू वडो गाव है, राजा म्हाराजा तकात अठ मोटा माणस आव। वाणिया वकाल वस अर कीरत काज चसैं, तो आपा सग वासिदगाना न ही हर काम चाव चतराई रै चौखस चलण चालणो चाय। कोड करम जोन जगो, लोकी सूव पास लगी। म्हैं इण समै न काळू री पुनरजागरण मानू।

काळा री काठ माठ, वखत वळी री बलिहारी के उपरोथली काग रा केई झटका लाग्या। सतकाळी रा सपीडाँ देस न सूत नाख्यो। अणचकिय छप्पन अर वोहतर जिसा अलेखू दुरभख घमोडा सू धरणी धूज पडी। जनता किरा उठी के— "र! अणचकिया काळ भळे मत आद म्हारै देस मे।" भूख र विख मिनखा गाव र खेजडा न लूग अर छाडा (छाल) बिना कर दिया। पसुवा टीटण गुरबाणिया तकात जीव जत खा लिया। भागी माणमा भगर बेलरडै अर तूम्बा र बीजा सू आपरो जीवण निरवा चलायो। पीस अर टक्क (दापइसा) री मजूरी सू भेळा करियोडा रिपिया लोगा री कडया र बाध्योडा रया तथा धान घास रा मिन्गत विना मोकळा मिनख धन पसवा समेत भूखा मरता लामा हुग्या। रोटी र आट सट्ट अठ वालक वेचीजग्या। मरता क्या नी करता ?—जाम्याडा र वटका बोढ लिया। मारवाडाळा मऊ मुळकै गया अर अठला लोगा सिंध, पजाव नडा लिया। सतवाडै रर

राजपूताने रा घणा ही मिनख काळा गुलाम बणायर विदसा भेज्या गया। पण गाव काळू रा माणस बठ ही काळिकाजी री पूरी किरपा सू कदई नी फँस्या, अडी बाता बूढा वडेरा मुख मोकळी विरिया म्हा सुणी-सुणाई है।

काळू री भोम पुराणे जमाने सू अनेक कामा री जाट जुगत जान, समस्थली रयी है। इय री रत्नगर्भा ममा अनेकू माणसा नै गाद पाळ, जस रम जीयाळया है। स्याणा तथा भण्या गुण्या, सभ्य धीरा अर उपकारी आदमी अठ घणा है। नौकरी दुकानदारी, खेती धीण, कळा कारीगरी तथा निरमाणीय कारु, सौवा म अेक हवे जडा छटवा लाग है। अ लोग रहोस अर जरडू दोलडा गुणा दीरघजीवी है। ठाकर रा ठाकर अर चाकर रा चाकर। अेडै मेढ प'र, आदर निकळ जद देखणिया थुथकारो नाखे। जाना जपाना, मेळा डोळा मे काळू रा आपता पातळिया पुरख सदा सू नामून-दार है। परदेसा रवणिया महाजन लाग ही अठ रा सग दीदारव चर रा हँस मुख मोटयार है। देस आव, ग्राम सेवा हथाई माज तथा पइसा पावण पाछा चल्या जाव। की सू ही राड झगडो या वर विरोध री बात नी कर। गाव रा बाळा, लामा-लडछ दूधिया जवान मुळकत मूढ काळू री स्यान है। ग्यानी, भजनीक अर धर्मामा पुरख ही अठ घणा लाधे। काळू वडो अनोखो गाव विलायत रो बाना, कळकत रो अेक कूणो है। इय रा आखा ठाट निराळा है। अया तो सारा थळी इलाका ही आपरी वत्ताई री आण बाण मे विचित्र है। पण गाव काळू री ममा सुबद अर अलबेली विसेसता री वधँवी वत्तळ वानगी तो गोखण जोखण तथा धारण करण जोग है।

जको गाव सदिया सू खुसहाल बस, सुख वधाणी कुदरत धार मदीव हरख सागर हीड, ध्यागी घिरिया घबडाव नी, धाडेता धाव र माक ही बिना धूज जूझ। बो खुसहाल गाव खाली आप खातर ही नी रस बस, उणा कनला पाडोसी गावा न ही सुखाणद बरसाव जका बापडा रूप अक्कल मन मनोरजण जावक साधण हीण हव। काई अड गाव न विवुध उदार, सुर साकार अर व्यवहारवादी निवास नी क सका ? सुथान वास स माण री उपाधि उव न नी आढा-परा सका ? उव र सुहणा मेवा भावी कामा रा वत्ताई काळ-दुकाळा ही कदे नी घटी, जद कै उव माथ माणसा रो ही नी माकळ जीव जिनावरी अमल रो जीवण भार मोटपण रा मार अेक साथ ही अनेक वार आय'र लादीज्या है। अड लदू अर सवा भारकढ गाव वेगी काळू रा लोग अवस क सक क उव रो रचणा वास माता काळिका रा खास, क्रिपा चास वास है जका इय खेतर री सेवा-स्या, खातरी चातरी, खातर ही हुयोडा है, नही ता काळू जडो अेक गाव इत्ती अलौकी अर उदात्त भावना हरगज नी वरत सक।

कबाजाणो, केई गावा रा लाग कोरा गरीब होण री हालत म ही सागीडा सेवाधारा होव। अडा गावडिया माणस हर दम मस्त मन मुस्कराता दीखता रव। इसो लाग जाण अ माटा दूसरा गावा न खुसहाल बणाण री लगन मे है। काळू गाव र आदम्या सू मिलणिया-जुलणिया मिनखा र मन मे काळू वाळा चोखो सीख स्याणप अर, भव्य भावनावा रा व्हाळा सा बुव नाख। काळू रा लोग उदात्त माण वोवारी आस

हरेक मिनख माथ वरमावना वग । लोगा गे भरोमो है के भगवान आपण खातर ही आणद मनळ अपजायो है । या लुमहाली रा खेस आपरी औलाद जाणर ईसरानाथ आपा नै ही अुढायो है । पूरण ब्रिम रा पूत मिनख ही सदानन्द नी वणे तो दूजो कोई जीव, आणद रो आसा ही क्यू राख ?

काळू काळिकाजी रा थान मवान । इयं गाव वासिया माथ हरदम माता री दया मया वणी रव तथा अजळा मना मोद छळक । गाव र मिनखा न अवस देवी वरदान मोकळा मिलै । मान, ग्यान, विगसाव अर भगती पूजा इत्याद अनकू अमोल लाभ माता री करामात कुदरती ढग सू गाव काळू म लाध ।

काळू मे मुखिया प्रथा बडी जुम्मेवारी सेती नामी जर्मी आव है । आ प्रथा पल्या चौधरी, पच या मुखिया नाव सू फळती । गाव रा निमधा दुरबळा तथा साधारण जनां न विसाई आसर गरी छिया रोजी मदत मिलती । गाव रै की निमध मामूली मिनख माथै आपता विपता आ पडती अ उव रै घरा भेळा होयर आयोडी आपता न आपरै माथ ओढ लिया करता । गरीव री चिता मिट जावती । आज र वरतार ही विपता आया दब्याडो मिनख गाव रा मुखिया री मोटी मदत पाव । माटी वताइ या है के काळू रा मुखिया लोग मेवा अर विकास रै कामा जिन भर म जोवट वाज । वि० स० 2009 अर 2011 म जिल्ले ही नी जैपर अर कळकत्त ताई काळू रो नामून गयोडो है । अकाळा मे जन जीवा री पखवरिस इत्याद काम ढाई दसक मदीना बरावर चाल्यै । काळू रा मुखिया मिनख गाव र चाला कामा म पूरो जोस दिखाळ । वड अफसरा सू मिलणा, मन्त्या न गाव वलाणा, सडक, विजळी अर शिक्षा विगसाव खातर लूठो कोसीसा वाता करणी जाण । सरपच तथा दूजो गाव रो जुम्मेवार आदमी तो गाव रो काम वणावण वेगी मरकारी रूळ मारू वरी रकम देवण री हामळ आपरी ही अटूट हिम्मत माथै भर आव । दिली विसवास सू सग कारज सारै । भण्या-गुण्या नौजवान ही वडी उदारता अर सुळची भावना राखै । आपर मजम आचार सू गावरी साख वधाव । इया री लोहै वरगी ताकत सू गाव र विकास री वेल सुळक्ष फूल फळाप । काळू रा मिनख गाव मह्त्ता-मया न हमेसा चेत राख । गाव रो सगठण वणाणै सग ताकता अेक डोर पोइनर गाव र सुख-ग्यान अन वस्त्र अर रिपिया पीसा री काठ कमी न मिटाण री चेस्टा राख । जद सू गाव म सुरग रा सा सुख साधण अर मरळता, व्यापक वधाप पूरण होव । गाव रा कारजमीळ मुखिया चाखा कामा लाग रया है । उव आखा लोग, आख गाव में सजम, सदाचार अेव मील मुरजादावा रा ही ठीक पाळण वर करावै । व नागरिका री गळत्या भूला न चटपटी भावनावा सू जावर मिटावण रा पूरा उपाव जावना सोचै-राख । गाव री शिक्षा अर स्वास्थ्य मस्थावा तथा उवा र कारजमीळ सज्जना न भलो सजोग, अमोल मारग दरसण देव । उवा र उच्छव मौका माथ मुखिया रो उपदस भी चालता रव तथा गाव रा लोग ही मदीव या चेत राख के म्हारी सस्थावा म उच्छव मनाया जा रया है । आपसरी रा मन मुटाव अर घरू वाता न सस्थावा रै द्वार कदे नीं

त्याव । जद हा गाव सचालवी री दीठ जात जळती मसाण ज्य चिलकती चसै, सग वाज अजळा वण अर सेवाणद आव । मुखिया, पचा त रा सस्थावा र आग आख गाव रा लोग झुवया चाल । हाथ गोड अर अनुशासण म वग । आपरा अगुवा माथ हर काम गूदडा घाल्या राख । ऊजळा सम्माण वरत । वाळू री जनता या मानती थकी के गाव री वडाई हुव, आपरा करतब पाळ ।

इय गाव री या पुराणी रीत है के नूव वसणिय मिनख रा वाळू म पूरी प्रीत पख पाळीजै अर गाव पसर । आसरो टापरा घास फूस अर वामण धान तकात देइज थामीज । आयाड न हेत मिमता स वमावण र वसती धम सारू अठ रा लाग साख-पात्त, उधार पुधार तथा वटमी लास सदीना सजोग पूर । वगत वटावू र पसुवा न खुल्लो पीछ उव न मारग अर घर रा पत्तो, छाछ आट रो लाभ लगायर हर तर रो साचण जाग बठाणा अठ रो जाद जुगादी कम है ।

ढाई दसक पल्या ताई ता वाळू मे आयोडा अफसरा र हा भाजन रो आछो इन्तजाम गाव म बध्योडो चालता । उव प्रवध न मळवो कया करता । मळवा गाव रा लगान अदा कियो जावता जद उव री रकम हा नाखा नाखा घरा सू छाट र पाती आयी उधा ली जावती । पण अठ अैक सिपाही मू लेयर जिलाधीस तथा मिनिस्टर म्हाराजा ही कोई आवो, उव र खाण पीण रो पक्का इ तजाम गाव कानी सू होया करतो । घणी बिरिया आख गाव सू उघाइजतो अर रिपिय री रकम लार मळव रो आनो तथा टक्को वत्तो लागतो । मोटा मिनखा र आण,पधारण माथ मोटी मोटी गोठा ही गाव सू होया करती । जावत मळव री लेखा पढी इण भाँत होवती अर साल्लीणो एक दुकानदार न ठेको देइजतो ।

1 सिपाही, चौकीदार न आधा सर आटा (कणक रो) टक भर (आध आनो) घी अर दाळ लूण मिरच सधता ।

2 पटवारी गिरदावर मास्टर क्लर्क इत्याद कलमी लोगा न आने भर (छटाक) खाड आध पाव घी दाळ अर बडी रा दा साग आधा सर आटो, लूण मिरच अर वेसुवार ।

3 थाणदार तसीलदार, इ स्पेक्टर, कामदार इत्याद वडा अफसरा न आध पाव (दो छटाँक) खाड, आध पाव घी बडी पापड रा साग लूण मिरच रा वैसुवार तथा चायगा रा आधा सेर दूव रो ही जाबनो होवतो । इया न टोलियो दिया जावतो । दूजा न मूज रा माचा मिलता । घी खरो, गाया रो आटो पापड बडी, लूण मिरच धाणा इत्याद हाथ रा पीस्योडा वणायोडा हावता । जून सन 1941 म कवर श्री जसवतसिंघजी मिनिस्टर ऑफ पब्लिक वकस डिपाटमट तत्कालान ईस्टेट छतरगढ रा सुपरवाइजर वाळू पधारया । वडावा भर भर मणा वँध खीर अर सीरा रध्या । आस पास रा मोटा 2 ठाकर उवाँ र साथ बातचीत वा खाण पीण खातर बुलाया गया । गारबदेशर रा ठाकर फत्तेसिंघजी ही उव मौक उवा साथ रया । रणाईसर खेजडा फोगा गिडगचिय, गुसाईसर, ल्हाटेरा अर सेरपुर रा चौधरी तथा मुखिया

मुजर आया। छतरगढ, लालगढ, विजनगर अर कल्याण सू ही गिरदावर, पटवारी, हवलदार कागज लेयर हाजर होया। पुलिस थानेदार एव सिफाई ग्रावत पौंच्या। तसीलदार श्री दलपतसिंघ उवा रा अनुज लूणकरणसर र रेल्वे स्टेशन माथ ताई रो इ तजाम सभाळ्यो। आसी (फस्ट क्लास रेल्व डिब्बो) कटयो। श्री जेठमलजी बोथर आसी सू उमरताई सानै रा डोरो वराया। उवां री माटर सू ही जसवतसिंघ जी काळू पधारया। सठा रो ड्राइवर सरदार लालसिंह मय खलासी अठ ही रया। सारा लोगा आछा घूपटा उडाया। पण कवर साहब ता साग फुल्का स मारया। सिझ्या माम पात्र री कचेड़ी जम्र जुडी।

उवा र सम्माण मे लूणकरणसर ताई गल रा फोग याडका कटाइज्या। खाण-पीण माकळा फळ अर रस आया। मेवादि री डाल्या देइजी। साथ दो कामदार श्रीकिसनजी हुप अर अमरनाथजी आया। श्री दुर्गादत्त शास्त्री अर ग्राम बाबा किसनलाल जति र बारै होवण सू लेखक री कलम पैल पोत गाव री तरफ सू मान पत्र लिखर भेंट कर्यो। गाव मुखिया री अज माथ स्कूल न एग्लो वर्नाक्यूलर वणाण अर अग्रेजी रा मास्टर वधाण रो हुक्म कर्यो। भळे ही घणी छूट मेल ववसाई।

31 माच सन 1946 म म्हाराज कुमार सा० श्री अमरसिंघजी बहादुर काळू पधार्या। उणा र साग सुपरवाइजर श्री शिवदानसिंघजी (आडसर) ठाकर निहाल सिंघजी सेंगर (सक्र्री), अणदसिंहजी (अे० टी० सी०) सुब्रह्मण अकाउंटेन्ट पुलिस स्टाफ वगरह हा। वना रास्ता साफ हुया सटका वणी गाव री लुगाया वेडला वनावण गीत गावती आइ। गाव म वड्या, तोप री ओप बन्दूका र धडाका सलामी देइजी। आखा गावा रा लोग न्रमण करण आया। इग्यार मोटा दरवाजा वण्या। दमामण्यां गावणै वेगी वलाइजा। श्रीडूगरगढ सू कराम अर मगतू ढोली नै सेठ सुननमलजी गावण न बलाया। सरकारी बडवाजो (सनिक बड) आयो। तम्बू ही ताणीज्या। उव दा दिन रया। स्थानीय गणेश ढाढी आपरा कत्थक नाच रच्या। जनता रा सुख दुख सुण्या। अठै र लागा न ओदा छडी अर कडा मिरया। राज पत्र म पदव्या अर छूट मेल रा नावा छप्या। नजराणो हुयो अर श्री दुर्गादत्तजी मान पत्र पढिया। लेखक कळायण नाव री आपरी पोथी भेंट करी। जका माथ सनद अर हजार रुपिया इनाम रा मिल्या। चौ० रामरतन भादू सजाई समेत टोडियो नजराण कर्यो। उव न सोन रा कडा बखस्या। भाई श्रीगिरधारीलालजी अर गुमानमलजी बोथरा जिसा जवान सरवरा जाब्त सारू उपस्थित हा। नजराणा रा दस हजार रिपिया आया। व अमर मिडिल स्कूल र भवन वास्त गाव काळू र मदरस वेगी पाछा प्रदान कर दी'हा। दो दिन विराज्या। मोटो मेळो मडयो। गाव रा चौधर्‌या सठ साहूकारा मिलर चोखो इ तजाम कर्‌या। सरस्वती पुस्तकालय म पधार्‌या अर आपर हाथ मूं चोखी सम्मति लिखायी।

मालब गाव म परापरा सू रोटी है अर उव सारू गाव री इज्जत है। व दूक रो घमीड सौ काम सुणीज ता ताव रो ल्होड हजार कोम सू कम नी रवै। आयोडां न ठहरण वेगी बगला, जीमण जिनव सारसा भात तथा अठ रा मन मेळू लोगा री सधा भावी सात सात मनुवारा सू मेहमाना र मना न जीत लिया जाव। अठ कोई साधारण

मेहमान अथवा बटाऊ हो आ गाव तो काळू रा लोग रात वास बगी कदेइ नी नट। माचो मकान, होको चिलम चाय पाणी अर जीमण मनवार री मनभाई घनगाई गाव री अबूध अर बधी परम्परा है। राटी बाळ न गोटी, रावडी वाळ न गावडी अर हल घाळ न हल्वो तथा गीर तुरसाई-त्यारगी मिल। मत्व इणी तरा गाव लोगा री आव भगत आयोडा वेगी घणा रया है। गाव रा माणविया भाग करी नी छिपला। वैण ही मारग वगत वटाऊ गाव काळू र रातवास रीमर भली भणा है—

'गाव काळू रा या विगसाव।
मात भगता रा इथक उन्छाव॥

गाव गोरवा चौडी सडका, मिन्दर घणा मच धमसाळा
घर खोजण मे निकळ रडका। कूवाँ मीठ पाणी न्हाळा।
मीठा वधी वतावण लाग दवी दरम करण मग हरख,
लाध मागी ठाव ॥1॥ आँग्या मुल उमाव ॥2॥

मिनखापो अूजळना आप
आवा कोई आधी मोप।
आधमाण आतिथ्य वटावू,
र व न सूको साव ॥3॥

काळी माता तथा उणी नाव काळू गाव दोनू पूजण जोग दव अर देव धाम है। इय गाव रा लोग सावधानी समेत सचेत मीट साधणा राख। विगसाव र काज, चुणाव र राज अर लूठी नताई र नाज, आपसरी रा अठ विरोध आवक ना वध। प्रकरती, पाणी, घर खेता, धीणा धापा रा मुख तो अठठा नै मिळ, जका वामीदा न सदीव मिल वोकरसी। पण इया र मार्य साहित्य, सास्त्रितिक मनोरजण आधुनिक कार क्वाड री आवत रा मुख साधण मग चीज वस्ता री सूधाई अर उवा री उपलब्धि उपभोग ही गाव व्यवस्था साम वार्य हाथ र खेल बरोवर मुश्म होवण लाग्या है। काळू गाव नगर माट री ज्वाल्ला रो सुमर्चीतणा जीतणो धाम है। अठ र मिनखा रो जत-मत दूजा रै पड गत अड्डा पथ वणावे। इय कारण काळू रा लोग सोच विचार र जेक मत वैणै म ही आपरो फायदो अर अूचापो समज।

काळू सू उठर गयोडा जाट—काळू म जाटा रा गुवाडा कदेइ नारळा मत्का म मागोडा छाकोटा नावजादा हा। नूणिया घाटी री कोठा सी कोर काटयाडा चौरावा छोडर जाटा रा न्यारा न्यारा क्यार वास वसना। पण होळ हौळ, हाळ जुग वरतार, घणखरा जाट ऊँचाळो धारर पजाब कानी जावता रया। मळोट मडी वगल फाजल्क अर मारै पजाब मे आप आपरी सुविधा सार छीदा पतळा जा वसर पसरग्या। जातरा-मुसाफिरी म मिलता ऊँच नाई रा अडा लोग कदे कदे म्हार मूढ सू काळू गाव रो नाव सुणर चौकना हो जाव अर वुताव के 'म्हे ही काळू रा हा।" मोकळ हरख कोड मुळकता कवै—'म्हारा वाप दादा धन जादा वणण खातर अठोन आ वड या अर काळका री किरपा सू वण ही गया।" पजाव र वडा वडा नवरगारा मे स्रेस्ठ कर बुध री कदर

जीग "काळू रा सा जाणी" कैवत चाल । बठली कई चोखी-तकडी पारट्या रा रहीस धणी विरिया जीपा-कारा सू कालिकाजी री घोक-पूज आपरी बापौती काळू आवै अर गळ बटली पिस्तोळा, ओपरी-आपरी आदता अठै रै कडूम्बाळा रोही रै रवाम्या मादम्या सू मिल जुल । फळत अ पजाबी पैराणवाळा आपरै मांव काळू अर नूब वास पजाब दोना जगा रै इतिहास री मोटी कडया वण्या आव जावै ।

वरतारै रो धन

भेड—घणा मिनखा मे विसेस मिनख री कदर नी हवै जद भेडा भेळी भेड वहीज । भेड, ऊन री खाण साल म तीन लाण (कत्तर) देव अर बाजे-बाजे दो बार ब्या जावै तथा एक ही नही, दा दा, तीन तीन बच्चा साग जाम । भेड रै वधेप सू गाँवा रा कई लाग याल ही रया है । भेडा री ऊन अळग ताई रा मुल्का म ऊच दामा सू बिक । मीटा चाळ, ऊनी गाभा बणीजै । भेड रो दूध ग्रिस्ट पदारथ बडो कीमिया हव । टूटेडी हाडी, साजण वाळी पीड अर लाही जम्योड स्थान माथ आदमी मसळ मागता फिरै । छोटी वाली म इया न लरटिया कव । भेडा चाल नामजादीक ह । एक भेड ब्या कर ता लार सगळी भेडा ही ब्या ब्या कर । एक भेड कुएं म पड, लार सारी पड ज्याव, आ भेडा चाल बाज । भेड इसो सूधो जिनावर के भलाई कोई मार नाखो मासद्यो, पण चू तक नी करै, सिसकारो ही कानी नाख । निरढाल हूज्यावै अर दुसमण पर आरया काढ बाकर । ल्हार ही नहीं इयै न लूकडी गादडो ही फोग लार ले बैठ अर रोकर मार लेव । पण गरळार गुवाळियै ताई ठा नी घालै ।

लाग भेड र जाम्योडा न उरणिया, उरणती कव । उरणिया वडा होयर मीढा बाज । मीढा न बोपारी खोस खाव अर ऊँचो मोल देयर ले जाव । मीटा विकै जद अेवड (रेवड) वाळा मालदार वण ज्याव । भेड रो सिर सफा मूनो पण केई मीढा रै सीग ऊग आव । मीटा री बिकरी माल भर चालती रेव है क्यूके भेड एक साल मे सात-सात ताई बच्चा दे दव अर अेवड रो वेगी वधेपा हवै । पण इय ल्हान धन न चरावणा-पाळणा डाढा दोरा गिणाज । पुराण जमाने म भेड चरावण री अमीणी लागती—'मेरी किसी भेडा चरायाडी थोडी है ।' 'भळे क मन भेडा ल दूयो ।'

गायाळा गिल्गा कर, भस्याळा माणी माणी
अेवड र गुवाल्यि र, नळा-नळी म पाणी

म्हार अठ धोळी काळी, कग्डकावरी, लामा कानाळी, लापड, कानाळी अर नरम ऊन वाळा, पीळी ऊन वाळी मावळी भेडा मिल । इयाँ रा तोल 25 किला सू 35 किलो ताई हव । मगरा नस्ल वाळी भेडा ही अठ पाळीज । इण री ऊन सोहणी अर आछी मानीज । नाळी नस्ल री भेडा री ऊन घणी चीकणी पीळी हल्दी री भात हव । मोटा रेसा नीवळ जका स्यू चोखी चाखी चीजा वण । इय वरतार मे भेडा राखणिया रा घर बडा नामूनदार बण रया है । आजकल भेडाँ री वमेघा पैदा है । इया री रखाळी रा दफ्तर खुल रया है । भेडाँ रै ताण किमाण सरव सुख भोग । भेड, हर बखत ब्या ब्या बोलती रव । जद टाबर गळी बगता प्रस्न कर बाकर—भेड धणी र के लाग ? भेड बाल—'मा ।'

बकरी—बकरी भेड री साथेली महेली है। भेड अर बकरिया माथ रव उछर पण कदेही आपसरी म लड भिड नही। बडे प्रेम मू एक दूजी री कनार म सभाव स्यू चाल। इया दोनवा र समूह बाग न ही अठ अेवड नाव मू पुकारै।

अेवड वधै अपार भेड बकरूया मिल भारी
ब्याजाव दो बार बरस म आया बारी
भेडा उतर ऊन बणावा गाभा सारा
दोवड ल्लोवडियाह, कामळा और ल्लुकारा
भाखळ कामळ भळे पटुडा घरा घणी टूट तणी
बकरया बाळा वण बारा अिण धनसू पदा घणी

पुराण जमान म राजा री आछी नकडी व्यवस्था माथ सेर बकरी एक घाट पाणी पीवण री बाता चालती।

भेड न ल्लरडी कव जिया ही बकरी न लाग छयाळी कव। छयाळी खटीक सू ही चीज। 'छ्याळी बाली भम बुढाळी।" मतलब जवान बकरी रो दूध घणा सुवादीलो अर घी मिलयोडा हव, बया ही बूढी भस री दूध ताकतवर बाज। पण महात्मा गाधी बकरी रो दूध पीवता। एक साधू आपरी छोटी ऊमर म अेवड चरायाडो हुतो। एक दिन उव गेलै बगत न एक घर म बकरिया बोलता सुणीज्या। जद साधु बकरी रो दूध पीवण री जी मे करी। उव अेवड वाळ घर जायर दूध मागो। घर धिराणि बोली—"म्हार धीणी कोनी (गाय भस नहीं है) दूध कयारो घाला ? साधु उव री बोणी समझकर बोल्यो—"माई अदर मिणमिण, मिणमिण क्या करता है।' धिराणी कियो 'बकरी, बकरिया है। साधू बोल्यो—"बकरी का दूध ही पिला दे।" जद उव लुगाई साधु न थोडो दूध घालर आघडो करयो।

बकरी दूर दूर रा मुलका ताई मिलै। बकरी न कई लाग टाट भी कव। टाट दूध देव ही पण मीगणी ग्लायर देव।" इयै वास्त वेसहूर आदमी न अठ टाट कैव। भेडा री सतान उरणिया उरणता हव अर बकरी रा बकरिया बकरडी कहीज। मीढा री तरा बकरिया रा ही कोड हव। कसाई लोग चार मीणा र बकरिया न ही हाथ घाल लेवे। जद कवत चाल— बकर री मा किता थावर टाळ। याने छेवट तो उवै न कटणो ही पड। इय कारण मुसलमाना रा परब हा बकरीद कहीज। कई धरमात्मा लोग बकरा र काना म बाळी (छल्ला) घालर अमर (साड) कर देव। जद उवा न काई चौड नी मार सक। अडा अमर अर बोधी बकरा बजारा म दाणो चरता फिर। इया न कोई घेरण नी आव अर लुगाई टाबर स्यू तो हट ही नही। गुलथण बधाया केई बा वो करता फिर अर खुल्ला चर। पुराण समय म सरदारसहर रा मसाळी सेठ दो मोटा बकरा री आपर छोटा टाबरा खातर बग्घी बणाया राखता। सुब साम उवा रा हाळी बाळदी इय बकरा री बग्घी म टाबरा न बठायर बाजार मे घूमावण ले जाया करता। सहर रा लोग बकरा सू मजायोडी बग्घी न डागळा चढर देखता।

———

खेड़ै-रपट

प्रथम प्रकरण

(हिन्दी विभाग)

खेड़ा आवास और जन जीवन

देवी शक्ति के नाम ग्राम स्थापना- भारतवर्ष में आदि अनादि महामहिम मातेश्वरी जगदम्बा की महिमा का वर्णन प्राचीनकाल से प्रचलित है। पृथ्वी पर मानव मात्र इस वैदिक परम्परा का आत्मिक एवं अकाट्य विश्वास के साथ पाठ पूजन कर आनदमग्न होता चला आया है। यहाँ की जनता शक्ति के प्रति विशेष सजग तथा निष्ठावान रही है। अत इस स्थान को कालिका का क्षेत्र मानकर ही कालू गाँव का सदीना बसेपा है। शक्ति एवं शक्तिवान अभिन्न हैं। वह ब्रह्मा की महासरस्वती और विष्णु की महा लक्ष्मी तथा शिव की शक्ति महाकाली है, जो क्रम से लोक रचना, पालना एवं सहार में साथ रहती है।

भारतीय विद्वानों ने शक्तिमान की नानाविध शक्तियों का ध्यान अनुसधान कर के उनके सरल एव भयावह अनेक रूपों की व्याख्या की है। वे शक्तियों के रूप, नाम आयुध, वाहन और आभूषण आदि विशेष अभिप्रायों सहित निर्धारित हैं। अत शक्ति सम्बन्धी सब पौराणिक कथाएँ भी बडी मनोहारी हैं और उनमें गूढ तत्त्व भी दर्शनीय हैं ? जिन्हें देख सुनकर यहाँ के लोग प्रभावित हुए हैं।

हमारा राजस्थान वीरों का प्रदेश है। शूर वीर तो शक्ति के आश्रय ही पलते हैं। इसलिए यहाँ (कालू) की प्रजा देवी-पूजा के लिए बीकानेर राज्य में देशनोकादि से प्रथम, अद्वितीय है। देवी को यहाँ माता शब्द से सबोधित किया जाता है। लोग अपने घरों पर त्रिशूल या सिन्दूर से त्रिशूल का चित्र बनाकर शक्ति शस्त्र की पूजना करते हैं। दीपक जलाते हैं और अगारों पर घी डालकर जोत करवाते हैं। शुक्ल पक्ष की अष्टमी नवमी को भोग के लिए लपसी खीर तथा हलुवा बनाकर चढाते है। इस तरह प्राचीन परम्परानुसार यहाँ दोनों नवरात्रों के समय प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में मातृभक्ति का उत्साह अपार हिलोरें लेता रहता है जो *कालिका के नाम पर प्राचीन ग्राम स्थापना का* पक्का प्रमाण है।

गाव का पुरातन महत्व—कालू पौराणिक गाव, महाभारत काल से इसका गौरवपूर्ण सम्बन्ध है।[1] समय के साथ साथ जिस तरह से क्रांतियाँ और परिवर्तन होते गये, उसी प्रकार प्रत्येक राजशाही के समय में कालू ने भी अपने उठने चढने के महत्व

1 कौरवा-पाण्डुवा जुद्ध रचायो, अधबिच कालू की काली।
ज्वालामाई औ, अधबिच कालू की काली।
(देवी भागवत सबद्ध—लोक प्रचलित छद)

को नहीं खोया। पुराने इतिहास लेखकों ने राजा बादशाहों, उद्भट योद्धाओं और दानी-श्रीमंतों सामंतों के शहरों नगरों को अपने ग्रंथों में स्थान दिए। जन साधारण के त्याग बलिदान और नीति चतुराई के आदर्श गुणों वाले गांव को वे कदापि नहीं अपना सके। जमाना बदला, गांवों में रहने वाले साधारण लोगों की भी कहानियां लिखी जाने लगी। किन्तु कालू जैसे गांव का नामोनिशान न मिलना विस्मयजनक बात है। यह कभी ढाणी कभी ग्राम, कभी वास के नाम अपनी धरती पर बारम्बार कूआ के इधर-उधर बसता रहा है। गाँव घुमक्कड़ एवं जीवटदार इसके नामों गामों की अनेक किंवदंतियाँ मिलती हैं। लगभग दो सौ वर्ष पूर्व कुछ शक्तिशाली लोगों ने वर्तमान गांव के वास में नाम वाली खेड़ उतरादी वाला सुदृढ़ एवं विस्तृत वास यहीं ला बसाया। तब से यह गांव अपनी तलहटी में उत्तरोत्तर तरक्की करता विकसित होता रहा है। इसलिए सारा प्रमाणित वृत्तान्त आगे लिखा है।

भारतीय गांवों की नाम परम्परा में कालू—नगरों और गांवों का नामकरणात्मक वसेवर विभिन्न विषयों से संबद्ध होता हैं। इसलिए ग्राम नाम की परम्परा का ज्ञान लेना चाहिए। यह नामकरण परिपाटी वस्तुतः प्राकृतिक गुणों उपकारों मनुष्य अथवा देवताओं आदि नाम तथ्य के कारण प्राचीनकाल से चलती आई है जो अपनी नाम विशिष्टता के लिए सर्वत्र एक जैसी पाई जाती है। गांव निवास की कीर्ति परम्परा के साथ यह नाम रीति, एक प्रकार से अपना नाम रखकर गांव बसा लेने में बड़ा सामर्थ्यवान होती है। इसी सुर सामर्थ्य में कालू कालिका देवी के नाम पर बसा (स्थापित) हुआ बहुत पुराना गाँव है।[1] शिवपुरी गणेशगढ़ हनुमानगढ़ रामगढ़ लक्ष्मणगढ़ गोगासर, महमदसर, कालिकासर प्रभृति की तरह भारतीय गांवों का देवनाम परम्पराओं में

---

1 कालू गांव स्थापित होने के सन तथा संवत् नहीं, प्राचीन उल्लेख मिलते हैं। इसकी प्राचीनता के समक्ष यहाँ के अन्य कस्बे अर्वाचीन हैं। जैसे—

प्रथम—बीकानेर संवत् 1545 में एक पुरानी बस्ती के स्थान पर बीका जी ने अपने नाम से बसाया था।

द्वितीय—चूरू संवत 1620 में चूहड़ चौधरी ने अपने नाम पर बसाया।

तृतीय—राजगढ़ संवत 1821 में महाराजा गजसिंह ने अपने पुत्र राजसिंह के नाम बसाया।

चतुर्थ—सूरतगढ़ संवत् 1856 में महा० सूरतसिंह ने सोढल नाम के गाँव को अपने नाम बसाया।

पंचम—रतनगढ़ सन् 1887 ई० में अपने पुत्र के नाम महा० सूरतसिंह ने बसाया।

षष्टम—सरदारगढ़ संवत् 1888 में मौजा अलवाना का नाम सरदारगढ़ रखा गया।

सप्तम—सरदारशहर संवत् 1896 में राजदेसर ढाणी के स्थान पर महा० सरदारसिंह के नाम बसा।

अष्टम—श्री डूंगरगढ़ संवत 1938 में महाराजा डूंगरसिंह ने वास रूपालसर और मालवा वास के मध्य बसाया।

चालू एक प्रसिद्ध कस्बा है। देवनाओं के निवास और नाम वाले ग्राम यहाँ बहुत बडी सख्या म उपलब्ध होते हैं। ऐसे अन्य विषयों पर भी ग्राम और नगर निवासित हैं जिन के नाम नीचे लिखे जा रहे हैं—

प्राकृतिक और पशुओं सम्बन्धी ग्राम नाम—माणकसर पवतसर गडगचियो, खेजडा, फोगा गेहिडावाली ममदसर हस्तिनापुर, सिंहस्थल नाहरसर टीडियासर कतरियासर आदि नाम हैं।

मनुष्यों के नामों पर भी बहुत से नगर ग्राम बसते हैं जसे—जयपुर, उदयपुर, अर्जुनसर, बीकानेर, सूरतगढ रतनगढ सरदारशहर डूगरगढ, मर्जासिंहपुर, छत्रगढ, शेखसर और शेरपुरा आदि हैं।

गावों के नामों म षटरस—खारी लूणकरणसर, खारडो मिठडियो।

गावो के नामों म रग—रातूसर घोळिया नौरगदसर, धौलपुर केसरदेसर, हरियासर, कालासर लालमदेसर लालगढ आदि।

महिलाओं के नामों पर गाव—खेतडी रिडी खानडी रिणी।

गोत्र या जाति वाले ग्राम नाम—रावतसर बाभूवाली ढाणी, बामणवाली, पडिहारवाली, थोरियाली बस्ती नायाली ढाणी वास जोगियान भादवाला चक, जाखडा वाली आदि।

धातुओं के नाम ग्राम—चा दी रूपालसर लाहो, मोनियासर, कचनपुर।

कीर्ति नाम ग्राम—बीतासर जैतासर और विजय नगर।

तौल नाप के नाम—बिग्गा नापासर तोलियासर आदि।

सख्या वाले नाम ग्राम—ढाणी पाचेरी, छत्तासर, सातलेरा, जी० बी० सात, नूवो।

साथ बोले जाने वाले सयुक्त दो गांव नाम—बुगिया बलाचियो। गमडो-जोधार। सूरजडो अगेणऊ। राणेरी छानरी (थी कालायत)। वामी वरसिंहसर। शोभाणा भायना। कूकणियो वरासर। मारियो मूजासर (नोखा)।

सयुक्त बोले जाने वाले तीन गाव नाम—नाळ मडाळ सिंदण (चाराळी)। गाग सिंचियो कानासर।

ध्वनिवाचक ग्राम नाम—ज्वालापुर तजरासर आदि।

यहाँ गावा के एक नाम के आस पास बसने अनेक बास होते हैं। जसे रूणिये के सिवरा हमरा, राजरा आदि बारह बास हैं। भडाण मे, कनस के बास हैं और चूरु जिले म इन्दपाळसर व बुन्दपाळसर के कई बास हैं। उदरासर सेजला और भादासर के दा दो बास हैं।

प्राचीन समय म कालू गाव के आस पास बसते चार पाच बासों म से यह भी एक छोटा सा गाव वास था। खेत बाला कालू यहाँ आकर मिला, तब से यह विस्तृत गाव कालू बना जान पडता है।

ऐतिहासिक एव भौगोलिक कालू—कालू—'सूनकरनार सहसील का मुनिया,' 'मुनि मावता का आगार'—ऐसे अनेक विशेषणों से इसे देखा-सुना जाता है। तथ्य यह है कि इसका कालू नाम पन्द्रहवी शताब्दी से पहले ही कालिका पूजकों की जुबान पर जिन्दादिली से लिया जाता था। यह गाव ताल की धिराणी (स्वामिनी) जगदम्बा

कालिका माता के इसी ताल स्थित मंदिर के इद गिद अपनी सदिया म बसता रहा यही क्या ? सारे देश मे देवी की मान्यता बड़ी प्राचीन है ।[1]

इस गाव पर शासक भी कई रह हैं। गाव के चतुर एव निर्भीक व्यक्तियो के कारण ही गाव की तरह भोगते (ठाकुर) भी बदलत रह हैं। इस गाव के बासिन्द लोग अन्याय को कभी भी सहन करन वाले नही थे। पुरान समय मे सावजनिक सविधान का उल्लघन यानि बुरे कार्यों का दड दना युगधम माना जाता था। वे किसी ठाकुर के अवगुणो को जब कभी देखते तो दल बल सहित उस पर हमला कर देत थ तथा गाव खाली कर निकलने (ग्राम त्यागन) के आत्मविश्वास पर बीकानेर महाराजाओ स इस ठिकान को दूसरो के नाम चढवा लेत। इस तरह गाव सभ्य-असभ्य जागीरदारो के नाम चढता उतरता रहा है। इसी बात का कालू वासियो को अपनी चेतना एव जागति का आज तक पूरा गव है, जो मान्यता के लिए उचित प्रमाण है।

यह धोरो और तालो वाला ग्राम है। घरो-बाडो से लगत दूर दूर तक के धोरे और पास पडौस के ताल सरोवर, कालू की प्राकृतिक कला दिखाते दिखाई दते हैं। शेष स्थान समतल, पाल, खान खदेडे और सडक खभा (विद्युत व फोन) सुशोभित हैं। घास के मैदान, खेत और खाहो मे सवत्र वनस्पति वभव बिलसित तथा तीनो मौसम स्वास्थ्य-प्रद ! जगल म विभिन्न जानवर एव पखेरू पाय जात हैं। गर्मियो म टीलो के उड चलने वाले रेताले प्रवाह से यहाँ पर प्रतिवष धरा का भरा पूरा नवीनीकरण हो जाता है, जिससे फसल की उपज एव वद्धि मे आनन्द की लहर दौड आती है। कालू क मोठ, मूग तिल और ग्वार के धान जयपुर जाधपुर ही नही कलकत्ता बम्बई तक जात हैं। यह रगीन, सजीव एव सुन्दर ग्राम है।

परम्परित सीमा क्षेत्र—बिगत का प्रकाश आगत को सतत उज्ज्वलता प्रदान करता हुआ, प्राचीन अनुभूतिया क सुदढ तथ्या से भविष्य का महल बनाता चलता है। उसी परम्परा लाक म हमारा गाव अपने विशिष्ट प्रदेश राजस्थान की मान मर्यादा तथा ललित काय कलापो को आश्रय प्रश्रय देन वाला विमद विख्यात "कालिका का खेडा" काल रहा है। प्रान्तीय सस्कृति एव सभ्यता क अकृत्रिम स्वरूप को यहाँ वतमान म भी भली भाति देखा जा सकता है। राजस्थान का मानव कीर्ति परम्परा की रक्षा कालू ने हर समय तन मन धन से की है।

कालू बीकानेर राज्य की लूनकरनसर तहसील का महिमान्वित गाव है। यह 28°—24 अक्षाश तथा 73°—56 देशा तर की स्थिति सयुक्त स्थित है। गर्मी म तापमान 113° से 87 फारनहीट तथा सर्दी म 77 से 41° फारनहीट रहता है। गर्मी-सर्दी म वर्षा नही के बराबर तथा बरसात म 0° से 2 तक हो जाती है जा कभी कभी पूरे वष में 7" से 8 तक पहुँच जाती है।[2]

उत्तर रेलवे की बीकानेर भटिण्डा लाइन के मध्य लूनकरनसर स्टेशन स बीस

---

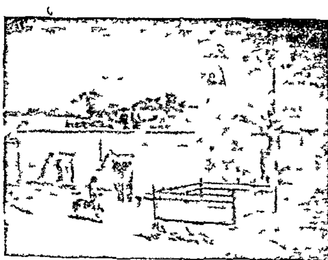
1 सिंह वाहिनी चार भुजा एव अष्ट भुजावाली काली, दुर्गा का वणन महाभारत मे भी मिलता है। द्रष्टव्य—विराट अ० 6

2 निदेशालय राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर के पत्र सख्या शोध राज—अभि/81/165 दिनाक 16 1 82 के सौजन्य से।

किलामाटर दूर देवी के इस धाम वानू वा अब सडक जाती है। यहाँ पर श्री कालिकाजी की स्वयभू प्रतिमा और दशनीय मदिर है। बीकानेर महाराजाओ न सदैव इस मदिर वा अपन राज्यकाय से व्यवस्थित वनाये रखा। यहाँ चन्द्र प्रभु के मदिर मे कई प्राचीन जन प्रतिमाएँ हैं। य धातुमयी प्रतिमाएँ वि० स० 1155, 1495 (वर्षे फाल्गुन बदी 9), म० 1513 (वर्षे वशाष, सुदी 10 बुधवार) स० 1563 (वर्षे माह सुदी 15) और स० 1820 (वर्षे माघ सुदी 4 अक वारे) की हैं। वि० स० 1565 वशाख वदी 7 और उसके बाद के दादा गुरु आदि क तीन चार चरण हैं। दादा साहब के चरण (वि० स० 1865) वाले लेख पर इस गाव को कालपुरे" लिखा है। यहा वि० स० 1853 का एक सिधचक्र है। उस पर लिखा है— स० 1853 वर्षे वशाख मासे शुक्ल पक्षे तिथौ 6 श्री सिधचक्र यन्त्र प्रतिष्ठित।"

भानीनाथ जी की जगह, वासी के करणीमदिर और रामस्नहिया की जगरी मे भी पुरानी प्रतिमाएँ एव चरण मिलते हैं जिन पर अपने अपने उल्लेख उत्कीण हैं। कुछ प्रतिमाएँ और पुरातन हस्तलिखित ग्रथ अब प्राप्त नही हैं।

कालू के पास गाव गारबदेसर म भी प्राचीन देवधाम है जहाँ 16वी शताब्दी म मुरलीधर के मदिर की चमत्कारिक मूर्ति का विशद वणन प्रचलित है।[1] कल्याण के भक्ताक म उसकी बहुत सी चमत्कारिक बातें प्रकाशित हुई हैं। यहा ग्यारहवा एव वारहवी शताब्दी की केवल दो दशनीय सती देवलियाँ भी है। महत हरिराम जी के नख खुदे पगलिए उनकी साल (मकान) मे प्रतिष्ठित हैं। कालू के ऐसे काकड सीमाडी गावों म कुविया", वासी तथा लूनकरनसर आदि ऐतिहासिक स्थान हैं जहा अब भी कई मदिर है और यात्री लोग दशनाथ पहुँचते हैं। गारबदेसर के भक्त कवि ठाकुर



श्री मुरलीधर जी का मदिर

1 गारबदेशर म श्री मुरलीधर जी के मदिर की स्थापना वि० स० 1484 वृहस्पतिवार की है। (बीकानेर राज्य का इतिहास)

गिनानसिंहजी, वहाँ से वारम्बार की आपत्तियों में श्री मुरलीधर का नाम ले लेकर आध्यात्मिक त्राण पाने में बेजोड़ विख्यात हो गये हैं। गाव गारबदेसर और करणीसर की सती माताओं की भी इस कालू क्षेत्र में बड़ी मान्यताएँ रही हैं। यद्यपि सती माताओं के थापे और उनकी देवलियाँ अन्य स्थानों पर ले जाई जा चुकी हैं तथापि गारबदेसर के उपाश्रय की जैन मूर्तियाँ कालू उपाश्रय में वर्तमान हैं। एक बची हुई मूर्ति वही मुरलीधर के मंदिर में अभी पूजित है।

कालू गाव और उसकी सीमाएँ—कालू के उत्तर में तीन गाव—नाथवाणा बिसनासर, राजपुरिया, उत्तर पूर्व में दो गाव—गजासर करणीसर उत्तर पश्चिम में लूनकरनसर कालवास, दक्षिण में आडसर, दक्षिण पूर्व में रावासर दक्षिण पश्चिम में बीनासर पूर्व में गारबदेसर कुबिया और नायूसर है। पश्चिम में सारूण्डा व सहजरासर की सीमाएं मिलती हैं। नाथा की ढाणी उत्तर में और भोलालाराम की ढाणी पश्चिमोत्तर में हैं। यह क्षेत्र 'मगरा' के दक्षिण में लगता है। इसलिए चार तहसीलों (बीकानेर, लूनकरनसर सरदारशहर और श्रीडूंगरगढ़) की सीमाओं के घेरे में घिरी कालू की मध्य स्थित हृदवनी है।

कालू का निवास क्षेत्र और रकबा—कालू का वर्तमान निवास क्षेत्र हजार बीघा जमीन के लगभग मनहर मैदान में है। अर्थात राजस्व विभाग के कागजी तथा सत्य आंकड़ों में कालू का आबादी क्षेत्र 962 बीघे 2 बिस्वा (नौ सौ बासठ बीघे दो बिस्वा) में अंकित है।[1] यह भूमि मध्य समतल तथा चारों ओर इसके टीबें हैं। इसमें कूओ जोहड़ा और आबादी लायक विस्तृत भूमि होने के कारण निवासियों को बहुत से सुख उपलब्ध हैं। वर्तमान समय में कस्बा कालू का कुल रकबा 52656 बीघे 8 बिस्वे हैं। कालू के बिल्कुल समीप पहले बासी और भानीपुरा दो गाव बसते थे, अब वे उजड़ हुए पड़े हैं। *बासी की जमीन का कुल रकबा 7697 बीघा 11 बिस्वा है और* भानीपुरा की जमीन का कुल रकबा 5741 बीघा 9 बिस्वा है। ये दोनों रकबे अपने अपने स्थानों पर अलग हैं पर कालू की सीमा पर विद्यमान हैं। अतः दोनों रकबा का भाग कालू के निवासी ही जोतने बीजने तथा पशु चराने के काम में लेते हैं। उक्त गावों की जमीनें अब अधिकारी व्यक्तियों को अलाट हुई हैं और पटवारी कालू के न्यायाधीन सम्मिलित रूप से इसी गाव के उपयोग में आती हैं।

कालू की जमीन—कालू गाव के खेतों की यह कुल जमीन 526561)3 पक्के बीघों में गिनी रह हैं। कच्चे बीघों में यह जमीन पक्की 83921) अर्थात कच्चावन के रूप में कालू की तीन बावनी ज्योरी (जमीन) कहलाती थी। बासी और भानीपुरा दोनों की जमीन मिलकर अब 13439) बीघा पक्की जमीन है जो कालू के साथ मिलकर 66095) पक्के बीघे आठ बिस्वा में गाव के काम आती हैं। इस गाव के खेतों का यह जमीन 'कमी' की जमीन कहलाती है। पूर्व में यह विस्तृत जमीन प्रायः पशुओं के चारागाह हेतु उपयोगी एवं लाभदायक था, वर्तमान में इसका अधिकांश भाग जोत के काम आने लगा है। इसका उपजाऊ रूप में भी अधिक मूल्य है। यह दूर एवं समीपता के हिसाब में

1 द्रष्टव्य—कालू पटवारखान के खाते रजिस्टर।

गाव और नहर दाना की सुख सुविधाओ से भरपूर है। अब नहर आने की निकटतम सभावना से कालू की खेती वाली जमीन बहुत कीमतन हो गई है। पजाब की तरफ से मुख्यतया सिक्ख व अन्य जाति के लोग यहाँ आकर खेतो की बहुत सी जमीन खरीदते हैं तथा कालू के किसान अपने खेत बचकर विपन्नता से छुटकारा पा रहे हैं। ये खेत बाहर के लोग नहर आ जाने की उम्मीद में कालू के किसानों से खरीद कर रखते हैं और रेवड़ वालों को चराने के लिए सौंप देते हैं। पहले गाँव से दो किलोमीटर दूर तक रेवड़ चर सकते थे। इससे आगे पाले वाले खेतों में रेवड़ चरने नहीं दिए जाते। आगे रेवड़ के जाने पर रेवड़ वालों को जुर्माना देना पड़ता था। मगर अब तो गाव वाले दूर के ऊचे खेतों तक रेवड़ चर जाते हैं, क्योंकि बहुत से खेत बिक चुके हैं।

कालू की गोचर भूमि—गाँवों में प्राय गोचर भूमि हुआ करती है। राजस्थान में तो गाँव ही नहीं नगरों तक में बाग़गाह छोड़े हुए हैं। चूरू बीकानेर सरदारशहर रतनगढ और श्री डूँगरगढ़ महाजन आदि नगरों एव कस्बों में गायो के चरने हेतु बड़े बड़े जगल सीमा नियत हैं। नीचे में नायूसर तक बछड़े चरने के लिए चार खेत ही नहीं नियत हैं। किन्तु कालू में नहीं! विक्रम सवत् 2018 में कालू की पिछली पमाइश हुई थी। बड़े दुख की बात है कि उस पमाइश में कालू के गोधन चरने के अधिकार सदा के लिए छीन लिए गये। वर्षों से नियत किए गये गाँव के बाग़गाह को लाभवशात कतिपय मुखियों ने महाजन लोगों के खेतों में परिवर्तित करवा दिया। यह गोचर भूमि की जमीन गाँव से उत्तर की ओर हजारों बीघों की तादाद में, जो कल से पहले (गाँव और कले के मध्य) नाथवाणे के रास्ते से लेकर राजपुर करणीसर और छत्तासर आदि गावों के रास्ते पर एव सीध पक्तिबद्ध प्रतिनियुक्त थी। अब वहाँ चौभाते वालों के काश्तकारी खेत हैं और गायें मारी मारी फिरती हुई भूखी प्यासी फाटक में ले जाती हैं।

कालू के टीबे या धोरे—कालू गाँव बीकानेर राज्य में नगत होने के कारण यहाँ का क्षेत्र रेतीला है। दूर दूर तक रेत के टीबे दिखाई देते हैं। ये 20 फुट से लेकर अस्सी नब्बे फुट तक ऊँचे होते हैं। गर्मी के दिनों में तेज आँधी चलने पर ये एक स्थान से हटकर दूसरे स्थान पर चल जाते हैं। इस रेतीले भाग में दिन में गर्मी और रात में ठड अधिक हो जाती है। सर्दियों में यहाँ बहुत शुष्क सर्दी पड़ती है। ये टीबे वर्षा ऋतु की घास से हरे भरे बन जाते हैं। कालू में बहुत से टीबों के अपने नाम हैं जिनके नाम मैंने पीछे लिखे हैं जो कि यहाँ के लोक गीतों में गाये जाते हैं।

कालू के ताल तालाब—वैसे तो कालू गाँव के चारों ओर अनेक ताल और तालाब हैं। मगर पुराने जमाने से जाटों के चार वासों के अपने अपने तालाब नियत हैं—जैसे जनाणा सूरजाणा धनाणा सतलाई बीजाणो, बाघाणियो, आसाणियो आदि अनेक तालाब हैं। इन सब में जनाणा तालाब बड़ा पक्का और गाव के समीप है। इसका ताल भी बहुत लम्बा और चौड़ा है। हल्की सी वर्षा से तालाब में बहुत जल इकट्ठा हो जाता है। इसलिए जनाणे तालाब का कालू में बड़ा महत्व है। प्राचीन भेदभाव के कारण नीचे से यह बिल्कुल कच्चा रखा गया है। स०1972 में गाव वालों ने इसे पक्का बनाया। तब पूर्व के घाट की पड़िया सवर्णों के लिए और उतरादा घाट पशुओं और हरिजनों के लिए कच्चा रखा। पश्चिम में दीवार बनाकर छोड़ दी। आगे

जाकर वि० स० 1977 म उनराद घाट का पत्थर जडा कर पक्का बनवा दिया और एक महाभोज का आयोजन रखा। वि० स० 1995 म खेजडा फोगा मालसर, भाजरासर आदि सरदारशहर तहसील के बहुत स गावा के लाग अकाल की वजह से प्रवास पर धन पशु लेकर कालू आय। यहाँ घास और खेत अच्छे थ। मगर कालू वाला न उनस अनाणाँ तालाब पर पानी पीने की पी (शुल्क) उगाह (वसूल कर) ली। यह काय गव के गिरदावर श्री खेमचद द्वारा हुआ। गिरदावर न उस रकम से तत्काल पश्चिमी घाट व नाल के रखवाले को एक साल भी बना दी। पहले ताल तालाबा की आयना (मर्यादा) हुआ करती थी पर अब वे नहीं रही। वसे ता समय समय पर ये तालाब खुदते रहे हैं पर तु मुरजाणो अनाणा, खतलाद की वि० स० 1936 के फाल्गुन (सन् 1980 माच) मे अकाल राहत काय (काम के बदले अनाज योजना) मे खुदाइ हुई है। इस काय म गदी तलाइ और नाले का भी पूरा काय हो चुका है। लोगो को काम के बदले अनाज' म काफी अनाज मिला।

कालू के खान प्रदेश—रतीली सतह के नीचे सफेद कच्चा पत्थर[1] चूने का पत्थर और कई तरह की मिट्टियाँ हैं। वे मकान बनाने या लीपने पोतने के काम आती हैं। यहा के ताला की धावल (धोली मिट्टी) चूने की कली के माफिक सफेद है और तेज की (कमठाणे की) मिट्टी मीठे चूने को मात करती है। यह बतन बनाने के भी काम आती है। नेखव के खेत की मिट्टी से प्रभावित भारतीय भू-वज्ञानिक सस्था' ने पोटाश निकालने के लिए खुदाई आरम्भ कर रखी है। अब बहुत से खान-प्रदेशा पर लोगा ने खातेदारी कब्जे कर लिए हैं। लाल मिट्टी के भी ऐसे बहुत से खेत हैं।

कालू और नहर— रेत के ऐसे विशाल वीरान प्रदेश म जलाभाव को मिटाने का काम टेढी खीर है।"[2] इसलिए नहर अब तक इस गाव म नहीं आ सकी। कि तु अब ता शीघ्र आने की सभावना बन रही है। क्योकि राजस्थान नहर के गावतसर निकट हैड पर अ य गावा के साथ कालू का बारी रूप जलप्रदाय नाला है, जिस पर कालू ग्राम का नाम अकित है। इधर लिफ्ट इरीगेशन भी नजदीक है। कालू की कांकड से दस किलोमीटर दूर, नाथवाणा गाव मे इसका पानी लग रहा है। अत एव इस समय कालू म पानी का आ जाना कल्पना से परे की बात नहीं रही है और न ही पत्थर पर फूल लगने की बात है। राजस्थान नहर की विशाल परियोजना के लिए विश्व बक ने काफी ऋण दिया है, जिसम रेत के बडे बड टीबा का समतलीकरण होगा तथा इस क्षेत्र के विकास व सुधार म भारी मदद मिलेगा। नहर के निकट आ जाने से भी गाव कालू दिन दिन अपना विकास करता है और जन सामान्य अपनी प्राचीन गरिमा को स्थायी रखने के लिए पूण सक्रिय है।

कालू के निकट झील—कालू से बीस किलोमीटर उत्तर पश्चिम की ओर रेगिस्थानी क्षेत्र म खार पानी की झील है जिसमे पहले नमक निकलता था। लूनकरनसर के नमक पर लगाय गय म यथुगोन कर से बीकानेर राज्य को खूब आमदनी होती थी। इसमे बनजारे और दलाल सहायक रहते। तत्कालीन महाराजा व्यापारियो को

---

1 पक्का उत्तम किस्म का लाल पत्थर (अधात्वीय) गाव दुलमरा ढारी (त० लूनकरनसर) म प्रसिद्ध है।

2 राजस्थान नहर उपनिवेश क्षेत्र म अलाटमेंट कानून पृ० 12

सुविधाएँ दिये रखते थे। अब नमक निर्माण का काय अर्से से ब द है तथा कपनी की ओर से बहुत अधिक मात्रा म अभ्रक जसा—जिप्सम निकलता है।

कालू का जलवायु—कालू का जलवायु गरम व शुष्क है[1] कि तु स्वास्थ्य क लिए मुफीद है। वर्षा का अभाव, गमियों म गर्मी सदियो म अधिक सर्दी ही इसका प्रमाण है। यहाँ क जन स्वास्थ्य और मन को देखन से ही इस बात का पता पड जाता है कि कालू के निवासीगण चरित्रवान परिश्रमी एव बडे कायकुशल होते आय हैं। व अपनी भाषा, वेश भूषा, रीति रिवाज धार्मिक विश्वासो व सस्कृति की समानता के कारण एक होकर रहत रह हैं। अब एक ही राज व्यवस्था म बध जान के कारण साधन और सुविधाओ के बढ जान से एक दूसरे के अधिक नजदीक हो गये हैं।

कालू में कुए—कुए चार हैं। ये ढाई सौ फुट या इससे ज्यादा गहरे हैं। मगर अब मशीन से चलने के कारण पन्द्रह वर्षों स गहराई का प्रभाव नही रहा ह। अनिश्चित वर्षा और शुष्क जलवायु क हात हुए भी कालू म भूमिगत जल के अच्छे स्रात हैं और इस बात को प्रकट करत हैं कि कालू म भूमिगत जलापलब्धि गगा के मदान माफिक मिलता है। पाचवा कूआ स्वामीजी का था लेकिन पानी खारा। महत विष्णुदासजी न मन मे अपन कुए के कोठे वरडों के पुराने पत्थर चूने से कन्या पाठशाला की चहार दिवारी बनवा दी है। सावजनिक होने हुए भी पहले इन सब कूओ पर अमानवीय भेद भावाधिकार पलन चलते थे। भगी सासी और उनके स्तर की जातियों को पशुओं के साथ खेली म पानी पीना पडता था, जिसमें कुत्ते तैरते रहते। थोरी चमार, बलाई, रेगर, मावी आदि जातियो की अलग से घडोइया बनी हुई होती। मुसलमानो की भी चारा कुआ पर अलग घडोइया थी। फिर भी इन घडोइया के नालो मे कुए चढने वाले लोग हर वक्त कपडा ठूस रखते थे। अछूतो की बडी बडी मिन्नतें चलती रहती कि— कोई नाला खोलकर हम पानी भरवादे।' मगर कोई दयालु व्यक्ति पहुँच जाता, तब ये लोग पानी भर सकते, नही ता अछूतो की मिन्नतो पर सदव सवर्णों की गालियाँ बरसती रहती। घडे भरने की एक तरकीब होती थी, साधारण व्यक्ति के वश की बात नही। लोगों के घरो मे पानी भरने वाले स्त्री पुरुष कुए मे पानी प्राप्त करने मे बडे माहिर थे। ऐसे लागा का अच्छे-अच्छे घरो मे पूरा सम्मान रहता। य लोग दोघड से भी पानी ढोने और दौड दौड कर कुए का चक्कर लगाते रहते। भीड होने या ओड पडने पर अधिकतर रात को पानी लाया जाता था। बडे अवसरो पर पखालो से भी पानी पहुँचाया जाता था। ऊँटो पर पानी की चौखड मगी जाती और बोरा म आठ आठ घडे पानी साथ भर कर लादते थे।

गमियो के दिनो मे कुए रात दिन चलते रहते। पानी की कमी पडन पर इनम से कौणी (रेत) निकालत थे। लाव या कोस अदर पड जाते तब रात को भी आदमी को अन्दर जाकर लाव कोस निकालना पडता था। इसलिए कूआ का काम बडे खतर का होता था। 'कूवा मूवा' कहलाता यानि कूआ मौत का घर की कहावत बोली जाती।

भूमि और पदावार—यहा की भूमि की बनावट रेतीली मरुभूमि का एक भाग है। इसलिए पानी की नमी को रोकने वाले महीन मिट्टी के कण कालू की धरती म

1 मई जून मे तेज लूए चलती हैं और शाम को प्राय काली पीली आँधियाँ (रेतीले तूफान) आ जाया करता हैं।

नही है, मोट वण है। फाग और ठू ढिये निकल जाने से धरती भूखी रहती है तथा खरीफ की एक फसल वर्षा के सहारे देती है। ग्राम की भूमि म मोठ बाजरा तथा ग्वार की पदावार अधिक मात्रा मे होती है और मूग चँवले तथा तिल की फमल भी अच्छी हो जाया करती है। आजकल सर्दिया म कभी कभी तारामीरा भी बीजा जाना है। किन्तु अनावृष्टि वर्षा की कमी, टिड्डी फाका, कातरा, हवा आदि के अनेक भीषण प्रकोप प्रभाव यहाँ की फसल पर सदा से पडते आय हैं। जिनके कारण जनता को अनेक आर्थिक कष्ट भुगतने पडते है। प्राचीनकाल म पेट भरन की समस्या क साथ ठिकान की रकम भी एक प्रश्नात्मक रूप बन जाया करती थी। ऐसे समय गाव के नवयुवक सदा स आगे रहते आय हैं। वे पट्टे से झगड कर लगान माफ आदि काय करवाते।

कालू और राशिफल—भारतीय ज्योतिष पद्धति के अनुसार सब नामा की राशियाँ होती हैं। राशिया बारह हैं और प्रत्येक नाम के प्रथम अक्षर से ही उस नाम की अपनी राशि जानी जाती है। कालू के पहले अक्षर 'क' म आ की मात्रा मिलकर 'का' बनता है। का, की कू, घ ङ छ के को, ह की मिथुन राशि होती है। इस राशि का स्वामी ग्रह बुध है और यह नाम—देह, देवी निवास कहलाता है, क्योंकि मिथुन राशि का देवता लक्ष्मी है। कालू नाम जो मिथुन राशि म पडता है अपनी दैविक नीति से विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेने की क्षमता रखता है। इसकी जीवनी बडी जीवटदार एव विचित्र होती है। मानसिक दृष्टि से यह नाम उन्नत होता है। इस नाम का प्रारम्भिक जीवन निवास अत्यन्त परिश्रमी एव कठोर स्थिति वाला होता है, किन्तु क्रमश लम्बे जीवन मे यह अपनी दशा सुधार लेने मे समर्थ पाता है। यह नाम जन्म जात नेता है सो नेतृत्व प्राप्त एव न्यायप्रिय भी होता है। इस वष (ई० 1983) कालू ग्राम म बिराधाभास का प्रभुत्व रहेगा। अपने ही लाग काय मे बाधक होगे। वष का उत्तरार्द्ध अर्थात जून से दिसम्बर अधिक ठीक होगा।

कालू और बास—गाव कालू के निकट चार थेह मिलते हैं।[1] य कालू के चार पृथक पृथक बास थे। एक विदासर नाम से ही यहाँ गाव बसता था जो भाटा जागो की विश्वसनीय बहियाँ देखकर माना गया है। यहाँ "चन्द्रप्रभु" के जैन मदिर मे स 1865 के लेख अणन मे गाव का नाम 'कालूपुर' उत्कीर्ण है। वतमान गाव की गदी तलाई वाले स्थान पर पहले एक प्राचीन बसती हुई ढाणी बताई जाती है। यह कभी की गाव कालू के नव्य निवास हेतु यही पर समावस्थित हा चुकी है। तभी स यह देवी के ताल की ओर पसर कर गौरववान गाव बना है तथा उत्तरादी थेह वाला बडा बास आकर इसम मिला है। शेष अवशेष यही बतलाते हैं कि गाँव बहुत पुराना है।

कालू के पुराने बडे करतब—कालू मे पहले कई प्रकार की होडें (शर्तें) हुआ करती थी। य विविध विवाद स्वरूप चलती रहती। निकटस्तरीय क्षेत्र के लिए इन होडो म कालू के लाग प्रमुख माने जाते थे। कुछ विशेष होडें (यहाँ की) दूर तक प्रसिद्ध थी। जस कूओ पर तलमुट्ठी नाव मोरना (चलाना), ढाल बजाना अकेले छाटी लादना, ऊँट का

1 पहला, अब भन्दान की खेडी है, उसी से यह वतमान गाव बढा है। दूसरा ससियों का खेत है—(करनीसर के रास्ते पर)। सूरजाने तालाब मे पश्चिम म देवल के पास वाला थेह तीसरा है। थेह=खेड। उजडा हुआ पुराना गाव।

मुह दूसरी आर फेरना माला (करीब दो ढाई मन का पत्थर एक हाथ स ऊपर उठाना) देना, ऊँट दौडाकर आगे निकालना, कुश्ती करना, वजन उठाना डेढ सेर तक घी या लड्डू पी-खा जाना, नारियल फेंकना, खोपरा की चिटकी करना खेती के काय करना अगुनी पकडना पजेँचा छुडाना, आडी अडना घट फाडना, घडे उठाना टोरे मारना जेल पाना, हिमाब पूछना और हल करना आदि अनेक प्रकार की शर्तें हुआ करती थी। लोग बरातो म जाते और चार चार रोज वहाँ ठहरते। तब भी वहाँ इस तरह की शर्तें चलाया करते थे। आजकल इस तरह की शर्तें चुनाव क समय हार जीत को लेकर हजारो रुपयो की म्हाई कमाई होती है। इस काय को सट्टा सौदा कहते हैं और कतिपय लोग जूआ !

मकान तथा भवन—पहले कालू म ढूढे पड़वे छान, छापडे मेडी, चौबारे, साल तिवारा, माडे दरवाजे कच्चे और लिपे पुते मकान होते थ। अब पुरानी कला कारीगरी की कोरणीदार रगीन हवलिया बडी सुदर तथा दशनीय हैं। वतमान समय मे आधुनिक टाइप के भवन भी निर्मित होन लग हैं।

नब्बे साल पहले एक दो हवेलियो को छोडकर कालू म अन्य सुदर भवन आर सस्थाएँ नही थी। अब अच्छे अच्छे मकानो और भवनो का सख्या बहुत अधिक है। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजकीय प्राथमिक विद्यालय तथा राजकीय उच्च प्राथमिक कन्या विद्यालय के भवन।

हॉस्पिटल भवन—राजकीय चिकित्सा एव स्वास्थ्य केन्द्र, ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केन्द्र तथा ग्रामीण परिवार कल्याण केन्द्र के भवन, लाइब्रेरी भवन, विश्रामालय भवन दुग्ध उत्पादन सहकारी समिति भवन, कालू ग्राम सहकारी समिति भवन, महिला मडल भवन, अतिथि भवन, डाकघर भवन, ग्राम पचायत भवन, माताजी के मदिर का दुग दरवाजा, हरिरामजी का मदिर, हनुमानजी का मदिर मस्जिद भवन, पशु अस्पताल भवन तथा पचास से ऊपर की सख्या मे क्वाटस बीच बाजार म बहुतसी सुदर दुकानो की इमारतें, विद्युतीकरण के कुएँ और उनके मकान भी बन चुके हैं। कालू पहले खुले मदान (टाडा) के रूप मे इधर उधर बिखरा हुआ बसता था। न चौडी सडकें थीं तथा न ही सफाई। अब एक लाइन से दोनो ओर सुदर मनोहर दुकानें बनवा दी गई हैं तथा स्वच्छता का भी पूण ध्यान रखा जाता है। क्रमबद्ध दुकाना और उपयुक्त रास्तो के कारण गाव बाजार की शोभा मे चार चाद लग रहे हैं। यहा पर आकाश चाक्ती अट्टालिकाओ, सस्थाओ और रमणीक रास्तो के बन जाने से सचमुच कालू ने नवजीवन प्राप्त कर लिया है। इसलिए पचास साल पहले का कोई वद्ध व्यक्ति आकर अपने इस गाव को देख ले तो भौचक्का हो जाय।

मुख्य सस्थाओं मे रा० उ० मा० विद्यालय तथा छात्रालय हैं जिनस तहसील भर मे शिक्षा का प्रसार हुआ है और जिनके लिए गाव न काफी रुपये खच किये हैं। गाव की पचायत भी सदा से समृद्ध रही है। सरपच पद पर स्व० श्री गिरधारीलाल शवर चि० गोपालचद ढूढानी और प० सोहनलाल सारस्वत प्रभति पदासीन रहे हैं। जिन्होंने समय समय पर लाखा रुपयो की सपति उक्त सस्थाओ के भवन, निर्माण हेतु व्यय करके अपनी दक्ष एव उदात्त भावनाओ का पूरा परिचय दिया है।

सडकें—कस्बा कालू म अभी (सन् 1979 जून तक) एक सडक पूरी बनी है जा

लूनकरनसर स सरदारशहर वाया कालू होकर जाती है। इसको शीघ्र ही राष्ट्रीय हाइवे रोड[1] बनाया जायगा, क्योंकि इससे श्री गगानगर और पाकिस्तान की सामा से भारत की राजधानी दिल्ली तक का सीधा एव सुविधाजनक माग बनता है। लूनकरनसर से श्री डूगरगढ की, और बीकानेर स कालू तक की सडकें बनने की याजनाएँ भी चल रही हैं। गाव म यह श्री डूगरगढ सडक (अप्रोचरोड) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तक सबधित है। वि० स० 2036 माघ फाल्गुन (सन 1980 फरवरा) स जा यहा सडक निर्माण काय चल रहा है, उसका सबध सीधा राज्य की राजधानी जयपुर तक रहगा। यह श्री गगानगर स वाया कालू होती हुई श्री डूगरगढ सुजानगढ सीकर रीगस और जयपुर से सीधा सबध बनायगी। यह कालू से गाव ल्होडेरा तक बन गई है।

कालू के वृक्ष—इस गाव की भूमि पर खेजडा (शमी), जाल, नीम, पीपल, झाडियाँ[2] बबूल फरास, रोहिडा, गूदी कूमटे[3] आदि मुख्य वृक्ष है। आजकल नूतन पड भी लगाये जाते है। जसे मुख्य सफेदा इत्यादि। इस गाव मे सबस पहला सफेदा (यूकिलिप्टस) लेखक के घर लगाया गया है।

कालू म इन वक्षो को पहले के लोग काटत नही थे। यदि कोई लुक छिपकर काट लेता तो पत्ता लगने पर वह लकडी पटटे के गढ मे मगवा लेते और काटने वाले आदमी को सजा और जुर्माना दाना से दण्डित करते। इसलिए उस समय लोक म कहावत प्रचलित थी—

"आक न जेलो बाढिये, नीम न घालो घाव।
रोहिडे न बाढण वाला, थारो दरगा म हुसी न्याव।"

परन्तु *कालू के बीच बाजार का रूपक तीन केर्ले (पाच सौ वष लगभग से* लहलाते पुराने शमी वक्ष) जो प्राचीन समय से लेकर आज तक अपनी छाया—आश्रय से आये गए मनुष्यों एव पशुओ की सेवा करती आ रही थी। जिनके नीचे कई बार राजा-महाराजाओ के तम्बू लग चुनाव हुए बडी वडा पचायतें बठी और बाहर स आई हुई बराता के सेहला (तोरण बानन से पहली रस्म) म अनक वर महाशयो की धोक वन्दनाएँ होती आई थी। उनकी छाया म साधारण जनता फलती फूलती रहती और हर साल चत्र महीने म बडे तकडे हीडा (झूलो) पर कालू के तमाम आबाल वद्धजन होडते थे। कभी कदा याचकों द्वारा चौधरियो क गुड्डे भा केला पर बधे थ। दिनाक 27 8 78 को पचायत द्वारा मिस्त्री महान के बनाये विश्रामालय के नक्शे के अनुसार इनकी कटाई आरभ कर दी गई। केलो को वढई लोग वडे बडे कस्सी कुहाडे लेकर खुदाई कर काटन लगे। केलें रोई और अपनी चरमराहट स हाय तोबा करने लगी कि 'दविक गति!" तत्काल प्राकृतिक प्रकोप हो गया और तूफान आ गया। तूफान आ गया का गाव भर मे शोर मच गया। यह गाव की उत्तर दिशा से अचानक उठकर भयानक आधी पानी के साथ आया, चारो

1 राष्ट्रीय राजमाग।
2 झाडियो की कटीली डालिया से गावो के लाग अपन घरो की बाडें बनाते हैं।
3 कूमटा और बावली से गाद उपजता है, जो पौष्टिक पदाथ होता है। प्रसव के समय यहाँ की महिलाओ को गाद के लडडू बनाकर खिलाये जाते हैं।

आर चार चार, पाच पाच किलोमीटर के क्षेत्र म तुरत उत्पात मचान लगा। गाव और जगल के सैकडो खेजडे तथा नीम, पीपल, झाडियो एव जाल के तकडे पेड इत्यादि टूट पडे। टीन और फूस की छतें, झोपडियाँ और सारी छानडिया प्रथम आक्रमण क आते ही उलट गई। कतिपय बाडो का पता ही नही लगा। तूफान आ गया ! तूफान आ गया ! हल्ला मच गया। दूसरे दिन दिनाक 28 8 78 को ग्राम पचायत की वाछें खिल गइ। गाव के ताला और खेतो मे लकडी निलामी की बाढ सी बह निकली। पाच सात हजार की रकम एकत्रित हो गई। साल के अत मे बची खुची लकडी से खुशी-खुशी यज्ञ में आये साधुआ के धूणे सुशोभित करवा दिये गए। बूढी केला की हाय से तूफान आ गया ! तूफान आ गया ! कालू पर उसी साल (स० 2036) मे अकाल का भयावना प्रकोप छा गया।

दिनाक 16-11-78 से 26 11 78 तक ओसवालो के नाहरे का बडा खेजडा भी काट दिया गया। क्योकि आगामी दिसम्बर को गाव कालू मे आचाय श्री तुलसी का आगमन हाने वाला था, इसलिए नोहरे के सरक्षको को वहा पडाल बनाना जरूरी हो गया था। लेकिन फिर तो गलियो के पुराने खेजडे[1] भी कटाने के आयोजन बन गये। बचारा ऊभली गाल (सीधी मुख्य गली) वाला वद्ध खेजडा भी काट दिया गया और टकी के पास वाला बडकणा थोथा मोटा खेजडा भी कटवा दिया गया। 'भाई जनता का शासन चलता है। गाधी का वक्ष रोपण सूत्र सिसकता आहें भर रहा था।"

गाव कालू म मुख्य मुख्य पेडो के नाम भी बोले जाते हैं, जो पुस्तक के राजस्थानी वाल तृतीय अध्याय (रेखाचित्र) मे लिखे गए हैं। इन पक्तियो के लेखक ने तो इन पेडो आदि पर "दस-देव' नाम से एक पुस्तक भी लिखी है, उससे पेडा सबघी नमन का एक नमूना दृष्टव्य है—

नमो देवता नीम, खमा खेजडला फागा।
याडख, लटक जुहार, जाल पा लागण जोगा॥
कूबो वें दुणा वार, जो'ड न सात सलामा।
धोर खपेंड धोक खाणरा है जी जामा॥
नामा कामा काया वणी, धाम पुजाप दस वडा।
बलिहारी थारी भलाई मरु माणस राखो लडा॥

कालू के पेडों के फल—भारत के अन्य भागों मे पतझड शुरू हाता है, हमार गाव कालू म वसत की बहार आती है। चारा आर खेजडे पील तपते धोरा का हरे-भरे कर देत हैं। इनके फल का सागरी कहत हैं। सागरी स पककर खोखा[2]-बनता है जिसे बालक चाव म खाते हैं। सागरी का साग और करिया के साथ अचार बडा स्वादिष्ट हाता है। यह श्वास कास वाले रागी के लिए बडा हितकर बताया जाता है। कवि लाग सागरियो के साग मे एक प्रकार का अमाघ शक्ति बताते हैं—

---

1 जकात थान वाले खेजडे पहले ही कट गय थ, जा रामसिह के मकान की जगह थे। खे (आकाश)—जड। (जिसकी जडें आकाश से पानी खीचता है।)

2 (DRY Fruits)

सा सागरिया साग, हुवै किरमाण कमाऊ
खा सागरिया साग, वण है वीर जुझाऊ
मागरियाँ र साग, सती सिरमोड सुराणी
सा मागरियाँ साग, नरा पर पीर पिछाणा

बेर की भाडिया[1]—कालू के खेता मे पाले (झाडिया) की सदा से बहुतायत है। इसी की जडा का रागजडी मतीरा मीठा होता है और उसकी शराब भी बनाई जाती है। कार्तिक के महीने म लाल पीले रगो के खट्टे मीठे बेर विशेषकर बच्चो के मन को मोह लेते हैं। बच्चे भाडिया की डालियो म लगे लगभग बेरा को चूट चुग कर खाते हैं। विद्यालय स्तर के बच्चे बेरो के लिए खेत जाते हैं और मतीरे काकडी, सिट्टे मोठेडी तथा देर सवेर तक बेर खाकर पिकनिक (गोठ) का आनद लेते हैं। अब तो बेर दूर दूर तक जाने लगे हैं। अन्य स्थानो मे इसके छिलके का चूण, मीठी मिर्च के नाम से विक्रय होता है।

जालोटिये—जाल कालू का बडा हरा भरा वृक्ष है। इन पर सुन्दर नाम पक्षिया का मेला सा लगता है और उनकी चहचहाट सुनने लायक होती है। इसके फल को पीलू कहते हैं। ये पीलूडे यहाँ रसपुँज कहलाते हैं। ये रसगुल्ला के लघु रूप होते हैं। वृक्ष के मोती माणक, नगीनो की भांति सफेद और हरे जालोटियो की बहार बच्चो को ही नही बूढो तक का मन ललचा देती है। ये लघु अगूर बडे रसदार और स्वादिष्ट होते है। इसलिए बालक तो पेड की चोटी तक चढ जाते हैं। ये सब सर्दी के फल होते है।

गूदिये—गूदिये गूदी वृक्ष के सम्बन्धी फल होते हैं। ये पकवान बूदिया (नुकता) की तरह गोल दाने के रूप म दिखाई देते हैं। पर खाने म बडे रसदार और चिपचिपे होते हैं। इनकी फसल होली के आस-पास पकती है। ये लघु फल पौष्टिक होते है।

ढीलू—ढीलू पाचक और मीठे होते हैं। यह कर नाम के झाडीनुमा पेड पर लगते हैं। हरे गुलाबी रग के फल होते है। बेर के माफिक छोटे फलो का साग अचार और उससे थोडा बडा (आलू बुखारे जितना) होने पर बच्चा के चखने का फल बन जाता है।

निम्बोली—निम्बोली दाख स्वरूप नीम वृक्ष का फल सावन के महीने म पकता है और बडा मीठा तथा रसदार हो जाता है। कालू मे इस बालक खाते हैं और बालिकाए गीत भी गाती हैं— नीमा निम्बोली पाके सावणिया कद आसी ए माय ! औरतें निम्बोली के गोटो से काजल बनाती हैं। इसकी मजरी दही रायते और छाछेन के छौंक मे काम आती है।

फोगला—फोग के फोगले (मजरी) से रोटले (गेहूँ या बाजरी के आटे के भाप म पकाये मटके) बनते हैं जो घृत म चूरने पर बडा मिष्ठान्न होता है। फोगले के रायते को कालू के लोग विशेष प्रकार का हल्का खट्टा खाद्य मानते हुए प्यार स स्वीकार कर

1 झडबेरी की जड का रागजड कहते हैं और यह चमडा रगने के काम म भी ली जाती है।

खाते हैं। चत क महीने म फागो पर फागला लगता है। तब उन पर भवरे और मक्खिया गु जारन लगते हैं। फोग का जड से काटना रेगिस्तान निवासिया के अहित म है। किन्तु वनमान मे ठूठिय निकालन की प्रथा कालू मे बहुत चल गई है जा वन विकास म भारी बाधक है।

कालू के कुदरती पौधे—यहा की भूमि म खीप, आक[1], धतूरा, अरड, हरमल[2] आसगध, मुरायली, फोग, सरकन, सिणियां, अश्वगधा, बूई मरहवे, मकाय, तुलसी एव महदी आदि छोटे पौधे होते ह। वर्षा होने पर कुछेक मे घास भी उग आती है। किसान लागो के घरा मे बहुत सी जगहो पर इनका उपयोग होता है। आक, खीप और सिणिया के रेशा से रस्सी बनाते हैं, जिनसे बडी सु दर-सु दर खाटें बनाई जाती है। कतिपय ये पौधे दवा-स्वरूप काम मे आते हैं। मेहदी और मरहवे के अपने रग-सुगध के अलग गुण हाते हैं तथा तुलसी ताप तप मिटाने मे काम देती है। जगल के तालो मे 'जलमोथ खोदकर बच्चे खाते हैं।

यहा के जगल मे आयुर्वेदिक औषधियाँ—कालू म विविध प्रकार के अनाजा एव साग-सब्जियो के सिवाय आयुर्वेदिक औषधिया भी उत्पन्न होती हैं, जिनके मात्र नाम दिये जा रहे हैं—अरणा या अरणी, अरड, आक और आसगध, इन्द्रायण फल, उटगण कटेरी कपूॅरगधा, कुरड गाखरू, चिडघणियो (सहलदानी), जवासो या धमासो ताल-मखाणा तुलसी धतूरो, नागरमोथो, निम्ब, प्रसारिणी (खिपाली) फूभी (खु भी), बूर (रोहिषतृण), भफोड, भागरो, भु रीगणी, मरहवो, महाबला, रतनजोत रोहिड रा फूल, लालरू, सपग धा, शखपुष्पी (धालफूलियो), शिवलगी आदि। (पूरा वणन पीछे राज-स्थानी विभाग मे दिया है।)

कालू के डाभले खेत की डाभ तो आस पास के गावा तक मे जाती है। स० 2035 माघ महीने मे हाने वाले 27 कु डीय यज्ञ के लिए पडिता द्वारा सब टाभकाय इसी डाभ से सपन्न किए गये थे।

कालू मे घास—कालू गाव का भूमि मे भुरट, मुरट, लापडो बाभरिया, बेकरियो, घठील, सेवण, बूर डचाभ, मडूसी आदि घास, वर्षा होने पर मुख्य रूप से उग जाते हैं। धामण, झीटियोघास तथा बरू के बूटे ही कइ जगह पाये जाते हैं। खाते समय भस के गले मे मुरझाये हुए बरू के पत्ते चिपक जाते हैं ता वह मर भी जाती है। ल्होरडो, ल्हाठियो तथा हिरणचब्बो आदि शरद ऋतु के घास होने है। राजस्थान के आदमी और जानवर प्राकृतिक ढग से घास पर निभर हैं।

---

1 इसके पत्ते सेक कर (गम करके) छाक ले जाते समय सब्जी और दही-दूध के छोट बतना पर बाधते हैं। आक के दूध स चमडा भी साफ किया जाता है। 12 बजे (दिन) के बाद पीडा पर लगान स रामबाण का चमत्कार करता है।

2 हरमल का पौधा कम 'रक्तचाप' म काम देता है। इसके बीज कृमिनाशक हात हैं और दमा, गठिया, पीलिया जुडी, मूत्रअवराध निवारणादि म उपयोगी होत हैं। बीकानेर, जामसर, घीरेरा लूनकरनसर, गगानगर पाली-बगा आदि स्थाना मे यह जहाँ पानी इकट्ठा होता है, बहुतायत से पाया जाता है।

पालतू पशु और उनका ज्ञान—बालू गाव मे गाय भस ऊँट तथा भेड बकरियाँ मुख्य पालतू पशु हैं। बल, गधे घोडे और कुत्ते बिल्ली का उपयोग भी यहाँ के जन मानस म प्रचलित है। घास, सेवण, कडबी, तूनी, चारो गुणा खार पानी, लग व फलानाज इनका भोजन है।

यहा के पशु पक्षियों का ज्ञान धम बडा जबरदस्त है। गाय भसादि मादा पशुओ के गभ धारण कर लेने के बाद नर पशु उसके पास तक नही फटकते। कुत्ता यहाँ का वनानिक जीव उसके पेशाब म तेजाब जसा एक एसिड होता है। अत वह किसी दीवाल चौगट या पक्के ऊँचे पत्थर पर पेशाब करता हुआ छोट कीडा मकोडा का बचाता रहता है। बिल्ली अपनी बदहजमी पर कभी भी दूध दही नही खाती और बच्चो के घावो का जीभ से चाटकर ठीक कर देती है। कुत्ते और बिल्ली अपने बच्चा को नित्य प्रात शिकार का विशेष प्रशिक्षण दते हैं। कुत्ता दूर के पत्ते खाकर अपना पेट ठीक कर लेता है और बिल्ली तेल का त्याग करके अपने स्वास्थ्य का बनाये रखती है। यात्रा के समय गालू के लाग बिल्ली से उठलाकर दही खाने का शकुन मनाते हैं। किंतु घर से जात हैं तब कुत्ते के कान फडफडा दन पर अपशुकन मान कर लौट आते है।

पशुओ के भी यहाँ बडे हेदकी (वद्य) होत हैं। व ऊँटा को घी गुग्गुल घोडा का रातब तथा भैंस के रोग मे चिरमी आदि दवा दिलवाकर ठीक कर देते हैं। वे ऊँटो के पातडी तोडते हैं, लीडी लगाते हैं और मुँह मे सलू काटकर स्वस्थ बना देते हैं। यहाँ मनुष्यों के भी टोइये सींमडी और चाचवे लगाये जाते थे। वतमान म डाक्टरी प्रचलन हो गया है।

वन के पशु जहरीले जीव एव शकुन—बालू ग्राम की वन भूमि म हरिण सियार भेड बिलावा (बन बिल्ली) लोमडी, मेही, जरख, रोम भेडिये (नाहर) नेवले मेले आदि अनाखे पशु पाये जाते हैं। लामडी एक सेले नामक काटेदार जीव की जानी दुश्मन, उसके तन-बदन वद कर लेने पर भी वह उसे अपनी चालाकी से उलटती हुई मुँह पर पशाब करके बेचारे निरीह को मार डालती है। यहा भेडिय अधिक सख्या म हुआ करते थे जो गाय भस भेड बकरी आदि पशुआ का बडा नुकशान पहुँचात। इसलिए भेडिया मारने के कृत्य को यहा के लोग धार्मिक समझते थे। अब जमीन अधिक खेती के काम लिय जान क कारण भेडिया की सख्या अपने आप कम हो गई है।

बालू अरण्य म राही को बायें सियार या दाहिने लामडी मिल जाय तो शुभ माना जाता है। "डाव तीतर डाव स्यार डाव खर बोल असराल। डाव (बायें) लूका डा-डा कर लका का राज वभीषण कर।" जगत के शकुनो म छिपकली और छछूदर भी बाईं ओर शुभ माने जाते हैं। बन्दर नीलकण्ठ मृग और मयूर तथा काक व गीध दाहिनी ओर दिखाई दें ता शुभ हाते हैं। जीवा म यहाँ कुम्हारे, वाडाळी वाडा पीणो शखचूड, गोह गोहिरा, पद्मनाग, काला नाग और बिच्छू टाटिय टिरडाग भवरे आदि पाय जाते हैं। वाडी पीणे, शखचूड और गोहिर इत्यादि आदमी क दुश्मन तथा भारी खतरनाक जीव हाते हैं। साडे छिपकली, पाटागोह किरडे, हिचडगावें और साप की मासा से यहाँ के लोग फिजूल मे डरते हैं। यात्रा के समय सप का दाहिने निकलना शुभ समझा जाता ह। जसे —"खर डारा विष जावणा "(शकुन) ।

स्थानीय पक्षी—गाव के पक्षियो मे गोरया, कनया (काली चिडिया) पुटिया (छोटी चिडिया), मोन चिडी, मालाली, लीलटासादि चिडियाँ होती है। तीनर, कौआ कबूतर कमेडी (पिण्डुकी), बाज, मुगा, खुडखुडकाती (कठफोडक) गुरसा गिद्ध, चील, A घुघू, मोर, बटबड, तिलोड आदि पक्षी भी यहाँ होते है। वषा के दिना मे यहाँ तालाबा सरोवरो के सहारे किनारे गोडावण, क्रौंच और किकूट तथा मुगाबिया आड बतख प्रभति पक्षी हर साल आते हैं। वर्षा के दिनो मे जगनू, मेंढक, बीरबहूटियाँ एव भीग जस बडे भव्य जीव दिखाई देते हैं।

चिडिया-सुर कूकाट कागलो ढोलं धुगाव।
गुरसा गोर गीत, कबूतर चग वजाव॥
तीतर ठेक लाव तबलची ताना तोड।
मोर टहुका मिल, कनया जीझा जोड॥
कोयल सूवा बण्या चाव, गीज महफिल रागडी।
पट पोसाल जाल पर जुड बागा पछी बागडी॥

काल् म मालाली के शकुन,[1] लीलटांस के दशन, कुरजा के लोक गीत एव कौए की अदश्य प्रजनन प्रकृति, मानव जाति को सवत ससीख माय हैं।[2] यहाँ पुटिया नाम की छोटी चिडिया के लिए एक बडी अहमियत की कहावत प्रसिद्ध है कि— क्यू पुटियाला पग कर ? (पुटिया गगन गिर जान की आशका हेतु उसे रोक अटकाने के लिए रात को अपन पर ऊपर को करके सोता है।) न ही गोरया प्रथम गभ धारण करने के समय तुरत मातृ सुबुद्धि मे घासला बनाना शुरू कर देती है। हमारे इस रेगिस्तान मे चीटियो तक के छोटे जन्तु प्राणी प्रबुद्ध, वर्षा आने से चार घटे पहले ही पालक वति से अपने अडा को सुरक्षित स्थान मे ढोकर (उठाकर) ले जाती हैं। रेवड (भेड बकरियो का समूह) वर्षा से आठ पहर पहले ही पीठ से पीठ मिला कर बठता है और स्हाढ (ऊँटनी) पर पटकने लगती है तथा गिरगिट बाडा पर चढ जाता है। गोह की पक्की पजा पकड—डाकुओ का हित साधन, तथा सप की एकान्त साधना[3] मनष्य की भिन्न का बचाव है। हरिण की आक चबाकर प्यास मिटा लेने मे होशियारी और कौए म नजर बचाकर चीज चुरा लेने की चतुराई वगरह विशेषताए इस देव धरा के पशु पक्षियो की श्लाघनीय रमवतता है। यहाँ के स्थानीय प्राणियो मे प्रत्यक्ष देवी चमत्कार पाये जात हैं। घरो म यहाँ माताए बहने पुत्रो को बहलाती हैं तब उसे कौए से सयाना बताया करती हैं। कहती हैं—"तू तो रे काग सू स्याणो! मोर सू स्याणो!"

---

1 (A) चील की पनी और पतली आवाज बडी मधुर होती है।
(B) किसी व्यक्ति का काम सिद्ध हो जाने पर कहा जाता—"मालाळा मना'र आयो।"

2 गूढ मयुन चारित्व काले काले च सग्रहम्।
अप्रमत्तम विश्वास पच शिक्षेच्च वायसात॥

3 खण (काले) माहिर, तपेदिक और हिडकाव के रोग यहाँ असामयिक मृत्यु के कारण माने जाते हैं।

जनसंख्या—कस्बा कालू में दस वर्षीय जनगणना सन 1981 में 11वीं बार हो रही है। परन्तु यहाँ के गृहस्थ बाहर अधिक रहते हैं। अतः जनसंख्या अधिक नहीं आयेगी। इन पंक्तियों के लेखक ने ईस्वी सन् 1931 से लेकर 1971 तक कालू का जनगणना में शृंखलित क्रम से पांच बार प्रगणक का कार्य किया है जिनके पुरस्कार में भारत सरकार गृह मंत्रालय दिल्ली द्वारा रजत पदक एवं राष्ट्रपति से प्रमाण पत्र मिले हैं। गांव कालू में यह जनगणना सन् 1881 से होती आई है। इसका कार्यालय पहले अजमेर मेरवाड़ा में था और सन 1950 तक वहीं से संबंध रहा। सन् 1951 की जनगणना में यह कार्य जयपुर से संबंधित होकर चला। हम प्रगणकों को राजप्रमुख श्री मानसिंहजी से प्रमाण पत्रादि मिले। सन् 1971 में गवर्नमेंट आफ इण्डिया (Ministry of Home Affairs) जयपुर से सुन्दर कार्य संचालित हुआ। ई० स० 1931 का उल्लेख नीचे पढ़ेंगे।



GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF HOME AFFAIRS

CENSUS OF INDIA

CERTIFICATE OF HONOUR

To Shri Nanu Ram Sanskarta

In recognition of your outstanding zeal and high quality of services rendered by you during the 1971 Census of India, the President of India has been pleased to confer upon you the 1971 Census Silver Medal

Census Commissioner India

No. Dated 15. 8 1972

एक जनगणना का ब्योरा—तहसील लूनकरनसर के अ तगत कालू का रकबा (तत्कालीन समय मे)—"रजिस्टर देहात बीकानेर पृष्ठ 45"[1] के अनुसार 25,706 ॥ बीघा बताया गया है। आबाद घरो की तादाद 419 और जनसख्या 1793 (पुरुष 863, स्त्री 930) लिखी है और यह गाव राजवी गजसिंहोता को चेतलब मिला हुआ लिखा है। लेखक को स्मरण है सन 1931 मे घरो के अक लिखे थे तब वे सारे गाव के बाद अतिम अक सख्या 419 गाव के गढ पर जाकर अकित किये थे। इनम प्याऊ (कालू से लूनकरनसर माग पर स्थित) और रामस्नेहियो की जगेरी भी शामिल थी। लेखक के पास 419 आबाद घरो के नाम की उस समय की लिस्ट प्राप्य है।

कालू की जनगणना 1981—कालू की कुल जनसख्या 5877 हैं जिसम पुरुष—3006 तथा स्त्रियाँ—2871 हैं। साक्षर—1925 हैं, जिसम 1284 पुरुष साक्षर हैं तथा स्त्रियाँ 641 साक्षर हैं। कालू म कुल निरक्षर 3952 हैं, जिसमे पुरुष 1722 हैं तथा स्त्रिया 2230 हैं। अनुसूचित जाति के पुरुष 346 हैं तथा स्त्रियाँ 309 हैं कुल सख्या *655 अनुसूचित जाति की ह। अनुसूचित जनजाति के 10 पुरुष हैं तथा स्त्रियाँ 5 हैं।* कुल सख्या अनुसूचित जनजाति की 15 हैं। कालू मे काश्तकारों की कुल सख्या 1166 हैं जिसम 1074 पुरुष काश्तकार हैं तथा 92 स्त्रिया काश्तकार हैं। अन्य काम करने वाला की कुल सख्या 374 है जिसमे पुरुष सख्या 354 हैं तथा स्त्रियो की सख्या 20 हैं। निजा व्यवसाय करन वालो की कुल संख्या 27 है जिसम पुरुषा की सख्या 22 है तथा स्त्रियाँ 5 हैं।

विभिन्न वग	कुल व्यक्ति	पुरुष	स्त्री
कुल जन सख्या	5877	3006	2871
साक्षर	1925	1284	641
निरक्षर	3952	1722	2230
अनुसूचित जाति	655	346	309
अनुसूचित जनजाति	15	10	5
काश्तकार	1166	1074	92
अन्य काय	374	354	20
निजा उद्योग	27	22	5

धम—कालू म मुख्यत शव, वष्णव शाक्त (वदिक धर्मी), जन एव मुस्लिम धम के मानन वाले लाग निवास करते हैं। जनियो म अधिकतर जन श्वेताम्बरी है। दिगम्बरी तो आये गये ही होते हैं। स्थानकवासी भी नही है। पहले यहाँ आय समाज और राधा स्वामी मत के लोग (गुरुचरण पटवारी) भी थे। अब आय समाजी ही हैं राधा स्वामी मतावलम्बी नही। यहा इस्लाम धम के अनुयायियो म सिया नहीं केवल

1 रजिस्टर देहात बीकानर पृष्ट 45।
लेखक—चाँदमल बँडक नग्किं यत्रालय, अजमेर।

सुनी आकर बस है। इस भेद की सख्या ही यहाँ अधिक है जिसकी आबादी पाकिस्तान बनने के पश्चात बढ़ा है।

जातियाँ—इस कस्बे मे ब्राह्मण, जन, जाट, खत्री (वणिया) माहेश्वरी राजपूत, स्वामी, ठाकुर, चारण, बरागी नाई खाती नाथ गोसाई, सुनार, सुथार, सेवग, भाट कुम्हार, भाटिया, लुहार माली मोची, जोतकी, दर्जी गाईवा, रगर, छीपा, गवारिया, बावरी जाति और हरिजनो म मेघवाल, नायक सांसी, मेहतर आदि जातियाँ हैं। मुस्लमानो मे तली, बिसायती ढाटी, धावी, फकीर रगरेज काजी, कुजडा वगरह जातियाँ हैं।

कालू मे पारीक सारस्वत खडेलवाल और गुजरगौड चार प्रकार क ब्राह्मण बसते हैं। इनकी अपनी अलग अलग उपजातियाँ हैं। अ य जातिय म सबस अधिक जन एव जाट हैं। मुख्य रूप स कालू म काठारी नाहटा बद बोरड बिरमेचा, साड, मठिया तातड भादानी बाथरा बरटिया सिघी, पुगलिया डागा, दूगड, गोलछा, चौपडा, नवलखा इत्यादि जन (ओसवाल) हैं। ज्यादा यहाँ जाट जाति क ही ठाट बाट हैं। इसम गोदारा नण रूडी मूढ मारण भादू डोगवाल कसवा, लघा, ज्याणा, जाखड़, सियाग, तड, चिटाना कुण्डलिया पाडाण, भादू बुरडक बाजिया गीला आदि गाव के वासिन्दगान है। जाखू मया माखू अर राम नाम की कतिपय जाट जातियाँ यहाँ से बाहर जा चुकी है। माहेश्वरी यहाँ के रहन वाल ह। उनकी झवर, ढूढाणी, राठी कर्वा बागडी, करनाणी मोहता मूधडा आदि उपजातियाँ यहा निवासित है। डागा लखोटिया और मनिहार अब कालू म नही रहे। राजपूतो म यहा क रावजीक पुराने सरदार हैं। चारणो म बारहट और बरागियो म कालरा ढारा मढ स्वामीता, सारण, गोदारा आदि उपजातिया है। नाई जाति म मुख्य डेरवाल और फूलभाटी हैं। अन्य एक दो और उपजाति भी अब यहाँ आ बसी है। गुसाई पुरी और सुनार केवल कडोल उपजाति के ही यहा बसते ह।

मुख्य धधे—कालू ग्राम क लाग अधिकतर खेती का धधा करन वाले हैं। वे साथ म पशुपालन का पेशा भी चलात हैं। बनी क साथ जातीय पशा करने वाल लाग भी यहाँ हैं। इनके अतिरिक्त कुछ लाग यापार स सलग्न है। अ य लाग नौकरी दस्तकारी, मजदूरी तथा लन दन म निर्वाह करत हैं। यहाँ के मुस्लमान चज माट और चूने सुर्खी का काम करते है इराक गा जात हैं। साधारण लाग इनके कमठाण या भट्ठा उद्योग पर बारहामास मजदूरी करत रहते हैं।

कालू की लोक सस्कृति—कालू की सस्कृति इस गाँव की साधारण जनता पर आधारित है जो यहा के खेतो खानो लेन देन एव पशुपालनादि म व्यस्त मस्त रहती आई है। यहा की सस्कृति मे भारतीय लाक जीवन क उन्मादन पाय जात है। व प्रजा के स्थानीय आचार विचारो म दृष्टिगोचर होत ह। इस निराली सस्कृति का श्रेष्ठता मे कालू के मानव समाज का बल प्राप्त होना है और उसकी जिदगी की निमलता निखरती है। क्योकि सस्कृति जाति की सब से महान एव प्रिय निधि होती है।

यह गाव राजस्थान प्रदश का अभिन्न अग है। यहाँ के लाग अ य स्थानो मे

राजस्थानी कहलाते हैं। अत राजस्थान की तरह कालू गाव के भी अपन कुछ विशिष्ट गुण हैं। राजस्थान की सस्कृति ही कालू की सस्कृति हैं और उससे भी यथापयुक्त इतिहास म महिमा सवद्धि हाती है। यहाँ क लाग सदव त्याग वलिदान वाली भावनाआ म राजस्थान के गौरव का हृदयस्थ रखते है। इसलिए कालू म होन वाली देव पूजा व्रत-अनुष्ठान मले मगरिय तथा पर्वोत्सव आदि सास्कृतिक विकास के नमून ह। य सभी तत्व एक दूसर से जुडे हुए अपनी प्राचीन एव धार्मिक विभि नताए लिए चलते हैं।[1]

कालू म वेदो पुराणा के वर्णित देवी देवताआ के अलावा बहुत से लोक देवता भी पूज जात ह। इनक नाम लिय जा रह ह, जा कालू की पूजा प्र ण प्रजा की देव श्रद्धा के परिचायक है। सूय, शिव, शक्ति सती विनायक शनिश्चर आदि वदिक पौराणिक एव लोक देवता ह तथा श्रीराम कृष्ण अवतार रूप म पूजे जाते है। यहा यक्ष नाग पितर भोमिये तथा पाबू रामदेव गोगा केसरा कँवर, बभूताजी, बाबा हरिराम आदि प्राचीन अर्वाचीन लाकवीर एव पीरस्वरूप पूजमान ह। यहाँ गाँवा की काकड (सीमा) और चौराहे भी पूजे जात है। माय घरों के काम लगाई जाती है।

वास्तव मे कालू की सस्कृति लाकधर्मी एव मगलकारिणी है। मुस्लिम लोग भी अपनी धम सस्कृति का श्रद्धा म मशगूल है। कालू के जन मन द्वारा वतमान म पुरानी सस्कृति की धराशी पर नव्य सस्कृति का बिल्डिंग बनाई जा रही ह। इसम स्वत त्रता समता मानवता एव राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक सौ दर्यानद की सुविधाए होगी। कि तु कालू म सामाजिक कुरूपता, विविधता आर नीराशा की बहुलता बिल्कुल नही रहगी। जन सामा य सास्कृतिक मग रास्त से सत्य शिव सु दरम की आर जायेगा। आज तक की सस्कृति मानवता का प्रतिनिधित्व करने म कदापि समथ नही थी अब उसके द्वारा लोकहिताथ का पूण प्रतिनिधित्व हागा। अतएव कालू खेडे की वाछें खिल रही है और सुखानद के साथ इच्छापूर्ति हो रही हैं, क्योंकि नई सस्कृति गुलाब के पुष्प क समान अपनी महक और मधुरिमा सहित विकसित विखरित है।

कालू के रीति रिवाज एव विश्वास—कालू अपन अनोखे रीति रिवाजो धार्मिक अनुष्ठानों, अध विश्वासो टोन टोटको एव अ य प्रथाआ स श्रृखलित ग्राम है जो युगो से उनके क्रिया व्यापारा सहित विमल वास स्थापित है। श्रावण मास तक वर्षा म विलम्ब होता देखकर गाव कालू के मुखिय अपन ग्राम के प्रति घर से कुछ राशि एकत्रित करके कालिकाजा के मदिर म हवन करवात हैं और महामारी आदि के प्रकोप पर गाव के चारा ओर कालिकाजा के नाम की अखड कार (कच्चे दूध और जल की रेखा) लगवाते हैं। य द्रव काय कालू म पीढिया स होत आय हैं और आज भी गाव प्रतिनिधिया का परम्परा म उक्त कार्यो का करवाने म कतिपय सज्जन पूण समथ हैं। कभी कभी गाय भसादि पशुआ के महुवाव (एक पशु राग) या खुरसाण के राग सवत्र फल जाते हैं तब उनके समूह बावत किसी साधु सेवडे से डोरा जत्र तथा टूणा टसमण करवाया जाता है। वह स्याणा व्यक्ति, शनिवार का आधी रात का नग्न तन श्मशानों म जाकर अधजला बास ले आता है। उसका नील डारे (सूत) और एक ढकणा से सलग्न करक

1 क्योंकि बीकानर मडल की सीमा से सटनी हुई भारत की पुनीत प्राचीन सरस्वती नदी के किनारो पर ऋषियो न वेद मत्रा के उच्चारण किय थ।

गाव किनारे की चौडी गली पर ग्राम द्वार पर की भांति लटका देते है। रोग शांति के लिए गाव के सारे पशु उसके नीचे से निकाले जाते है। उस रोज दही मथना चक्की पीसना और पाठे (गोबर) उठाना आदि काम बंद रखे जाते हैं। इस बधी (हड़ताल) के लिए पहले दिन संध्या गाव में हेला (उच्च स्वर आवाज) करवाया जाता है। हमारे गाव कालू मे यह मफल कृत्य आज से पचालीस वर्ष पहले श्री गणेशलाल यति द्वारा होता था। आजकल के लोग इससे पूर्ण विज नहीं है। लेकिन गायों वाले रोग के लिए पशुओं के झुंड मे बंदूक चलाकर रोग शांति चाहने का विश्वास अभी तक प्रचलित है। पशुओं के छोटे बछडो और टोडियो को नजर सुरक्षित रखने के लिए कालू में उनके परो में नीले टारे बाधे जाते है। यदि कोई भैस या गाय दो बछडा को एक साथ जन्म दे देती है तो उसे ज्योतिषी को दान कर दी जाती है। किसी बछडे बछडी के छत पर चढ जाने पर भी उसे ज्योतिषी को अनाज आदि वस्तुओं के साथ दान करना पडता है।

रीति रिवाज इस गाव के लोगों का गहना है। इसकी सबसे बडी विशेषता यह है कि यहा के लोग विवाह शादियों और औसर मोसर में खब खचते हैं। नारमारिणी नाम से यहा सारे गाव को बडे बडे मृत्यु भोज होते आए है और ब्रह्मपुरी अथात छ यात (छ व जाति के ब्राह्मणों का भोजन पान) अब तक चलता है।[1] कोई भी सपन्न व्यक्ति अपने बुजुर्ग पुरुष तथा स्त्री की मृत्यु पर कालू के सब वग ब्राह्मण वैरागी सवग नाथ जोनकी जोगी आदि जातियों के तमाम परिवारों को बारहवें दिन अपने घर भोजन करवाता है। हालांकि बीकानेर राज्य मे औसर रोकने को नियमित करने का बीकानेर औसर (मृतक भोज) प्रतिबंध बिल (अधिनियम) सन 1946 मे लागू है।[2] लेकिन उसकी पाबदी म तीजो, बारहवा, छमासी, गंगेडा, चहरलम आदि नामों से अब भी कालू म छ यात ब्रह्मभोज होता है। यह पारम्परिक रूढि है जो बिरादरी म ऊँचा नाम करने का महत्व रखती है। ऐसे अनेक लोक विश्वासी अनुष्ठान तथा धन पशु एव खेतीबाडी आदि में टोना टमणा यहा प्रचलित हैं। किन्तु नई चेतना आने के कारण कालिका मंदिर म दी जाने वाली पशु बलि एक दशक से बिलकुल बद है। डाकण स्याणी भूत प्रेत तथा देवताओं के परचे (आदेश) करने वाले पुजारी पडो की भी (एक दो पक्षी के सिवाय) कमी आ गई है। मृतक के परिवार से बारहवें दिन दादे (पडित) को नई खाट पर मिष्ठ मोवडियो म सुलाकर हिलाते (झुलाते) हुए गाय भैंस टोडिये बासन कपडे धन धान्य आदि अपने स्वर्गीय जन को मिल जाने के विश्वास पर देते है और दादे के मुँह में माठा दे देकर पूछते हैं— दादा सोरो क दोरो ?' दादा खाट आदि सहित सब धन माल प्राप्त करता हुआ कहता है — सोरो ! सोरो। तब उसको छिड़े देन छाडते। ऐसी ऐसी अनेक प्रथाएं कालू म अब नाममात्र की रही हैं।

---

1 श्रीतिलोकचद करनाणी (पुत्र श्री नानरामजी) करीब तीन दशाब्दियों से बरेली म बस गया है। किन्तु गत वर्ष उसकी बडिया का देहावसान हो गया था। तब करनाणी ने पूर्वजो के ग्राम धाम कालू आकर के बडे ठाट बाट मिष्ठान्न से ब्रह्मपुरी की ऐसा सुना है।

2 बिल न० 4 सन 1946 ई० बीकानेर संविधान निर्मात्री सभा (धर्मशाला)।

कालू के बुजुर्गों की पुण्य प्रवृति और परम्परा—आदरणीय ऋषि मुनियों ने लाखों वर्षों की तपस्या साधना और ज्ञान विज्ञान के परिणाम से जो बातें लिखी हैं वे बिल्कुल सत्य हैं। उनके लिये कठिन परीक्षित अनुभवों को आजकल के अन्य लोग कपोल कल्पित गप्पें बताकर अपनी नासमझी का परिचय देते हैं। मगर कालू में हमने अपने बुजुर्गों को सवेरे मावे उठते ही इश प्रार्थना और घर्ती धावे करते देखा है—

ईश्वर प्रार्थना[1] और माला—मन्त्रों की संख्या की पूर्ति निश्चित रूप से माला द्वारा हो जाती है। सत्वगुण प्रधान भगवान राम, कृष्ण विष्णु आदि की सात्विक निष्काम भाव से उपासना के लिए सात्विक त्रिदोष नाशक तुलसीजी की माला का विधान किया गया है तथा राजस सकाम भाव से विघ्न रहित कार्य की सिद्धि के लिए विघ्नानाशक विनायक गणेशजी की उपासना के लिए राजस हरिद्रा की माला का विधान है। तामस अपवित्र भाव से शत्रुमारण आदि तमोगुणी निन्द्य कार्य में निमित्त तथा तामस भूत प्रेत आदि की उपासना के लिए तामस अपवित्र सर्प की अस्थि की माला का विधान किया गया है। इसके अतिरिक्त जिस देवता को जो पदार्थ प्रिय है, उसी की माला बनाने तथा पूजन में उसका प्रयोग करने का विधान किया गया है।

मध्यमा अंगुली से माला—मध्यमा अंगुली का हृदय नाड़ी से सम्बन्ध है अतः हृदयस्थ ईश्वर को प्रभावित करने के लिए मध्यमा अंगुली से जप करने का विधान किया गया है। ताड़ना कार्य में प्रयुक्त होने वाली अंगुष्ठ के पास की तर्जनी अंगुली से शत्रु-पीडन आदि तमोगुणी कार्यों के लिए जप का विधान किया गया है।

108 मणिका—27 नक्षत्रों की एक माला है इसलिए छोटी माला (सुमिरनी) में 27 मणिका रखते हैं। 27 नक्षत्र चारों दिशाओं में एक सुमेरु पर्वत के सहारे घूमते है, अतः 27×4=108 मणिकाओं की हमारी माला भी एक सुमेरु रूप बड़ी मणिका के सहारे घूमती है। सुमेरु पर्वत अनुल्लंघनीय है इसीलिए जप करते समय माला के सुमेरु का भी उल्लंघन नहीं करते।

ब्रह्म शब्द में ब र् ह् म य चार अक्षर हैं। क से ब तक 23 अक्षर होते हैं एवं क से र तक 27 और क से ह् तक 33 तथा क से म तक 25 अक्षर होते हैं। इस प्रकार 23+27+33+25=108 अक्षर ब्रह्म शब्द में प्रविष्ट हैं। ऐसे ब्रह्म की प्राप्ति में सहायक होने से माला में 108 मणिकाएं रखते हैं तथा महापुरुषों के लिए श्री 108 लिखते हैं।

कल्याणाधार से—(वर्ष 55 अंक 11, नवम्बर 1981)

भगवान के 108 नामों की माला—

राग काफी—कहां कहि तोहिं पुकारू करतार हमारे।
नाम अनन्त अन्त नहिं जाको बहुगुण रूप तिहारे ॥

1 अजर 2 अमर 3 अविगत 4 अविनाशी 5 अलख 6 निरंजन 7 स्वामी।
8 पुरुष पुरातन 9 पुरुषोत्तम 10 प्रभु 11 पूरण अन्तरयामी ॥ 1
12 कृष्ण 13 कन्हैया 14 विष्णु 15 नारायण 16 ज्योति रूप 17 विधाता।
18 अपरम्पार 19 मुकुन्द 20 मुरारी 21 दीनबन्धु 22 व्रजनाथा ॥ 2

---

1 भाख फाटी, ताल टाटी, जागी जीया जूण, दे चतरभुज चूण।

23 यादवपनि 24 जगदीश 25 चतुर्भुज 26 निभय 27 सबप्रकाशी ।
28 पारब्रह्म 29 प्राणनका दाता 30 सबठा घट घट वाशी ॥ 3
31 निर्विकार 32 परमेश्वर 33 गिरिधर 34 माधव 35 गोविंद प्यारा ।
36 कमलनन 37 ब्रह्म 38 मधुसूदन 39 मवम 40 मबसे यारा ॥ 4
41 हृषीकेश 42 मुरलीधर 43 मोहन 44 ॐ 45 अखिल 46 अयोनी ।
47 भगवत 48 वसुदेव 49 भगवाना 50 ज्ञानी 51 ध्यानी 52 मौनी ॥ 5
53 दीनानाथ 54 गोपाल 55 हरी 56 हर 57 गरुडध्वज 58 घनश्याम ।
59 भक्तवछल 60 अरू देवकीनदन 61 करता मब विधिकाम ॥ 6
62 आदि प्रधान 63 माधुरी मूर्ति 64 धरणीधर 65 बलवीरा ।
66 नन्दनंदन 67 अरू यदुनन्दन 68 सुन्दर श्याम शरीरा ॥ 7
69 परशुराम 70 नरसिंह 71 विश्वभर 72 अचल 73 अखण्ड 74 अरूपी ।
75 ईश 76 अगोचर 77 और जगतगुरु 78 परमानद 79 बहुरूपी ॥ 8
80 करूणामय 81 कल्याण 82 अनंता 83 दयासिंधु 84 वनवारी ।
85 धारणशखचक्र 86 रुक्मणि पति 87 आनदकन्द 88 बिहारी ॥ 9
89 परमदयाल 90 मनोहर 91 नरहरि 92 कृपानिधि 93 फलदाता ।
94 कसनिकन्दन 95 रावणगजन 96 जगपति 97 लक्ष्मीनाथा ॥ 10
98 जगन्नाथ 99 अरू बद्रीनाथा 100 निर्गुण 101 सरगुणधारी ।
102 दामोदर 103 रघुवर 104 सीतापति रामा 105 कुंज बिहारी ॥ 11
106 दुष्टदलन 107 संतन को रक्षक 108 सकल सृष्टि को सार ।
दुख हरण के कौतुक अनगिन शेष पार नहिं पार ॥ 12
सौ अरू आठ नाम की माला, जो नर मुख उच्चार ।
अपने कुल की सारी पीढी एक रू सौ को तार ॥ 13
गुरु शुकदेव मंत्र निज दीन्हो राम नाम तत सार ।
चरणदास निश्चय सो जप करि उनरो भव जल पार ॥ 14
(श्री गुरु भक्ति प्रकाश)

धरती धोक-- धरती माता तू बडी तमू बडो न कोय ।
उठ सवार पग धरा पाप मिटाओ मोय ॥

प्राचीन शिक्षानुसार वे पूर्वज बिस्तर छोडने से पहले पृथ्वी प्रणाम गुणगान करना जानते थे । फिर सृष्टि सचालक जगनियता जगदीश्वर का स्मरण करके अपने कर्त्तव्य चिन्तन से प्रथम शुभ दर्शन करते थे। वे देव चित्र दर्पण पुष्पमाला, चन्दन चिटकी चावल एव अन्य किसी उज्ज्वल पदार्थ को अपनी दैनिक सफलता तथा दीर्घायु हेतु देखते । शुभ काम की प्राप्ति के लिए गाय सफेद वस्त्र और घृत के दर्शन भी अच्छे समझते थे । कई लोग यहाँ अभी प्रातः दूसरों का मुह देखने से पहले अपने हाथों का दर्शन करते हुए शास्त्रोक्त श्लोक बोलते हैं—

कराग्रे वसते लक्ष्मी कर मध्ये सरस्वती ।
कर मूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम् ॥

किन्तु बांझ, कृपण, पापी काना, अन्धा जन्मांध, नंगा, नकटा, सूअर, गधा, कौआ, बिल्ली[1] इत्यादि प्राणियों को प्रातःकाल देखना यहाँ अशुभ माना जाता है। शुभ कार्य के समय सब लोग इनसे बचकर निकलना चाहते हैं—

काणो कुचड़ड़ा, कायरा, ना छाती पर बाळ।
दुर्लिणियो तिण बुरा, पण दीफ्यारा टाळ॥

आपसी अभिवादन—पारागमन के समय यहाँ के वृद्धजन, बालकों को आशीर्वाद देते हैं— 'राजा रवो, हजारी ऊमर होवो, कोड़ दीवाली राज करो आन्दा-बूढ़ा होवगा बस्व नीव जड़ा हावो' आदि अनेक सुवाक्य कहते हैं। मेहमान आपस में प्रातःकालीन अभिवादन करते हैं और ब्राह्मण ब्राह्मण से नमस्कार। राजपूत आपस में मिलते हैं तब—जय रघुनाथजी की माहेश्वरी महाजन जय गोपालजी की एवं बैरागी, बैरागी (धन्नावंशी) जय ठाकुरजी की करते हैं। चारण जय माताजी की, ओसवाल जय जिनेन्द्र-जी की, अक्सरों से जयरामजी की तथा अन्य अधिकतर सभी आपसी राम राम करते हैं। पहले राजा महाराजाओं से प्रजाजन 'घणी खम्मा' करते थे। आसपास में सिलाम और जुहार तथा राजपूतों में मुजराभिवादन अभी चलता है। बानू में आजकल हाथ मिलाकर जयहिन्द करने का रिवाज उन्नतिपर है। गांव का सामूहिक आदर अभिवादन "राम राम"[2] होली और दीवाली के दूसरे रोज हर व्यक्ति एक दूसरे से पावन पर्व के रूप में अवश्य करता है। यहाँ के जैनी अपनी सम्वत्सरी (महावीर वार्षिकी) के दिन प्रत्येक व्यक्ति से गत वर्ष की भूल चूक हेतु क्षमा याचना करते हैं और अपने गुरुओं से वंदना करते हैं। राम स्नेही साधु— "जय सियाराम!" नाथ पंथी "आदेश! आदेश!" और कई मत— "नमो नारायण!" के अभिवादन में श्रद्धा रखते हैं। मुसलमान सलामे वालेकुम की खातिर में उसका उल्टा शब्द वालेकुम सलाम बोलते हैं। कुछ लोग अन्य लोगों से सान्य सलाम करते हैं। बानू के ढाली गांव के हिन्दू समाज के (जो उनके यजमान हैं) 'मुजराज' करते हैं। वर्तमान में यहाँ कई सिक्ख समाज के लोग भी आकर बस गए हैं। उनका आपसी अभिवादन—"सतश्री अकाल!" है। बालकों में "टाटा" अभिवादन चल आया है।

---

1 परन्तु सफेद बिल्ली को देखना यहाँ शुभ माना जाता है। जैसे—
फलस अरड पिछोकड़ पोली केंकरली बिल्ली धोली ?
गरघर बिछाये सूती नार लच्छण अैक, कुलच्छण च्यार॥
(घर के दरवाजे पर अरड व घर के पिछवाड़े में प्रोल होने का दुष्प्रभाव, घर में सफेद बिल्ली के होने से शुभ प्रभाव बन जाता है। किन्तु घर की मालकिन लहंगा बिछाकर बेखबर सोयी रहे तो शुभ की प्रतीक सफेद बिल्ली क्या कर सकता है?)

2 होली दीवाली के दूसरे दिन गांव के चौधरी और मुखिये पहले पहल गढ मिलने (राम राम करने) जाते थे। वे मंदिर उपासरे भी अवश्य जाते। वहाँ धोक अभिवादन के बाद रुपया या नारियल चढाया करते। चौधरियों की भेंट एक रुपया होती और अन्य किसानों की मतीरादि। गढ और उपासरे वाले भी कालीमिरच मिश्री तथा इलायची से उन लोगों की मनुहार किया करते थे। अब ये सब रिवाज, नेगाचार, नस्तनाबूद है।

कालू का अपना एक रोग—मानव जीवन से संबंधित अनेक प्रकार के रोग होते हैं। स्वभावमिलन अनुसार उनमें से कोई न कोई एक मनुष्य शरीर में पनप जाता है। प्राचीन समय में कतिपय राजरोग (बड़े रोग) अपने भयावने रूप में प्रकट हुआ करते थे। 'राजयक्ष्मा' तो उस समय रोग सम्राट कहलाता था। किन्तु कालू का यह ऐतिहासिक रोग इन सबसे बड़ा विचित्र अलबेला एवं आधुनिक विकसित रोग है। यह यहां के बेकार तथा निरुद्यमी हथाई के रूप में टाडा (मैदान) मस्ती लेने वाले लोक जीवन में रमा हुआ है। अकर्मण्य, गप्पलालुपता एवं अत्यधिक आलस्य के लक्षणों से विभूषित घर का धंधा उजाड़कर और परिवार का संगठन बिगाड़कर भूख प्यास से बेपरवाह पीड़ित रहकर कालू के कई बिन गुण बड़े लोग, रात दिन बाजार मध्य टाडामस्ती की व्याधि में टहलते हैं। आयुर्वेद में एक कहावत है—'राम बाण दवा क्या है?' उत्तर—'किसी भी धंधे से, उचित रीति से धन कमाना, क्योंकि ईमानदारी पूर्वक धन कमाने से चित्त स्थिर रहता है तथा उत्साह और आयु की वृद्धि होती है।'[1] परन्तु कालू के इन कतिपय निठल्ले घुमक्कड़ रोगियों पर यह राम बाण दवा कदापि असर नहीं करती। अत एव यह गांव का गरीबी संवर्द्धक एवं संक्रामक महारोग है।

यह गांव जो अभी कृषि के क्षेत्र में अग्रणी नहीं है और रोजगार नहीं के समान है। जनसाधारण की स्थिति उत्तरोत्तर दुर्बल होकर बिगड़ती जा रही है। ऐसे समय में उद्यम ही सुख लाभदायक हो सकता है। जलविहीन भूमि और प्रायः हर दूसरे साल दुर्भिक्ष की स्थिति आ जाने के कारण पशुओं के लिए घास एवं पाला भी नहीं मिलता जबकि यहाँ के निठल्ले नर अपनी लापरवाही में रहकर सुभिक्ष के समय उक्त चीजों का साज (संग्रह) नहीं कर पाते। सुकालिक वर्ष में मजदूरी चढ़ाकर कहते हैं—"पालो पोसावै नहीं।" अत एव कालू में किसी एक अच्छे उद्योग की बड़ी आवश्यकता है। आशा है उसकी पूर्ति हेतु हजारों व्यक्तियों के लिए रोजगार प्रदायक एक संस्थान की स्थापना करके किसी योग्य व्यक्ति द्वारा कालू की बेकारी का रोग मिटाया जा सकेगा, तब रोग की जड़ कटेगी।

वेशभूषा और आभूषण—यहां के पुरुष निवासी अंगरखा कार धोती, पगड़ी, साफा टोपी, टोप पहनने वाले थे पहने दगली बुगतरी अंगरखी[2] आडणिया कुडतो, खलको, मेखलिया चालिया बगुला आदि वस्त्र सब जगह चलन थे। बड़े बड़े लटके पालड़ी-काछड़ी पहनाते थे।

महाभारत काल में पुरुष अपने शीश पर उष्णीश (पगड़ा) बांधते थे।[3] मध्य काल में यह शूर वीरों की मस्तक रक्षा का लोकप्रिय साधन थी। इसके बाद तो पगड़ी के अनेक नाम प्रचलित हुए हैं। यह बड़े आदमी के सिर पर पाघ नाम से सम्मानित होती थी, वैसे ही छोटे बच्चों के मस्तक पर मनोहर मोलियो[4] कहलाती थी। मोलिया

---

1 वैद्य पंचानन श्री हरिदास—स्वास्थ्य रक्षा 263 (परमोपयोगी शिक्षा।)

2 कालू में गट्टाली अंगरखी बनाने में टीकाराम दर्जी दूर दूर तक प्रसिद्ध था। यह गुलाबिया रंग कर तीज को पहनाया करते थे।

3 भारतीय चिन्तन का इतिहास (रमेशचन्द्र शर्मा) पृष्ठ 72

4 बायरा रे धीमो मधरो बाज, चढत जवाई री भीज मैंमन्द मोळिया। रा० लोक गीत (ल० कु० चूंडावत) पृ० 79 (मोळिया पगड़ी और मैंमद आभूषण)

दो रगा की लहरा युक्त किशोर शीन नोभा का रूप हुआ करता था। राजस्थानी में मेंहमद मोलिये और पचरग पेचे क, बडा चाव था। पेचा या चीरा जवानों की पगडियों के नाम बोले जाते थे। साफा दुमाला, अथवा फेंटा राजपूता का मस्तक वस्त्र था। किसान लोग अपन सिर पर पानिया बाधा करते थे। राजाओ की पोशाक म खिडकिया पाघ का उल्लेख भा मिलता है। बीन या राजा तथा धनवाना की पाघ पर सोन का सरपेच सेली, तुर्रा कलगी अथवा सेहरे बाधने का रिवाज था। अपने-अपन क्षेत्रा तथा रजवाडों की पृथक-पृथक पगडिया हुआ करती थी। बीकानेर की फौज के साफा की मूठ दाहिनी तरफ होती, किन्तु जयपुर की फौज का साफा बायी और मूठ रखकर बाधा जाता था। अन्य लोग जरीदार गोल पेच लगाकर साफा या पागडी बाधा करते थे।

गोल साफा व बाले सावलो



स्व० वद्य कालू राम



स्व० बालू राम

कालू के युवक पहने विभिन्न बधेज वाली पगडिया रखते थे। इनमे चूनडी मोठडे एव लहरिये के बधेज और अभरकी मलमल (376) तथा मनीपुरा पाघें अमीरा क सिर हुआ करती एव केसरिया कसूमल रगों की पाघें विवाहादि शुभ अवसरों म श्रेष्ठमानी जाती थी।[1] धनुष बाण और सोनिया मोनिया की रगाई दो या तीन रगा से उपयुक्त हुआ करती थी। अतिरिक्त इनके तरगुलाबी गुलेनार तोता फूना निम्बूशाही, मनागरी निणिया मलयागिरी तेलिया मलागरी वोनलिया सिन्दूरिया सन्दरफी चम्पा केशर सरबती, किसमिस कमेडिया राख रावली आदि अनेक रग हुआ करते थे। लेखक के बडे भाई साहब स्व० श्री बालूरामजी सस्कर्ता सरबतिया मोतिया चदणिया कपूरिया और मनागरी आदि सोफानी रगों की पगडिया का नित्य नवीन वेश भूषा के ढग से काम लाया करते और व अपनी पाघ के पेच स्वय लगाते थे।[2]

---

1 केशरिया कसूमल राजा राठोडा न साहैजी
भगवा तो सोहे सिध नाथा न। (नोव धमाल)

2 वे पाघ मे मोघटा या अन्य कपडे की गाल गेंद सी बना कर सुन्दर पाघ बाधते थ। गाव महाजन म लकडी की लघु खूटियाँ और अन्य कपडे या कागज की टोपी दिया करते थे।

वि० स० 1984 म श्री गिरधारीलालजी छावर की बरात कालू से गाव मूडवा (मरवाड) गई थी। तब बरात विदाई के समय बरातियो को विभिन्न रगो की विशिष्ट 551 पाघें उनकी पसद मुजब "सीख स्वरूप' भेंट की गई थी। विवाह मे वर का पाग बाधन का नेग दिया जाया करता था। विवाह ही नही पति की लाश के अभाव मे मृतका महाराजाओ की पत्निया उनकी पाघ के साथ सती हो जाती थी। मिलना, शोक भजन तथा अन्य सात सबध के समय पाचो पोशाक मे पगडी का स्थान सब प्रथम माना जाता था। प्राचीन समय म पगडी ही पुरानी वेश भूषा का एक मानवीय अग थी।

पाघ सचलन



स्व० साधू राम नाहटा



सजनकार स्वय

सुश्रुत मे लिखा है—

> त्राणवार मृजावण तजावल विवद्धनम।
> पवित्रम् कश्यमुष्णीष वातात पर जापहम॥

(पगडी सिर को चोट स बचाती है साफ रखती है और मल नही भरन देती। वण तेज और बल बढाती है। त्वाली को भी पवित्र एव हितकारी है। वायु धूप और धूल से मस्तक की रक्षा करती है।) इज्जत रखन क लिए मर्द की मर्यादा एव मरदानगी का प्रतीक पागडी समझी जाती। किसी भी शूरवीर के सामने मर्द की पगडी या औरत का आचल आ जाता तो वह वार नहीं करता। विवाह के समय वर या वधू के सिर झोल डालत समय उसके नातेर लोग पागडी का एक पेच खोलते थे। कालू म अब भी कालिका दर्शन के समय भक्त लोग पागडी उतार कर सिर नवाते हैं। किन्तु इस नवयुग के लोग कहते हैं — 'पागडी जाओ आगडी सिर सलामत चाय' यह कहावत कालू के बुजुर्गों को मान्य नही है। क्योंकि पहले सुने सिर रहना खनगार एव अभद्र व्यवहार माना जाता था। पुराने आदमी यह कोट म जाते तो सुने सिर जाना मनाई थी। अफसर और राज्य कर्मचारी कभी भी सुने सिर नही रहते। त्यौहार या उत्सव के समय तो सारे लोग रग रगीले पचे पागडी या साफे स सजते थे।[1] उदयपुर क

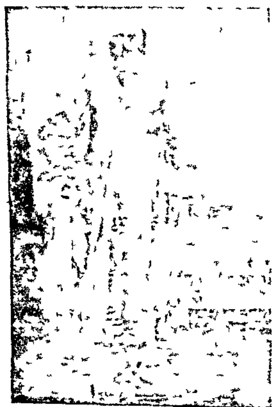
---

1 सावण आया सायबा बांधा पाग सुरग।
घर उठा राजस करा हरिया उर तुरग॥'

महाराणा साफा नहीं पागड़ी बाधन थे । हमारे यहाँ महाजन के राजाओं की पाग्टी दाढ़ी दूर-दूर तक प्रसिद्ध थी । गाव महाजन मे पागडी के बाधने वाले कई मानीत लोग भी रहते थे । कालू म 'मूँछ पागडा" रखना सदव इज्जत का कहते हैं । श्री अ-नव्यास की कगरिया पगड़ी बनी रह" कविता कल तक कालू के कई लाग गाते थे । लेकिन अब समयानुसार लोग खुला सिर रखने लग हैं तथा बुशट पायजामा पहनत हैं ।

गहनों म पहने पुरुष पैरा म कड़े, नेंगर और तानी रखते थे । काना म बाल सावली, मुरकी बिरबली कानर, गुडगा मातीचारटा तथा ऊपर म मामा-मुरकी पहनते थे । उस भँवरिया भी कहत थे । गले म गोपे हारा कठी और हाथा म कड़े बणत तथा टड्डे पहनत थे । दाँतों म सोन की मख (चूप) लगात थ । मगर अब लोग अगूठी, घड़ा सूत आदि का साधारण शौक रखत है ।

दाढ़ी का महत्व



← कनल राव बहादुर राजा हरिसिंह जी महाजन



स्व० जमनाराम जी कर्दा कालू ↓

यहाँ आग [illegible] पर्वों व आगतों पर मानन (ज्यादा [illegible]) के लिए खाट [illegible] हुआ करता था । शरीर पर ओढ़ने वाले कपड़ा म गेगले, [illegible] दुपट्टे, [illegible] (बालरा क) बनात, धुधा दुशाले, [illegible] [illegible] आदि सब प्रसिद्ध वस्त्र होते थे । आसन गद्दा, [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] किये न [illegible] के काम आया करते थे । [illegible] [illegible] [illegible] करना [illegible] [illegible] गुवारा था । [illegible] [illegible] मन्दिरों म [illegible] [illegible]

करती थी। अत रग उनके गीता म गाया जाता था। एक आढना नामक गान गीत देखें—

> झाणी झीणा आढनी म गारा गोरा गाल
> बादल वरणी आढनी र लाल।
> आद ना ही आदनी म राद ली हा गाल,
> बादल वरणी आढनी र लाल।।"

राजस्थानी लोक संस्कृति की पाच पोशाक म जूती के जोडे का भी बडा महत्व माना गया है। दवता का ब्राह्मण तथा किसी सुहासणे को पोशाक दत तब जूतो का जोडा भी साथ दिया जाता था। प्राचीन समय म इसे खल्लक भा कहा जाता। खूमडा सेटर जोटी माचटी जरवा लिगतर पगरखा आदि इसी के नाम हैं। बींद की जूती को जोडी कहा जाता था। अंवड तथा गाय भम्यादि के गुवाले अपनी जूतिया क नीचे लुहार म लाह की एडिया (खडताल) लगवाया करत थे।

स्त्रिया की पोशाक म घाघरा[1] पीजरिया घावलिया तथा लावडी चूदडी ओढना पाता जोधपरी, धनस (लहगा पामचा) आदि पोशाकें जनसाधारण की थी। लहगा चोली दुपट्टा, कब्जा काचली एव कपडा म मारकीन छीट, अतलस आदि ऊँचे घरो की पोशाकें थी। गावा के जाट परिवारो म लडकी की वैवाहिक पोशाक बुगिया स्याडती होती थी। अगिया एव कचुकी प्राचीन महिला वस्त्रा म सवमा य थी। आज स्त्रिया पटीकाट साडिया, ब्लॉउज पहनती ह तथा घाघरा व ओढना चूनडी और साटू को अधिक पसद नही करती हैं। जच्चा बच्चे के नामकरण सस्कार पर पीला ओढती ह। मुसलमान औरतें चुस्त पायजामा, लम्बा कुरता तथा ऊपर चु नी एव आढना पहनती है।

स्त्रिया पहले कडला पाती साटी आवला नवरी ताती आदि गहन परो म पहनती थी। हाथा म हथफूना बेर (बडी अगूठी) बाजूबद टड्डे बगडी नामक गहने रखती थी। गल म मोहनमाला हसली हमेल, आड कठा तिलडी, तीमणिया गलसरी तखती मादलिया चान्दर गलपटिया कठी, धुकधुकी तेवटो ठुसी इत्यादि के गहने पहने जात थे। मैंमद फाणी रखडी माथ पर बोर टीका कानो मे कनफूल, सुरलिया, झूंटणा कनौता बूजली, पगा की अगुलिया मे नखतिये आदि पहनने पर औरत नख-शिख श्रृगार मे सुसज्जित होती थी। दाता म चूप और नाक म लोग शालीन गहने मान जाते थ। आजकल युग परिवतन क साथ साथ स्त्रियो म गहना का चाव और उनके डिजाइन म क्रान्तिकारी परिवतन हुआ है। स्त्रिया चूडिया के अलावा टीका काटा पाजेब अगूठी बाले तथा नेकलेस जसे मुख्यत गहना स ही श्रृगार करती हैं?

प्राचीनकाल म यहाँ अनेक प्रकार के महिला भूषण होत थ। ये महाजना तथा अय धनवानो म साने चादी के बनने और साधारण वग म रागे-जसते के गहन भी

---

1 अस्सी कळया रो घाघरो लावण म लुक जाय, छोटो वालमा।

2 ओढनो पर जरी व खरी किनार का काम होता था। साधारण राजपूता दारागो तथा चारणा—नायका की स्त्रिया का पहनावा नीले रग का घाघरा हुआ करता था। ओसवाला म विधवाए कसूमिया रग की लहरी आढती और काले रग की काचली पहना करती थी।

प्रचलित थे। धनवानो के गहने जडाई और मीनेकारी के कार्यों स सुदर बनाये जाते। किन्तु गरीबो के गहनो मे मूगिय, मोती मिणिये और कपड़े की कान्र स भी साज सज्जा हो जाया करती थीं। पर धनवान स्त्री पुरुष पगे म सान क गहन नही पहन मकते। परों मे साना पहनने वाला "साना नरश" कहलाता जो राजा महाराजा की स्वीकृति स खिताब प्राप्त होता या। वरात जस शुभ अवसरो पर जन वाहन जानवरो का भी सुदर वस्त्रा भूषण पहनाये जाते थ।[1]

औरता के अलकार श्रृगार की वस्तुएँ कालू के दिसावरी लाग, सौ साल पहले ही लान वपरान लग गए थे। व पाच पाच सात सात वर्षो की मुसाफिरी करके वापिस घर आते, तब अनक प्रकार की नवीन वस्तुएँ साथ लाया करत थ। एस परदेशी महाजनो क घर आ जाने पर उनकी औरतें प्रात खाट स उठ कर अपने दाँता म कसीस व मस्सी का प्रयाग किया करती थी। स्नान के समय पेई से साबुन की बट्टी निकाल कर लगाती तथा सोडे से कपडे धाया करती थी। सिर गुथवानी तब मण मीढी कढवाती और प्रत्येक दिन सध्या समय वासवाली भी लगाया करती थी। राजवश और धनिक वर्गो की नारिया केश प्रसाधन के लिए सेविकाए रखनी जो केशकारिणी कहलाती थी। भाजनापरात एस बडे घरो की नारिया अपन बटुए स चीकणी सुपारी निकाल कर खाया करती थी। मेहमाना की खातिरदारी के लिए अमीर घरा की औरतें पीपल और अचार भी सग्रह करक रखती थी। बढिया दपण रबट की महान काधमी टीकी दालिय सूरज-चाँद, सलमे सितार ृगिगलू हाथो के लिए मेहदी आँखो का सुरमा, ताणी, आटी खुशबू का तेल इत्र लाल तथा चीढ मोती चन्दण केसर एव आरसी अगूठा इत्यादि क अनुपम कागजोल्लेख साज, लोक सुख विवरण के साथ पाए जाते हैं।

वसे सौभाग्यवती सामा य नारियो के प्राचीन श्रृगार साधना म सिर धान के लिए दही छाछ अरेंठा मेट एव चिटकी का वणन मिलता है। कपडे धोन मे वे सज्जी सोडाक्षार काम लेती, पर शुभ अवसरो, विवाह शादिया एव उसक पुत्र ज म पर पीठा उबटन लगा कर नहान का आम रिवाज था। विशेष श्रृगार वस्तुएँ नववधुएँ अपन पीहर से भी साथ लाया करता थी। जसे घर व्यय क लिए इडढूणी, आगी और आढणे तथा देवर नणदो का भेंट स्वरूप खोपरे तागडी, मोलिया आटलिय काकणिये आदि सुदर चीजें दने की प्रथा थी।

खान-पान—यहाँ का खान पान बाजरे की रोटी और माठ की दाल प्रसिद्ध है। बाजरे का खीचडा मध्या का और डावा गर्मी का भोजन हाता था। कई लाग दूध और बाजरे की रोटी खान का भी वणन करत हैं। गेहूँ की रोटिया और हरी साग-

---

1 ऊँटा, बला, घोडा और हाथियो क वस्त्रा म बढिया झूलें, छेवटी एव पाखर पहनाये जात थ। नेवर नकेल बालिया, हार गौरबद एव चाँदी, सोने के तुर्रे माहर-वलचा आदि म अपने वाहन सजाय जात थे। अमीरा के लिए सोहरी (आरामदायक) तथा तेज चाल के फेरे हुए ऊँट, नाचन वाले घोडे और झूमन वाले हाथी हुआ करते थ। ऊँटा को फूल, बल एव पत्तियें कढा कर रतराया करत थे।

2 भारताय चिन्तन का इतिहास—ले० रमेशचन्द्र पृ० 72

सब्जियों का प्रचलन अब बहुतायत से हो गया है। घी, दूध दही और छाछ राबड़ी यहाँ से अब बिल्कुल लुप्त होने लगी हैं। पहले दूध और पूत बेचने वाले की उपेक्षा की जाती थी। लेकिन अब दूध का व्यापार धड़ल्ले से होता है।

उत्सवों त्यौहारों और विवाह शादियों में जन साधारण के यहाँ चावल लापसी तथा हलवा बनाया जाता। मध्यमवर्ग में आजकल हलुवे की जगह विशेष रूप से बूंदी (नुक्ती) एवं अन्य मिठाइयां भी बनने लगी हैं। गांव के धनी वर्ग का खान पान शहरी खान पान के समान है तथा इस वर्ग की विवाह शादियों में भी सभी प्रकार के मिष्ठान्न बनाये जाते हैं। पहले मेवे की खीचड़ी में चावलों में अधिक मेवा (नोजे पिस्ते और बादाम के गोटे) डाला जाता था। मिठाइयों में बढ़िया केसर तथा चांदी के वर्क का प्रयोग अधिक था। दाल के हलुवे और पायस तस्मी (खीर) में भी पर्याप्त मेवा दिया जाता था। आजकल नाम मेवे की खीचड़ी और हाल हैं केवल डालडा मीजित पीले चावल! पच्चास साल पहले यहाँ किसी के घर एक जंवाई आ जाता तो मन (क्विटल) पक्के आटे मे बढ़िया घी का हलुवा बनाया जाता और सारे परिवार तथा पड़ौस के बच्चे वगैरह साथ खाना खाते। कानिवाजी की कढ़ाई (प्रसाद) करते तब ही इस तरह से बड़ा भोज्य का आयोजन रखते थे। सगे सबंधियों के साथ विवाह शादियों में भोजन करने पर आपस में कोइया (ग्रास) बदलने की प्रथा यहां बड़ी सुन्दर एवं स्नेहमयी थी। भोजन के पश्चात पान सुपारी, लौंग, इलायची की मनुहार करने का रिवाज था।[1]

मेहमान—विशेष कर जवाई को पान चबाने देते तब साथ में रुपया भी दिया जाता था। उसके लिए घेवर, कसार, मालपूए, लाडू जलेबी तलवो चूरमो दूध पेड़े दाल बाटी सईं सातू नवकरपारे सुहाल केरिया फलिया पापड़ी सलोनी वगना दाल तथा भांति भांति के मिष्ठान्न व नमकीन घन तेल तर करके बनाये जाते थे।

कानू गांव के लोगों में पहले मुख्यतः मोठ और बाजरे का ही चाव प्रचलन था। यहाँ के लोग गेहूं से तो परिचित मात्र ही थे उसके स्वाद से बिल्कुल अनभिज्ञ होते थे। गेहूँ की रोटी के लिए लोग बाग बड़े लालायित रहते थे। बेचारे एक भोले बच्चे को कहीं गेहूँ का एक दाना मिल गया। उसे लेकर वह दौड़ा दौड़ा घर आया और अपनी पितृवनी बड़ी (बड़िया) से कहने लगा— बडी अे बडी! ले गिहूँ खाले भाई (शिशु) ने दूध आसी।' इसी प्रकार एक बूढ़ी चमारी—बड़ी चौधरी के घर छाछ लेने गई। चौधरी के छोटे लड़के को रेलणती बाजरी के साथ आया हुआ गेहूँ का एक दाना मिल गया। भागकर बड़ी के पास गया और कहने लगा— बडी गिहूँ अे! गिहू! चमारी बडी बोली— बेटा तेरे गिहूँ रो नादीद है बडी तो आपरी ऊमर में गिहूँ बिरिया तीन चसकाया है।" (बेटे गेहूँ का आश्चर्य तेरे है बड़िया ने तो अपनी जिन्दगी में तीन बार गेहूँ खाये हैं।) बच्चे ने पूछा— तीन बिरिया कद अे बडी? बडी— एकर

---

1. मेहमान के लिए हुक्का चिलम चड़स भांग गांजा और अमल मनुहार की भी प्रथा था।
2. रेल प्रचलन के बाद कोटकपूरा, कसूर आदि स्थानों से बाजरा लाकर व्यापारी बेचते। उसे रेलणनी कहते थे।

तो बनाळ मे दूज हथनावण मे, तीज तेरै बापग ब्याह मे।" फिर कहावत चली—

मास्टर ही चोखा गेहूँ खाव।"

इसी तरह एक चौधरी के घर खाती काम कर रहा था। दोपहर मे वह खाना खाने बठा ना चौधरानी न पहले उसकी थाली मे दो गेहूँ की रोटी, शक्कर-घी के साथ परोस दी। चौधरा क छोटे बच्चे ने कारीगर के लिए परोसी गई थाली मे गेहूँ की रोटिया पर ताक (दृष्टि) लगाली। थाली खाती के सामने धरी गई और खाती खाने म पहले अपने हाथ धान लगा। इस समय चौधरी वाला लडका परोसी हुई उस थाली से झपटकर गेहूँ वाली रोटियाँ लेकर दे गया तेतीसा (भाग गया)। आ जावे! ओ जावे! दाँता से तोडता खाता हुआ घर से बाहर दूर तक भाग गया। पर वतमान (स० 2036-37) के मजदूरो न काम के बदले अनाज', मे गेहुओ से घर भर लिए हैं। किन्तु

घाचा लागे घाव घी गहूँ भाव घणा।
अडा तो उमराव राटया मूघा राजिया॥

फल और सब्जिया—फला म बडे बडे भात भतीले मतीरे काकडिये होते हैं। यहा की रागजड के मतीर बडे मीठे और स्वास्थ्यकर माने जात। इनमे भूरा, पट्ठाला सीवाला मूनपट्टा और आल नाम के मतीरे बहुत मीठे होते। इसके खान से आनद तथा रस की प्राप्ति होती। यह जीवनदायी सजल[1]फल प्रत्येक रोग का नाशक तथा अद्वितीय द्रव्य क समान है। वतमान समय मे मतीरे के बीज भी बडे उपयोगी होने जा रहे हैं। बादाम, काजू, पिस्ता की कमी महगाई म विवाहोत्सव पर मतीरे के बीजा की मिगी (गोटो) से बरफी (कतलिया) बनाई जाती हैं। पसारी इनको ठडाई म मिलाकर बेचते हैं। पहले यहाँ हरा फल (मतीरे) बेचना पाप समझते थे। अब इनका खूब व्यापार होता है।

सब्जियाँ—करडो व बचरिया (काकडिये और काचर) की सब्जी बडी स्वादिष्ट होती हैं। मोठ और ग्वार की फलिया भी सब्जी के काम आती हैं। इनकी काचर-काकडिये के साथ मिलाकर भी सब्जी बनाई जाती हैं। केरिये और सागरी यहा की अचार सामग्री है। काळू मे खुम्बी या फुम्बी का स्वत पदा होन वाला पौधा सब्जी के काम लिया जाता है। यह पौष्टिक खाद्य पदाथ कुकुरमुत्ता भी कहलाता है। इसमे प्रोटीन, खनिज और विटामिन जसे पौष्टिक तत्व काफी मात्रा म पाये जाते हैं। काळू मे धीप तथा खीप की फलिया की भी सब्जी बनाई जाती है। यहा ग्वार पाठे का साग तो बडा लाभकारी एव गुणकारी माना जाता है। पत्ता के साग चौलाई, सूआ पालक, पानमेथी के होन हैं। व मूली, बैगन कूमडा और सौगरी के साग भी होते हैं। यहा पर खेलरी पापलिया गाटके कावन काचरी और छोनेडी के सूखे साग होते हैं। बडी, पापड व मोगर भुजिया के सम्माननीय अन्न के साग बनाय जाते हैं। काळू म छाछेनो आलणियो, सिराबडा तथा बडी चटणी की भी सब्जी स्वरूप काम म लेते हैं। यहाँ का जन साधारण काचर की चटणी (मिच के साथ काचर निचाडना) एव मतीरे की गिरी (गुदे) को भी सब्जीरूप मिश्रण कर राटी खा लेते हैं।

द्वितीय प्रकरण

लोक रजण एव लोक मगल

भाषा साहित्य और सस्थाए—यहाँ की मातृभाषा उत्तरी पश्चिमी राजस्थानी है, जा इस प्रदेश म मुख्यत बाली जाती है। इसका वधानिक रूप स तो प्रा तीय भाषा का पद प्राप्त हो चुका है परन्तु सवतोरूपेण व्यवहार म अभी कुछ विलम्ब का अनुमान लगाया जाता है। अभी हमारी मातृभाषा राजस्थानी का वाछित स्वरूप और पद मिलने म लोभ और अकमण्यताओं की अनेक बाधाएँ हैं। क्षेत्र के पढे लिखे लोग साहित्य-सस्कृति की बातें हिन्दी मे करते है तथा धनिक वग भी जन सामान्य के समक्ष हिन्दी बालकर अपनी विशेषता जतलाता है। किन्तु यहाँ की मातृभाषा सरल एव सुन्दर है। इसका शब्द भण्डार बहुत बडा है। भाषा मे दोहरे शब्दो का अधिक प्रचलन है, जो कि भाषा को रोचकता प्रदान करते हैं। नमूने स्वरूप कालू क्षेत्र मे प्रचलित कुछ दोहरे शब्द प्रस्तुत हैं —

अखर—वखर	आका—बाका	ओल—छान
अगळ—टगळ	आधो—परधो	अग—भा
अवार—क्वार	आव—जाव	अ—हू
अरू—बरू	इज्ज—बिज्ज	कळ—कब्जा
अलग—थलग	इन—बिन	कण—कतीण
आळा—मोरी	उकळ—चुकळ	कस्सी—कुवाडा
अरस—परस	उठा—बठा	काळी—काझी
अळसा—मळमा	उठावो—पटको	काई—किसी
अलड—पलड	उगळ—मुगळ	काठ—पील
अळया—सळयो	ऊँचा—नीचा	काठा—माठो
अळा—थळा	ऊदड—गूदड	कारा—कुटको
अलाय—बलाय	ऊँधा—पाधरा	कार—जार
अळी—सळी	ऊल—फल	कास—फिकर
अल्लै—पल्ल	अेड—छेड	कुत्ता—बिल्ला
अस्त—व्यस्त	अेकलो—दोकला	कारु—कमीण
आई—गई	अेक—मेक	खरच—वरच
आळो - भोळो	अेढो—टामळो	खल्ला—खूसडा
आट—साट	अळ—डळ	खाड—खापरा
आलो—दोलो	अरा—बरा	खाडा—चोरा
आकळ—व्याकळ	ओर—छार	खाटो—मीठो
आडा—अूभो	आर—धार	खाणा—दाणो
आटा—टन्रो	आछा—लामा	खुलक—मुलक

पाळयो—पोस्यो
पान—फूल
पाणी—लूणी
पाणी—पाणी
पाती—पोठी
पूर—पल्लो
पला—दूजा
पलो—पापी
फाग—गाग
फूस—फरटो
फागलो—फूस
फाग—ढरी
बारा—बाट
बूठ—बडेरो
बूढो—ठेरो
बाणियो—बक्काल
बठा—सुता
ब्याह—मावो
वर—विराध
बूजो—बाठ
भला—बुरा
भणाई—गुणाई
भूख—प्यास
भाव—भगती
भूत—पलीत
भूल्या—भटक्यो
मरण—परण
माचा—डलो

माण—ताण
मीठो—चीठो
मौज—मस्ती
यारी—दोस्ती
याग—याग
रावळ—विरावळ
राबडी—रेळो
रण—कणण
रिपिया—पीसो
राना—तना
रोटी—राजी
गेग—दोख
गई—मीरी
रणक—थुणक
रोब—दाब
रिगत—भिछा
रोही—गहमो
लक्कड—वगड
लडाई—झगडो
लाट—घाट
लिया—दिया
लावा—दूता
लागो—दोखो
लूण—लखण
लचर—पचर
लूखो—लाणा
लसग—पसर
मिला—भिटो

साग—पात
साठ—गाठ
साधो—बूधो
सिवळ—भिवळ
सिरख—पथरणा
सीरो—पूडी
साधा—फिरोळो
सूरज—चांद
मुणी—अणसुणी
सेठ—साहूकार
सतरो—बतरो
माचा—विचारा
सूई—सडी
सौ—पचास
हावया—दावयो
हट्टो—कट्टा
रोळा—वधा
हबो—रबी
हाती—पोळी
हाल—बेहाल
हाथे—बाथे
हाथ—पग
हडक—फडक
हाया—पायो
हेळ—मळ
होको—चिलम
वत्तो—कमत्ती
वास्ते—बोभर

कालू में घर गृहस्थी के विशषण और साधारण शब्द—

घर—देवता रम जिसा। नर—देवता। पूत—सुलखणा। नारी—लिछमी। कयाएँ—चिडकोली। नीर—गगाजल। गाय—सुरधेन। ऊँट—उडणी जहाज। भस—हथणी सी। बीज बरमोला सा। खपरी—कचोळा सी। जळ—सरवत सो। गिरी—मिसरी सी। काकडिया—मतोला सा। जनता—कीडी नाठ। राजा—द्वितीय भगवान। राजगत—रामगत। तगत—सा मेंगत। सत्तामद—तद्राभास।

रग—लालचुट। लाल—कुरळ, लाल—चिरमी सो। काळा—टीट। काळो—कुट, काळो—जुरळ। धोळा—फट, धोळो—धप। मूगो—छम। हरयो—कच। पीळी—पेवडी पीळा—केसर। गोरा—गुट। लामो—लडछ। ओछा—गटमीगणा। रोटी—फलका सा लडछता। साग—सिफाया रो सा। राबडी—खार सी। छाछ—

वादी सी, डोको रोप जिसी दही—भाठो सो। घी—तेरवो रतन। बाजरी—पीतल सी। तेल—क्लाधार। मेवो—काचर बोर। चारो—मैंहदी सो।

कालू क्षेत्र के जन जीवन मे प्रचलित लोकोक्तियाँ—राजस्थानी की लोकोक्तियाँ यथार्थ जीवन से जुडी हुई वे उक्तिया हैं, जो मानव जाति के विकास के साथ विकसित होती चल रही हैं। लोकोक्तियों मे सामाजिक और लौकिक सत्य प्रकट होता है तथा व मानव के काय कलापा के प्रति व्यग मुखरित करती है। लोकोक्तिया लोक जीवन मे अधिक प्रचलित हैं तथा बडे ही सु दर ढग से और सफलतापूवक प्रयोग म लाई जाती है। उन बोलचाल की भाषा म प्रयुक्त होन वाली कुछ लोकोक्तिया निम्नलिखित है—

सीटी क बाधना (वद्ध या बीमार के साथ कन्या का विवाह कर दना), कब्र म पग पसारणा (मृत्यु के पास पहुँच जाना), सिर खुसना (विधवा हो जाना) मद भाग (वधन्य) तीजी ईस हाना (अतिम श्वास लेना) पग भारू हाना (गभ रहना), पेट म गादडा बडना (मदेह हो जाना) टाग ऊपर रखना (अपनी बात न छोडना) आढणियो नाखणो (स्त्री का पुनर्विवाह) दातो में लावण लिए फिरना (मोहताज बनना), पूठ देना (दगा देना) खाड खाना (धून खाना) धूड रा सिनान (झूठा झगडा) काठ री हाडी (धोखेबाजी), खाडे री धार (मुश्किल बात) कान रा कच्चा (शीघ्र बात मानन वाला), कर रो खूटा (मजबूत मनुष्य) काचर रो बीज (धूत व झगडालू), गादड बमकी (झूठी डरावनी) ठग नक्डी (झूठ कपट), भेटा चाल (दखा देखी), कदार काकण (ढोग), बूराडो मतीरा (गुणवान व्यक्ति) फूटो ढोल (डफोल सख), उठाऊ चूल्हा (घरबार), काचा चावल (कच्चा बात), पाको पान (वद्ध मनुष्य), गाजरवाली पूगी (दोना ओर का फायदा) अखत रो बीज (कुछ नही) घेण रा दाणा (कृपण का धन), बन बन रो काठ (जगह जगह के व्यक्ति), ढाड रो डोको (बड का भय), नाज रा कीडा (ज्यादा खाने वाला), बूर रा लाडू (निस्सार चीज) पोपा बाई रा राज (अनियमित काय) हमीर हठ (पक्का प्रण), बूडेजी हाळी चाकरी (बिना लेन देन का काय) कु भकणवाली नीद (अधिक आलस्य), पुटियाळा पग (अनीति करना), योरी वाळा यूक (जबरन लडाई लेना) मू छ वाळो चावळ (झूठा अभिमान), कुत्त हाळा नारळ (बकार वस्तु), कू जड रो गल्ला (बिना हिसाब किताब का व्यापार), पीम रा पूत (कजूस) छावड हो जाना (अधिक प्रसन्न होना), काळजरी कोर (प्रिय), डोका नीरणा (व्यथ की बडाई)।

प्राचीन समय मे कालू के लागो मे मनुष्य क सुखा क बार म इस प्रकार की धारणा थी, भाषा देखें —

पलो सुख निरोगी काया,
दूजो सुख घर म माया,
तीजो सुख पतिव्रता नारी,
चौथो सुख पुत्र आग्याकारी
पाचवो सुख नीर निवासा
छठा सुख राज म पासा
सातवा सुख स्वग म वासा ॥[1]

---

1 सात सुखा की तरह आठ दुख—पहला दुख हाथ साकडा दूजो दुख बरी वाकडा तीजो दुख पाडोमी चोर, चौथा दुख घर म अडवोर पाचवो दुख कन्या कु वारी छठा दुख पुत्र जुआरी सातवो दुख परायो जोखो आठवा दुख हाथ म होवा।

लेकिन युग परिवतन के साथ यहा के लागा की उपरोक्त सुखों के प्रति मान्यताए तथा धारणाए बदल गई हैं जो व्यग म अब इस प्रकार बतलाई जाती है।

पला सुख टोपरी धोळी
दूजो सुख पगरखी काळी
तीजो सुख हाथ मे झोळा,
चौथो सुख राज म रोळी,
पाँचवो सुख जनता भोळी
छठो सुख नार अडोळी,
सातवो सुख गुडा री टाळी।

राजस्थानी साहित्य—काळू सस्कृति की विशेषता है कि यहा की भाषा म हार्दिकता, सरलता तथा तरलता है और यहाँ की बनी हुई मकडी की सख्या में सूक्ति, मुक्तावलियाँ परम्परित रूप से जन कण्ठ पर चलती आ रही हैं। अत काळू को मैं तो राजस्थानी लोक साहित्य का शब्द भडार ही कहूँगा। यहाँ राजस्थानी भाषा की अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं। ई० सन 1946 काळू मे कळायण नामक पुस्तक बीकानेर महाराजकुमार श्री अमरसिहजी को भेंट की गई। कवि सस्कर्ता को राज्य सनद और पुरस्कार मिले। उक्त अभिनव काव्य (कळायण) को प्रो० श्री नरोत्तमदासजी स्वामी न राजस्थानी साहित्य की अमर वस्तु सिद्ध होना बताया है।

"दी कल्चरल हैरीटेज ऑफ इडिया' नामक अग्रेजी पुस्तक म राजस्थानी साहित्य के खण्ड में कळायण की समीक्षा म उसे राजस्थानी साहित्य की उच्च का य कृति लिखा है—

1 Extract from chapter on Rajasthani literaturein—The cultural Heritage of India

Vol VI PT V

NanuRam is a poet of rural nature and village life His Kalayana (Dark Clouds) is a Vivid Picture of Country life of Rajasthan all the year round The poem is a piece of Superior art to be ranked as one of the immortal works of Rajasthani literature

कळायण की समीक्षा, समीक्षक और पत्रिकाएँ—1 शोध पत्रिका उदयपुर आषाढ स० 2006 वि० भाग 2 अक 2—डॉ० पुरुषोत्तम मेनारिया।

2 राजस्थान भारती बीकानेर, अप्रल 1950 भाग 3 अक 2 मुरलीधर व्यास।
3 वरदा बिसाऊ, अक्टूबर 1959 वष 2, अक 4, अर्वाचीन राजस्थानी काव्य —प० श्रीलालजी मिश्र, एम० ए०, बी० टी०।
4 युगा तर—जयपुर, मागशीष, शुक्ल 1 स० 2007 (रविवार 10 दिसम्बर 1950) वष 9, खण्ड 2, अक 8, श्री जवाहिरलाल जन (सम्पादक)

अनेक साहित्यकारो एव विद्वानो ने कळायण पर अपनी प्रशस्तियाँ एव अभिमत प्रेषित किए हैं। अत कतिपय नाम उद्धृत अपेक्षापूर्ति हेतु द्रष्टव्य है—श्री भवरमलजी सिंघी कलकत्ता (ता० 1-12-49) श्री ईश्वरदासजी जालान (स्पीकर पश्चिम बग व्यवस्थापिका सभा ता० 3-12-49 ई०) श्री भूरामलजी अग्रवाल कलकत्ता हाईकोर्ट

(ता० 5 12 1949), श्री रतनलाल जोशी c/o जालान स्मृति भवन 186, चितरंजन एवेन्यु कलकत्ता 7, (ता० 5 12 49), श्री बेणीशंकरजी बी०एल० 2289 चितरंजन एवेन्यु कलकत्ता। श्री रामदेवजी चोखानी, राजस्थानी परिषद् कलकत्ता (ता० 3 12 49) श्री भंवरमल नाहटा (राजस्थानी परिषद् कलकत्ता ता० 1-12 49), श्री अनन्तप्रकाश दीक्षित Lt — Col कूचविहार (ता० 23 12 49) श्री महादेवलाल सुरेका, संपादक— निर्माण" व मंत्री पूर्णिया जिला मारवाड़ी सम्मेलन (कटिहार)।

राष्ट्र कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त, ई० स० 1951, स० 2009

POST CARD
ADDRESS ONLY
INDIA

मैथिलीशरण गुप्त का पोस्टकार्ड।

मैथिलीशरण गुप्त के कार्ड का पता।

श्री भगवतसिंहजी मेहता कमिश्नर बीकानेर ता० 28 3 50
श्री जो० पा० सक्सेना श्री तुलसीराम त्रिवेदी, श्री पुखराज पुरोहित ता 15 1 52
श्रीरामचन्द्र वत्सा इंसपेक्टर ऑफ स्कूल्स् बीकानेर डिवीजन ता० 3 1 53।

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट बीकानेर द्वारा सं० 2006 में कलायन कृति प्रथम बार प्रकाशित हुई थी। साहित्य जगत के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी यह पुस्तक काफी पसंद की गई। राजस्थान विश्वविद्यालय के सैकिंड ईयर एक्जामिनेशन आफ दी थर्ड ईयर हिन्दी साहित्य में सन् 1972 73 से 1976 77 तक (फैकल्टी ऑफ आर्ट्स) हिन्दी प्रथम पेपर पद्य में निरन्तर कलायन के सुन्दर पद्य आते रहे।

SECOND YEAR EXAMINATION OF THE THREE YEAR DEGREE COURSE, 1974

(FACULTY OF ARTS)

HINDI

FIRST PAPER— पद्य

(Also Common for B A Hons Part I)

TIME THREE HOURS

Maximum Marks— 100

१ निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए —

(क) सिपारहिं नृप घरी मैं जानी।
आजु गोविंदहिं देखि देखि हौं इहै समुझि पछितानी ॥
रचि पचि सोचि सँवारि सकल अंग चतुर चतुरई ठानी।
दीठि न दई रोम रोमनि प्रति, इतनिहिं कला नसानी ॥
कहा करौं अति सुख दुई नैना उमगि चलत भरि पानी।
'सूर' सुमेर समाइ कहाँ धौं बुद्धि बासनी पुरानी ॥

अथवा

झिलमिल फूलां मांय, पून महकार उडाव।
मीठो भोजन जीभ जियां भगतो गुण गाव ॥
कुरु बलायण लोर, झिलोरां बादल झुरता।
मुडता टीबा मांय, भोम सूं बाता करता ॥
धनख बाण नभ ताण बालका हरख बछाव।
पलक-खलक खाल बीज दिन रण बणाव ॥
तावड-छाया तोड जोड झट जाल बणाव।
धरम-बन घर बणा बीज गणा पैराव ॥

(सावण बीकानेर से)

लेखक की राजस्थानी भाषा की दूसरी पुस्तक समय वायरो का प्रकाशन सं० 2009 मे हुआ। समय वायरो की भूमिका डूंगर कालेज बीकानेर के प्राध्यापक श्री मेघराज वर्मा 'मुकुल' ने लिखी। भूमिका म श्री मुकुल ने पुस्तक का एक उत्कृष्ट काव्य रचना बताया है। 'समय वायरो' पुस्तक की समालोचना 'निर्याम' पत्र के सपादक द्वारा की गई, जिसमे समालोचक ने पुस्तक को एक प्रगतिवादी सामाजिक काव्य बताया है। 'साप्ताहिक-ज्वाला' पत्र म भी समय वायरो पुस्तक की समालोचना की गई है जिसम पुस्तक को कवि की साहित्य जगत मे एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बताई है। श्री राहुल सांकृत्यायन, हान क्लिफ हैपीवेली, मसूरी ने लिखा है— समय वायरो'' म सचमुच सीधे हृदय मे चुभ जाने वाली कवि की पंक्तियाँ हैं। नानूरामजी अपनी कविता से मरुवाणी को समृद्ध करें यही मेरी कामना है।' ता० 13 9 54। आधुनिक राजस्थानी साहित्य क

लेखक भूपतिराम साकरिया न 'समय वायरो' को कवि का प्रगतिशील कविताओं का सग्रह बताया है। अलगोजा मे भी इसकी कविता चुनी हुई है।

वालू मे राजस्थानी भाषा की तीसरी पुस्तक 'दस देव' है। दस देव का प्रकाशन सन 1955 ई० मे हुआ। प्रस्तावना म पुरुषोत्तमलाल मेनारिया न कहा है— दस देव रा छन्द राजस्थानी प्रकृति देवी रा स्तोत्र रूप मे अवतरिया है। राजस्थान भारती रै गल मे विराजमान होवण वाली राजस्थानी पुस्तक माला म "दस देव" रो मोती पोवना म्हन घणो हरख है।" राजस्थान भारती के भाग 6 अक 34 जून 1959 मे दस देव की समालोचना करते हुए डॉ० परमेश्वर ने लिखा है— आप राजस्थानी के जान-मान कवि हैं। वालू के वासी होने पर भी आप हृदय के उज्ज्वल और मुँह के मीठे हैं। दसदेव में कवि ने पाँच भूमि देवा की स्तुति गाई है। प्रत्येक देव की अचना मे कवि ने माला गूथी है। देवो के परिचय के लिए सरस्वतीजी बधाई के पात्र है।"

आधुनिक राजस्थानी के कथा साहित्य मे 'म्होयी' का प्रकाशन स० 2014 में हुआ है। म्हायी बीस कहानिया का सुन्दर सग्रह है। म्होयी की भूमिका म श्री अगरचन्द्र शर्मा प्रधानाचाय, भारतीय विद्या मन्दिर बीकानेर ने लिखा है— ये कथाएँ जीवन मे डूबकर लिखी गई हैं। राजस्थानी गद्य मे यह नये मोड का सकेत है।" डॉ० राजेन्द्र-प्रसाद, राष्ट्रपतिभवन नई दिल्ली (9 जून 1957) राहुल साकृत्यायन हान विलफ हैपीवली मसूरी (ता० 22 3 57), मथिलीशरण गुप्त चिरगाव झासी, डा० कन्हैयालाल सहल हिन्दी सस्कृत विभाग बिरला आर्टस कॉलेज पिलानी श्री विद्याधर शास्त्री बीकानेर श्री नरोत्तमदास स्वामी बीकानेर विश्वेश्वरनाथ रेउ महामहोपाध्याय आदि अनेक राजनैतिक व साहित्यिक क्षेत्रों के जान मान विद्वानो न म्होयी पर अपने प्रशस्ति-पत्र एव अभिमत भेजे हैं।

'दसदोख' श्री नानूराम सस्कर्ता की एक सजनात्मक कृति है। इसका प्रकाशन स० 2023 में हुआ है। इसम लेखक ने समाज म व्याप्त दस घातक रूढ़िया के ऊपर करारा व्यग किया है। इसकी भाषा लोचदार एव शली सरल है।

'घर की रेल' लेखक का तीसरा कहानी सग्रह है। इसमें इक्कीस लोककथाओं का सकलन है। 'घर की रेल' का प्रकाशन सन 1969 मे हुआ है। डा० मनोहर शर्मा सपादक वरदा न घर की रेल पुस्तक के बारे मे लिखा है—"लेखक री इ पोथी ने साहित्य जगत मे पूरो सम्मान मिलसी अर,वा री कलम सू इणी भात राजस्थानी साहित्य री श्रीवृद्धि हुवती ई रहसी। श्री सस्कर्ताजी राजस्थानी भाषा रा लूठा कवि अर लेखक तथा लोक साहित्य रा पारखी है।

'घर की गाय' सस्कर्ता की इसी शृखला का चौथा कहानी प्रकाशन है। इसकी पन्द्रह कहानियो म सामाजिक गतिविधियो का यथार्थ चित्रण है। पुस्तक का प्रकाशन सन 1970 मे हुआ है।

'छप्पय सतसई' श्री नानूराम सस्कर्ता की राजस्थानी काव्य कृति है। इसका प्रकाशन सन् 1972 मे हुआ है। 'श्री नरोत्तमदास स्वामी ने छप्पय सतसई के अभिमत मे लिखा है कि—' कवि न राजस्थानी साहित्य भडार को श्रेष्ठ महत्त्वपूर्ण देन दी है।' वनस्थली विद्यापीठ (राजस्थान)।

श्री विद्याधर शास्त्री एम० ए० डाइरेक्टर, हिन्दी विश्वभारती शोध प्रतिष्ठान बीकानेर ने लिखा है—"इस उत्तम संग्रह के सजन के लिए सस्क्ता महोदय सर्वथा प्रशसनीय एव सम्माननीय है।" (28 11 66) श्री शभूदयाल सक्सेना बीकानेर न लिखा है—'श्री नानूराम सस्कर्ता राजस्थानी के सुकवि हैं। इनकी काव्य प्रतिभा किसी भी भाषा के लिए गौरव की वस्तु हो सकती है। राजस्थानी भाषा पर इनका जसा अधिकार है, वसा बहुत कम हो देखने मे आता है। इनके काव्य के हरएक वाक्य म मरुधर की आत्मा का निवास है। मैं व्यक्तिगत रूप से सस्कर्ताजी की काव्य प्रतिभा का कायल हूँ और मुझे उनके काव्य से सदव आकर्षण रहा है। (29 11 66) डा० दशरथ शर्मा जोधपुर ने लिखा है—'श्री नानूराम सस्कर्ता के कवित्व से प्राय सभी राजस्थानी किसी न किसी अश म परिचित हैं। श्री सस्कर्ता का यह काव्य पाठकों के हृदय का अनक्धा मस्क्रतकर उन्हें सभी अवस्थाओ म कर्तव्यनिष्ठ होने की प्रेरणा देता रहेगा।" (दिनाक 11 11 66)

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल वाराणसी न लिखा है— श्रीसस्कर्ता लाक सस्कृति के पुजारी हैं यह जानकर भी बडी प्रसन्नता हुई। इनका छप्पय सतसई म सरसता स्पष्टता तथा मार्मिकता का हार्दिक वर्णन दृष्टिगोचर होता है। मैं ऐसी लोक सास्कृतिक भाषा सर्जना के लिए श्रीसस्कर्ता को धन्यवाद देता हू। (दि० 15 2 65) श्रीचन्द्रदान चारण, एम० ए० साहित्यरत्न प्रिंसिपल, भारतीय विद्या मन्दिर बीकानेर न लिखा है— रस की दृष्टि स यह रचना महत्वपूर्ण ह। इस ग्रथ की एक बहुत बडी विशेषता है इसकी ठेठ राजस्थानी भाषा। छप्पय छद अपनाकर कवि न जो अलकारो से शोभित रचना की है वह भाषा के माधुर्य स बहुत निखर गयी। सचमुच श्रीसस्कर्ता मे महाकवि की प्रतिभा है और मैं तो उनको महाकवि ही मानता ह" (15 8-64)

'साकल सधाण" श्री नानूराम सस्कर्ता की खण्ड काव्य के रूप म राजस्थानी भाषा की एक सुदर काव्य-कृति है। इसका प्रकाशन स० 2030 मे हुआ है। श्री चन्द्रदान चारण प्रिंसिपल भारतीय विद्यामंदिर बीकानेर ने इसकी विशेषता गिनाते हुए बताया है कि—"आ पोथी नतिक भावना सू ओत प्रोत है। इण मे एक तरफ ग्यान अर कर्म रो समन्वय है जो दूजी तरफ श्रम अर उद्योग री महत्ता है। इण म राष्ट्रीय चेतना जगावण री बात है अर भेदभाव र खिलाफ स देस है।' (दि० 2 7 73)

लकाणधणी' श्री नानूराम लेखक की राजस्थानी काव्य कृति है जिसका प्रकाशन सन् 1976 मे हुआ है। श्रीसस्कर्ता को इस पुस्तक पर पद्य वग का राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा सन 1977 78 का दो हजार रुपय का पुरस्कार प्रदान किया गया है। नवभारत टाइम्स नई दिल्ली राजस्थान पत्रिका जयपुर टाइम्स आफ राजस्थान बीकानेर नवजीवन उदयपुर, युगपक्ष बीकानेर शिविरा पत्रिका बीकानेर आदि अनेक पत्र पत्रिकाओ न श्रीसस्कर्ता की पुस्तक लकाणधणी' पुरस्कृत किए जाने पर अपनी प्रशस्ति एव अभिमत प्रकाशित किए तथा बधाई सदेश शुभकामनाओ सहित भिजवाये हैं।

गोपीचन्द' (राजस्थानी खण्ड काव्य) क रचयिता भी कालू के ही श्रीनानूराम सस्कर्ता है। इस का प्रकाशन सन 1977 मे हुआ है। श्री गोपालकृष्ण जोशी, प्रधान सचिव, मादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीटयूट बीकानेर न गोपीचन्द के प्रकाशकीय म लिखा है—"श्रीसस्कर्ता राजस्थानी भाषा साहित्य जगत क जाने माने विद्वान लेखक हैं। इसस पूर्व उनकी अनक पुस्तकें गद्य व पद्य मे प्रकाशित हो चुकी हैं। सस्था उक्त

प्रकाशन पर गर्व का अनुभव करती हैं।" (विजयदशमी, अक्टूबर 21, 1977) डा० हीरालाल माहेश्वरी, एम० ए० एल एल० बी०, डी० फिल० डी० लिट०, प्राध्यापक हिंदी विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर ने लिखा है—'मा० म० श्रीनानूराम संस्कर्ता राजस्थानी के सुपरिचित साहित्यकार और मौन साधक हैं। इनका 'गोपीचन्द' खण्ड काव्य पढ़कर अतीव प्रसन्नता हुई। बोलचाल की प्रवाहमयी राजस्थानी में श्री संस्कर्ता ने एतद् विषयक राजस्थानी काव्यों की परम्परा में एक और मनभावन कड़ी जोड़ी है तदर्थ वे बधाई के पात्र हैं। मैं कवि के चिरायु होने की कामना करता हूँ। (दि० 12 4 75)

'गोपीचन्द' खंड काव्य की समीक्षा में डॉ० श्री कन्हैयालाल शर्मा एम० ए० पी० एच० डी०, साहित्यरत्न, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, श्री डूंगर महाविद्यालय बीकानेर ने लिखा है—' श्री नानूराम संस्कर्ता के 'गोपीचन्द' का कथानक बड़ा ही मर्मस्पर्शी तथा काव्यमय है। जीवन के दोनों छोरों, भोग और योग के मध्य में नवनीत सा कोमल कथानक पाठक को गलदश्रु किये बिना नहीं रह सकता। माता मणावती जब गोपीचन्द को राज्य का परित्याग करने वैराग्य को अपनाने का उपदेश देती है तब कथा के विकास में रोचकता आने लगती है और फलस्वरूप राजा द्वारा विशाल साम्राज्य का परित्याग किये जाने पर कथात्मक आकर्षण चरम सीमा पर पहुँच जाता है। गुरु जालंधर के आदेश से गोपीचन्द का अपनी माता पत्नी और बहिन के पास भिक्षा-याचना के लिए जाना काव्य की दृष्टि से बड़ा करुणापूर्ण प्रसंग है। प्रस्तुत 'गोपीचन्द' काव्य घटना प्रधान न होकर चरित्र प्रधान है। मूलरूप से गोपीचन्द और उसके केन्द्र बिन्दु से अन्यान्य पात्रों के चरित्रों पर प्रकाश कवि का मुख्य लक्ष्य प्रतीत होता है। 'गोपीचन्द' का सारा कथानक भावों से छलछला रहा है। श्री संस्कर्ता जी गोपीचन्द के मार्मिक कथा प्रसंग को लेकर काव्य रचना के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।"

आचार्य श्री परशुरामचतुर्वेदी ने लिखा है—श्रीनानूराम संस्कर्ता का 'गोपीचन्द' खंड काव्य देखा, बड़ी प्रसन्नता हुई। वैराग्य भावना और वैभव त्याग का अनूठा उदाहरण है। मेरी शुभकामना स्वीकारें। परशुरामचतुर्वेदी (3 5-76)

कालू के राजस्थानी साहित्य में श्री नानूराम संस्कर्ता की कुछ अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ भी हैं। पद्य वर्ग में 'स्यामजी दम दात', हरिरस-हजारा', आदि अनेक पाण्डुलिपियां हैं।

गद्य वर्ग में भी दही रोटियां (*बच्चों के निबन्ध*) तथा *ढाई बिग्गा*' (उपन्यास) आदि अनेक पाण्डुलिपियां पड़ी हैं। उपरोक्त पद्य व गद्य वर्ग की अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ भी राजस्थानी साहित्य को कालू की अपूर्व देन है।

कालू में राजस्थानी साहित्य के हिन्दी शोध ग्रंथ—भारत में लोकतन्त्र की स्थापना के साथ ही प्रांतीय सरकारों के आर्थिक सहयोग से साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में भी चेतना की लहर आई। फलस्वरूप सदा से उपेक्षित लोक साहित्य के विकास को बढ़ावा मिला। राजस्थान का प्रांत, लोक साहित्य के क्षेत्र में एक अमूल्य सम्पत्ति का अखूट खजाना है। गांव-गांव और घर घर में राजस्थानी लोक कला और लोक साहित्य की स्पन्दनपूर्ण थाती के दर्शन मिलते हैं। सारे राजस्थान में अनेक विद्वानों ने लोक साहित्य की सतत प्रवाहिनी भाव धारा में अवगाहन करने हेतु पूर्ण योगदान दिया है।

राजस्थान के लोक साहित्य क्षेत्र में श्रीनानूराम संस्कर्ता की 'राजस्थान का लोक साहित्य' पहली पुस्तक है, जिसमें सर्वांगीण रूप से एक साथ सोचने का प्रयास किया है। अब तक राजस्थानी लोक साहित्य की विधाओं पर पृथक पृथक या छुट पुट रूप से अथवा एकाकी अंगों पर पत्र पत्रिकाओं एवं पुस्तकों में लिखा जाता रहा। किन्तु लोक कथा गाथा, लोकगीत, कहावतों, मुहावरों खेलों, बालकों के वाणी विलास, पहेलियों एवं लोकानुरंजन जैसे विषयों पर एक विश्लेषणात्मक पुस्तक का अभाव था। श्रीनानूराम संस्कर्ता के इस प्रयास से निश्चय ही लोक साहित्य के अध्ययन की सीमा में विस्तार आयेगा और इस विषय से सम्बन्धित विभिन्न अंगों का जो पारस्परिक संबंध है उस पर भी राजस्थानी संस्कृति के अध्येताओं का ध्यान आकर्षित होगा।[1]

राजस्थानभारती मार्च 67, भाग 9 अंक 4 सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट बीकानेर में लिखा है—'बीकानेर जिले के ग्राम कालू के निवासी श्रीनानूराम संस्कर्ता को हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग (हिन्दी विश्वविद्यालय) ने उनके शोध प्रबंध 'राजस्थान का लोक साहित्य' पर साहित्यमहोपाध्याय की उपाधि प्रदान की है। यह उपाधि वितरण सुप्रसिद्ध हिन्दी सेवी साहित्यकार सेठ श्री गोविन्ददास मालपाणी संसद् सदस्य द्वारा हाल ही में सम्मेलन' के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर किया गया।

श्री संस्कर्ता ग्राम कालू में वर्षों से अध्यापन कार्य करते आ रहे हैं एवं राजस्थानी साहित्य का सर्जन करते रहते हैं। आपका यह शोध प्रबंध राजस्थान के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

'लोकमत बीकानेर' तथा राजस्थानी वीर 362 बुधवार पृष्ठ पूना 2, (1 मई 1967) आदि अनेक पत्र पत्रिकाओं में भी श्रीनानूराम संस्कर्ता के साहित्य महोपाध्याय' की उपाधि से विभूषित होने का वृतान्त लिखा है। रूपायन संस्थान बोरूंदा की ओर से श्री कोमल कोठारी ने लिखा है—'संस्थान को प्रसन्नता है कि राजस्थान के लोक साहित्य के क्षेत्र में एक नवीन पुस्तक प्रकाशित हो रही है। आशा है कि इस विषय के पाठकों को न केवल लाभ होगा किन्तु वे इस प्रयास के द्वारा अपने भावी कार्यों को अधिक गहराई देने में सफलता प्राप्त करेंगे।" (दि० 5 3 68)[2]

नवभारत टाइम्स नई दिल्ली के अनुशीलन में डॉ० प्रभाकर माचवे ने लिखा है—फिर भी राजस्थान लोक साहित्य नामक इस प्रदेश की संस्कृति की उपलब्धियों के संबंध में भ्रांतियों का कुहासा छाया रहा है। श्री नानूराम संस्कर्ता के इस गवेषणापूर्ण ग्रन्थ से इन भ्रांतियों के निवारण में बड़ी सहायता मिलेगी।

दस अध्यायों में विभक्त इस ग्रंथ में राजस्थानी लोकगीत लोक कथा, लोक कहावतें पहेली बाललोक साहित्य लोकानुरंजन, लोक प्रचलित कुछ तथ्यादि लिखित-अलिखित साहित्य के अंग उपांगों का शोध और विश्लेषण बड़े ही विद्वतापूर्ण ढंग से

1 पुस्तक समीक्षा राजस्थान का लोक साहित्य (कल्याणसिंह)

2 राज्य के शिक्षा विभाग द्वारा संचालित शिक्षकों की विद्वतापूर्ण एवं सर्जनशील कृतियों का प्रकाशित करने की योजना के अन्तर्गत कालू के श्रीनानूराम संस्कर्ता द्वारा रचित 'राजस्थान का लोक साहित्य का प्रकाशन सं० 2024 में रूपायन संस्थान बोरूंदा की ओर से हुआ। (प्रकाशकीय)

किया गया है। इसमे कोई सदेह नही कि साहित्य प्रेमियो और ममज्ञो म इस ग्रथ का समुचित समादर होगा।" (अगस्त 1969)

राजस्थानी लोक साहित्य की पुस्तक समीक्षा म श्री कल्याणसिंह न लिखा है—"श्रीनानूराम संस्कर्ता की पुस्तक का दूसरा श्रेय यह दिया जा सकता है कि इन्होने प्रादेशिक लोक साहित्य की सद्धातिक समस्याओ को विश्वमान्य सिद्धा तो के परिप्रेक्ष्य म प्रस्तुत किया है। भारत के कुछ विश्वविद्यालयो ने लोक वार्ता (फोकलोर) विषय को स्नातक एव स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम म स्वीकार किया है। राजस्थान के जोधपुर विश्वविद्यालय ने हिन्दी एव समाजशास्त्र विषय के साथ लोक वार्ता का एक प्रश्न पत्र जोड दिया है। संस्कर्ता की कृति इस नए अध्ययन एव विषय क्षेत्र मे भी उपयोगी भाग अदा कर सकेगी।" (रा पत्रिका)

शिविरा पत्रिका बीकानेर के राजस्थानी साहित्य स्तम्भ म डा० श्रीमती सुशीला गुप्ता न लिखा है—"साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा साहित्य महामहोपाध्याय की उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध प्रबध कई दृष्टियो से महत्वपूर्ण ह। इसक प्रणेता नानूराम संस्कर्ता न अपने अथक अध्यवसाय से मनोयोग से इस शोध ग्रथ का प्रणयन किया है। संस्कर्ता जो राजस्थानी के जाने माने कलाकार हैं।" प्रस्तुत शोध प्रबन्ध राजस्थानी लोक साहित्य की दिशा मे प्रथम प्रयास है। इसलिए इस ग्रन्थ का महत्त्व और भी बढ गया है।

लोक साहित्य एक अथाह समुद्र की भाति अपने अन्तर मे असख्य भाति भाति के मुक्ताओ को छिपाए हुए है जिसका मन्थन करके उसमे स मोती निकालकर लाने का काय एक सफल गोताखोर ही कर सकता है। संस्कर्ताजी एक सफल गोताखोर है जो समुद्र की अतल गहराई म पहुँचकर लहरो के थपेडो मे न खाकर बल्कि उन म से अमूल्य मोतियों को चुनकर निकाल लाए। भारत के उप प्रधानमत्री व वित्तमत्री श्री मोरारजी देसाई ने भारत नई दिल्ली, 30 जून 1969 को लिखा है—"लेखक न अपने इस शोध



उप-प्रधानमंत्री व वित्त मन्त्री
भारत

नयी दिल्ली
३० जून १९६९

श्री नानूराम संस्कर्ता द्वारा रचित राजस्थान का लोक साहित्य नामक पुस्तक मुझे पढ़ने को मिली। मैंने पुस्तक के कुछ अंशों को सरसरी तौर पर देखा है। लेखक ने अपने इस शोध-प्रबन्ध में राजस्थानी लोक-साहित्य के विभिन्न पक्षों पर उपादेय सामग्री प्रस्तुत की है। लेखक का प्रयास सराहनीय है।

आशा है पुस्तक राजस्थानी साहित्य के विद्यार्थियों और अध्यापकों और अन्य जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

मोरारजी देसाई
(मोरारजी देसाई)

प्रबंध म राजस्थानी लाक साहित्य के विभिन्न पक्षा पर उपादेय सामग्री प्रस्तुत की है। लेखक का प्रयास सराहनीय है।' आशा है, पुस्तक राजस्थानी साहित्य के विद्यार्थियों, शोध कर्त्ताओं और अन्य जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

श्री रामेश्वर टाटिया ने लिखा है—"श्री नानूराम संस्कर्ता की इस पुस्तक म राजस्थानी लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं की रोचक सामग्री संग्रहित है।" (दि० 12 10 70 कानपुर) श्री मातृकाप्रसाद कोइराला 'मानीड' विराटनगर (मोरंग) नेपाल ने कहा है—"राजस्थान का लोक साहित्य का प्रकाशन राजस्थानी साहित्य मे प्रशंसनीय अभिवृद्धि है।" (दि० 15 9 68)

श्री भागीरथ कानोडिया, इण्डिया एक्सचेंज यन्त प्लेस कलकत्ता 1 ने लिखा है— राजस्थानी भाषा को समृद्ध करने का श्री नानूरामजी संस्कर्ता का प्रयास स्तुत्य है। मैं उनकी सफलता चाहता हूँ।" (दि० 9 10 68)

नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष 72 स० 2024 अंक 1 4 काशी नागरी प्रचारिणी सभा के श्रद्धांजलि अंक मे पृ० 543 मे लिखा है— साहित्यमहोपाध्याय श्री नानूरामजी संस्कर्ता का यह प्रयास प्रशंसा योग्य है क्योंकि राजस्थान के अप्रसिद्ध ग्रामीण अचलो मे बैठकर उत्तम पुस्तकालयो आदि साधन विहीन एवं विकटतम महंगी की परिस्थिति मे यह एक सामान्य शिक्षक का ध्येयनिष्ठा अथवा तपस्या का मधुर फल है। यह ग्रंथ लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति के प्रेमियों के लिए संग्रह करने योग्य है।'

कालू म राजस्थानी साहित्य के शोध ग्रंथ लिखने वालो मे दूसरा नाम श्री किरण नाहटा का है। राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर ने उनके शोध ग्रंथ आधुनिक राजस्थानी साहित्य प्रेरणा स्रोत और प्रवृत्तियां" पर डा०' की उपाधि प्रदान की है। इस ग्रंथ का प्रकाशन सन 1974 म हुआ है। डा० किरण नाहटा सन 1969 मे राजस्थान विश्वविद्यालय से एम० ए० (हिन्दी) उत्तीर्ण करके वहीं से रिसर्च स्कॉलरशिप लेन लगे। इन चार वर्षों म शोध ग्रंथ लिखकर श्री नाहटा न सन 1972 मे समर्पित कर दिया। जिस की डिग्री सन 1973 म मिली। आधुनिक राजस्थानी साहित्य प्रेरणा स्रोत और प्रवृत्तियां' राजस्थानी साहित्य म विवेचनात्मक एव समालोचनात्मक दृष्टि की प्रधानता के कारण महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है।

यह शोध प्रबंध पाच खण्डा क बीस अध्याया म विभक्त किया गया है। प्रथम खण्ड विषय प्रवेश' से सबंधित है। द्वितीय खण्ड प्रेरणा स्रोत' म आधुनिक राजस्थानी साहित्य के काल क्रम क सम्बन्ध म विस्तार स विचार किया गया है। तृतीय खण्ड म गद्य साहित्य की प्रवृत्तियां पर विस्तार से उल्लेख है। चतुर्थ खण्ड पद्य साहित्य की प्रवृत्तियां मे प्रारम्भ मे प्राचीन राजस्थानी पद्य साहित्य की सामान्य विशेषताओं का संक्षेप म परिचय दिया गया है और अन्त मे आधुनिक राजस्थानी पद्य साहित्य सामान्य विशेषताओं की चर्चा की गई है। पंचम खण्ड उपसंहार उपलब्धियां एव मूल्यांकन स संबंधित है। इसमे आधुनिक राजस्थानी साहित्य की उपलब्धियो पर सामान्य रूप मे विचार करते हुए चार पांच वर्षों के साहित्यिक एवं साहित्येतर परिवर्तनों के परिप्रेक्ष्य म उनके संभावित गति क्रम पर विचार किया गया है।

आधुनिक राजस्थानी साहित्य प्रेरणा-स्रोत और प्रवृत्तियां डा० नरेन्द्र भानावत

के निर्देशन म श्री किरण नाहटा का प्रस्तुत शोध प्रबन्ध आधुनिक राजस्थानी साहित्य की अध्ययन परम्परा मे एक सराहनीय प्रयास ह ।

कालू मे अन्य लघु शोध प्रबन्ध

(क) श्री श्यामसुन्दर स्वामी एम ए (अथशास्त्र), एम एस सी (गणित) एव बी एड ने इस कालू ग्राम के विशेष सदभ मे सामाजिक एव आर्थिक सर्वेक्षण ' शीर्षक से एक लघु शोध प्रबन्ध लिखा, जो एम ए (उत्तरार्द्ध) अथशास्त्र 1976 की परीक्षा सम्बन्धी अपेक्षाओं की पूर्ति के अन्तगत राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर को समर्पित किया गया है ।

यह प्रबन्ध प्रो० श्री जी सी आचाय एम ए (अथशास्त्र—समाजशास्त्र), व्याख्याता, स्नातकोत्तर, अथशास्त्र विभाग श्री डूगरमहाविद्यालय बीकानेर द्वारा प्रमाणित किया गया है ।

इसम (1) परिचयात्मक (2) गाव का सामान्य प्रारूप (3) जनसख्या (4) कृषि (5) पशुपालन (6) पारिवारिक एव कुटीर उद्योग (7) व्यापार एव वाणिज्य (8) वित्त एव वित्तीय स्रोत (9) स्वास्थ्य एव परिवार नियोजन (10) सामाजिक स्तर (11) सारांश, निष्कर्ष एव सुझाव इत्यादि नामो के एकादश अध्यायो म इस सम्पूर्ण किया है । गाव कालू के लिए अध्यापक श्री स्वामी का यह सुकार्य श्लाघनीय है ।

(ख) कालू क प्रबुद्ध निवासी डॉ० श्री बद्रीनारायण रमन एम डी न ' हारमोनल इफक्टस ऑन दी डयूमस्टीक पटन इन दी पालीमार्फ फोयूक्लीयर ल्यूकोसाइटस इन रबीन्स" शीर्षक से एक लघु शोध प्रबन्ध लिखा जो डॉक्टर ऑफ मेडीसीन (फिजीओलाजी) की डिग्री 1969 की परीक्षा सबधी अपेक्षाओ की पूर्ति के अन्तगत राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर को समर्पित किया गया है ।

यह प्रबन्ध या वो मश्रय बी एस सी एम बी बी एस एम एस प्रोफेसर एण्ड हड ऑफ दी डिपार्टमेन्ट ऑफ फिजीओलाजी एण्ड बायोकेमस्ट्री, सरदार पटल मेडिकल कॉलेज बीकानेर द्वारा प्रमाणित किया गया है ।

शोध प्रबन्ध का (1) इन्ट्राडक्शन (2) रिव्यू आफ लिटरेचर (3) मटिरियल एण्ड मथड (4) ऑब्जरवेशन (5) रिजल्टस (6) डिसायूशन (7) कानोक्लूजनस (8) समरी (9) बाइबलीओग्राफी के नामो से नो अध्यायो तथा चौवन पृष्ठो मे इसे सपूर्ण किया है । श्री रमन का यह काय उल्लखनीय है ।

श्री जोराराम गिया और डा० अमोलख गोलछा न भी अपन अपन विषयो म एस लघु शोध प्रबन्ध लिख हैं, ऐसा उन्होंने बताया है ।

कालू मे हिन्दी साहित्य—कालू के हिन्दी साहित्य के इतिहास म श्रामस्वरूप क बटाऊ नामक प्रथम खण्ड काव्य का प्रकाशन स० 2010 मे हुआ । बटाऊ म कवि ने अपने गाव क एक व्यक्ति की जीवन कहानी से प्रेरणा पाई है । समस्त काव्य मे एक छन्द का प्रयोग किया गया है ।

राजस्थान भारती बीकानेर, श्री सादूल राजस्थानी रिसच इस्टीटयूट बीकानेर के समालोचना अश मे लिखा है— बटाऊ कवि की हिन्दी में प्रथम कृति एव सफल प्रयास है । बटाऊ का विषय महान है ।" (दि० 1 12 59)

मास्वाहित ज्वाला क साहित्य सत्कार है लिखा है— वटाग्नी एव करुण रस काव्य है। भाई बहिन के प्रेम सूत्र पर निभर यह काव्य हिन्दी म लिखा गया है। जहाँ-जहाँ भाषा सरल हुई है वही काव्य सफल हो पाया है।"

वोट बावनी श्री नानूराम मस्कर्ता की हि दी भाषा म दूसरी रचना है। इसका प्रकाशन स० 2022 मे हुआ है। वोट बावनी' एक सामयिक और युगानुकूल रचना है। बावन कु डलियो म बधी यह रचना मत की पूण महत्ता प्रतिपादित करती है। श्री जनादनराय नागर उदयपुर न वोट बावनी के अभिमत म लिखा है— आपकी दिलचस्प रचना वोट बावनी' पढी। सच तो यह है आपने जनतत्र के समुद्र मथन से जहर को मार्मिकता के साथ व्यक्त किया है। इतनी स्पष्टता, निर्भीकता तथा मग्नता के साथ आपने आज के आम्बरी वोटातुर अति महत्वपूण व्यक्तियो की मनोभावनाओ चुनाव-परिस्थितियो उतार चढावो एव समाज पर निस्सन्देह पडने वाले प्रभावो का वणन किया है कि आपकी दाद देते ही बनती है।

आपकी वाट बावनी प्रतिदिन लाभ लालच तथा अधकार स भग्न जात समाज मे हमारे अन्तरात्मा म कुछ दद पदा करेगी। इस प्रकार की पीडा की हम आज बहुत ही आवश्यकता है। आपने स्वतन्त्रता के सघष क्षत विक्षत प्रेरणाशील जाग्रत भारत के नासूर का ही जसे वणन किया है। अभिनदन। (उदयपुर 5-3 66) श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूडावत सदस्य विधानसभा राजस्थान ने लिखा है— वोट बावनी जमी सामयिक रचना के लिए धयवाद। (लक्ष्मी निवास बनीपाक —9 3 66)

श्रीभक्तदशन उपशिक्षा मत्री भारत ने लिखा है— "इस छोटी सी पुस्तिका मे वोट की सारी कथा और उसके उपयोग का सही रास्ता दिखाया, अत हृदय से धयवाद देता हूँ। (नई दिल्ली 19 अप्रल 1966) श्रीमोहनलाल सुखाडिया मुख्यमत्री राजस्थान जयपुर (दि० 1 4 66) और श्रीवजसु दर शर्मा शिक्षामत्री राजस्थान जयपुर (5 4-66) ने भी वाट बावनी की प्रशसा म ध यवाद प्रेषित किए है। श्री निरजननाथ आचाय उपशिक्षा व गृहमत्री जयपुर (11 माच 1966) न वोट बावनी के अवलोकन म लिखा है— रचना का लक्ष्य मतदाता को उसके मत का मू याकन कराना तथा उसके सही उपयोग की प्रेरणा देना है। इसम गलत मतदान के कुपरिणामों पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है। प्रयास अच्छा।"

श्री भीमसेन एडवोकेट सदस्य राजस्थान विधानसभा तथा श्री चन्द्रदानजी चारण प्रिंसिपल भारतीय विद्यामदिर बीकानेर ने वोट बावनी का उत्कृष्ट रचना और श्री मस्कर्ता का साधुवाद का पात्र बताया है।

वोट बावनी की भमिका म प्रा० पुष्करदत्त शर्मा सस्कृत विभाग, डूगर कालेज, बीकानेर न लिखा है— पकिल ग्राम राजनीति के दुष्परिणामो से सतप्त होकर श्रीमस्कर्ता जी न वाट बावनी' लिखी है। राजस्थान के प्रतिनिधि जन कवि के द्वारा सामयिक समस्या का यह सशक्त प्रस्तुतीकरण है। इसको पढने से जनता को अपन मत का समुचित उपयोग करने की दिशा मिलेगी। यह विश्वासपूवक कहा जा सकता है कि जन जागति की दिशा म यह रचना बहुत ही सामयिक एव प्रेरणा जनक है। श्रीमस्कर्ता की स्वस्थ-चिन्तन पद्धति एव स्वस्थ परम्परा की स्थापना का काय पूणत प्रशस्य एव अभिनन्दनीय है।"

कालू के श्री नानूराम संस्कर्ता की हिन्दी भाषा की तीन अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ हैं। प्रथम अप्रकाशित पाण्डुलिपि हिन्दी भाषा मे 'खाडे का विवाह' नामक उपन्यास है। 'खाडे का विवाह' मे ग्रामीण सामाजिक गतिविधियो का सशक्त वर्णन किया है। गावो के वातावरण का श्री संस्कर्ता ने सुन्दर चित्रण किया है। 'गाय पुराण' श्री संस्कर्ता की दूसरी अप्रकाशित पाण्डुलिपि है। इसमे दस सुन्दर कहानियों का सग्रह है।

'चाय पुराण' श्री संस्कर्ता का तीसरा अप्रकाशित हिन्दी काव्य है। इसम कवि ने आधुनिक पेय चाय का महत्त्व बतलाया है जो कि काव्य के नाम से ही विदित है। 'चाय-पुराण' म उन चालीस विषयो पर चाय से सम्बन्धित अनेक छद लिखे गए हैं। प्रारम्भ में 'चाय बागान' भूमिका रूप में लिखा गया है तथा अन्त मे 'चाय हित पर्यटन' और 'चाय पियक्कड नेता' शीर्षक, कविता स्वरूप मे लिखे गये हैं। कविताओं के पश्चात 'चाय गीतिका' और 'राजस्थानी गीतिका' लिखी गई हैं। 'चाय पुराण' पाठको के लिए हास्य से सराबोर रचना हैं। *काका हाथरसी संगीत कार्यालय हाथरस (उ० प्रदेश) ने* चाय पुराण की भूमिका के लिए एक छक्का लिखा है—

"कलियुग के इस पेय मे, आनंदित हो प्राण,
घर घर 'नानूराम' का चमके चाय पुराण।
चमके चाय पुराण प्राण सुस्ती से पाओ,
सर्दी बादी खासी खुरा दूर भगाओ।
कहँ काका कवि चाह चाय की दिन दिन बाढे
नेता पीकर चाय, मच पर खूब दहाड़े।"

—काका हाथरसी (दि० 21 11 71)

वार्षिकोत्सव साहित्यकार सम्मान समारोह एव सूरोत्सव, मार्च 1979—श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के प्रागण म आयोजित राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के वार्षिकोत्सव साहित्यकार सम्मान समारोह एव सूर पचशती के सम्मिलित समारोह में राज्य के तीन विशिष्ट साहित्यकारो का सम्मान किया गया तथा सात साहित्यकारो को प्रान्त के श्रेष्ठ कृतियो के लिए पुरस्कृत किया गया। इनम कालू के श्री नानूराम संस्कर्ता की 'लकाणधणी' काव्य पुस्तक पुरस्कृत हुई है। जिसके लिए दिनाक 17 3 79 को साहित्यकार सम्मान समारोह मे अन्य साहित्यकारो के साथ श्री संस्कर्ता का सम्मान हुआ तथा लोक साहित्य के अन्यतम विद्वान डा० सत्येन्द्रजी के द्वारा नारियल पुस्तकें और प्रमाण पत्रादि भेंट किए गये। इस अवसर पर राजस्थानी साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा सम्मानीय साहित्यकारो की एक परिचय पुस्तिका प्रकाशित की गई। जिसमे श्री संस्कर्ता का सचित्र परिचय पुरस्कृत ग्रन्थ 'लकाणधणी' का वर्णन तथा समारोह के आयोजन एव समापन सबधी कार्य कलापो का विवरण भी दिया गया है।

मारवाडी सम्मेलन, 227 कालबादेवी रोड बम्बई 2 की व्यवस्थापिका सभा ने श्री नानूराम संस्कर्ता के 'छप्पय सतसई' काव्य की पाण्डुलिपि देखकर 11 सितम्बर 1971 को रु० 1 000) (रुपये एक हजार) की धनराशि साहित्यकार पुरस्कार स्वरूप प्रदान की। मारवाडी सम्मेलन बम्बई के अध्यक्ष डॉ० मेजर श्री रामप्रसादजी पोद्दार

तथा श्री राधाकृष्णजी खेमका स० मत्री मारवाडी सम्मेलन बम्बई ने कालू के श्रीसम्कर्ता का स्तुत्य सम्मान किया।

कालू के नौजवान डा० श्री किरण नाहटा ने राजस्थानी भाषा म "शिवचन्द्र भरतिया" के नाटको पर एक समीक्षात्मक वडा निबन्ध लिखा, जिसको श्री रावत सारस्वत ने पुस्तक स्वरूप मरुवाणी अक से प्रकाशित किया है। इससे राजस्थानी नाटक साहित्य का इतिहास प्रकाश म आया है और "शिवचन्द्र भरतिया" पुस्तक की पर्याप्त सराहना हुई है।

श्री नाहटा ने राजस्थानी साहित्य की अनक विधाओ पर लिखते रहने के बाद श्रीमद्जयाचार्य की महत्वपूर्ण कृति "उपदेश कथाकोश" का सम्पादन किया है। इसके बाद ई० सन् 1980 म डॉ० मूलचन्द सेठिया (प्राध्यापक—राजस्थान विश्वविद्यालय) के साथ 'दीप थारो देश" नाम से जनपदीय साहित्यकारो का पुस्तक रूप, एक कविता सग्रह सपादन किया है। इन कृतियों के लिए श्री नाहटा की सबत्र प्रशसा है।

कालू निवासी श्री जीवराज शर्मा की अप्रकाशित पाण्डुलिपि "मुरलीधर काव्य" शर्मा की प्रतिभा की प्रतीक हैं।

गारबदेसर के प० चुनीलाल शर्मा (राजस्थानी विशारद) द्वारा रचित अप्रकाशित पाण्डुलिपि "पुष्प वाटिका" भी धार्मिक पुस्तक है। लूनकरनसर के श्री लालचन्द गौड का भजन सग्रह भक्ति सरोवर' मनोहारी है जो धार्मिक प्रवति के व्यक्तियो के लिए सुपाठ्य है। कालू के शिवराज सरवर्ता का कविता सग्रह 'न य सदेश" प्रसाद गुण गु फित व हृदय ग्राह्य रचना है।

कालू मे सस्कृत साहित्य—सस्कृत को देववाणी कहते हैं जिसका तात्पय यह है कि सस्कृत देवो की भाषा है। इसमें वेद हैं, जिनको भारतीय परम्परा की दृष्टि से अपौरुषेय और चतुमुख ब्रह्मा के मुखो से प्रकटित समझा जाता है। वेद ही क्या? ब्राह्मण ग्रथ, उपनिषद्, महाभारत, रामायण प्रभृति काव्य एव साहित्य सस्कृत म है। व्याकरण का सबस प्राचीन ग्र थ पाणिनी की अष्टाध्यायी है कि तु सस्कृत का ललित साहित्य महाकाव्य, खडकाव्य, नाट्य साहित्य, गद्य काव्य चम्पू कथा साहित्य जसे अनेक वग विभाजित है। वसे तो सस्कृत का महाकाव्य वग रामायण से ही प्रारम्भ होता है किन्तु कालिदास के कुमार सभव और 'रघुवश' बडे उत्तम काव्य है। इनका मानवीय भावो का चित्रण करने वाला मेघदूत एव अभूतपूर्व काल्पनिक खडकाव्य है। ऐसे सुन्दर एव मानव हितकारी साहित्य ग्रथो के कारण सब भाषाओ का जन्म सस्कृत से हुआ बताया जाता है। गाव कालू के प० श्री दुर्गादत्त शास्त्री न सस्कृत में कतिपय काव्य ग्रथो की सरचना की हैं।

इनके 'सरस चरित" महाकाव्य के नीचे लिखे एकादश सग है —

1 वन्दव सग	2 स घव सग	3 लौद्र सग
4 प्रावास सग	5 आनुकम्प्य सग	6 सारस सग
7 हारपत सग	8 जानराज्य सग	9 यायपीठ सग
10 राष्ट्रकूट सग	11 सर्वाभुदय सग	

प्रसाद गुण सरोबर "सरस चरित महाकाव्य" की निजल भूमि वणन की पक्तियाँ द्रष्टव्य है—

सिक्ताऽति वेल मपि सिन्धु सरस्वतीभ्याम् ।
उर्वी प्रकाशित कणा, सह सीतया च ॥
रत्नानि कान्ति निचतानि, पुरस्कृतानि ।
प्रोद्यत मुखानि वय मद्य, तया स्मराम ॥

(अथ—सीता (दृद्वति), सरस्वती और सिन्धु नदी से निरन्तर सीची गई पृथिवी से धूलिकण भी चिति शक्ति से सजीव से हो उठे। भूगभ अनुसन्धान करने वाले आज भी उसके ऐश्वय की साक्षी मे जवाहरातो के दशन पाते हैं।)

श्री भरतजी की स्हाद टूटी, तब महाराज ने देवी से प्राथना की—

यथेच्छ कुरु, ताव कोऽहम्, नान्यथा कलयामि ते ।
बल मोद देहि मात, वेदना क्षुभदे शुभे ।

इनकी देवी देवताओ की अनेक रचनाओ मे पवन पुत्र श्री हनुमानजी का चरित्र काव्य प्रत्येक हिन्दू जन के लिए रसास्वादन करने योग्य है। श्री शास्त्री सस्कृत साहित्य साधना म सदव सलग्न रहते हैं।

लिपि विकास और कालू—यहा लिपि प्रश्न है, कालू की लिपि कोई अलग थोड़े ही है? इसके क्रमिक विकास सहित भारतीय लिपियो का उल्लेख देना पड़ता है, जो लिपि विकास सहित अनुसन्धान हुए ह।

लिपि का पहला रूप—स्मृति चिह्न (Memory Aids) राखी, अगूठी, बधगाठ आदि के रूप में हुआ था। रज्जुलिपि ग्रन्थिलिपि सूत्रलिपि इत्यादि इमी के नाम हैं। इनके बाद का रूप चित्रलिपि हैं जसे दो तलवारो के चित्र लड़ाई के द्योतक और बिन्दी से अात का आभास मिलता था। जगल की तबाही पानी की लूट और मनुष्य की निकली पसलियो का चित्र अकाल का लेख माना जाता था। बाद की कुछ लिपियाँ अशोक के शिलालेखो मे प्राप्त हुई हैं। वे खरोष्टी और ब्राह्मी दोनो ही विदेशी लिपियाँ जसी हैं। अत इन लिपियो के उदगम का पूरा पता नही के बराबर है। मगर भारतीय लिपियो मे मुख्य देवनागरी, गुजराती, कुटिललिपि, गुप्त लिपि बगाली और द्राविडी लिपि आदि मुख्य लिपिया ब्राह्मी लिपि[1] स ही निकली हुई मानी जाती हैं।

---

1 भारतवष में प्रयुक्त म ब्राह्मी लिपि सबसे प्राचीन है। ब्राह्मी शब्द ब्रह्मा से निष्पन्न हुआ। जगत की समस्त जागतिक पदार्थों की उन्होने रचना की, लिपि का भी उन्ही से प्रादुर्भाव हुआ।

जन अग वाङ्मय के पचम अग व्याख्याप्रज्ञप्ति (भगवती) सूत्र के प्रारम्भ म जहाँ अर्हन्, सिद्ध, आचाय, उपाध्याय तथा साधु को नमन किया गया है वहाँ ब्राह्मी लिपि को भी नमन करने का 'णमो बभीए लिवीए' का उल्लेख मिलता है। 'आगम और त्रिपिटक एक अनुशीलन' (भाग 2) के लेखक राष्ट सत मुनिश्री नगराज जी डी० लिट० महाविद्वान ने अपने उक्त ग्रन्थ म ब्राह्मी लिपि का विश्लेषण करते हुए 64 लिपियो की सूची पृ० 276 पर दी है।

राष्ट्र भाषा हिन्दी की देवनागरी लिपि है जो स्वर एव व्यजना की ध्वनियो के मद्धातिन मवेतो सहित पूण वज्ञानिक हैं। कालू के व्यापारी अपन व्यवहार मे दवनागरी लिपि के एक उपरूप महाजनी लिपि का भी प्रयोग करते हैं, जिस यहाँ 'मुडिया" या "मोडिया" क नाम से पुकारा जाता है। कई लोग देवनागरी क प्रतिलोम रूप मे मुडिया को भूतनागरी लिपि भी कहते हैं। इसके अक्षर बिना मात्रा लिखे जाते हैं[1] जिनका प्रचलन दिल्ली, पजाब, हरियाणा और विशेष रूप से सार राजस्थान के व्यापारियों म बहुतायत से पाया जाता है। कालू के समस्त पुराने व्यापारी इस लिपि के लिखने म बडे सुविन हैं। इन मुडिया अक्षरों के आविष्कता राजा टोडरमल थे, जसा कि उनक बनाये हुए छद से प्रामाणिक है—

"देवानागरी अति कठिन स्वर व्यजन "यवहार।
ताते जग के हित सुगम, मुडिया किया प्रचार।" (राजा टोडरमल)

इसके लिए राजस्थान मे राजा टाडरमल का बहुत सम्मान रहा और वे हिन्दू समाज मे बडे बुद्धिमान और सावजनिक व्यक्ति मान जाने थे। सभवत सारे राजस्थान मे ऐसा ही हाता होगा ? किन्तु हमार गाव कालू मे जब कोई भी दूल्हा विवाहित हो कर अपनी नववधु घर लाता है तब तत्काल टाडरमल जीत्या" नामक एक सुप्रसिद्ध वैवाहिक गीत उस घर की महिलाओ द्वारा आवश्यक रूप मे गाया जाता है। इसम वर पक्ष के समस्त बराती पुरुपो का सुविन वता बताकर गीत का बढावा दिया जाता है। ऐसा अधिकतर महाजनो म देखा जाता है।

कालू म स्व० श्री गोविन्दराम यति चाँदमल पुगलिया आदि पुराने लोग कागज पर मन मोहक मोती से मोडिया (मुडिया) अक्षर लिखन वाले थे। विद्यमान में श्री बालचद कोठारी, ईशरचद गोलछा, और भवरलाल सिंघी वगरह ललित लिखत (लेखन) के लिए अग्रणी माने जाते हैं। किन्तु ईशरचद के दाहिन हाथ का अगूठा डाकुआ द्वारा काट दिया गया। अत वह अब सुलेखक नहीं रहा। सस्कर्तामज सुसुष्ठु देवनागरी अक्षर लिखने में सब सुजान हैं। प० दुर्गादत्तजी मुहूत ज मपत्रियाँ तथा कुडली आदि मे बडे अनूठे एव आकषक अक्षर लिखत हैं।

कालू मे शिक्षा प्रेम—यहाँ के लागो का रहन सहन वतमान समय में भी प्राचीन भारतीय सस्कृति के अणु परमाणु से सयुक्त है। अधिक व्यय भाग तथा रोगादि अहित कारी प्रवतिया स यहा क वासि दे सतत सुरक्षित हैं। जमाने की विषली हवा कालू के घरो मे पूरी तरह नहीं घुस पाई है। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि यह गाव शिक्षा मे पिछडा हुआ है। गाव के लागो का शिक्षा प्रेम उल्लेखनीय है। यहा के व्यक्तियों न निर तर अध्ययनरत रहकर शिक्षा की उच्च उपाधियाँ प्राप्त की हैं। कालू के लोगा द्वारा शास्त्री साहित्यरत्न प्रभाकर, साहित्यमहामहोपाध्याय, एम० बी० बी० एस०, एल एल० बी० बी०ए० बी० एड एम० ए०, सा० ए० एम० डी० पी०एच० डा० आदि

1 मुडिया के अक्षरो पर मात्राए एव अनुस्वार आदि नही लगते। य ई, ट ठ जस कुछ अक्षर एक से हाने हैं। चारा चोर मोर मारा आदि शब्द भी अभ्यासानुभव स पढे जाते हैं। मूलचद लोढा और मालचन्द लढा दोनो नाम एक ही भाति स लिखे पढे जाते है।

उपाधिया प्राप्त की हुई हैं। आर० ए० एम० जसी राज्य की महत्वपूण परीक्षा पास करके शिक्षित युवको न कालू के शिक्षा प्रेम के महत्व को स्पष्ट किया ह। यहाँ क कुछ युवक आज भी एल एल० बी० एम० डी० सी० ए० तथा एल एल० एम० जसी उच्च महत्वपूण शिक्षा मे अध्ययनरत हैं। गाव के अनक युवक स्नातक एव स्नातकोत्तर बन चुके हैं और अनेक प्रयास मे हैं। गाव की यह सफल शिक्षा ही शिक्षा प्रेम की साक्षी है।

क्षेत्र मे सजन सजनकार और कालू—भारत म बीकानर एक प्रसिद्ध राज्य रहा है। इसमें नळी, थळी, मगरा नामक तीन प्रकार की भूमि के दशन हात हैं। अब यह ससार की सब से बडी नहर 'राजस्थान कैनाल से सम्बन्धित सिंचित जिला है। यहाँ क सतो महँतो वीरा, व्यापारियो और सतियो न दूर दूर तक यश पाया है। साहित्यकारो के नाम भी तो शताधिक की सख्या म आते हैं। अत बीकानर नगर और उसके अय जिला नगरो का जिक्र न कर के केवल बीकानेर के राजा कालू तथा उसस सबधित लाकड सींवाडी गावा के प्राचीन एव अर्वाचीन कविया साहित्यकारो की वाणी का मात्र परिचय देता हूँ।[1] कालू अपन इलाके मे साहित्य सस्कृति का केन्द्र रहा है। इसके पास लगते चारा आर के गावों म काफी वाणी के वरद पुत्र कवि एव लेखक हुए हैं। अत राज्य के अय सभ्य स्थानो से यह कदापि पीछे नही कहा जा सकता। बाणीकार नाथ सम्प्रदाय का यहाँ आदश स्थान था। रामस्नहियों के कविया का प्रभाव भी पूरा रहा है। जन साहित्य तो यहाँ परम्परित रूप से प्राप्य है। चारणो के वास पास हान के कारण भाषा डिंगल, अपभ्रश, मरू भाषा और हिन्दी सस्कृत मिश्रित चलती थी और वतमान समय म शुद्ध रूप प्रचलित है। यहाँ के काव्य साहित्य से डिंगली अपभ्रश सिंधी प्रभति भाषाए दौड कर मिली और यहाँ की कविताओ म डिंगल और सिंधी पजाबी क शब्द काफी आकर अच्छे फबे हैं। वे चारणो के कथा छदो तथा ढाढी काव्या मे काफी मात्रा मे पाये जाते हैं। यह का पुराना साहित्य सुरक्षित नही रह सका। इसीलिए यह सास्कृतिक स्थान विद्वानो की दृष्टि म नही आ पाया। फिर भी बीकानर के इस जगल-मगल मध्य बसते कालू के कविया की जबान म सरस्वती का निवास और आत्मा मे विश्वास के उदात्त भाव हिलोरें लेते रहे हैं। उसी प्रभाव से कालू म साहित्य निर्माण का वातावरण इतना अधिक बना कि गाव के नाम पर सकडा कहावतें चल निकली हैं।

साहित्यकार परिचय—कालू के निकटतम गाव कुविया के अद्वितीय महान विद्वान दयालदासजी सिढायच (जन्म वि० स० 1855 ई० स० 1798 मृत्यु 1948 ई० स० 1891) रयात कार के रूप मे प्रसिद्ध हैं। वे बीकानेर के महाराजा सूरतसिंह, रत्नसिंह, सरदारसिंह और श्री डूगरसिंह के कृपा पात्र रहे थे। उनकी राठौडो की ख्यात, देश-

---

1 वसे ता बीकानेर क सभी महाराजा साहित्य प्रेमी हुए, किन्तु रावलूणकरण, महा रायसिंह महा० करणसिंह महा० अनूपसिंह महा० जोरावरसिंह और गजसिंह स्वय साहित्यकार थे। पृथ्वीराज का नाम तो सूय की भाति परम उल्लेखनीय है। स० 1726 55 में महा० अनूपसिंह ने अपने नाम से सस्कृत का पुस्तकालय (अनूप सस्कृत पुस्तकालय) स्थापित किया। जिसकी ख्याति भारत ही नही, विदेशा म भी बहुत है।

राष्ट्र भाषा हिन्दी की देवनागरी लिपि है जो स्वर एव व्यजनो की ध्वनियो के सद्धातिक सकेतो सहित पूण वज्ञानिक हैं। कालू के व्यापारी अपन व्यवहार म दवनागरी लिपि के एक उपरूप महाजनी लिपि का भी प्रयाग करते हैं जिसे यहाँ मुडिया" या "मोडिया" के नाम से पुकारा जाता है। कई लोग देवनागरा के प्रतिलाम रूप मे मुडिया को भूतनागरी लिपि भी कहते हैं। इसके अक्षर बिना मात्रा लिखे जाते हैं,[1] जिनका प्रचलन दिल्ला पजाब, हरियाणा और विशेष रूप से सार राजस्थान के व्यापारियो मे बहुतायत से पाया जाता है। कालू के समस्त पुराने व्यापारी इस लिपि के लिखने मे बडे सुविज्ञ हैं। इन मुडिया अक्षरो के आविष्कर्ता राजा टोडरमल थे, जसा कि उनके बनाये हुए छद से प्रामाणिक है—

'दवनागरी अति कठिन, स्वर व्यजन व्यवहार।
तात जग के हित सुगम, मुडिया कियो प्रचार।' (राजा टोडरमल)

इसके लिए राजस्थान म राजा टाडरमल का बहुत सम्मान रहा और व हिन्दू समाज म बडे बुद्धिमान और सार्वजनिक व्यक्ति मान जाते थे। सभवत सारे राजस्थान मे ऐसा ही होता होगा ? किन्तु हमार गाव कालू म जब काई भी दूल्हा विवाहित हो कर अपनी नववधु घर लाता है तब तत्काल टोडरमल जीत्या" नामक एक सुप्रसिद्ध वबाहिक गीत उस घर की महिलाओ द्वारा आवश्यक रूप स गाया जाता है। इसम वर पक्ष के समस्त बराती पुरुषा का सुविज्ञ बता बताकर गीत को बढावा दिया जाता है। ऐसा अधिकतर महाजनों मे देखा जाता है।

कालू मे स्व० श्री गोबिन्दराम यति चाँदमल पुगलिया आदि पुराने लाग कागज पर मन मोहक मोती से मोडिया (मुडिया) अक्षर लिखने वाले थे। विद्यमान में श्री बालचद कोठारी, ईशरचद गोलछा, और भवरलाल सिंघी वगरह ललित लिखत (लिखन) के लिए अग्रणी मान जाते हैं। किन्तु ईशरचद के दाहिने हाथ का अगूठा डाकुओ द्वारा काट दिया गया। अत वह अब सुलेखक नही रहा। सरस्वतीमज मुसुष्ठु देवनागरी अक्षर लिखने मे सब सुजान हैं। प० दुर्गादत्तजी मुहूत जन्मपत्रिया तथा कुडली आदि मे बडे अनूठ एव आकषक अक्षर लिखते हैं।

कालू मे शिक्षा प्रेम—यहा के लागा का रहन सहन वतमान समय म भा प्राचीन भारतीय सस्कृति के अणु परमाणु से सयुक्त है। अधिक व्यय भाग तथा रोगादि अहित कारी प्रवत्तिया स यहाँ के वासिन्दे सतत सुरक्षित हैं। जमाने की विषली हवा कालू के घरो मे पूरी तरह नही घुस पाई है। फिर भी यह नही कहा जा सकता कि यह गाव शिक्षा मे पिछडा हुआ है। गाव के लोगों का शिक्षा प्रेम उल्लेखनीय है। यहाँ के व्यक्तियों न निरन्तर अध्ययनरत रहकर शिक्षा का उच्च-उपाधियाँ प्राप्त की हैं। कालू के लोगो द्वारा शास्त्री साहित्यरत्न प्रभाकर साहित्यमहामहोपाध्याय एम० वी० बी० एस०, एल एल० बी०, बी०ए० बी० एड एम० ए०, सा० ए० एम० डा० पा०एच० डा० आदि

---

1 मुडिया के अक्षरो पर मात्राएँ एव अनुस्वार आदि नही लगते। य ई, ट ठ जसे कुछ अक्षर एक से होते हैं। चारा चोर मार मारा आदि शब्द भी अभ्यासानुभव से पढे जाते हैं। मूलचद लाढा और मालचन्द खढा दोना नाम एक हा भाति से लिख पढे जाते हैं।

श्री गोविन्ददान—गाव नाथूसर (तहसील लूनकरनसर) के रोहिडा बारहठ बिड़दान के पुत्र ठा० गोविन्ददान (जन्म वि० स० 1938 स्वगवास 2014) ने 'किसन प्रकाश" नाम का एक प्रसाद गुण काव्य, विविध छदो मे भक्ति रस आप्लावित सजित किया है। यह वरदा वर्ष 5 अक एक मे पुस्तक रूप प्रकाशित हुआ है। इनकी अन्य कविताएँ भी मनोहारी हैं। अनाज निकालते समय और महाराजा श्री गगासिहजी के स्वगवास पर बनाये हुए दो छद।

(1) अहो जादूराय मैं कहता हूँ सुणाय अेम।
कृपा सिन्धू आप ऐसी वारता विचारी क्यू ? ॥ 1 ॥
जगत को जामी गगसाह सुरा लाक भेज्यो।
कहो रघुनाथ ऐसी भई भूल थारी क्यू ? ॥ 2 ॥
नारायण दूजो पूरो राखतो प्रजा पे नेह।
केशव कृपाल दुनी करी त दुख्यारी क्यू ? ॥ 3 ॥
हा ! हा ! मेरे नृप विना देख्या अकुलात हियो।
धणी मेरा साँवरा छिपायो छत्रधारी क्यू ? ॥ 4 ॥

(2) ऐसी रीत राखतो प्रजा प प्रीत नीत आछी।
कहूँ पूरो प्रेम लोभ चैन ज्यू लवाई को ॥ 1 ॥
दुनी काज रेला नै'र मदरसा वणाया दाता।
आछा विद्वान राख्या विद्या की पढाई का ॥ 2 ॥
रहे सामधम बादशाह गौरमिंट केरी।
कमधेस पायो जस वीरता बडाई का ॥ 3 ॥
हा ! हा ! मेरा नप गग जात म मिलायो हरि।
केतो दोस देऊ काल' अक्रमी अन्याई का ॥ 4 ॥

हवा के न चलन पर पवन का पापिनी बता कर उलाहना देन के कवित—

(1) प्रकट घटा पचाद,[1] विविध वरषा विस्तार।
पड बूद प्रथमीस, भटक बादळा विडारै ॥
ओढा[2] वाण उडाय, घपट धोरा धमकाणी।
वरजा लग न वात प्रतक सोस घर पाणी ॥
नव खड फेट मारै निटर, अनचाह अनखावणी।
गोविंद खळा फागण घणा, पवन अधाव पापणी ॥

(2) दुकज्या धारा-लार खळा सू डरप मोटी।
अत्र उनाळै बीच आग ज्यू दब कर ओटी ॥
घुट घुट घेंग देत लेत लुक छिप कर लावा।
वदखे लाग कान, फेर पाछी फिर जावा ॥
रग वार मास फागण रमो, मान तेज अनमापणी।
कवि विड़द सुवन गोविन्द कव पवन अमामन पापणी ॥

---

1 नैरादी। 2 कमरा

दपण, आर्यास्यान कल्पद्रुम, पँवार वश दपण और पद्य म जस रत्नाकर तथा सुजन बावनी आदि अनेक पुस्तकें हैं। अंग्रेज सरकार के साथ सधि कर लेन पर राजपूताना में राजाओं का अपने अपने इतिहास सग्रह करवाने पड़े। महाराजा रत्नसिंह ने और अन्य नरेशों ने भी इन से इतिहास लिखवाना चाहा। तब इन्होंने प्राचीन वशावलिया, बहियां, शाही फरमान, राजकीय पुरातन पत्र परवाने प्रभति सग्रह कर बीकानेर राज्य का विस्तृत इतिहास लिखा जो दयालदास की ख्यात कहलाता है। कनल पाउलेट आदि ने अपने इतिहासों मे इसी ख्यात को आधार माना है। उसका प्रकाशनकाल—

कहे सवत उगणीस के सात बीस के साल
बरणी ख्यात विशेष कर, दपग देत दयाल

स० 1927 की फौज बन्दी की याददाश्त के बाद खच खजाना महसूल की जानकारी भी ख्यात म है। इसम बीकानेर उदयपुर जयपुर जोधपुर बूदी झालावाड, कोटा, जसलमेर, टौंक भरतपुर, डूगरपुर आदि राज्यों के अंग्रेजों से किए सधि नाम मिलते हैं। मैं सिढायच दयालदास कृत पवार वश दपण' मे सरस्वती व गणेश के दो पद उद्धृत करता हूँ—

(1) वीणा धारद कर विमल भव तारन सुर भाय।
हँसारुढ दारद हरो सारद करो सहाय॥

(2) मद जल चक्रत मधुप, लसत गज मुख सुखमा मय
सिंदूराचित अरुण शीप चचित चन्द्रोदय
वक्रदन्त इक विमल वसन, तन अरुण विराजत
फरस पानि मन गुन निधान निधि थान अमल चित
सुखकन्द अग्रवर्नी सुघर जगत विघन हर सुजस जय
जति नाथ कीति महिमा जपह तनमामि गौरी तनय

सिढायच श्री दयालदास उस समय कुबिया जसे उजड गाव मे रहकर भारतवष का ही नहीं ग्रीस, रोम और इगलड के इतिहासो का भी हाल जानते थे। उन्होंने अपना सारा जीवन अध्ययन सग्रह और लेखन में बिताया जो उसके प्राप्त साहित्य से ज्ञात होता है। इनकी ख्यात मे फारसी फरमानो और अंग्रेजी मुरासिला के अनुवाद भी हैं। इतना विस्तार और महत्वपूर्ण लेखन इस साधन सम्पन्न युग म भी बहुत कम व्यक्ति कर पाते हैं।

श्री विड़द दान—ये कालू के काकड सीमाडी गाव नाथूसर के रोहिड़ा बारठ थे। इनकी बहुत सी फुटकर रचनाएँ मिलती हैं। ये साणोर गीत लिखने म बडे सिद्ध हस्त कवि थे। वि० स० 1975 की महामारी का इनका एक पूरा सामयिक साणोर गीत यथा प्रसग इस पुस्तक मे दिया है। जिसका नमूना -

उन्ड उण तार बिच बन्धर करतो इधक बीस हृत्थ लारलो कार बगती
आकडे अखू आधार इक आपरो साकड सिंहायक धार सगती
निमागण रोडती थकी, आजे तुरत, आभ न ताडती मते अटकी
रसातल फाडती थकी मत रहीजे गोडती समदरा असुर गटकी

श्री गोबिन्ददान—गाव नायूसर (तहसील लूनकरनसर) के रोहिड़ा बारहठ बिड़दान के पुत्र ठा० गाबिन्ददान (जन्म वि० स० 1938 स्वगवास 2014) न "किसन प्रकाश" नाम का एक प्रसाद गुण काव्य, विविध छदो मे भक्ति रस आप्लावित सजित किया है। यह बरदा वष 5 अक एक म पुस्तक रूप प्रकाशित हुआ है। इनकी अन्य कविताएँ भी मनोहारी हैं। अनाज निकालते समय और महाराजा श्री गगासिहजी के स्वगवास पर बनाये हुए दो छद।

(1) अहो जादूराय मैं कहता हूँ सुणाय जेम।
कृपा सिन्धू आप ऐसी बारता विचारी क्यू ? ॥ 1 ॥
जगत को जामी गगसाह सुरा लोक भेज्या।
कहो रघुनाथ ऐसी भई भूल थारी क्यू ? ॥ 2 ॥
नारायण दूजो पूरो राखतो प्रजा पे नेह।
केशव कृपाल दुनी करी त दुख्यारी क्यू ? ॥ 3 ॥
हा ! हा ! मेर नृप बिना देख्या अकुलात हियो।
घणी मेरो सावरा छिपायो छत्रधारी क्यू ? ॥ 4 ॥

(2) ऐमी रीत राखतो प्रजा पे प्रीत नीत आछी।
कहूँ पूरो प्रेम लोभ चैन ज्यू लवाई का ॥ 1 ॥
दुनी काज रेला, न'र, मदरसा वणाया दाता।
आछा विद्वान राख्या विद्या की पढाई को ॥ 2 ॥
रहे सामधम बादशाह गौरमिंट केरो।
कमधेस पायो जस वीरता बडाई को ॥ 3 ॥
हा ! हा ! मेरो नृप गग जोत मे मिलायो हरि।
केतो दोस देऊ काल अक्रमी अन्याई को ॥ 4 ॥

हवा के न चलने पर पवन को पापिनी बता कर उलाहना देन के कवित—

(1) प्रकट घटा पचाद,[1] विविध बरषा विस्तार।
पड बू द प्रथमीस, भटक बादळा विडार॥
ओडा[2] वाण उडाय, घपट धोरा धसकाणी।
वरजा लगै न वात प्रतक सास घर पाणी॥
नव खड फेट मार गिडर, अनचाहे अनखावणी।
गोबिद खळा फागण घणा, पवन अघाव पापणी॥

(2) तुकज्मा धारा-लार खळा सू डरप खोटी।
अन्न उनाळ वीच आग ज्यू दब कर आटी॥
घुट घुट घेग देत लेत लुव छिप कर लावा।
कदके लाग कान, फेर पाछी फिर जावा॥
रग बार मास फागण रमो, मान तेज अनमापणी।
कवि विडद सुवन गोविन्द कव पवन अधामत पापणी॥

---

1 उतरादी। 2 ऊमरा

श्री मेघदान—जन्म सं० 1978 काती वदी 10 स्व० गाथि ददानजी गाव नाथूसर के सुपुत्र हैं। ये बहुत अच्छी प्रकार की रचनाएँ करते हैं। इनके तम्बाखू हानिवर्णन से दोहा एवं छप्पय देखिये—

दोहा— पिये तम्बाखू प्रेम कर, होत साम्प्रत हाण ।
इण मे ओगण है इता जगत डूबसी जाण

छप्पय— होय रगीज हाय, मड मुख दत मढाई
गजब फीफरो गठ हुवै तनमा ह्वखाई
मता देय घसेर, लाय वन भाह लगावै
जड चेतन स जीव जन्म मारा जळ जावै
अपराध वडो इण विसन म पाप घडा सिर फोडदया
कर जोड सुकव मेघा कव तुरत तम्बाखू छोडदया

ठाकुर किसनसिंह—लूनकरनसर तहसील के प्रसिद्ध गाव गारबदेसर के ठाकुर आघसिंह के छोटे भाई का नाम श्री किसनसिंह था। जैसा नाम वैसे ही उनमें सद्गुण भी थे। ठाकुर किसनसिंह भगवान के भक्त एवं कवि थे। उनकी कविताए यहाँ बडी प्रचलित हैं जैसे—

मो कोसा बीजळ खिव जारा किसा स्नेह
किसना तिसना तद मिट आगण वरस मेह

कालू से चार कोस के इस गारबदेसर म खरतरगच्छाचार्य श्री जिनराज सूरिजी के **शिष्य लक्ष्मीवल्लभ उपाध्याय** का नाम अठारहवीं शताब्दी मे यहाँ बडा मान्य रहा है। काव्य व्याकरण भाषा विज्ञान छन्द वैद्यक एव सैद्धान्तिक विषयो म आपकी असाधारण गति थी। आप संस्कृत हिन्दी और राजस्थानी म गद्य पद्य की अच्छी रचनाए करते थे। सिंधी भाषा म भी आपके स्तवन मिलते हैं। आपके रचे अनेक ग्रन्थो के साथ 'कालज्ञान' नाम के वैद्यक ग्रन्थ म कुछ उदाहरण यहाँ दिए जाते हैं।

जग वैद्यक विद्या जिसी नही न विद्या और
फळ दायक परतिख प्रगट सब विद्या सिरमौर
रोग निवारण यह कर कर धर्म की वृद्धि
धन की भी प्राप्ति करई दुहु लोक हुय सिद्धि

आपका विहार मारवाड गुजरात और सिंध प्रान्त के स्थानो म भी हुआ था। जसलमेर लोद्रवा फलौदी सूरत हिसार रिणी आदि स्थानो म भी आप परिभ्रमण कर आए थे। वि० स० 1728 फा० सु० 5 को आपने राजस्थानी के "विक्रमादित्य पच दड चौपाई" नाम के ग्रन्थ (खड 6) को गाव गारबदेसर म सम्पूर्ण किया था।

समय सुन्दरोपाध्याय—वि० स० 1684 म आपने लूणकरणसर मे 'दुरियर वृत्ति' नामक पुस्तक की रचना की। यहाँ संघ म वर्षों से मनोमालिन्य था अत उपदेशात्मक 'सतोष छत्तीसी' की रचना कर संघ मे ऐक्य और प्रेम स्थापित किया। इन्होंने यहीं कल्पसूत्र पर कल्पलता की टीका की जो जिनदत्त सूरि पुस्तकोद्धार फड सूरत से प्रकाशित है। वि० स० 1685 मे 'दीक्षा प्रतिष्ठा शुद्धि' नामक ज्योतिष ग्रन्थ

लूणकरणसर म ही लिखा गया ।[1] आप सतरहवी शती के महान विद्वान एव कविवर थे ।

कवि रघुपति—वि० स० 1819 मे खरतरगच्छ के कवि रघुपति ने ' रत्नपाल चौपाइ" कालू मे बनाई थी । कालू के उपाश्रय मे रघुनाथ रूपक की एक लिपि का लेखन काय भी हुआ बताया जाता है । वि० स० 2009 मे आचाय श्री तुलसी कालू पधारे । वहा उन्होंने रात्रि भोजन करना पाप बताकर कतिपय भजन बनाये । एक अवलोकनीय पद्याश—

तुलसी गाव कालू गढ म ।
सहवर्ती मुनि साधविया ।। 15 (सोमरस—पृ० 187 88)

यहाँ रामस्नेहिया की अमेरी म सता ने भी काफी काव्य सृजन किया है । वि० स० 1969 म नेनूराम और वि० स० 1987 म सीताराम नामक दो साधुओ की कविताएँ मिलती है ।

गाव राजासर (करणासर) के **माधोदास** वैरागी स० 1956 75 के बीच प्रसिद्ध हुए, एक भजनीक कवि थे । उनका एक भजन है—

भजो क्यू नी राधे क्रिसणा फेर पछताओगे ।।

श्री भानीनाथजी—वसे तो भानीनाथजी की वाणी का प्रचार समस्त राजस्थान म पयाप्त हैं । किन्तु कालू आदि अ य स्थानो पर भी इनकी समाधियाँ बताई जाती हैं । इनका आविर्भाव यहाँ 19वी शताब्दी म कालू से सबधित है और विविध वाणिया गाई जाती हैं ।

(1) नाथ गुलाब मिल्या गुरु पूरा, भक्ति भावना भारी ।
भानीनाथ सरण सतगुरु री, निजर करया गिरधारी ।।

गाव पीपासर (तह० लूनकरनसर) के निवासी **श्री दानीराम सारस्वा** (भू० पूव जकात थानेदार) ने वि० स० 1974 म श्री सरसजी महाराज का जीवन चरित्र हिन्दी मे किया है । जिसके सुपाठय बिखरे पन्ने (हस्तलिपि) हमारी सस्था म प्राप्य हैं । मत्री, राजा के पास सरस महाराज को बुला लाए सो कुछ वणन पढें—

ब्राह्मण सुन मत्री वचन हरखत भयो सुमचित्त
कावनदी मे स्नान कर मरम हाय हरखत
बनिदान सट कम विधि किये आज प्रकाश
मत्री द्विज रौना मिले, आये नप गढ पास

कर जोडे मत्री कहे सुणो राज सुभियान
द्विजवर सरस दयाल है जाण सकल जहान
जाण सकल जहान देव जसा दुरवासा
गुण सुनाऊ नायनु बहुत है ग्यान प्रकासा

1 सीताराम चौपाइ—प्रकाशक सादूल राजस्थानी रिसच इन्स्टीट्यूट बीकानेर देखें—बीकानेर जन लेख सग्रह'

वाछ बाछ निकलक मान ममता का मारे
सत जो सील सुभाव प्रिय सध्या व्रत धारे
वर विमल वेद वाणी वदत ध्यान ब्रह्म पद को धर
जाप जप जहाँ जुगत सू श्री इष्ट दव स्मरण कर

स्यालीराम उर्फ खमाणाराम—स्यालीराम गाव घेमूरा क सारस्वत ब्राह्मण थ। वे वि० स० 1912 से 1986 तक क समय मे कविता करन के लिए बडे प्रसिद्ध थे। महाजन राजा श्री हरिसिंहजी एव प्रज्ञाचक्षु श्री केशरीप्रसादजी शास्त्री इनका पूण सम्मान किया करते थे। इनकी एक प्रकाशित पुस्तक वि० स० 1985 से मेरे पास थी। सो खो गई। एक उक्ति याद है इन्होंने अपन गाव घेसूरा का वणन किया है—

"माता गढ से मील भर घेवर गढ है नाम" (यानि महाजन स घेसूरा गाव एक मील है।)

श्री हिमताराम सारस्वा—कालू से पाच कोस पश्चिम का काकड लगता गाव सारडा के श्री हिमताराम नाम्मा बडे प्रसिद्ध कवि थे। य अपन सजनकला गुण क लिए जम्मू काश्मीर तथा कलकत्ता बम्बई तक बुलाये जाते थे। लखक न इनकी चार पुस्तकें प्रकाशित पढी हैं। य करीब 70 वष के होकर सन 1964 म स्वगस्थ हुए थे। त्रिभगी तथा कडखा छद वाली इनकी कालिका स्तुति" नामक पुस्तक म से स्मरण आता है। 'हिम्मतराम सारडे वाला लिया आसरा तरा !' मया लिया आसरा तेरा !" अन्य मे से—' कह हिमतेश गण भरणा महिपालाजी महिपाला !"

इस भाति काल् के पास कुबिया, चादसर, नाथूसर एव वासी आदि गावो के अनेक बारहठो की कविताएँ यहा बनी हैं। कालू हल्के के अन्य गावो मे भी अच्छे कवि हुए हैं। आपसी ससग के कारण उनकी कविताओ का कालू पर पूरा प्रभाव पडा है।

श्री गिरधारी ढाढी—स्वतन्त्रता से पहिले ठिकाना के हल्का कालू के अधीनस्थ चार पाच कोस ल्होडेरा गुसाईसर म श्री गिरधारी ढाढी एक भक्त कवि था। वह अभी स० 2010 तक जीवित था। उनकी कविताएँ बडी सुन्दर एव मनमोहक है। पूरी कविता तो याद नही, पर जसे एक छद भगवान क लिए—

यहाँ ही तू वहाँ ही तू जहा देखें जहाँ जहा ही तू
मक्क तू मस्जिद तू काबे मथा काशी तू
पवत जगल वासा तू जहा देखें जहाँ जहाँ ही तू

श्री पन्नादान चारण—हल्का के पूर्वीय गाँव भाखासर के श्री पन्नादान चारण की उपदेशात्मक कविताएँ बडी प्रभावदायक एव लुभावनी है। बालकोपयोगी कविताएँ तो इनकी बडी सार गर्भित हैं।

सुखदायक नीति सुणो नर सारा, धम सीख भाखू उर धार।
बार बार चित्त माय विचारो सारा कारज तवो सुधार॥
प्रथम सीख उठजे प्रभाते निमल चित्त लीजे हरि नाम।
नेम धम अस्नान दान कर कीजे पछे गह कुन काम॥

(चौबीस दूहा गीत स)

वस्ना ढाढी—वम तो इन ढाढिया की कविताएँ बडी सुन्दर हाती हैं किन्तु कालू से पश्चिम सात कोस लगने गाव कुजटी (तहसील लूनकरनसर) म वस्ना नाम का एक ढाढी वडा अच्छा कवि हुआ है। वस्नाजी का 63 वष की उम्र म स० 2031 को निधन हुआ।

दधिसुत भम्रण वाहिनी, द दधिसुत प्रकाश।
वीन भुजा हँस वाहिनी लग लक्पत भुज आस॥

रमजान ढाढी—समीप कालू—गान्धारावाटी के गाव रुणिय (बड वास) म रमजानढाढी के अनक भजन एव गीत मिलते हैं। 70 वष की अवस्था म स० (2036 में) रमजान की मृत्यु हुइ। एक भजन का नमूना—

दुनिया म एक रोग फलग्या सुणिय चाय पाणी का
पडग्या चल जगत म इस मसमा[1] स्याणी का
देखा देख लागग मार के छाटा के मोटा
दानू टेम चुकण ना न्व चाहे घर म जाव टाटा
दूध मागता घर घर हाड ले हाथ म लोटा
गाळ कढाव, गउ विदराव अ लक्षण है खोटा
कितना दिन यू पार पडेंगे ढग है घर जाणी का ॥1॥ दुनिया मे एक

यद्यपि हमार इस क्षत्र म पुरान कवियो का अधिक प्रभाव रहा है, परन्तु कुछेक इस आत हुए नए युग के पास हान वाले और विद्यमान कवि लेखका क नाम भी नीचे दिय जा रहे हैं जो कालू निवासी कहलाते हैं।

स्व० श्री पुरखारामजा मारस्वा
स्व० श्री उमारामजी मारस्वा
प० श्री दुर्गादत्तजी सारस्वा (जन्म स० 1974)
श्री नानूराम मस्कता (ज म 1973 श्रावण कृष्ण 7)
श्री रामेश्वरलाल तारणिया (ज म वि० स० 1988 आसाज सुदी 5)

डॉ० श्री किरण नाहटा
श्री शिवराज मस्कता (12 9 54)
श्री जीवराज शर्मा (जन्म स० 1095)
श्री बनीलाल विरमेचा (ज म 9 मइ 1939 इस्वी)

कविता के शौकीन सग्राहक यहा वहुत से सज्जन हैं जिनम श्री शकरलाल राठा (वाणिज्य स्नातक) और शकरलाल करनाणी (कला स्नातक) के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। श्री रेवतमल गोलछा भी अच्छा कविताओ का रिकॉड रखता है।

कालू मे दस्तकारी—यहा दस्तकारी म कम्बल, लूकार मेमल चोटिय[2] बरडी कामलिय तथा पट्टू बनाय जाते हैं। कालू के बुनकरो मे श्री फकीरा राम मेघवाल का नाम है। ऊँट का जट (बालो) मे भाखले तथा दावडे भी बनायी जाती हैं। घरो म यहाँ की औरतें पहल लावडी चूनडी, धाबला भी बनाया करती थी। अब ऊनी जर्सी,

1 ताकत
2 बच्चों क ओढ्न वाले फूलीदार लूकार (टोपना)।

मौजे व मफलर आदि बनाती हैं। यहाँ की बुनकरी गाव के लोगो के लिए सुन्दर आकर्षक एव उपयोगी रही है।

व्यापार—कालू मे व्यापार अन्न कपडे मनिहारी दवाइया लाहे और लकडी का होता था। अब अन्न का व्यापार यहाँ से दूर दूर तक होता है। यहाँ के मोठ और ग्वार के व्यापारिक सौदे काफी प्रसिद्ध हैं। चुनावो के अवसर पर कालू म व्यापार के तरीके से राजनतिक सौदे भी होत ह। ऊन व लकडी का व्यापार भी यहाँ का काफी बढा चढा रहा है।

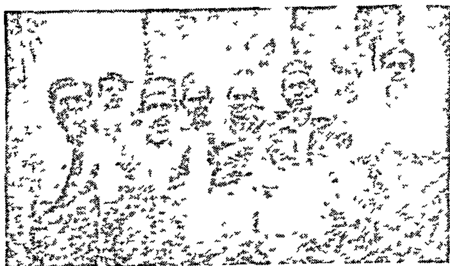
कालू के त्यौहार—गाव के निवासियो म कई तरह के त्यौहार मनाने के रिवाज प्रचलित हैं। जिनम सीवल सात्यू गणगौर (चारो वासा की) रामनवमी, छोटी बडी तीज, अक्षय-तृतीया रक्षा बधन गोगानवमी, दशहरा दीवाली, होली तथा मकर सक्रांति हैं। नव-त्यौहारो मे प द्रह अगस्त तथा छब्बीस जनवरी राष्ट्रीय पव हैं। दीपावली और होली यहाँ के धार्मिक तथा ऐतिहासिक पव है। महाशिवरात्रि और ज माष्टमी यहाँ के विशेष धार्मिक पव है। इ हे बडे उत्साह से मनाते हैं।

मेले मगरिये- गणगौर का मला सावन भादवा की ताज का मेला जल झूलणी एकादशी का मेला तथा नवरात्रो का मला प्रभति जन सम्मेला यहाँ बडी धूमधाम स मनाये जाते हैं। गणगौर का मेला यहाँ का दूर दूर तक प्रसिद्ध है। सावण की ताज का लडकिया गाव के बाहर जाकर अपनी गुड्डियाँ जलाती है और गीत गाती हैं। वहाँ घूघरी बनाकर भी खाती चबाती हैं। किसी अपने मोभी(जेष्ठ) भाई का पर जमीन में गाड कर तालाब की तरफ भाग जाती हैं और मगरिये मे शरीक हो जाती हैं। लडका अपना पर निकाल कर इन्हे मारन दौडता है। गघरी पकाई हडियाँ लडकियो के पीछे फेंक कर तोड डालता है। सावण की तीज के मेले का यह रिवाज मुख्य आकषक होता है। भादवे की तीज को भी अनाणे तालाब पर मेला लगता है और औरतें उसक जल मे आक पत्ते (आक क पत्ते) ताड कर तराती हैं।

कालू म खल कूद—यहा क लोग खेल का महत्ता को सदा से समझते आये हैं और नियमपूवक खल खेलत हैं। इसलिए दिन भर काम करत हुए थकते नही है और उनकी आयु भी अधिक होता है। कालू के लोग मनोरजन के दष्टिकोण से ही नही खलते हैं बल्कि वे खेलना अपना कत्तव्य समझते है। इसी कारण गाव क लोगो की चुस्ती-दुरुस्ती बनी रहन स उनका नाव उन्नत है।

कालू म प्राचीन समय से अनक प्रकार के खेल खेले जाते है। चौपड (पास या कौडिया से) गुड्डी गुल्लीडडा कबड्डी तरना तथा कुश्ती यहाँ के उत्साही तथा मनो रजक खेल रहे हैं। कालू के लाग चरभर तिग्गो तास राई राई ओडी ओडी लूणिया घाटी उत्ता घुत्ता हडदडो चिवदडी चोर कु डिया आंख मि चौना आदि खल भा बूढे जवान सभी खेलत रहे हैं। कालू मे गणेनलाल यति की गुड्डी के पूँछ म लालटेन या टाकर बाधकर रात भर उडाई जाती थी। पीछे के पचास वर्षों म श्री दीपचद डढाणा की तिरवारी म मोतीचन्दजी करनाणी के दरवाजे मे भुगनचन्द नाहटा के कमरे म, गुराजा के कमरे मे और फतहचन्द बोथरा क घर मदव तास और चौपड का खल होता था।

की मडली द्वारा भी समय समय पर खूब प्रदर्शन किए जाते । कभी कभी गाव म कठपुतली का खेल दिखलाने वाले भी आ जाते थे। चिडावा व झुझनू की तरफ से नानू राणा की मडली भी ख्याल करने के लिए आया करती थी, जिसे दर्शक बडे ही आश्चर्य मिश्रित आनन्द से देखा करते थे। वि० स० 1985 म बनचन्द नाहटा की बेटी की बरात गजलदेसर से आई थी। जिसम न अपने गाव से एक नाटक मडली साथ लाये थे। उस नाटक मडली ने दो दिन पहले आकर श्री तानाचन्दजी नाहटा के घर के पास स्टेज (मच) बनाया था। मडली द्वारा भक्त प्रह्लाद और भक्त सूरदास (बिल्वमगल) नाम के दो नाटक खेले गये थे। जिसका गाव के लोगो पर बहुत प्रभाव पडा। उन्ही के अनुकरण मे गाव के कुछ नवयुवक श्री मतापचन्द लाधूराम नाहटा नेमचन्द डिग्मचा बालूराम सरस्वता जयचन्दलाल डिग्मचा मेघराज गोलछा आदि ने नाटक खेलने का कार्य आरम्भ किया। इन व्यक्तियों का अभिनय करने का भारी शौक था। लेखक ने इनके साथ शोभाचन्द जम्मड कृत 'बाल विवाह' म श्री भीखमचन्द नाहटा सहित अभिनय का पाट किया था। इन्ही प्रेरक परिस्थितियो म गाँव के कुछ सभ्य एव शिक्षित युवको का अपने गाव म नाट्य परिषद की स्थापना की ओर ध्यान आकृष्ट हुआ। फलस्वरूप श्री गिरधारीलाल झवर खेतराम स्वामी (प्र० अ०) जयनारायण पारीक (चे०) प० दुर्गादत्त शर्मा नानूराम सरस्वती, काशीराम राठी रूपचन्द नाहटा जोरमल राठी आदि युवको ने बडे उत्साह तथा रुचि के अनुसार स० 1996 म सेवासदन सरस्वती पुस्तकालय की शाखा स्वरूप सरस्वती नाट्य परिषद की स्थापना पर्याप्त धन व्यय कर के की थी।[1] जिसम पर्दो विग झलरियो के सिवाय तरह तरह की पोशाकें अन्य सामान सग्रह किया गया था। दिनाँक 13 9 40 को बार अभिमन्यु नाटक खेला गया जिसे दूर दूर के कस्बो से लोग देखने को आये। फिर धर्मशाला म नाटक के विषय म सरस्वती नाट्य



पहली पक्ति श्री मगलदास काशीराम राठी नानूराम सरस्वती, श्री गिरधारी लाल झवर, खेतराम स्वामी (प्र० अ०) श्री रमाकान्त त्रिपाठी।

दूसरी पक्ति पाछे खडे श्री भवरलाल वर्मा, रामेश्वर झवर रामेश्वर पाडिया।

परिषद्' के सदस्यों की सभा हुई जिसमे 'दानवीर कर्ण' नाटक खेलना निश्चित हुआ। दिनांक 17 10 42 को नाटक खेला गया। सं० 1998 को नाट्य परिषद द्वारा होली के अवसर पर हास्य अभिनय किया गया। तत्पश्चात सं० 2002 भादवा वदी 7 तदनुसार तारीख 30-8 45 को श्रवणकुमार' नाटक खेला गया। इन नाटकों के खेलने के लिए एस० पी०, सदर पुलिस विभाग से स्वीकृति लेनी पड़ती थी।[1]

License for Theatrical Performances at Kalu in favour of Head Master Patta School Kalu, Bikaner

1 The Drama Danvir Karan would be played on 15th August 1942

2 The Government will not recover entertainment Tax as laid down in article 5 of the Bikaner State Entertainment Duty Act 1936 as the performance would be free to the public

3 No performance, which is likely to cause communal excitement religious rivalry or has a political bias will be permitted

Revenue Minister

BG/12 9 42

To D/-

Copy forwarded to the

for information and

favour of necessary action

Revenue Minister

नाटक करने का आदेश

तत्कालीन समय में शहरी सभ्यता और विकसित साधनों से दूर बसे इस छोटे से कस्बे में सरस्वती नाट्य परिषद्' की स्थापना परिषद के नवयुवक सदस्यों की महान सफलता एवं योग्यता की परिचायक थी। नाट्य परिषद् द्वारा वर्षों तक धार्मिक एवं सामाजिक नीतिप्रधान नाटक खेले जाने के कारण इसको अपूर्व प्रसिद्धि प्राप्त हुई। गांव कालू में इस संस्था द्वारा मनोरंजन के अच्छे साधन उपलब्ध करवाये जाते रहे और उत्साहमय वातावरण बना रहा। लेकिन तत्पश्चात गांव में राजनीति का प्रवेश हुआ और गुटबन्दियाँ होने लगी। जिससे अपने आपको बड़े समझने वाले कतिपय लोगों की उपेक्षा-वृत्ति के कारण परिषद की गतिविधियाँ धीरे धीरे कम हो गई। अब तो उक्त संस्था

1 पुस्तकालय की विवरण पत्रिका—पृ० अंतिम

क कार्यों का केवल नाम ही लिया जा सकता है। वर्तमान में कुछ उत्साही व्यापारियों के प्रयत्न से अवश्य उसी स्थान पर कभी कभार अभिनय द्वारा जनता जनार्दन का मनोरंजन कर लिया जाता है। लेकिन नाट्य परिषद् द्वारा पेश किए गये नाटकों जैसा सम्यक अभिनय और साज सज्जा की पूर्णता अब कहाँ ? आज भी गाँव के बुजुर्ग सरस्वती नाट्य परिषद् द्वारा खेले गए नाटकों को याद करके एक सुखद अनुभूति महसूस करते हैं।

कालू की भजन मंडली - भजन मंडली यहाँ की सदा से प्रसिद्ध रही है। भजन गायकों में पहले महंत श्री मेघदास श्री कालूराम वर्मा जेठाराम जाणी सावन कुम्हार मुगनाराम सुनार मुख्य माने जाते थे। आजकल श्री मेघदासजी के शिष्य श्री विष्णुदास की भजन मंडली गाँव में अग्रणी है। जिनमें श्री रामेश्वर नावनियाँ मुख्य गायक है और कानदास मघाराम पारीक, ग्रालदास (बन्ना) स्वामी, नरसी पाडिया आदि अन्य गायक हैं। महंत श्री विष्णुदास की मंडली दूर दूर तक के गाँवों में जागरण देने के लिए जाया करती है।

कालू में शिक्षा प्रचलन—गाँव कालू में बड़े लम्बे समय से शिक्षा का प्रतिरुचिकर प्रसार होता आया है। ई० सन 1908 के समय से गाँव कालू में राज श्री बीकानेर बाबत माह दिसम्बर 1909 रजिस्टर हाजिरी वगैरा विद्यार्थियान पाठशाला कालू' का प्राप्य पुराना रजिस्टर देखने से भी ऐसा ज्ञात हुआ है। उक्त रजिस्टर में राजा महाराजाओं के वर्ष गाँठों की और श्राद्धों की छुट्टियाँ बहुत हैं। हैडमास्टर के नामों में श्री नाथूलाल, शिवबक्स हैं और दस्तखत एक उर्दू में तथा दो अंग्रेजी में लिखे हैं। नवम्बर ई० स० 1909 में जिन छात्रों के नाम हैं उनमें श्री किशनलालयति गिरधारीमल (पुत्र चुन्नीलाल वैद) तोलाचन्द नाहटा (गणेशमल) जैसे अच्छे नागरिक निकले थे। वर्तमान में नरसिंहदास सिंघी (अखेराज) मगतमल (लूनकरन कोठारी) जैसे दो एक व्यक्तियों को अभी भी देखे जा सकते हैं। रजिस्टर सन् 1909 से सन 1911 तक का

हाजिरी रजिस्टर (1909 10 ई०)

है। इनसे पूर्व उपामरे एव रामस्नेहिया की जगरी म प्रारभिक शिक्षा पढाई और हिसाब पढाये जाते थे ऐसा सुना गया है। श्री फूलाराम थवर और शेरमल डूडाणी आदि लोग भी रामस्नेहिया की जगरी मे पढे। श्री रामकिशन खडेलवाल ने अपने पिता श्री चुन्नारामजी के पठन के उल्लेख म बताया कि व गगानाल करनाणी के पास पढे थे जो गाव के लडके पढाया करते थे। सन् 1913 14 के बाद के समय म यहाँ प० गुरुदत्तजी रतन गढ निवासी के पढान का उल्लेख मिलता है। इनके पास तुलसीराम थवर और लालचन्द राठी पढे। ई० सन 1926 27 के आस पास पट्टा स्कूल पुन खुलवा लिया गया था, जो ई० सन् 1930-31 तक रहा। इसके हैडमास्टर श्री आमारामजी शर्मा (रवाडी) भावानदास शर्मा (यू० पी०) और परमानद चौधरी (हरियाणा) रहे थे। इस समय के विद्यार्थियो म गुमानदास बरागी मोहनलाल पटवारी नानूराम सरकर्ता काशीराम राठी रामकिशन खडेलवाल आदि हैं। उस समय चौथा कक्षा की परीक्षा भी बीकानेर जाकर देनी पडती थी। लेकिन ई० सन् 1928 29 (वि० स० 1985) को राज्य म प्रारम्भिक शिक्षा का प्रचार करने के लिए अनिवाय प्रारम्भिक शिक्षा' कानून पास हो गया था।[1] सन 1930-31) म फिर यहा माहेश्वरियों में गुरुदत्तजी आसवालों म श्री शिवप्रतापजी (बीकानेर) प्राईवेट अध्यापक बुला लिए गए। इनसे पढे हुए छात्र श्री पीथाराम, बद्रीनारायण, मोहनलाल रामू और गजमल, जवरी मल नाहटा हैं। इसके बाद ई० सन् 1933 34 मे पट्टे की ओर स श्री सूरजमलजी पालीवाल हैडमास्टर न आकर पुन स्कूल खोला। सन् 1937 म सहायक मास्टर पद पर श्री मगलदास आये और फिर श्री नारायणदत्त। यह पट्टे का प्राथमिक स्कूल सन् 1940 तक चला। ए० वी० पट्टा स्कूल मे पहल प्राइमरी स्कूल की कक्षाओं मे तीन भवरलाल एक कक्षा म साथ पढे (सिंघी, वर्मा और वैद)। हैडमास्टर—सूरजमल जी सेतरामजी वाचस्पतिजी रूपारामजी और गगाराम छीपा रहे। इनके बाद श्री भरूँदान आढा और उदयपाल आय। इस समय छात्रा म तिलोकचन्द करनाणी झवरीमल बोथरा विश्वनाथ राठी, श्रीराम थवर, जगन्नाथ डूडानी, कोडामल वर्मा आदि रहे। सन 1951 में यह स्कूल लोअर मिडिल हुआ और सन 1952 मे पूण माध्यमिक हो गया। मिडिल स्कूल की कक्षाओं म साथ पढे कन्हैयालाल नाम के तीन विद्यार्थी—झवर, वद और सिंघी हैं। हैडमास्टर मात्र एक ही रहे—श्री जयनारायण भागव।

ई० सन 1939 40 मे पाँचवा कक्षा की परीक्षा लूनकरनसर तथा छठी कक्षा की परीक्षा बीकानेर देनी पडती थी। उस समय श्री भवरलाल वर्मा और हनुमानमल डूडाणी न छठी कक्षा का परीक्षा बीकानेर जाकर दी थी। श्री गिरधारीलाल नाहटा और भवरलाल भाट, पाचवी कक्षा की परीक्षा लूनकरनसर— बीकानेर स आये श्री राम प्रसादजी सहल की देख रेख मे' देकर आये थे। सन 1941 म डाइरेक्टर शिक्षा विभाग की तरफ से ए० वी० पट्टा स्कूल कालू की स्थापना हुई और इसके बाद स्कूल का निरतर विकास होता आया है।

ई० सन 1956 से वतमान राज० उच्च मा० विद्यालय है। इसमे कला वग के अध्ययन के साथ सन 1968 से विज्ञान वग का अध्ययन भी होने लगा है। इससे पहले

1 बीकानेर राज्य का इतिहास प्र० भा० पेज 29

कॉमर्स विषय भी था। इस रा० उ० मा० विद्यालय (1956) पर शुरू से आज तक जिन प्रधानाध्यापकों की शासन व्यवस्था रही है, क्रम से उनके नाम इस प्रकार हैं— सर्व श्री एम० एम० बघेरा, वी० डी० चारण, जो० एल० व्यास, सी० आर० आचार्य, एल० डी० शर्मा और के० एस० भार्गव हैं। फिर श्री सत्यनारायण माथुर एवं गंगा प्रसाद शर्मा आये और नवम्बर 1980 से 24 अगस्त 1981 तक प्रधानाध्यापक के रिक्त पद पर श्री रामचन्द्र सोलंकी ने इस विद्यालय का कार्यभार संभाला। वर्तमान में श्री जयनारायणजी पारीक अति योग्य प्रधानाध्यापक हैं। इन से पहले श्री रामचन्द्र गागल भी रह कर गए हैं।

यहाँ प्राइमरी स्कूल का विशाल भवन भी जिले भर में अपने ढंग का अनूठा है। अच्छी संख्या में बालक विद्या लाभ प्राप्त करते हैं। लड़कियों का अपना उच्च प्राथमिक विद्यालय भवन अलग है। इसका निर्माण सन 1975 में हुआ और 1976 सितम्बर में राज्य के भू० पू० मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी ने इसका उदघाटन किया था।

राज० उ० मा० विद्यालय का भवन जो अब देखने योग्य है पहले 1947 ई० में श्री अमर मिडिल स्कूल भवन के रूप में स्थापित हुआ था। सन् 1978 79 में रा० उ० मा० विद्यालय कालू माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की परीक्षाओं का केन्द्र भी हो गया है। महाजन शेखसर, लूनकरनसर आदि तथा अन्य अनेक गावों के विद्यालयों से यहाँ लड़के लड़कियाँ, पढ़ने व परीक्षा देने आते हैं।

हाई स्कूल के पहले प्रयत्न

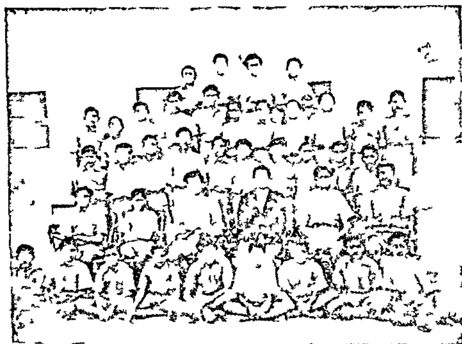
सन 1953 में हाईस्कूल के लिए कालू से भी किसनलालजी वगैरह कई लोग जयपुर गए। मगर उस समय कोई सुनवाई नहीं हुई। 1952 के चुनाव में श्री कुंभाराम आर्य को लूनकरनसर क्षेत्र से कतई वोट नहीं मिले। कालू के लोग भी साथ नहीं हुए और तत्कालीन सरपंच चौ० मूलाराम के घोर विरोध की बातें भी जयपुर के मंत्रीमंडल तक पहुँच चुकी थीं। तीसरी बात यह हो गई कि श्री हँसराज आर्य जो कि कुंभाराम के अभिन्न सहायक थे के हाथ में गोली लग गई और उनकी धर्मपत्नी बहुत बीमार थी, ऐसे संकट के समय श्री किसनलालजी यति से श्री आर्य ने कर्ज रूप एक हजार रुपये मांगे, पर श्री यति बातों बातों में टाल गये। तब श्री किसनलालजी को भी हाई स्कूल का श्रेय कैसे मिले? ऐसी पुरानी दोस्ती क्या? कि समय पर उठने के लिए तिनके रूप तनिक सहारा भी नहीं दे सके? बस, यति के तत्सामयिक पार्टीजन एवं स्वयं जयपुर जाकर खाली हाथ लौट आये।

कतिपय सुधारक शिक्षित बन्धुओं के दौरे पर भी जयपुर में उनकी नजर नहीं खुली। तब वविध्य विषय विचारक श्री गिरधारीलालजी डावर ने इन पंक्तियों के लेखक के लिए सोचा कि नातूराम मास्टर और हँसराज जी पटवारी ठिकाने के समकालीन कर्मचारी साथ रह हुए हैं और दोनों ही आर्य समाजी, अतः यह द्वय सज्जन सम विचार हैं। श्री हँसराज कुंभाराम जी आदि मंत्रियों के अगवानी कार्यकर्ता हैं और सरकारी भी वर्तमान में अपने मंडलीय आदमी हैं, इसलिए इन दोनों को कालू की सही सत्य स्थिति से लाकर हाई स्कूल स्थापित करवाने का कार्य सुलभ करवाया जा सकता है।

फिर क्या था ? भाईजी के दृढ़ श्रम विचार 21 जून 1954 की सध्या मुझ साथ लेकर बस पर जा जमे।

23 को 9 बजे सुबह रेल से जयपुर जा उतरे। आगे सप्ताह भर स गया हुआ श्री गगाविसन बागडी प्रतीक्षित प्रस्तुत मिला। उसने बताया कि गोपालचन्द और

राजकीय उच्चतर माध्यमिक स्कूल कालू बीकानेर के 1960 61 सत्र मण्डली के सदस्य



पक्ति नीचे बठी हुई (दाये से बाये) हसराज सेठिया मानकचन्द वद भूमर मल नाहटा पृथ्वीसिह शेखावत विजयसिंह वैद जुगराज मसाना चम्पालाल सेवग मालचन्द शर्मा।

दूसरी पक्ति पहली पक्ति के पीछे (कुर्सी पर बठे) बजलाल डूगाणी आरा राम गिया श्रीधर शर्मा (व अ) भन्दान जी चारण (प्र अ) हनुमान मल चौबरा ईश्वर राम चौधरी।

तीसरी पक्ति म जगदीश चौधरी किरण नाहटा पूनमचन्द गिया बशीलाल पीपळवा केशरीचन्द धाडेवा विजयसिंह सिंघी बाबूलाल सिंघी रामेश्वर लाल राठी रामकुमार पारीक लिछमीनारायण पीपळवा।

चौथी पक्ति पीछ लाभूराम नण विजयसिंह तातेड, देवीलाल खाडन कन्हैयालाल नाहटा मालनाथ योगी धमचन्द बोथरा मोहनलाल खाडल सूरजाराम चौधरा, रतनलाल नाहटा मागीलाल पारीक।

पाचवी पक्ति पक्ति इन्द्रचन्द्र नाहटा शकरलाल करनाणी नाथराम नाहटा क्षवरीलाल भादानी।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बालू (बीकानेर)
(छात्राओं का ग्रुप सन 1970-71)



नीचे बैठी हुई (बायें से दायें) कु० दुर्गा कु० गायत्री कु० तारा कु० सूरज कु० उर्मिला कु० विजय लक्ष्मी।

कुर्सी पर बैठे हुए (बायें से दायें सर्वश्री जुगीलाल चौधरी (व अ रसायन) रामकिशन (स अ) मदन मोहन (स अ)। शम्भूनाथ शर्मा (प्र स रसायन), नानराम सक्सेना (स अ) महादेव प्रसाद आचार्य (व अ ना शास्त्र) सुन्दरलाल थानवी (व अ इतिहास) चाँदरत्न आचार्य (प्रधानाध्यापक) गौरीशंकर जोशी (व अ अंग्रेजी) लियाकतअली खां (स अ विज्ञान) जकिउद्दीन सिद्दीकी (व अ विज्ञान) केशरमल चौधरी (स अ), सुभाषचन्द्र कोहली (व अ गणित)।

पंक्ति में खडी हुई (बायें से दायें) कु मगनी कु भवरी कु स्नेहलता कु रेशमी कु इन्द्रा कु राजबहिन सरस्वती कु लीला कु विमला कु तारा कु उर्मिला कु लीला कु उषा कुमारी कु मिथलेश कु सन्तोष।

हुकमचन्द दोनों तो आप आश निराश होकर कलकत्ता गये। मैं आपके पत्रानुसार इन्तजार कर रहा हूँ। हाई स्कूल खुलने की संभावना तो अभी बहुत दूर प्रतीत होती है। इस पर भाईजी ने पूछा तुम लोग किस किस से मिले हो?' बागडी ने कहा हम सब संबंधित लोगों से मिले हैं व तो पूरी बात भी नहीं सुनते?'

श्री गिरधारीलाल जी ऐसी सार्वजनिक समस्याओं के मध्यस्थ पावित प्राणी उनके हृदय पर बागडी की बातों का कोई असर नहीं हुआ। वे नहीं बोले—फकत

मुस्करा दिये। रेल्वे स्टेशन के पास वाली धर्मशाला मे डेरे डालकर चाय पान किया। फिर मुझे सारी बातें समझाकर गंगाविशन के साथ कर दिया। वह मुझे सिविल लाइंस के 16 नम्बर बंगले ले गया। बंगले के प्रवेश म बाई आर ही हँसराजजी का मकान मैंने वहाँ जाकर भाईजी के बताये अनुसार सारे विचार बताकर दिन भर वही गुजारा। कुंभाराम जी की माताजी के वात्सल्यमय हाथो जल पान किया और बाद दोपहर के चौ० सा० क साथ जाकर कांग्रेस की मिटिंग देखी। फिर उसके बाद विधान सभा की गैलरी म बैठकर विधायको के वाद विवादो का आनंद उठाया। पाच सात दिन

Rajasthan Legislative Assembly

NOT TRANSFERABLE

VISITOR'S CARD  No 16757

PUBLIC GALLERY

ADMIT Shri Nanu Ram

to the meeting of ASSEMBLY to be held in the Assembly Chamber on Wednesday

the 2nd June 1954

Issued through Shri Kumbha Ram M L A

M R PUROHIT

S cretary

(हस्ता चौ० मिर्जा)

चेष्टा म रह तथा वहाँ कालू के डेपूटेशन की बात फल गई। परन्तु हाई स्कूल स्वीकृति की किसी न हाँ नही भरी। चौ० श्री रामचन्द्र ने हनुमानगढ कोट मे अपनी हाई स्कूल की स्वीकृति ले ली था। लेकिन भवन न होने की वजह से आदेश नही मिला। हमने अपने बनाये गाव के भवन का भी वहा एक निरीक्षक स साबित करवा दिया। श्री रामचन्द्र से भी अनुनय की कि "आप की स्वीकृति हम दे दो।" फिर हम अपने क्षेत्रीय विधायक श्री जसवंतसिह जी के पास गये। वे अपनी कार मे हम तीनो को बठा कर मास्टर भोलानाथ, (तत्सामयिक शिक्षा मंत्री) के पास ले गये। लेकिन उस साल प्रयास निष्फल ही रहा। अगले साल क लिए सब न (मुख्य मंत्री श्री जयनारायण व्यास तक न) हा भर दी। पर तु रूठे हुए चौ० कुंभारामजी के मंडल को हमने राजी किया और उनकी कोठी म हम एक पार्टी दी गई 'अब हम एक हैं। अगले साल कालू का हाईस्कूल पक्का हो गया।'

आना जाना और पत्र व्यवहार का सम्बध बना।[1] 1956 के माच के चलते विधान सभा क सत्र म लेखक और जेंवरीमल नाहटा वहाँ मिलने गये। सभा के अर्द्धावकाश म श्री हँसराज आर्य न पुस्तकालय म हम दोनो को बठे दिखाकर मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया को लाकर बताया कि गत वर्ष की बात पर हाईस्कूल

---

1 सन् 1982 मे छ लाख रुपया की स्वीकृति रद्द हो गई छात्रावास नही बना और अन्य कई कारणो की उपस्थिति से माध्यमिक बोर्ड की परीक्षाओ का केन्द्र और उच्च माध्यमिक विद्यालय की मान्यता किसी भी समय समाप्त होने की ऐसी संभावना बन गई है।

खुलवाने के लिए "कालू का डेपूटेशन फिर आ गया है ?" श्री सुखाडिया ने झट कह दिया— अवश्य ! इस साल सब से प्रथम कालू का स्कूल ही पास होगा।"

मई में कुम्भारामजी कालू आये और धर्मशाला भवन के तादवीय मंच स्थान पर सभा की। उन्होंने कहा— आपके गांव से हाई स्कूल की मांग थी। हमने हायर सकेण्डरी के प्रस्ताव पास करवा दिए हैं। आदेश पहुँच जायेगा।'



कालू में श्री कुम्भाराम आर्य

यथा समय (10-6-56 को) लेखक के पास हँसराजजी का पत्र आ गया कि "आपका हाई स्कूल मंजूर होकर डाईरेक्टर साहब के पास बीकानेर चला गया है।

कालू में शिक्षा की डिग्रियाँ प्राप्त करने वाले—यहाँ के गावों में पहले शिक्षा देने वाले स्कूलों का भारी अभाव रहता था। शिक्षा गाँव के धार्मिक गुरुओं द्वारा दी जाती थी, जिसमें परीक्षा देने का कोई सिलसिला नहीं रहता। सन् 1932 तक कालू का स्कूल में केवल अध्ययन ही कराया जाता था, परीक्षाओं का आयोजन नहीं किया जाता। अंग्रेजी भाषा के अध्ययन का प्रचलन बिलकुल नहीं था। इसलिए गांव के कुछ प्रतिभाशाली एवं अध्ययनरत छात्र हिंदी व संस्कृत की परीक्षाएँ ही बाहर जाकर दिया करते

1

जयपुर

श्रीमान नारूरामजी नमस्ते

सुखाड़ियाजी मुझे कह गये हैं

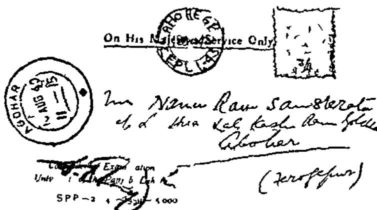
इसीलिए मैं आप को सूचना दे रहा हूँ कि आप

का हाई स्कूल मंजूर होकर डाईरेक्टर सा

के पास बीकानेर चला गया है तो आप मानो

मंजूर हो गया है आप के गांव मे [illegible]

थे। इसलिए उनको बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। लेखक स्वयं अपनी तत्समय की पहली एक हिंदी परीक्षा संबंधी कथा बता रहा है। ई० सन् 1940 फरवरी मे हिंदी भूषण की परीक्षा के लिए पंजाब का नागरिक (जाली) बनकर पंजाब यूनीवर्सिटी से फार्म भरना पड़ा। पत्र व्यवहार का पत्ता भी हीरालाल काशीराम गोलछा, अबोहर का लिखा जो नाहटा के संबंधी हैं। विद्या भवन गणपत रोड, अनारकली द्वारा शीतला कालेज के छात्र बनकर फार्म तस्दीक करवाया। 13 मई सन 1940 को ला कॉलिज मे परीक्षा आरम्भ हुई। दस दिन वहां रहना पड़ा, परीक्षा समाप्त होने पर लायलपुर, रावी नदी, शहीदगंज (स्थान विशेष) अमृतसर आदि स्थान देखे। मगर परीक्षा फल देखा तब रोना आ गया। खैर! दूसरे साल उतनी मेहनत से लाहौर जाकर परीक्षा



दी और उत्तीर्ण होकर हिंदी भूषण का प्रमाण पत्र प्राप्त किया। फिर सन 1950 में शर्मा कॉलेज रानी बाजार, बीकानेर के प्रिंसीपल द्वारा प्रभाकर का फार्म भरा, परीक्षा केन्द्र अबोहर हाई स्कूल मिला। परीक्षा देने गया तो रोल नम्बर नहीं आये। जब यूनीवर्सिटी लाहौर नहीं सोलन (शिमला हिल्स) थी। रोल नम्बर के लिए तार दिया किंतु खाली हाथ घर लौटना पड़ा। दूसरे वर्ष पत्र व्यवहार करके दूसरा परीक्षा शुल्क जमा करवाया और सन 1951 की परीक्षा मे मुश्किल से सम्मिलित हो सका। दिल्ली आर्य समाज भवन मे परीक्षा केन्द्र रहा। एक प्रश्न पत्र दे देने के बाद वहीं से प्रमाणित जन्म-तिथि अनिवार्य रूप से मांगी गई। लाओ, नहीं तो परीक्षा से वंचित। अतः मेरे मित्र श्री तुलाराम गौड़ प्राध्यापक जामिया मिलिया बेसिक प्रशिक्षण (ओखला) के पास पहुँचा। वहां के प्रधानाचार्य डॉ० श्री जाकिर हुसन थे।[1] श्री गौड़ की प्रार्थना करने पर भी प्रधानाचार्य महोदय ने मेरी जन्म तिथि प्रमाणित नहीं की। तब श्री गौड़ के बताये अनुसार कई हायर सकेण्डरी स्कूलों में और मजिस्ट्रेट के पास तक गया। आखिर जाट कॉलेज, नई सड़क के प्रिंसीपल श्री टीकाराम की दया भावना से जन्म-तिथि प्रमाणित करवा कर ठीक परीक्षा शुरू होने के समय परीक्षा हाल में जाकर बैठा और प्रभाकर (आनर्स इन हिंदी) में पास हुआ।

---

1 डा० श्री जाकिर हुसैन—जो आगे जाकर देश के राष्ट्रपति बने थे।

परीक्षा के दौरान लाहौर मे एक बार साम्प्रदायिक मुसलमानो की पार्टी की भीड म बुरी तरह फँस गया था। किसी तरह एक भले मुस्लमान की दुकान म छिपकर जान बचाई।" ऐसे ही श्री दुर्गादत्तजी को भी बिना परीक्षा दिये बनारस से दो बार खाली लौटना पड़ा था। बनारस म हिन्दू मुस्लमानो के साम्प्रदायिक झगडे के कारण मार्शल ला लागू था। अत वे उक्त समय परीक्षा से वचित रह गय।" अब। देश आजाद हुआ शिक्षा का प्रभाव बढा और कई शिक्षा सस्थाओ की स्थापना की गई। सन 1956 से कालू मे राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मे कक्षा 11 तक की कला एव विज्ञान वर्ग की पढ़ाई होती है। अग्रेजी भाषा का अध्ययन भी अनिवार्य विषय के रूप मे करना पडता है। कालू की हायर सकेण्डरी स्कूल मे पढे हुए व अन्य प्राइवेट छात्रो की वार्षिक बोर्ड की परीक्षाएँ भी यही होने लग गई हैं। यहाँ की शिक्षा प्राप्त करने के बाद ही गाव के युवको को विद्याध्ययन हेतु बाहर जाना पडता।[2]

डिग्रिया शिक्षा की हैं, जिनका प्रभाव बडा व्यापक दृष्टिगोचर होता है। इनके अनेक स्तर हैं जो किसी भी विश्वविद्यालय की परीक्षा उत्तीर्ण करके प्राप्त किए जाते हैं। इनसे जीवन के आदर्शों का निर्माण होता है और सभ्यता का विकास तथा आत्मा की भावनाएँ उदात्त बनती हैं।

कालू म शिक्षा की सुधा धारा प्राचीन काल से बहती आई है। कई कालो म इसके प्रवाह का पानी गहरा हुआ है और कभी कभी कम। समयानुसार इसके वेग का रूपान्तरित होना पाया जाता है, मगर सूखापन कभी नही।

पहले ये डिग्रिया भारतीय शिक्षा सस्कृति तथा उसके अध्ययन अध्यापन के ढग से हुआ करती थी। आजकल इस पर विदेशी शिक्षा स्तर का प्रभाव है। दुख तो यह है कि आचार्य विद्यावाचस्पति विद्या महोदधि, उपाध्याय शास्त्री विशारद प्रभाकर भूषण जैसी परीक्षाओं का आज के लोग जानते भी नही हैं। भारतीय होकर भारत की सस्कृति को न जानना महान दोष है। ऐसी विशिष्ट डिग्रियों के प्राप्तकर्ता व्यक्तियो के कुछ नाम दिये जा रहे हैं जो सभी कालू के निवासी हैं और वर्षों पूर्व अपने छोटे से ग्राम मे अध्ययन रत रहकर बडी दुविधाओ के साथ परीक्षाएँ दी हैं।

1 प० दुर्गादत्तजी सारस्वत—शास्त्री और साहित्य भूषण बनारस।
2 श्री नानूराम संस्कर्ता—हिन्दी भूषण (1941) हिन्दी प्रभाकर (आनर्स इन हिन्दी) (1951) पजाब हिन्दी विशारद(1955), साहित्य रत्न (1958) प्रयाग साहित्य महोपाध्याय (समकक्ष पी० एच० डी०) (1968)।
3 हिन्दी प्रभाकर' (पजाब)—श्री गोवर्धन शर्मा (1953)।
4 'सस्कृत भूषण' मे श्री मोहनलाल सारस्वत रामकृष्ण खडेलवाल मालचन्द पटवारी और लेखक (1941) आदि हैं।
5 'हिन्दी विशारद"—श्री रामप्रसाद पारीक (1955) भरू दान आशा, बनालाल चिरमैना, दुर्गाराम शर्मा आदि सब (1960) हैं।

---

2 पहले चौथी अथवा फिर आठवीं कक्षा करके यहाँ के लडके बीकानेर जाकर हाई स्कूल करते थ।

1 वतमान शिक्षा पद्धति मे कालू के निम्नलिखित निवासी वाणिज्य स्नातकोत्तर (एम० काम०) है—श्री जुगल किशोर नाहटा (1963), जोराराम गिया (1971), अमृताराम शर्मा (1978), मगनलाल राठी गेरमल ववर ( ), महेन्द्रकुमार नाहटा (1979) बशीलाल खडेलवाल (1983)।

2 कालू के निम्नलिखित निवासी विज्ञान स्नातकोत्तर (एम० एस० सी०) है—श्री बद्रीनारायण रमन (1971), सीताराम खडेलवाल (1975) और शुभकरण नाहटा (1973) प्रभृति।

3 कालू के निम्नलिखित निवासी कला स्नातकोत्तर (एम० ए०) हैं—श्री किरण नाहटा, अमृताराम शर्मा (1971), बशीलाल खडेलवाल (1972), सोहनलाल बोथरा, नन्दलाल बर्वा, तीथराज सस्कर्ता (1979) श्यामसुन्दर सेवदा, शिवराज सस्कर्ता (1981), कु० अजना सेवदा।

4 कालू के निम्नलिखित निवासी डॉक्टर ऑफ फिलासफी (पी० एच० डी०) एव उसके समकक्ष (इक्यूलेंट) साहित्य अनुसधानकर्ता है—डा० महा० नानूराम सस्कर्ता (1968 ई०) डा० किरणचन्द नाहटा (1973 ई०)।

5 कालू के निम्नलिखित निवासी डा० आफ मेडिसन (एम० डी०) हैं—डा० बद्रीनारायण रमन, डॉ० अमोलक गोलछा।

6 कालू का चार्टर्ड एकाउटेट (ए० सी० ए०) श्री सोहनलाल बोड है।

7 कालू के निम्नलिखित निवासी दवा और चिकित्सा के स्नातक (एम० बी० बी० एस०) हैं—श्री ओमप्रकाश खडेलवाल बाबूलाल नाहटा।

8 कालू निवासी श्री अमृताराम शर्मा शिक्षा स्नातक (बी० एड०) (1970) है।

9 कालू के निम्नलिखित निवासी वाणिज्य स्नातक (बी० काम०) हैं—सर्व श्री हनुमानमल डूढाणी (1952), नन्दलाल राठी (1961) नन्दलाल शर्मा (1962) शकर लाल राठी (1963), हनुमानमल राठी (1963) औंकारमल बागडी (1964) लाभचन्द साड, गौरीशकर झवर (1965), जेठमल डूढाणी, बृजलाल डूढाणी, कन्हैयालाल नाहटा, बाबूलाल गोलछा, शिवनारायण ववर रतनकुमार नाहटा धर्मचन्द बोथरा (1968), नगराज नाहटा (1967), रामकिशन झवर, भवरलाल राठी (1974) ओमप्रकाश झवर अमरचन्द नाहटा, पानमल नाहटा, **चन्दनमल बोड** सुरेन्द्र नाहटा (1978) कृष्णकुमार बर्वा जुगराज नाहटा (B) जगमाल सेठिया (1975) सत्यनारायण झवर, लक्ष्मी-नारायण ववर भवरलाल पारीक, सम्पतकुमार डूढाणी (1978), पूनमचन्द सिंघी महावीर बिरमेचा (1979) सुरेश डूढाणी (1979), महावीर डूढाणी (1979) रमेश-कुमार नाहटा विमलकुमार बागडी मागीलाल झवर (नेपाल) कमलकुमार बागडी चम्पालाल साड (1979) महावीर प्रसाद पाडिया (1974) इन्द्रचन्द झवर (1981) मदनलाल बोथरा (1981) कन्हैयालाल साड, रामकृष्ण सेवदा, धर्मचन्द नाहटा, श्याम सुन्दर बोथरा, ओमप्रकाश बोथरा, गुलाब डूढानी, पवनकुमार राठी मानिकचन्द व सुरेन्द्र गोलछादि।

10 कालू के निम्नलिखित निवासी कला स्नातक (बी० ए०) है—

(अ) श्री जगदीशप्रसाद खडेलवाल (1967) शकरलाल करनाणी (1969),

रामेश्वरलाल राठी (1969) रतनलाल राठी (1970) भूमरमल नाहटा, मालचन्द खडेलवाल (1973) केशवप्रसाद खडेलवाल (1977) जितेन्द्रकुमार नाहटा (1979) अनाराम आय (1979), विमनसिंह नाहटा (1979), मालचन्द सारस्वत, इन्द्रचन्द भाटी नारायणदत्त मिश्रा बाबूलाल बोथरा प्रदीपकुमार राठी विजयसिंह नाहटा निर्मलकुमार नालखा सुशीलकुमार विरमचा आदि।

(ब) कला स्नातक लडकियां—कु० तारा नाहटा, मजू डूढाणी (1979) सविता डूढाणी श्रीमती सरोज बोथरा (अध्यापिका सिक्किम), कु० कुसुम नाहटा (1982) एम डी वि वि रोहतक कु० कचन नाहटा (1982) कु० बबी नाहटा, मजू सठिया, प्रेमलता राठी, कु० सतोष नाहटा।

11 (A) कालू के निम्नलिखित निवासी विज्ञान स्नातक (बी० एस० सी०) हैं—डा० ओमप्रकाश शर्मा, जुगलकिशोर राठी सोहनलाल बोथरा, गोवर्धनलाल स्वर्णकार, ललितकुमार नाहटा आदि।

11 (B) विज्ञान स्नातक लडकियाँ—सुखमाल कोठारी (1970) लीला स्वामी (1980), विजयलक्ष्मी सेवग (1983)।

12 कालू के निम्नलिखित निवासी विधि (कानून) स्नातक (एल एल बी) हैं—श्री चन्द्रराज कोठारी (1968) रतनलाल शर्मा (1978) शिवराज सरस्वती (1979), धमचन्द बोथरा (1971) बन्सीलाल खडेलवाल (1980) हरिप्रसाद राठी (1980), देवीलाल खाती (1982) गिरधारीलाल खडेलवाल देवेन्द्र कोठारी रवीन्द्रकुमार नाहटा (1983)।

13 (A) कालू से निम्नलिखित नवयुवकों का महाविद्यालीय वाणिज्य स्नातक तक का नियमित अध्ययन किया हुआ है—श्री आसकरण राठी श्री इन्द्रचन्द नाहटा, सूर्यप्रकाश डूढाणी।

13 (B) स्नातकीय शिक्षा के अन्तिम वर्ष के दिनों में विवाह निश्चित हो जाने के कारण परीक्षा से वचित रह जाना पडा, उन मेधावी लडकियों के नाम हैं—कु० दमयती राठी कु० उर्मिला नाहटा कु० कमर बाठ।

वर्तमान समय में कालू के अनेक युवक उच्च शिक्षा में अध्ययनरत रह कर गाव में शिक्षा के महत्व को निरन्तर बनाये हुए हैं। परन्तु काल में सकण्डरी पास करने वाली पहली लडकी सरोज नाहटा (अब) पुगलिया है तथा गाव का पहला ग्रेजुएट H M Dudhani[1]

उपाधि पदक और सम्मान सूचक पुरस्कार—यद्यपि प्राचीन काल में मानव कार्यों की योग्यताओं को सूचित करने के लिए आदर प्रतिष्ठा आत्म सम्मान, अभिनंदन, अभिशंषा, प्रोत्साहन बधाई देना स्वागत करना आदि के आनन्ददायक एव प्रसन्नता प्रभृति के समयोपयुक्त सुयशपूर्ण तरीके प्रचलित थे। परन्तु वर्तमान समय तो पग पग प्रतिष्ठा का युग है। इसमे मनुष्य के काम की ओज उज्ज्वलता का अवलोकन अवश्य होता है और विभिन्न मान्यताओं के माध्यम से उसे सम्मान व गौरव मिलता है। अत काम आज का युग धर्म है, जो सुन्दरता एव शालीनता सहित सम्पन्न होने पर राज्य

सरकार संस्थान परिषद कस्बा व नगर तथा व्यक्ति विशेष की ओर से कमठ कार्य-कर्ता जन प्रमाण पत्र उपाधिया पदन पदविया सनद सिरोपाव एव पुरस्कार प्राप्त करते हैं।

विश्वविद्यालयो से विद्यार्थियो को मात्र शिक्षा की उपाधिया दी जाती हैं। जो आदमी जितना भी पढकर परीक्षोतीण हो लेता है— तब उसके तानानुसार उस डिग्री दी जाती है। एम ए, एम काम एम एस सी तथा एल एल एम जसी अनक पढाई की डिग्रिया आदमी की शक्षिक स्तर के क्रम से वितरित होती हैं। किसी विषय क पारगत विद्वान को विश्वविद्यालय पी एच डी (डाक्टर आफ फिलासफी) डी लिट महामहोपाध्याय जसी डिग्रिया भी प्रदान करता है। य पढाइ की उपाधियो से पृथक महत्व की होती हैं। पढाई के प्रमाण पत्र तो मनुष्य के शिक्षा ज्ञान परिचायक साधन होते हैं जिनके सहार उसकी योग्यता सिद्ध होती है। किन्तु य दूसरे सम्मानीय खिताब मनुष्य की विशिष्ट काय कुशलता के रूप मे दिये जाते है।[1]

तेरहवी शताब्दी म मीनम उपत्यका मे दा थाई सरदार कम्बुज के सामत के तौर पर रहत थे उनम से एक को कम्बुज राजा ने 'श्री इन्द्रापत्ती प्रादित्य' की उपाधि दी थी।[2] अपने यहा भी अपूर्व शौयवीय के कारण लोग सम्मान से अशोक महान कहलाता है। मराठा वीर शिवाजी का 'सरजा'[3] की उपाधि थी। औरगजेब के जमाने म साहस बहादुरी के कारण बीकानेर के राजा करणीसिंह को 'जय जगलधर बादशाह' की उपाधि मिली थी। बीकानेर के डागा अबीरचन्द रामरतनदास की उच्च दान-शीलता के लिए अग्रेज सरकार न "राय बहादुर" "दीवान बहादुर" "सर" "सी आई ई", और "के सी ई" के उच्च खिताब देकर दाता की प्रतिष्ठा वद्धि की थी। ई सन 1902 म सम्राट एडवड ने हरिसिंह सनासर का जो ठिकाना छत्रगढ के सुपर-वाइजर थे, 'कारानेशन मेडल तथा 'सी आई ई" और 'ओ बी ई' के खिताब दिये थे। ऐसे खिताब लेन वालो मे महाजन के राजा श्री हरिसिंह को 'राव बहादुर" सन 1928 म और फिर 'सी आइ ई" का खिताब मिला था। खियरा के ठाकुर बनसिंह सुरनाणा के भूरसिंह और कु भाणा के दौलतसिंह को राव बहादुर" तथा गनासर करणासर के गुलाबसिंह को भी 'राव बहादुर' तथा किंगजाज कारोनेशन मेडल मिल थे। परतु सहजरासर के ठा० धनपतसिंह वद मेहता के पूर्वजों को पुरान समय से 'राव' तथा महाराव' की राज्य उपाधिया मिली हुई थी। बीकानेर राज्य मे पद राजा ठाकुर और ताजीम की उपाधिया तथा छडी कडा, खास रुक्का एव सिरापाव के सम्मान मिलते थ।[4] इ० सन 1946 म गाव कालू के श्री किशनलाल यति

---

1 भारत रत्न पद्म विभूषण पद्म भूषण पद्म श्री, ज्ञानपीठ पुरस्कार राष्ट्र भूषण पुरस्कार, नोबल पुरस्कार नेहरू पुरस्कार कलिंग पुरस्कार अजुन पुरस्कार आदि प्राप्त उपाधियो—पुरस्कार देने की सुव्यवस्था भी यहा हैं।

2 बौद्ध सस्कृति—थाई भूमि (स्याम), पृ० 210 ले० श्री राहुल साकृत्यायन।

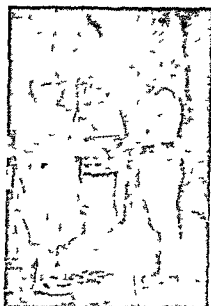
3 सरजा = सिंह

4 बीकानर राज्य का इतिहास भाग—द्वितीय पृ० 766-67।

श्री सुगनमल नाहटा और श्री रामनारायण बालचन्द बवर को बीकानेर राज्य से स्वर्ण छड़ी का सम्मान मिला था। उस समय श्री फतेचन्द बोथरा को स्वर्ण कड़े का मान दिया गया था। तब लेखक को भी 'रळायण' काव्य बाबत पुरस्कार एवं सनद हासिल हुई थी।

पदक—कोई बहुत अच्छा कमाल का काम होने पर किसी प्रशंसित व्यक्ति को उपहार के रूप में दिया जाने वाला सोने चाँदी आदि के सिक्के जैसा गोल या अन्य आकार का मढ़ा सजा हुआ कलित टुकड़ा जिस पर प्रायः देने वाले का नाम भी अंकित रहता है। ऐसे विशिष्ट पदक सैनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मिलते हैं, जो वीरता, शौर्य प्रदर्शन व सेवा कार्य के लिए "परमवीर" "महावीर", "अशोक चक्र", 'वीर चक्र", 'शौर्यचक्र', 'कीर्तिचक्र" परम विशिष्ट सेवा पदक", 'अति विशिष्ट सेना सेवा पदक" 'अति विशिष्ट सेवा पदक" आदि नामों से राजकीय प्रतिष्ठा—पदक प्रचलित हैं।

कालू के कावड़सीमाड़ी ग्राम गारबदेशर के सूबेदार श्री सादूलसिंह को प्रथम विश्व युद्ध विजेता के रूप में मेडल मिला था।[1] वर्तमान में उनके पौत्र लेफ्टीनेंट कर्नल जगमालसिंह, कमांडिंग आफिसर (13 ग्रिनेडियरस) को पाकिस्तान युद्ध (1971) विजेता



1 तत्समय का एक पदक विक्टोरिया क्रास का तमगा। घड़सीसर के मेजर दीपसिंह ने चीन युद्ध—1900 में एक बटालियन का नेतृत्व किया। उसके पुत्र मेजर जनरल शिवदत्तसिंह को किंग कमीशन दिया गया। दीपसिंह के द्वितीय पुत्र किशनसिंह को 1947 में पाकिस्तान के विरुद्ध युद्ध में भाग लेने व वीरता प्रदर्शित करने के लिए 'महावीर चक्र" प्रदान सम्मानित किया गया। हरियासर के छोगसिंह ने प्रथम विश्व युद्ध में गंगा रिसाला की ओर से भाग लिया व रूस की ओर से इन्हें 'रशियन आर्डर ऑव द् क्रास ऑव सेन्ट जार्ज" प्रदान किया गया।

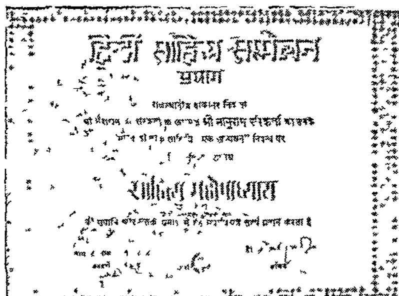
के रूप मे राष्टपति श्री वा वी गिरी ने 'वीरचक्र" पदक भेंट किया। उनके अनुज लेफ्टीनेंट कनल लक्ष्मणसिंह को भी कई मेडल मिले हैं। सन् 1965 म भारत पाक युद्ध मे स्व० श्री पूर्णसिंह (मणेरा) न 'वीर चक्र" अर्जित किया। इसी वष कच्छ युद्ध म गडरा रोड पर उनको वहा के सरपच की ओर से अभिनदन पत्र और शाल के सादर उपहार मिले थे। इन पक्तिया के लेखक को कई सस्थाओ से अनेक बार मेडल मिले हैं। भारत की जनगणना मे 5 बार (ई० सन 1931 से 1971 तक) *असाधारण उत्साह* एव उच्च कोटि की काय कुशल सेवाओ के लिए राष्टपति रजत पदक मिला हुआ है।



लेखक को राष्ट्रपति से मिला रजत पदक

सन 1899 के भीषण अकाल के समय राव बीकाजी के वशज महाराजा गगासिहजी अपन राज्य मे स्वय भिन्न भिन्न गावो और तहसीलो म गय तथा प्रजा क दुख को दूर करन का प्रयत्न किया। अत महारानी विक्टोरिया न प्रसन्न होकर उन्हे "कसरे हिन्द" स्वण पदक प्रदान किया। इसी तरह बीकानेर के समाज भूषण प० श्री विद्याधरजी शास्त्री, एम० ए०, 'विद्यावाचस्पति" के सम्मान से राष्ट्रपति द्वारा विभूषित किए गय। प्रो० नरोत्तमदासजी स्वामी को भी अपने गौरवमय कार्यों के लिए बीकानेर राजकीय सनद (सन् 1927), महाराजा गगासिंह स्वण जयती मेडल (सन् 1937) तथा महाराजा सादूलसिंह मेडल (सन् 1944) मिला था। सन 1972 म राजस्थानी साहित्य अकादमी द्वारा श्री स्वामी का साहित्यिक सम्मान किया गया। कालू निवासी प० श्री दुर्गादत्तजी शास्त्री का डूगर महाविद्यालय बीकानेर की राजस्थान सस्कृत परिषद की ओर से माच 1978 म सम्मान किया गया तथा उन्हें अभिनदन पत्र प्रदान किया गया। सा० महा० श्री नानूराम सस्कर्ता को सस्कृत भूषण' पदवी लब्धवान (दिग्दर्शनव्याम् 1596 विक्रमाब्दे) कानीस्थाखिल भारत वर्षीय सस्कृत परीक्षा समिति की ओर स मिली तथा स्काउट-मास्टर" एव "कब मास्टर' की उपाधिया राजस्थान स्टट भारत स्काउट्स व गाइड्स ने क्रमश ई० स० 1951 व 1957 म प्रदान की। वि० स० *1996 म सस्कृत कायालय अयोध्या* न 'प्रतिष्ठा-पत्रम्" (काव्य मनीषी) की उपाधि प्रदान की थी। हिन्दी साहित्य मम्मेलन प्रयाग द्वारा 28 जनवरी 1967 ई० म

संस्कृत का 'साहित्य महोपाध्याय'' का उपाधि पत्र प्रदान किया गया और सन् 1977-78 में राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कार प्रदान कर साहित्यिक सम्मान किया गया। सन 1977 में राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति से 'साहित्य श्री'' की उपाधि मिली। श्री किरण नाहटा को अपने शोध प्रबन्ध पर राजस्थान विश्वविद्यालय की ओर से सन 1974 में 'डा०'' का उपाधि पत्र मिला।


हिन्दी साहित्य सम्मेलन

प्रयाग

साहित्य महोपाध्याय

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

पुरस्कार-प्रमाण-पत्र

श्री नानूराम संस्कर्ता कालू (बीकानेर) को राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा उनकी कृति लक्ष्मणाधणी पर सन 77-78 में स्वर्ण-रु. का अकादमी पुरस्कार (राजस्थानी पद्य) प्रदान किया गया।

निदेशक
राजस्थान साहित्य अकादमी

अध्यक्ष
राजस्थान साहित्य अकादमी

उदयपुर,
दिनांक

चिकित्सक और चिकित्सा भवन—कालू में पहले पुराने ढंग से वैद्यों और हकीमों द्वारा ही इलाज होता था। दो चार देशी दवाइयों के नुसखे याद रखने और रोगी को संभाल लेते थे। छोटे गांवों में पहले कई आदि वैद्य भी होते थे। जो गम हो चाहे शद कुलडिय वाली उकाली कुटकी चिरायता तथा तम्ब (इन्द्रायण) की जड से इलाज करते थे। पर कस्बा होने के नाते कालू में ऐसे मूर्ख वैद्य नहीं थे। साधु महात्माओं के सहित यहाँ सब पढ़े लिखे एवं चतुर वैद्य थे। श्री किशनलाल गोविन्दराम यति पंडित गणेशाराम शर्मा मेघदास स्वामी कालूराम शर्मा आदि सयाने वैद्य थे। श्री बूटाराम ईश्वरप्रसाद वैद्य भैरवदत्त आसोपा अर्जुनलाल पुरुषोत्तमदास (वैद्य विशारद) आदि बाहर से आने वाले भी अनुभवी वैद्य थे। श्री बाबूराम रमाकांत पारीक ने भी यहाँ आयुर्वेदिक चिकित्सा का कार्य किया था। अब वैद्य ओमप्रकाश कौशिक तथा चौ० नानूराम यहाँ आयुर्वेदिक इलाज करते हैं।

ई० सन् 1952 में ग्राम सेवा संघ कालू के नवयुवक कार्यकर्ताओं ने अस्पताल के लिए विभागीय कार्यवाही के कागज चलाये। तब सितम्बर सन् 1954 में एक डिस्पेंसरी खोल जाने के आदेश हो गये। नाहटों ने अपना एक भवन डिस्पेंसरी हेतु दे दिया। तब श्री के० मेहता पी० एम० ओ० द्वारा अस्पताल का उद्घाटन हुआ। उस समय श्री रामप्रताप मेहरा प्रथम श्रेणी कम्पाऊंडर आये और साथ में एक चपरासी भी था। ई० सन् 1954 के आखिरी चरण में डॉ० श्री वासुदेव गर्ग (एम बी बी एस) पहले पहल आये। इस तरह से सन 1954 माह अक्टूबर में एलोपैथिक डिस्पेंसरी खुला जो अब कालू में तहसील के प्राथमिक स्वास्थ्य चिकित्सा केन्द्र का मुख्य कार्यालय है। इसके भवन की नींव बड़ी अस्पताल की आशा पर सन 1962 वि० सं० 2018 में लगी थी। तीन वर्षों (सं० 2021) में यह भवन बनकर तैयार हो गया। उस समय तक यहां एक छोटी डिस्पेंसरी ही चलती रही। तब इसकी उन्नति के प्रयत्न में यहां सन 1963-64 में पंचायत समिति लूनकरनसर की मीटिंग रखी। जिसमें पंचायत समिति के सदस्यों ने इस उपयुक्त भवन की उपयोगिता पर प्रस्ताव पास करके सीधा जयपुर भिजवा दिया। तब यहां प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खोले जाने के आदेश आ गये। यह भवन सेठ शम्भूमल दूगाणी द्वारा बनवाया गया है। इसलिए इसका नाम राजकीय दूगाणी प्रा० स्वास्थ्य केन्द्र कालू रखा गया। प्राथमिक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा केन्द्र कालू में सर्वप्रथम एम बी बी एस डा० श्री वी डी गर्ग पी पी गुप्ता बी के शर्मा आर के अग्रवाल तथा डॉ० जी सी जैन महान चिकित्सक रह चुके हैं। फिर यहां दो स्थान हो गए और डा० सरदार दूगड, डॉ० बारठ तथा रिसालसिंह राठौर के एल माहरु आदि अनेक चिकित्सक स्थानान्तरण अनुसार आये। इनके बीच में गांव बोडवा जिला नागौर निवासी डा० टी आर गोदारा बड़े सज्जन डॉक्टर आये। जिनके बाद उदात्त भावनाओं के लिए डा० श्री जे० सांखला का ही नम्बर आता है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी प्रभारी पद पर डा० श्री के एल बायरा भी यहाँ अच्छे चिकित्सक रहे। अब डॉ० श्री राजेन्द्र प्रसाद मोदी मुख्य प्रभारी तथा डॉ० श्री दुर्गाशंकर कश्यप अच्छे मृदुव्यवहारिक एवं अनुभवी चिकित्सक नियुक्त हैं। ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केन्द्र और ग्रामीण परिवार कल्याण केन्द्र आदि संस्थाएँ प्रा० स्वा० केन्द्र कालू की शाखाएं हैं।

डाकखाना का इतिहास टेलीफोन और कालू—प्राचीन समय में भारत के राजा

व दूसरे दिन ले जाने का सेवा काय करन लगा। हर माह गाव की तरफ से डाकखाने का दा दियासलाई एव बोतल तिलो का तल और सूतली आदि चीजें मवव से मिलती थी। बगाल मे यहा के अधिक लोग रहते थ। सन 1947 को पाकिस्तान बनन के कारण उस समय कालू के डाकखाने म बीस हजार रुपयो तक की डाक थाने लगी थी। इस्योड और मनिआडरो से रुपये भेजे जाते थे। इसलिये सन् 1952 के माह जून स सुपरिटेंडेंट श्री आर० एन० दत्ता के आदेश से कालू मे डाक राजाना आने जान लगी है। इन पक्तियों के लेखक का 1952 से इचाज होने के बाबत बीस रुपय माहवारी एलाऊस मिलत थे, लेकिन सुपरिटेंडेंट के उपरोक्त आदेश के साथ इचाज के माहवारी वेतन म भी दस रुपये की वढोतरी हो गई। सन् 1970 मे कालू के ब्रांच पोस्टर आफिस को सब पोस्ट आफिस मे पदानत कर दिया गया। इसका भवन श्री अलायचद साड की माता श्रीमती बाधू देवी ने दि० 3 10-70 को बनवाकर दिया है।

पहले चाय, कपडे आम के पापड, पुस्तकें मनिहारी आदि सामान आने का केवल डाकखाना ही साधन था। अत अनेक चीजो की पासलें डाकखाने में आया करती थी। जकात थानेदार को हमेशा पोस्ट आफिस की पासलें नोट करनी पडती और रवाना या खाली चिट्ठी बना देने पर ही पासल पाने वाला उसको अपने घर ले जा सकता था। पासल पहले जकात के थाने मे ले जाकर थानदार के सामने खोलनी पडती थी। ऐसा जकात की अनिवार्यता के नियमाधीन किया जाता था। इसलिए जकात के थानदारो से लाग बहुत डरते थे। उनसे जरामजो की सा '' किया करते थे। जकाती रगाती कहलाते थे, क्योंकि वे जकात मारने का हर किसी पर मामला बना सकते थे।

वतमान समय मे कालू के सब पोस्ट आफिस द्वारा सभी प्रकार की डाक सवाएँ उपलब्ध हैं। विदेश मे गय हुए कालू के लागो से भी उनके परिवार वाले पत्र व्यवहार करत रहते हैं। विभागीय व्यवस्थाओ के कारण कालू क डाकखाने की सतोषजनक सेवा से गाव के निवासी पूणतया सतुष्ट हैं।

कालू गाव में टेलीफोन—कालू गाव मे टेलीफोन की प्रथम स्थापना दिनाक 14 11 78 को डाकखान म हुइ। इसका उद्घाटन दिनाक 15 11 78 को हुआ। स्थापना के सबध मे सवप्रथम भू० पू० विधायक श्री भीमसेन ने टेलीफोन बावत गाव के व्यापारियों से दो हजार रुपय की राशि इसके विभाग मे जमा करवाने को कहा। इनके प्रयत्न से सन 1976 म कालू के व्यापारिया न अपनी आवश्यकता मुजब उक्त राशि जमा करवा दी। उस जमा राशि की पूरी कायवाही दिनाक 13 11 78 को हुई जिससे टलीफोन के तार लूनकरनसर से कालू डाकखाने तक पहुँचे। दिनाक 14 11 78 को कालू के सब पोस्ट आफिस में इसकी स्थापना हुई एव दूसरे दिन इसका उदघाटन हुआ और टेलीफोन पर प्रथम सफल वार्ता हुई। टेलीफोन पिन कोड नम्बर 55 पोस्ट ऑफिस कालू म ही हैं।

गाव मे टलीफोन की स्थापना से कालू के निवासियों के छाट मोटे एव आवश्यक कार्यों की समस्या गाव मे रहत हुए ही हल हो जाती है। अब तो कालू के कुछ घरा मे बाजार में और गाव गारबदेशर तक फोनाफोन वातालाप होता है।

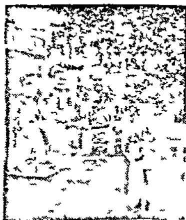
बिजली आगमन—घरेलू प्रकाश सुविधाओं के सिवाय चिकित्सा के मनोरंजन के, यातायात तथा जल और वायु के सुख साधनों में विद्युतोपयोग अपनी प्रदेश प्रगति का प्रत्यक्ष प्रमाण होता है। वर्तमान काल में मनुष्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण बहुमुखी एवं सार्वजनिक सुखाराम के काय विद्युत शक्ति-सहायता से ही सम्पन्न होते हैं। पहले रजवाड़ों के समय में बीकानेर राज्य के बड़े बड़े शहरों को बिजली का बीकानेर-स्थित "थर्मल पावर" स्टेशन से बिजली दी जाती थी। उस समय यह शक्ति, जन-साधारण के लिए दर्शनीय, रूपायन एवं चमत्कारी शोभा समझी जाती। यह केवल राजा-महाराजाओं तथा धनिकों के ही मुख्य उपयोग में आती रहती थी।

देश स्वतन्त्रता के बाद सब क्षेत्रों में बिजली का आगमन आरंभ हुआ और कृषि तथा औद्योगिक उन्नति के लिए प्रत्येक स्वतंत्र जन, इस परमावश्यक तत्व को तरस भरी नजर से ताकने लगा। अब यह दैनिक जीवन के लिए आर्थिक अनिवार्यता के साथ खेती और उद्योग उत्पादन में मनुष्य को द्वितीय भगवान जैसे अनुपम वरदान देने वाली प्रकृति प्रख्यात देवी है।

कालू गाव के निवासियों में अन्य पड़ोसी कस्बों की देखा देखी बहुत अर्से से बिजली की लालसा एवं आवश्यकता महसूस होती रही। इस संबंध में गाव के लोगों ने बहुत कोशिशें की लेकिन उनकी आशा सफल नहीं हुई। अंतिम प्रयत्न दिनांक 13 सितम्बर 1976 को राज्य के मुख्य मंत्री श्री हरिदेव जोशी के आगमन पर हुआ। जिले के चारों निर्वाचन क्षेत्रों के विधायक भी उनके साथ थे। गाव वालों ने पुरजोर शब्दों में बिजली लगाने की माग की। किन्तु मुख्यमंत्री ने स्पष्टतया हाँ नहीं भरी और कालू में बिजली लगाना 25 30 लाख रुपया का खर्चा बतलाया। तत्पश्चात दिनांक 7 12 78 को जनता पार्टी के अन्तर्गत गाव कालू में बिजली का प्रवेश हुआ। तब सर्वप्रथम स्थानीय कालिकाजी के मंदिर में जाँच स्वरूप विद्युत ज्योतित की गई। दिनांक 8 12 78 को क्षेत्रीय विधायक श्री कल्याणसिंह मानिकचंद सुराना के हाथों कालू में विद्युतीकरण का उद्घाटन हुआ। बिजली विभाग का कार्यालय अभी चवरा की धर्मशाला में ही स्थित है। गाव के अधिकतर घरों में विद्युतीकरण हो गया है। गाव में विद्युतीकरण से यहाँ के निवासियों की पानी, प्रकाश, व आटा पिसाई जैसी मुख्य एवं बड़ी समस्याएँ हल हो गई हैं। आशा है भविष्य में भी कालू के निवासियों की अनेक समस्याओं की समाप्ति तथा सुविधाओं की प्राप्ति संभव होगी।

कालू में बैंक—यहाँ स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर की शाखा दिनांक 2 4 1973 से कायम है। गाव में बैंक खेती, पशुपालन ऊँट गाड़ा उद्योग धंधों तथा अन्य छोटे मोटे व्यवसायों हेतु ऋण उपलब्ध करवाता है। पहले स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर की शाखा कालू वन मन ऑफिस के छोटे रूप में खुली थी। अतः बैंकिंग काय कम ही हुआ करता था। लेकिन अब यह बैंक फुल ब्रांच हो गई है, जिससे इसकी बैंकिंग व्यवस्था में बढ़ोत्तरी हुई है। सन 1975 के काम के आधार पर कालू शाखा को वन मन आफिस के रूप में ट्राफी मिली हुई है। कालू के निवासियों एवं बैंक के व्यवस्थापकों के मध्य मधुर व्यवहार बने रहने के कारण बैंक का काम व्यापार सराहनीय रूप से चलता है। इसी कार्य-कुशलता की प्रयत्न परम्परा में वर्ष 1979 के लिए कालू शाखा ने सम्पूर्ण भारतवर्ष की स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर की शाखाओं

मे हुए कम्पीटीशन म पुन ट्राफी जीतन का श्रेय अर्जित किया है। कालू म यह शाखा 2 लाख के डिपाजिट मे एक आदमी की शाखा के रूप म खुली थी, लेकिन गाँव वासियों के लगातार सहयोग के फलस्वरूप इस समय बक म 25 लाख जमा है तथा शाखा की तरफ से 10 लाख रुपयो का ऋण भी गाव के निवासियो का दिया गया है। कालू का यह सौभाग्य है कि कस्बे की इस शाखा बक मे करीब तीन हजार खाते ग्रामवासियो के हैं जो कि गाव के लोगा का बकिग माइन्ड आदमी होना बताता है। कालू शाखा के व्यवस्थापक पद पर कई महानुभाव विभागीय आदेशानुसार आते रहे हैं जिनम सवश्री सुरेशप्रकाश सक्सेना, सुमकरण पाडे विमल कुमार मित्तल हैं। अवकाश के अल्प समय के दौरान श्री लक्ष्मणसिंह जसे मनेजर भी कालू बक म आये हैं। वतमान म श्री निहालचद कोचर स्टेट बक ऑफ बीकानर एण्ड जयपुर की शाखा कालू के मनेजर पद पर विराजमान है। श्री कोचर अपनी काय-कुशलता के लिए बीकानेर जिले की स्टेट बक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर की शाखाओ म प्रसिद्धि प्राप्त पुरुष हैं। कालू शाखा का वष 1979 की ट्राफी भी इनके काय काल मे ही प्राप्त हुई है। बक मे सब से अधिक लोकप्रिय कायकर्त्ता (सन् 1973 से) श्री रतनसिंह राठौड हैं। अब मनजर श्री सम्पतलाल बोथरा हैं।



बक म लेन देन करते हुए

कालू मे पुलिस चौकी—यहाँ सुरक्षा व्यवस्था के दृष्टिकोण स कालू मे पुन सन् 1974 75 से पुलिस चौकी की स्थापना हुई है। यह चौकी गाव केला से उठाकर कालू मे स्थापित की गई है। पहले ई० सन 1951 52 में यहाँ गाव वाला के प्रयत्न से जनता की जानमाल की सुरक्षा हेतु आम्ड पुलिस चौकी कायम की गई थी। यहाँ के गाँवा म विस्तुरिया के डाकू जगमालसिंह तथा डाकू भवरसिंह के आतक के कारण भय प्रद वातावरण बना रहता था। इसलिए कालू के निवासियों ने अपनी सुरक्षा हेतु आम्ड पुलिस की स्थापना करवाई। लेकिन छ सात साल बाद डाकुओ के आतक की समाप्ति के पश्चात् सरकार ने यहाँ से पुलिस चौकी हटा दी थी। वतमान मे पुलिस चौकी का कार्यालय गाव के गढ मे रखा गया था लेकिन फिर सुविधा के लिए पशु चिकित्सालय

भवन मे बदल लिया। कालू की पुलिस चौकी के स्टॉफ मे एक मुंशी महोदय तथा चार पुलिसमन (सिपाही) रहते हैं। पुलिस चौकी के मुंशी पद पर अब तक आने वाले महानुभावो म सर्वश्री साधुसिंह, श्री करतारसिंह, श्री राजेन्द्रसिंह, श्री जगदीशसिंह तथा वर्तमान म श्री गोवर्धनदान जी बारठ तनात हैं।

ग्राम पचायत कालू की चुनाव परम्परा—वसे तो कालू म पचायत सन 1951-52 म स्थापित हुई ह, पर महाराजा गगासिहजी ने अपनी चतुराई से बीकानेर राज्य के गावो म झगडे आदि के फसला बाबत ई० सन 1928 (वि० स० 1985) मे ही एक कानून पास करके इन्हे दीवानी और फौजदारी के कई अधिकार दे दिये थे।[1] आजादी मिली, स्वतत्र गावो तथा कस्वो म जादू छा गया। गुलामी का गम लू से झुलसा हुआ हमारा तहसीलीय क्षेत्र स्वतत्रता की त्रिविध समीर से लहलहा उठा। गांधीजी का ध्यान तो सदव से गांव' की ओर ही रहता था। अत सवत्र ग्राम पचायतो की स्थापना होन लगी। इस योजना से काफी लाभ मिल। विद्या की वद्धि साम्प्रदायिकता के भेद भावो म कमी तथा राष्ट्रीय सेवा क भाव जगे और आपसी सहयोग से गांधीजी क राम राज्य का स्वप्न सच्चा होता दिखाई दने लगा था। शिक्षा और स्वास्थ्य सुधार में तो ग्राम कालू की पचायत परम्परा के इतिहास का पहला प ना वि० स० 2004 (ई० स० 1947) से प्रारभ हुआ है। क्योकि बीकानर राज्य के शासको न शासन को जनतान्त्रिक बनाने और लाक हितकारी कार्यों म अपनी रुचि दिखाने के लिए ई० स० 1928 म कानून पास करक पचायतो का दीवानी तथा फौजदारी के कई अधिकार दे दिय थे। राज्य की सारी तहसीलो के कस्बो मे जिनम लूनकरनसर (तहसील) भी शामिल था, तब से ही पचायतें और सरपच पद कायम हैं। तत्समय सदर, सूरपुरा, लूनकरणसर, श्री डगरगढ और सरदारशहर आदि अनक तहसीलो मे ग्राम पचायतें कायम हो गई थी। किसी भी एक पचायत म 5 से 9 तक निर्वाचित सदस्यो की एक समिति काय करती थी। इन ग्रामीण क्षेत्रो की पचायतो को 50) रुपयो तक की धन राशि क दीवानी तथा लूट, अशाति, गडबडी, मान आदि का भद्दा प्रदशन महिलाओ के साथ अभद्र व्यवहार वगरह के फौजदारी मुकदमे सुनन के अधिकार दिय हुए थे। परन्तु सजा का अधिकार 10) रुपये जुर्माना अथवा क्षति का दुगना से ज्यादा नहीं था। उक्त प्रशासन के सिवाय स्कूल सरोवर, जल वितरण, पेड एव श्मशानो तक की व्यवस्था पचायतों द्वारा होने का विधान था और एक रुपये के पीछे तीन पसे चुगी के भी लगाने का अधिकार था। पचायतो का नियत्रण राजस्व विभाग के अतगत था। तहसील लूनकरणसर ग्राम पचायत मे उक्त समय दो सरपच थे। प्रथम जगमालराम गोदारा (बिश्नाई) गाँव डेलाणा और द्वितीय तुलछाराम[2] गोदारा शेखसर। तत्समय गाव शेखसर म डिस्ट्रिक्ट बोड की पाठशाला स्थापित हुई थी।

गावो म प्रजातत्र शासन की शिक्षा देने और स्थानीय मामलो की स्वय देखरेख करने की योग्यता उत्पन्न करन के प्रयोजन से जिला सभाओ (District Board) की

---

1 बीकानर राज्य का इतिहास प्रथम भाग पृ० 33—डॉ श्री ओझा।

2 आगे जाकर ई० स० 1951 52 के पचायत चुनावों म तुलछाराम का बेटा हीराराम गोदारा शेखसर क्षेत्र का सरपच बना था।

स्थापना करने भी कानून पास हुआ था। आगे चलकर राज्य के शासन को अधिक जनतांत्रिक बनाने के लिए महाराजा श्री शादूलसिंहजी ने वि० स० 2003 (सन् 1946) में मताधिकार निर्वाचन क्षेत्र समिति की नियुक्ति की। उन्होंने 1947 में भारत के साथ विलय के समझौते पर हस्ताक्षर करके राज्य को स्वतन्त्र कर देने की सहमति दे दी। इस तरह से स० 2005 (ई० सन् 1948) में देशी रियासतों का एकीकरण होकर राजस्थान संघ का उद्घाटन हुआ और पंचायत राज्य पनपा।

कालू में बीकानेर राज्य नियमों के तहत जून 1947 ई० में ग्राम पंचायत का प्रथम चुनाव सम्पन्न करवाया गया। झवरों के दीवान खाने (बैठक) में एक रजिस्टर में नाम लिखे गये और उस प्रोसेस की नकल चुनाव अफसर अपने विभाग बीकानेर ले गये। पंचायत संबंधी रजिस्टर और सारे कागज बनचंदजी नाहटा को कोषाध्यक्ष बना कर सौंप गये। *यह पंचायत दिसम्बर 1950 तक रही। लेकिन कार्य कुछ भी नहीं हुआ।* आपसी अहं के कारण रजिस्टर ही नहीं खोल सके। उस समय पंचायत इंस्पेक्टर पहले श्री चौ० भैरूंसिंह और फिर श्री अजीतसिंह थे तथा सरपंच प० दुर्गादत्त शर्मा 1950 के आखिरी महीनों तक रहे। फिर गांव कालू श्री गंगानगर पंचायत विभाग के नीचे चला गया, इसलिए ग्राम पंचायत कालू का दूसरा चुनाव करवाने वहीं के इंस्पेक्टर (एक सरदारजी और अग्रवाल साहब) वगैरह जनवरी 1952 प्रथम माह में आये। मगर यहाँ के व्यक्तियों की जाति विशेष की प्रमुखता संबंधी झगड़े के कारण आये हुए अफसरों ने जो पंचायत बनाने के अभिलाषी थे, अपने आप निर्विरोध पंच सरपंच बना दिये। साख स्वरूप पंचों के पक्ष समूह से लोगों के काफी हस्ताक्षर ले लिये। सरकार ने इनको तुरंत आय (फाटक वगैरह) के स्रोत उपलब्ध करवा दिये। तब 1952 से इनके विरुद्ध बड़ी खिलाफतें होने लगी। गांव के नवयुवकों द्वारा सरपंच की सीढ़ी तक जलाई गई। मगर गांव का विरोध होते हुए भी सरपंच ने कई कार्य किये और नई परम्परा डाली। ई० स० 1955 तक द्वितीय सरपंच श्री मूलाराम रहे और ग्राम पंचायत संस्थान कालू, पुन बीकानेर विभाग के नीचे आ गया। इस समय श्री रावतमल आचार्य पंचायत इंस्पेक्टर थे और बीकानेर राज्य के पुराने अधिनियम भी लागू थे।

बीकानेर राज्य द्वारा स्थापित ग्राम पंचायत कालू के प्रथम एवं अंतिम सरपंच श्री दुर्गादत्त सारस्वत रहे। इनके कार्यकाल में विरोधाभास के कारण कुछ कार्य नहीं हुआ। किन्तु आजादी के बाद जो असली अधिकार पंचायतों ने प्राप्त किये, उनमें सरपंच श्री मूलाराम बने और उसे कुछ न्याय फैसले एवं फाटक वगैरह आय के कार्य हाथ लगे। मूलाराम सरपंच के कार्यकाल में पंचायत के भवन बाबत तय की हुई जमीन को किसी ने अपने अधिकार में ले ली और घर भी बना लिया।

राजस्थान पंचायत अधिनियम 1953 लागू होने के बाद ई० सन 1955 में पहला आम चुनाव हुआ। जो कालू में तीसरी बार पंचायत का परपरित चुनाव था। यह जनवरी 1955 और सरपंच का दुबारा मार्च 1955 दो बार में सम्पन्न हुआ। चुनाव आफिसर आये जो चुनाव इंस्पेक्टर श्री हरिसिंह भार्गव थे। प० श्री दुर्गादत्तजी के साथ श्री गिरधारीलालजी थवर विजयी होकर कालू एवं आडसर वार्ड के सरपंच बने। इन्होंने गांव में शिक्षा, जल और स्वास्थ्य के कार्यों में काफी सुधार करवाया एवं इन संस्थाओं के भवन भी बनवाये तथा निकट के गांवों में भी सब जन हित के कार्य

करवाय। इनमे निर्माण कार्यों की योजना बनाने और बडे लोगो को प्रभावित करके काय करवा लेने के अपन अद्वितीय गुण थे। ये सच्चे सरपच थे, इनक पदीय कायकाल में पचायत की सारी काय व्यवस्था प्रजातान्त्रिक ढग से हुई है। इन्होंने जनवरी 1956 तक काय किया। कई दिनो तक इस काय म लगे रहने के कारण, फिर श्री उप सरपच को काम सौंप कर एक वार इन्ह अपना कारवार देखने बाहर जाना पड गया था। पीछे स उप सरपच भी चला गया। तब उप सरपच का ई० सन 1956 मे उप चुनाव हुआ और उसम श्री गोपालचन्द डूढाणी उप-सरपच निर्वाचित होकर सरपच का कार्य सभालता रहा। इस बार श्री गोपालचन्द सन् 1958 फरवरी तक इन्चाज सरपच रहा। फिर उस वष पचायत का आम चुनाव का समय आ गया। तब गाव की ओर से श्री मोहनलाल सारस्वत को निर्विरोध सरपच पद पर आसीन कर दिया गया। श्री मोहन-लाल न गाव के बीच ठहरने वाले असुविधाजनक जल की निकासी के लिए तन मन लगा कर सगोख टाडे के पानी का गाव से बाहर जान का रास्ता बदलवा दिया और टाडे की जमीन नीलाम करके पचायत का सुचारू ढग से काम चलाया। दिसम्बर 1960 म पचायतों के चुनाव हुए और उसमे फिर श्री सोहनलाल सरपच नहीं बन सका। वह वाड पच ही बना। दिसम्बर 1960 के पचायत चुनावो मे गाव कालू के सरपच का चुनाव बडी भिडत के साथ हुआ। श्री गोपालचन्द डूढाणी के साथ श्री नन्दलाल शर्मा नामक नवयुवक ने बडी अच्छी टक्कर ली। किन्तु श्री डूढाणी कायकर्ता था, इसलिए उसकी विजय हुई। उसके बाद सरपच के सारे चुनावो म श्री गोपालचन्द को ही विजयश्री मिलती रही, जो आज तक ग्राम व्यवस्था हित कायरत है।

सन 1965 के चुनाव म श्री डूढाणी के साथ सरपच पद क लिए श्री हुकमाराम खडेलवाल खडे हुए थे। वडे जोरों शारो से प्रचार हुआ और पार्टिया बनी। गाँव मे चुनाव की धूम एव हलचल मच गई। पर सरपच श्री गोपाल डूढाणी विजयी हुआ इस समय का विजयी पचायत स्टाफ पूरे 13 वष तक शासन मलग्न रहा। इसके बाद 5 फरवरी सन 1978 रविवार को पचायतों के आम चुनाव हुए। जिसम सरपच पद के लिए श्री गोपालचन्द के सामने श्री हजारीराम शर्मा वडे जोश के साथ चुनाव लडे। मगर चुनाव म हजारीराम भी नही जीत पाया और वह गाव का नेता ही बना रहा। सरपच के लम्बे कायकाल म श्री डूढाणी का स्थान स्तुत्य है। इसके विद्यमान काल म काफी सजन एव निर्माण के कठिन काय पूण हुए हैं। हायर सकेण्डरी स्कूल भवन, राजकीय प्राथमिक विद्यालय भवन पचायत भवन अस्पताल भवन, कूआ का सुधार एव भवन काय क या विद्यालय ग्राम कालू सहकारी समिति लि० भवन पशु चिकित्सालय पोस्टॉफिस का क्वाटर अनक जल स्टैंड विश्राम गृह ग्रामीण परिवार कल्याण केन्द्र, ग्रामीण प्रशिक्षण केन्द्र दुग्ध उत्पादक समिति कमचारियो के अनक क्वाटरस, अप्रोच रोड आदि पथ एव भवन निमाण काय श्री डूढाणी के समय मे ही हुए हैं।

10 दिसम्बर सन् 1981 के पचायत के परपरित आम चुनावो मे विरोधी उम्मीदवार श्री गोपालचन्द के साथ श्री इन्द्रचन्द राठी विजयी होकर सरपच बना है। जो नौजवान समथ और शालीनी शक्ल का सज्जन ह।

बीकानेर राज्य का वैधानिक प्रथम चुनाव—कालू में बीकानेर राज्य के नियमों क तहत जून 1947 ई० म ग्राम पचायत का प्रथम चुनाव हुआ, जिसमे निम्नलिखित सज्जन पच बनाए गए थे

सरपंच	उप-सरपंच	महिला पंच	हरिजन पंच
श्री दुर्गादत्तजी सारस्वत	श्री किसनलालजी यति	—	—

अन्य पंच—श्री बालचन्दजी पंवर, दीपचंदजी डूढाणी, बनचंदजी नाहटा तोलाचंद कोठारी (एनी), मूलारामजी पारीक, गिरधारीराम ज्याणी, लाभूराम भादू आदि।

द्वितीय चुनाव ई० सन् 1951 52

श्री मूलारामजी जादू	श्री गोपालराम सुनार	—	श्री सरदाराराम मेगवाल

अन्य पंच—श्री ईसरराम गोदारा, श्री बालूराम वर्मा और आसदासजी बरागी आदि।

तृतीय चुनाव ई० सन 1955 म राज०पंचायत अधिनियम 1953" लागू होने के बाद हुआ।

श्री गिरधारीलालजी क्षवर	श्री केशरीचंद डूढाणी	—	श्री जुहाराराम मगवाल

(सन 1956 मे उपचुनाव हुआ जिसम उप-सरपंच श्री गोपालचंद डूगाणी चुना गया, जो इंचार्ज सरपंच बन कर काय करता रहा।)

अन्य पंच—(1955 के) नानूरामजी खडेलवाल कोडारामजी पारीक हरिरामजी पारीक, किसनारामजी ज्याणी, जसकरनजी बोथरा, धनराजजी भादानी, लाभूराम जादू और गामंदराम भादू आडसर वाड। इस पंचायत बॉडी के लिए एक कविता बनी थी—

पंवर, डूढाणी बोथरा, तीना री जोडी।
नानू कोडो आसू वाड, ज्यू चाटाठी रोडी॥

चतुर्थ चुनाव सन् 1958—

श्री सोहनलाल सारस्वत	श्री डूगरराम खाती	—	श्री सरदाराराम मेघवाल

अन्य पंच—मेघाराम मारण धनराजजी भादानी, सदासुखी खडेलवाल आसाराम वैरागी गवतरामजी पारीक, खियाराम जादू, चूनारामजी पारीक डूनगाथ सिध (गाव आडसर) थे।

इस स्टाफ से श्री धनराज भादानी का अविश्वास प्रस्ताव पास हुआ।

पंचम चुनाव दिसम्बर 1960—

श्री गोपालचंद डूगाणी	श्री हजारीराम सारस्वत	श्रीमती जीवणी सारस्वत, जीऊ नेपा	श्री फकीराराम मेघवाल

अन्य पंच—चम्पजी बद सोभाचंदजी लोडा रामेश्वरलाल सारस्वत आसा रामजी वैरागी, कानूराम गोदारा, नीमाराम नाई, मनूराम ज्याणी रामेश्वर राम पारीक

षष्ठम चुनाव जनवरी सन् 1965—

श्री गोपालच॰ डूढाणी	श्रीरामप्रसाद पारीक	श्रीमती सरस्वती धी० टोपोपारीक	श्री फूसाराम मेघवाल

अन्य पंच—नैनाराम सारस्वत हजारीराम सारस्वत फूसाराम सारस्वत हडमान दास बरागी, लालूराम गोदारा रामरिखजी सवर कन्हैयालाल वैद नीमाराम नाई आदि। इस स्टाफ म 12 महीनों बाद उप-सरपंच मोहनलाल सारस्वत बन और क ैरा साल रा दूसरा चुनाव हुआ।

सरपंच	उप-सरपंच	महिला पंच	हरिजन पंच
सप्तम चुनाव फरवरी सन 1978—			
श्री गोपालचन्द डूडाणी	श्री भंवरलाल बद	श्रीमती बालीबाई मगी नाई	श्री फूसाराम नायक

अन्य पंच—चूसाराम ज्याणी भगतूराम ज्याणी, घेवरचन्द नाहटा रामूराम नैण गोरधनराम खंडेलवाल रामबक्स पारीक, रामचन्द्र राठी, सतदास बरागी। स्टाफ से भैवरचन्द नाहटा का अविश्वास पास हुआ।

षष्ठम चुनाव 10 दिसम्बर 1981—			
श्री इन्द्रचन्द राठी	श्री आकारमल राठी	श्रीमती मगनीदेवी सेठिया, रामप्यारी पारीक	श्री रामरख मेघवाल

अन्य पंच—जेठाराम ओझा, दुर्गाराम शर्मा गोरधनराम खडेलवाल गौरीशंकर खंडेलवाल मागीलाल पुगलिया हरिराम दास बरागी नानूराम डूडी जेठाराम नैण आदि हैं। गाव म राजनतिक दो दल हो जाने के कारण अभी (माह मार्च 1983) तक कोई विशेष काय नही हो सका।

"ग्राम पचायत कालू के चुनाव (मतदान) स्थान"

(1) भवरों की हवेली—1947 मे भवरा की हवेली पर ग्राम पचायत के चुनाव बाबत गाव के मुखियों की एक सभा हुई। उसम चुनाव करवाने वाले अफसरा न कालू के योग्य व्यक्तियो के नाम (पच पद के लिए) तय करवा कर लिख लिए।

(2) ओसवालों का नोहरा—1952 के बर्ष चुनाव करवाने के लिए अफसर आये। वे नोहरे मे ठहरे और उन्होंने गाव के प्रमुख व्यक्तियों को बुलाकर पचा के नाम चाहे। लेकिन नागरिकों द्वारा अपना निणय नहीं हो सका, तब आये हुए अफसर अन्य स्वय स्वीकृत निर्भीक जना का पच, सरपच बना गये।

(3) टाडे में केलों के नीचे—1955 के प्रजातान्त्रिक चुनाव म केला के चहु ओर वार्डों की पृथक पृथक पक्तियाँ बना कर उम्मीदवार के नाम पर बाड वार हाथ उठवा कर पच बनाये। सरपच के नाम गिने गए वोटों (मता) म गडबडी हो गइ। इसलिए आगामी माह मे गाव के उतरादे धोरे पर (जहा अब मुसलमानो का मोहल्ला है) धूल के दो अलग-अलग घेरा म मतदाताओं को बठा कर मत कर लिए और जीत घोषित की। तत्समय पुलिस थानेदार का भी उपस्थित रहना पडता था और मत सहस्र के लगभग हुआ करते थे।

(4) भवरों की धर्मशाला—1956 का उप चुनाव धर्मशाला मध्य क्यारिया म बठे मतदाताओं से हाथ उठवाय गए, तब सफल हुआ था।

(5) खुला मदान—1958 का आम चुनाव ओसवाल नोहरे के आगे, गोदारा के कूए की सहारण टूडी पर हाथ उठवा कर सम्पन्न करवाया गया।

(6) भवरो की धर्मशाला—1960 का चुनाव धर्मशाला भवन के दो कक्षा म हुआ और उक्त पचायत चुनाव म पहले पहल पेटियों मे वोट डाले गए। लेकिन विधान सभा के चुनावों में 1952 से पटियों का उपयोग होता था।

(7) **राज० उच्च० माध्य० विद्यालय भवन**—1965 म ग्राम पचायत का चुनाव विद्यालय भवन के तीन कक्षा मे सम्पन्न करवाया गया।

(8) **द्वय विद्यालय भवन**—1978 का पचायत चुनाव दोनो विद्यालयो (हायर सैकेण्डरी और प्राइमरी) के पर्याप्त कक्षो म हुआ।

(9) **द्वय विद्यालय भवन**—1981 का पचायत चुनाव भी दोनो स्कूलो म उपरात एरिया समय तक चला। मरा पूरी पटियो से रात, चार बजे तक मत गणना चालू रही (वोट वृद्धि के कारण आगामी चुनावो म तीसरा कन्या विद्यालय भवन भी चुनाव के समय काम मे लेना पडेगा ऐसी धारणा बन गई है।) अत बाद मे गडबडी की आशका सदभ से अदालतो तक अनेक निस्सार दावे (रिट) भी हा गये। इस चुनाव मे कुल मत 3910 में से 2815 ही पेटिया म डाले गए थे।

पचायत भवन तथा निर्माण—सन् 1958 मे पचायत भवन का शिलान्यास गाव के बीच म गोदारान कुए के पास (जहाँ वतमान में पोस्ट ऑफिस भवन बना हुआ है) हुआ था। लेकिन गाव की जनता के विरोध के कारण पचायत भवन वहाँ नही बनाया जाकर गाव से बाहर माताजी के मदिर के पीछे बनाया गया है। गाव के लोगो का विरोध यही था कि पचायत भवन गाव से बाहर ही बनना चाहिए। पहले एक बडा कमरा उसके आगे बरामदा और चौकी बनाई गई। बाद म एक बडा हॉल विश्राम गृह रिकाड रूम आदि अनक भवन बनाय गय हैं। इसम फाटक व बाडे की दीवार उसम साडखाना और पचायत भवन के लिए स्टोर आदि मकान भी बने हुए हैं। इसमे अभी तक 9600 वरगज भूमि घेरी हुई है। अब यह दुर्गा कॉलोनी के बीच म आ गया है। लेकिन पचायत भवन की अपनी विस्तृत व छायादार जमीन हाते के कारण इस सामाजिक सस्था का स्वरूप एव सुख बडा आनदमय है।

ग्राम पचायत कालू द्वारा कई विकास व निर्माण काय हुए हैं—

(क) **बरसाती पानी निकास योजना**—यह याजना शुरु शुरु म सन 1960 मे गाव मे बाजार के बीच का पानी बाहर निकालने के लिए बनाइ गई थी। पर यह बरसाती पानी गाव से बाहर जाकर नायको और ससियान के घरा के पास खुले मैदान में इकट्ठा हो जाता था। जिसस इन गरीब परिवारो को परेशानी होन लगी। तब सन 1964-65 में इन गरीब परिवारा की समस्या के समाधान के लिए पचायत न इनक घरा के पास के मैदान मे भरती करवाकर इसका भूमि स्तर ऊँचा उठाया और गाव से पूर्वोत्तर म एक तालाव (गदी तलाई) खुदवाया तथा राज्य से पक्का पुलिया बनवा लिया। जिसस समस्त पानी उस तालाब मे जाने लगा है। तत्पश्चात सन 1977 78 म बास गोदारान के मोहल्ला सारस्वता और वरागियो के पानी निकास के लिए फूसाराम बावरी के घर के सामने वाली ऊँची गली को खुदवा कर जल रास्ता चवाई करवा दिया। इससे बरसात का पानी निकास होन के साथ ही सीधे आवागमन के लिए एक उपयुक्त माग खुल गया। यह माग पहले कचरे के ऊँच ढेर के कारण बद था। पर अब इस प्रकार जल निकासी का काय और आगे बढा। लेकिन सारे गाव का पानी एक हा जगह जाकर इकट्ठा होने से उस तालाब की क्षमता कम पडने लगी। इसलिए सन् 1980 मे अकाल राहत काय के अन्तगत उस तालाब को और लम्बा चौडा खुदवाने के साथ ही एक ओवरफ्लो नाला 700 फुट लम्बा खुदवाया गया है। उसके आगे एक और लम्बा

चौड़ा तालाब, जिसे काजरवाली जहाडी कहते हैं खुदवाया है। इसलिए अब अधिक वर्षा होने पर भी कालू गाव को पानी से किसी प्रकार का खतरा नहीं हो सकता।

(ख) कालू की जल योजना—इस योजना के अन्तर्गत पहले सन 1959 में टरबाइन पम्प सेट लगाया गया था। बाद में टरबाइन पम्प की कार्य कमी को देखते हुए सन् 1964 में मोटर पम्प सेट लगाया गया और पचायत ने अकाल सहायता कार्य से राशि स्वीकृत की। गाव में सन 1964 में पम्पलाइन बिछाई गई तथा सन् 1965 66 में राज्य सरकार से ऊँचा टकी का निर्माण कार्य करवाया गया। यह जल योजना सन् 1974 तक पचायत ने चलाई बाद में जल विभाग बीकानेर को (जून 1974 से) सौंप दी है। तब से यह योजना जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिक विभाग (डी. पी ए पी) द्वारा चलाई जा रही है। दिसम्बर 1978 में सरकार द्वारा मोटर इजन हटाकर इसे बिजली सचालित किया गया है।



पानी की टकी

(ग) पीने के पानी की सुविधा—सन 1979 80 में पचायत द्वारा पीने के पानी की सुविधा हेतु प्रत्येक वार्ड में एक पांच सौ घडा का हौज बनाया गया है तथा पशुओं के पानी पीने के लिए गाव से उत्तर की तरफ एक बडा कोठा निर्माण कराया गया है। प्रत्येक हौज व बडे कोठे के पास पशुओं के लिए पानी की खेल (नाली) बनाई गई है।

(घ) अध्यापिकाओं के आवास गृह—सन 1962 63 में तीन आवास गृह बनाए गए। आधी राशि पचायत समिति से और आधी राशि पचायत कालू द्वारा खर्च की गई। समिति से मिलने पर तीन अध्यापिका आवास गृहों का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ। एक आवासगृह उस समय पाँच हजार रुपये की लागत से बनकर तैयार हुआ है। आवास गृह जी टाइप के डिजाइन पर बनाये गये हैं।

(ङ) ग्रामीण गृह निर्माण योजना—सन 1980 की इस योजना के अन्तर्गत ग्राम पचायत कालू व सरपच श्री गोपालचद स्वामी के प्रयत्नों से पचायत समिति लूणकरणसर

के माध्यम से तीस आवासगृह निर्माण करवाकर एक सु दर कॉलोनी बनाई गई, जिसका नाम दुर्गा कॉलोनी रहा है। इस योजना क अ तगत 5000) रुपये ऋण स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति को दिए गए और 3000) रु० स्वय की ओर से खच किए गए। ऋण राशि 25 वर्षों मे 50 छ माही किस्तें मय ब्याज वसूल करने की शत पर दी गई है। यह राशि सरकार की ओर से पचायत समिति लूनकरनसर को आवटन की गई थी।

दुर्गा कॉलोनी—कालू के इतिहास मे एक नया अध्याय उस समय जुडा जब कि ग्रामपचायत के प्रयत्नो से गाव के दक्षिण पश्चिम मे तीस मकान निर्मित हुए और उस क्षेत्र का नाम रक्खा गया—'दुर्गा कॉलोनी'। पानी बिजली जसी समस्याओ के समाधानाथ एक विकास समिति का गठन 14 7 80 को किया गया। जिसके अध्यक्ष श्री रतनसिंह राठौड और मत्री श्री रूलीराम बनाए गए। इन्होंने कॉलोनी-वासियो का सहयोग जुटाकर अपने प्रयत्नो से दीपावली के दिन कॉलोनी म विद्युत कनेक्शन दिलवाकर इस उजाड जसे क्षेत्र को जगमग कर दिया। पानी की पाइप लाइन भी बिछा दी गई है व कनेक्शन शीघ्र मिलने वाले हैं। अब श्री सतोषी माता क मदिर का निर्माण कराना भी विकास समिति का एक लक्ष्य है। अ य कार्यों मे एक सावजनिक उद्यान वृक्षारोपण कायक्रम, आदि काय पूण करवाने का भी उद्देश्य है। दुर्गा कालोनी क्षेत्र कालू मे सवाधिक आकषक स्थान बन जाएगा ऐसी आशा है।

न्याय पचायत—ग्राम पचायत कालू से पृथक इस क्षेत्र के करीब नौ दस गावो का याय पचायत कार्यालय ही यहाँ रहा। उसके प्रथम अध्यक्ष मेजर श्री रघुनाथसिंह आडसर चयनित हुए थे। फिर क्रमश श्री चुनाराम धुजटी तथा बनाराम रावासर अध्यक्ष बने। श्री पतराम शर्मा सहजरासर हीराराम डोगवाल और डूगरराम खाती कालू तथा चन्दरा राम शर्मा गारबदेसर आदि सदस्य न्याय पचायत कालू मे रहे। इस तरह चार ग्राम पचायतो से याय पच चुने जाते थ। अब यह काय ग्राम पचायत के साथ सम्मिलित रूप से चलता है।

कालू के क्षेत्रीय विधायक—राजस्थान विधानसभा के प्रथम चुनाव सन् 1952 म हुए। उसमे हमारे लूनकरनसर निर्वाचन क्षेत्र से वद्य श्री मघाराम शर्मा कुम्भाराम आय, आदि अनेक उम्मीदवार चुनाव लडे। आसवाला के नाहरे म कालू गाव के नागरिको का मतदान हुआ। श्री वरिसालसिंह (जोधपुर) कस्टमस आफिसर बीकानेर, पीठासीन अधिकारी चुनाव करवाने आय थ। उनके साथ श्री रघुनाथसिंह खीची पुलिस इन्स्पेक्टर थे। इस चुनाव मे श्री जसवतसिंह (दाऊदसर) विजयी हुए। इन्होंने रा० उ० मा० विद्यालय भवन के लिए दस हजार रुपये दिलवाये थे और विधायक बनकर हाई स्कूल खुलवाने मे गाव के लोगो की सहायता की। 1 से 2 जून सन् 1954 मे गाव के डेपुटेशन (श्री गिरधारीलाल पवर नानूराम सरकर्ता और गगाविशन बागडी) को अपने साथ कार मे बठाकर मास्टर श्री भोलानाथ (तत्कालीन शिक्षा मत्री राजस्थान) से मिले और कालू में हाईस्कूल खुलवाने हेतु काफी जोर दिया। इनके अपर ग्रेड म चल जाने पर जुलाई सन् 1956 मे उपचुनाव हुआ जिसमे श्री रामरतन कोचर, श्री मानिकचद सुराना गिरधारीलाल भोबिया आदि प्रतिद्वन्द्वियो को हराकर विधायक बने।

दूसरा आम चुनाव सन 1957 जनवरी म हुआ। इसम हमारे क्षेत्र से श्री सोहन-

लाल सारस्वत (कालू), रामचन्द्र बिहानी (जतपुर) आदि की टक्कर में श्री भीमसेन एडवोकेट विजयी बने। इनके लम्बे समय में कालू में प्राइमरी हैल्थ सेंटर तथा लूनकरनसर कालू सडक, मात्र दो काय हुए हैं। लेकिन तहसील में इनके द्वारा काफी कार्यपूर्ण करवाये गए। जून सन् 1977 के चुनाव में लूनकरनसर निर्वाचन क्षेत्र से कान्ता खतूरिया गिरधारीलाल भोबिया आदि अनेक उम्मीदवार चुनाव लडे। परन्तु श्री मानिकचन्द सुराना विजयी होकर विधान सभा में गये और वहाँ वे वित्त मंत्री पद के लिए चुन लिए गए। कालू में बिजली, टेलीफोन आदि काय उन्हीं के समय में सम्पूर्ण हुए हैं। इसके बाद फिर सन् 1980 अप्रल के आम चुनावों में श्री मालूराम लेघा ने श्री मानिकचन्द सुराना, मामराज गोदारा आदि को बड़ी भिडत के साथ पराजित किए। दिनांक 1 6 80 से लेघा विजयी विधायक बन हैं। कालू के अधूरे काय पूर्ण करवायेंगे, ऐसी उम्मीद थी, पर कहीं कुछ नहीं।

पुस्तकालय और सरस्वती पुस्तकालय का इतिवृत्त—

विद्या तथा बुद्धि निधि प्रधान, न ग्रन्थ होते यदि विद्यमान।
तो जानते क्योंकर आज, मित्र, स्व-पूर्वजों के हम सच्चरित्र?

(ग्रन्थ गुण-गान)

मनुष्य, सृष्टि आरम्भ से ही ज्ञान पिपासु रहा है। वैदिक काल में मौलिक उपदेश, ग्रन्थ और गुरु भ्रमणशील पुस्तकालय के समान थे। वेद को श्रुति (सुनना) एवं विद्वान को बहुश्रुत (जिसने बहुत कुछ सुन रखा हो) कहा जाता था। आगे चलकर मनुष्य ने अपनी भावनाओं को रेखाओं एवं चित्रों द्वारा प्रकट करना शुरू किया। निनवा की खुदाई में चित्रों वाले लगभग दस हजार पत्थर के टुकडे मिले थे जो असीरिया के राजा असुरबानी का पुस्तकालय था। फिर लिपियाँ बनीं और पत्थरों के अलावा अन्य कई चीजें लिखने के काम आईं। मिट्टी के कच्चे बरतनों व ईंटों पर लिखकर अग्नि में पकाने का काय भी हुआ। अशोक के शिलालेख राजाज्ञा के ताम्रपत्र, भोजपत्र और ताडपत्र भी लिखने के काम लिए गए। प्राचीन चीन में लकडी की तख्ती, बांस की चटाई और रेशमी कपडा पर ग्रन्थ लिखे जाते थे।

यूनान में अच्छे पुस्तकालय थे। प्लेटो अरस्तू और यूक्लिड जसे विद्वानों के अपने पुस्तकालय थे। रोम का राजा आगस्टस सार्वजनिक पुस्तकालय का जन्मदाता कहा जाता है। पुरातन काल में एलेक्जेंड्रिया का पुस्तकालय बड़ा ख्याति प्राप्त था। रोमन लोग भी पुस्तक संग्रह को धर्म समझते थे। हमारे देश में भी प्राचीन काल से पुस्तक संग्रह करने की अत्युत्तम प्रथा चली आई है। यहाँ बौद्धकाल में पुस्तकालय आन्दोलन की बड़ी उन्नति हुई है। ईसा की प्रथम शताब्दी में बौद्ध राजा कनिष्क ने अपने ग्रन्थों का बड़ा पुस्तकालय स्थापित किया था। नालंदा जैसे भारत के विश्व विद्यालयों में महान पुस्तकालय थे। नालंदा विश्वविद्यालय का पुस्तकालय तीन प्रासादों में विभक्त था। उनमें एक रत्नोदधि नाम से नौ मंजिला भवन था जिसके तीन सौ कमरे ग्रन्थों से भरपूर थे। इसलिए बहुत से चीनी यात्रियों ने 399 ई०, 414 ई० 529 ई० 644 ई० में चन्द्रगुप्त द्वितीय व हर्षवधन के समय में भारत आकर यहाँ के साहित्य का अध्ययन किया था। सन् 1200 ई० में विदेशी आक्रमणकारियों (बख्तियार खिलजी) ने नालन्दा पुस्तकालय को नष्ट कर दिया था।

भारत और चीन का प्राचीन संबध था, इसलिए चीनी विद्वान सस्कृत और प्राकृत की पुस्तकें भारत से ले जाते और अपनी भाषा मे अनुवाद करते थ। पर मुस्लमानी युग म पुस्तकालयो का ह्रास हुआ। जन धम म जसलमेर, बडौदा, पाटन ग्वालियर, अहमदाबाद के जन मदिरा मे पुस्तक भाण्डार सुरक्षित रहे। अब देशी रजवाडा म भी जसे नेपाल, काश्मीर, गुजरात ट्रावनकोर मैसूर जयपुर जोधपुर बीकानेर अलवर, भोपाल के पुस्तकालय विशेष अवलोकनीय हैं।

कागज और प्रेस के आविष्कार क बाद तो पुस्तकालया का भारी प्रचार होने लगा। प्रत्यक समुनत शहर पुस्तकालय स सुशोभित हो गया। मनुष्य इच्छित पुस्तकें प्राप्त करने लगा। अग्रेजी राज्य के समय मे विश्वविद्यालयो एव कालेजो म अच्छे पुस्तकालयों की स्थापना होने लगी थी। वतमान समय के बडे नगरो म मनुष्य मात्र की नि शुल्क सेवा हतु सावजनिक पुस्तकालय खुले है। इस तरह की सेवा के लिए समय केवल सरकारी सावजनिक पुस्तकालय ही हैं। मगर शिक्षा के क्षेत्र म पुस्तकालय की सर्वाधिक महत्वपूण आवश्यकता समझकर 45 वष पहले वि० स० 1992 ई० सन 1935 म पट्टा स्कूल के हैडमास्टर श्री सूरजमल पालीवाल न उपरोक्त विषय का कतिपय नाग निकर वाहर से पढकर आन वाले सुविज्ञ एव महत्वाकाक्षी नवयुवको के सहयोग से कालू में श्री सेवासदन सरस्वती पुस्तकालय की स्थापना की थी। उस समय तहसील लूनकरनसर के गाव महाजन के गढ मे, श्रीरामसरोवर पुस्तकालय था। 1967 के समय बीकानेर म गुण प्रकाश सज्जनालय रतनगढ मे श्री हनुमान पुस्तकालय (स्थापित स० 1976 वि०) और चूरू म सुराणा पुस्तकालय (ई० स० 1922) जसे साहित्य सूर्यो की ज्ञान रश्मियाँ दूर दूर तक प्रकाश फैला रही थी।[2] ई० स० 1920 में राजगढ और (1929 म) तारानगर सावजनिक पुस्तकालय' थे। लेकिन सस्थाओ के लिए उस जमाने का वातावरण बडा भयानक था। लाईब्रेरी म किसी नता की तस्वीर लगाना अथवा अखबार स काग्रेस सबधी कोई समाचार पटकर सुना देना तथा धार्मिक व्याख्यान द देना भी उस समय सरकारी कानो के आधार पर राजविद्रोहात्मक अपराध मान लिया जाता था। काग्रेसी साहित्य और छापे जब्त होते रहते थ। अनजान सस्था म ऐसी सामग्री मिल जाने पर कायकर्ता जुल्म करार दे दिए जाते थे। पुस्तकालयो पर उस समय पुलिस की माहवारी चेकिंग रहा करती थी। कालू मे पुलिस अफसरो की अचानक विजिट होती, तब कायकर्ताओ में बडी भागदौड मच जाया करती थी। एक दो निर्भीक जन ही इनसे बात करके सस्था सबधी कागजात तथा माहवारी हिसाब पेश कर सकते थे। उस समय राज्य को जनता के धार्मिक एव सामाजिक काय भी राजनतिक व आपत्तिजनक लगते थ। महाराजा गगासिहजी अपने राज्य शासन की बडाई चाहते पर वे भले ये उतने ही कठोर स्वभाव के भी थे। इसके कई कारण भी हो जाया करते थे, जो आग मे घी का काम साबित होता।[2]

---

1 स० 1992—सूरतगढ की बात—एक मकान की आलमारी में लेखक ने जन पुस्तकालय भी देखा था।

2 ई० सन् 1927 मे 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद' का बम्बई म अधिवेशन हुआ। तब बीकानेर सहित राजपूताना के बहुत से राज्यो से लोगो को परिषद के सदस्य बनाये गए। आगे जाकर उस परिषद का एक शिष्ट मडल द्वितीय

उस समय शिक्षा का नाम ही दशनीय था। शिक्षा जन-साधारण की पहुँच से बाहर थी। प्रबुद्ध चेतना भी कायर बनी हुई सावजनिक मन से बाहर ही घूमती रहती। तब निरकुश शासन और दमन का न्याय, निर्दोष सस्थाओं के लिए भी सूरदास बना हुआ था। अजुन, मिलाप, प्रताप लोकमान्य और हिन्दुस्तान टाइम्स आदि समाचार पत्र राष्ट्रीय भावना के साथ खडे हो रहे थे। अजमेर से ऋषिदत्त मेहता का 'राजस्थान' पत्र निकलता था। उसका अपना सिद्धान्त वाक्य होता—

'यश वभव की चाह नही, परवाह नही जीवन न रहे।
इच्छा है यही जग म कि, स्वेच्छाचार दमन न रहे॥"

'राजस्थान पत्र क मुख्य पेज पर स्वय के हाथ से गदा पर चलती तलवार और दूसरे हाथ म रक्त झरता मुण्ड लिए हुए धड का चित्र छपा रहता था। उस पत्र म राजा महाराजाओ की कडी आलोचनाएँ छपती थी। लेकिन बीकानेर राज्य मे प्राय एसे समाचार पत्रों एव पुस्तको को जब्त करवा दिया करते थे। यह सस्थाओ मे आन वर्जित थे। "राजस्थान" पत्र भी एक बार भयभीत होकर रियासती बन गया था।

गोलमेज सम्मेलन म लदन गया। उस विशिष्ट मडल न अपन उद्देश्यानुसार वहा, राजाओ की बराबरी मे भारतीय जनता का दृष्टिकोण भी सम्मेलन क सदस्यो के आगे प्रस्तुत किया। उस शिष्टमडल मे पूना के प्रो० अभ्यकर, सौराष्ट्र के गणमान्य बरिस्टर श्री चूडगर और ज मभूमि के सपादक श्री अमृतलाल सेठ आदि लाग थे। इन्होंने अन्य राज्यो क साथ बीकानेर राज्य के सबध म भी एक पम्फलेट साइक्लोस्टाइल करवाकर तथा महात्मा गाँधी की राय लेकर सम्मेलन के सब सदस्यो मे बाटा। उस समय महाराजा गगासिहजी गोलमेज सम्मेलन मे "देशी राज्यो के भारतीय सघ म सम्मिलित होने की ब्रिटिश सरकार की योजना के समथन म और निजाम हैदराबाद दीवान के विरोध म" जाशीला स्पीच दे रहे थे। सम्मेलन के अध्यक्ष लाड सकी न उस पम्फलेट पर 'बीकानर महाराज का इसका जवाब देना चाहिए' लिखकर श्री गगासिहजी के हाथों म थमा दिया। बीकानर राज्य शासन की कडी आलाचना 'जिसम जोधपुर के जयनारायण व्यास और चूरू क कुछ काग्रेसिया का हाथ था' स महाराजा साहब आपा भूल उठे और सम्मेलन समाप्त होन स पहले ही अस्वस्थ हाकर बीकानेर पधार आय। प्रथम दिसम्बर सन् 1931 को सम्मेलन समापन हुआ और 28 दिसम्बर का ही महात्माजी बम्बई आकर उतरे। ब्रिटिश सरकार का दमन चक्र चल पडा। प० नहरू श्री टडन, सरदार पटल एव महात्माजी सहित सारे नता गिरफ्तार कर लिए गए। उस समय देश की राजनतिक सस्थाओं क साथ अन्य सस्थाओ को भी गर कानूनी घोषित करन हेतु एक पर एक कठोर एव दमनात्मक ऑर्डिनेंस निकलने लग। (राजनतिक भारत पृ० 83 84) बीकानर राज्य मे 13 जनवरी 1932 मे "सवहितकारिणी सभा चूरू" के जन कल्याणकारी मुख्य कायकर्ता श्री स्वामी गापालदासजी, चन्दनमल बहड, मर्हत गणपतिदासजी वद्य शात शर्मा वद्य भालचन्द्रजी, मास्टर शानचन्दजी आदि समाज सेवी लागों का डी आई जी पी मवलसिह ने राजद्राह के अपराध म गिरफ्तार करके बीकानर जेल मे भेज दिए और बडी यातनाएँ दी गई। मुकदमा चला और लम्बा सजाएँ हुई। (बीकानेर राज्य द्रोह और षडयत्र की मुकदमावली बाबत —पृ० 16 20 34)

उस समय श्री सेवासदन सरस्वती पुस्तकालय चालू म किसी सज्जन ने (इन समाचार पत्रों के अलावा) चाँद के जब्त फासी अक व बलिदान अक भी भिजवा दिये। अत ऐसे साहित्य को हम लोग अ य स्थान पर समाधिस्थ बनाकर रखते थे।

उत्साही युवक कायकर्ताओं ने अपने उच्चादश आत्मबल तथा दृढ सकल्प के साथ श्री सेवासदन सरस्वती पुस्तकालय का कायभार सभाला था। विनम्र पत्र व्यवहार और अतिथि आदर सम्मान करने के कारण स० 1997 के चत माह म ठा० श्री जुगलसिंह एम ए एल एल बी, बार एट लॉ डाइरेक्टर शिक्षा विभाग बीकानेर और श्री पूर्णसिंह, सीनियर डिप्टी इन्स्पेक्टर शिक्षा विभाग बीकानेर द्वारा पुस्तकालय प्रमाणित करवा लाए। पुलिस चैकिंग का भय कुछ कम हुआ। फिर भी पुस्तकालय की तत्कालीन काय विवरण पत्रिका तथा नियमावली के नियम सख्या 7 मे "पुस्तकालय भवन म राजनैतिक वाद विवाद करना सवथा मना है।" लिखा है।[1] उसमे चन्दा दाताओं की नीचे लिखे मुजब नामावली है।

चन्दा दाताओं की नामावली

(सम्वत 1994 से 1996 तक की आय)

श्री फूसाराम रामनारायण झवर	101)	श्री मोतीलाल करनाणी	100)
, सुगनमल लादूराम नाहटा	81)	, जोरमल राठी	27)
,, मोतीलाल करनाणी	25)	प० जयनारायण पारीक	33।।।)
,, रिद्धकरण बोथरा डूगरगढ	17)	श्री बीजराज पूगलिया	15)
,, दीपचन्द डूडाणी	15)	,, बिरधीचन्द कर्वा	15)
,, नरसिंहदास भइया	15)	,, जसरूप मालू डूगरगढ	15)
,, पेमराज हजारीमल आसूगज	15)	,, हमीरमल चपालाल आसूगज	11)
,, रूपचन्द दुगड आसूगज	11)	, रामदेव अग्रवाल आसूगज	11)
, कुदनमल तोलाराम अग्र फारबीसगज	11)	जयच दलाल नाहटा बीकानर	11)
,, छोटूलाल सेठिया आसूगज	11)	,, बिडला ब्रादस आसूगज	11)
, कल्याणचन्द चनरूप आसूगज	11)	,, जयकिशनदासमल भैरव	11)
नथमल मेठी आसूगज	11)	,, खेमचन्द चाडक सरदार शहर	11)
, जानकीलाल बजाज आसूगज	12)	, छगनलाल बागडी कलकत्ता	11)
, पूनमचन्द बोथरा सरदार शहर	11)	, गुलाबचद हरकचद भादानी	11)
,, छोटूलाल सेठिया भरव	9)	, बुधमल नाहटा	9)
,, काशीराम राठी	9)	,, मूलचन्द ओसवाल आसूगज	7)
, इन्द्रचद सोहनलाल दुगड	7)	प० सूरजमल पारीक	7)
, मानराज रूपचद दुगड लून०	7)	श्री लूनकरन रूपचद गगाशहर	7)
,, विजयसिंह पूरनमल गाईबादा	7)	,, रावतमल मोतीचन्द गाईबादा	7)
, काशीराम राठी	6)	,, भीखमच द नाहटा	6)

1 श्री सेवासदन सरस्वती पुस्तकालय चालू (बीकानर) का काय विवरण तथा नियमावली पृ०—6

श्री बालचन्द सेठिया	6)	श्री बीजराज पूगलिया	6)
,, मेघराज गोलछा	6)	,, गिरधारीलाल चवर	6)
,, चम्पालाल नाहटा	6)	,, मेघराज गोलछा	6)
,, छतमल जवाहरमल गाईबादा	6)	,, रामचन्द्र माहेश्वरी आसूगज	5)
रूपचन्द सरावगी आसूगज	5)	बालचद जयचदलाल बोथरा, सर०	5)
,, दोमाचन्द राखेचा फारबीसगज	5)	,, मगलचन्द डागा फारबीसगज	5)
,, कानीराम खेमाणी फारबीसगज	5)	,, अज्ञात सज्जन	5)
प० कूनणमल कन्हैयालाल ओझा	5)	,, हुलासचन्द बायरा आसूगज	5)
श्री भारमल तुलसीराम कलकत्ता	5)	,, गोपाल भाइ जूट मील भरव	5)
,, जुहारमल चम्पालाल भरव	5)	,, भँवरलाल चुन्नीलाल गाईबादा	5)
,, जँवरीलाल अमरचन्द गाईबादा	5)	अमोलकचद दूलीचद गाईबादा	5)
,, मुसलिम मीया ढोलभागा	5)	हरकचन्द पूनमचद भादानी डूग०	5)
,, जोरमल राठी	5)	,, धमडीराम सरावगी आसूगज	5)
,, जयचन्दलाल बिरमचा	5)	प० मोहनलाल पारीक	5)
,, मोहनलाल बागडी	4)	श्री बिरधीचन्द कर्वा	4)
,, लालचन्द लाढा	4)	,, तोलाराम चौपडा गगाशहर	4)
,, आसकरन डूढानी	4)	प० जेसाराम पारीक	4)
,, तजपाल सोमानी डूगरगढ	4)	श्री चादमल धनालाल भरव	4)
,, पूणचन्द्र शाह शादुलपुर	4)	तुलसीराम चवर	4)
प० राजाराम तिवाडी फालावाटा	4)	,, इस्पक्टर आफ पोस्टा० बीकानेर	3)
,, सोमाराम सारस्वत	3॥)	,, रामलाल सोनी	2)
,, खेमचन्द गिरदावर	2)	,, नानूराम सरस्वती	2)
श्री आसाराम झवर डूगरगढ	2)	प० सुखराम व्यास	2)
प० श्रीराम साण्डल	2)	श्री तोलाचन्द सिंधी	2)
श्री बालकिशन बागडी	2)	,, दौलतराम कन्नाणी	2)
,, किशनलाल सेठिया उदासर	2)	,, अज्ञात सज्जन	2)
,, नथमल गोपीलाल घोडावत	2)	गगाराम मानकचन्द गाईबादा	2)
,, उदयचन्द बस्तीमल गाईबादा	2)	मेघराज शिवदान लिखमादेसर	2)
,, नानगराम सुगनचद भादानी डूग०	2)	,, छत्रीदास हनुमानमल बोथरा	2)
,, अकलदाराम नाई माथाभागा	2)	,, दीपचद फूसाराम सेठिया सर०	2)
,, गुमानमल प्रेमचन्द पूगलिया	2)	,, बालचद जँवरीलाल बोथरा सर०	2)
,, रामचन्द्र सोमानी	2)	,, फूसराज बूचा लूनकरनसर	2)
,, आणदमल चौपडा गगाशहर	2)	,, कप्तान साहब रघुनाथसिंह	2)
,, नानूराम सरस्वती	1॥)	,, गोपालचन्द सोनी	1॥)
प० सोहनलाल भोजक	1॥)	,, लादूराम बारड	1॥)
श्री मोहनलाल सँवर	1)	,, केशरीचन्द डूढानी	1)
,, मगलदास स्वामी सरदारशहर	1)	खेतराम स्वामी सरदारशहर	1)
,, गुमानदास स्वामी	1)	जयचदलाल बेद	1)

प० रामेश्वरलालजी बी ए एल एल बी	1)	, चरित्र साहच बनिया बिराटनगर	1)
श्री ठोगरामसाहा तेली बिराटनगर	1)	,, तोलाचन्द सिंघी	1)
,, काशीराम सिंघी	1)	,, शोभाचन्द सिंघी	1)
,, छोगमल मोहनलाल डूगरगढ़	1)	, विरधीचन्द वद सरदारशहर	1)
प० हुक्माराम खाण्डल	1)	,, पन्नालाल सेठिया डूगरगढ	1)
प० फोडाराम सूरजमल पारीक	1)	राजवद्य प० बूटाराम अबोहर	1)
श्री सिचियालाल सिंघी	1)	प० नानगराम शिव प्रताप	1)
पं० रावतमल पारीक	1)	श्री विधिनचन्द्रदास माधाभागा	॥)
श्री महारायजीतेन्द्रोनाथ मुजमदार	॥)	छात्रों द्वारा चदा व पुराने अखबार बिक्री किए गये	7 ≡)॥।

1008॥ ≡)॥।

व्यय

100 –) अखबारो का वार्षिक मूल्य लगा।
168॥। =)॥। फर्नीचर जिल्द तथा स्टेशनरी सामान मे खच हुआ।
18॥ –) व्यायाम निमित्त खच हुआ।
56॥।) श्री सेवासदन नाट्यशाला मे नाटक खेलने मे खर्च हुआ।
20) धर्मार्थ खाते लगा।
16॥)॥ पास्टेज चाज।
285॥। –)॥ नूतन पुस्तकें मगाई गई।

666॥ =)॥।

235। –) श्री बींजराजजी बनेचन्दजी कोपाध्यक्ष के नाम रहे थे।
100) , फूसारामजी रामनारायणजी थवर ह गिरधारीलाल के नाम थे।
6॥।) श्री प० दुर्गादत्तजी मत्री श्री से स सरस्वती पुस्तकालय क नाम रहे थे।

1008॥ ≡)॥।

जिस समय श्री सेवासदन सरस्वती पुस्तकालय चालू स्थापित हुआ, उस समय जनरल मिटिंग म वार्षिक आय व्यय का बाकायदा हिसाब पेश हुआ करता था सवत 2004 तक सारा वार्षिक रिकॉर्ड निजू फाइलो में सुरक्षित रहता और एड बढोतरी हेतु प्रति वष अग्रिम बजट, पत्र पत्रिकाएँ पुस्तक सख्या वकिंग कमेटी के मेम्बरों की सूची आदि का सब विवरण शिक्षा विभाग बीकानेर के कार्यालय म भेजना पडता था। तत्समय वकिंग कमेटी में एक हरिजन तथा अन्य जातियो से भी सदस्य लेन के सरकारी नियम माना जाया करत थे। लेकिन हमने आषाढ कृष्णा प्रतिपदा सवत 1994 से चत्र शुक्ला अष्टमी 1996 तक सरस्वती पुस्तकालय का (वष दो का) हिसाब पुरानी नियमावली देखकर यहाँ लिखा है। इससे पहले वष सवा वष मे सहष पुस्तक सग्रह

काय ही अधिक हुआ था। फिर वि० स० 1997 का थोडा आय विवरण पुन पालिया है सो चित्र देखियेगा।

सम्वत् १९९७के वार्षिक चन्दा दाताओंकी नामावली।

१) श्री बा० मेघराजजी गोलछा
१) ,, ,, भीखनचन्दजी नाहटा
१) ,, ,, बाबूलालजी भँवर
१) ,, ,, बद्रीप्रसाद भँवर
१) ,, ,, जयचन्दलाल वैद
१) ,, ,, काशीरामजी राठी
१) श्री प० सूरजमलजी पारीक
१) ,, ,, वी० पी० त्रिवेदी
१) ,, मास्टर मङ्गलदासजी स्वामी हिन्दीभूषण
१) श्री प० रमाकान्तजी वैद्य
१) ,, बा० मोहनलालजी बागड़ी
१) ,, ,, जयचन्दलालजी बिरमेचा
१) ,, ,, धनेचन्दजी नाहटा
१) ,, ,, लालचन्दजी लोढा
१) श्री बा० बुधमलजी नाहटा
१) श्री नानूराम सरकर्ता काव्यमनीषि
१) श्री बा० विरधीचन्दजी कवा
१) श्री माणकचन्द कोठारी
॥) श्री माणकचन्द [illegible] (स्कूलीय छात्र)

भवदीय–
प० दुर्गादत्त शास्त्री साहित्यभूषण
मन्त्री श्रीसेवासदन सरस्वती पुस्तकालय
कालू (बीकानेर)

स० 1996 म यह पुस्तकालय पाठशाला की चौथी कक्षा की आलमारी म मुक्त होकर धर्मशाला के बाहरी कक्ष (कोठरी) म आ चुका था। मत्री प० श्री दुर्गादत्त सारस्वत और उपमंत्री प० श्री वाचस्पति त्रिवेदी (प्रधानाध्यापक) थे। कोषाध्यक्ष श्री बींजराज बनेचद एव पुस्तकाध्यक्ष प० लाधूरामजी पूजारी थे। इन पदाधिकारियों सहित कार्यकारिणी सभा के 14 सदस्य श्री मेघराज गोलछा श्री गिरधारीलाल भवर, श्री लालचद लोढा श्री काशीराम राठी, श्री रूपचन्द नाहटा श्री भीखमचन्द नाहटा श्री मोतीलाल बरनाणी, श्री सोहनलाल सारस्वत श्रीयुत गोविन्दराम यति, श्री सतोकचन्द नाहटा श्री जयचन्दलाल बिरमेचा आदि थे। इस सस्था के हिसाब परीक्षक प्राय श्री मोहनलाल बागडी रहे हैं। उस समय हर साल गाव के सामने हिसाब पेश किया जाता था।

वि० स० 1997 ई० सन 1941 म श्री सेवासदन सरस्वती पुस्तकालय कालू को राजकीय सहायता तीन रुपये मिलनी शुरू हो गई थी। शिक्षा विभाग बीकानेर से हर

माह चैक आ जाया करता, जिसका उपट्रेजरी लूनकरनसर से भुना लाते थे। फिर यह महायता तीन रुपयो से पाँच रुपय हुई, फिर सात, दस, पन्द्रह, बीस रुपये और सन 1955 मे इसको पच्चीस रुपये माहवार सहायता मिलती थी, जो श्री रामचन्द्र कल्ला इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूलस् बीकानेर डिवीजन के द्वारा स्वीकृत हुई थी। दिनाक 17 7 1956 म लेखक (सामयिक मत्री) पुस्तकालय का नया चुनाव करवा कर वी एस टी सी के प्रशिक्षण मे चला गया और दो साल बाहर रहकर वापिस आया, तब ग्राम सेवा सघ के साथ काय सलग्न रहकर पाया कि पुस्तकालय की राजकीय सहायता बद हो गई है। फिर तो इसका नाम केवल श्री सरस्वती पुस्तकालय ही रखा गया है।

स० 1992 से स० 1996 चैत सुदी 8 (चार वर्षों) तक पुस्तकालय म एक सौ पुस्तको से बढकर सात सौ की सख्या हो गई थी और निम्नाकित पत्र पत्रिकाएँ आने लगे थे—

दैनिक—1 हिन्दुस्तान 2 विश्वामित्र। साप्ताहिक—1 मोरा, 2 समाज सेवक, 3 जाग्रति 4 मारवाडी ब्राह्मण 5 श्री बीकानेर राजपत्र, 6 विजय। मासिक—1 चाँद, 2 तरूण ओसवाल 3 कल्याण, 4 सिद्धान्त 5 बालसखा, 6 सस्कृतम 7 जनमत। त्रमासिक—1 राजस्थानी।

कालू मे शिक्षा प्रबुद्ध चनना, सभ्यता तथा सस्कृति के वातावरण को विशुद्ध विस्तृत बनाने वाला श्री सरस्वती पुस्तकालय ही है। अब इस पुस्तकालय का स्थान (भवन) कोई तग कोठरी न रहकर, अपना सावजनिक विशाल भवन बन गया है। कभी कभार प्राचीन बाधाओ के चक्र मे आ जाने वाला यह पुस्तकालय आज बीच बाजार के भव्य भवन मे बडी शान के साथ उन्नत भाल प्रकाशमान हो रहा है। यह पुस्तकालय सर्व-प्रथम शाला की चौथी कक्षा की आलमारी म फिर सन् 1939 40 मे धमशाला के बाहर बरामदे की उतरादी कोठरी (जहाँ अब मालिन रहती है) में इसके बाद नाहटा की हवेली का बाहरी पूर्वी कौन वाला बडा कमरा (सन 1941 मे), पश्चात सन् 1946 मे धमशाला के अन्दर वह कोठरी जो श्री सत्यनारायण मदिर और बोरटी के पास पूव मुख है' म रहा था। श्री जसवतसिहजी, होम मिनिस्टर बीकानेर हवेली वाले कमरे मे और महाराज कुमार श्री अमरसिहजी धमशाला वाली कोठरी मे ही इस पुस्तकालय को देखने पधारे थे। अब तो बाहर से आने वाले सारे महमान एव सास्कृतिक प्रोग्राम, धार्मिक प्रवचन सम्मान व विदाई समारोह आदि के समस्त कायक्रम नये पुस्तकालय भवन म ही आयोजित होते हैं। परन्तु पुस्तकें बद, पत्र पत्रिकाएँ काफी आती हैं और अव्यवस्था का बोलबाला है। सुन्दर तन रुग्ण मन!

यह पुस्तकालय भवन फतेहपुर के सेठ श्री सोहनलालजी दूगड द्वारा दो बार के दान द्रव्य से बनाया गया है। पहले सन् 1951 कलकत्ता मे सरस्वती पुस्तकालय के भवन बाबत श्री लालचन्द राठी स्व०बुधमल नाहटा, श्री हुकमचन्द बोथरा श्री गिरधारीलाल झवर वगरह सावजनिक रूप म सेठ श्री दूगड के पास गये। श्री दूगड ने तत्काल दस हजार का चक इनको प्रदान कर दिया। लेकिन काम तो बहुत बडा करना था, कैसे होना? आखिर अवसर आया और राज्य सरकार के नियमानुसार उनसे

दुगुने लकर पुस्तकालय भवन का काय शुरू किया गया। सन् 1964 के आस पास श्री साहनलालजी दूगड गौशालादि सस्थाआ को देखन श्री डूगरगढ आये, तब कालू क कुछ लोगो ने पुन जाकर पुस्तकालय भवन की सम्पूणता हतु पाँच हजार रुपय फिर उस वरसन वाले बादल श्री दूगड स प्राप्त किये। श्री डूढाणी सरपच कालू ने अपने पचायत कार्यालय से पलोथण (ऊपरी सहायता) लगा करक इस भवन को पूण करवाया है जा गाव के बीच एक गौरवपूण ज्ञानप्रकाश मदिर है। यद्यपि वाचनालय सबधी आधुनिक उपादानो, उपकरणा का अभी अभाव है तथापि सस्था की वाचक दैनिकी सख्या के अनुसार कठिनाइ वाली बात प्रत्यक्ष रूप म महसूस नही होती। हाँ! आय क स्रात अवश्य कम हैं जिनके लिए नवयुवक कायकर्त्ता सक्षम रूप मे जागरूक हैं।[1]

श्री सरस्वती पुस्तकालय के पहले अध्यक्ष पद पर सवश्री गिरधारीलालजी झँवर, श्री दुर्गादत्तजी शास्त्री, श्री नानूराम सस्कर्ता तथा एच० एम० डूढाणी आदि रह हैं। मत्री पद भी तत्समय परिवर्तित होत हुए यही लोग सभालते रहे। अब पूण आश्वस्ति पूवक कहा जा सकता है कि कस्बे कालू के शिक्षित नौजवान श्री सरस्वती पुस्तकालय की श्रीवद्धि मे सतत प्रत्यनशील रहत रहग।

लोकसाहित्य प्रतिष्ठान कालू—यह सस्था लोक साहित्य के क्षेत्र मे सन् 1960 से काय कर रही है। प्रतिष्ठान का उद्देश्य लाक जीवन की अनुपम निधि लोक साहित्य सग्रह सरक्षण एव प्रकाशन है। आज जिस तजी स लोक साहित्य विलुप्त होता जा रहा है उसे देखते हुए इस काय की महत्ता और अधिक बढ जाती है।

प्रतिष्ठान न लोक साहित्य के सम्पूण अग उपागो की ओर पर्याप्त ध्यान दिया है। अब तक लगभग 500 लोक कथायें, 350 कहावता की कहानियाँ, 300 क्रम सवृद्ध बाल लोक कथायें 200 लोक खेना के वाणी विलास, 500 लोकगीत प्राचीन, 200 नवीन लोकगीत, 7 लोक उपयास सग्रहित किय जा चुके हैं। इसके अतिरिक्त कहावता, पहेलियों और सक्षिप्त लोक शब्दा को सग्रहित करन की योजना चालू है।

उपयुक्त साहित्य मे से पर्याप्त मात्रा मे साहित्य प्रकाशित भी करवाया जा चुका है। प्रतिष्ठान के लब्ध प्रतिष्ठित राजस्थानी लेखक श्री नानूराम सस्कर्ता का "*राजस्थानी लोक साहित्य*" (*साहित्य महोपाध्याय के लिए स्वीकृत शोध प्रबध*) प्रतिष्ठान की एक महत्वपूण उपलब्धि है। प्रस्तुत प्रबध सम्पूण राजस्थानी लाकसाहित्य को

---

1 यहाँ के दूकानदारों को व्यापार मडल से श्री सरस्वती पुस्तकालय की सभाल सहायता रखनी चाहिए। जस लूनकरनसर के बजरग भवन का बाजार की ओर स सग्रहित लाख रुपये का धन जमा है।

2 वि० स० 2038 (ई० सन् 1981) आसाढ म पचायत की ओर से सरपच श्री डूढानी न पाँच दुकानें पुस्तकालय की बाहर दिवारी म बनवा कर किराये के लिए सलग्न कर दी है। परन्तु दस सालों से इसकी पुस्तकें पर्दे क पीछे चलायमान प्रगति स्थिति पर हैं, जो पखवटी, लूली-लगडी कपाटों मे जकडी पडी हैं। वे विद्यार्थियों से लेकर आम जनता तक के लिए प्रकट रूप नही, अदश्य एव अलाभकारी वस्तु बनी हुई मरणासन्न हैं। उनकी नाम सख्या सूची और कूची न मालूम कहाँ जा पहुँची? समूची ऊँची कायवाही मे चलती हैं—ऐसा सुना है।

वैज्ञानिक ढग से प्रस्तुत करने का एक सफल प्रयास है। लोक कथाओ की दृष्टि से अनेक कहानी सग्रह व काव्य प्रकाशित करवाये जा चुके हैं राजस्थान एव राजस्थान के बाहर से निकलने वाले शोध पत्र पत्रिकाओं द्वारा विलुप्त प्राय साहित्यिक विधाओ का प्रकाश में लाने का प्रयत्न निरतर किया जाता रहा है।

प्रतिष्ठान ने लोक साहित्य के काय का स्वरूप एव पूण महत्व स्पष्ट किया है। विभिन्न प्रवृत्तिया के प्रतीक नवीन एव प्राचीन लोकगीता के सग्रह से लोक परपरा का निर्वाह हुआ है। प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित ऐतिहासिक, पौराणिक और काल्पनिक लोक कथाएँ लोक वाग्मय का आवश्यक अग है। रहस्यमयी रमणीक एव नीतिपूण कहावतो की कहानियाँ कहावत समझने की सच्ची कुजियाँ हैं। क्रम सबद्ध बाल लोक कथाएँ भी विशेष गतिक्रम और जिज्ञासात्मक विलक्षणता लिए हुए बाल सुलभ मनोवृति के अनुकूल शिक्षा सामग्री हैं। खेल सम्बन्धी, मनोरजन सम्बन्धी भुलावा, बढावा, योरे निमन्त्रण आदि लोक खेला के वाणी विलास द्वारा बालको की उदात्त भावना का विकास होता है। कहावतें, पहेलियाँ, प्रवाद तथा सास्कृतिक एव व्यवहारिक शब्दों आदि अन्य लोक साहित्य की सामग्री द्वारा सामाजिक व्यवहार को बढावा मिला है। प्रतिष्ठान के कला विज्ञान, समाज एव राजनीति म भ्रामक ज्ञान की छाया सबधी लोक उपन्यास सामाजिक धार्मिक एव राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त व्यक्तियो की सही परख है। सीमित साधना के कारण प्रतिष्ठान का सारा साहित्य प्रकाशित नहीं करवाया जा सका। अत दीमकों का आहार बनता जा रहा है। प्रबल इच्छा होते हुए भी आर्थिक अभाव के कारण लोक साहित्य के विपुल भण्डार का सरक्षित नही कर पा रहे हैं।

लोक साहित्य प्रतिष्ठान साहित्य धर्मा भवन कालू के एक कमरे म विद्यमान है। अभी तक इसका अपना भवन नही बन पाया। पर स्टेट बक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर शाखा कालू मे अकाउन्ट नम्बर 336 पर अपना खाता रखता है। प्रतिष्ठान के पदाधिकारी इसके उतरोत्तर विकास के लिए कायशील हैं। प्रतिष्ठान राजस्थानी लोक साहित्य समृद्धि मे एक महत्वपूण भूमिका अदा कर रहा है।

कालू ग्राम सेवा सहकारी समिति लि०—यह सस्था सन 1960 मे बास भादवान 'कालू ग्राम सेवा सहकारी समिति लि०' के नाम से स्थापित हुई थी।[1] इसके बाद दूसरी—बास जाणियान कालू ग्राम सेवा सहकारी समिति लि० फिर खोली गई। आगे चल कर ये दानो सन् 1965 मे मजर (एक) हो गई और इस सस्था का नाम कालू ग्राम सेवा सहकारी समिति लि० रखा गया। इसका अपना सुन्दर भवन और बडा

1 बीकानेर रियास्त ने सन 1920 म "बीकानेर स्टेट को आपरेटिव सोसायटीज एक्ट 1920' लागू किया था। लेकिन आम जन काय हेतु इसका विधिवत नाम दो दशक से प्रकाश मे आया है। देखें—केन्द्रीय एव प्राथमिक स्तर की समस्त सहकारी सस्थाओ विभागीय अधिकारिया, शीष विधि व्यवसायिक आदि के लिए 'राजस्थान में सहकारी कानून" नाम की पुस्तक।

गोदाम जानुओं के कूए पर इसकी आय उपज से सरपच डूढ़ाणी द्वारा सन 1966 म बनवाया गया है। अब सन् 1983 म इस पर दूसरा माला (मजिल) भी बन गया है। पहले इसके द्वारा गाव के लोगा को कपडा, चीनी और अनाजादि आवश्यक पदाथ सस्ते दामों पर उपलब्ध करवाये जाते, मगर अब ता तेल, सोडा, साबुन, घी, रकम एव अनुदान जसा द्रव्य भी दिलवाना सुलभ करवाया जाता है, जो तहसील की विशेष व्यवस्थाओ मे से एक है। पहल पहल मुश्किल से इसके 40-45 सदस्य बन पाय थे, लेकिन अब सदस्य सख्या 900 तक सहप पहुँच गई है। कालू ग्राम सेवा सहकारी समिति लि० द्वारा पाँच हजार के साधारण ऋण वितरण काय से अब 12 लाख तक का बडा लेन-देन होता है। क्रम से इसके चार चुनावो मे—श्री डूगरराम खाती, जीवणदास, गौरीशकर और फिर जीवणदास सस्था अध्यक्ष बन चुके। मत्री पद सन् 1960 से सन् 69 तक निरतर श्री गोपालचन्द डूढाणी द्वारा सुव्यस्थित तथा दढ रहा है। एक बार श्री रामप्रसाद पारीक भी सस्था मत्री चुना जाकर पूरे कार्यकाल तक सेवा सलग्न रहा हुआ है। किन्तु अगले चुनाव म पुन श्री डूढाणी चुनाव जीतकर कालू ग्राम सेवा सहकारी समिति लि० का मत्री बन गया। अब तो श्री डूढाणी अध्यक्ष है।

इस सस्था मे ग्राम सहयोग के अनक काय होते हैं और यह बीकानेर जिले की प्रमुख सहकारी सस्था है। समाजवादी ढग स समाज का निर्माण करन हेतु सबसे महत्वपूण बात इसमें यह होनी है कि जनता के किसी भी वग को राष्ट्रीय लाभा म उचित भागीदार बनने के लिए सम्मान दिया जाता है। कालू का लोक जीवन कई पीढियो से आर्थिक एव सामाजिक ढग से अस्वस्थ स्थिति मे चला आ रहा था, अब इस सस्था के कायकर्त्ताओं ने राष्ट्रीय सकल्प की सहकारिता पूर्ति द्वारा उसको पूण आरोग्य एव तन्दुरुस्त बना दिया है।

कालू दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति—भारत सरकार एव राज्य सरकार द्वारा उत्तरी राजस्थान सहकारी दुग्ध उत्पादक सघ लि० की स्थापना 1972 ई० मे हुई। तब इसके अधीन 1 जनवरी 1975 को कालू दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति ने दुग्ध सकलन काय आरभ किया। गाव मे पशु पालन पेशे के अनुसार पर्याप्त दुग्ध सग्रह होने लगा और पृथक-पृथक मालिकों के द्वारा हजारा गायें भसें अच्छी व्यवस्था के अन्तगत पाली जाने के बावजूद समिति का काय सफल माना जाने लगा। सन 1975 मे श्री शिवचरण माथुर, योजना तथा सामुदायिक विकास मत्री राजस्थान कालू आये और समिति के सदस्यो (दुग्ध विक्रेताओं) को पीतल की बाल्टियाँ वितरित की गई। मत्री महोदय ने सरपच के द्वारा पशुओ की खरीद के लिए सदस्यो को ऋण प्रदान करने हेतु समिति का साठ हजार का चक भेंट किया।

दुग्ध उत्पादका की रुचि देखकर समिति का निजी दुग्ध संग्रहालय व कार्यालय भवन बनाना भी आवश्यक समझा गया। अत ग्राम वासियों के सहयोग से समिति का उक्त भवन सन 1978 मे जाकर पूण निर्मित हुआ। भवन निमित्त भूमि, दुग्ध समिति की उपयोगिता एव ग्रामवासियों की सहयागी भावना के परिणाम स्वरूप ग्राम के मध्य प्राप्त हुई है और गत तीन वर्षों के लाभ से एकत्रित रुपये 32000) तथा दूसरे स्रोतो से

राशि उपलब्ध करके इसके कार्यकर्त्ताओं ने यह भवन तैयार करवाया है। समिति क भवन निर्माण काय मे बाबूलाल भोजक का कार्य सराहनीय रहा है।

इस समिति का विशाल भवन गाव के मध्य (गोदारा के कुए चौक पर) बना, जिसका उदघाटन दिनाक 8 11 78 को श्री जयनारायण पूनिया, सावजनिक निर्माण व विकास मत्री राजस्थान के हाथों से हुआ। इस अवसर पर कालू मे बिजली तथा विश्रामालय आदि के उदघाटन हेतु प्रो० केदार श्रम मत्री, श्री मानकचद सुराणा वित्तमत्री श्री कल्याणसिंह कालवी कृषि एव सिंचाई मत्री और ससद सदस्य चौधरी हरिराम आदि नेता एव मत्रीगण भी विद्यमान थे। दुग्ध समिति के भवन को सब ने सराहा और इसे अच्छा काय बताया। गाव कालू मे यह एक सफल एव अनुकरणीय समिति योजना है। अब तो गाय भस खरीदने के लिए समिति द्वारा ऋण व अनुदान भी दिलाया जाता है। पशुओं के इलाज वास्ते सरकार की ओर से डाक्टर खाद्य सामग्री और दवाओ का भी पूण प्रबध है। समय समय पर पशु प्रदशनी, दुग्ध प्रतियो गिता एव प्रशिक्षण परीक्षा के लिए कम्प आयोजन भी होते हैं। इस सरकारी एव व्यक्तिगत व्यवसाय को समान धरातल पर और विधायक भाग पर रखकर सफल करने का यह परम सुन्दर प्रयत्न है। कालू दुग्ध उत्पादक समिति के द्वारा दुग्ध विक्रेताओं को फिल्म प्रदशनी दिखाने, परीक्षण हेतु बाहर भेजने पशुओं के चित्र खिंवाने तथा डाक्टरी करवाने आदि के अवसर प्राय सुलभ रहते हैं। सस्या का अध्यक्ष श्री बाबूलाल भोजक हैं और पन्द्रह बीस बेरोजगार व्यक्ति भी इसमे काम पर लगा रखे हैं जो मुदित मन स्वय सम्पन्नता के पथ चलते हैं।

तृतीय प्रकरण

ग्राम सेवा सघ कालू व अन्य सस्थाएँ

ग्राम सेवा सघ कालू के काय सिद्धान्त निम्नलिखित हैं—(स्थापित 27 माच सन् 1950)—

1 **साक्षरता हेतु**—(क) खुद पढना एव गाव मे अपढ लोगो को पढाने की चेष्टा करना। (ख) गाव में पुस्तकालय, वाचनालय हैं, अत लोगो का शिक्षा की तरफ ध्यान आकर्षित करना।

2 **जनता की सावजनिक तकलीफों को मिटाने के लिए**—(क) अकाल आग महामारी आदि के समय सब लोग मिलकर बिना घबराहट के काम करना। (ख) रिश्वत, चोर बाजारी आदि को मिटाने की कोशिश करना। (ग) स्कूल, अस्पताल, कुए, तालाब, अन्न वस्त्र आदि समस्याओ का हल करने की कोशिश करना।

3 **सामाजिक रूढिया जो भार स्वरूप हैं, हटाने की कोशिश करना**—(क) छूआ-छूत व भेदभाव को मिटाना। (ख) बाल विवाह वद्ध विवाह आदि कुप्रथाओ को रोकने की कोशिश करना।

ऐसे सघ के अपने 15 और नियम थे। सघ के सदस्य बनने के नियम और उनके कत्तव्य 18 माने जाते थे। ग्राम सेवा सघ कालू के सहायक किशोर सघ के 6 नियम थे। अध्यक्ष के अधिकार एव कत्तव्य सबधी 15 नियम थे। सघ के अन्य सदस्यों के भी 4 अधिकार निर्धारित थे। मत्री के महान अधिकार एव कत्तव्य सबधी 14 नियम थे। सघ के कोषाध्यक्ष के तीन कत्तव्य और हिसाब परीक्षक के 4 कत्तव्य सुनिर्धारित थे। प्रचार सगठन मत्री के 3 काय थे। सघ के औषधि इचाच के 7 आदश कत्तव्य सुनिश्चित थे। सघ की हिन्द क्लब के 16 नियम थे तथा हिन्द क्लब के सदस्य बनने के नियम एव अधिकार 5 थे। सघ के खेल मनोरजन मत्री के 10 अधिकार थे। हिन्द क्लब के कैप्टन को 9 अधिकार मिले हुए थे। इस तरह से सघ के कायकर्त्ताओ को 129 नियम और उपनियमो तथा कत्तव्यो एव अधिकारों का पालन करना पडता था।

ग्राम सेवा सघ कालू का काय विवरण—ग्राम सेवा सघ ने अपनी स्थापना स लेकर दिनाक 31 7 55 तक जो काय किये, वे इस प्रकार हैं—(1) सघ बनने के समय स्थानीय पुस्तकालय चिन्ताजनक परिस्थिति मे था। पुस्तको की अस्त व्यस्तता थी। आय व्यय के हिसाब का मालूम नही था। वर्षों से चुनाव नही हुआ था। पुस्तकालय के प्रति जनता की श्रद्धा कम होती जा रही थी। इस हालत को देखकर ग्राम सेवा सघ ने इसकी दशा सुधारने के लिए प्रयत्न किये। गाव की सभा बुलाकर पुस्तकालय के पदाधिकारियो का दुबारा चुनाव करवाया। हिसाब एव किताबें सुव्यवस्थित की। फटी किताबों के लिए जिल्दसाज बुलाकर जिल्दें बँधाई सदस्यो की सख्या बढाई उनका फीस इकट्ठी की और गाव से चदा एकत्र किया। सरकारी इमदाद भी बढा ली गई थी।

सम्पूर्ण रेकार्डस नये बनाये। पाठको को नियमित रूप से पुस्तकें मिलने लगी और उनकी इच्छानुकूल पत्र पत्रिकाएँ आनी शुरू हो गई।

(2) गाव मे अशिक्षित प्रौढो को साक्षर बनाने के लिए ग्राम सेवा सघ ने भरसक प्रयत्न किये थे। अपनी साधारण आय से पट्टी बरता, किताबो का व्यय करके प्रौढो मे शिक्षा के प्रति दिलचस्पी पदा की। वे साक्षर हुए एव किताबें पढने लगे, जिनमे हरिजन और किसान भी थे।

(3) अपने गाव का मिडिल स्कूल भवन, सघ की स्थापना के समय अधूरा पडा था। इस अधनिर्मित भवन को पूरा करने के लिए ग्राम चदा दाताओ की एव स्कूल कमेटी के मेम्बरो की सभाए बुलाइ। फिर सघ ने भवन को पूरा बनाने के लिए सरकार से कोशिश की। प्रतिनिधि मडल बीकानेर गया। आखिर "श्री शादूल वल फेयर एण्ड पब्लिक फ्री वाटर सप्लाई फड" से 10 000) दस हजार रुपये मिले तब स्कूल भवन पूरा किया गया।

(4) कितु इस उपरोक्त स्कूल भवन मे आठ क्लासो को पढाई के लिए दो कमरों का होना निहायत जरूरी था, जिसके लिए सघ ने कोशिश करके राजस्थान सरकार से 3925) रुपये मजूर करवाये तब कमरो की कुछ कमी पूर्ति हुई।

(5) साहित्य समाज म क्रांति पदा करता है। समाज मे उत्पन्न कुरीतियों को हटाने के लिए ग्राम के लडको मे लिखने की तरफ रुचि पदा की और उनके मस्तिष्क विकास के लिए सघ ने एक हस्त लिखित त्रमासिक पत्र (विकास) निकालना आरम्भ किया। सघ का यह सराहनीय काय उच्च आदर्श उपस्थित करता हुआ अत तक सामयिक उद्देश्य की पूर्ति करता रहा।

कालू ग्राम म बालिका विद्यालय वर्षों से था। कितु श्रीमती आभा देवी के प्रधान अध्यापिका काल म विद्यालय की दुदशा हो गई थी। लडकियो की सख्या घट चुकी थी। पढाने का तरीका सतोषजनक नही था। सघ ने शिक्षा विभाग से प्राथना करके उसका तबादला कराया और दूसरी अध्यापिका का यहा बुलाया। विद्यालय को प्राइमरी की जगह लोअर मिडिल बनाने के लिए कोशिश भी चलाई थी। शिक्षा विभाग का आदेश हुआ कि लडकिया की सख्या ज्यादा होने पर कक्षा बढा दी जायेगी। इसलिए ग्रामवासियो से अनुरोध किया कि अपनी लडकियो को घर न रखकर स्कूल भेजें। ऐसी कोशिश करके लडकिया की सख्या 100 तक बढा दी थी।

सघ की स्थापना से पूर्व गाव मे दवाई का बडा अभाव था। प्राईवेट तौर से कई एक सज्जन दवाई बेचते एव मनचाहा चौगुना मुनाफा लेते थे। इस किल्लत को देखकर सघ ने एक औषधालय कायम किया। वह गाव की अधिक से अधिक सेवा करता रहा। सन् 1955 मे यहा डिस्पेंसरी मे एम० बी० बी० एस० डाक्टर आने के बाद उनके सुझाव से सघ ने दवाइयो का वृहद भडार खोलने की योजना बनाई। कितु सघ की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। इसलिए सघ के सदस्यो से ही रुपये कर्ज लेकर दवाइयो की सख्या बढाई थी। फलस्वरूप जनता को उपयोगी दवाइयाँ उचित मूल्यो मे प्राप्त होने लगी। औषधालय मे होमियोपैथिक का (मुफ्त वितरण हेतु) बडा स्टाक था। जिससे गरीब जनता पूरा फायदा उठाती थी।

गाव मे अस्पताल का होना जरूरी था। सन 1951 से सघ के सतत प्रयत्न का परिणाम है कि हम आज अपने यहाँ बडा अस्पताल देख रहे हैं। इसकी स्थापना के लिए सघ ने अनेक प्रयत्न किये थे। स्वास्थ्य विभाग राजस्थान को पत्र देकर सघ का प्रतिनिधि मडल बीकानेर एव जयपुर म उच्चाधिकारियो तथा मत्रियो से मिला था। सघ ने सेठ श्री सुगनचन्द बनेचन्द नाहटा क परिवार को हार्दिक धन्यवाद दिया, जिन्होन प्रथम अपना मकान डिस्पेसरी के लिए देकर जन मन को कृतार्थ किया है।

सितम्बर सन 1653 में अपने गाव एव आसपास के बीसो गावो म मलेरिया बडे जोर से फला। सघ ने मलेरिया को रोकने के लिए सरकार से वैलोड्रीन मेपाक्वीन, कामाक्वीन आदि गोलियाँ सहायता के लिए प्राप्त कर सुन्दर ढग से रोगियो को वितरण की। उस दवा ने रामबाण' का काम किया। गरीब जनता को मुफ्त गोलिया मिलने से बडी राहत पहुँची। उनका सब हिसाब ब्योरेवार सरकार का भेजा गया। करीब 5000 पाच हजार गोलिया बाँटी गई थी।

सघ की स्थापना क समय कालू मे डाक महीने मे 15 दिन ही आती थी, जिससे गाव को समय पर चिट्ठी प्राप्त नहीं होती। नजदीक से आने वाले पत्र भी अटकने की वजह से लेट हो जाते थे। इस परेशानी को दूर करने के लिए सघ ने डाक विभाग से पत्र व्यवहार किया। एक बार डेपूटेशन सुपरिटेंडेंट ऑफ पोस्ट आफिस से मिला, अपनी परेशानी प्रकट की। काफी कोशिश के बाद ता० 9 7 53 से रोजाना डाक आने जाने का हुक्म जारी हो गया। पर पोस्ट आफिस से इन्श्योर नही लगाई जा सकती और सेविंग्स एकाऊन्ट भी नही। इन कार्यो के लिए भी कोशिशें की गई। आस पास के गावो के कागज पत्र यहा आते हैं, इसलिए देहानी डाकिए के लिए भी कोशिश की गई। पोस्ट ऑफिस को ऊँचे दर्जे म परिवर्तित करने के लिए भी कागज चलाये गये।

सन 1953 मे श्री सादू ल वल फैयर एण्ड पब्लिक फी वाटर सप्लाई फड' से गाँव के तालाबो की खुदवाई के लिए 8000) आठ हजार रुपये मिले थे। इन रुपयो से खुदाई काय हुआ उसका हिसाब पूर्णतया सघ में ही रखा था। सघ के सदस्यो ने ही अवैतनिक मेटा एव सुपरवाईजरो का काय किया। समस्त मस्ट्रोल बनाकर तहसील से पास कराना और फिर पेमेन्ट करना विस्तृत काय होता है जो सघ ने बडी ईमानदारी से किया।

एक बार भिवानी से आँखों का इलाज करने क लिए डॉक्टर बुलाये थे। कम्प कालू में लगे थे। सघ ने गाव से आर्थिक मदद लेकर रोगियो के खान पीने तथा समुचित सेवा का प्रबन्ध किया था। रोगियो को उनके कमरो से ऑपरेशन हाल में तथा वापिस ऑपरेशन हाल से उनके कमरों म अपने हाथो से लाने-लेजाने का काय किया। तब अन्धों ने आँखें पाई थी। डॉक्टर ने सधन्यवाद स्थानीय लाईब्रेरी का द्रव्य प्रदान किया था। इस प्रकार सघ हमेशा सेवा काय म तत्पर रहता।

सन् 1953 म मारवाडी रिलीफ सोसाइटी ने अपना एक स्थाई कम्प बीकानेर म अकाल पीडितों की सेवाय लगाया था। ग्राम सेवा सघ ने अपना सम्पर्क सोसाइटी के साथ स्थापित करके कालू एव आस पास के पचासो गावो में सेवा काय चालू किय

थे जो निम्नांकित हैं—(क) कस्बा कालू में राजस्थान सरकार की ओर से तालाबों की खुदवाई का कार्य चालू कराया गया, जिसमें हजारों मजदूर काम करते थे। आस पास के अन्य गाँवों में भी खुदवाई के कार्य संघ की निगरानी में चालू हुए। मजदूरों को पेमेंट देरी से मिलने के कारण बड़ी दिक्कत होती थी। किन्तु संघ ने इसको बड़े सुन्दर ढंग से सुलझाया था। स्थानीय दुकानदारों से बात करके संघ वाले उन पर पर्ची काट कर मजदूरों को दे दिया करते थे। मजदूरों को उससे अनाज वगैरह आवश्यक खाद्य सामग्री मिल जाती थी।

अकाल में गायों की बड़ी दुर्दशा होने लगी थी। सोसाईटी के सहयोग से संघ ने कई जगह अस्थाई गौशालाएँ कम्प खोले, जिससे हजारों की तादाद में गायों की रक्षा हुई।

अच्छी नस्ल के साडों को ग्वार देकर उनकी रक्षा की गई जिससे नस्ल खराब होने से बची। आस पास के पचासों गाँवों में ऊटों पर धूप में दौरे करके संघ ने साडों के लिए ग्वार का प्रबन्ध किया था और गायों के लिए भी सहायता दी थी। इसके साथ अपाहिजों को कपड़े व अनाज वितरण किया गया था।

सोसाइटी से मिले हुए पाउडर दूध का कड़ाहों में अपने हाथों से तैयार करके सुव्यवस्थित ढंग से मजदूरों और गरीबों के बच्चों, बूढों एवं गर्भवती स्त्रियों को पिलाया जाता था। साथ में उनको विटामिन की गोलियाँ दी जाती थीं जिनसे गरीबों और मजदूरों का स्वास्थ्य बरकरार बना रहा।

गर्मी के मौसम में कई जगह पानी की किल्लत हो गई। जिसको मिटाने हेतु कई जगह कुएँ जाड़ाने के लिए रुपये दिये। उन गाँवों को संघ से बड़ी सहायता मिली।

इस प्रकार यह कार्य बहुत बड़ा कार्य था, जिसको संघ ने बड़ी ईमानदारी, तत्परता एवं मुस्तैदी के साथ सफल बनाया था। इस कार्य प्रणाली को देखकर सोसाइटी के आये हुए प्रतिनिधि श्री बद्रीनारायणजी सोढाणी ने संघ की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और दौरों पर आये हुए श्री रामेश्वरलालजी टाटिया, मातादीनजी खेतान ने भी संघ के कार्य देखकर सराहना की। फिर सोसाइटी के हैड आफिस कलकत्ता से एक धन्यवाद पत्र भेजा था।

कालू का इलाका पवित्र घी के लिए सदा से प्रसिद्ध है लेकिन कई व्यापारी बाहर से वेजीटेबल घी लाकर चोरी से यहाँ के घी में मिश्रित कर देते थे और इस इलाके को बदनाम कर रहे थे। संघ ने निगरानी एवं जाँच पड़ताल से ऐसे व्यापार करने वाले गिरोह को पकड़ा। फिर बीकानेर से डी० एस० पी० साहब एवं पुलिस इन्स्पेक्टर वगैरह को यहाँ पर बुलाये। इसकी पूर्णतया जाँच करवाई और मिलावट करने वाले सज्जनों पर मुकदमें का भय डाला। संघ के इस साहसी कार्य को देखकर पुलिस विभाग ने संघ की भूरि भूरि प्रशंसा की।

अपने गाँव में मिडिल स्कूल से बढ़ाकर हाई स्कूल की शिक्षा के लिए दो वर्ष से प्रयत्न हो रहे थे। इन सब कोशिशों के लिए संघ को डेपूटेशन लेकर शिक्षा मंत्री तथा यूनिवर्सिटी के रजिस्टार तक मिलना पड़ा। इसके अलावा आस पास के गाँवों में प्राइमरी स्कूल खुलवाने के लिए संघ ने पूरी कोशिश की और कई गाँवों में प्राइमरी स्कूल चालू

करवाये। इन गावा म शिक्षा का प्रचार हाने से ऊँची क्लासा की शिक्षा ग्रहण करन के लिए वहाँ के छात्र कालू मे पढने के लिए आये। अपना बाडिंग हाउस जो गढ अमरसिंह जी से मिल चुका था, बाहर के छात्रा को रहने के लिए मिला और विद्यालय की उन्नति हुई। अब कस्बा कालू शिक्षा-परीक्षा का एक अच्छा केन्द्र बन गया है।

सघ ने अपना सम्पर्क रैडक्रॉस सोसायटी से स्थापित किया। रैडक्रॉस सासायटी मे पाउडर दूध मगवाकर बच्चो, बूढों और गर्भवती औरता का अर्से तक पिलाया था।

अपाहिज एव पर्दानशीन स्त्रियो का सरकार से सहायता दिलाई एव आग के लिए सहायता चालू रखने के लिए सघ न भारी कोशिश की। राजस्थान सरकार की जल बोर्ड योजनानुसार आस पास के बीसों गावा का दौरा करके सघ न उन गावो की पूरी रिपोट एव जानकारी जल बोड के समक्ष पेश की। अनक गावो मे काय चालू करने की मजूरी भी मिला थी।

स्थानीय कस्बे के मिडिल स्कूल मे कक्षा 7 व कक्षा 8 मे ड्राइग (चित्रकारी) पढाई जाती थी। सघ ने कोशिश करके कामर्स भी खुलवाई। इस काय क लिए एक डेपूटेशन शिक्षा अधिकारिया से मिला।

इन कार्यो के अलावा कालू म बहुत स छाटे माट काय भी सघ द्वारा हुए हैं। गाव स कोई भी आपसी सहायता मागता तो सघ यथाशक्ति सहायता दता और सदव देन का तत्पर रहता था।

सघ की हस्तलिखित त्रमासिक पत्रिका 'विकास' का निकालना सदस्या की साहित्यिक भावना का परिचायक था। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर यह दोहा लिखा जाता था—

'विग्रह फूट विवाद का, हर्षित चाहे ह्रास।
स्नेह सरोवर सघ का यह बीचि विकास॥'

सघ क कार्यों के फलस्वरूप कुछ सम्मति पत्र आये थे जो निम्नलिखित हैं—

1 आज म कालू अपने दौरे पर प्रोग्राम के अनुसार आया और 'ग्राम सेवा सघ' सस्था का कुछ काम देखने का अवसर मिला। यह सस्था इस ग्राम के कुछ उत्साही नवयुवको के हाथ मे है और सावजनिक काय कर रही है। किसी भी गाव मे ऐसी सस्था का हाना उस गाव के लिए खुश किस्मती है। मैं कामना करता हूँ कि यह सस्था उन्नति कर। मेरा सुझाव है कि इस सस्था को Red Cross Society से सपक बढाना चाहिए। —Khem Chand, Collector of Bikaner, 8 6 54 Campkalu

2 I certify that during my stay in village Kalu {I found that "Gram Seva Sangh' of this village is going a lot of Social work in this village { Especially the work which they are doing to help the poors is worthy of praise I have found the members always ready to work in all sorts of Matters I wish success to this sangh in future -V D Garg M B B S, C A S Class II 18 7 55

ये जो निम्नांकित हैं—(क) कस्बा कालू मे राजस्थान सरकार की ओर से तालाबो की खुदवाई का काय चालू कराया गया, जिसम हजारो मजदूर काम करते थे। आस पास के अन्य गाँवों म भी खुदवाई के काय सघ की निगरानी म चालू हुए। मजदूरो को पेमेन्ट देरी से मिलने के कारण बडी दिक्कत होती थी। किन्तु सघ ने इसको बडे सुन्दर ढग से सुलझाया था। स्थानीय दुकानदारो से बात करके सघ वाले उन पर पर्ची काट कर मजदूरो को दे दिया करते थे। मजदूरो को उससे अनाज वगरह आवश्यक खाद्य सामग्री मिल जाती थी।

अकाल में गायो की बडी दुदशा होने लगी थी। सोसाईटी के सहयोग से सघ ने कई जगह अस्थाई गोशालाएँ कम्प खोल, जिससे हजारो की तादाद म गायो की रक्षा हुई।

अच्छी नस्ल के साडो को ग्वार देकर उनकी रक्षा की गई जिससे नस्ल खराब होने से बची। आस पास के पचासो गाँवो म ऊटो पर धूप मे दौरे करके सघ न साडो के लिए ग्वार का प्रबन्ध किया था और गायो के लिए भी सहायता दी थी। इसके साथ अपाहिजो को कपडे व अनाज वितरण किया गया था।

सोसाइटी से मिले हुए पाउडर दूध को कडाहो म अपन हाथो से तैयार करके सुव्यवस्थित ढग से मजदूरो और गरीबो के बच्चो, बूढो एव गभवती स्त्रियो को पिलाया जाता था। साथ मे उनको विटामिन की गोलिया दी जाती थी जिनसे गरीबो और मजदूरो का स्वास्थ्य बरकरार बना रहा।

गर्मी के मौसम मे कई जगह पानी की किल्लत हो गई। जिसको मिटाने हेतु कई जगह कुएँ जोडाने के लिए रुपय दिये। उन गाँवो को सघ से बडी सहायता मिली।

इस प्रकार यह काय बहुत बडा काय था, जिसको सघ ने बडी ईमानदारी तत्परता एव मुस्तदी के साथ सफल बनाया था। इस काय प्रणाली को देखकर सोसाइटी के आये हुए प्रतिनिधि श्री बद्रीनारायणजी सोढाणी ने सघ की मुक्त कठ से प्रशसा की और दौरो पर आये हुए श्री रामेश्वरलालजी टाटिया मातादीनजी खेतान ने भी सघ के काय देखकर सराहना की। फिर सोसाइटी के हैड ऑफिस कलकत्ता से एक धन्यवाद-पत्र भेजा था।

कालू का इलाका पवित्र घी के लिए सदा से प्रसिद्ध है लेकिन कई व्यापारी बाहर से वेजीटेबल घी लाकर चोरी से यहाँ के घी मे मिश्रित कर देते थे और इस इलाके को बदनाम कर रहे थे। सघ न निगरानी एव जाँच पडताल से ऐसे व्यापार करने वाले गिरोह को पकडा। फिर बीकानेर से डी० एस० पी० साहब एव पुलिस इन्स्पेक्टर वगरह को यहा पर बुलाये। इसकी पूणतया जाच करवाई और मिलावट करने वाले सज्जनों पर मुकदमें का भय डाला। सघ के इस साहसी काय को देखकर पुलिस विभाग ने सघ की भूरि भूरि प्रशसा की।

अपने गाव मे मिडिल स्कूल से बढाकर हाई स्कूल की शिक्षा के लिए दो वष से प्रयत्न हो रहे थे। इन सब कोशिशो के लिए सघ को डेपूटेशन लेकर शिक्षा मत्री तथा यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार तक मिलना पडा। इसके अलावा आस पास के गाँवो मे प्राइमरी स्कूल खुलवाने के लिए सघ ने पूरी कोशिश की और कई गावो मे प्राइमरी स्कूल चालू

करवाये। इन गावो मे शिक्षा का प्रचार होने से ऊँची क्लासो की शिक्षा ग्रहण करने के लिए वहाँ के छात्र कालू मे पढने के लिए आये। अपना बोर्डिंग हाऊस जो गढ अमरसिंह जी से मिल चुका था, बाहर के छात्रो को रहने के लिए मिला और विद्यालय की उन्नति हुई। अब कस्बा कालू शिक्षा-परीक्षा का एक अच्छा केन्द्र बन गया है।

सघ ने अपना सम्पर्क रेडक्रॉस सोसायटी से स्थापित किया। रेडक्रॉस सोसायटी से पाउडर दूध मगवाकर बच्चो, बूढों और गर्भवती औरतो को अर्से तक पिलाया था।

अपाहिज एव पर्दानशीन स्त्रियो को सरकार से सहायता दिलाई एव आग के लिए सहायता चालू रखने के लिए सघ ने भारी कोशिश की। राजस्थान सरकार की जल बोर्ड योजनानुसार आस पास के बीमो गावो का दौरा करके सघ ने उन गावो की पूरी रिपोर्ट एव जानकारी जल बोर्ड के समक्ष पेश की। अनेक गावो मे काय चालू करने की मजूरी भी मिली थी।

स्थानीय कस्बे के मिडिल स्कूल मे कक्षा 7 व कक्षा 8 मे ड्राइग (चित्रकारी) पढाई जाती थी। सघ ने कोशिश करके कामर्स भी खुलवाई। इस काय के लिए एक डेपूटेशन शिक्षा अधिकारियो से मिला।

इन कार्यों के अलावा कालू मे बहुत से छोटे मोटे काय भी सघ द्वारा हुए हैं। गाव से कोई भी आपसी सहायता मागता तो सघ यथाशक्ति सहायता देता और सदैव देने को तत्पर रहता था।

सघ की हस्तलिखित त्रमासिक पत्रिका विकास" का निकालना सदस्यो की साहित्यिक भावना का परिचायक था। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर यह दोहा लिखा जाता था—

विग्रह फूट विवाद का, हर्षित चाह ह्रास।
स्नेह सरोवर सघ का यह वीचि विकास।।'

सघ के कार्यों के फलस्वरूप कुछ सम्मत्ति-पत्र आये थे जो निम्नलिखित हैं—

1 आज मै कालू अपने दौरे पर प्रोग्राम के अनुसार आया और ग्राम सेवा सघ' सस्था का कुछ काम देखने का अवसर मिला। यह सस्था इस ग्राम के कुछ उत्साही नवयुवको के हाथ मे है और सावजनिक काय कर रही है। किसी भी गाव मे ऐसी सस्था का होना उस गाव के लिए खुश किस्मती है। मैं कामना करता हूँ कि यह सस्था उन्नति करे। मेरा सुझाव है कि इस सस्था को Red Cross Society से सपर्क बढाना चाहिए। —Khem Chand, Collector of Bikaner, 8-6 54 Campkalu

2 I certify that during my stay in village Kalu [I found that 'Gram Seva Sangh' of this village is going a lot of Social work in this village [Especially the work which they are doing to help the poors is worthy of praise I have found the members always ready to work in all sorts of Matters I wish success to th's sangh in future -V D Garg M B B S, C A S Class II, 18 7 55

3 'ग्राम सेवा सघ' की नियमावली हमने देखी। जिससे यही प्रतीत होता है कि इस नियमावली का अनुकरण करने से हमारा समाज एक आदश समाज बन जायेगा। यह नवयुवकों का उत्साह सराहनीय है।

—H Sharma, D I G P, Bikaner, 23 9 54
—K Mehta, F R C S (Eng) P M O, Bikaner 23 9 54

4 मैंने आज कस्बा कालू मे 'ग्राम सेवा सघ' के काय का निरीक्षण किया और उत्साही सदस्यों से मिला और बातचीत की। मैंने बीकानेर डिस्ट्रिक्ट मे इस तरह की सस्था यह पहली देखी है जिसम सेवा करन का पूण उत्साह व लग्न है। इस सघ न भविष्य के लिए जो योजना इस कस्बे की उन्नति के लिए बताई उससे मेरी पूरी रुचि है और मेरी हार्दिक इच्छा है कि उनकी योजना सफल हो।

—Hazari Lal S D M, North Bikaner 4 9 55

5 श्री ग्राम सेवा सघ, कालू कलकत्ता, 4 अक्टूबर 1953
कालू

प्रिय बन्धु

पिछले दिनो अप्रल सन 1953 से अगस्त सन 1954 तक मारवाडी रिलीफ सोसायटी, कलकत्ता द्वारा सचालित बीकानेर डिवीजन म स्थित अकाल सेवा केन्द्रो मे आपने जो सहयोग अपना बहुमूल्य परामश एव समय दिया है उसके लिए मैं आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। सच तो यह है कि आप जसे रचनात्मक कायकर्त्ताओ क सहयोग से ही सोसायटी इतने बडे व्यापक राहत काय का भार सफलता पूवक वहन कर सकी है।

सोसायटी एक शुद्ध रचनात्मक सेवा सस्था है, मुझे विश्वास है कि जब कभी भी हमे जरूरत पडेगी आपका इसी तरह हार्दिक सहयोग मिलेगा।

एक बार पुन मैं आपके कठोर परिश्रम एव नि स्वाथ सक्रिय सहयोग के लिए सोसायटी की ओर से धन्यवाद देता हूँ।

आपका—रामेश्वर टाटिया प्रधान मत्री, मा०रि० सोसायटी

'ग्राम सेवा सघ कालू क जो सदस्य रहे उनके नाम निम्नलिखित हैं।

श्री गिरधारी लाल भवर केशरी चन्द डूडाणी मोहनलाल रामेश्वर लाल सीताराम श्रीराम भवर मागीलाल वैद हुकमचन्द महालचन्द भवरीलाल मोहनलाल बोथरा भवरलाल बोथरा (k) प्रेमसुख करनाणी भवरलाल कर्वा, अजु नराम पारीक काशमल गिरधारी लाल कर्वा, रामचन्द्र श्रीराम इन्द्रचन्द्र राठी भवरलाल गौरीशकर साडल चम्पालाल कर्वा पृथ्वीराज, मिचियालाल चद गगाविशन बागडी हनुमानमल जगन्नाथ मल डूडाणी सुरजाराम पारीक जेठमल मदनलाल राठी किशनाराम माइस मोतीलाल नाहटा नोरतमचन्द सेठिया मानमल लोढ़ा जवरीलाल, धनराज नाहटा पूनमचन्द, नामराज चुन्नीलाल माणकचन्द नाहटा श्रीचन्द माणिकचन्द, कुम्भकरण कोठारी, लूणकरण मालचन्द बिरमेचा दूलामचन्द नाहटा, भवरलाल, हनुमानमल हसराज सिंघी रिधकरण पुगलिया, माणकचन्द गोलछा सम्पतलाल धनराज सिंघी, कन्हैयालाल, किशनलाल नौलखा भवरलाल लोढ़, बुधमल गिरधारीलाल मालचन्द नाहटा प्रताप मल नथमल बाग्ड शामलाल दूगड नानूराम मन्धर्वा धनराज जांगिड।

वि०स० 2012 (सन् 1955) ग्राम सेवा सघ कालू के पदाधिकारी निम्नलिखित थे, जिनका चित्र नीचे दिया गया है।

संघ के पदाधिकारी

श्री जंवरीलाल नाहटा	अध्यक्ष
,, नानूराम सस्कर्ता	उपाध्यक्ष एव साहित्य सगीत मन्त्री
,, नेमचन्द बोर्ड	प्रधान मन्त्री
,, रिद्धकरण पूगलिया	उप-मन्त्री
,, नन्दलाल राठी	प्रचार सगठन मन्त्री
,, भीखमचन्द सेठिया	खेल मनोरजन मन्त्री
,, भवरलाल साड	कोषाध्यक्ष
,, श्रीचन्द कोठारी	हिसाब परीक्षक
,, शिवनारायण डूडानी	औषधी इचार्ज

अपने कायकाल मे इस सस्था ने चुरु की सव हितकारिणी सभा' (स्थापित वि०स० 1964) और रतन नगर का 'समाज सेवा मित्र मण्डल' (स्थापित सन् 1950) की तरह अनेक क्षेत्रों में सन् 1961 तक सच्ची लोक सेवा करने का श्रेय लिया है।

कालू गाव की प्रगति युवा नागरिकों के पवित्र हृदय का प्रयास है। बहुत से युवक क्षमा करें मेरी सोचना मे नही आय हांगे, किन्तु ग्राम सेवा सघ कालू के सारे काय मैंने इसलिए लिखे हैं कि विद्यार्थी युवक इससे प्रेरणा लेकर कायकर्ता बनेंगे और कालू की कीर्ति को प्रकाशित रखेंग। जिज्ञासु शोधार्थी लेखक भी इस टिमटिमाते' प्रकाश से प्रभावित होकर क्षेत्रीय इतिहास लेखन की ओर अग्रसर हांगे।

सस्थाए जन चेतना की द्योतक, जिस क्षेत्र म कायरत होती है वह इलाका अधिक सुख-सम्पन्न तथा सभ्य-सुसस्कृत कहलाता है। ग्राम सेवा सघ कालू ने अपने क्षेत्र की परम्परित रीति रिवाजा सामाजिक नियमा एव धार्मिक मर्यादाओं की व्यवस्था बनाये रखन के हित म अनेक सुधारपूण प्रयत्न किए। ग्राम सेवा सघ सास्कृतिक, साहित्यिक तथा राजनतिक जागृति के लिए लूनकरनसर तहसील की प्रमुख एव आदश सस्था रही। यद्यपि यह अचल सदैव अभाव ग्रस्त रहा मगर यहा के नवयुवकों की लगनशील निष्ठा अदम्य उत्साह एव सफल कायक्षमता के कारण अपने गाँव (कालू) तथा आस पास के चौतरफे क्षेत्र में आवास वृद्धि विकास काय और सब सुख-साधन यथाशक्य सुलभ करवाये गये। इसकी स्थापना समाज सेवा, शिक्षा प्रसार समाज सुधार एव राजनीति की सामयिक प्रेरणा देने के पावन उद्देश्य म पूण सफल रही। कालू म यह आदश सस्था प्रथम थी और निकट भविष्य में ऐसी कायशील सस्था स्थापित होने की कम सम्भावना

है। इससे उभरे हुए अनेक सभ्य नागरिक आज भी ग्राम सेवा संघ की याद दिलाते हैं। परन्तु सबधियों सम्बंधित गुट, सिंघी की अध्यक्षता संघ को मार गई। व्यय विनडावाद फैलाकर रिकॉड प्रभृति नष्ट किये और 'ग्राम सेवा संघ कालू" के नाम सदा के लिए नेस्तनाबूद कर दिये।

ग्राम सेवा संघ कालू के प्रवासी सदस्यो ने देश के अनेक दूर अचला मे परिचित उदात्त एवं त्यागी महानुभावा के आपसी सम्पर्क सेवा योग से द्रव्य संग्रह करवाकर कन्या विद्यालय भवन निर्माण की यथा समय लक्ष्य पूर्ति करवाई थी, जिन मुकामा से राशि एकत्रित हुई उनके नाम नीचे दिये जा रहे हैं —

कूचबिहार, माथाभागा जाटामारी मोहेश चूरू बडोखोलीमारी जमालदा, मोटपटी, टीलाबाडी, जोरपाकडी मैनागुडी, हेलापाकडी चगडाबादा मोलानीहाट, लाटागुडी, रांगामारी, हचलूहाट वीरपाडा फालाकाटा रायचांगा, सिलीगुरी बरेली खरस्याग चमरखची, बानरहाट रक्सोल पीलीभीत चोराचोरी, घूपगुडी गुलाबबाग करीमगंज धमनगर सिलचर, बदरपुर, गुसाईगाव कमरूयागुडी, विराटनगर (नपाल) जोगबनी (विहार) गढबनली कसबा अररियाकोट कटिहार आदि।

सदस्यो का मासिक अद्धमासिक एवं साप्ताहिक वेतन सहयोग—

सदस्यता शुल्क के सिवाय ग्राम सेवा संघ कालू के कतिपय सदस्य वर्ष में एक बार अपना विशेष वेतन सहयोग भी दिया करते थे। वर्ष के बारह महीनो मे से कई सज्जन एक महीने का कई पन्द्रह दिन का तथा कुछ लोग सप्ताह भर का अपना वेतन द्रव्य देने मे स्वय सकल्पित सहयोगी रहे। तत्कालीन वेतन से आय—

सहयोग राशि	सहयोगदाताओं के नाम	विशेष विवरण
201)	श्री मोहनलाल झवर	मासिक
151)	, जवरीलाल नाहटा	अद्ध मासिक
151)	, भीकमचद सेठिया	,
151)	,, गोपालचद डूढानी	,
101)	सीताराम झवर	,
101)	,, हनुमानमल डूढानी	साप्ताहिक
101)	पृथ्वीराज सिंघिया लाल चद	,,
51)	,, बुधमल नाहटा (चौभीता)	
51)	,, इन्द्रचद राठी	,,
51)	, हुकमचद बोथरा सहयोग	,
51)	, मानिकचद गोलछा	,,
51)	,, शोभाचद दुगड	,
31)	धनराज नाहटा	
31)	, श्रीचद कोठारी	,
25)	भवरलाल साड	,
25)	महालचद नाहटा	,
25)	,, पुनमचद लोढा	

25)	श्री लूनकरन झवर	साप्ताहिक
21)	,, कन्हैयालाल करनाणी	5 दिन
11)	,, लूनकरन बिरमेचा	,
11)	, नानूराम सस्कता	,,
11)	, धनराज जाँगीड	,,
201)	, बाबूलाल झवर	अ० मासिक
101)	, रामेश्वरलाल झवर	,
25)	,, प्रतापमल नेमचद बाग्ड	साप्ताहिक
15)	, भीखमचद S/o सतोखचद नाहटा	5 दिन
	,, भीखमचद बोड	}
	, कन्हैयालाल पारीक	}
	, धनराज सम्पतलाल हसराज मिंधी	}

ग्राम सेवा सघ के कतिपय सेवा साधको का परिचय—

(1) ग्राम सवा मघ कालू के भू० पू० अध्यक्ष श्री जवरमल नाहटा का जन्म वि स 1982 भादवा सुदी 1, का है। इनके पिता का नाम श्री तालाचदजी नाहटा है। श्री जवरीमल श्री घमडीराम नाहटा के उदात्त घराने के नौजवान नेता हैं। श्री नाहटा ने स्थानीय स्कूल म प्रारभिक शिक्षा समाप्त करके समाज सेवा की ओर ध्यान दिया। ये तीस वष से अपने गाव कालू म सामाजिक नेता के रूप में प्रेम कुशल व्यक्ति माने जाते हैं। श्री जवरीमल के नेतत्व से गाव और निकट क्षेत्र के लोग बडे प्रभावित हैं। गाव म सगठन का काय करने मे इन्हें यश हासिल है। अत गाव के विशेष कार्यों के समय इनको बाहर से बुलवा लिया जाता है।

श्री जवरीमल नाहटा कालू के मुख्य नेता कहलाते हैं। इनकी अटूट समाज हित निष्ठा, आजन्म सेवा भावना और सगठनात्मक प्रतिभा की अजेय दक्षता देखन परखने के योग्य है। श्री जन श्वेताम्बर तेरापथी सभा कालू ओसवाल श्री सघ पचायत कालू महिला मडल एव कन्या मडल आदि सस्थाओं मे श्री नाहटा सक्रिय भाग लेते हैं। श्री सरस्वती पुस्तकालय कालू और ग्राम विकास परिषद कालू के श्री नाहटा अध्यक्ष हैं और ग्राम सवा मघ कालू का गभीर कायकर्ता तथा कायशील प्रौढ व्यक्ति रहा है। गाव क लोगों म सगठन एव प्रीति स्थापन के लिए जवरीमल का प्रयास अपूव है श्रेयस्कर हैं। यह शिक्षा स्वास्थ्य एव धार्मिक कार्यों म भी कभी पीछे नही रहता है।

श्री नाहटा का व्यक्तित्व इतना सरल है कि कोई अपरिचित रास्ते चलता आदमी भी इससे प्रभावित होकर लाभ उठा लेता है। समाजवाद का हिमायती कहा जाय अथवा भावुक व्यक्ति, कि घर के नौकरादि तक भी भय के वातावरण से मुक्त रहते हुए स्वतत्र कायनाल वन रहते हैं। गरीब और भलेमानस की सहायता करने म नाहटा कभी नूनच नही करता। कोई भी इस सीधाई से अनुचित फायदा कमाओ, पर नाहटा कभी बुरा नही मानता। अपनी नासनिक ढिलाई क कारण ठगा भी जाये तो विश्वास नष्ट नही कर सकता। तभी तो स्वय रात दिन सफर म रहकर कठोर परिश्रम करने वाला जीवन बनाया है।

मस्त-व्यस्त शरीर, गेहुँवा रग रूप, ढीला शर्मीला सा शारीरिक ढाचा, सफेद-सुन्दर धोती और उस पर लम्बी बाहो का बढिया कमीज तथा पैरो मे चप्पलें धारण किये हुए हर समय पान चबाते हुए काय सलग्न रहन वाला एक सब व्यवहार कुशल व्यक्ति कालू गाव में जो 'नेता' नाम से पुकारा जाता है, वही श्री जवरीमल नाहटा है।

श्री जवरीमल वि० स० 1995 म भादवा वदी 7 को प्रथम प्रवास यात्रा पर दिनाजपुर जाकर कपडे के दुकानदार श्री पूनमचद, मिलापचद के यहा काय करने लगा। मगर वहाँ से जल्दी ही इधर-उधर सुदर काय की खोज म कई जगह रहा। शासकीय जीवन कब तक कपडा काट सकता था ? प्रगतिशील युवक तत्काल से स० 2012 (3 नवम्बर 1955) मे ईस्ट इडिया ट्रासपोट की स्थापना के साथ ले लिया गया। वहाँ श्री नाहटा अपनी प्रतिभा, परिश्रम तथा विलक्षण बुद्धि के कारण शीघ्र ही जनरल मैनेजर बन गय। बिहार, बगाल, आसाम और नेपाल तक के विस्तत काय को पदोन्नत करके अब सन 1972 से दिल्ली रीजन मे है। और रीजन क्या ? सुदूर दक्षिण तक के ट्रासपार्टो मे श्री जवरीमल नाहटा का ही निरीक्षण हैं। अप्रेल 1981 ई० मे कम्पनी का रजत जय ती महोत्सव मनाया गया, तब कर्मचारियों मे मात्र नाहटा का ही सम्मान हुआ है। इसके द्वारा करीब 200 आदमियो का ईस्ट इडिया ट्रासपोट एजेसी म सर्विस सुलभ करवाई गई है। गाव के करीब 50 व्यक्ति भी इसके सहयाग स ईस्ट इडिया ट्रासपोट मे सवारत हैं।

श्री जवरीमल के कनिष्ठ भ्राता श्री धनराज नाहटा बडा विनम्र मिलनसार तथा परिष्कृत विचारो का व्यक्ति रहा, जिसका पुत्र मदनलाल ईस्ट इडिया ट्रासपोट कम्पनी मे सेवाधीन है। श्री जवरीमल के दो लडके मनोज एव राजू कालेज तथा उच्च माध्यमिक विद्यालय म अध्ययन सलग्न हैं। श्री नाहटा की ज्येष्ठ आत्मजा सरोज, गाव के विद्यालय की मेधावी छात्रा रहा है।

श्री जवरीमल न ग्राम सेवा सघ का काय करीब 10 वष तक चलाया। इस सस्था म अधिक काय करन से ग्राम विकास के अनक काय सम्पन्न हुए। इन कार्यों के करन से अपनी ड्यूटी पर कम जा सके और व्यय भी करना पडता था। पर घर वाला न नेता को कुछ नही कहा। ई० सन् 1959 म कन्या विद्यालय के लिए द्रव्य सग्रह हेतु लेखक श्री मस्कर्ता का बाहर भेजा तथा सुप्रबध किया। तत्कालीन समय म करीब दस हजार रुपय एकत्रित हुए जिससे प्राथमिक विद्यालय के भवन की नीव लगी और तीन कमरे बनवाये गय।

श्री जवरीमल नाहटा वास्तव म सौम्य सज्जन तथा मिलनसार प्रवृति वाला व्यक्ति है। धार्मिक भावना के कारण सात्विक विचारो का स्रोत परिवार में प्रवहमान है।[1] दयालुता और दानशीलता का निर्विकार भावना से इस परिवार ने सदा पालन

1 श्री जवरीमल नाहटा का घराना सदा से चरित्रवान एव धार्मिक प्रवत्ति का रहा है। इस घर के स्त्री पुरुष सभ्य तथा सयानी वृति के मान गय हैं। इस घरान के दो पुरुष साधुव्रत म दीक्षित हुए और दो महिलाएँ भी साध्वी बना। एसी उन्नतिशील एव धार्मिक आत्माओं के जन्म लेते रहन से कालू में यह घराना अवश्य गौरवान्वित हुआ है।

किया है। इसलिए गाव कालू मे श्री जवरीमल नाहटा और उसका परिवार आदर्श स्वरूप माननीय है। कालू मे नव सृजन का पूर्वार्द्ध नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रांति के साथ ग्राम सेवा सघ द्वारा हुआ जिसका अधिक श्रेय श्री नाहटा को है।

2 ग्राम सेवा सघ म अथक परिश्रम से काय सफल करवाने वाला दूसरा व्यक्तित्व—

देश स्वतन्त्र होने के बाद बहुत से लोग जनहित कार्यों म लगे। ग्राम सेवा सघ कालू से तहसील के तमाम गावा म श्री गोपाल चन्द डूढाणी का सेवा काय बडा सराहनीय रहा है। श्री डूढाणी उच्च विचारों का व्यक्ति है और वह राग द्वेष तथा धोखाधडी रहित काय करने म सवप्रथम सलग्न रहता है।

कागा काको धन हर, कोयल किसको देय।
इक जिह्वा के कारण, जग अपना कर लेय॥

दोहे मे बताया गया है—एक मीठी बोली के कारण से दुनिया अपनी हो जाती है। तब मीठी बोली वाले के उपकार कार्यों से तो लोक का आकर्षित होना स्वाभाविक ही है।

डूढाणी का जन्म सन 1931 के 15 माच का है। सन 1944 मे यह अपने गाव की प्राथमिक शाला से दीक्षित होकर श्री डूगरगढ माध्यमिक स्कूल मे पढने गया। सन् 1950 म शादू ल हाई स्कूल बीकानेर से मैट्रिक हाकर बगबासी कॉलेज कलकत्ता मे दो वष तक अध्ययन किया। सन् 1952 मे कॉलेज छोडने के बाद अपने गाव कालू मे वापिस आया और सेवा कार्यों म सक्रिय भाग लेने लगा। ग्राम सेवा सघ का मुख्य कायकर्ता बनकर उसके नियमो की मोहर अपनी आत्मा के चारों ओर लगा ली।

ग्राम हित के लिए गाव के प्रमुख लोगो की ओर से जितने भी कूओ ज्होडों और स्कूलो के काय एव अकाल राहत के आयोजन सफल हुए, डूढाणी उन सब मे दिल खोलकर सम्मिलित हुवा। इन कार्यों के साथ मे उसको घरवालो और बाहर वालो से मोरचा भी लेना पडा। सन् 1953 की अकाल परिस्थिति के मौके इसके नन्हे सफेद हाथो से प्राणियो की रक्षाथ दो ढाई लाख करीब रुपया गाव के अन्य सज्जनो के सहयोग म लाया-लगाया गया। इसके उज्ज्वल एव उत्साहजनक कार्यों के कारण ही उक्त दुर्भिक्ष के समय मारवाडी रिलीफ सोसाइटी कलकत्ता क मुख्य कायकर्ताओ ने राजस्थान म सेवा काय के लिए कालू को अग्रणी बताया था। क्योंकि डूढाणी की पार्टी ने तहसील भर के गावो म घूम घूमकर सोसायटी की तरफ से अन्न जल की समस्या को सुलझाया। श्री रामेश्वर नाथ जी टाटिया और माताप्रसाद जी खेतान ने डूढाणी के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशसा की थी। श्री बद्रीप्रसाद जी माहेश्वरी न भी डूढाणी को अपना पहला विश्वास पात्र एव कायकर्ता बताया था।

आज भी अपने ग्राम कालू के कई सस्था स्थान-सीयस्थान बने हुए श्री डूढाणी की कडी महनत का चमत्कार बता रहे हैं। यह सदा से धूप धूल और मिट्टी मे गडा रह कर सस्था व गरीबों के काम करवाने का शौकीन है। दूर दर्शी लोगो ने जेठ के महीनों में इसको निरन्तर गहन काय करवाते हुए कई बार देखा है।

स्वाभाविकता, सरलता एव सेवावृत्ति से डूढाणी का व्यक्तित्व ओत प्रोत है। मौन रहकर काय करना ही इसकी मुख्य आदत है। इसी कारण गाव के बहुत से अधूरे काय पूरे हो पाये हैं। कहने की अपेक्षा करने की ताकत रखकर ही डूढाणी ने अनकानेक सुन्दर भवन तैयार करवा दिए हैं।

गोरा गोल मटोल, हँसमुख एव विचारशील चेहरा हर किसी का आकर्षित कर लेता है। कालू के सावजनिक कार्यों की विशेष चि ता रखने वालो मे भाईजी श्री गिरधारी लाल जी छावर के बाद गाव मे श्री गोपाल चन्द डूढाणी ही है। सन 1965 मे सरपच के कायकाल का समय समाप्त हुआ और डूढाणी ने पाकिस्तान या सिलीगुडी जाने का निश्चय किया। इस समय डूढाणी पर एक घरेलू भारी आपत्ति भी आ गई थी, इसने उदास होकर प्रवास जाने की पूरी साध लगा ली। पर गाव की जनता ने इसको विदाई नही दी और आग्रहपूवक भविष्य के लिए फिर रोक लिया। डूढानी पुन अपने सेवा पद (सरपच) पर आ गया। वह कालू गाव के ही नहीं, तहसील भर के कार्यों को पूरा कराने के लिए गभीर बन गया और दृढ़ सकल्प होकर सावजनिक एव रचनात्मक काय करवाने लगा।

डूढाणी अफसरो से निर्भीक मिलने और सस्नेह उनसे गावो के काय करवा लेने म बड़ा कुशल है। यह हिसाब किताब का पक्का लखा पढी का धनी तथा नियम का पूण पाबद है। तकलीफो और अडचनो की तो कतई परवाह भी नहीं करता।

वतमान समय के हमारे नेता लोग हिसाब किताब मे प्राय पिछडे हुए हैं। हिसाब मागने के समय वे झिझकते से दीख पड़ते हैं। आज के युग मे स्पष्ट हिसाब के साथ श्री गोपालचन्द डूढाणी का आग्रह रहता है कि "जनता के सावजनिक धन मे से नये पसे का उपयोग भी उपयुक्त आवश्यकतानुसार सोच समझकर तथा अच्छी तरह लिख पढकर करना चाहिए।"

श्री डूढाणी सतत सनातन राष्ट्र प्रेमी व प्रजातात्रिक नागरिकता का विकास कर्ता विमद व्यक्ति है। यह अपने ग्रामवासियो को नतिक एव भौतिक दानो प्रकार के सुख पहुँचाने का हर समय योगदान करता रहता है। इसके समय म गाव के सारे स्कूल भवन, अस्पताल भवन, पुस्तकालय भवन, जल प्रदाय भवन, सडक निर्माण, कालू ग्राम सहकारी समिति लि० दुग्ध सहकारी समिति भवन पचायत भवन विश्रामालय अनेक निवास गह आदि लोक हितकारी बनी बहुतेरी इमारतें यह बतला रही हैं कि "बातो से नही कामों से होती सबकी पहचान!" डूढाणी ने बहुत स सुधारो और निर्माण कार्यों के साथ राजकीय कमचारियो को भी विस्मरण नही किया। उनके तबादलो पर पार्टिया, सम्मान, अच्छी सेवाओं के उपलक्ष्य मे पुरस्कार अभिनन्दन पत्र वस्तुएँ द्रव्य आदि दे देकर उनके उत्साह म वद्धि की है। इसने अपनी भरपूर कोशिश स इच्छुक कमचारियो को मकान बनाकर दुर्गा कालोनी बसाई है। श्री डूढाणी को अपने गाव के प्राचीन एव ऐतिहासिक स्थानो गढ मदिरों और कुएँ तालावों की रक्षा का भी पूण ध्यान रहता है। लाखो रुपये खच करके समय समय पर इसके द्वारा इन स्थानों की मरम्मत करवाई गई है। जिससे गाव की गरिमा अभी तक यथावत बनी हुई है। डूढाणी ने इन कार्यों म कभी यश और लाभ की परवाह नही की।

मेरे चालीस वर्षों के अध्यापन कार्यकाल मे निकले हुए बहुत से सवाभावी शिष्य सितारे नजर आते हैं। इन सितारा की जगमगाहट म गोपालचन्द डूढाणी शशि की भाँति चमकता हुआ श्रेष्ठ सितारा है और ग्राम सेवा सघ म मम महयोगी कार्यकर्त्ता रहा हुआ है।

कभी कभी गाव के किसी काय को हाथ मे लेते समय राजनतिक लागा का भयकर विरोध भी हुआ है दोषी लोगो न बढा चढाकर अपनी करतूतें पश की हैं। फिर भी श्री गोपालचद ने अपने व्यवहार मे सौज यता और शालीनता ही बरता है। वह चरित्र हीन लोगो से आदश शिक्षा के जरिये निपटता नजर आया है। आज की दुनिया कहती है—राजनीति मे झूठ फरेब, धोखा तथा दगाबाजी चलती है, किन्तु पच्चीस साल के सद्व्यवहार को देखकर गाव कालू के नागरिक कहते हैं कि— हमारा सरपच श्री गोपालचद डूढाणी छल कपट ईर्ष्याभिमान से कतई अलग है। गाव के अनक सुन्दर काय उसके सचारित्र्य सम्पन्न हुए हैं। उसमे सजन चेतना की समग्रता और गरिमा है। गाव मे इनके जन सामान्य उपकारीय प्रयत्न सभ्य जनोचित जीवन के उजागर प्रमाण हैं।

तहसील लूनकरनसर के बडे कस्ब कालू मे दिनाक 5 2 78 ई० को ग्राम पचायत का हर्षोमग पूण चुनाव शातिपूण ढग स सपन्न हुआ। इसमे तहसील के उदभट कार्यकर्ता श्री गोपालचद डूढाणी अपने विमल आत्मविश्वास के साथ सरपच पद क लिए खडा हुआ। इसका विपक्षी प्रत्याशी श्री हजारीराम ब्राह्मण बना। चुनाव म इधर उधर से जरूर कुछ जातीय भ्रातियाँ उत्पन्न हुई और राम परशुराम सवाद की भाति प्रचार पनपने लगा। परतु मतगणना पूरी हुई, तब डूढाणी की विजय का नाम सुनकर सब लोग प्रफुल्लित हो उठे तथा आपस में गले मिलने लगे।

श्री डूढाणी लग्नशील, परिश्रमी एव नि स्वाथ जनसेवक हैं, अतएव नागरिक बडी खुशी के साथ अपने सरपच की मगल कामना करते हैं।

सघ सेवा स्तम्भ

श्री गिरधारीलाल अवर (जन्म स० 1970, भादवा वदी 2—निर्वाण स० 2029 मिगसर बदी 3 कालू के सावजनिक जीवन मे अग्रणी सज्जन थे। गाव का उनकी भारी चाह थी। पर उनके चले जाने से नि स्वाथ सेवा सभाल का क्षेत्र शून्य हो गया। उनका जीवन परम पवित्र एव सारल्य सलग्न था। वे अपने व्यक्तिगत जीवन क किसी कोने को नहीं यॉक पाय। जब तक जीये, लाक सेवा मलटाव की वेदी पर समर्पित होकर जीये। जब गय ता गाव के बहुत स काय रास्त लगाकर गय। वे गाव मे भाईजी नाम स जान जात थे। वे ग्राम सवा सघ के दढ स्तम्भ थे।

श्री भाईजी बहुत साफ-सुथर व्यक्तित्व के धनी थे। वे कालू बीकानर मडल म ही नही दूर दूर भर के भाईजा थे। उनम अथाह ममता असीम वात्सल्य और बेहद दया भावना की लहर समाई रहती थी। व दूसरो के कष्ट निवारण की असाधारण शक्ति सपन्न सज्जन थे। जीवन पयत ग्राम मुखिया और कुछ समय तक सरपच भी रहे किन्तु निष्कलक निष्पक्ष, साधारण जन मे लेकर उन्हें, महाविशिष्ट जन तक प्यार करत थ। अच्छे अच्छे विद्वान एव आला अफसर अधिकारी उनकी सौन्यक मूर्ति देखकर ही गद्गद् हो जाया करते थे।

मैं जानता हूं वे पुराने जवान, छडछडोले तन पूरे कद, चेहरे पर एक सावजनिक कायकर्ता के रोवदाब रखते थे। हर समय हसमुख और मिलनसार मूड मे रहा करते थे। ई० सन 1939 के पास कालेज छोडकर आये और गाव के सावजनिक कार्यों मे भाग लेने लगे। कोई भी प्रकार का चदा आता, उनको अधिक देने का प्रयत्न करते। उनको अपने घर की भीतरी बातें लेकर बडे वद्धो के पुराने स्वभाव का सुन करके चदा दिलाया करते थे। गाव के हर एक सावजनिक काय मे पूरा भाग लेते। लेकिन विशेष बात शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए उनका प्रयास कालू जसे गाव मे बडा कारगर सिद्ध हुआ है। वैसे पानी की योजना उनकी दो युग से गाव का ही नहीं पूरे इलाके की असुविधा मे सुख लाभ प्रदायक प्रस्थापित हुई है।

(2) **सनातन धम सभा**—इस सस्था की स्थापना सन् 1940 म धमशाला भवन मे धम व समाज सुधार हेतु की गई थी। इसमे लघुरूप एक वाचनालय भी चलता था जिसमे सस्कृतम् सिद्धान्त, शारदा, कल्याण आदि पत्र पत्रिकाएँ आया करती थी। यह सस्था अपन समय म हिन्दी सस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार म श्रेयार्थी बनी रही। काशीस्थ सस्कृत की प्रथमा मध्यमा का केन्द्र एव हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाए दिलवाने का काय भी इसके द्वारा होता था। मोहनराम पटवारी रामकिसन खडेलवाल, सोहनलाल सारस्वत, नानूराम आदि लोगो ने इसी सस्था के द्वारा सस्कृत प्रथमा परीक्षा पास की है। प गणेशारामजी प श्री दुर्गादत्त सारस्वत रामनारायणजी बालचदजी झवर, प० चेतरामजी पारीक, रावतमलजी वर्मा पुष्करदत्तजी मास्टर आदि अनेक महानुभाव इसके सदस्य रहे हैं। यह ई० सन 1950 तक कायरत रही। फिर लुप्त प्राय हो गई। सन 1945 में इसके अध्यक्ष श्री दुर्गादत्तजी सारस्वत तथा इन पक्तियों का लेखक सचिव रहा।

(3) **ग्राम विकास परिषद् कालू**—ग्राम विकास परिषद की स्थापना गाव की सावजनिक समस्याओ का समाधान करने हेतु माच सन् 1973 में हुई थी। इसका मूल उद्देश्य शक्षणिक, साहित्यिक न होकर राजनतिक पत्र व्यवहार कायवाही सबधी रहा है। गाव के विकास एव सुधार के लिए हुक्म और स्वीकृति हेतु सरकारी कार्यालया म अनेका पत्र पत्रोत्तर दिये जाते हैं। होनहार व्यक्तियो मे रचनात्मक कार्यों के लिए सेवा भाव जगाना तथा सस्था के साधन सग्रह करके काय करना इसका कत्तव्य रहा है। वतमान मे इसके अध्यक्ष श्री जवरीलाल नाहटा और मत्री रामप्रसाद पारीक हैं। सस्था मौनावस्था में गतिमान है।

(4) **अखड रामचरितमानस पाठ कायकारी मडल**—वैसे तो इस मडल मे अनेक सत्पुरुष सम्मिलित होते हैं, मगर श्री रामप्रसाद, जगदीश प्रसाद पारीक, नदलाल सोहन लाल सारस्वत (रावासर) पुनमचद सेवग डालचद डूडानी मूलचद-पूनमचन्द दर्जी आदि मुख्य हैं और कुछ बालिकाएँ मुख्य रूप से भाग लेती हैं। दो चार बालक भी यथा समय उपस्थित रहकर प्राय 24 घटो म इस सफल बनाते हैं। इनकी स्वर लहरी व निष्ठा लग्न, श्रद्धा स्वयभक्ति से आप्लावित सवत्र गाव के क्षेत्र मे गुजरित होती हैं। श्री चिरजीलाल सोनी हिन्दी वरिष्ठाध्यापक श्री रामसजीवन मिश्रा, सोहनलाल पारीक और श्री छोटूलाल उपाध्याय (पोस्ट मास्टर) का इसम पूरा योगदान रहता है। मडल के लोग 101 अखड पाठ का सकल्प लिए हुए प्रगति विमग्न रहते हैं।

चतुर्थ प्रकरण

विविधाभास-प्रकाश

प्राचीनकाल की सामाजिक, धार्मिक एव सास्कृतिक स्थिति

तीजो सुख नीर निवाणा—प्राचीन सुख सुविधाओ म यहाँ पानी की बहुतायत वाला ग्राम मनुष्य जीवन का उच्चतम सुख माना जाता था[1]। परन्तु पानी के अभाव मे भडाण का क्षेत्र सदा से भयकर अग्रणी रहा[2], जो अब कुछ विस्मृत अवस्था में देखा जान लगा है। एक दशक पहले यहाँ हर समय घी, दूध से अधिक पानी न मिलन का खटका ही नही, भय बना रहता था। यहा के लोग 20 मील तक से राजाना पानी लाया करत थ। भडाण के गावा मे कुए नही खारे पानी की कुइय' हुआ करती थीं। इनका पानी पशु पीते रहते, मगर गमियो म अधिक पीकर विराइज जाया करत थे। बेचारे मर भी जाते। मालिक देख लेता तब उस आफरा चढे पडे पशु को दवा के रूप म थोडा कुड का मीठा पानी पिला कर जीवा लेते। नही तो वह जानवर तुरत मर जाता। इस तरह इन गावा म बहुत स पशु मरते रहते थे और कूआ वाले गावो मे भी पानी एक दुलभ पदाथ माना जाया करता था।

कुछ मीठे पानी के कुए कुछ खारे पानी के और अधिक कुए यहाँ कम पानी देने वाले हुआ करते थे। छोटे गावो मे पानी के लिए प्राय "स्यारी" का रिवाज अधिक प्रचलित था। घर सख्या के हिसाब से (अनुसार) महीन या पन्द्रह दिनो से प्रत्येक गृहस्थ को स्यारी निकालनी पडती थी। इसलिए हरेक घर म अपा-अपने लाव-कोश के साज (सामान) हुआ करते थे। स्यारी वाले घर के आदमी अपने ऊट या बळदा की जाडी को कुए जोतकर एक राज सारे गाव को पानी पूरते थे। स्यारी बडी ताकडे चलती था। हर घर वाले को अपनी स्यारी अगुलियों पर गिन कर याद रखनी पडती और नियत समय पर सारे गाव को पानी पिलाने का सुप्रबध करना पडता था। तत्समय म कालू बडी जनसख्या वाला और बहुतेरे कूओ वाला गाव होने से मुखिये लाग मिलकर एक माली (पानी के ठेकेदार) को पानी की जुम्मेवारी दे दिया करते थे। वह माली गाव के तमाम घरो से पानी के माहवारी पस (पीह) पळीढों के हिसाब से वसूल कर लिया करता था। पानी की कमी हो जान पर गाव से उसको ओळमा (उपालम्भ) या दड भी मिलता था। इस समय कूए से उस कीणी (धूल) भी निकालनी पडती थी। एक घर म पळीढे के सिवाय, एक गाय या भस का एक आगा (निश्चित पीह का नग) माना जाता था। घाटे, सूरज के साड तथा ऊट की पीह उन दिनों माफ की जाया करती थी। गढ की पीह लेने का कोई प्रश्न ही नहीं रहता।[3] गाव के काम्बा (सरकारी

---

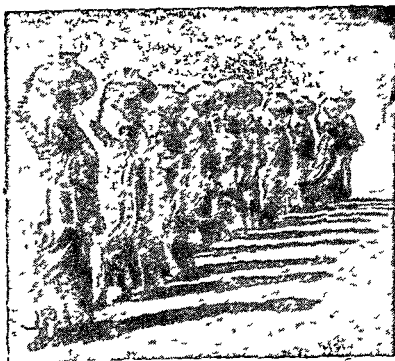
1 नल हीरा, जल जौहरा जल मोतियन की माल।
निगाह उठाकर देखिय, जल बिन जग कगाल॥

2 पीवण पाणी और है, हावण पाणी और। धन धामण न दूसरा, वाह रे नद किसार॥

3 गाढवाळो तमसी जको, राजाजी रा घाडा पायसी।' (बीकानेरी कहावत)

या सावजनिक काम देने वालो) का भी पीह की सारी छूट रहती थी। राज्य कमचारी तथा मदिर के पुजारी भी पीह से वचित रखे जाते थ। चलते रास्त वाले यात्रिया का कालू म एक रोज (केवड वगरह पशु सहित) मुफ्त पानी पिलाया जाता था। ये सब बातें कुए की वही मे ठेका देने समय गाव की ओर से लिख दी जाया करती थी। वही जोहड़ो का पानी चुक जाने पर (प्राय माह फाल्गुन मे) माली के दस्तखत अगूठे स नियमित डाक (बोली) द्वारा ठेकेदार को बोली का पाबद रखती थी। यह बही श्री मलाराम या कोडाराम पारीक की दुकान म सौंपी जाया करती थी। (लेखक की स्मृति में)।

कालू मे चार कूए सदीने राजा सुगड[1] के समय मे निर्मित हुए बताये जाते हैं। बाद में इन्हें लोग धीरे धीरे अपने बनाते गये। मध्यकाल के बाद शक्तिशाली जाटो ने इन कूओ पर अपना अधिकार कर लिया। उनमवी शताब्दी से कालू म गोदारो, जाटुओं जाणियो और भादुआ के नाम ये अपन चार कूए हा गए थे। जाटुआ के साथ उनके कूए पर गाव 'वासी' की जनता सम्मिलित रूप मे पानी पीन के राजकीय इख्तियार रखती थी। पानी पीने की इनकी लेखा पढी हुआ करती थी। विवाह, मृत्य भोज में भी वासी' वाले जाटुआ के साथ रहने थ। स्वामीजी का कूआ (1975-76) उनका अपना निजू था। पानी खारा था इसलिए व (वरागा) जाटों के कूओ से ही



पनिहारिनियां की टोली

1 राजा सगर क साठ हजार पुत्र जा गजाना एक नया कूआ खाद कर जल पीते थे।

पानी पीते थे। आडसर जसे आस पास के गाव भी जलाभाव के समय कालू से ही पानी ले जाया करते थे।[1] कालू के सब कूए एव मालिक के ठेके रहते थे, जो कूओं सबधी कार्यों में बडा माहिर हुआ करता था। अजान व्यक्ति के लिए कूआ मूवा (मौत) बडा मुश्किल काम माना जाता था। कहावत है—"कम हीण रो टाबर कूव खेलै।" कोम हाथ से छूट जाने पर लाव टूट जाने पर और बारिये की आवाज से पहले कीलिये के किली निकाल देने पर पास खडे आदमी भी चोट फेट स मर जाया करते थे। कि तु सुदर पनिहारिनों की नयनाभिराम कतार छटाएँ देखते ही बनती थी।

कूओं पर बारिये बडी सुरीली आवाज से किली खोलने का सकेत (आयो रे !) देते रहते। उसको अच्छी तरह सुनकर ही खामो किली खलोता था। रात के समय नीद भगाने के लिए सेवा' मीठे गीत भी गाता और खामिया भी वैसे ही अपने बला की या ऊटो की जोडी को ललकारता चलता रहता था। कालू के कूए मदा मालीपे से झलते और चार पहर तक निरतर बडे ताक्डे से चलते थे। आस पास के गावो मे कही बारी, कही स्यारा और कई गावा मे बारा ही दे लिया जाता था। ओड पड जाने पर आठ पहर तक ऊटा एव बळदा की तणी टूटती गति से कूए चलते थे। गर्मी के दिनो म खेवड वाले अपने इन जानवरो को तासे से पानी पिलाते, तो भी वे प्राय प्यासे ही रह जाते। गाव का कोई भी व्यक्ति किसी एक कूए पर पो दिलवाता, तब सारे प्राणी मुफ्त का पानी पीते। पो अठपोरी या चौपोरी लगाई जाती थी, जो किसी के मा बाप के मर जाने पर या पुण्य स्वरूप प्रथा प्रचलित थी। इसमे दोघड चौवड व पखालें बद रहती।

कूओ के नाम अग प्रत्यग एव काम आने वाली वस्तुएँ—दरडो=खडहर कूआ। खारियो खाड या बेरो=खारे पानी का कूआ। बेरो=छोटा कूआ। नाळ=पुराने कूए का केवल खड्डा।

बोळियो=आवाज वापिस न देन वाला। सरवो=आवाज (सामने) देने वाला। बोडियो=अधूरा खडहर। पावटा=परम सुदर कूवा। नीमचक=तल लगाया हुआ लकडी का घेरा, जिस पर कूए का चेजा चालू होना है। ढयाड=तले पानी से कटकर हाने वाली दिवारो की दरार। चाठ=कूए म से आया पानी, लेने की जगह। घडीई=पानी भरने का छोटा हौज। कोठा—पशुओ के लिए पानी सग्रह का बडा हौज। खेळी=पशुआ के पीने की लम्बी जल नाली। मरवे=गुम्बज। बरडो=चौक एव देह। घूड—छत स्वरूप पक्के पत्थर की बडी सिला। खूडिया=घूड से सयुक्त दो खूटे। भूण—लाव चलने का चक्र। गुडी=भण की खूटियाँ। लाव=वरी, चमडे का रस्सा। कास या चडस=चमडे का डोल। बिल्ली=लोहे के बडे काटों का गुच्छा जो लाव के कूए म गिर जाने पर उसस निकाला जाती ह। कीणी=कूए से निकाली जाने वाली मिट्टी। पाख=कूए के अदर जाने के लिए रस्से का फदा। पोछडी=लाव का अतिम छोर। पजाळी—बलो को गळजूट (सयुक्त) करने के लिए लकडी की गाली।

1 अब ई० स० 1979 मे आडसर को कालू से ही पानी की पाइप लाइन दी गई है। गाँव गारबदेशर और गुसाइसर (त० श्री डूगरगढ) को ट्रकरो द्वारा कालू का पानी जाता था। पहले समय समय पर लूणकरणसर मे भी कालू से पानी जाया करता था और सूरतगढ से लेकर बीकानेर तक की सडक बनी उस समय कालू से काफी पानी दिया गया था।

कुरखेडा—कोस रूप कोस की लकडी। पाजर—लोह का चक्र जो कोस को गोल बनाता है। इसे कणा भी कहते हैं। गाळिय—पोछडी और गाळिये किली से सयुक्त करके ऊटो या बला को चलाते हैं। ढाचिया—ऊटो पर ढांचिये लगा कर कूए जोतते हैं। किली—एक साफ चिकणी लकडी, जो ऊटों या बला को लावसे जोडती है। सेवो—वारियो। खामी कीलियो। वारा लेना—अदर से आये पानी को कास से उडेल लेना। पळीढो—घर का जलाशय। तास—दो रोज क प्यासे। झलना जपना—जुतना। ताकड—द्रुतगति। ठिब—भरा पूरा। माळीपा—ठेका। वारा देना—अपने लिए कूआ लेकर अलग जल निकालना। तणी टूटती वग—तेजी से चल। पो—प्याऊ। आड—पानी की कमी पड जाना। गोधीज—प्यासे मरने लग जाय, सोरण—माटी रस्सी या लाव, चौखड—ऊट पर (लकडी के ढाचे में) लदे चार घडे। आगा—एक नग लगान। भीठ—पानी प्राप्त करने हेतु भयकर जन भीड। अळीणो पाणी—बद कूए का पुराना पानी। "यायो नीर—गम पानी। मोरणो लाव चलाने का स्थान। रहारण—लाव लम्बी जाने का नपा हुआ स्थान। तोरा या टूडी—सारण का अतिम तट। महरा या सिका—पानी भरने वाले व्यक्ति। कूबा अदर दुडना—गिर पडना। धोबा—पानी की अजली देना। इढूणी—औरतें अपने घडे के नीचे कपडे की सुदर गेढी देकर सिर पर पानी लाया करती हैं उसे इढूणी कहते हैं। जलवा पूजन—प्रसूता कूए जाकर जल पूजन करती हैं वही जळवा पूजन कहलाता है।

कूवो दरसण ज्ञान याग भक्ति है वारी।
सारय-नाळ गभीर निराश्वर, सेश्वर भारी॥
मीमासा भर कोस, सद, प्रात जळ वाट।
याय यथाथ नाव भेदभाव जहँ न खाट॥
वेदा त रीत मर्याद है, मुख्य आचाय वारिया।
पोसाळ पनघट सरब छात्र, शिक्षा चोखी स्यारिया॥

नाळ काय सिर भूण खूडिया भुज दो भारी।
पूठी पेट सपीठ, गीमचक नाडा सारी॥
सुरत मुरत चोक सदाव्रत सरस पावण।
भीडा वाज भीठ नीर परसाद लावण॥
चाठ धडोई यतण भाडा, कोस मुसायब केवळी।
नर सेवक देव कूवारा, धुक विरडो देवळी॥ (दस देव)

जानवर—लूनकरनसर तहसील क्षेत्र में पहले जानवर पालने का धधा विशेष रूप से सवत्र व्यापक था। गावो मे गायो के बाग, भस्यो के छेड, भेड बकरिया के अेवड (रेवड) और रहाँड-ऊटा के टाले हुआ करते थे। एकूक किसान के घर अलग अलग बगेले उछरते थे। हर घर के पशु अपने मालिक की बिरादरी के चिह्न स्वरूप खग (दाग) से पहचाने जाते थे। खग प्रत्येक पशु की पीठ या पीडे तथा ऊँटों के कनफडे पर लगाए जाते थे।[1] भेडो के रग के निशान लगाये जाते और साड अथवा अमर किए

1 इस क्षेत्र मे कालिका जी की त्रिसूल का खग की सर्वाधिक मान्यता है। जाटा के जेई का, नाइयो के चिराग (मशाल अस्त्र) का, खाती तथा लुहारो के सडासी का और वैरागियों के कूवडी या चाखडी के खग थे जो अपने पशुओ के लगाए जाते। लोगा ने अब अपने नामो के खग भी बना लिए हैं।

हुए मीढे-बकरा के कानो में ताम्बे या लाहे की बालियाँ (छल्ले) डाल दी जाया करती थी। लद् भसों (झोटो) के नाक मे नाथ, खा जाने वाले ऊटो के नाक मे नकेल या सेवा तथा मारने वाले साड और भसा के गले मे डीगरा (बडा मोटा लट्ठ) लटका दिया करते थे। बेमार-बेमार पशुओ को, हेदकी लोग डाम (दाग) देकर ठीक कर लिया करते थे। वे बिराइजे हुए पशुआ को कान चीर कर बचा लेते थे।

राज्य के गोधा (साडों) के पीडो पर नम्बर के खग लगाये जाते और कालू म सूय साड के पीडे पर माताजी की त्रिसूल का दाग लगाया जाता था। इस तरह राज्य मवेशी पर इस रियासत मे लफज (न) का दाग लगाया जाता था।[1] और बछडो के आक के दूध से खग लगाते थे।

राज्य के ऊँटा को प्रतिदिन बारह सर चारा हर ऊँट के वास्ते मजूर था और सफर म एक सेर गुड एव आधा सेर फिटकडी भी हर ऊट को दी जाती थी। मगर हाथिया को एक जसी खुराक नही मिलती, उनके कद के मुताबिक दी जाती थी। एक भौंरा हाथी (टिकाई हाथी) को आटा बीस सेर, खाड एक सेर, घी तीन पाव और घास पाच मन दैनिक खाना मिलता था। बाकी अ य को आटा प द्रह सेर एव घास चार मन रोजाना का मिल जाया करता था। घाडे घोडियों को रातब तथा दाना छ सेर चौकड चार सेर, जौबिरिया दो सेर, तुखम अलसी एक सेर, तेल अलसी आधा सेर और नमक आधा पाव रोजाना मिलता था। वि०स० 1945 मे राज्य के पाँच घाडे विलायती व अरबी बाबूगढ एव अ य स्थानो से नस्ल बनाने हतु मगवाये गए थे। इन सबके लिए गुमास्ता आदि कमचारी तनात किये हुए थे। उक्त समय मे सब के साथ नूनकरनसर तहसील म भी घोडे घोडियो का आला इ तजाम होता था।

गावो म पशु चराने की बारी—पुराने समय मे कूए की स्यारी की भाँति पशु चराने की भी बारी हुआ करती थी। बारी के दिन हरेक घर से आदमी को पशुआ के बाग का ग्वाला (चरवाहा) बनना पडता था। कालू म दो गायो की एक बारी और एक भ स की अलग बारी मानी जाती थी। बारी के पशु समूह मे जितने भी अधिक पशु होते, बारी उतनी विलब से आया करती थी। स्यारी बारी के समस्त काय शारीरिक ढग से चलते रहत, जो ग्रामीण जीवन को अप‍व्यय मे सदव मुक्त रखते थे। बारी निकालने वाले लोग परा में झाडोले (चमडे के खोल) पहन कर मध्य रात्रि के समय पशुओ के बाग चरा लाया करते थे। ये पशुआ के जानकार एव सौदागर भी होते और पशुओ के लेन देन मे सध्या समय को शुभ मानते थे।

जमीन बोहरा और ब्याज—यहाँ किसान लाग अच्छी जमीन वाले खेत बीजकर अन उपजाते आए हैं, जो उनके अपन पृथक पृथक खेतो मे पदा होता है। पुराने समय म ये खेत रकम (लगान) देते रहने के समझौत से राज्य सरकार या पट्टेदारो द्वारा निश्चित दरो मे लिये हुए रहने थे। उक्त समय म खेतो की मालगुजारी, बटाई, कूता तथा नक्द बीघेडी के रूप में ली जाया करती थी। यह उपज अथवा भूमि की भाँति (किस्म) पर निभर किया करती थी। बजर जमीन की रकम आधी या तय शुदा मामूली लगान के रूप म ली जाया करती थी। किसान लाग अपने पशु चराने तथा घास काटन

1 मु शी सोहनलाल कृत बाकानेर राज्य की तवारीख पृ० 263/3 वही

के लिए बजड खेत रखते थे।[1] टाड ने अपने ग्रन्थ मे पुस्ती, मल्वा तथा धत्तोई इत्यादि नामो वा भूमि कर के सम्बन्ध म वणन किया है।[2] मदिर डोहली व मुआफी वाले किसान, खेत की रकम देने से वचित रहा करते थे। ऐसे लोगो के पास राज्य के लिखित आदेश व पट्टे एव ताम्रपत्र खुदा लेत हुआ करते थे। किन्तु हल (ऊँटादि) रखने वाले पूरते आदमी अल्प सख्या मे ही मिलत थे। अ य लोग तो उनके आगडिये रह कर ही खेती किया करते थे। ये किसी के हल पीछे हाला बन जाया करते थे। आगडिये हाली तीन दिन ऊँट वाले मालिक के खेत म सामूहिक हला मे चलता। तब चौथे रोज उस आगडिय हाळी के खेत में हल चलाये जाते थे। बीज भी प्राय ऊँटो के मालिक को दना पडता था। इस तरह से निनाण (निरवाई) का काय भी सामूहिक रूप से सम्पूण करवान का परपरित रिवाज था। फसल पक्ने के अवसर पर किसान लोग अन्न एकत्रित करने हेतु मिलजुल कर काय कर लिया करते थे। उस समय मजदूरी देने को अपव्यय समझते थे। ठाकुरो को गाँव के लाग ल्हासिये (हर घर से एक आदमी ठाकुर के खेत मे काम) दिया करते थे। कुछ पडित पुजारियो तथा नाई-खानियो को भी ऐसी मदद मिल जाया करती थी। गाँवो मे बडसी (अपने और दूसरो के खेतो म अदला बदली के समय से सामूहिक काय) से भी खेत काय हुआ करते थे। विशेष कार्यों पर 'ल्हास' करने का प्रचलन था। इसमे आस पास के अनेको गाँवो के लोग सम्मिलित हुआ करते थे। कई गावों मे सरकारी ल्हासें भी हुआ करती थी। वहाँ लोग मुस्तदी एव तकरार के साथ काम-अजाम देकर मालिक से मिष्ठान्न प्राप्त कर खाया करते थे। ऐसे सामूहिक कामो मे "राम भणना' तथा उच्च वाह वाही देना जरूरी माना जाता था।

प्राचीन काल म खला (खलिहान) निकालते समय ऊँट, बल या झोटे काम म लिए जाते थे। बाजरो के सिटे (भुट्टे) तथा ग्वारादि की फलियाँ गाहने का नाम "गाहवटा" कहलाता था। उसके लिए लोग पशुओ को माग कर भी काम निकाल लिया करते थे। अन्न को साफ करके खले म "रूसा" (बडा खड्डा) खोदकर बहोल का अन्न उसमे भर[3] देते और फिर सुविधानुसार ऊँटो द्वारा बोरे भरकर धीरे धीरे घर ले आया करत थे। इस तरह से सकडो मन अनाज कई दिनो तक धरती के पेट म सुरक्षित रख लिया करते। थोडे अन्न को आदमी तत्काल अपने सिर पर पडोक चौपड, लोदे एव गठरियो से भी ढो लिया करते थे। घरो मे उस समय अनाज भरने के लिए कच्ची कोठिया, कोठलिये, बुरज तथा भखारी आदि स्थान हुआ करते थे। दुबल स्थिति वाले लोग खले से सीधे बनिये की हाट, छाटी ले जाकर अपने खेत की उपज का माल फराख्त कर दिया करते थे।

बोहरा पुराने समय मे प्रथम कत्तव्य ऋण चुकता करना आवश्यक समझा जाता था। क्योकि लणा कभी भी छूट नही सकता, ऐसी मा यता थी। अन आसामी अपनी फसल का सारा अनाज बोहरे को देकर पाडखती[4] लेने की पूरी चेष्टा रखता था। जब तक

---

1 अब बजड खेत बिलकुल नहीं रहे।

2 यहाँ सिगोटी कर भी लगता था।

3 अन्न की रास (राशि) लाटते समय और खेत जोतते समय करबद्ध किसान मौन बनकर ईश्वर प्राथना करते हैं।

4 पाडखती = पावती रसीद।

ऋण रहता, बोहरे को बदला देते एव हिसाब चुकाते समय धुरिये उसका पीढे[1] पर बठा कर घोक दिया करते थे। इसलिए खेती करवाने वाले कतिपय बोहरे तो अपनी बोरियाँ लेकर खलिहान पर ही पहुँच जाया करत थ। क्योकि किसान की फसल पर राज्य की रकम का और खेती कराने वाले बोहर का प्रथम अधिकार माना जाता था। जैसे —

धोरा धूड उड जद बाहरा धुरिया न धन देवणा।
हुव कळायण री भ्रिया जद, पाछा कम क्यू लेवणा॥

नौ नगद, तेरह उधार की कहावत के बावजूद भी व्यापारी लोग दुबलो के सहायक बन कर उधार देन वाले पूजीपति (सेठ) बनते रह हैं। खेती नहीं' विवाह ओसरादि क मौके पर भी वे ऋण दिया करते थे। इसलिए बोहर के ब्याज का सब धुरियो (आसामियो) को भारी भय बना रहता था। कई बोहरे ब्याज लिखने मे अपनी कलम को बडी कडी बनाये रखते थे। तब आसामी कजा चुक्त कर ही नही सकता।[2] खान के लिए पास मे अ न नही और छाती पर निदयी बोहरा, बेचारा किसान, बनिये के दूने डयोढे ब्याज से दबता ही रहता था। जोधपुर नरेश स्व० श्री सरदार सिंह ने लिखा है—

हित मे चित म हाथ म, खत मे, मत म खोट।
दिल मे दरसाव दया पाप लिया सिर पोट॥

वसे माधारण ब्याज रुपये सकडा की कहावत थी। साथ मे कही-कही गहना वगैहरा गिरवी रखवा लिया करते थे। मगर रुपया देते समय काटो कायली कढाई, साख एव लिखाई चुगो धर्मादे आदि के नाम से काट कर सौ के साठ रुपये भी मुश्किल से पल्ले डालते।[5] ब्याज की ऐसी कडी दर को पाणिनी ने कुसीद कहा है, जो कभी सम्मानित श द से सबोधित नहीं हुई। ब्याज पड-ब्याज और चक्रवद्धि आदि ब्याजो के नाम आसामी लोग आज भी जानते हैं। गौतम ने छ प्रकार की ब्याज वद्धि बताई है जिनके नाम—चक्रवृद्धि काल वद्धि कारित वृद्धि, कायिक वद्धि, शिखा वृद्धि और अधिभोग वद्धि हैं। इनमें कायिक वृद्धि ब्याज की प्रथा द्वारा मनुष्य की काया (शरीर) पर रुपयो की मिलगत हुआ करती थी। जब तक ये रुपये वापिस चुक्ता नही करवाये जाते, तब तक कजदार धुरिया बोहरे के काम आता रहता था। महँत, यति और ठिकानेधारी नप इस तरह से आसामी से सावालिग एव सभ्य लडको को खरीद कर लेते एव गुरु लोग शिष्य भी बना लिया करत थे। कालू में निम्नलिखित बोहरो के कारबारी नाम काम सुने जाते हैं।

खरतरगच्छीय उपाश्रय (जन) के गुराजी श्रीपाल जी, जेसराज जी व गणेशलाल जी ब्याज पर रुपये दिया करते थे। लेखक ने उपाश्रय के अ य कागजा मे ढाई सौ वष

---

1 पीढा—छोटी खटिया।

2 A निस दिन निभय नीद, सपने मे आवे न सुख।
दुनियाँ में नर दीन, करजा सू वये किसनियाँ॥

B मु साहनलाल कृत तवारीख राज श्री बीकानेर मे लिखा है—महाजन सूद दर सूद बढाकर धुरियें का पाबद कर देते हैं कि वे कभी करजे से सुबुक्दोश नही हो सकते (पृ० 73)

पुरानी वहियां स्व० गाविंदराम जी यति के पास देखी हैं, जो अब अन्य सामान के साथ कालू के ओसवाल नोहरे मे सुरक्षित पहुँच चुकी है।

रामस्नेही साधुओं के गणधरों मे श्री रामदयाल जी तथा नरोत्तमदास जी भी ब्याज पर रुपये दिया करते थे। इन से रुपये लेने वालो मे अधिकतर उधर के जाट, ज्योतिषी तथा जाणियों के बास वाले नाई थे।

श्रीरामजी ॥

[illegible]

महंत सेवादास जी रुपये देने का काय किया करते थे। वि०सं० 1931 से 1979 तक गाव गारवदेशर कालू तथा वरागी समाज के अलावा गाव सोमासर के कालू गोदारा और रेंवतराम गुजरगौड और कई नायूसर के चारण इनके धुरिये थे। महंतजी जहा कहीं अपना कूआ बनाते, तब कालू गोदारा और रेंवतराम अवश्य उस काय म आ जुटते। इनके कालू के कूए का सब काय इन्ही लोगो द्वारा सम्पूर्ण हुआ था। इनके एक पुराने कजदार नायूदान की मा मर गई। लोगो ने कहा— देखेंगे, ओसर बाबत रुपये कौन देगा ? महंत जी के तो पहले से ही रुपये बाकी पडे हैं।" महंतजी ने सुना तो कहा—'नायूदान की मा के पीछे तो लाडू जलेबी का ओसर होगा, मेरे पीछे चाहे न हो।"

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से यहाँ—चतुर्भुज जी घमडीरामजी बीझराज जी नाहटा बद्रीदास जी राठी, भरूँदान जी कोठारी, दूलाराम जी पारीक (वि०सं० 1960 से 2000) वखताराम जी नण (1987 से 2000), श्री रामरतन भादू (2000 से 2025) आदि बोहरे कालू के अन्य लोगो के विवाह औसरादि कार्यों म रुपये दिया करते थे। आजकल दुकानदार भी उधार तोल कर बोहरे बनते हैं। मगर श्री हरिराम पारीक एव नानूराम सोहनलाल सारस्वत जन-साधारण मे प्रसिद्ध बोहरे हैं। सुनार, जागीरदार तथा दुकानदार भी इनमे रुपये लेकर काय करते हैं।

व्यवसाय—पुराने समय मे पेशेवर जाति के लोग अपने वंश परम्परित धंधे किया करते थे। वे अपने पेशे की आमदनी पर गुजर करते और हर किस्म किफायत सार वन रहते थे। उनके जिम्मे बहुत जियादह कर्ज भी नहीं रहता[1] कालू मे गाडिये लुहार, खानाबदोश ढंग से रहा करते थे। वे कभी कालू, कभी गारबदेसर और कभी कमास आसपालसर तक चले जाया करते थे। भरालुहार यहां प्राय जम कर लोहे की विविध चीजें बनाया करता था। उसका परिवार गाव के बीच एक खेजडे के नीचे बैठ कर अपना काम करता। हम बच्चे इनको गर्म लोहा घडाते हुए देखा करते थे। इस गृहस्थी के पास अपनी एक लकडी की बलदा (बल) गाडी रहती, जो समस्त परिवार के लिए बडे भवन स्वरूप काम आती थी। इसी पर खान पान एवं औजारादि का सारा सामान सुरक्षित रहता था। यही आधी पानी के समय इनका आश्रय थी। सिकलीगर लुहार यहाँ आय गये ही रहते थे। मगर नत्थू सिकलीगर यहाँ काफी समय रहा। भेरा और तेजा अपने घरो मे मिट्टी के बतन बनाया करते थे। इनका अपना माहल्ला था और अलग अलग आवे। आवा (न्याही) गाव की बाडा के बीच रात भर सुलगता जलता। मगर मजाल क्या कि आग लग जाये। पकने पर न्याही के बतन निकालते, तब सारे गाव से औरतें जाती और मन मुताबिक पसद करके बतन लाया करती थी। बचपन मे नानी मा के साथ लेखक भी पानी के लिए लघु लोटडी कूजियों के लाभ मोह मे कुम्हारो के घर जाने का जानकार रहा। यहा खातिया की खनोड मे जाकर लोग लकडी की वस्तुएँ बनाया करते थे। किन्तु इन खातियो को मजदूरी नहीं बरसोद या अनाज दे दिया करते। विवाह औसर के समय ऐसे काम करने वाले सब लोग यजमान के घर ससम्मान जिमाये जाते थे। दासाराम कुशलाराम और हेमाराम यहाँ के खाती थे तथा श्रीकिसन असलिया गुसाईसर से आकर बस गये। फिर दूलाराम और जगराम नाम के सूथार भी यहाँ आकर रहने लगे। सोने चादी के गहने बनाने मे श्री मघाराम कालूराम, नेताराम और सूडाराम सूनार के परिवार गत 19वी शताब्दी से बडे पटु माने जाते थे। पहले यहा के श्री फरसाराम टीकूराम छीपे (हिन्दू) कपडा की छपाई किया करते थे। अब अर्से से उनके परिवार दर्जी का काम (सिलाई) करते हैं। रगाई कार्य के लिए यहा पचासा साल पहले मालाबक्स (सरदारशहर) और आलमदीन (बीकानेर) ओढन, साफे एवं पाघडी रगने के लिए आकर बसे थ। पदमा तेली घाणा निकालता, वह गाव का पुराना वासि दगान था। उसका लडका नूरमाहम्मद हमारे साथ (सन् 1927 28) मे पढता था। रूपा मेगवाल जूतियाँ बनाता, मगर कालू मढाल और भोजा मेघवाल वेजा (कपडा) बुनते थे। सिलावटे, कारीगर चेजारे और भित्ती चित्रकार भी यथा समय बीकानेर आदि नगरो से आया करते थे। ई०स० 1923 के इद गिद पूण'जी सिलावटा छोटू भित्ती चित्रकार और चिम्मा महमदू चेजारा तथा श्री उदयराम, जयनारायण कारीगर (लकडी के) यहाँ आने लगे थे।

सूनारो के काफी घर पहले यहाँ थे, किन्तु जडिये और पटुवे बाहर से आये गये रहते। तेजा जी आदि कई पुराने जडिया के नाम आज भी साहूकारो की बहियो मे मिलते हैं। पर कन्हैयालाल जडिया बाद मे आकर बसा था। कन्दोई भी बाहर से बुलाये जाते मगर साधारण भोजन (हलवे जसा) बनाने मे श्री कालूराम सेवग जसे व्यक्ति यहा

---

1 सो० त० बी० पृ० 73

बड़े व्यवहार कुशल रसोइये थे। माली कभी यहाँ आकर वाड़ी करते और कभी वापिस चले जाते। खटीक और रंगर भी अपने धन्धे के अनुसार आय गए रहते थे। मोची रसम, परन्तु पिनारे, कुजड़े और विसायती शहरों से आकर अपना व्यवसाय किया करते थे।

वि०स० 1978 79 मे सरदारशहर से यहाँ आकर भूराराम दर्जी ने कपड़े का काफी काम किया था। फिर वहीं के बालूराम छीपा, रामकुमार शर्मा और बुधमल भोजक ने वर्षों तक मोदी की भांति कनार और कपड़े का गठरी व्यापार किया। अन्य पेशे के लोगों म वि०स० 1976 से कालू आने वाला गुलाब ससारा, भागीखा इन फराश मोसम विसायती अनार (अर्नी) कनार विक्रेता, भूरा और याकूब मूगफली फाक, गोट तथा मनिहारी का सामान बेचने आया करते थे। पहले यहा यारिये हटडो म और नट बीच बजार मे अपने धन्धे आरम्भ कर दिया करते थे। बैंड बाजा यहाँ नहीं था किन्तु दीना काजी की तुरही (तुर्री) सौ साल पहले मे ही विवाह शादी के समय अपनी तज तीखी आवाज से शुभ काज के सदेश फलाने लगी थी।

चर्खा कातना, लोवडी एव चुन्दड़ी बाधना तथा घुडी कावरिये काढने का काम यहाँ की पुरानी महिलाएँ किया करती थी। राजाओ के समय म भूक्ला बजाकर हर घर से पैसे उगाहने वाले सय्यद मुसलमान भी कालू म यथा समय आते रहते और प्रति घर से एक पसा उगाह लेते। घर से बाहर निकलने समय वे भूक्ला बजा देते इसलिए भुगा कहा करते कि यह इस पसे के धम को भूकला बजाकर यहीं उडा गया है। वैवाहिक अवसरो पर हीजड़े आते और अपने नेगचार हेतु गा बजाकर रुपये उगाह लेते। सागे (सत्यानाशी) लोग हठ धर्मी से उगाही करते तथा चाकू भी खा लिया करते थे। साग भरने म जेता भाड बडा मजाकिया व्यक्ति यहा आया करता, पर अब मोहन भाड आ जाता है। सभी यहाँ के सदीने बाशिन्दगान हैं, मगर महत्तर (भगी) वि०स० 1965 के बाद श्री सुगनमल नाहटा लाये थे। यह महत्तर परिवार आज तक कालू मे समृद्धावस्था मे बसता है। इनमे पहले चान्दू मुखिया था एव अब सोहन है।

पुराने समय म सांटिये[1] गवारिए और बाळदिये गाय बलो के सौदे करने कालू आया करते थे। परन्तु राठ लोग अपने पशुधन को चराने तथा व्यापार करने हेतु हिरावडे चोर बने फिरते रहते। सींगडी निकालने वाले सांप दिखाने वाले तथा फड बाचने वाले भोपे सदा से इस मध्य गाव में अपनी उदर पूर्ति करते रहे हैं। बेलदार (ओड) तालाब खोदने, कापड़िये सासी चोरी सीनाजोरी करने तथा बन बावरिये यहा वन म आखेट करते फिरते थे। तब उनसे किसाना के बच्चे एव औरतें भयभीत रहते। किसी के घर मृत्यु हो जाती तब दसवें दिन उसकी क्रिया कर्म करवाने के लिए गाव सहजरासर व गारबदेशर से तारगिये (आचारज या महापडित) आया करते। मेघवालो के घरो मे शुभाशुभ अवसरा पर वहीं के गुरडे (उनके ब्राह्मण) कालू आते हैं।

कालू मे ढाई सौ वर्ष पहल लोग आकर बसे बसे उसमे से गये भी बहुत हैं। कुछ रहे कुछ नहीं रहे, मगर व्यवसायिक और अव्यवसायिक दोनों प्रकार से लोगो ने

---

1 सांटिये लोग आपस म अपनी स्त्रियो के सौदे भी जातीय प्रथानुसार किया करते थे। अब कालू मे गँवारिये और बालदिये कम गये हैं।

कालू को छोडा अपनाया है।[1] यहाँ का प्रथम महाजन श्री देवच द राठी वरार क्षेत्र के धमोरी नामक स्थान पर रूई आदि का काम किया करता था। इनके पुत्र श्री वद्रीदास का व्यापारिक साख सहित पजाब मे आना जाना बना रहता। श्री वद्रीदास सुत श्री गोवधनदास राठी फाजिलका मे वि०स० 1895 मे आनरेरी मजिस्ट्रेट थे। इसी समय श्री हिमताराम जाणी ने कालू से जाकर तह० फाजिलका (फिरोजपुर) मे कूलार नाम का गाँव बसाया। फिर यहा के एक जाटू जाट ने फतूई (शिवपुर तह०, श्रीगगानगर) नामक ग्राम स्थापित किया। कालू के गोदारे अबोहर, फाजिलका व मूडा मे रहते हैं। तह० पदमपुर के चक 69 एल०एन०पी० (लालगढ नो पेरिनल) मे कालू के जाणी हैं। यहाँ के पारीक ब्राह्मण ता वसीर, नगराना, रतनपुरा (तह० सगरिया) मे गये हुए हैं। वे कटेडा (पजाब) म भी बसते हैं, जो सब उक्त समय म गए हुए हैं। दो सौ साल पहले कालू के नाई (डेक्वाल) परिवार से तीन भाई बाहर गये थे। एक भाई म ने गया और वह वहाँ का जागीरदार बना। गाव मना पाकिस्तान मे आ गया, तब उस परिवार के लोग समुवावजे टालीवाला (तह० अबोहर) आ बसे। दूसरा भाई मुणाराम कालू से रामनगर, जो अब श्री गगानगर म समाहित है—गया था। उसके वशज केसाराराम भूराराम 5E नाइया वाले वास के नम्बरदार रहे। वे बीकानेर राज्य से पूण सबधित रहे। तीसरा भाई तुलछाराम डेक्वाल गाव राजपुरा (तह० तारानगर) जाकर वहाँ 27 गावों का कामदार बना था। इसके परिवार का एक व्यक्ति (समवत ईश्वरराम) तारानगर मे बसता है और कलकत्ते मे अच्छा व्यापार करता है।

लोक व्यवहार एव सहभागिता

माल एव यात्राएँ—प्राचीन समय मे माल बलो की गाडिया एव ऊटो पर लाना ले जाना सुविधाजनक माना जाता। चोर डाकू, जो कटक या धाडवी कहलाते रास्ता म दल-बल सहित मिल जाया करते थे। अत एव सुरक्षा के लिए सेठ साहूकार अपनी यात्राओ में ठाकुर लोगों को साथ लेकर चलते थे। उन्ही के ऊट किराये किया करते थे। चोरा के मिल जाने पर कई अन्य लोग भी अपने को ठाकुर (राजपूत) बताकर बचने का कोशिश किया करते थे।[2] कालू के लोग श्री डूगरगढ, सरदारशहर एव बीकानेर आदि के रास्ता म कई बार डाकुओ के शिकार बने हैं। एक बार धमडीरामजी नाहटा बीकानेर से ऊटो पर माल ला रहे थे। खारड़े और कालू के बीच जहा कूमटे

1 श्री रावतराम भाणजा और घनाराम सूईवाला ने अपनी मशीनो द्वारा एक दिन म पाँच पाँच, चार चार, थाण बफ के निकाल कर बिक्री किए हैं।

2 स० 1977 मे कालू के एक जाट भाडेती को श्री डूगरगढ के रास्ते मे चोर मिल गये। चोरा ने उससे पूछा— के जातियो ?" भाडेता ने कहा—"राजपूत।" चोरो ने कहा—'कुण सा राजपूत हो ?" भाडेती ने कहा—"गोगळी सिरदार।" उनने कहा— किण रा कुवर।" भाडेती बोला—'मालाराम जाट रा।" तब चोरो ने कहा— छोड खोता ऊट। भाडेती के दो उलाय मारे और ऊट खोस कर ले गये। उस मौके एक भादू जाट ने अपना ऊट नही छोड़ा, सामयिक अजीव बात— चोरो ने गोली म मार डाला।

वे घने वृक्ष हैं, उन्हे चोर मिल गय, माल और रुपये खोस (छीन) कर ले गये।[1] तब थाने मे रिपोट पहुँचाई।

कालू के पास लूनकरनसर तहसील के आखिरी गाव चाँदसर[2] का मेघदान चारण वि० स० 1977 से तकडा धाडवी बन गया था। मेघदान शेर जसा पौरुषवान पुरुष था। साढे सात फुट लम्बा, हृष्ट पुष्ट एव तेज आवाज वाला धम मर्यादित धाडवी था। वह दूर-दूर की चोरियाँ करता करवाता, डाके डालता तथा किसी के कब्जे नही आता। किन्तु वह प्रसिद्ध धाडवी बना, तब कालू के लोगो पर डकतियाँ पडनी कम हो गई थी। मेघदान न अपने गाव के पास न तो स्वय ने चोरी की और न अन्य धाडेतियो के हमले होने दिये। एक बार वि० स० 1977 के पास मेघदान पकडा गया और उसको कद हो गई थी। वह स्वय बताया करता था कि मैं हथकडी तोडकर भाग आया और फिर उसी काय म लग गया। जब कभी कालू आ जाता तो लोग उसकी बातें बडे चाव से सुना करते थे। फिर भी व्यापारियों को दूर दूर से माल मगवाना पडता था और काफिलो के ढग से कुछ लोग मिल कर (एक होकर) व्यापारिक यात्रा किया करते थे। अन्न वस्त्र से लेकर चादी सोने तक के भाव सस्ते रहते थे तथा घी खाड से गुड नमक तेल मिच आदि दनिक जरूरत की चीजें भी महगी नही थी। कुछ टक्को (2 4) के कुछ सेर, पदाथ मिल जाया करते थे। जसे दो टके का घत आध सेर। कही एक टके (12 दाम) का आधा सेर घी मिलना बताया गया है।[3]

दोवटी रुपये की 30 हाथ, बारह आन की छीट बारह हाथ और दो रुपये का बादाम (मगज) सात सेर मिलते थे। मूज 1 आने की दो सर, पागो की जोडी के चार आने तथा ईस और सेरू के दो आने लगते थे। स० 1734 आश्विन (ई० सन् 1677 सितम्बर) म जोधपुर राज्य स गाव विलाडा के राजसिंह अपने दोस्त मित्रा सहित पेशावर जमरुद की यात्रा पर गये थे। य लोग जहाँ ठहरते खान पीने की वस्तुएँ वही खरीद किया करते और अपन राजनामचे म उनक भाव लिख लिया करते थे। (अत वतमान के शोधार्थियो को तत्कालीन भावो की जानकारी प्राप्य हो सकती है।) व ई० स० 1678 की फरवरी म रास्ते के गाव शेखसर, जो लूनकरनसर तहसील का बडा गाव, कालू से नौ कोस दूर (राठौडो से पहल गोदारा जाटो की राजधानी रहा) है उसमे ठहरे थे। शेखसर को उस समय शेख फरीद ने बडा उन्नत बना रखा था।[4] इसलिए मारवाड, जसलमेर और बीकानेर के लोग लाहौर लायलपुर रावलपिण्डी, अटक, पेशावर और जमरुद इसी रास्ते से जाया करते थे। ये सब कालू के पास होकर शेखसर के पडाव स निकलते थे। उनके यात्रा वणन मे रास्त के गावो की भावों सबधी विगतें बनी थी, वे अब इस क्षेत्र के प्राचीन भाव, ज्योति रूप टिमटिमा हैं।

---

1 प्रसग—घमडीराम ने चार मिल्या कूमटाळी भर मे।
गणो गाँठो खोस लिन्हो, बात पूगी सर मे॥ तब लूनकरणसर का थाना पुलिस, चोरो के पीछे चढा।

2 कालू स तीन कोस दक्षिण पूव मे चारणा का गाव चाँदसर है।

3 य भाव मौय काल और मुगल काल के मध्य प्रचलित थे।

4 आइने अकबरी के अनुसार शेखसर के पास गाव धीरदाण म शेखफरीद का मकबरा बना हुआ है।

भावो की तरह तोल भी यहाँ की पुरानी विगत बहियो में विविध प्रकार के पाये जाते हैं। वैसे तो नाप तोल के वतन एव बट्टे बहुत प्राचीन समय से प्रचलित थे। किन्तु अनाज के लिए पायली की मिणती और कपडे के लिए हाथ के नाप तो गावो मे अभी तक चलते हैं। इस क्षेत्र मे ताकडी, तराजू तथा अन्य के तोल भी मान्य थे। तत्समय सेर 24 तोले का और कही कही 28 पसे भर का भी चलता था।[1] स० 1542 के अकाल म सत जाभोजी, बाईस के तोल का सवा मन अन्न प्रतिदिन मुफ्त वितरण करवाया करते थे। उस समय सारे क्षेत्र मे वही ताल चल गया, ऐसा जाभाणी साहित्य म वणन मिलता है।[2]

फिर 40 भरी का ताल भी चला और 56 भरी का भी। आगे चलकर अग्रेजी राज्य मे सेर का 80 भर के तोल से समारभ हुआ और मन 40 सेर म। ढाई मन की धोरी और बारह मन का पल्ला भी चलता था। यह मन आठ पसेरी के बराबर होता था। पसेरी को घडी या धारण कहा जाता था। बाटों की साट मे सेर, आध सेर, पाव और छटाक आध छटाक के बट्टे भी हुआ करते थे। मन के आधे भाग का बट्टा अदूण और उसके आधे भाग में दस सेर के बट्टे (दसेरी) भी हुआ करते थे। अब उनके स्थान पर किलाग्राम और क्विटल प्रचलित हो गये हैं।

सोने आदि के प्राचीन तोल व बटे—8 खस खस का एक चावल, आठ चावल की एक रत्ती, आठ रत्ती का एक मासा और बारह माशे का एक तोला माना जाता था। इस तोल मे 96 रत्ती हुआ करती थी।

जमीन के नाप हेतु यहा पावडा का उपयोग चलन था। ये खेत अथवा दूसरे गाव तक की जमीन नापने के साधन माने जात थे। राज्य के ताम्र पत्रों मे बीघो का जमीन नाप, डोरी (20 की) से माना गया मिलता है। खेतों के नाप, बीघे बिस्वे और लम्बी दूरी के कोस तथा योजन प्रचलित थे।[3] कुड या कूए के गहरे नाप पुरूस अथवा हाथ के माने जाते थे। अगुलियो के बिस्वा से वर्षा का लोक नाप था। अन्य स्थान से जूतियें करवा कर मगवाते, तब 13 अगुल 14 या 15-16 आदि के जो नाप होते, अगुल

---

1 बीकानेरी ख्यात पृ० 12

2 जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य पृ० 654

3 *बीस अनवासी एक कचवासी बीस कचवासी एक विम्वासी*
बीस विस्वासी एक बिस्वा, बीस विस्वे का एक बीघा।
अन्य माप—माप के रूप मे खारी का प्रयोग राजस्थानी साहित्य मे अनेक स्थलो पर प्राप्त होता है। विक्रम की तेरहवी शताब्दी मे इस माप का खुलासा इस प्रकार किया गया है।

12 अधावालि = 1 कुडव
4 कुडव = 1 प्रस्थ
4 प्रस्थ — 1 आढक
4 आढक = 1 द्रोण
16 द्रोण = 1 खारी

राजस्थानी भा० 18/3 4 50

का नाप भेजते थे। कपड़े या डोरी मे मुड़त हाथ और ऊपर कुछ अगुल लगाकर गज का नाप गिना जाता था। मकान बनाते समय भी हाथ का नाप काम मे लाया जाता था। जमीन नापने का गज दो फुट का होता तथा कपडा नापने वाला गज तीन फुट का प्रचलित था, जिसम 16 गिरह भी समाये रहते थे।

कस्बा कालू "छतीस पूण" याने सब जातिया का प्राचीन निवास स्थान, जिसमे सबकी अपनी रिवाजें पृथक पृथक सामाजिक प्रथा थी। परिवार का बडा बूढा, मुखिया होता, जो सार कुटुम्ब का उत्तरदायित्व निभाये चलता था। पिता की सपत्ति मे सब पुत्रो का अधिकार माना जाता, किन्तु पुत्री का नही। विधवा स्त्री वस्त्र गहनो के अतिरिक्त पति की सपत्ति म पुत्रो के साथ अधिक नहीं ले सकती। क्योकि पुत्र घर का रत्न माना जाता।

बेटे का जन्म—बेटे के ज म सबधी कालू म अनक गौरवान्वित कहावतें प्रचलित थी। जसे—'बेटो जाम्यो ही पच्चीस वप को हुव।' बेटे के ज म पर वाडो के काटे खडे हो जाते हैं।" 'बेटा हुव जद ही बाजरी हुव।"

रण चढण, कक्ण बधण, पुत्र वधाई चाव।
ज तीनू दिन त्याग रा, कहाँ रक कहँ राव॥

"बेटा मल्या अर दाळद चल्या।" 'बेटो घर री जाझ अर सुरग रो सुख चादणो।" इसलिए बेटे का यहाँ असाधारण महत्व रहा है। बिना बेटे वालों को लोग निपुत्रा कहकर उनके दशन टालते। नि सतान की वश परम्परा समाप्त मानी जाती। नि सतान स्त्री अपना ज म व्यथ माना करती थी।[1] वह विविध गुण पुत्र जन्मने के लिए विविध प्रयत्न किया करती थी। बटे क जन्म पर अनेक मगल कार्यों का विधान हुआ करता था। ज म समय थाल वजा कर हप प्रकट करना, गुड रुपये बाटना, सातिय पुरवाना आदि के नग घर भर मे होते रहते थे। बाहर वाला को भी पोशाक पुरस्कार बाटे आते थे। जच्चा गह पर पर्दा लगाया जाता, द्वार मे बन्दूकें छुटा कर भूत प्रेतादि का भय मिटाया जाता और छठे दिन स्नान फिर नामकरण सस्कार आदि क नम चारो द्वारा जच्चा बच्चा की वडी सुरक्षा की जाती था। मन मन (40 सेर का तोल) घी, गूद सूठ के लाडू हलुवा अजवायन, पीपलामूल आदि के मिष्ठान खिलाय जात और घेवर गूघरी सीर जसे मिष्ठान्ना के गीता की रसधार प्रवाहित की जाया करती थी। सिरघोवण (दशोठण) जलवा पूजन एव देवी देवताओ के धोक जाने का प्रथा नामकरण क बाद पूण करवाई जाती थी।

कालू मे पुरातन काल के नूतन विवाह—जन्म की तरह विवाह भी मनुष्य जीवन का उत्साह एव उल्लासपूण अवसर रहा है। कालू वाणिका (वणियो) ग्राम होने के कारण का

---

1 गीत—भरू जी काठे रे गवाँ री चाढू लापसी, माय तो गाया रो देसी घीव।
कासी रा बासी एक तो अरज म्हारो हेलो साभळो॥
भरू जी देराण्या-जेठाण्या मनैं मोसो बोलियो,
देराण्या जेठाण्या रे हींड पालण।
भरू जी म्हूँ एक पुतर बिन कुळ मे बाझडी॥ कासी रा बासी ।
कितनी मार्मिक प्रार्थना है।

प्राचीन समय मे कुछ विवाह बडे ठाट बाट के होते रहे हैं। वि० स० 1960 मे रघुनाथ दास राठी के घर श्री डूगरगढ से बरात आई थी। उसने तोरण सहेली के समय कालू मे बागबाडी आदि की पुष्प लताएँ (कागजी) लुटाई थी। इन्ही के घर दूसरी लडकी के विवाह मे कच्छी घोडी नचाई गई थी। एसी बरातो मे गाव-न्होरा और घोट की जीमणवारें दी जाया करती थी। श्री बनेचद नाहटा के घर लडकी की बरात राजलदेसर से आई उसम वे अपनी नाटक मडली लाये थ। श्री कालूराम करनाणी की पुत्री के विवाह मे कालू गावम पहले पहल मूक सिनेमा दिखाया गया था। सेठ सुगनमल नाहटा के बडे लडके लाधूराम की बरात कालू से आडसर गई थी। उसमे तीन सौ ऊँट, दस घाडे-घोडी, ऊटो के बीस इक्के, अग्रेजी बाजा तुर्री, भगतण का तायफा, नगारे निशाण और सात सौ आदमी गये थे। वहाँ तातेडो न सरवरा (खातिर) व दहेज म शोभा पाई थी। बनेचद जी के बेटे बुधमल नाहटा की बरात (श्री डूगरगढ) बहुत बडी गई थी। जिसमे चीरे का ख्याल हुआ था। श्री गिरधारीलाल झवर के विवाह मे सब प्रथम बरात स्टेशन पहुँचाने के लिए बस, कालू आई थी। इस बरात मे बरातियो को सुन्दर पाघें भेंट-स्वरूप मिली। श्री भागूराम बद के विवाह मे भगतण तायफा आया तथा बरात अबोहर गई थी। दौलतराम बैद के प्रथम विवाह मे श्री मूलचदजी ने चिडावे से खिलघारी बुलाये थे। कालू मे ऐसे अनेक असाधारण विवाह स० 1950 से 1997 तक होत रहे। यहा के जाटो आदि की बडी बरातें (ऊटो की) भी देखने लायक हुआ करती थी।

पहले विवाह, घर घराने के तौर तरीका से तय हुआ करते थे। किन्तु प्रथम घर और वर की शोध, नाई सेवग या ब्राह्मण द्वारा हुआ करती थी। फिर कन्या का पिता सगाई (वाग्दान) करके टीके के रूप म रुपयो आदि की भेंट दिया करता था। सगाई के समय गणेश पूजा तथा आरती आदि के नग करक सबध को पक्का बनाया जाता था। उस समय कन्या के लिए भी वर पक्ष से वस्त्राभूषण भेजे जाते थे। इनके बाद दाना सम्बन्धियो की सुविधानुसार सावा (मुहूत) दिखाकर विवाह की तिथि निश्चित करके तयारियाँ किया करते थे। ववाहिक गीतो के आरम्भ हान पर वर को बीन राजा और वधु को यहा बनडी नाम से सबोधित किया करते। बीन को बनाकर कन्या के घर ले जाने तब उसके हाथ परा मे मेहदी रचाई जाती आखा मे काजल डाला जाता और ललाट पर बादला तथा तारे चिपकाय जात थे। उसका लाल बागा, लाल पगडी और मुह का जाडिया पहन कर पाणिग्रहण सस्कार तक सुरक्षित रहना पडता था। रगीन जूते गुलाबी कमर पेटा सिर पर सेहरा परो म काकड डोरडे तथा हाथ म तलवार देकर वर निकासी किया करते थे। घाडी के गीत स्वरो के साथ घाडी चढाते एव बाजे तुर्री, नगाडे निशान आतिशबाजी और बन्दूका आदि के शाही ठाट से वधू पक्ष के कस्बे या गाव मौहल्ले म वर प्रवेश करवाया जाता था। यथा-स्थान काकड पेय, अगवानी, डेरा दिलवाना ढुकाव तारण मारना, फिर विवाह मडप के नीचे दुल्हा दुलहिन के फेरे हुआ करते थे।

वर का पिता बडे विनम्र भाव से मना मनाकर बरातिया को अपने पुत्र की जान ले जाता और उनकी वहाँ अच्छी इज्जत एव खातिर तवज्जे करवाया करता था। बरात आम तौर पर तीन या चार रोज ठहरती तब बेह टीकना, बडा भात, सण मनावा पडलो, थाना जाना समठूणी ढाल गुवाड आदि के अनक ववाहिक नग पूरे

करने पडते थे ।[1] वर वधू के लिए मीढी हाथ, फूफडा फाफडी, कँवर कलेवो, वासी जुहारी प्रभति प्रथाएँ आवश्यक मानी जाया करती थी । चँवरी के बाद त्याग, दापो और ब्राह्मणो की भूरादि दान दक्षिणा के नेग हुआ करते थे । दमामिया तथा ससिया को भी पवित बद्ध करके दान दिया करते थे । वहाँ के भाड, वागे, हीजडे और अनेक मागण-हार महिलाएँ भी नाच गाकर अपनी सौगात प्राप्त कर लिया करती थी । बीन का बाप अपने गाव की या बिरादरी की वहिन बेटियो को वहाँ ओढ़ना देता था ।

बरातियो का आठ-आठ दस दस टक नित्य नई मिठाइयो के भात दिये (खिलाये) जाते थे । तरह तरह की जीमनवारा मे अनेक प्रकार की मिठाइयाँ, अनेक भाति के हलुवे खीर और खीचडियो के भात (भोजन) दिये जाते थे । लापसी-चावल व दाल बाटी में घी की खुली धार बहती रहती थी । जीमने वालो की कतारें, समूह और टोलियाँ बडे ठाट से डट कर माल उडाया करती थी । बरात के साथ कन्या पक्ष के लोग भी सनिमत्रण न्योरे, निरतर भोजन किया करते थे । साथ खिलाने का रिवाज था, नहीं बुलाने पर बदनामी कर दिया करते थे । परोसने वाला का टोल भी सबसे पहले खा पीकर तैयार हो जाया करता और उच्च स्वर से बोल कर भोजन परोसता रहता था । जसे— लाडू लोसा, जलेबी लोसा, पेठा सल्लूणी-भूजिया, पापड लूजी लोसा ।" भोजन करते समय, सबधी एव बरातियों को घर एव बिरादरी की औरतें मिलकर गदी गालें (सीठणे) भी गाया करती थी ।[3] कुवारे सबधिया के वे अपने गीतो मे काली कुतिया से विवाह करवा दिया करती थी । बीन राजा का बरात जीमने के समय शुभाशीर्वाद के गीत गाया करती थी । औरतों के समूह द्वारा बरात के डेरे स्थल पर जाकर एक भिन्न कोटि का जलाजी मारू' नाम का गीत गाया जाता था । वहाँ उनको बीन के बाप की तर्फ से नारक सिघाडे बादाम-खोपरे, गुड एव बिस्कुट तक बाटन की प्रथा थी । वे चार दिन तक अपने कई नेगचार किया करती थी । उन मे बाटका उठाने और गोघड दिखाने का नेग 'कठपुतली की भाति' बडा मनारजक हुआ करता था । सीख के समय 'मालवा की भूमली' का एक सुसवादात्मक गीत बडे हास्यात्मक ढग से गाया जाता था ।[4] कन्या विदाई के समय ता वे अनेक गीतो की कारुणिक झडी लगा दिया करती थी । ओसवालो मे सीख के समय प्रभावना प्रभति नेगाचार हुआ करते थे । बीसवी शताब्दी मे पुरानी प्रथाओं और रूढियों का रूप बडा बढा-बढा था । देने लेने के ढग एव रीति रिवाज, कीर्ति अपकीर्ति को लिए सम्पन्न हुआ करते थे । बाल विवाह वद्ध विवाह, बेजोड विवाह

---

1 विवाह वाली रात पीछे वर के घर 'टूटा टाटी" मनाई जाती थी ।

2 सबधियो को हास्य प्रधान भोजन कराने म मिगणियो तथा भफोड का साग और चार का रायता भी परोस दिया करते थे ।

3 बरातियों पर रग छिडकने थापा लगाने एव मीगणा की माला पहनाने के कृत्य बडे अनूठे तथा विनोद प्रिय हुआ करते थे । बीन राजा को रुई के फफूदे रग कर केशरिया माला पहनाई जाती थी ।

4 स्मरण आता है एक बार लनकरनसर में केशरी चद वोथरा के घर कालू मे गई वोर्डों की बरात सीख के समय वहाँ की औरतो ने एसे कालू गाव के ताने दे देकर मालवा की भूमली का गीत सुनाया कि सब कालू के बराती शर्मिंदे हो गए ।

और कन्या विक्रम जसे हृदय विदारक दश्य भी समाज के पचा, वृद्धो तथा नेताओ के द्वारा अपना लिए जाते थे। दूध मुहे बालक-बालिकाओ के विवाह, सिवाय शक्ति हीनता के अन्य किसी भी हित पक्ष में नही थे। किन्तु तत् समय की गति बडी कुटिल थी। कभी-कभी तो पचास वष के वृद्धे वर का विवाह दस बारह वष की कन्या के साथ कर दिया जाता था। वह वद्ध अपनी आयु का शेष समय बिताकर परलोक गमन कर जाता, तब समाज के सिर उसकी बाल विधवा का शापदायक जीवन ही रहता। इस तरह विधवाओ की तादाद वद्धि से भ्रूण हत्याए तक होती रहती और कई नवयुवक कुवारे ही रह जाया करते थे।

वतमान समय के बदलते प्रतिमानो मे कालू की प्रथात्मा भी रूढिवादिता से काफी ऊपर उठ चुकी है। उसमे सत्य, स्वच्छ सत्व और सामाजिक व्यवहार प्रणाली का प्रबुद्ध प्रभाव प्रसरित हो गया है। सस्कृति वही है, पर उसमे नूतन सस्कृति के जागृत तत्व प्रवेश कर गये हैं। अत पुरानी प्रथाओ का रूप बदलता जा रहा है तथा उस अध वातावरण में ज्ञान बल का दुसाध्य सचार हो गया है।

सामयिक मृत्यु प्रथाएँ और भोज—वसे तो मौत के अनेक माग हात हैं, मगर माँचे (खाट) मे पडकर मरने वाले व्यक्ति का जी, (प्राण) जूण (खाट की रस्सी) मे निकलने से सुगति नहीं होती, ऐसा हिन्दू धम शास्त्रा म विधान चलता आया है। इस लिए अतिम समय जान कर मरन वाले व्यक्ति को खाट से नीचे ले लेते और आगन मे सुलाकर उसके मुह मे दही मिश्री या गगाजल आदि दिया करते थे।[1] प्राणान्त के बाद स्नान करवा कर गोबर के चौके पर सुलाते और रेणुका, गगाजल तथा चदन गोपीचदण डाभादि का उपयाग किया करते थे। साधारण जन को केवल कफन, किन्तु धनवान व्यक्ति को बढिया दुशाला उढाया जाता था। सुहागण स्त्री को बढिया चीर या दुपट्टा उढाकर चलेवा करने की प्रथा थी। वृद्ध जन के हाथ मे तुलसी की माला दिया करत थे। योग्य जन की सीढ़ी पर रुपयो पसो की उछाल भी किया करते थे। पीपल की लकडिया चदण खोपरों तथा सम्पन्न व्यक्तियो का सारा दाग खोपरों नारियला म किया जाता था। मगर जलते शव पर घी डालकर क्रिया कम करन का रिवाज हाता और इसक बाद उपस्थित जन, मृतक की जलती चित्ता पर मुट्ठी लकडी देते थे। सम्पन्न व्यक्ति के शव की बकुठी (विशेष अर्थी) निकाली जाती थी। अपने माईत की बकुण्ठी निकालन वाले को बडा ओसर (भोज) करना पडता था। साध सतो की बकुण्ठी निकालन का कालू मे साधारण रिवाज था। यहाँ तीसरे दिन तीजा (लघु भोज) करने का सामाजिक विधान था। चौथे रोज गगाजी को फूल भिजवाने गरुड पुराण बचवाने दसवें दिन दस-गात्र, ग्यारहवें दिन मेल और बारह से ओसर किया जाता था। अपनी सामाजिकता म कोई बडा छोटा नही, सबको अपने माँ बाप, भाई भौजाई, सघवा विधवा अथवा कुवारा लडका ही क्या न हो, सबके पीछे बिरादरी भोज करना पडता था। घृत पचो

---

1 चलेवे के समय मृतक के मुँह मे सोना, आखो कानों मे मोती मिणिये भर देने का रिवाज था। खाट से नीचे लेकर जीविन स्नान भी करवाया जाता था। मृतात्मा के घर उस रोज गायो का दूध नही निकालते, बछडे चुगा दिये जाते हैं। शोक के कारण खाना नही बनता, पडौसी जन या बिरादरी वाले अपने घरों से खाना

की घाक के भय से गरीब एवं किसान (सामान्य जन) भी कर्ज लेकर ओसर या मुक्ता के नाम से मृतक भोज किया करते थे। कितनी मुश्किल हो, परन्तु भोज रूपी बिरादरी टैक्स चुकाये बिना किसी प्रकार से छुटकारा नहीं मिलता। जन साधारण के मकान जेवर तथा बच्चे तक बिक जाते तो भी ओसर अवश्य करते रहते थे। इस विषय पर एक कवि कथन देखें—

जेवर बेचे घर को बेचे मुक्ता करना होता है।
नहीं करे तो जाति भाई का, ताना सहना होता है॥
जाति वाले तो इक दिन जीमें, घर वाला नित रोता है।
लड्डू खाज सब चन उडावें, वह सुख नींद न सोता है॥

ओसर की अवसर चूक या असमर्थता पर, उस व्यक्ति के घर वालों को महणेमोसे एवं ताने दिये जाया करते थे कि "तुम्हारे माईत आखों मे अरडाते (भूखे रोते) फिरते हैं। इस भय से उसके घर वाले अच्छा पहन ओढ भी नहीं सकते। क्योंकि उनके गहना-कपड़ों मे बिरादरी वाले हलुवे आदि मिष्ठान की गंध बताकर जन-समूह मध्य काफी बदनामी कर दिया करते थे। अतः मृतक के पीछे बिरादरी भोज हर हालत मे जरूरी और शोभाजनक माना जाया करता था। तभी तो गाव के बडे धनी मानी लोग अपने मा बाप के मरने पर सारे गाँवका सहप मिष्ठ भोजन करवाया करते थे। ऐसे सामूहिक मृतक भोज को 'शहर सारणी'[1] नाम से संबोधित किया करते थे। शहर सारणी मे तमाम उस गाव के लोग और आस पास वाले गावों के व्यक्ति भी शामिल होकर बडी भीड पैदा कर दिया करते थे। झुड के झुड आदमी औरतें, बालक वृद्ध तथा सब जन बडी तत्परता से शहर सारणी वाले घर पातियो मे साथ बैठकर एक दूसरे की शत से डटकर माल उडाया करते थे। सबत्र प्रस न्नता उमग और उल्लास के साथ हजारो हजारो चुस्त चेहरे उमड पडते थे। वृद्ध पुरुष भी नवयुवकों से आगे नम्बर लिए हुए चलते और वास वास तथा मुहल्ले मुहल्ले से जन घटा उमड आया करती थी। घृत लथपथ यावक[2] या मिठाइया तथा पूडियाँ पकौडिया उनके मन को व्यग्र लालायित किए हुए ले चलती। तब वे आखो में अद्वितीय आभा रचाये हुए शहर सारणी जीमने आया करते थे। इनके साथ राज्य कर्मचारी भी पातियो के नाम बडी शान के साथ मृतक भोज जीम कर आया करते थे। भोजनार्थियों की सुरक्षा व्यवस्था हेतु काक कुतो को दूर रखने के लिए दूसरे आदमी तैनात रहने और सारे नगर मे भूखे तिसे (प्यासे) का हेला (ढिंढोरा) करवा दिया करते थे। किसी भी घर के चूल्हे पर तवा नहीं चढने पाता।

ऐसे ऐसे बडे सामयिक भोज्यो की शहर सारणियो के आयोजन दो कारणो से हुआ करते थे। प्रथम तो मृतात्मा की शांति एवं मुक्ति के लिए धनवान लोग ऐसे बडे

---

1 शहर का अर्थ नगर, कि तु सारणी=जल प्रणाली, धारा या तालिका को कहते हैं। जल प्रवाह की तरह शहर का जन प्रवाह भोजनार्थ उमड आया, तब उसका नाम शहर सारणी रहा। शहर सारणी की प्रथा पहले शहरों से प्रारम्भ हुई और फिर उसी नाम से गावों मे प्रश्रय पा गई। काल मे शहरी और ग्रामीण (ओसर) दोनों प्रथाएँ पनपती थी।

2 लापसी।

काय, किया करते और द्वितीय अपन स्तर के धनी मानिया को अपना धन सम्पत्ति व ऐश्वय के दशन करवान तथा स्वय को पुण्यात्मा कहलान के लिए ! वास्तव म ऐसे कार्यो से उन लागा की इज्जत बढती थी। किन्तु उनके समान दूसर धनी मानी व्यक्तिया के दिला पर भी ईर्ष्या के सप लौटन लगत थे। वे सोचते— हमारे माइतो के मरन पर हम भी अधिक मिठाइया करेंगे और इनकी इस शहर सारणी को एक दम तुच्छ साबित कर देंग। इम तरह कालू म शहर सारणी वाले प्राचीन महाजना म श्रीकिशन डागा बींझराज झवर बद्रीप्रसाद राठी फूमाराम झवर रघुनाथदास राठी भैरू दान कोठारी बींझराज नाहटा चुन्नीलाल बद रामलाल नाहटा नेनकराम हरखचद भादानी (1957) दीपचद डूढाणी और छोगमल डूढाणा वगैरह के नाम आते हैं।

चौधरियो में केवल श्री अमराराम सारण ने ही कस्बा की शहर सारणी की थी। श्री सारण ने उस आयोजन बावत जब गाव के मुखियो को अपने घर बुलाया, तब सेठ साहूकार उसके घर दूहा देने (मृत्य भोज्य लेने) से साफ इ कार हो गये। क्योंकि वे खाड के हलुवे और चीणे (मिजाये पकाये छोलों का साग), चावल के बिना जाटो के साथ गुड का सीरा खाने मे अपनी साहूकारी इज्जत हतक समझते थे। लेकिन अमराराम सारण न उनके कह मुजब (वि० स० 1960 के लगभग) खाड का सीरा एव चीणे चावल (विशेष रूप से) बनवान की बानिकी राय मानकर 'शहर सारणी' की थी। उस चौधरी ने गाव की गली गली म आमत्रण घोषणा करवाकर दाम तमाम जन को अपने घर शहर सारणी के नाम खाना खिलाया था। अन्य कालू के कुछ धनवान जाटा ने अपने माईता के पीछे सारे गाव क लोगो को (बनिया के सिवाय) गुड के हलुए के गाव ओसर" जिमाये थे। इन ओसरा म गाव के तमाम वासिन्दगान (वाणिया के अतिरिक्त) भोजन किया करते थे। ब्राह्मण बरागी, नाथ ज्योतिषी, मुसलमान, नाई खाती सुनार, लुहार, बावरी, राईका और समस्त हरिजन आदि लोग, करीब साढे सात सौ घरों के चार पाच हजार व्यक्ति (नर-नारी) 'गाँव ओसर" के सामूहिक भोजन मे सम्मिलित होते थे। गत पाच दशका में निम्नलिखित चौधरियो के घरों मे उनके माईतों के पीछे "गाव ओसर' के सफल आयाजन हुए। चूहडराम डोगवाल के घर पहला 'ग्राम औसर' हुआ बताया जाता है। फिर लाभूराम भादू, नथाराम भादू तथा मघाराम भादू ने 'गाव औसर' किये थ। किन्तु गिरधारीराम जाणी खिराजराम जाणी रतनाराम डोगवाल वगताराम नण[1] जेठाराम जाणी आदि लोगा ने अपनी माताओ के पीछे मृतक भोज (गाव आसर) किय थे। बींझाराम गोदारा रामरतन भादू और हुकमाराम जाणी आदि ने अपने पिताओ के पीछे ग्राम औसर किये। अन्य जाट लोग अपन अपन बासा म मायप (जाति) के ही औसर किया करते थे।[2]

---

1 श्री वखताराम नण की मा के पीछे टक्के भर घी और लाफसी का ग्राम ओसर हुआ था।

2 इन ओसरा के समय् कोइ भी गृहस्थ ईर्ष्यापत्ति, गमी या शौकिया भोजन करने नही जाता तब उसकी (प्रत्येक छोटे बडे जन की) दो बडी जर (कुडछा) थाली (कासा) सामग्री होती थी। गाव के काम मे (वि० स० 1970 से 2000 तक) गोदारो के बास वाले कालूराम वर्मा द्वारा (हमारे देखी म) यह काय सळटाया जाया करता था। उनके हाथा पर महीने भर तक सौजन एव फफोले हुए रहते थे।

दूसरी जाति के लोग चिट्ठी फाड (भेज) कर अपनी बिरादरी की न्यात बुलवा लिया करते थे। इनके सिवाय साधारण महाजन कहलाने वाले कालू के लोग अवस्था की प्रत्येक मौत के पीछे गाव के समस्त ब्राह्मणो, वैरागियो तथा अ य खट दशन को ब्रह्मपुरी[1] किया करते थे। समय के अनुसार राज्य सरकार की मृतक भोज पावदी के भय से ब्रह्मपुरी का नाम बदल कर "छ यात' नाम से कुछ दिन जिमात जीमते रहे हैं। फिर सूबे पदाथ या नकद रुपये ब्राह्मणो के घर गिनती करवा कर ब्रह्मभोज स्वरूप दिये जाने लगे है। आखिर अब दे और लेने वाले स्वय इस औसर प्रथा का त्याग करते जा रहे है।

कालू मे ब्रह्मपुरियाँ बहुत हुआ करती थी। बनिय लोग अपन को दानी तथा धर्मात्मा कहलान के लिये ऐस मृतक भाजों के अधिक आयोजन करते थे। ये गाव के किसी भी ब्राह्मण को पीछे नही छोडते। हजारो ब्राह्मणो को मिष्ठा न खिलाकर प्रति व्यक्ति को एक रुपया दक्षिणा का भी दिया करते थ। 'जीवदीठ रुपया देन मे गोदी के *बालक को भी इससे वचित नही रखते। बुजुर्गो का कहना है कि प्राचीन समय* मे बडे कस्बो के ब्राह्मण लाटे गडुवे आदि वतन कीडे मकोडा से भर कर ब्रह्मपुरी जीमने जाया करते और अपने बतनो के जीवो की गिनती करवा कर काफी रुपये लाया करते थे। सेठ लाग इस तरह के आयाजनो द्वारा ही साहूकारी का सर्टिफिकेट अर्जित किया करते थे। आजकल वे धर्मात्मा लोग अपन धन का सही उपयोग करने लगे हैं। वे कूए मदिर एव धमशालाएँ बनवाते हैं तथा स्कूल अस्पतालें खुलवा कर यश लाभ कमाते है। अत कालू की भोज प्रथाए आजकल कुप्रथाएँ कहलान लगी हैं।

बिरादरी पचायतें और उनके स्थान—पुराने समय मे प्रत्येक समाज अपनी बिरादरी पचायता द्वारा सचालित रहता तथा बराबरी के व्यवहार से चलता था। विवाह शादी, औसर मोसर न्याय निणय एव चदे धमादे जसे अनेक कार्य कालू मे जातीय *पचायतों द्वारा सम्पन्न हुआ करते थे। राज्य सरकार के कोट-अदालत भी बिरादरी* पचायत के फसलों पर विश्वास किया करते थे। फिर शन शन समय प्रभाव से उन पचायतो मे विकृतियाँ आई, तब क्षुब्ध होकर लोक ने स्वय त्याग तो नही किया, किन्तु उनमे काफी सुधार कर लिया है।

यहा ओसवालो की यथापयुक्त आबादी है। उनकी पचायत व्यवस्था सदा से उत्तम गति रहती आई है। पहले इनका एक नोहरा था जो अब सुन्दर पचायत भवन है। बिरादरी के बतन वगहर का सब सामान इसी मे रहता है और साध सत तथा अन्य आगतुक जन भी यही ठहरते हैं। वि स 1974 मे अधिक वर्षा के कारण ओसवाल नोहरे के चारो ओर पानी भर गया था और अन्दर तीन सतियाँ (कान कँवर जी आदि) रह रही थी। श्रावको द्वारा नोहरे की एक तर्फीय दीवार तोडकर उनको बाहर निकाला गया था।

चौभीते म ओसवालो की अपनी छोटी साल थी। वह मौहल्ले के मुख्य द्वार पर

---

1 ब्रह्मपुरी का अथ ब्रह्मलोक और वाराणसा! अत नगर के समस्त ब्राह्मणों को एकत्रित करके खिलाते हुए धर्मात्माओ ने अपने निवास का भी ब्रह्मलाक की बराबरी मे मृतक भोज का नाम ब्रह्मपुरी रखा है।

चौकीदार के रूप मे पहरदा रहने के लिए बनाई हुई थी, जो कल तक खण्डहर खडी दिखाई देती थी। जमीन की माग बढी और उसकी जमीन भी लोगो ने इधर-उधर मिला ली। तत्समय ओसवाल समाज के श्री सुखलाल कोठारी मेघराज बोरड और भीकमचन्द बोथरादि बिरादरी पच थे। ये सगठन विकास, हित रक्षा आदि के पूर्ण अधिकार रखते थे। विवाह ओसर के सारे कार्य इन्ही पचो द्वारा सलटाये जाते थे। आजकल अन्तर्राष्ट्रीय और वनानिक सामाजिकता के युग मे श्री भैरू दान साड तथा सुमानचन्द बोरड बिरादरी का पच पद सभालते हैं।

कालू की महिलाएँ और कार्य—भारतीय इतिहास महिलाओ के उत्कर्ष की गाथाओं स भरा पडा है। प्राचीन समय मे भारत की अनेक देवियाँ वदान्त योग साख्य न्याय गणित, साहित्य कला सगीत इत्यादि विद्याओ म पडित एव निपुण थी। श्री मनु महाराज ने ठीक कहा है— यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।' आज लोग कहते हैं कि लडकियो को उच्च शिक्षा दिलाने से क्या लाभ ? वे सभा सोसाइटियो मे जाने लगेंगी।" ऐसी ऐसी अनेक भ्रात धारणाओ के बावजूद भी कालू म जन महिला मडल शिक्षित सुधारवादी महिला बिरादरी का सर्वोत्कृष्ट सगठन है। मडल की सदस्य महिलाएँ सामाजिक, शक्षिक एव दस्तकारी के कार्यों म पूरा समय लगाती हैं। मानवोचित गुर्णो मे महिला मडल की औरतें पूर्ण विकास पा रही हैं। गाव के बीच उनका अपना भवन है और अन्य सामान भी। जब स श्री बद्रादास राठी की धर्म पत्नी शेरा देवी ने पचायती के मदिर की स्थापना करवाई, तब से ही यह मन्दिर माहेश्वरी समाज का पचायत स्थल बना हुआ है। इस समाज के धार्मिक सामाजिक एव मागलिक मौको पर आरम्भ से ही इस मन्दिर में जीवन व्यवसाय सबधी प्रश्नो तक के विचारो का आदान-प्रदान एव मार्ग दर्शन के काय यही होते रहे हैं। माहेश्वरी समाज की पचायती के बतन वगरह का सारा पुराना सामान भी इसी मदिर मे रखा हुआ रहता था। उस को विवाह शादी मे उपयोगार्थ देने और सही रूप वापिस लेने का काय पहले श्री परसराम डागा तथा अर्जुनदास झवर आदि लोग किया करते और वे सुरक्षा भी रखते थे। भोजन करवाने, कामगीर मजदूरो को लेन देने तथा सीन बाडी की पूछताछ के काय श्री हरसुख दास मूलचन्द झवर और चौथमल मनिहार के हाथो से सम्पन्न करवाये जाते थे। बतनादि का सामान अब मगल चन्द झवर के सुपुर्द है और अन्य सामाजिक काय पचायत के माफिक बिरादरी के नवयुवक सभालते हैं।

पारीक ब्राह्मणो की पचायती का अपना पुराना भवन (पारीक धर्मशाला) है। उसी म इस बिरादरी वालो के बतन वगरह रखे रहते हैं। इस भवन मे उनके वास की आई हुई बरातें ठहरती हैं। अत वे किसी के अधीन नहीं होते। यह धर्मशाला भवन पारीक मौहल्ले के मध्य स्थित है और इसम पानी, रोशनी आदि का भी सुन्दर प्रबन्ध हो गया है। पारीक बरादरी म पहले श्री इन्द्राराम भगवानाराम, सुगनाराम इत्यादि पच थे। अब पारीको की पचायत म श्री मूनाराम की मान्यता है।

सारस्वतो की पचायती के बतन वगरह श्री नानूराम सारस्वत के पास सुरक्षित हैं। इनके सारस्वत भवन का जमीन तो मुकरर है पर भवन अभी नहीं बना। इसलिए अगूणे वास के प्रमुख पच भवन स्थापित करवाने मे लगनशील हैं। पहले इस वास मे श्री

जेठमल बोथरा ने वि०स० 1978 80 के लगभग स्वय श्रम सम्पन्नता धारण करके अपने सयुक्त परिवार निवास हित एक दिव्य मनोहर हवेली बनवाई थी। तत्सामयिक प्रथानु सार उसमे आकपक टोडे भी लगवाये थे। सेठ श्री जेठमल बोथरा का कुछ के साथ झगडा हो गया। क्योंकि श्री सेठ की नव्य सपत्ति व्यवस्था से पुराने सेठ कहलाने वाले कतिपय स्थानीय व्यक्तियो मे झूठी लडाइयाँ शुरू हो गई। श्री बोथरा ने ऐसी शतानी करने वाले लोगो (एक दो छटवा) पर मामला ठोक दिया। तब निरुपाय विरोधियो न लूनकरनसर मे बोथरा की साखी (कविता) बनवा कर प्रचलित करवा दी—

नई हवेली नौ टोडा, एक रामलाल अर नौ मोडा।[1]
जेठा' भागी रे, तेरी माया मामले लागी॥

सेठ सुगनमल नाहटा की वि०स० 1970 71 से बनी 70 वष पुरानी हवेली अपनी उत्कृष्ट कला बनावट के कारण कालू में आये गये लोगों का मन मोह लेती है। इस हवेली की स्थापत्य कला व लाल पत्थर पर कारीगरी के खुदे नमूने बीकानेर की हवेलियो के अनुकरण पर बनाये गये जान पडते हैं। आस पास के अय शहरों मे पत्थर की खुदाई का ऐसा बारीक काय कम देखने म आता है। दुलमेरा का लाल पत्थर कलाकारो के हाथो मे आकर ऐसा सजा सवरा कि जड चतय के अभेद जसा बोलता सा अनूठी कला मे परिवर्तित हो गया है। इस प्रोन्नत पत्थर पर जालीदार काम पाषाण नक्काशी का निरालापन है।

पूरणराम सिलावटे की छैनी हथौडी से पत्थर की बारीक खुदाई ने इस भय हवेली के जाली झरोखा एव लटकी गुच्छेदार लडियो के आभूषणो ने बीकानेर की हवे लियो के जानदार स्वरूप को प्रत्यक्ष करके दिखा दिया है। दुमजिले बरामदे की कलात्मक विशिष्ट शिल्प आज भी गाव कालू म देखने योग्य बनी हुई है। इस बरामदे की भीतरीय दीवारो एव छतो की रगीन चित्रकारी बस्तीराम उस्ता की रग कूची स चित्रकला के मनमोहक नमूने कहे जा सकते हैं। हवेली स्व० श्री सुगनचद नाहटा की अपनी हार्दिक कलाप्रियता वाली वांछा पूर्ति की प्रतीक है और उनके पुत्र पौत्रो द्वारा उपयोग मे लायी जाती है। किन्तु गाव की यह हवेली बेजोड, बुद्धि चातुय एव उदात्त आत्मबल सहित सठाई कौशल का नय काव्णीय रूप है। इसके लिए यहाँ एक कहावत प्रचलित है—

धू (ध य) सुगनचद कमर न, धू है सारण अमर न॥

---

1 लूनकरनसर मे श्री चादमल विरमेचा का व्यवसाय प्रसिद्ध घराना था। उसके देहात बाद एक अव्यवसायिक पुत्र रामलाल, फकीरो म बठकर भाग सुलफा पीने लगा। वह साथ कुशलनाथ व अय को रखने लगा, जो अकारण श्री जेठमल की सपत्ति वद्धि से चिढकर मार पीट तक उतारू रहते। श्री बोथरा ने इन पर राज्य वादी फौजदारी दावे दायर करवा दिये। इस पर स्व० चादमल के ज्येष्ठ पुत्र श्री विरधीचद तो अपनी सभ्य स्थिति लेकर कालू आ बसे।

कालू मे पितर पूजा एक युग धर्म

कालू मे पितर पूजा की आस्था प्राचीन काल से प्रचलित है। अपन दिवगत दिव्य पुरुषा की पूजा को यहाँ अधिक महत्त्वपूण समझते हैं। यह पूजा, लोक और वेद दानो से प्रमाणित है कि सभी पितर पूज्य हैं "अनो भवति व बाल पिता भवति मन्त्रद" इत्यादि प्रसग मे ज्ञान प्रधान होने के कारण पितरा को देवताओ स श्रेष्ठ बताया गया है। पितर ज्ञानी हाते हैं उनम अपनापन भी रहता है। इसलिए उनकी पूजा मे लागो का स्वाभाविक आदर भाव बना रहना प्रत्यक्ष है। भगवान भी वडे लागो की पूजा करने वाला से बहुत प्रसन्न हाते है। अत एव अपन पूव पुरुषा की पूजा प्रथा यहा परम्परित हैं।

मनुस्मृति मे " महात्मान पितर पूव दवता । आदि श्लाका द्वारा पितरो की पूजा को देव पूजा से प्राथमिकता एव तदपेक्षया महत्वपूण बतलाया है। कालू सदा से पडिता विद्वानो का गाव हान के कारण यहा के लोग ऐसे श्लाका की साथकता स अनुप्राणित होकर अपने अपन पूज्य एव आराध्य पितरो की आराधना मे दत्तचित्त रहते हैं। पितरो को यहाँ [पारिवारिक जन] विवाह मे बुलात हैं, बरात चढाते हैं, भाज्य पदार्थों का थाल परोसते हैं और परिधान वस्त्र वितरित करते हैं। उनके आदश मानते हैं, भक्ति करते हैं गीत गाते हैं और उन परलोकगामी, स्वगस्थ मृत्युन्जयी दिव्य पुरुषो क कृपा पात्र बन रहते है।

यद्यपि पितर पूजा अपने दिव्य पूवजा की भक्ति भावना का प्राचीन रूप है, तथापि अर्वाचीन समय में अनात फल प्राप्ति के लोभ हेतु अधविश्वास एव पोगापथी के असत्य टोटकों से ग्रस्त कुछ लोग उस दविक भावना स दूर भी जा रह हैं। आज अध विश्वास, कुठित बुद्धि अथवा चारित्रिक दुवलता के परिणाम अनेक रूपो मे घटित हो रहे हैं। अब निष्काम भावना वाली पितर पूजा का बीमारी, दुख दद व सकट टालने वाली तथा व्यापार शिक्षा एव सर्विस मे सफलता देन वाली पूजा मानने लगे हैं। पढे-पडियो तथा भोपे भोपियो के आश्चय जनक एव भाँति भाँति के पाखड चक्करा म पडकर डिग्रीधारी व आधुनिक शिक्षा प्राप्त सुसस्कृत गहस्थ तक अशिक्षित लोगो की तरह सकाम भाव से पितर पूजने लग हैं। पहले जहाँ एक दो घर म ही पितर पूजा हुआ करती थी, अब वहाँ अनक घरो म पितर पितराणिया के पूजा प्रसाद प्रचलित हुए है।[1] यह सब महँगाई के शिकार पडे पडियो की करामात ही दिखाई दती हैं। ब्राह्मण ही नही अ य जातियो के लोग भी झूठा ध्यान लगाकर अपने ऊपर पितरा की छाया लाने लगे हैं और सरल लोगो को हर काय मे सफलता दिलवाने की आशाबद्ध करके पितर पूजा म ठग विद्या को बढावा द रह हैं। यह काय यहा पुरुषा की अपेक्षा औरतें अधिक करती हैं। धार्मिक और घनवान तथा माहेश्वरी महाजना के घरा म आने जाने वाली दादियाँ औरतें जसे—कोई पडित की पत्नी है तो कोई किसी नता की मासी, पितरो की छाया लाने में माहिर बन गई हैं। तब युगीय आवश्यकता के अनुसार कालू के दूरदर्शी लाग अपने पितरो को 'गयाजी" भिजवान लगे हैं। श्री जमनाराम वद्धिचद वर्मा के घर पूजे जाने वाले प्राचीन पितर श्री धनराज वर्मा (श्री वद्धिचद क चाचाजी) को गयाजी

1 कालू म फिर घर घर म पितर पूजन होने लगा ह।

के तीर्थ धाम भिजवा दिया गया है। परन्तु भाद्रपद वि० स० 1987 म, ससार से जाने वाले श्री रावतराम (पुत्र कालूराम सेवग) गाँव मे अभी पूजमान हैं। शास्त्र सम्मत बात यह है कि मनुष्य का अपना ज्ञान एव कर्म इहलोक मे तथा परलोक गत होने पर उसके वंशजो द्वारा उसके निमित्त किये गये सत्कर्म, व्यक्ति विशेष की उत्तमोत्तम लोका की प्राप्ति मे सहायक होते हैं। "पुरायेन पुराय लोक जयति पापेन पापमुभाभ्यामेव— मनुष्य लाक।'



पचम प्रकरण

मैत्री मिलन की मनोवृत्तियाँ

दिल बहलाव और साधन—पहले यहाँ तालावो की प्रचुरता के कारण समूह म नहाना, जल मे डुबकी लगाकर छुपना बहु तरीकों से तरना भीगणे से खेलना घडे से तलाब पार करना तथा मेले मगरिये के दिन पानी मे नारियला की पकड प्रतियोगिता मे विजय प्राप्त करना आदि अनेक जलीय मनोरजन हुआ करते थे। खलाखूटी चरकचूडी मकडी चढाना हीडो पर[1] ऊभली मचाना व लवरो का लौंग लाना घूमर घीदड डाडिया नत्य, जागरणो म भवानी की छाया आना डफ, डामकी, डमरू, ढोल अलगूजा, वदारी बजाना तथा ग्वाला के अनेक खेल तमाशो की परम्परा म कालू स्थान सदा से अग्रणी रहा है। दडी (गेंद) के खेल भी यहाँ बडे चाव से हुआ करते थे। हाली के बाद गुड्डी उडाने का सावजनिक मनारजन कालू म बडा प्रसिद्ध रहा। विवाहो के अवसरों पर वीन्द (वर) की घोडी के जुलूस निकलते, तब गाव भर म मनोविनोद की चहल पहल हो जाया करती थी। घाडी के साथ सकडा आदमी हर्षित हास्य घूमते और औरतें भी अपने समूह में गीत गुड का लाभ सवरण नही कर सकती। घर या सभा मे गणेशा मिरासी आदि के कत्यकादि को नत्य बडे मनारजक हुआ करते और नाटक मे श्री जोरमल राठी के मजाकिये हास्य नत्य दशको को आनदित कर दिया करते थ। रासलीला रामलीला व होली के स्वाग सावजनिक ढग स होते थ। घर भीतर के खेलों मे गुराजी के उपामरे मे हाथो दात के प्राचीन पामे थे, वाकी खेल स्थाना मे कौडियों से ही चौपड के खेल मन जाते थे। स्यारें लकडी की हाती, कितु रगीन व सफेद दोनो तरह की चलती था। गट्ठा, झोर-दूहा वगरह खेल घर के भीतर खेले जाया करते थे। तास म पहले बूझमाणा कोट पीस गदहापीस और मिरच नाम के खेल अधिक खेले जाते थे। यहा वि०स० 1985 से कालू की सास्कृतिक परम्परा म नाटक का खेल प्रारम्भ हुआ है।

कालू के पुराने लोग पशु पक्षियो का भी अपने मनोरजन का साधन बना लिया करते। कबूतर उडाना[2] मुर्गे लडाना, ऊँटो की दौड घाडो का नत्य झोटा व साडा को भिडाना कुत्त दौडाना,[3] चीला को बडे चिवाना (बुचाना) हाथी के आ जाने पर नारियल खिलाना तथा ब दर या लगूर को गुड की डली फेंककर चिढाना आदि के लोक मनोरजन यहा मनव हुआ करते थे। चाचक बोहरो ढाई सेरो और भाड (बहुरुपिय) के वेश फन्द के चित्र गान देवताओ की झाकियाँ कठपुतली, कच्छी घोडी के ख्याल नट के चमत्कार मदारी बाजीगरी जादूगरी तथा कालवेलियो की पूगी बाँधने की कला जसे आश्चयजनक तमाशा की यहाँ निरतर आवक रहती थी। बडा गाव होन के भात भाट जोगी, ढाढी ढोली एव घाले मोतीसर भी प्राय आते थे और गाव में हप मनारजन के टाटक प्रस्तुत किया करते थे।

---

1 हीड हाली स गण गौर तक हीड जाते थे। सावन म हीडने की प्रथा यहाँ नही थी।
2 उडाय जान वाले कबूतरा के परो म नेवरी एव छल्ले पहनाए जाते थे।
3 दाडाय जाने वाले कुत्ता के गले मे चमडे के पट्टे लगे रहते थे।

स्वाभाविक गुण—पक्षिया के मनोरजन से हमारे बुजुर्गों को एक मनोवैज्ञानिक आनन्दोपलब्धि होती थी। वे उनकी एक एक बात को जानते समझते और समता के चेहरे देखकर लडा भिडा दिया करते थे। वे उनको लडा, नचा तथा भगाकर बडे खुश होते और अपनी-अपनी हार जीत मान लिया करते थे। जानवर लडते तब उनकी ओजस्वी भावनाएँ चेहरे पर उतर आया करती और चेष्टाएँ प्रतिद्वन्द्वी मे टक्कर भिडने का भाव बता देती थी। कबूतर का ऐसा क्रोध, उसके तन बदन को फूलाकर गदन का हिलाता और वह लपक लपककर आगे पीछे चलता रहता था। मुर्गा क्रोधित होकर अपनी कलगी को खडा कर लेता और उछलता हुआ, बार बार बोला करता था। चील जब क्रोधित होती, तब अपनी मटमैली आखें खोलकर चोच से ची ची करने लग जाया करती थी। आजकल बहुतों ने ऐसे मनोरजन के कायक्रम नही देखें होंगे।

पशुओं मे दौडते हुए ऊँट के नथुने फूल जाते और मुह से झाग निकलते। वह अपने प्रतियोगी से आगे निकल जाने के लिए पूरा जोर लगाकर दौडा करता था। घोडा नाचता तब मालिक से आदेश की थपकी लेने के लिए हिनहिनाता और बारी बारी से अग्रिम दोनो टागों को मोडकर जमीन पर बजाया करता था। बाट एव साड लडने के समय बडे भयावने बन जाते और उनकी आँखो से चिनगारियाँ निकलने लग जाया करती थी। आगा पीछा नही करते, गुस्सा आ जाने पर पूछ उठाकर प्रतिद्वन्द्वी पर तीर की तरह जा झपटते। दौडते हुए कुत्ते पूछ दबाकर परो से जमीन नापते दिखाई देते, किन्तु लडाई के समय वे आगे के दोनो परो को विरोधी के परों से मिला कर खडे हो जाते थे। मुह खोलकर गुराते ललकारते से बोलते और दुश्मन के मुह पर दात चलाते जाते। समय के विनोद प्रचलन से पशु पक्षी पटु एव प्रशिक्षित होते थे। इडिक इडिक करके चोट लडाये जाते, लग लग करके कुत्ते और सीटी बजाकर कबूतरो को आकाश मे उडा देते तथा वापिस बुला लिया करते थे।

महिलाएँ रात्रि जागरण विवाह एव जॅवाई आगमन तथा अन्य त्यौहारो पर खुलकर मनोरजन किया करती थी। बरात चढ जाने के बाद वर के घर बहुत सी स्त्रिया मिलकर टूटा टाटी का हास्यप्रद खेल नेगाचार के रूप खेला करती थी और पर्दे मे रहने वाली औरतें गीत गालो मे अपना हृदय खोल दिया करती थी। बालक-बालिकाएँ यहा हर समय बेफिक्र होकर अपने खेल खेला करते थे। बालक लुक मीचणी, भू भू भरियो, खोडियो खाती मारदडा आदि खेल खेलते और बालिकाएँ गुड्डा गुड्डी, तिलडी छीकी वगरह के खेल खेला करती थीं। इसी तरह से पुराने जीवन मे बडी मस्ती एव बेफिक्री रहा करती थी।

गुड्डी या पतग—पतग का शौखिया मनोरजन कालू निवासियो के जीवन मे सदा से रमा हुआ चला आया है। इस गाव में यह बाल मनोरजन का साधन ही नही, अपितु मानव अस्तित्व के लिए पतग का अपना निज का महत्त्व रखता है। आदमी पेच लडाकर अपने आप विजयी बनने की कोशिश करता है। क्योंकि पेच लडाने की कला स्फूर्ति, मनुष्य के जीवन सग्राम मे सहायक होती हैं। पेच लडाने वाले पतग बाजो के लिए उद्देश्य का कोई ध्यान नही रहता उन्हें तो फकत ध्येय की चिन्ता रहती है। अत यहाँ के लोग स्वतत्र रूप से पतग उडाकर प्रसन्नता प्राप्ति का काय करते हैं। इसमे कप या शील्ड लेने की इच्छा नही होती, केवल सामने पेच अडाने वाले का किना

मात देना चाहते हैं। कितनी भूख लगे, धूप लगे, रात पड जाये। कितनी व्यय वृद्धि चढ़े किन्तु कालू का पतगबाज (पेच लडाकू) एकाग्रचित होकर विरोधी की फाटी (हार) करके रहेगा।

कालू के पतगबाज लोग इस बास की कमानियो के ढाँचे[1] पर कागज मढ कर बनाये जाने वाले खिलौने रूपी किन्ने को गाद काच से सूते हुए मजे (तागे) से बाधकर हवा के सहारे आसमान मे उडाते है। यह जापान का प्रचलन बताया जाता है। इसके उडाने का एक हुनर होना है, जिसे यहाँ के पतगबाज अच्छी तरह जानते पहचानते हैं। हमारे बीकानेर मडल म इसके अनेक नाम बोले जाते हैं। जसे—गुड्डी चग किन्ना कनकौवा, कनकया किनडी एव पतग। किसी भी आदमी की पराजय पर यहाँ "पतग कट चली" का मुहावरा बोला जाता है तथा पद से हटे हुए व्यक्ति को कालू में "कटा हुआ किन्ना" कहकर सबोधित कर देते हैं। दूरस्थ व्यक्ति के साथ बधे प्रेम के लिए प्राचीन समय से गुड्डी की लम्बी डोर के लक्षणो से उसका धीर गभीर एव स्थिर प्रेम दर्शाया जाता है कि—'गुड्डी उडे आकाश म डोर लम्बरी होय।' गाया भी जाता है—"उड चली रे पतग मेरा चली र।'

वसे तो पतग सवत्र उडते होंग ही, किन्तु कालू के लोगो को इसे उडाने का विशेष व्यसन व प्रेम है। इसलिए वे रामचरितमानस के रचयिता श्रीतुलसीदासजी के निम्न दोहे को भी इन्कारते हुए दष्टिगोचर होते हैं।

नीच, चग सम जानिये, सुनि लखि तुलसीदास।
ढील देत महि गिर पडत, खीचत चढत अकास।।

इस बहु प्रचलित आचलिक शौक के लिए तो कालू म पतग के लोक गीत भी गाये जाने लगे हैं। मम आत्मज शिवराज के विवाहोपलक्ष पर श्री एम० के० पाडे (बक मनेजर) की पुत्र वधु ने निमत्रण पर आकर हमारे परिवार के समक्ष राजस्थानी मे एक बहुत सुदर नूतन 'बनडा' गीत गाया था। वह बनडा गीत—

कालू र बजारा दादोसा पतग मोलाव,
छत माथ ऊभा बनसा पतग उडाव।
फमनवाळी बनडो से पेच लडावै
नम्बरजादी बनडी मे पेच लडाव।
ढील द्योजी-ढीलद्यो, गुडक्ण द्याजी गुडक्णद्या।
पच है जी पच है, बोई मारा! बोई काटा!! (1)
बाजार म बठा जीमा पतग मोलाव,
छत पर ऊभा शिवजी' पतग उडाव।
फमनवाळी सरिता मू पेच लडावे,
कामणगारी बनडी सू पेच लडाव।
ढील द्योजी-ढीलद्यो गुडक्ण द्योजी गुडक्णद्या।
पेच है जी पच है बोई मारा! बोई काटा!! (2)

1 गुड्डा तो बडी म्हाट का भाति सुन्द बास की फटियों और मोट कागज से बनाई जाती थी।

बाजारा म बठा जीजोसा पतग मोलाव,
छत पर ऊभा शिवजी पतग उडाव ।
फसनवाळी 'सरिता' सू पेच लडावै,
शाहजादी बनडी सू पेच लडाव ।
ढील द्याजी ढीलद्यो, गुडकण दयोजी गुडकणदयो ।
पच है जी पेच है, बोई मारा ! बाई काटा !! (3)

बाजारा म बठा वीरा सा पतग मोलाव
छत पर ऊभा शिवजी पतग उडाव ।
फसनवाळी सरिता सू पेच लडाव,
रायजादी बनडी सू पेच लडाव ।
ढील द्योजी ढीलद्यो गुडकण दयोजी गुडकणद्यो ।
पेच है जा पेच है बाई मारा ! बोई काटा !! (4)

(1 जुलाई 1976 ई० श्रीमती निमला लता पाण्डे धमपत्नी श्री जगदीश पाण्डे) ।

गर ! गीतो को छोडो कालू म गुड्डी उडाने का प्राचीन शौक, गुराजी श्री गणेश मालजी, प० गोधूरामजी तथा गोबिन्दरामजी यति को काफी परिपक्व रूप म था । पर पतग उडान मे यहाँ क स्व० श्री बुधमल नाहटा (ढाई बिघा) स्व० कन्हैयालाल बूढाणी स्व० फतेहचद बोथरा स्व० भीखमचद नाहटा, स्व० भीखमचद साड आदि सज्जन पुराने शौकीन थे । वृद्ध लागा मे श्री खुमानचन्द बोड ईश्वरचद गोलछा और केशरीचद बूढाणी भी बडे उस्ताज पतगबाज रह है । वतमान समय म यहा पतग उडाने वाले कतिपय निराले नौजवान हैं । व काफी दाव और ट्रिक्स जानते हैं । कालू म अनेक तरह से पतग क अग प्रत्यग सहित नाम वाले जाते हैं । जसे चरखी कणियाँ, डुगरो, फर्री, सीग, लोळ लिप्पू ताणदार पूछ पासो, ढील, गोच, पेच, कटिया पेच, ऊपरला पेच, टेढिया पेच, नीचला पेच लफना फँकना स्हारना ताण दखना आदि बहु भाति के पेच नाम हैं ।

पतग की उमग, गाव कालू की लोक क्लोल प्रवत्ति म इतनी घुल मिल गई है कि उसके लिए कोई परिभाषा करन की शक्ति नहीं मिलती, पर तु शिक्षित नवयुवक उसकी परिभाषा जाने बिना कस रह सक्ते हैं ? इसलिए पतग क मनोरजन को हम मनोवैज्ञानिक शब्दो मे मनुष्य क रचनात्मक काय कलाप की एक लालसा भरी ललित अभिव्यक्ति कहेंगे ।[1] पतगबाज व्यक्ति अपनी विशिष्टता का अलग वातावरण प्रकट करने का प्रयत्न करता है । वह सचमुच पतग के माध्यम से अपनी आत्माभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त करता है । वृद्ध बीमार, धनवान, विद्वान या कगाल कोई भी व्यक्ति कटे हुए किन्ने को अपने पास से जाते हुए देखेगा ता फौरन उसका तागा पकड लेने की तरकीब जुटायेगा । देखिए कितना जबरदस्त मनोवैज्ञानिक मनतव्योत्साह है । मूल्य तो इसक पाँच रुपया से अधिक नही हाता, किन्तु ऊँचे से गिरकर जान दे देते है, मगर किन्ने को नही जाने देते ।

1 देर तक आकाश म देखना और एकाग्र होकर हाथो को हिलाना, आँखों व स्वास्थ्य के लिए मुफीद (लाभकारी) माना जाता है ।

कालू मे बेचारे पतग प्राप्य नही कर सकने वाले बालक ककर पथरिया से धागा जोडकर पेच लडाते हैं और बडे अथ गाभीय के साथ बोलते हैं—

ढेरिया ढाटी, सबकी फाटी ।
लगाआ चूना माटी, काकरा सू दाटी ।।

हमारे देश मे सब जगह पतगबाजी होती है । किन्तु पजाब गुजरात, महाराष्ट्र राजस्थान और दिल्ली मे पृथक-पृथक अवसरा पर पतग उडाय जाते हैं । पजाब मे वसत के समय महाराष्ट्र म दिवाली पर दिल्ली मे रक्षाबधन के अवसर पर तथा राजस्थान मे मकर सक्राति के दिन पतग उडान की परम्परित प्रथा है ।

राजस्थान की राजधानी जयपुर म मकर सक्राति के दिन धार्मिक उत्सव के रूप म पतगबाजो का टूर्नामट होता है । कलकत्ता, बम्बई आगरा इलाहाबाद, बनारस लखनऊ तथा अलवर आदि स्थानो से पतगबाज आते हैं । सुना है सवाई रामसिह पतग मे मोहरें लगाकर लुटाया करते थे । आज भी देश म माने पतग म करोडा का कारबार होता है ।

क्लब ऐतिहासिकता और कालू

खेलो के ढग अति प्राचीन हैं । रामायण[1] और महाभारत काल क खेला का तो पूरा वणन मिलता है । राजा महाराजाओं के सभा खेल, उद्यान क्रीडा मृगया, जल-विहार की परम्परा भी प्रसिद्ध है । पर खेल की दिलरजन पद्धति नत्य, सगीत राम, हिडोला आदि ऐशोआराम के खेला मे बदल गई थी । अग्रेज आये, नय खेल लाय ।

अग्रेजों के शासन समय म बडी बात यही हुई कि उस अभिनव स्थिति म खेल मनोरजन के विचित्र साधन अनुकरण के चाव से प्रकट हा रहे थे । लाड क्लाइव ने पहले पहल राजा महाराजाओं को उनके खास मुसाहिबो दरबारियों अमीरो और रईसो के प्रेम वार्तालापा वाले स्थाना से हटाना चाहा, तब बगाल म प्रथम 'रायल हट" नाम से एक लदन मार्का क्लब का जन्म सस्कार हुआ था । आगे जाकर उसी परम्परा मे वह बगाल क्लब कहलान लगा । बम्बई मे ऐसा राजशाही सुख साधन पूण रयल रॉडियो क्लब' स्थापित हुआ है ।

शासन बदलता है तब सस्कृति भी बदल जाती है । छाटे बडे नेता मुखिये और सब अधिकारी गण आने वाले प्रशासकीय रग मे दौडकर प्रवेशित हा जाते हैं । उछल-कूद मचती है, उत्साह जोश बढता है और सभी लाग अपना आदश दिखाते हुए नय विशिष्टता प्राप्त करने की कोशिश करने लग जाते हैं । तब सार देश म ही नही प्रत्यक राज्य म और गाव गाव म उसी शासन सत्ता का सभ्यता का स्वरूप छाया हुआ रहता है, जब तक कि कोई दूसरा महत्त प्रभाव नही पडता ।

कलकत्ता म प्रथम कट्री क्लब' सन 1885 म स्थापित हुआ और वही 'टालीगज क्लब' । फिर प्रसिद्धता के नाते सडरडे क्लब' सन् 1898 म खुला, जो रोड पर रोड अपना स्थान बदलता रहा । कलकत्ता क्लब सन 1905 मे और कानीपुर क्लब इ० सन 1906 म—दोनों अपन नाम पर उत्पन्न हुए थे । पजाब क्लब भी सन् 1930

1 एक समय अति रूप निधान खेलन का निकले चौगान । (रामचरितमानस)

मे जन्म लेकर राइ वाई रोड चल पड़ा और अंग्रेजी सभ्यता मे सर्वप्रथम रंगा जाने वाला भारतवर्ष का महानगर कलकत्ता तो क्लबो का विशेष वास बन गया। उसमें कलकत्ता साउथ क्लब कलकत्ता रायल गोल्फ क्लब, कलकत्ता रेसिंग क्लब कलकत्ता रॉयल टर्फ क्लब कलकत्ता स्वीमिंग क्लब कलकत्ता फुटबाल क्लब, कलकत्ता क्रिकेट क्लब इत्यादि कलकत्ता नाम के जरिये तैराकी तथा घुड़दौड़ तक के लिए क्लब स्थापित हो गये।

* ई० सन् 1938 मे ब्रिटिश आर्मी अफसरो ने "आर्डिनेंस क्लब" खोला। तब से ई० सन 1946 में 'हिन्दुस्तान क्लब' तथा मारवाड़ियों के अपने "राजस्थान नवयुवक क्लब' और "नोमतल्ला स्पोर्टिंग क्लब की नीव सुदृढ बनी थी। फिर तो स्वतंत्रता के बाद कलकत्ता ही नही सारे देश में क्लबो की काफी भरमार हो चली थी। दिल्ली का कॉन्स्टीट्यूशन क्लब और जोधपुर का राजपूताना यूनिवर्सिटी फिलॉसफिकल क्लब भी खेल खेल द्वारा सामाजिक सेवा स्वागत के लिए प्रस्तुत हो गये।

बीकानेर राज्य की वसुन्धरा खेल विनोद के क्षेत्र मे कभी भी पिछड़ी हुई नहीं रही। यहाँ की धरती पर खेल मनोरंजन को महिमान्वित बनाये रखने वाले अनगिनत विनोदी उपासको का आविर्भाव हुआ है। ऐसे विशिष्ट पुरुष रत्नो के द्वारा प्राचीन काल से अर्वाचीन काल तक बीकानेर मे निरंतर खेल और खेलघर उजागर होते आये हैं। बीकानेर के सब खेलाग्रणी महाराजा गंगासिंहजी को कौन नही जानता ? उन्होने राजधानी में ई० सन् 1912 से पहले ही विक्टोरिया मेमोरियल क्लब' के भवन की स्थापना करवा दी थी।[1] वे स्कूलो में खिलाडियो को खाकी वर्दी दिलवाते और यूरोप जैसा खेल प्रचलन चाहते थे। उन्होने घुड़दौड़ के लिए भी एक क्लब बनाया था। जिसमे दौड़ते हुए प्रतियोगी घोड़े अपने सिर पर सवार को चिपका कर ऊँचे से ऊँचे स्टैंड से कूद जाया करते थे। अब तो सब स्थानों में क्लब कीर्ति स्थापित होने लगी थी।

कानू से दूर दूर के शहरो मे प्रवास पर जाकर आने वाले नौजवान वैद्य श्री किशनलालजी ने अपने ग्राम में नूतन खेल ज्योति जगाने के लिए ई० सन 1930 में फुटबाल लाकर क्लब खोला और स्थानीय लोगों को आश्चर्यान्वित किया। तब श्री परमानन्द सारस्वत के घर की पूर्वी बाड़ से लेकर स्वामीजी वाले कूए के गारण तक खिलाडी साथियों सहित उनके फुटबाल खेल का मैदान बना था। उस काल के हाल जानने हेतु उस समय के अन्य लोग हाथ लगाकर ही अपने को कृतार्थ समझते थे। इसके बाद तो यहाँ नाहटा के प्राइवेट मास्टर भी दड़ा यानि अंग्रेजी बाल ले आये थे और पट्टा स्कूल के अध्यापक भी।[1] ई० सन 1936 से यहाँ वालीबाल का खेल भी आरम्भ हो गया था जो श्रृंखलित प्रगतिरूप आज तक गतिमान है। श्री गिरधारीलाल

---

1 बीकानेर नरेश' पृष्ठ 82 मूल लेखक मेजर के० एस० पनिक्कर बी० ए० (ऑक्सन) बार ऐटला फॉरेन एण्ड पोलिटिकल मिनिस्टर एण्ड वाइस प्रेसिडेण्ट आफ कौंसिल, बीकानेर स्टेट।

2 सन 1929 के पास कस्बा राजलदेसर में साहूकार क्लब नाम की एक संस्था थी। उसमे मुग्दर फिराना आसन बैठक निकालना मसल संचालन, छाती पर वजन उठाना, पैरेललबार चेस्टएक्सपण्डर आदि व्यायाम एवं अनेक प्रकार की एक्सरसाइज तथा नाटक व स्काउटिंग के खेल हुआ करते थे।

चाबूलाल नवर, केशरीचद डूढाणी, जयनारायण पारीक, प० दुर्गादत्त सारस्वत सूरजाराम पुत्र काडाराम पारीक, श्री भीखमचद नाहटा और लेखक इत्यादि खेल जनाग्रणियो द्वारा एक क्लब भी बनाया गया, जिसका कि नाम श्री कालिका क्लब रखा। आगे जाकर वह क्लब कालिका से कालू बन गया था।

सन् 1940 के समय शाला अध्यापको म श्री मगलदास स्वामी (मगल साट), श्री ख्यालीराम मीना और प० नारायणदत्त शास्त्री वालीबाल के प्रसिद्ध खिलाडी थे। तत्समय स्कूलो मे भी फुटबाल वॉलीबाल के खेलो को आवश्यक मानने लगे थे और छात्रो को खिलाने वाले अध्यापको को अलाऊस दिया जाता। (ई० सन् 1947 48 म लेखक ने अपने वेतन के साथ इग्यारह माह तक आठ रुपये माहवार से अलाउन्स भी प्राप्त किया था। किन्तु 18 फरवरी सन 1948 से रा० मिडिल स्कूल नोखा म स्थानातरित होकर जाने के बाद यह अलाऊस श्री चन्द्रकुमार वर्मा अध्यापक को मिला।)

ई० सन् 1950 मे गाव का स्कूल लोअर मिडिल बना और धीरे धीरे खिलाडी अध्यापक आते गये। दो वर्ष मे स्कूल मिडिल हो गया, तब गाव क्लब के लोग और स्कूल स्टाफ के खिलाडी मिलकर साथ खेलने लगे। ये वॉलीबाल का खेल पास देकर बडा सुन्दर गेम खेलते थे। गाव के अन्य लोग इनका उत्साह बढाते और खेल दखने आया करते थे। गाव के नागरिको में स्व० श्री गगाबिशन बागडी, भीखमचद नाहटा भीखमचद सेठिया आदि वालीबाल के अच्छे खिलाडी थे। स्कूल मे स्व० श्री जुगलकिशोर शर्मा और जयनारायण भार्गव वॉलीबाल के खेल में पूरा भाग लिया करते थे। इन्होंने महाजन, लूनकरनसर आदि कस्बो के साथ अच्छे मच खेले थे और ई० सन् 1954-55 के समय अपने विद्यालय द्वारा तहसील टूर्नामेंट भी करवाये थे।

ई० सन् 1954 मनोविनोद खेल एव प्रगति का युग था। बीकानेर म महाराजा करणीसिंहजी ने 'थडर बोल्टस् क्लब" की स्थापना की थी। इनने भारत सरकार में फलाइग क्लब का भी प्रस्ताव रखा था जो नामजूर हो गया। (बीकानेर मे त सेव वर्तमान 'यूनियन क्लब" सामाजिक एव सास्कृतिक कार्यों मे पूर्ण सेवा सलग्न है।)

कालू के कुछ उत्साही नवयुवकों द्वारा गाव के सार्वजनिक सेवा कार्यों के करने हेतु मार्च सन् 1950 मे एक ग्राम सेवासघ नाम की सस्था का स्थापन्न हुआ। इसके पदाधिकारियो ने अच्छे खिलाडियो की अपेक्षा रखते हुए अपने सघ में हिन्द क्लब नाम की एक शाखा सस्था का का उद्घाटन करवाया और क्लब मे इनडोर तथा आऊटडोर दोनो ही खेलो के सामान-साधनो का पूर्ण प्रबध किया था। क्लब की वार्षिक फीस सघ सदस्यो के लिए आठ आने प्रति वर्ष रखी गई थी किन्तु बाहर के लोगो से एक रुपया प्रति वर्ष अदा करने का नियम बनाया गया। यह फीस अपने किशोर सघ के प्रति-निधियों से आठ आना और सदस्यो से चार आना नियमित रूप से ले ली जाया करती थी। मगर चार आने प्रतिमाह के हिसाब से प्रत्येक खिलाडी को खेल फीस पृथक से देने का निश्चित नियम था। क्लब के पाच नियम एव अधिकार बने हुए थे तथा खेल मनोरजन मत्री के लिए आर्थिक एव सास्कृतिक ढग के इग्यारह अधिकार थे। इसके कैप्टन को भी नो (9) अधिकार दिये हुए थे। खेल मनोरजन मत्री सठिया था और क्लब पर सघ का सारा अधिकार प्रबध गतिमान बना रहता था

कालू मे पहल होली क त्यौहार पर सार गाव क जवानो की परस्पर कुश्तियाँ हुआ करती थी। वे सब इस काय को शकुन के रूप मे अवश्य खेला करते थे। मुहूत के अनुसार चारो वासो (गादारान, जाणियान, जाडुवान और भादवान) की अपनी पथक पथक हानियाँ जला करके पहले या पश्चात् वासाऊ (अपने अपने वास के कूआ के पास) कुश्तियाँ खेलते और तयार होकर गाव के बीच में आत थे। तब होली और धुरेडी—दो दिन रात के समय, बीच मैदान गाँवाऊ (गाव की सामूहिक) कुश्ती हुआ करती थी। उसमे विस्तृत गोल घेरा बना कर सभी बठ जाया करते थे और उनमे स कुछ बालक युवक एव वद्ध भी कबड्डी कबड्डी कहकर ताल ठाकते हुए मदान मध्य मब बठे हुए लागा क सामन गोल चक्कर लगाते रहते तथा कभी हाथो और परो से चलकर चक्कर लगाते। इस काय को 'कबड्डी बाचना' कहते थे। इस तरह से वे आन वाले वर्ष का सुभिक्ष बनाने के शकुन मनाया करते थे। कालू मे हर समय इसकी तयारिया होती रहती तथा फाल्गुन क महीना मे तो हर जगह कुश्ती के अखाडे लग जाया करते थे। इन पक्तियो के लेखक को साठ वष पहले तक की गावाऊ कुश्ती व्यवस्था याद है। उसमे पचहत्तर वष का राजूराम बांभू, सत्तर वष का गिरधारी राम ज्याणी पसठ वष का मालूराम सारस्वत आदूराम ओझा नाभू राम भादू आदि लोग कबड्डी बोलते और स्वय कुश्ती भी खेल लिया करत थे। एक वास (मोहल्ले) क जवान से दूसरे वास वाले जवान का कुश्ती लडाने का काय भी इन्ही कतिपय मुखिया लागो द्वारा सम्पन्न करवाया जाता था। गाँवाऊ कुश्ती मे एक वास से दूसरे वास की हार जीत रहती। यदि कोई वास किसी वष हार जाता ता अगले वष काफी तयारी के साथ डटकर इस सामूहिक अखाडे मे आकर जमता।

पचास वष पहल के कुश्तीबाज जवानो मे भराराम नण आसूदास बरागी, खुमाणाराम मेघाराम मारण पन्नाराम बाम्भू मोटाराम जाणी रामरतन भादू रामरतन सारस्वत आदि मुख्य पहलवान थे। कभी कदा बाहर के लोग भी आ जाते अन्यथा बुला लिए जाते थे। (उक्त युवको के साथ लेखक ने भी कुश्ती खेली है।)

उस समय होली क सतरह अट्ठारह दिन बाद गण गौर का पव आता, तब उस टाडे (मैदान) मे ऊँटो की दौड से सब मौहल्लो के लोग हार जात के रूप में अपने-अपने ऊँटा का सजाकर लात और देर तक दौडात हुए हार-जीत किया करते थे। वि स 2006 (ई० सन् *1951*) तक *धीरे धीरे मैदान समाप्त (विक्रय) होने लग गया* और ऊँटो की दौड का भी विसर्जनीकरण का रूप बनन लगा। तब भाई जी श्री गिरधारी लाल झवर ने उत्साह-पूवक उस बचे-खुचे (शेष) टाडे म गणगौर के पव पर ढोल बजाकर रात की बजाय दिन म कुश्ती करवाने की प्रथा प्रस्थापित करवादी। कुश्ती के अपन नियम विधान, विज्ञापन बाजियाँ, प्रथम द्वितीय, तृतीय आदि पुरस्कार और काफी सुरक्षा व्यवस्था के साथ यह काय आरम्भ हुआ था, जो आज तक हर वष पचायत ग्राम और अन्य सस्थाओ के सहयोग द्वारा पर्याप्त इनाम धन्यवाद और व्यय-अपव्यय के साथ सफल करवाया जाता है। कालू अखाडे के कुश्ती नियमो का रजिस्टर लेखक के पास रहता है, जिसमे दिनाक 26 से 27 माच 1966, शुक्रवार

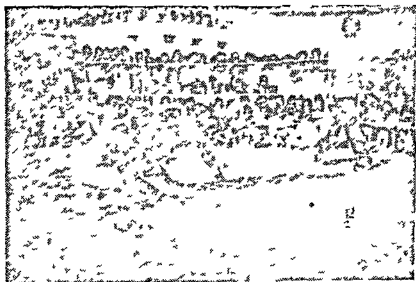
दिनाक 14 से 15 अप्रल सन 1967 और दिनाक 2 अप्रल 1968 (स० 2025) आदि वर्षों के कुश्ती मेला का वणन है।

कालू अखाडे मे कुश्ती के आकषक इनामो के कारण दूर दूर के पहलवान कुश्ती करने को कालू आकर इस आयोजन म सम्मिलित होते हैं और निष्पक्ष पुरस्कार प्राप्त करते हैं। इस आयोजन म गाव और बाहर वालो का भेद भाव बिल्कुल नही रखा जाता। गाँव के प्रतिष्ठित एव अनुभवी लोग निणायक बनाये जाते हैं। दशकों मे पचायत स्टॉफ सहित सरपच स्वय एव अ य सभ्य नागरिक यथा स्थान आकर बैठते हैं। पचायत के कमचारी हर बात का इ तजाम करते हैं और पुलिस कमचारी सपूण सुरक्षा बनाये रखते हैं। तीन दिन तक बराबर प्रात साय यह आयोजन चलता है। रात हो जाने पर प्रकाश का विशेष प्रब ध भी करवाया जाता है। दाव पेच की अच्छी कुश्ती करने वाले का गाँव के लोग पुरस्कार स्वरूप खूब रुपये आदि देते हैं और किसी पहलवान के पक्ष विशेष वाले लोग उसे अपने क धों पर चढाकर मैदान मे बाहर ले जाते हैं। कि तु गाव बीच का टाडा (मदान) वतमान समय मे बिल्कुल स्थापित हो जाने के कारण कुश्ती अखाडा प्राय अस्थाई बन चुका है।

सन 1965 मे सरपच श्री गोपाल च द डूढाणी न इन पक्तियो के लेखक को कुश्ती खेल हेतु नियम बनान को कहा। लेखक न कुश्ती प्रतियोगिता के सम्ब ध मे दस नियम बनाय। सन 1966 तथा 1967 के वर्षों म इ ही नियमो के आधार पर कुश्ती-क्रीडा सम्प न हुई। जिसमे निम्नलिखित महानुभाव समायोजन प्रब धक थे—श्री गिरधारीलाल चवर श्री क हैयालाल डूढाणी गोपाल च द डूढाणी, डूगरराम खाती श्रीराम खडेलवाल भरुदान सक्रेटरी, हजारीराम सारस्वत लालूराम जी गु साई, आसारामजी वरागी नानूराम सस्कर्ता श्रीराम चवर। उक्त वर्षों मे भराराम नाई भीयाराम गोदारा कालू ध नाराम जाट लोडेरा, मोटाराम साँसी माना आदि पहलवानो ने कालू गाव मे अविस्मरणीय कुश्ती लडी थी। वतमान समय म श्री शिवराज सस्कर्ता दाव माहिर कुश्तीबाज है। इसने 15 अगस्त सन 1965 को यूथ क्लब कालू द्वारा आयोजित तहसील स्तरीय खेल कूद प्रतियोगिता म 60 किलो वजन तक की चुनौती पूण कुश्ती लडी थी। जिसम शेखसर के अध्यापक श्री भवरलाल पहलवान को काटे की टक्कर म पराजित करके कालू गाँव म आयोजित कुश्ती प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार जीता था।

गणगौर पव वि स 2038 (ई सन 1981) पर बडे व्यापक ढग से कुश्तिया सचालित हुई। इस बार गाँव के बीच बाजार म सु यवस्थित अखाडा ढोलों की जोशीली तानें सिपाइयो की तनाती, स्वय सब इ स्पेक्टर पुलिस की उपस्थिति और दशकों क लिए एक करीने मे कुर्सिया, पाटे तथा विशेष बेंचे लगाई गई थी। इस प्रतियोगिता म दूर दूर के पहलवान सम्मिलित हुए और आस पास के गाँवों से दशक भी उमड आये थे। मदान म बडी भीड भाड हुई। पहलवानो की कुश्तियों के फोटो लिये गये। श्री रामच द्र राठी और शिवराज सस्कर्ता अखाडे क मध्यस्थ बन तथा उ होंने अच्छे पहलवान भिडाय थे। इस वष अखाडे का विजेता श्री प्रभुदयाल खेल मास्टर गाँव

सुभलाई रहा जिसे ग्राम पचायत कालू द्वारा 101 रुपये का प्रथम पुरस्कार दिया गया तथा उसको नागरिकों द्वारा भी विभिन्न पुरस्कार दिए गये। श्री धन्नासिंह गगानगर को 151 रुपय का पचायत कालू द्वारा विशेष पुरस्कार दिया गया। क्योंकि अखाड़े मे उसके साथ कुश्ती खेलने का कोई भी पहलवान दुबारा तयार नही हुआ। द्वितीय आने वाले श्री लाधूराम रायसिंह नगर तथा कालूराम सहजरासर का 51 रुपये के दो पुरस्कार दिये गये। तृतीय आने वाले श्री तुलछाराम कालवास तथा मीरे राम हरियाणा को 25 रुपयो के दो पुरस्कार दिये गये। अन्य कुश्तीकारो मे श्री मनीराम रायसिंह नगर, सोहनलाल गोदारा मनकीसर अर्जुनराम नाई नत्थूढाढी रालू लक्ष्मीनारायण गारबदेशर, सुगनाराम भाभू काशीराम पाडाण चेतनराम नाई ओमप्रकाश खडेलवाल कालू बलदेव राजगढ आदि को सांत्वना पुरस्कार स्वरूप इक्कीस रुपये पन्द्रह रुपये ग्यारह रुपये तथा सात सात के अनेक पुरस्कार वितरित किये गये। बाहर से आए हुए सभी पहलवानो को पुरस्कार प्रदान कर सन्तोषजनक स्थिति मे सम्मान विदा किया।



पहलवान— मास्टर प्रभूदयाल धन्नाराम सिंह। मध्यस्थ—शिवराज सस्कर्ता

तहसील लूनकरनसर के गाँव लियेरा मे हर वर्ष श्री रामदेव जी महाराज के मेले पर पहलवानो की कुश्ती का अच्छा अखाड़ा लगता है। दिनाक 15-3 81 को लूनकरनसर मे श्री बजरग भवन के सामने मदान मे कुश्ती आयोजन रखा गया, जिसमे लियेरा मेले के अखाड़े के जीते हुए सभी पहलवान आकर इसमे भी सम्मिलित हुए। इनके अतिरिक्त बीकानेर सगरिया राय सिंह नगर और ततारसर आदि स्थानो से भी अनेक पहलवान आये थे। इनके लिए आयोजको की ओर से महीने भर पहले ही विज्ञप्तियाँ निकली थी। यह कुश्ती आयोजन भी कालू के अनुकरण पर सुनियोजित ढग से सम्पन्न हुआ था।



पहलवान—कालू राम अर्जुन राम

गत वर्ष की भांति वि स 2039 (ई० सन् 1982) के गणगौर पर्व पर भी बडे शानदार ढंग से कुश्तियां आयोजित हुईं। अखाडे का आयोजन गांव के बाजार में ही हुआ तथा अन्य व्यवस्थाएँ भी बहुत सुन्दर रहीं। इस वर्ष के कुश्ती पर्व पर बाहर के पहलवानों ने बहुत और खूब प्रदर्शनात्मक कुश्तियां लडीं। दर्शकों की भीड तो आश्चर्य-जनक रही। अखाडे की मध्यस्थता पिछले वर्ष की तरह श्री रामचन्द्र राठी और शिवराज सक्सेना ने की और कुश्तियां का शांतिपूर्वक सचालन किया। इस वर्ष अखाडे का विजेता श्री श्रवणसिंह पुत्र श्री दिलीपसिंह गगानगर रहा, जिसे ग्राम पचायत कालू द्वारा 101 रुपये का प्रथम पुरस्कार दिया गया। द्वितीय पुरस्कार 51 रुपया का तथा तृतीय पुरस्कार 31 रुपया का प्रदान किया गया। गाँव के पहलवानों तथा बाहर से आये हुए सभी पहलवानों को सात्वना पुरस्कार स्वरूप इक्यावन रुपए इक्तीस रुपये, इक्कीस रुपये तथा ग्यारह रुपयों के कई पुरस्कार वितरित किये गए। ग्राम पचायत कालू की ओर से कुल 968 रुपयों की पुरस्कार राशि दी गई तथा गाँव के लोगों ने सभी पहलवानों को सहर्ष सैकडो रुपये प्रदान किए। कुश्ती प्रतियोगिता में सम्मिलित सभी पहलवानों को ग्राम के नूतन सरपच श्री इन्द्र चन्द राठी ने पुरस्कार प्रदान कर ससम्मान विदा किया।

गणगौर कुश्ती प्रतियोगिता सं० 2040 चैत सुदी 3, दिनांक 17 4 83 को आयोजित हुई। यह कुश्ती अपनी पिछली शृंखला में सब श्रेष्ठ रही। बाहर के प्रसिद्ध पहलवानों ने इसमें भाग लिया।

कुश्ती न० 1

(1) श्री दर्शन सिंह मक्कासर
(2) श्री पुरखा राम बणाला
(1) श्री प्रकटसिंह श्री गगानगर
(2) श्री प्रभुदयाल मास्टर, बनबाई

कुश्ती न० 2

(1) श्री डूगर राम नायक, 68 N T, रायसिंह नगर
(2) श्री कासम अली, राजूवाला
(1) श्री डगर राम नायक, 68 N T, रायसिंह नगर
(2) श्री बलबीर सिंह, लूनकरनसर

कुश्ती न० 3

(1) श्री किस्ताराम, नवा (हनुमान गढ)
(2) श्री लाधूराम, 68 N P रायसिंह नगर
(1) श्री धरमदास, गारबदेशर
(2) श्री राम प्रसाद रावासर
(1) अर्जुन राम नाई, कालू
(2) राजा नवा (हनुमान गढ)

कुश्ती न० 4

(1) श्री हनुमान मल सेवग कालू
(2) श्री चेतनराम नाई कालू
(1) श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल, कालू
(2) श्री सत्तार खाँ, गारबदेशर

प्रथम कुश्ती के विजेता को 201/ द्वितीय के विजेता का 101/ व तृतीय तथा चतुर्थ के विजेता को 51/ रुपयो के पुरस्कार दिये गये। शेष सभी लडने वाले पहलवानो को 31/ व 51/ रुपया के सा त्वना पुरस्कार प्रदान किय गए। प्रतियोगिता का आयोजन सरपच की दख रेख में हुआ। पचायत की ओर स कुल 637/ रुपय पुरस्कार स्वरूप दिये गय। गाँव के नागरिकों न भी खिलाडियो का उत्साह वधन किया और कुश्ती स प्रफुल्लित होकर काफी पुरस्कार दिये। प्रथम वरीयता श्री प्रगट सिंह (गगाराम) का मिली।[1]

पत्रकार, सवादक और पत्र-पत्रिकाएँ

खीचा न कमानो का न तलवार सभालो।
जब तोप मुकाबिल हो तो, अखबार निकालो॥

युगानुसार समाज का बनाना बिगाडना या बदल जाना किसी सामा तक समाचार पत्रों क ही अधीन होता है। किन्तु कालू जस कस्ब म ऐस प्रधान लक्षीय "समाचार देने वाल दनिक पत्र' प्रकाशित किये जाएँ—ऐसी स्थिति के साधन कभी सुलभ नहीं हो पाय। मासिक अर्धमासिक तथा वार्षिक और हस्तलिखित पत्र पत्रिकाओ की यहाँ युगानुसार भरमार रही है। विचारपूर्ण लेखा तथा गभीर साहित्य से परिपूर्ण स्थिर सामग्री जनता तक पहुँचाने का यथाशक्य काय कालू की पत्र पत्रिकाओ द्वारा समय समय पर अवश्य सुलभ हुआ ह। इसलिए कालू के नागरिक कूपमण्डूक की पदवी

---

1 यहाँ हर साल कुश्ती प्रतियोगिता सम्पन्न करवाई जाती है, पर लखक न सक्षिप्त तौर से खास खास वर्षों का ही विवरण लिखा है।

सीमा स बिल्कुल वचित है। यह लिखना भी अनुचित नही है कि कालू की पत्रकारिता भारतीय साहित्य सस्कृति से सलग्न है। कालू के चाहे हस्तलिखित पत्र पत्रिकाए ही हो अपने क्षेत्रीय साहित्य जगत मे प्रकाशमान रहे हैं। किन्तु यहा राजनतिक समाचारो से सम्बधित पत्रकारिता अभी पनपी नहीं है।

लगभग साठ पसठ वष पहले यहा के कुछ लोगो मे पत्र निकालन का शौक उत्पन्न हो गया था और पन्द्रह वष बाद वहा के कतिपय शिक्षित जन अन्य पत्रो म सवाद भेजने लगे थे। परन्तु यहाँ से प्रकाशित होन वाली सामग्री पहले की लिखी हुई उपलब्ध है। उक्त समय प० श्री दुर्गादत्त सारस्वत और नानूराम सस्कर्ता आदि अजमेर से निकलने वाले पत्र व मीरा काशी की सारदा कलकत्ता के जनमत और अलवर के 'राजस्थान क्षितिज एव माधुरी' सरस्वती आदि पत्र पत्रिकाओ को साहित्यिक सामग्री भेजा करते थे। यहा के राजनतिक सज्जन भी जोधपुर क प्रजा सेवक' अजमेर के 'नवज्योति व राजस्थान (बाद म रियासती) आगरा के सनिक' एव कानपुर के 'प्रताप' मे यथा समय अपनी रियासत के मुख्य समाचार भेजा करत थ जिनम स्वामी गोपाल दास जी (माट) एव बालूराम जी सस्कर्ता मुख्य थे।

स्थानीय प्राचीन प्रकाशन

1 'भगवती" (वि० स० 1981 से 1985 तक) ईश्वर धम और अध्यात्म जसे, गभीर विषयो की वार्षिक पत्रिका।
2 'कळायण' द्व मासिक—साहित्यिक पत्रिका।
3 शिशु सेवक' (बाल साहित्यिक) वार्षिक पत्र।
4 विकास' साहित्यिक मासिक पत्र।
5 'रा उ मा वि कालू का वार्षिक मुख्य पत्र' ववििध।
(ई० स० 1956 57)
6 'इ सन् 1960 से 62 तक रा उ मा वि कालू के विद्यार्थियो एव अध्यापको ने 'विकास , नव ज्योति", जागृति" आदि विभिन्न नामो स अनक हस्तलिखित पत्र पत्रिकाएँ निकाली, जिनकी प्रतिया सुरक्षित हैं।
7 प्रेरणा' शक्षणिक प्रवत्तियो के रूप मे वार्षिक पत्रिका। (ई स 1963 से 1970 तक)।

समाचार पत्र' अन्धकार मे प्रकाश का काम करत हैं। कालू म प्रथम पत्रिका वि स 1980 से 1985 के मध्य सब समय मे प० श्री गणेशराम जी सारस्वत, प० चेतराम जी, गोघूराम जी वद्य किशनलाल जी यति, श्री अमरनाथ जी गिरदावर आदि सज्जनो न वार्षिक पत्रिका 'भगवती" निकाली थी, जिसके कुछ पन्ने लखक के पुस्तकालय म प्राप्य हैं। बदलते युग में वि स 1997 से 'कळायण' हिन्दी राजस्थानी साहित्य की एक महान सुदर पत्रिका प० दुर्गादत्त जी सारस्वत, श्री भरूदान जी आढा (प्र अ) नानूराम सस्कर्ता (स अ) और गाव के अन्य शिक्षित नवयुवको के उत्साह से निकाली गई थी। इसके सम्पादक श्री दुर्गादत्त जी तथा भरूदान जी आढा रहे। लिपिकार श्री सस्कर्ता श्री मगलदास स्वामी श्री जयनारायण पारीक श्रीकृष्ण लखोटिया विद्यार्थी (महाजन) रहे। इस पत्रिका की प्रतियाँ श्री गुण प्रकाश सज्जनालय" बीकानर

हस्तलिखित पत्रिका "कल्याण" (वि० सं० 1997)



बालोपयोगी पत्र "शिशु सेवक"

श्री हनुमान पुस्तकालय रतनगढ और 'महावीर सुरुचि वर्द्धक पुस्तकालय लूनकरनसर आदि स्थानों को बाहर भी भेजी जाती थी। इसमें लेख कविता, कहानी सुभाषित लतीफे, चुटकले कणिका एकांकी और अन्य युगीन साहित्य तथा समाचार देने वाले सुन्दर शीर्षक सभाग होते थे। संवाद दाता एवं लेखक प० श्री रामदत्तजी त्रिवेदी साहित्य (स अ), श्री सूर्यप्रकाश शास्त्री (स अ) श्री नूणदान बारहठ अध्यापक देशनोक सुगनमल लोढा भरूदान जाढा वैद्य कांतिचन्द्र शास्त्री श्री सारस्वत श्री मोहन लाल सारस्वा, श्री नानूराम संस्कर्ता, मगलदास स्वामी श्री शंभूदयाल जी सक्सेना साहित्य-रत्न, बीकानेर आदि महानुभाव थे। यह वि स 2001 (सन 1945) तक निकलती रही। इन लोगों के लेख भी मोग आदि पत्रिकाओं में प्रसिद्ध होते रहे तथा क्षेत्र के अन्य लोग भी रुचि लेने लगे।[1] जतपुर के श्री रामचन्द्र बिहानी ने "माहेश्वरी सेवक" नाम का जातीय पत्र निकाला, जो अब तक सेवारत है। साहित्यिक पत्रकारिता का कार्य भावुक व्यक्तियों द्वारा चालू किया जाता है। ई सन् 1948 फरवरी में सम्पादक श्री रामेश्वर प्रसाद शर्मा (जो प० क्षेमचंदजी गिरदावर के रिश्तेदार थे) ने कालू में शिशु सेवक" नाम से एक लघु पृष्ठीय बहुत सुन्दर पत्र निकाला था।

पत्र निकालने का उत्साह प्राय शिक्षित नवयुवक भी रखते हैं। सन 1953 में ग्राम सेवा संघ कालू से 'विकास" नाम का एक पत्र निकाला गया था।

विकास के सम्पादक हनुमानमल गोपालचंद डूढाणी नानूराम संस्कर्ता आदि रहे। इसमें लेखादि प० श्री दुर्गादत्त जी जमनारायणजी (प्र अ) जुगलकिशोरजी (स अ) राम प्रसाद जी मुर्दरिया (स अ) रामचंद्रजी सोलंकी (स अ) जेठमल राठी, श्री चन्दनमल बल्देवा (श्री डूंगरगढ) आदि देते थे। यह मासिक पत्र बराबर पांच साल निकलता रहा।

विद्यालयों में सचित साहित्य निधि का सदुपयोग करने हेतु उच्च कक्षाओं के विद्यार्थी भी शाला पत्रिकाएं निकालते हैं। रा उ मा वि कालू का वार्षिक मुख्य पत्र अप्रैल 1957 में निकाला गया। वह बी पी रस्तोगी द्वारा नवजीवन प्रिंटिंग प्रेस मेरठ में छापा। इसके सम्पादक तथा निदेशक श्री मदन सिंह बघेला एम ए बी टी (प्र अ) रहे। सम्पादक मण्डल श्री रामकुमार पाण्डे एम ए सी टी व ल हिन्दी और धनीलाल कक्षा 9 नन्दलाल शर्मा कक्षा 8 शंकरलाल राठी कक्षा 8, मोहनलाल नाहटा कक्षा 8 साधूराम नाहटा कक्षा 6 आदि सज्जनो से बना था। इनके सिवाय उसमे लेखक और कवि श्री नानूराम संस्कर्ता, हनुमान प्रसाद राठी कक्षा 9 मोहन लाल जैन किशन चन्द नाहटा कक्षा 5 संतोष चन्द पुगलिया अविनाश कक्षा 8 उर्मिला कुमारी बघेला (मुन्नी) कक्षा 8 हनुमान प्रसाद सोनार कक्षा 8, कन्हैयालाल सिंधी गजेन्द्र प्रताप सिंह चौहान कन्हैयालाल झवर अतिभ्राता' कक्षा 8, बाबूलाल बैद कक्षा 6 भरूदान लोढा

---

1 इस समय गाव महाजन के श्री लालचंद झवर कानपुर से "व्यापार समाचार" निकालते। उसमें भाव उतार चढाव के समाचार रहते और श्री झवर के व्यापार तथा आढत को बढ़ावा मिलता। दीपावली आदि पर्व पर प्रेस से प्रिंट करवाते, नहीं तो अपने व्यापारियों को साइक्लोस्टाइल बुलेटिन भेजते थे। (श्री शिवनारायण शर्मा बी कॉम द्वारा)

कक्षा 6 आकार मल राठी कक्षा 5 भवरलाल राठी (जेतपुर), गावरधन लाल सुनार कक्षा 6, भीखमचन्द कोठारी कक्षा 8, रेवतमल गोलछा कक्षा 8, जवरीलाल भादानी कक्षा 6 आदि थे। इसके सग्रहकर्ता डालचन्द, दुर्गाराम कक्षा 9, श्री प्रेम मनोहर सक्सेना अध्यापक बी ए बन्शीलाल, जुगल किशोर आदि कक्षा 9 बने थे।

6 ई० सन् 1963 म विद्यालय की मुख्य पत्रिका 'प्रेरणा" सूर्य प्रेस रतनगढ़ से मुद्रित करवाई गई। इसके सरक्षक प्र अ श्री भद्दान चारण एम ए एम एड बने। प्रधान सम्पादक श्री मोतीसिंह राठौड एम ए बी एड अग्रेजी विभाग के श्री सदीप एम ए बी एड, हिन्दी के श्री बनवारीलाल एम ए सा रत्न और राजस्थानी क श्री नानूराम सस्कर्ता सम्पादक बने तथा सहयोगी छात्रो म श्री पूनमचन्द गीया कक्षा 11, श्री धम चन्द बोथरा कक्षा 9, श्री लाभूराम आय कक्षा 8 आदि निर्वाचित होकर सम्पादक मडल म कायकारी बने। लेख कविता और कहानी लिखने वालों म श्री बाबूलाल सेठिया, किरण चन्द नाहटा, सोहनलाल बोरड, इन्द्र चन्द नाहटा, बशीलाल कानन, जठमल डूगाणी 'रवि (विशारद) आकारमल राठी, राजेन्द्र कुमार नागर, कुमारी सम्पत नाहटा जुगराज सस्कर्ता, केशरी च द धाडेवा जवरीलाल भादानी नवीन द्वारका प्रसाद सोनी (स अ) गणेशमल बिरमेचा श्री गाविन्द पुरोहित एम ए (अध्यापक) सुश्री गायत्री कुमारी राठी, धमचन्द साड रामकुमार पारीक लक्ष्मणदत्त देवीदत्त जांगिड (रा सा विशारद) शकरलाल करनाणी, प्रतापसिंह चौहान (एल डी सी) रामेश्वर लाल राठी बाबूलाल सिंघी, मालचन्द शर्मा लूनकरन साड, ईशरराम चौधरी अवतार सिंह रखावा (स अ) पृथ्वी सिंह शेखावत, बन्शीलाल शर्मा, रामकिशन झवर, मोहन लाल नागर एम ए बी एड (व अ), किशनलाल तातेड, कन्हैयालाल नाहटा नरेन्द्र विडवालकर एम ए बी एड (व अ) आदि ने सामग्री लिखकर दी।

दूसरी बार ई सन् 1968 की" प्रेरणा" पत्रिका बडा सजधज से निकाली गई। इसके सरक्षक श्री गोविन्द लाल व्यास एम ए बी एड (प्र अ) और सम्पादक श्री सोहनलाल बोथरा 11, भागीरथ वर्मा 10 विजयचन्द भसाली 10 तथा परामशदाता श्री बनवारी लाल शर्मा हिन्दी अध्यापक व श्री नानूराम सस्कर्ता साहित्य महापाध्याय हुए। लिखने वाला म श्री तीथराज सस्कर्ता, रामकुमार शर्मा, झूमरमल नाहटा, रमेशचन्द्र जोशी, नेमचन्द नाहटा भवरलाल तँवर (स अ), शिवराज सस्कर्ता मागीलाल खडेलवाल, सीताराम शर्मा श्याम सुदर शर्मा आसकरण गिया जयकिशन चौधरी, ओमप्रकाश शर्मा, माणकचन्द बोथरा जुगलकिशोर राठी अमोलकचन्द गोलछा, विजयलाल बोथरा, विमल कुमार बागडी, ओमप्रकाश, कु विजय लक्ष्मी सोनी, जुगराज सस्कर्ता, ओमप्रकाश झवर, ओमप्रकाश शर्मा, शकर लाल शर्मा, रामलाल सारस्वा शर्मा, रामेश्वरलाल कायल, डालूराम चौधरी, ज्ञानचन्द बोथरा, राजपाल सिंह शिवराज सस्कर्ता, भवरलाल राठी, रतनलाल शर्मा झूमरमल साड रामनारायण चौधरी (व अ) बशीलाल जन आदि सज्जनो का पूण सहयोग रहा इस अक मे छात्रों ने दो दो तक सकलन दिय हैं। यह प्रेरणा (अक) अतुल प्रिंटिंग प्रेस चूरू स मुद्रित करवाई गई थी।

ई स 1969 म लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस बीकानेर द्वारा प्रिंट हान वाली प्रेरणा का अक

भी मुझे मिला है। इस अक के सरक्षक श्री गोविन्दलाल व्यास (प्र अ) हैं और सम्पादक मडल मे श्री माघोराम चौधरी (व अ हिन्दी) श्री सोहनलाल बोथरा ।।, मोहन लाल जाखड ।। (प्र म) श्री अनारराम आय (सा मन्त्री) कायरत रहे इसके तृतीय अक के सम्पादक भी श्री गोवि दलाल जी रहे।

अन्य लेखक कवि तथा साहित्यिक सामग्री देने वाला म विद्यार्थी धमचन्द नाहटा आजाद" बाबूलाल सेठिया हेतराम चौधरी बीरबलराम चौधरी बीरबल सिह बिसनाराम डोगीवाल आसकरण गिया, दीपाराम चौधरी, लूणकरण जन, सोहनलाल चौधरी हरिराम धनरवाल शकरलाल शर्मा, गौरीशकर चवर उमाराम सियाग, हरिराम गोदारा किरणचन्द भवरलाल पारीक दूलाराम डेलू लाधूराम, उमराव सिह (स अ) आदि सज्जन रहे।

इस तरह से पत्र पत्रिकाओं का स्वच्छ एव जाग्रत प्रकाशन यहाँ प्राय 60 वर्षों से होता आया ह। प्रगतिशील युवक इस परम्परा को बनाये रखेंगे यही अभिशिप्ति है।[1]



1 वतमान म लूनकरणसर से आंधी पायल एव अलविदा पत्रिकाएँ निकली हैं तथा मोहन मित्र मनोपी न रेगिस्तान टेलिग्राफ नाम से एक राजनतिक पत्र निकाला है।

षष्ठम प्रकरण

कुछ मजे तपे पावन पृष्ठ

काल मे स्वरोदय सप—प्रत्येक व्यक्ति एक ही स्वर से सांस लेता व छोडता है, जिसका क्रम घण्ट घण्टे पर बदलता रहता है। दाहिने स्वर को सूर्य और बांये स्वर को चन्द्र स्वर कहते हैं। जब दोनों स्वर एक साथ चलें तो इसे सुषुम्ना स्वर कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रथम तीन तिथिया को दाहिना स्वर सूर्योदय के समय रहना चाहिए और शुक्ल पक्ष की प्रथम तीन तिथियो को बांया स्वर सूर्योदय के समय होना चाहिए। तीन तीन तिथियो मे एक एक स्वर बदलने का प्रमाण है। जसे कृष्ण पक्ष मे एकम से तीज तक सूर्योदय के समय दाहिना स्वर रहेगा तो चौथ से छठ तक सूर्योदय के समय बांया स्वर रहेगा। फिर सातें से नवमी तक दाहिना स्वर फिर दशमीं से बारस तक बांया स्वर, यही क्रम बराबर चलता है। इसमे उदय तिथि मानी जाती है। तिथि घटने पर दो दिन मे और बढन पर चार दिन म बदलता है। स्वर की गडबडी रहना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद नही होता है।

बाई करवट साइये, जल बांए स्वर पीव।
दाहिने स्वर भाजन करें, तो सुख पाव जीव।

स्वर साधन म स्वर विज्ञान का, प्राण विज्ञान के साथ अभिन्न सम्बन्ध है। इस विज्ञान का ज्ञाता स्वर, योग, कुण्डलिनी ईडा, पिंगला, सुषम्ना आदि को निकाल कर रहस्य बताने म स्वानुभव से समथ हो सकता है। वह बात का धनी, सदाचारी, धीर-गम्भीर और वीर होता है। यदि कोई भी मनुष्य विज्ञान का विचार रखकर उचित मात्रा मे स्वर विज्ञान तथा साथ म प्राण विज्ञान इन दोनो का अध्ययन मनन एव अनुसरण करे तो गृहस्थ धम मे रहकर भी सासारिक कष्टा के आघातो को हँसी खुशी के साथ सहन करता हुआ दीर्घायु हो सकता है। यह विज्ञान शिवजी ने पावती जी की जिज्ञासा पर वर्णित किया था कि 'यह ब्रह्माण्ड तत्व से उत्पन्न होता है, उसी से पालित है और बाद मे उसी मे लीन हो जाता है। निर्लेप निराकार सच्चिदानन्द भगवान से आकाश आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी ये पाँच तत्व पदा हुए। इनके विस्तार से यह चराचर ब्रह्माण्डोत्पत्ति हुई। इ ही स शरीर बना है। इस ज्ञान की भारी महिमा है। यह सब तत्वो का शिरामणि ज्ञान है। सत्य का निश्चय कराने वाला नास्तिको को आस्तिक बनाने वाला तथा योगीजनो का आधार ज्ञान है। इसके ज्ञान से प्राणी सवज्ञाता बन जाता है। इसी म वेद शास्त्र और रहस्यमय ज्ञान छिपा है। जिसस मनुष्य इस ससार मे सुखी रहकर परलोक म भी सुखी स्थान पा सकता है। इसक बल से शत्रु नाश लक्ष्मी प्राप्ति देव सिद्धि, इच्छित वस्तु और ठीक समय पर मल मूत्र विसर्जनादि होना है। इसके बिना मिथ्या भ्रम और अज्ञान मोह रहता है।

पक्ष लगत प्रातहि उठे, स्वर का कर विचार।
उचित माग पर जो चले, अमृत सुख का सार॥

कालू म बाबा भानीनाथ जी की प्राचीन जगह होने से यहाँ योग नान की सतत टिमटिमाती ज्योति ज्वलित रही है। वतमान मे भी यहाँ पर श्री सेवानाथ नाम के एक योग विद्या के जानकार सन्त थे। उसी आत्मज्ञान की प्रक्रिया के ससग से प्रचलित आजकल श्री बालदास (बडा), किसनदास, लिछमणाराम कानाराम, रुघाराम और हनुमानमल आदि साधक, तत्व ज्ञान मे साधनारत है। य स्वर नान के द्वारा दनिक साप्ताहिक, मासिक और वार्षिक फल की जाँच करने म लगे रहते हैं। तिथियो क क्षय और वृद्धि का निणय अपन स्वर विज्ञान की सहायता से करते हैं। यह एक पहुँच की बात है।

इनके नान मुताबिक शौच स्नान, भाजन मत्र आराधना पत्र लिखना, विद्या अध्ययन, पूव और उत्तर दिशा की यात्रा, सवारी खरीदना दवाई खाना आदि काय दाहिन स्वर मे करना चाहिए और स्थिर काय—विवाह, गुरुमन्त्र यागाभ्यास, खेती, औषधि बनाना, बाग तडाग बनवाना प्रीति दक्षिण और पश्चिम दिशा की यात्रादि के काय बाँय स्वर म करने से दिनमान अच्छा रहता है। किन्तु यहाँ लागो को इनकी बातें अच्छी नही लगती। जमाना विलक्षण है और नेतावादी भी, सत्य नही, शिष्य चाहिए। (साम्प्रदायिकता भी बड़ी भारी है, वह दूसरे का बडापन हर्गिज देखने मे क्रूर है।)

सप्त का दिशा शूल विचार—

साम शनिश्चर पूव वासा
मगल बुध उत्तर निवासा
गुरुवार दक्षिण मे राजे
रवि शुक्र पश्चिम विराजे
सम्मुख दाहिने अशुभ जानो
पीछे बाँये शुभ पहिचानो (सस्कर्ता)

गाँव चौधरी एवं नेता—चौधरी गाव का मुखिया उसका पद उच्च उत्तरदायित्वपूण होता है। गाँव अपनी भलाई के लिए चौधरी की ओर हर समय आशा लगाये रखता है। पहले क समय चौधरी के सिर प्रधानता का सेहरा माना जाता था। मानवता में ही पूणता निहित होनी है—हमारे गाँव मे ऐसे अनक मुखिए एव पुरान चौधरियों के नाम आते हैं। उन्ही की बुद्धिबल पर कालू का निवास नित्योन्नत रहता आया है। मेखा गादारा टीकू का भोपत नदाराम, गोधूराम ज्याणी, जीवण एव द्वय कालू, हरखा गोदारा लाभू भादू गिरधारी ज्याणी आदि प्राकृतिक एव राज्य के चुनिन्दा चौधरी थे। श्री भरु दान कोठारी, बीझराज नाहटा, दीपचन्द डूढाणी, मूलचन्द बद, सुगन चन्द बारड मीखम चन्द बोथरा, किसनलाल यति, मूलाराम पारीक जसे अन्य लाग भी जब तक रहे मानो गाँव के मोड व ध मुखिये बने रहे। ये सताधारी की तरह हुकूमत लिए आपसी प्रेम के साथ गाँव सुधार के कार्य कर्त्ता कहलाते। पर जमाना बदला, जगत बदला फूट और फरेब के धन्धे बढे। देश मे कृत्रिम चौधरी अपना नाम बदल कर नेता कहलाने लगे। बुरे काम करना अपने आप सीख गये और भले काय एव अच्छे गुणों म घटकर चलन लगे। इन चौधरियो मे चारी चुगली और

चाटुकारिता जसे पाँच वसारी शब्दा की वद्धि हो गई। बेकार मस्ती के राग स ग्रसित होकर न-य युग के चौधरी लोग चाटे की चाट म दिन गुजारने लगे। नीयत बिगड गई आदत सडियल हो गई। वि० स० 1996 (ई० स० 1940) के बाद पुरान चौधरियों की स्थिति गिरन लगी और माँ क पेट मे ही कोरे आने वाले अनुभव हीन नता चौधरिया का स्थान छीनने लग। आजादी मागने की अनुकरणीय लहर मे एक दो चार मच पर खुलकर गालियाँ बोल लिए और नता बन गए। थान की लाली जमीन की तूम्बापलटी तथा खेत अलोट करवान का अगवाना म य लोग नाम करने लगे। किन्तु गाव वालू में सदा से शिक्षा प्रेम रहना आया है। अत यहा के बहुत से नेता लाग बडे कायकर्ता विकासशील नर एव अनोखे उद्यमी हुए हैं। अतएव श्री गिरधारीलाल झवर, रूपचन्द नाहटा, गगाविशन बागडी, हुकमचन्द बाथरा कन्हैयालाल डूढाणी आदि लोग भी केवल राजनतिक नही गाँव के रचनात्मक कायकर्ता नता थे। उनकी नतिकता के भाव उदात्त ही नही अपितु मनुष्य मात्र के एकीकरण और समाज व्यवस्था हित थे।

वतमान समय म विकास के कामो मे कई प्रकार के लोग नेता नाम से ग्राम काम करते दृष्टिगोचर होते हैं। इनम ग्राम सरपच श्री गोपाल चन्द जवरीमल नाहटा श्री हजारी राम राम प्रसाद रामचन्द्र इन्द्रचन्द गाठी श्री जीवनदास डगरराम मिस्त्री बाबूलाल भोजक, बरागी मोहनदास आदि ग्राम कायकर्ता है। कतिपय ग्राम पचायत काय लग्न शील पुरुष और महिलाएँ श्री ग्राम पच तत्पर कायकारी हैं। अन्य कुछ सफेद पोश कलुष नीति से पद प्राप्ति का ग्राउण्ड बनाने के लिए फिजूल फिसाद फलाते रहत हैं। अनतिकता का मूल कारण मनुष्य की स्वाथवत्ति होती है और उसम राक्षसी वत्ति उदित हो जाती है। तब वह अपने स्थान को भी कष्ट केन्द्र बना देता है। सामाजिक जीवन विपला बनता है तब गाँव म कट बढ (लडाई भिडाई) अधिक बढती है। कालू द्वारिका स्वरूप प्रसिद्ध कस्बा है। द्वारिका के छप्पन करोड यादवो की भाँति अब यहाँ क कुछ लोग भी लडाइ म अपना नाम अमर करना चाहते दिखाई देत है। अब गाव मे गन्दी राजनीति और विघ्न धम बढ रहा है। त्याग की नही, तस्करी तूती बोलती है।

किसको दोष दें ऐसा ही समय आ गया है। चुनाव के बाबत जिस प्रकार के नेता चरित्र बने बिगडे और उनकी लीला हुई हैं, वे सब गभीर चिन्ता के विषय हैं। ऐसा लगता है पचायती का अथ गाव और क्षेत्र म सुख सुविधाएँ बनाए रखना नही, अपने पच पद हेतु सत्ता प्रभुता जमाए रखना है। पच का मतलब उस नीति निपुण व्यक्ति स नही रहा जो हर बात म हर समय गाँव और निवासियो की प्रगति विकास विस्तार तथा समृद्धि को सर्वोपरि माने। किन्तु उस विदूषक चालाक व्यक्तित्व से है जो गाँव के विनाश और सुख को अवनति के गड्ढे मे गिराकर भी अपन पद को आदश मानता रहे। का अथ गाँव को उन्नति की दिशा म अग्रसर करने वाला नही रहा पर अपनी पार्टी के लोगों की स्वार्थी व निजू इच्छा को गाँव के कामा म जबरदस्ती मा यता दिलवा देन का साहस हो गया है। सिद्धान्त हीण जन प्रमुख है। चरित्रवान मन गौण गिना जाता है। इसलिए एक सरपच म नागरिक चरित्र याय सिद्धान्त और नेतृत्व क्षमता के गुणों की

आवश्यकता होते हुए भी नही रही, कुशल तिक्कडम बाज आदमी होन लग हैं जो अपने दल के लिए गाव के साथ भी अन्याय कर सकता हो तथा अपन पद के लिए अपनी पार्टी के साथ भी विश्वासघात करन का जिसमे माद्दा हो।

एक पच या नेता दूसरे से अधिक आदरणीय माना जाता है तो वह अपन सेवा स्वभाव के कारण ! धन तो भ्रष्टाचार से ही कमाया जा सकता है पर चरित्र तो मन की उज्ज्वलता से ही बनता है। आदमी का सम्मान उसके पद, द्रव्य अथवा विलक्षण सूझ-बूझ के कारण हो जाया करता है, परन्तु हार्दिकता से नही, ऊपरी ढग से होता है। वह पीढियों तक नही रहता। यदि थाडे समय के लिए स्थायी भी बना रह तो वह सम्मान, भय तथा लाभ के बावन होता है। ईर्ष्या एव बाह्य स्वार्थो की ओर मन विशेष लगाये रखने से मनुष्य की अन्तरात्मा का विकास बिल्कुल अवरुद्ध हो जाता है और अन्तरात्मा की शक्ति के बिना समस्त ससार को विजय करके भी सत्य शिव सुन्दरम् काय की उपलब्धि प्राप्त करना किसी भी नेता के लिए कदापि सम्भव नही हो सकता। मनुष्य का प्रथम धम है—भलाई करना ! किन्तु स्वार्थ मे दया का भाव नही रहता। साम्प्रदायिकता महानता को मार डालती है। आजकल श्वान उदर पूर्ति करवान की चेष्टा रखने वाले नेता लोग निरीह जनता के लिए स्वय सिद्ध, कलक चिन्ह हैं। पढा लिखा व्यक्ति भी लाक सम्माननीय तभी बनता है जबकि वह सच्चे सवा भाव सहित चरित्रवान हो। बुद्धिमान एव धनवान गाव क उतन प्रिय नही बनते जितने की शुद्ध सेवा भावी चरित्रवान ! स्वार्थी लोलुप और मान बडाई के भूखे लोग नाम कमा नही सकते, गमाते हैं। रग बदलते हैं और गुप्त सगठन बनाते हैं गाँव के रचनात्मक कार्यो म बाधा उपजा कर पापी बनते हैं तथा राजनतिक पार्टी पोषण करत हैं। कुछ नेता लोग क्षणिक सम्मान भी पा लेते हैं पर उनका जीवन जहरीला कहलाता है। कालू मे एक छात्रावास नय कूए और बडा टकी की महान आवश्यकता है, किन्तु इनकी कमी का कारण नेताओ की आपसी ईर्ष्या न हो !

कुछ सभ्य एव सरल नागरिक—कालू के खेडा रपट को सतत आस्थावान एव पठनगति बनाये रखने हेतु गाँव के सीधे सादे कहलान वाले व्यक्तियो को भी हमे न भूल जाना चाहिए। कालू का सरल व्यक्तित्व भी रचनात्मक कार्यों में चन्दे एव शारीरिक सेवा से सदव काम आया है। यह बात मैं ही नहीं, सब लोग जानते हैं। परन्तु ऐसे लोगों के नाम काम का अभी तक कोई जिक्र नही था। मैंने उनके स्वभाव की मौन प्रवत्ति को आँका और आपके हाथ तक उन सरल व्यक्तियो क नाम काम पहुँचान का प्रयास किया है। वि स 1996 ई स 1940 स पहले यहाँ गाँव कार्यो मे काम आने वाले कुछ व्यक्तियो के नाम इस प्रकार हैं—स्व श्री रामनारायण जी खाडल जो 'शर्मा जी' के नाम से प्रसिद्ध थे गाँव क तार बाँचन तथा कानूनी सलाह आदि म प्रथम सेवा भावी महानुभाव थे। ठा० गणपत सिंह रावजीका और जमनाराम जी कर्वा जन्म जात सभ्य एव भले व्यक्ति थे। स्व० श्री ननकराम जी खाडल भी बडे धार्मिक एव सामाजिक व्यक्ति थे। स्व० रावतराम जी (पुत्र कालूराम जी) सेवग सयान व्यक्ति कहलाते थे। स्व० कोडाराम जा सूई वाले और नानूराम जी खाडल भी समय के भले व्यक्तियो मे गिन जाते थे। य दाना सज्जन सन् 1954 55 म स्व० गिरधारीलाल जी झवर सरपच के

साथ ग्राम पचायत मे पच थे। स्व० श्री चम्पालाल जी नाहटा गाँव के एक सज्जन पुरुष थे। वे अपने घर मजदूरी पर काम करवाते, तब पूरी मजदूरी देन और अपन घर से रोटी वगरह भी खिला देते थे। कभी कदा मजदूरो कारीगरो को पुरस्कार भी देते थे। वे अपने व्यापार मे कभी किसी के साथ धोखा धडी नहीं करते और उपयुक्त कमरेट पर माल वचत थे। उनकी साख थी कि ग्राहक की भल का व वर्षो बाद वापिस लौटा कर सुधार देते थे। उनकी बोली और मुस्कान बड़ी मधुर थी।

श्री हसराज आय और गुरुचरण पटवारी भी भले मनुष्य के रूप म यहाँ रहे। स्व० जेठाराम जाणी और लेखूराम धिटाला धार्मिक कार्यो मे आगे रहते थे। किन्तु मालूराम सारस्वत और गोपालदास (पुत्र जीवणदास) किसी चोर डाकू स लुट जान वाले व्यक्ति की पूरी मदद करते थे। ऐसे आसूराम जाणी और मूलाराम मूढ पशुओ के बडे अच्छे हेदकी थे। स्व० महत श्री मेघदास जी और गोबिदराम जी यति गाव म नाटी देखने और दवाई देने म बडे सेवा निष्ठ आदमी थे। उस समय इनका गाँव मे भारी सम्मान था। स्व० जीवणदास जी वरागी (कालेरा) भी भले सीधे एव सरल व्यक्ति थे। सिफ वाक पटुता से कालूराम वर्मा व साधु राम भादू किसी की विरादरी पचायत मे फौरन झगडे सलटा देते थे। श्री भूराराम सारस्वत एक सभ्य दुकानदार थे।

वतमान समय म आसकरण जी डूढाणी, रावतमल जी कर्वा निहाल चद डूढाणी रावतराम पारीक, तोलाराम जी सिंघी, मोहनलाल बागडी रामकिसन जी खडेलवाल ओवारमल राठी, हीरालाल नाहटा, वशीलाल बिरमेचा श्रीचद कोठारी जेसाराम खण्डेलवाल, रामरिखराम पारीक, रतनाराम जी गोदारा, आसूराम नण लाभूराम पटवारी भागीरथ मदनलाल सारस्वत, जुगराज सस्कर्ता प्रभति कस्बे के सभ्य एव सरल नागरिक हैं। हरिजनो मे सुरजाराम मेगवाल विनम्रता का व्यवहार करन वाला वास गोदारान का वासिन्दगान है।

प्राचीन समय के स्वामी सेवक-भाव—

प्राचीन काल मे दूर दूर तक कारोबार करने वाले कालू एव आस पास के धनी पुरुष अपने व्यापार विस्तार हेतु मुनीम गुमास्तो ठाकुर जमादार, चौकीदार मजदूर और दलाल वकील आदि लोगो को साल दरमावा देकर रखा करते थे। उनको काय-भार सम्भलाते समय ईश्वर की साक्षी से शपथ दिलवाते और धम ईमान से काम करने के वचन लिया करते थे। सेठ और मुनीम गुमास्तो के बीच सत्य काज की साख रूप, लोभ लालच न करने की पाबदी के पत्र म दस्तखत अँगूठे हुआ करत थे। सेठ लाग आपसी लेखा पढी के बाद नौकरी देते और नियुक्त व्यक्ति को किसी एक जगह दुकान पर मार्ग व्यय देकर भेज दिया करते थे। ऐसी नौकरी पर जाने वाले सब व्यक्ति मालिक सेठो के प्रति बडे उत्तरदायी हुआ करते। वे लेन देन, हुँडी चिट्ठी, उघाही पताई सौदा सपट्टा बीमा विवरण माल व जोखिम की नोंध तयार करने तलपट बनान व्यापारियो दलालो, आडतियो आदि के हिसाब लेन दन जकात, लदान का सम्पूण काय सत्य मन से सौगध प्रण सहित पूरे किया करते थे। उनका व्यापार कुशल जीवन मालिक के काय हित रात दिन प्रस्तुत रहा करता था। उनके किय हुए काय की सारी जिम्मेदारी

मालिक सेठा की मानी जाया करती थी। मालिक की ओर से उन्हें भोजन वस्त्र, आवास-आवागमन दवा पानी और साबुन तेल आदि फुटकर खर्च फ्री हुआ करता था। उनका आज की भाँति महीना नहीं, अपितु साल का वेतन मान्य होता था जो 51 रु० से लेकर 351 रु० तक चला जाता था। उस समय आज की तुलना मे रुपये की बलवती कीमत औसतन सवा सौ डेढ़ सौ गुना अधिक थी। परन्तु व्यापार के कार्यों में नौकर लोग भी बड़े कुशल लाभप्रिय और हिसाब किताब में चोक्स-चतुर इमानदार व्यक्ति हुआ करते थे। सेठ लोग भी उनको अपने परिवार का व्यक्ति मानते तथा उनके हाथ से हुए अन्य काम को भी तन मन धन से पक्ष लेकर मान्यता देते थे।[1]

मुनीम, अधिक साल (वार्षिक वेतन) एवं निजू कारबारी—मारवाड़ी समाज के सभी धनी परिवारों ने धनार्जन किया, वह कार्य अपने दक्ष एवं उत्तम चरित्र वाले पुराने मुनीमों द्वारा ही उन्नत होता रहा है। मुनीम एक ऐसा उच्चादर्श वाला व्यक्ति होता है कि न तो वह स्वयं गड़बड़ करता है और न किसी अन्य को अपनी जानकारी में खान देता है। वह मालिक के काम में हर समय रात दिन तकलीफ सहन करके भी फायदा पहुँचाता है। अपने तुच्छ वेतन के बल पर ईमानदारी के साथ मालिक का धन से घर भरता रहता है। सेठ अपने घरों में सात खाने डकारें लेते रहते हैं पर मुनीम अहर्निश परिश्रम पूर्वक कमा कर सेठ की रकम बढ़ाता जाता है। आजकल ऐसे व्यक्तियों को मजदूर स्तर पर मानते हैं।

कालू में होशियार और अधिक साल (वेतन) लेने वाले नीचे लिखे पुराने व्यक्ति थे। माहेश्वरियों में श्री गनपतमल जी राठी (चादसर) चौथमल जी मनिहार, रामचंदजी डूढाणी दीपचंद जी और उनके भ्राता आसकरण तथा उनके भाई हुकमचंद जी क्वा राजाराम जी कर्वा हुकमाराम जी खंडेलवाल भगवानदास जी मंवर मोतीलाल जी करनाणी रामरिखजी झंवर आदि बड़े व्यावसायिक व्यक्ति थे तथा इनमें से बहुत से लोग अच्छी-अच्छी फर्मों मे मुनीम भी रहते थे। ओसवालों में श्री हरखचंद जी, हनुतमल जी गोलछा मूलचंद जी तोलाचंद जी बीजराज जी बंद, बेगराज जी बोथरा, सुगनमल जी तोलाचंद जी पुगलिया जसकरण जी बोथरा, पनेचंदजी डागा आदि लोग अच्छे योग्य व्यापारी कार्यकर्ता थे। ये सभी मुनीम पदों पर रहते थे। उस समय (वि० सं० 1956 94) में इनकी साल (वार्षिक आय) अधिक मानी जाती थी जो करीब तीन सौ पौने तीन सौ तक मिलती थी। कालू में घर का काम ल्हाटों ववरों, दद्दों डूढाणियों कोठारियों, साडों के तथा श्री करणीदान जी बोथरा मेघराज सुगनमल जी बोरड, लिखमीचंद जी दूगड़, सूरज मल डागा गुमानीराम जी पुगलिया मानीचंद लालचंद राठी, जमनाराम जी क्वा प्रभृति लोग बंगाल, आसाम में अपने घर का कारबार करते थे। श्री करणीदान बोथरा की दुकानों में रहने वाले मुनीम श्री सुगनमल जी पुगलिया ने सेठ के देहान्त के बाद नेपाल बिहार के कारोबार को अच्छी तरह संभाल कर अपने शिशु सेठ फतेहचन्द जी बोथरा को अच्छा संपत्ति शालीन बना दिया था।

---

1 सरदार शहर के बसाली सेठों के बंगाल की दुकान में हमारे गाँव कालू का एक गोलछा व्यक्ति मुनीम था। एक बार किसी व्यापारिक झगड़े में वहीं उसके हाथ से खून हो गया। पर सेठों ने उस वक्त भी उस व्यक्ति को पूरी तरह से बचा लिया था।

वर्तमान समय मे यहा के योग्य कारबारो हैं—श्री वृद्धिचन्द कवा, श्री अलायचन्द साड, श्री काशीराम राठी, लाधूराम नाहटा (पनेचद नाहटा) श्री दुलीचंद हनुमान मल राठी, बाबूलाल करनाणी, श्री बालचद भीखमचद कोठारी, गिरधारी लाल जयचद लाल बोथरा, पूनमचद मोतीलाल नाहटा (B) तथा कुछ अन्य सेठिया, कोठारी, झबर, नाहटा राखेचा आदि परिवार के व्यक्ति भी यहाँ होशियार व्यापारी हैं। श्री केशरीच द मदनलाल शिवनारायण डूढाणी, श्री जेठमल नदलाल राठी भवरलाल कर्वा, हनुमानमल डूढाणी, न दलाल खाडल, जग नाथ डूढाणी, जवरी मल नाहटा, जुगराज-नगराज इन्द्रचन्द रायचन्द नाहटा लूनकरण भीखमचन्द बिरमेचा, हमाराम, हजारी राम सारस्वत आदि अच्छे स्तर पर ऊचे व्यापारी एव वेतन वाले व्यक्ति है। श्री इन्द्रचन्द राठी इस समय एक चाय बागान का मालिक है तथा पथ्वीराज बद कपडे का स्थानीय दुकानदार। किन्तु वतमान म कालू का श्री मोहनलाल ववर एक उच्चादश श्री पुरुष माना जाता है। सत्यनारायण पारीक (D) और रामेश्वर खडेलवाल (A) आसाम मे अपना कारबार करते हैं।

कालू से बाहर जाकर बसने वाले धनिक सेठो म श्री डूगरगढ के हरखचद, महालचद भादाणी सरदार शहर मे भरूदान पूनमचद बोथरा आदि लोग वि० स० 1960 के आस पास अपनी अच्छी स्थिति में कालू छोड कर बाहर चले गये थ। वि० स० 1998 म कालू स श्री मूलचद राठी पहले श्री डूगरगढ और फिर सरदार शहर जाकर बस गये। श्री नेमचन्द दूगड पीलीबगा एव श्री तिलाकचन्द करनाणी बरेली क्रम से वि० स० 2006 व 2010 के लगभग अपने भवन बनाकर वहाँ के निवासित नागरिक बन है। अब कालू के बहुत से लोग नेपाल, बिहार, कलकत्ता, फरीदाबाद आसाम, बगाल बीकानेर जयपुर जोधपुर श्री गगानगर आदि स्थानो म स्थायी अस्थायी रूप से बस गए हैं। श्री माहनलाल पूनमचद, धमचद साड लूनकरनसर मे व्यापार करते हैं और मोहनलाल पीपलवा घडसाना मे कपडे की दुकान करता है। कालू के कुछ गोदारे और जाणी जाट अबाहर के आस पास तथा श्री गगानगर जिले मे बसते हैं। इन सभी के मकान व घर कालू मे बोलते है। तात्पय यह है कि यहाँ के बहुत ज्यादा व्यक्ति बाहर रहते है।

कलकत्ता हो चाहे कटला, डिपाटमेन्ट एजूकेशन हो या ईस्ट इडिया टासपोट, अथवा श्रीगगानगर हो या गुलाब बाग। कालू का एक नागरिक जाकर जम गया फिर कालू ही कालू दिखाई देने लगेगा। इस तरह से कालू के बहुत से लोग अब बाहर रहने लगे हैं और अपना अच्छा कारबार करते हैं। ई० सन 1981 मे जनगणना हुई, कालू की जनसख्या करीब करीब गिनती म वहा आई जो 10 वष पहले थी। मतलब कालू के करीब आधे लोग बाहर गये हैं और जाते रहते हैं।

कालू का व्यापार, बाजार और दुकानें—गाँव कालू मे तीन बाजार एक मडी और अनेक दुकानें हैं। फसल के मौके खूब आमद होती है और काफी लेन-देन हाता है। यहा का वाणिज्य व्यापार साहूकारे पर चलता है। यह वाणिज्य व्यापार अधिक सरल सुगम और उपयोगी है। सरकारी आफिसों मे जहा बीसा रजिस्टरों से लेन देन होता है वहीं हमारे गाँव की पुरानी दुकानो म फक्त चार बहिया के जरिये आसान कर

व्यापार किया जाता है। रोकड, नकल, खाता तथा एक जमा खच वही ।—ये ही चार बहियाँ एसी हैं जो कि नियमित रूप से खाता तैयार रखने वाले दुकानदार के लिए हर समय दीपक का काम देती हैं। बही खाता लिखने की पद्धति—

बाम जमा दक्षिण खरच सिर पेटा पर पेट।
ऊपर नाम धनी लिखें हस्त पुनरी देठ॥ (राजा टोडरमल)

इनसे माल का स्टाक लेन देन तथा अ य सारी बातें किसी भी समय जानी जा सकती है। तलपट देखना तो यहा की वहियो म इतना सरल कि लाल पसे का भी फक नही पडता। आफिसों मे जहाँ दसो आदमी हिसाब किताब को ठीक रखते हैं, वहाँ कालू का एक मुनीम पदेन व्यक्ति काफी कायकर्त्ता हाता है। तभी ता कालू मे कभी भी इ कमटेक्स सेलटेक्स वाले आफिसर दुकानदारा के बही-खाते गल्त नही बता सक। यहाँ का व्यापार-मडल बदनाम नही है। व्यापार का जमा-खच करना, हिसाब जोडना, ब्याज फलाना जाड देना तथा बाकी निकालना आदि काय कालू क लागो को पुख्ता याद रहते हैं। कालू के श्री बींझराज पूगलिया और लूनकरनसर के श्री तोला च द बरडिया वाणिज्य व्यापार के गुर हिसाबो म मदा स माहिर कहलात रह हैं। उनकी साहूकारी के लक्षण—

आधा ऊपर आधा तरे, आधा देय साह के गरे।
आधा म आधा निम्तरे, जुग टर जाय साह नही टरे॥ (राजा टोडरमल)

स्व० चादमल पूगलिया म तोष च द नाहटा तोलाच द काठारी (कानूनी) बही का काम करने वाले मौजीज व्यक्ति थे। अब आसकरन जी डूढाणी, बाल च द जी कोठारी और सुगनाराम सारस्वत बही के सुघरे एव सु दर कायकारी हैं। श्री गुमान दास वरागी खाते का कायकत्ता है।

कालू के मुख्य बाजार का नाम प्राय सदर बाजार बोला जाता है जो गाँव के बीच चौहटे मे है। राणी सती बाजार तथा नया बाजार भी सदर बाजार के पास ही लगते हैं और लूनकरनसर से सरदार शहर वाया कालू जाने वाली सडक पर रामा मडी बाजार भी अपने नाम रूप में यथाथता रखता है।[1]

1 पुरानी दुकानें जो गाँव के सदर बाजार मे है—

(1) कोडाराम शिवनारायण (2) हीरा लाल घेवर च द
(3) माँगी लाल धनपतराय (4) हनुमान राम पुत्र मूलाराम
(5) धनराज मगल च द

उपरोक्त दुकानें पुरानी हैं कि तु फर्मों के नाम परिवर्तित हा गये हैं।

2 मेडिकल की दुकानें—

(1) रतन मेडिकल स्टोर (2) जिने द्र मेडिकल स्टोर
(3) विजयकुमार प्रदीपकुमार (4) सावित्री टी कम्पनी

कालू म हर मेडिकल स्टोर को सघ कहन की कहावत प्रचलित है। क्योंकि पहल पहल ग्राम सेवा सघ काल न एलोपथिक दवाइयाँ मगवाकर गाँव में उसी दामा पर बिक्री शुरू की थी। तभी स दवाइयो की दुकाना को सघ कहा जाता है। (कालू म पहले आयुर्वेदिक दवाइयो की दुकान लेखक की वि स 1986 से वि स 2013 तक चलती थी।

1 यह रामदास वरागी रामनारायण गादारा की दुकानें चलने पर नाम पडा है।

3 परचून व गल्ला माल की दुकानें—

1 चैनरूप वद	2 बाल चन्द बागडी
3 दुर्गा भडार (मगत मल हसराज)	4 प्रकाश स्टोर (विजय लोढा)
5 जनता स्टोर (बशीलाल पूनम चन्द)	6 कमल स्टोर (भरूदान लोढा)
7 बाबू लाल रतन लाल	8 अमित कुमार बोड
9 ईसर चन्द रतन लाल	10 लाधूराम झवरलाल बोथरा
11 उत्तम च द साड	12 हनुमान शमा
13 कुम्भकरण आसाराम	14 दानाराम चूनाराम
15 मानक चन्द भादाणी	16 पमाराम डागवाल
17 कुम्भकरण दीपचन्द	18 सुरेश जनरल स्टोर
19 हरख चन्द पूण चन्द राठी	20 जुहारमल विनोद कुमार
21 रामलाल महाल चन्द	22 सुगन चन्द तातेड
23 किशन लाल चवर	24 काशीराम कानदास
25 मागीलाल बोड	26 लाधूराम बोथरा
27 वेमराज बाथरा	28 मानिक च द रणजीतकुमार
29 जयचन्द लाल बागडी	30 बागडी स्टोर
31 सोहनलाल शमा	32 कलाश भडार
33 कमल स्टोर	34 नाहटा आदश
35 बसन्त कुमार मघडा	36 महावीर स्टोर
37 जन किराना स्टोर कालू	38 बद आदश
39 राजरूप ललित कुमार	40 सुगन चन्द लाढा
41 लीलाधर पारीक	

गल्ला माल जगत का काजल कहलाता है।

4 कपडे के दुकानदार—

(1) पृथ्वीराज रमेश कुमार	(2) अजन्ता क्लोथ ईम्पोरियम
(3) मदन स्टोर	(4) गणेश स्टोर (मानिक चन्द कोठारी)
(5) राणीसती स्टार (रेडीमट)	(6) हरखच द हनुमानमल
(7) रमेशकुमार कन्हैयालाल खाडल	

5 मनिहारी की दुकानें—

(1) पावती स्टोर	(2) प्रदीप स्टोर
(3) महावीर टी स्टोर	(4) बालचद काशीराम झवर
(5) रेवतमल गोलछा	(6) श्री नारायणी जनरल स्टोर
(7) माया भडार	(8) भवरलाल पुरोहित
(9) श्री दुर्गा स्टोर	(10) राकेश स्टोर
(11) श्री जगदम्बा ट्रेडस	(12) श्री करणी स्टार
(13) विजय कुमार सिन्घी	

पहले लेखक की अपने मामा जी के साथ मनिहारी की दुकान थी। दूसर नम्बर मे श्री सोहनलाल बुधमल सेवग की दुकान भी अच्छी चलती थी। मनिहारी की दुकानदारी के सम्बन्ध मे प्रचलित पुरानी बात—"मनिहारी की दुकानदारी, नख मार तहसीलदारी।"

6 पान की दूकानें—

(1) रूकमानन्द शर्मा (2) बन्शीलाल सुनार
(3) रामा पान भडार (4) उदय पान भडार
(5) हरि पान भडार (6) कालूराम पारीक
(7) पूनम चन्द सेवग (8) रेंवत नाहटा
(9) चनरूप पान भडार (10) काका पान पलस
(11) पारीक पान भण्डार (राम कुमार)

7 चाय मिष्ठान्न भण्डार—

(1) हडमानमल मूथा (2) जगदम्बा होटल
(3) महाकाली मिष्ठान्न भण्डार (4) बजरग टी स्टाल
(5) चोपडा टी स्टाल (6) सांवल राम स्टाल
(7) सिंघिया लाल स्टाल (8) माली पन्नालाल होटल
(9) मानक चन्द का होटल (10) पूनम चन्द सेवग का होटल
(11) रामनारायण गोपालराम (12) प्रभुराम पारीक
(13) शकर लाल नाई (14) शिव करण पारीक
(15) महावीर गुड्स ट्रान्सपोर्ट एजेंसी (16) पूनम चन्द चाटिया
(17) रतिराम पींपलवा होटल

8 बिजली के सामान की दुकानें—

(1) रेंवतमल गोलछा (2) रतन लाल भादाना
(3) राधेश्याम डूढाणी (4) भवर लाल नाहटा

9 साग सब्जी और फलो की दुकानें—

(1) सावलराम गोबिन्दराम सिन्धी (2) किस्तूराम माली की माँ
(3) मुमताज अली (4) मालूराम पारीक

10 लोह लक्कड तथा पत्थर पट्टी की दुकानें—

(1) आसकरण सिंघी (लोह) (2) हजारीराम (लकडी)
(3) मघाराम (पत्थर पट्टी) (4) शकर स्टोर (लोह-लक्कड)

11 सिलाई और कसीदाकारी की दुकानें—

(1) नत्थूराम टेलर (सिलाई) (2) दुगाराम कसीदाकार
(3) कानाराम कसीदाकार (4) पूनम चन्द कसीदाकार
(5) हडमानमल तुलछाराम टेलर (6) बुलाकीदास दर्जी
(7) बुधमल शर्मा

इनके अतिरिक्त पाँच नाइया की दुकानें तीन मोचिया की, एक रेगर की और सात स्वणकार भी सदा से कालू मे दुकानें करते हैं। रेहडी खूमचे की दुकानें भी लगती हैं। पूर्णाराम की सलून और नथमल सोनगरा की दुकान भी बहुत पुरानी है। धोबी (आसुराम), तेली (अहमद), लुहार (साजन), सिकलीगर (बजू) और रगरेज लखारा आदि लोग कालू मे किसी का काम नही अटकने देते। यहाँ घडीसाज रेडियोबाज (विश्वकर्मा रेडियो सर्विस) और पेट्रोमेक्स वाले भी दुकान लगाकर बठते हैं। अब दो फोटो स्टूडियो तथा एक वीडियो स टर भी यहा खुले ह। यहाँ सब्जी और चाय की दुकानें अच्छी चलती हैं। गाडो के टायरो म हवा भरने वाले भी दुकानें करते हैं। जूतो और चप्पलो की मरम्मत करने वाले भी अपनी अपनी पेटिया द्वारा दुकानदारी का धधा करते हैं और बिजली वल्डिग की भी दुकानें चलती हैं।

कालू मे फ्लोर मिल्स—वसे तो आटा पीसने की खराद (पशुआ से चलने वाली चक्की) वि० स० 1987 (ई० स० 1931) से गाँव कालू मे लग चुकी थी। यह श्री गोपालराम सुनार द्वारा सालूराम सुनार के घर मे एक ऊँट से कुछ समय तक चलाई गई थी। इसके बाद वि० स० 2006 (ई० स० 1950 51) मे रामचन्द्र सुनार श्री डूगरगढ वाले ने तेल से चलने वाली इजन की चक्की मूलचन्द मालू के घर म बठाई और श्री गोपाल राम सुनार ने गाव के बीच, जो अब श्री दानाराम चुनाराम की दुकान है (लेखक की दुकान क पास) मे मशीन की चक्की लगाई थी। फिर सन 1959 60 म श्री धनराज जागिड ने उदय फ्लार मिल नाम से कई वर्षो तक तेल वाली कल चक्की चलाई थी। श्री जागिड की प्रतियोगिता मे सरदार शहर के श्री गोपालराम शर्मा ने झवरो की धमशाला के पास उन्हा की जमीन पर मशीन की चक्की लगाकर करीब दस वष तक बडी सफलता के साथ कालू का आटा पीसा था। फिर नथमल पुगलिया हजारी महाराज और खावसिंह (धीरासर वाला) ने अपनी अपनी कल चक्कियो से गाँव का खूब आटा पीसा था।

वतमान समय में श्री भरू दान साड[1] नथमल पुगलिया जेठाराम नण, डूगरराम खाती, मगतूराम सेठिया और रामेश्वरलाल शर्मा आदि लोग अपनी अपनी कल चक्किया से कालू का आटा पीसने म पथक पथक रूप से भरसक प्रयत्न करते हैं। इनके साथ तेल रूई आदि के पजे भी हैं। य सब चक्कियाँ अब विद्युत द्वारा चलती हैं।

कालू मे मोटर बस कन्डाक्टर और ड्राइवर—पहले आवागमन के साधनो म पशु सवारियाँ ही मनुष्य के काम आया करती थी। इन स्थल की सवारियो म हाथी और घोडे राजा महाराजाओ तथा अमीरो की सवारी मान जाते थे। यहाँ की खास सवारी मे विशेषकर ऊँट स्रांढ काम आते रहे हैं। (जल की सवारी म नौका पुरानी सवारी है। किन्तु नभ यात्रा के लिए विमान का मात्र नाम ही सुना जाता था।)

समय की गति द्रुतगति। ई०स० 1912 के बाद कलकत्ता जसे बडे नगरो म मोटर कारो का प्रचलन अधिक होने लगा है। धनिक वग एव राजा महाराजाओ ने पहल पहल इस स्थलीय वाहन का उपयोग किया, जिससे आम जनता को बडा आश्चय हुआ।

---

1 इनकी चक्की म बफ की फक्टी भी चलती है।

किन्तु गांवों में न कोई राजा महाराजा और न ही धनवान बसते। इसलिए गांव के लोग किसी परदेशी व्यक्ति से मोटर की बातें सुनकर हँस दिया करते थे। उनको मोटर के अपने आप चलने की बात निरर्थक एवं अनहोनी मालूम होती थी। धीरे धीरे मोटरों का प्रसार गांवों तक बढ़ा और लोगों के हृदय में मोटर प्रचलन की कथा सत्य प्रतीत होने लगी।

ई० स० 1930 तक कभी कभार कालू गांव में कहीं से कोई इक्का दुक्का मोटर लोरी आ जाती तब पुराने व्यक्ति दर्शनार्थ दूर खड़े देखा करते थे। गायें भैंसें बिदक जाती, ऊँट रहाढ़ चौंक चमक उठते और औरतें बाड़ों तथा छतों पर चढ़कर देखा करती थीं। कई बुजुर्ग धोक भी दिया करते थे। गांव में इस कल (मशीन) की देवी (गाडी) का बिना बैल ऊँट एवं घोड़ों के खींचे अपने आप चलकर कालू आ जाना बड़ा अजूबा लगता था। महाराजा गंगासिंह जी का पहले पहल मोटर पर चढ़े देखकर बीकानेर के ब्राह्मणों ने तो बड़ी धार्मिक आपत्ति उत्पन्न कर दी थी। उन्होंने कहा— 'सूर्य वंशी महाराजा गंगासिंह जी राठौड़, रबड़ के पहिये की गाडी पर चढ़ गए, कलियुग आ गया है, धर्म भ्रष्ट हो गया।' पुराने लोग रबड़ के फीते से बंधी हाथ घडी वाले व्यक्ति को रसोई घर के चौके में प्रवेश भी नहीं करने देते।

कालू मे प्रथम बार सन् 1928 मे विजय भवन में मोटर कार का प्रवेश हुआ था, जिसकी सारी आश्चर्य जनक कहानी पीछे लिख दी गई है। इन्हीं दिनों कालू के पड़ौसी कस्बे श्री डूंगरगढ़ मे एक दो सेठ अपनी मोटर-कार ले आये थे। कालू के कुछ अगवे लोग इधर उधर से मोटर देख आते और खूब खबरें सुनाते थे।

सन् 1929 को श्री गिरधारीलाल झंवर की बरात गांव मूंडवा के लिए मोटर बस मे चढी। वह 8-10 चक्कर लगाकर लूनकरनसर स्टेशन पहुँचाई गई थी। ग्रामोफोन भी प्रथम उन्हीं के विवाह में वे अपना लाये थे। श्री कन्हैयालाल डूढाणी की बरात मोटर द्वारा श्री डूंगरगढ़ गई थी। इसके बाद कालूराम साड की बरात और खुमाणचन्द बोड़ तथा फिर लाधूराम भंवरलाल की बरात भी लोरी के झटके लगाकर लूनकरनसर गई थी।

लेखक के अग्रज स्व० श्री बालूराम जी सस्कर्ता सन 1929 मे मोटर ड्राईवरी प्रशिक्षण के लिए लाहौर गये थे। उस समय वहाँ तीन माह के प्रशिक्षण के बाद ड्राईवरी का लायसेंस दिया जाता था। प्रशिक्षण शुल्क 60 रुपए था। फिर श्री बालूराम जी 1930 मे मोटर बाबत महाराजकुमार श्री विजय सिंह जी के विजय भवन में रहे। वे उनके समवयस्क थे उतने ही समकक्ष साल में दोनों स्वर्गस्थ हो गये। उस समय कालू के निवासी श्री मोहनदास (लेखक के सहपाठी) ने श्री विजय भवन में रहकर ड्राइवरी सीखी और लगभग चालीस वर्ष तक बीकानेर माजीसा की मोटर चलाई। श्री मोहनदास कुछ समय पश्चात बीदासर के निकट दडीबा-जाकर बस गये। श्री मोहनदास पुत्र श्री बुधरदास गांव कालू में सबसे पहले ड्राइवर बने। गांव के दूसरे ड्राइवर रामचन्द्र पुत्र श्री सालूराम सुनार बने थे जो कि द्वितीय विश्व युद्ध के समय फौज में भरती हो गये थे। सेना में श्री रामचन्द्र सुनार फौजी ट्रक चलाया करते थे, युद्ध के समय वहीं उनकी मृत्यु हो गई।

गांव कालू मे सबसे पहले बस कन्ट्राक्टर (सन 1947 जून से) ग्राम पंच श्री लालूराम जी गुसाईं हैं। उनके लूनकरनसर से श्री डूंगरगढ़ और सरदार शहर रूट के

सारे काय विश्वास पर चलते आय हैं। उनकी गाँव मे वडी प्रतिष्ठा है। पच-पचायतों के कार्यों म भी उनका पूरा सम्मान है। कालू के प्राय पेशेवर ड्राइवर उन्ही की बसो पर रहकर योग्य बन ह। अब उनके बेटे पोते स्वय काम देखते हैं।



ग्रामपच श्री लालूराम जी बस कन्ट्राक्टर

कालू मे बस ट्रक जीप कार ट्रक्टर व मेटाडोर मालिको के नाम—

मालिक का नाम	बस (मोटर)	ट्रक	जीप	कार	टक्टर	मेटाडोर
श्री लालूराम जी गुसाई	2	1	—	—	—	—
,, भक्त दान जी सांड	1	—	—	—	—	—
,, हजारी राम सारसुत	—	1	1	—	—	—
,, हेमाराम सारस्वा	—	1	—	—	—	—
स्व० रूपचन्द नाहटा	—	—	1	—	—	—
श्री इन्द्रचन्द्र राठी	—	—	—	1	—	—
,, सन्तलाल नाई	—	1	—	—	—	—
,, रामकुमार सारसुत	1	1	—	—	—	—
,, सीताराम मारसुत	—	1	—	—	—	—
,, धम चन्द साड	—	1	—	—	—	—
,, भवरलाल बद	—	—	1	—	—	—
,, सीताराम खडेलवाल	—	—	—	—	1	—
,, गोपालराम कायल	—	—	—	—	1	—
,, सोहनलाल सारस्वत	—	—	—	—	1	—
,, करणाराम मिरासी	—	—	1	—	—	—
,, बाबूलाल वर्मा	—	—	—	1	—	—
,, सुरजाराम पारीक	—	—	—	—	2	—

श्री ओम्प्रकाश दास [illegible]
[illegible]
, [illegible]
, [illegible]
, [illegible]

डॉ० [illegible]	—	—	—	1	—	—

इन्दौर, कानपुर, बंगाल, आसाम आदि अन्य स्थानों में रहने वाले कालू के कई व्यक्तियों के यहाँ लगे हुए और कारें हैं—

श्री [illegible]	—		—	2	—	—
, [illegible]	—			1	(UPO 888)	
, [illegible]	—	1		—	—	—
, [illegible]	—		—	1	—	—
, [illegible]	—		—	—	1	—
, [illegible]	—	1	—	—	—	—
, [illegible]	—	1	—	—	—	—
, [illegible]	—	1	—	—	—	—
, [illegible]	—	1	1	—	—	—
, [illegible]	—	1	—	—	—	—
[illegible]	—	3	—	—	—	—
, [illegible]	—	1			—	—
[illegible]	—	1	—	1	—	—
, [illegible]	—	1	—	—	—	—

कालू गांव के ड्राइवरों के नाम—	उम्रवर्ष	योग्यता
श्री सांवरराम जी पुजारी	60	साक्षर
हजारीराम सारस्वत	50	,
भानीराम नाई	64	निरक्षर
बंशीप्रसाद सेवग	40	साक्षर
श्रवणलाल पुजारी	50	
, भगवानाराम स्वामी	38	,
गोविन्दराम पारीक	38	,
, इन्द्रचन्द सुनार	45	
, रघुवीरसिंह [illegible]	40	मैट्रिक
, नानूराम नाई	35	सैकण्डरी
, गिरधारीलाल [illegible]	35	साक्षर
, सुखाराम पारीक	40	निरक्षर
, सुगनचन्द [illegible]	40	छठी पास
, मोहनलाल सारस्वत	28	,
स्व० गणेशा राम स्वामी	30	निरक्षर
श्री दयीलाल नाई (R)	26	,

श्री रूघलाल पुगलिया	30	छठा पास
,, बाबूलाल गुसाई	26	,
,, मुखराम वरागी (श्री गगानगर मे)	30	साक्षर
,, देवीराम खाती	34	बी० ए०
,, धर्माराम पारीक	25	साक्षर
,, सोहनलाल चौधरी	30	दसवी
, गौरीशकर नाई	25	5वीं
,, मुखराम घिंटाला	32	निरक्षर
, मघाराम गुजर गौड	30	साक्षर
,, मूलाराम खण्डेलवाल	40	साक्षर
,, जगदीशदास स्वामी	30	निरक्षर
,, उदाराम सारण	35	निरक्षर
,, बीरबल राम सारस्वत	30	निरक्षर
,, ओमप्रकाश सारस्वत	25	सकण्डरी
, गोपालराम कायल	35	साक्षर
, गौरीशकर खडेलवाल (मालाराम)	22	पाँचवी
,, बनवारी लाल सुनार	30	साक्षर
, नथमल ढाढी	23	निरक्षर
,, गौरीशकर खडेलवाल टक्टर ड्राइवर	30	H S S
, श्रीराम सारस्वत	35	साक्षर
, चन्द्रदास स्वामी	30	निरक्षर
, कुम्भाराम कुम्हार	30	साक्षर
, देवीलाल नाई (मगनाराम)	22	निरक्षर
,, भवरलाल जोतसी	34	साक्षर
, हरिकेश जागिड	28	सकण्डरी
, बलवन्तसिंह सरदार	28	(गुरमुखी साक्षर)

भूतपूर्व बस कन्ट्रॉक्टर श्री भेरूदान साह सन् 1949 52 तक लूनकरन सर से कालू रूट मे श्री लालूराम जी गुसाइ क प्रतियोगी रहे। लूनकरनसर से श्री डूगरगढ रूट मे श्री लालूराम जी गुसाई के श्री थानमल सवग तथा काशीराम ब्राह्मण प्रतियोगी रहे। श्री डूगरगढ रूट के सवप्रथम बस कन्ट्राक्टर श्री थानमल सवग थे। वर्षो उपरात श्री भेरूदान साह श्री थानमल सेवग तथा काशीराम ब्राह्मण की मोटरें चलनी बद हो गई, जब कि श्री लालूराम गुसाई की बस वतमान समय मे भी लूनकरनसर से सरदार शहर वाया कालू रूट म निरन्तर चल रही है। इस समय लूनकरनसर से सरदारशहर वाया कालू रूट के अ य बस कन्ट्राक्टर श्री लक्ष्मणसिंह हनुमानसिंह राज पुरोहित तथा श्री गिरधारीलाल मिस्त्री हैं। सरपच सवाई के श्री लक्ष्मणसिंह पुरोहित की इस रूट म तीन बसें चलती हैं[1] और श्री गिरधारी लाल मिस्त्री की दो बसें हैं। लूनकरनसर स श्री डूगरगढ वाया कालू रूट म इस समय श्री किशना राम नाई की दो बसें चलती हैं। इस रूट म कालू निवासी श्री रामकुमार सारस्वत भी अपनी बस कुछ समय तक चलाकर

1 अन्य स्थानो पर भी इनकी काफी बसें चलती हैं।

श्री किशनलाल नाई के रट प्रतियोगी रहे हैं। एक बस श्री परसराम जी जासो नागौर वालों (वतमान सुजानगढ) की R R K 3846 लूनकरनसर मे वाया कालू सरदारसहर चलती है। जिसका ड्राईवर देवाराम लाटा और कन्डैक्टर श्री चेतराम हैं।

अध्यापक, प्रगतिवान तथा पटवारी

इस कस्बे की मिट्टी और जलवायु ने यहाँ अनेक उत्तम जन उपजाये हैं, जिन्होंने योग्यता के बल शिक्षा सलग्न रहकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। उनके सुक्षेत पद परिचय बता देने भी प्रासगिक हैं।

वैसे ता कालू की डहरी (भूमि) सदा से सौभाग्यशाला रही है कि यहा के पटेल, पडित मेठ और जन साधारण पूर्व प्रसिद्ध हैं। किन्तु वतमान समय मे भी राज्याधिकारी काफी नवयुवक कायरत हैं। इनमें सहायक जिलाधीश विश्वविद्यालयी व्याख्याता डॉक्टर इजीनियर सीनियर टीचर और एडवोकेट आदि अपनी व्यवहार सस्कृति से गाँव का नाम ऊँचा कर रहे हैं। इन सबके सक्षिप्त परिचय यथा स्थान दिये हैं। यहाँ मास्टर एव पटवारियों के नाम ज्यादा हैं और सबस पहले सर्विस लगन वाले कालू के अ य नवयुवको के भी।

उम्मीदवार से प्रमाण-पत्र मागे गए।

सवप्रथम (वि० स० 1995 96 ई० स० 1940 में) इन पक्तियो का लेखक अपनी तहसील लूनकरनसर का पहला अध्यापक है और फिर श्री लाधूराम पारीक । उसके बाद श्री सरस्वती के छात्र परम्परा मे श्री गोवधनलाल (1955), श्री सीताराम शर्मा (अगस्त 1957), श्री अमृतराम (1959), श्री बशीलाल (1958), श्री भागीरथ शर्मा (1967), श्री जीवराज (1963 64), श्री तीथराज (1973) तथा पदमाराम पारीक आदि अध्यापक हैं। श्री अ नाराम (1973), श्री जसाराम ज्याणी (1977) और श्री सीताराम सोनगरा आदि के नाम भी इस स्थान पर आते हैं। यहाँ के अध्यापको की चिन्तन प्रवत्ति सदैव निष्ठा एव उत्साह पूण रही है। ये सब अपनी एक अलग मधा, स्फूर्ति एव उन्नत कौशल की चाह रखते आये हैं। इसलिए कह सकते है—कालू म जन्मे और बने अध्यापक शिक्षा के दीपक हैं।

कालू शिक्षा शाला-नदी से अध्ययनोन्नत निकले प्रबुद्ध नाले, जो कला साहित्य, ज्ञान विज्ञान, दशन समाज और स्वाधीनता सरक्षणता तथा नीति निपुणता सहित अपना ग्राम नाम प्रख्यात कर रहे हैं।

1 श्री धमचन्द शर्मा (जन्म 7 दिसम्बर, 1928)—डिस्ट्रिक्ट जज जयपुर सन् 1939 40 मे प्राइमरी पास करके निकले।

2 श्री हनुमान मल डूढाणी (ज म स० 1987) मिल सक्रेटरी दी गजेज मैन्यूफेक्चरिंग क० लि० कलकत्ता। सन 1941 मे प्राइमरी करके गाँव से पढने शहर गया।

3 डॉ० बी० एन० रमन प्रोफेसर शरीर क्रिया विभाग (फिजियोलाजी) मडिकल फेकल्टी खारतूम यूनिवर्सिटी सूडान। सन् 1954 55 में मिडिल उत्तीण होकर निकला।

4 श्री नन्दलाल राठी, कुशल एव प्रतिष्ठित व्यापारी। धार्मिक एव प्रबुद्ध विचारो का व्यक्ति, 8 सितम्बर से 27 सितम्बर 1983 तक यूरोप की यात्रा करके आया। यह पश्चिमी देशो मे हरे राम हरे कृष्ण तथा वदिक दशन के प्रचारको द्वारा आयोजित की गई थी। श्री राठी की यह यात्रा जापान एयर लाइन्स के हवाई जहाज (जम्बोजेट) द्वारा पालम हवाई अडडे से आरम्भ होकर रोम, इटली स्विटजरलड फ्रास इगलड हालड जमनी आदि देशों मे प्रत्यक्ष दर्शी विचारक के रूप मे बहुत ज्ञान वद्धक रही। आठवी पास होकर बढा।

5 श्री जुगलकिशोर नाहटा, रिजिनल मनेजर। ईस्ट इडिया ट्रांसपोट एजेन्सी, दिल्ली। सन् 1958 59 मे हायर सकेण्डरी करके बाहर गया। राज० हरियाणा पजाब जम्मू कश्मीर, दिल्ली, नाथ यू पी का रिजिनल मनेजर।

6 श्री लाभचद साड, बक मनजर, नाहर। सन् 1956 57 म कालू स्कूल से पढकर बढा।

7 श्री अमनाराम शमा (ज म स० 2004) वरिष्ठाध्यापक हायर सकण्डरी स्कूल नापासर। सन् 1959 60 मे हायर सकण्डरी करके निकला।

8 श्री आसाराममल राठी (ज म स० 2004) उप सरपच। मृदुभाषी व्यवहार

कुशल, समाज सेवी तथा प्रसिद्ध लोकप्रिय। सन् 1963 म हायर सकेण्डरी करके निकला।

9 सुश्री विजयमाला जी (ज म स० 2007) पुनीत चरित्रात्मा साध्वी। सन 1962 63 मे कालू स्कूल से प्राइमरी करक पारमार्थिक शिक्षा सस्था सीठी से 1969 म प्रशिक्षित दीक्षित हुई।

10 डा० किरणच द नाहटा (ज म सन् 1946) प्रवक्ता राजकीय महाविद्यालय सरदारशहर। वहाँ की अनक सस्थाओ मे कायकर्त्ता। सन 1963 म गाव की हायर सकेण्डरी से दीक्षित हाकर बढा।

11 श्री बशीलाल खाडल—उप प्रब धक राजस्थान वित्त निगम जयपुर। सन 1963 मे कालू से हायर सकेण्डरी उत्तीण करके बढा।

12 श्री सोहनलाल बाड—ए सी ए कलकत्ता (ज म स० 2003)। सन् 1963 म कालू हायर सैकेण्डरी उत्तीण करके बढा।

13 श्री जोराराम गिया (ज म सन् 1947) प्रवक्ता राजकीय महाविद्यालय सरदार शहर। वहाँ बहुत सी सस्थाओं मे कायसलग्न। गाँव से सन् 1965 66 मे हायर सकेण्डरी करके गया।

श्री सोहनलाल बोथरा (ज म सन् 1952) आर ए एस, प्रशासकीय सेवा मे कायरत, श्रीगगानगर। सन् 1968 69 मे हायर सकण्डरी होकर ऊँचा चढा।

15 श्री बच्छराज कोठारी एडवोकेट बीकानेर। सन् 1962 में रा उ मा विद्यालय कालू से हायर सकेण्डरी करके बीकानेर पढा।

16 श्री शिवराज मस्कर्ता, एम ए, एडवोकेट। सन 1972 मे हायर मकेण्डरी करके आगे बढा।

17 श्री सीताराम खाडल मुद्रा परीक्षक भारतीय, रिजव बक जयपुर। सन 1970 म हायर सकेण्डरी करके गया।

18 डा० ओमप्रकाश मेडिशियन डॉक्टर, सीकर। सन् 1970 मे सकण्डरी पास करके बीकानेर पढने लगा।

19 डॉ० अमोलखच द गोलछा (ज म सन 1955) रा० भ्रमणशील चिकित्सालय लूनकरनसर। (ज म सन 1970) कालू हायर सकेण्डरी स्कूल स आगे बीकानेर पढा।

20 श्री तीथराज मस्कर्ता तहसील पचायत समिति मे गाव कालू का प्रथम एम ए अध्यापक। सन 1969 70 म कालू स हायर सकेण्डरी करने के पश्चात।

21 श्री शुभकरण नाहटा, मनजर दुग्ध उत्पादक समिति राजस्थान कार्यालय जयपुर। सन 1969 से बाहर जाकर बना। बीकानेर वालो के लिए श्री नाहटा शुभचि तक जयपुर प्रवासी है।

कालू स्कूल से (बाहर के) पढकर गये हुए छात्रो मे से श्री रामेश्वरलाल, मुकुनाराम आदि अनेक वकील बने हैं। आफिसर और धनवान भी बहुत हुए हैं।

रा० उ० मा० विद्यालय कालू मे रहकर गये, उच्च पद प्राप्त अध्यापको के नाम हैं —

स्थान मे	नाम	पद	सीधे प्रान त हुए	पद पर गये
रा० उ०मा०— वि० (कालू)	रामकुमार पाण्डेय	(व० अ०)	जसलमेर	(प्र० अ०)
,,	कृष्ण मोहन व्यास	(व० अ०)	इन्टलिजन्स ब्यूरो आफिसर	(बगाल)
,,	लक्ष्मीनारायण मिश्रा	(व० अ०)	एस० डी० एम०	(राज०)
,,	सुन्दरलाल थानवी	(व० अ०)	जसलमेर	(प्र० अ०)
,,	गोपाल चन्द्र चतुर्वेदी	(व० अ०)	अनूपसर	(प्र अ०)
,,	रामचन्द्र सोलकी	(व० अ०)	मेहरासर (उ०)	(प्र० अ०)
,,	महावीर प्रसाद	(व० अ०)	नागोर का गांव	(प्र० अ०)
,,	गोविन्दलाल व्यास	(प्र० अ०)	टाक, जिलाशिक्षा अधिकारी	
,,	कनल कानसिंह	(प्र० अ०)	T T कॉलेज (बीका०)	प्रवक्ता
,,	सत्यनारायण माथुर	(प्र० अ०)	T T कालेज (बीका०)	प्रवक्ता
,,	चन्द्रकान्त शर्मा	(व० अ०)	T T कॉलेज (बीका०)	प्रवक्ता

स्थान मे	नाम	पद	स्थानान्तरण शृ खलित प्रोन्नत हुए	(पद)
रा० प्रा० वि०—	पुष्करदत्त शर्मा कालू	(स०अ०)	डूगर कॉलेज (बीका०)	सस्कृत विभागाध्यक्ष
रा० उ० मा०— वि० कालू	भैरू दान चारण	(प्र० अ०)	गगानगर जिला शिक्षा	अधिकारी
,,	दिवाकर शर्मा	(स०अ०)	डूगर कॉलेज (बीका०)	सस्कृत के व्याख्याता
,,	आर० के अग्रवाल	(व० अ०)	मा शि बोड राजस्थान म	अधिकारी
,,	मोती सिंह राठोड	(व० अ०)	जयपुर	आचाय
,,	हरि गोपाल	(व० अ०)	बीकानेर	(प्र० अ०)
,,	दुलीचन्द स्वामी	(व० अ०)	जज्झू	(प्र० अ०)
,,	बनवारीलाल शर्मा	(व० अ०)	दूधवा खारा	(प्र० अ०)
,,	गौरी शकर जोशी	(व० अ०)	मोमासर	(प्र० अ०)
,,	माधोराम चौधरी	(व० अ०)	रासीसर	(प्र० अ०)
,,	उत्तम सिंह	(व० अ०)	पीलीबगा	(प्र० अ०)
,,	हरफूल सिंह	(व० अ०)	गगानगर जिले म	(प्र० अ०)

स्थान से	नाम	पद	स्थानान्तरण शृ खलित प्रो नत हुए	पद
रा० उ० मा० —	अचल सिंह	(व० अ०)	विद्यालय	(प्र० अ०)
वि० कालू	रामनारायण चौधरी	(व० अ०)	नापासर	(प्र० अ०)
,,	मोहम्मद सदीक	(व० अ०)	उदासर	(प्र० अ०)
,,	प्रेमरतन आचाय	(व० अ०)	छतरगढ	(प्र० अ०)
,,	श्याम सुन्दर स्वामी	(स० अ०)	RTS परीक्षा उत्तीण हुए	

,, मूलचन्द स्वणकार शिक्षा वि० कार्यालय मे बडे बाबू हैं।
,, शिवलहरी नागर व महात्मा आदि भी (प्र० अ०) बन हैं।
,, महादेव प्रसाद शिक्षा वि० म अधिकारी।

पटवारियों मे कालू के श्री मोहनलाल पारीक सबसे पुरान राज्य कर्मचारी हैं। मोहनलाल पहले पहल ठिकाना छत्रगढ के पटवारी (ई० सन् 1942) म बन थे। इसके बाद ठिकान न रहने के कारण ई० सन्० 1950 म राजकीय पटवारी क पद पर परिवर्तित हो गए। अब तीन साल से श्री पारीक सेवानिवत हो गए हैं। श्री लाधूराम म नि अध्यापक का जेष्ठ पुत्र श्री हनुमानमल पारीक श्री गगानगर जिले म पटवारी है। श्री लाभूराम नण आर सी पी तहसील लूनकरनसर म पटवारी है। श्री बाबूलाल पारीक थाडे साल पहल पटवारी बना है। (श्री शिवराज मस्कर्ता ई म 1969 के पटवारी प्रशिक्षण म उतीण होकर नियुक्ति आडर लाया, लेकिन वह अपनी रूचि विपरीत सर्विस मे नही जा पाया। कालू के पटवारी लोग बडे सभ्य एव व्यवहारिक पुरुष हैं। अपन हलके की जमीन और उसकी मालगुजारी का पूरा लखा जाखा रखन म बडे माहिर हैं। सारे राज्यादेशित कार्यों मे चपल, चुस्त व होशियार रहते हैं।[1]

ई० सन 1941 म स्व० श्री जयनारायण पुत्र चेतराम जी पारीक ने श्री डूगर कॉलेज बीकानर के प्रथम बच (Batch) से एफ० ए० की थी। स्व० श्री जयनारायण को तीस रुपय माहवार पर शिक्षा विभाग बीकानर क डाइरक्टर श्री जुगलसिंह खाची ने अध्यापक पद के लिए नियुक्ति पत्र दिया था। मगर श्री पारीक शिक्षा विभाग म न जाकर उसी साल बक की सर्विस म चला गया। वह पहले पहल पारीक बक म लगा था। स्व० श्री सुरजाराम पुत्र श्री कोडाराम पारीक भी उसी वप बीदासर के स्टट बक बीकानर मे क्लक बना था। मोहनलाल पटवारी का लडका दुर्गादत्त राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की सेवा म बस कन्डेक्टर है।

श्री भरूदान ओझा ग्राम पचायत कालू म प्रधान सेक्रेटरी क पद पर नियुक्त है। ओझा इस काय क लिए बडा योग्य एव अनुभवी व्यक्ति माना जाता है। जमीन का हो न्याय का हो तथा किसी निर्माण हतु काई रचनात्मक काय चलता हो श्री भरूदान की जानकारी तथा पटुता की सब स्थानो पर प्रथमावश्यकता रहती है। मैं तो कालू क विकास कार्यों बावत श्री ओझा को पुरोहित मानता हूँ कि वतमान समय म उसी के द्वारा सारे गाँव के भवन निर्माण कार्यों म नाप नक्शे का श्री गणेश ओझा के हाथो से होता है तथा ओझा द्वारा गाँव का मानचित्र भी बनाया जा चुका ह।

देवीलाल खाण्डल देवीलाल खानी तथा जुगराज सस्कर्ता आदि सरकारी कर्मचारी हैं। श्री मोटाराम ज्याणी कालू ग्राम सेवा सरकारी समिति मे व्यवस्थापक है। मूलचन्द शर्मा और बाबूलाल पाडाण दुग्ध उत्पादक समिति म हैं। श्री गोवधन सोनी सहायक अभियन्ता और हरिकिशन करनानी कनिष्ट अभियन्ता (सा० नि० वि०) क्रमश बीकानर और नोहर हैं। सुशील कुमार बिरमेचा स्टेट बक ऑव बीकानेर एण्ड जयपुर (कालू) मे केशियर पद पर नियुक्त हुआ है। देवन्द्र कोठारी और निमल नवलखा भी बक एव कोट मे (क्रमश) बाबू हैं। श्री रघुवीर सिंह चौधरी अनुभवी ग्राम सेवक कालू का ही नागरिक है।

अपनी रुचि से दुबारा कालू आने वाले कर्मचारी—

1 गिरदावर—सव श्री बजनाथ, जगतनारायण, खेमचन्द।

2 पटवारी—हमराज लाय अमरजी अल्लादीन।

3 नकात थानेदार—इसूर्वा । डॉक्टर—नथमल दूगट ।
4 कम्पाउडर—बनेसिंह, क हैयालाल ।
5 वरिष्ठ अध्यापक—प्रेमरत्न, मान सिंह, माहम्मद सद्दीक, बनवारीलाल, रामचन्द्र, श्याम सुन्दर ।
6 ग्राम सेवक—रघुवीर सिंह ।
7 प० सक्रेटरी—भरू दान
च० श्रे० मेडिकल वि०—मथूराम आदि ।

उत्पादक अन्न दूध और ऊन—कालू म अनेक गहस्थ वयक्तिक पौटाम्बिक तथा सावजनिक जीवन के रूप म सेती क काय का अधिक महत्व दते आये हैं । अपना भारतवष कृषि प्रधान देश है जिसकी सारी आर्थिक उन्नति खेती पर ही निभर रहती है । अत गाँवा मे प्राय लोग खेतीहर होते हैं । फिर भी अन्न उत्पादन म बहुत से गाँव अभी तक आत्म निभर नहा हा पाये हैं । कालू म अन्न की ही खेती होती है और उसके लिए धन धान्य की कमी न पडने मे खेती करने की अच्छी व्यवस्था बनी रहती है । परन्तु यहाँ सिंचाई की सुविधा न होने मे वर्षा के अधीन रहना पडता है । वर्षा हो जाने पर भी फाके टिड्डी और कातरे जसे फसल के कीडा का प्रकोप बन जाता है । यहाँ के किसानो को पूरी तकनीकी जानकारी भी नहीं है । लेकिन कुछ किसान ऐसे हैं जा अपने इस पतृक पेशे को हर साल जी जान स सफल करने का प्रयत्न करते रहते हैं । ऐसे लोगो म ईशरराम पुत्र श्री कानाराम गोदारा कालू मे प्रथम श्रेणी का किसान है । ईशरराम के सुधारे हुए खेत नाली के खेतो की होड लिए हुए रहत हैं । बीज भी वह पर्याप्त तौर पर छँटवा रखता है । उसके खेती के औजार और छटवे ऊँट रहाढ देखन योग्य हाल हैं । इसलिए कालू म ईशरराम सबस अधिक अन्न उपजाता है और उसके घर अन्न के कोठे भरे रहते हैं । वह कभी मजदूरी आदि कार्यो मे भाग नही लेता ।

कालू दुग्ध उत्पादक समिति म शुरू हाने से आज तक सबस अधिक दूध दन वाला व्यक्ति भी ईशरराम गादारा है । इसलिए श्री गोदारे का विशेष उद्यमी एव उत्पादक कहा जा सकता है । इस तरह के किसानो म पहले रतनाजी गोदारा भी बडा उद्यमी और अन्न उत्पादक था । मगर अब उसकी स्थिति पहले जसी नही है ।

कालू मे अनक किसान ऊन उत्पादक भी हैं । यहाँ की ऊन के भाव कभी कभी हजार रुपये मन तक याने ढाई हजार रुपये क्विटल के हो जाते हैं । यहाँ की ऊन छापर क्षेत्र की ऊन जसी होती है और एक वष सीजन की 40 क्विटल तक उत्पादित होती है । सीजन चैत आषाढ और कार्तिक तीन बार हाती है । कालू के इन ऊन उत्पादको म श्री बरनाजी नण के बेट ही अपने इस पैतृक पेशे मे मुख्य हैं । इस काय म पहले यहाँ श्री सुखाराम जाणी व फिर रामरतन भादू का नाम था । श्री आसूराम और उसके चारो भाई अलग स अपने अपन अेवड (रेवड) रखते हैं । किसी किसी के पास तो सहस्र सहस्र तक ऊन उत्पति की खानें भेडें एव बकरियो के जानवर हैं । यहाँ की भेडें अच्छे लाण देती है । इसलिए उक्त घराने म काफी ऊन उत्पति हाती है और चार भाई मकानादि से अच्छे मालदार हैं । अत कालू म इस समय नण परिवार नेह नीति से सब भाँति विशेष सम्माननीय अन्न व ऊन उत्पादक हैं ।

घी और ऊन के पुराने व्यापारी—कालू म पहले घी और ऊन के व्यापारियों मे श्री मालूराम सारस्वत गोपालदास बरागी, गणेशा गोदारा, गिरधारी जोंणी और मुगता राम पारीक थे। उनकी घी की कुप्पियां और ऊन की बरकियों की ऊँटो की कतारें सदी हुई चलती थी।

कालू के जागरूक वाक्पटु एव हास्य प्रधान व्यक्ति—कालू के निवास का महत्व कई दृष्टियों से बहुत ही महत्वपूर्ण माना जा सकता है। पहला मीठे पानी की बहुतायत के दृष्टिकोण से दूसरा स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से तीसरा सुख शान्ति क दृष्टिकोण से और चौथा वाक्पटुता तथा हास्य परम्परा के लिए। हम लोगों की सारी जिन्दगी हवा के माफिक गई, हँसत बोलते मजाकिये मनुष्यो के साथ! किस किसके नाम बतायें? कालू के प्राय बहुत से लोग मानवता के परम मित्र हैं। उनमे हँसने बोलने का महान माधुर्य गुण रहता आया है। इसी गुणोचित काय से वे उन्नत हैं और उनकी मानसिक व शारीरिक शक्तियाँ प्रफुल्लित रहती हैं। हास्य; प्रेम का प्रतीक होता है। यह प्राणी की एक मात्र प्रतिक्रिया है जो प्राय अपनी बाह्य एव आन्तरिक परिस्थितियों द्वारा व्यक्त होती है। यद्यपि भडाण की तहसील लूनकरनसर, अनेक आवश्यकताओं के लिए अभाव भरा स्थान कहलाता है और उसी लूनकरनसर तहसील का गाँव कालू है। वह तहसील के एक कोने मे बसता है और यातायात के साधनो से बिल्कुल वंचित रहता आया है। वहाँ न नहर है, न ही रेल। विकास के आधुनिक साधनो से काफी दूर रहकर भी तहसील का वह अग्रणीय गाँव कहलाता है। शिक्षित चुस्त, जागरूक और अटकल-मान-खुशहाल यहाँ के व्यक्ति होते हैं। उदाहरणार्थ यहाँ रामनवमी वि स 1992 ई० सन 1936 मे श्री सेवा सदन सरस्वती पुस्तकालय स्थापित हो गया था। जबकि श्री डूगरगढ मोमासर नापासर लूनकरनसर सूरतगढ आदि, कस्बों के लोग उस समय इसके लिए आश्चर्यान्वित होते थे। बीकानेर, नोखा और सूरतगढ के साथ जुलाई सन 1956 से यहाँ राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चलता है, वह तहसील मे पहला है। वि स 2021 से राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य एव चिकित्सा केन्द्र है सो यह तहसील मे एक है। जलदाय विभाग भी इसी समय से स्थापित है और अनेक समितियाँ आदि सुखदायक मुख्य सस्थान हैं। अत यह सकते हैं कि कालू के सब निवासी निर्भीक, वाक्पटु साम्य एव शिक्षित हैं कि उन्ही के विकासकारी स्वभाव से ये सस्थाएँ स्थापित हो पाई हैं।

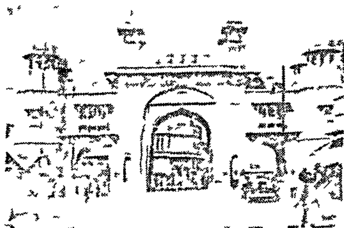
नीचे कुछ वाकपटु प्रत्युत्पन्नमति एव हास्य प्रधान व्यक्तियो के नाम दिये जा रहे हैं—स्व श्री प० चेतराम पारीक, मूलचद वद, बीसराज वद सुगनमल बोरड लाभूराम भादू आदि लोग, कस्बे कालू मे बडे जागरूक एव वाक्पटु हुए हैं। प्रत्युत्पन्नमति एव हास्यास्पद व्यक्तियों मे गाँव के सब वग के लोग आते हैं। जसे—उमाराम सारस्वत रावतराम (पुत्र मदाराम) सेवग, तेजाराम भाट, कालूराम वर्मा धनाराम सुनार गोपालराम सुनार अमरदास (स्वाँग मे), धोकलराम मया व भरा नण आदि गाँव में हसोड व्यक्ति माने जाते थे। किसी बात को बढा चढाकर सुन्दर ढग से कहने वाले नामजादीको म स्व० श्री हरखाराम सेवग, मूलचन्द वर्मा, पुरखाराम (अगूणावास), प्रभु-राम सारस्वत स्व० बुधमल नाहटा, भीखमचन्द नाहटा स्यामाजी चौधरी वगरह श्रीमानो के प्रमुख नाम रहे हैं।

वतमान समय मे सावजनिक कार्यों के लिए गाँव के सारे नेता तथा पच हर समय जागरूक रहते हैं और ग्राम पचायत का कमचारी गोपालराम सेवग भी अपने काम मे सतत सावधान व्यक्ति है। नाटक में सिंचियालाल सिंघी एव उदयचन्द बोथरा आदि मजाकिये कलाकार पुरुष हैं। बद्रीराम सेवग सम्पत सारस्वत तथा मघाराम गुजरगौड बोलाक एव हसोड व्यक्ति हैं।

कालू के चित्रहप रसिक पुरुष—सुन्दरता म प्रकृति एव परम पुरुष, विष्णु लक्ष्मी तथा राम सीता रूप निधान सवमा य है। अत अफलातून की उक्ति है—इस पृथ्वी पर हम सुन्दर वस्तुओ से इसलिए प्रेम करते हैं कि हमारी आत्मा ईश्वरीय सौन्दय की खोज मे भटक रही है। इस पृथ्वी की समस्त सुन्दर वस्तुओ मे चिरन्तन सौन्दय ही प्रतिबिम्बित हो रहा है। अतएव सुन्दर वस्तुओ का उपयोग सोपानो के रूप मे करके ही मानव, परम सौन्दय के बोध तक पहुँच सकता है। भारतीय विचारको ने भी महसूस किया है कि जगत मे दृष्टिगोचर होने वाला सौन्दय परमात्मा के निरपेक्ष तथा अनन्त सौन्दर्य की एक झलक मात्र है।

भारतीय पक्ष के अनुसार सुन्दर का सबध केवल कला स माना जाता है। मनुष्य नेचर, कला प्रकृति की सर्वोत्तम कृति है। हाथी और गडे विशाल एव बलशाली, शेर और बाघ, शक्ति स्फूर्ति के समूह, कमल एव गुलाब के फूल सौन्दय तथा सुगध के पुज हैं। परन्तु मनुष्य इन स्थूल गुणो से परे प्रेम, करुणा, दया, परोपकार प्रभति परम अनूठी प्रवृतियों का मूत पुतला है, जो परमेश्वर की सवश्रेष्ठ कलाकृति मानी जाती है। ऐसी बहुवृति कलाकृति के रूप और सौन्दय के शृ गाराकषण वशात् कुछ अवलोकन वणन कर देने के मेरे इस प्रयास को सभवत कौन व्यथ बतायेगा ? मैं अपने सुन्दरता विशेष क्षेत्र के नगरों गाँवों की उज्ज्वल ज्योति म से मनोहर मानव रश्मियां प्रदर्शित करता हू।

सांध्य बीकानेर ! बाटद्वार जगमगाती बत्तियों की कतार ! किसी ने देखे हैं मतवाले अमीर, मिठाई बाजार तथा सोने से लदे खूबसूरत साहुकार ! ग्राहक दुकानदार



कोट गेट बीकानेर

ब्राह्मण और बनिये किस किसको पहचानें ? इक्के तांगे, गाडिया और साइकिलें आपस में उलझे जा रहे थे। तब उस भावुक हृदय ने कह दिया—

'दारू अमल मिठाइया, सोनो गहणो साह !
तीन थोक प्रिथ्वी सिर, वाह बीकाणा वाह !!'[1]

वैसे तो बीकानेर डिवीजन के सारे लोग विश्व विमोहन ईश्वर कलाकृति के सुन्दरतम नमूने हैं मगर डिवीजन का स्वयं नगर तथा चूरू, सरदारशहर, सुजानगढ, मोमासर और कालू के पुरुष तो प्राय चित्र माफिक ही खूबसूरत होते आये हैं। प्राचीन समय में इन स्थानों से बाहर दूर दूर बरातें जाती थी तब वहाँ के बहुत से लोग इन्हें देखने के लिए आया करते थे।

सामाजिक प्राणी होने के नाते हम अपने चारों तरफ फैले हुए इस नवयुग की उपेक्षा नहीं कर सकते, किन्तु साथ ही साथ पुराने जगत के रूप और सौन्दयवान जवानों को भी इसलिए नहीं भुला सकते कि मनुष्य पिता होने के नाते किसी नवीन उत्पत्ति का साधन बन जाता है। हमारे गाँव कालू के साथ भी यही बात हुई कि उन पुराने युवकों के अमीरी वस्त्राभूषण तो गये मगर शौकिनाई के नये प्रसाधनों की उपलब्धि ने गाँवों की रूप सुन्दरता को कम कर दिया है।

कालू की बरात किसी दूसरे गाँव जाती थी, तब वहाँ पर चार दिन तक ठहरती और वहाँ वाले बराती लोग अपनी रूप छटा को बिखेरने हेतु भाँति भाँति की दैनिक पोशाकें व गहने पहनते हुए वहां के लोगों को आश्चर्यान्वित व प्रभावित कर दिया करते थे। इस तरह के जवानों का कालू में एक सतत शौकीनों का समूह बना रहता था। लेखक की नजर मे समाये सुहाये यहां के कुछ सुन्दर नवयुवकों के नाम नीचे दिये जायेंगे जो जरूर दृष्टव्य होंगे।

महाराजकुमार श्री विजयसिंह जी के सुन्दर शासन मे कालू गाँव को अत्यंत सुस्थिरता और आंतरिक शांति मिली हुई थी। अतः उक्त समय सभी दृष्टियों से शासन का स्वर्णयुग माना जाता है। महाराज कुमार साहब का सब राज घराना सुन्दरता का अभिन्न अंग और अमूल्य वस्त्राभूषणों के कारण प्रत्यक्ष अमीरी व खूबसूरती की कीर्ति प्रस्तुत कर देने वाला प्रतीक था। उनके अपने आला अफसर भी हर समय सुन्दर ठाट-बाट से रहा करते थे। सकडो की तादाद मे उनके साफे, कोट, हैट और बूट ऊँचे दर्जे के साफ-सुथरी चमक के बने हुए रहते थे। ढाल बढिया तलवार और मोढे बन्दूक रहा करती थी। तब जनता की भी मूछ और पगडिया खुशी खुशी खिली रहती। कालू मे सेठ श्री सुगनमल नाहटा को राजसी पोशाक पहनने की अनुमति मिली हुई थी। उनके बेटे अपने घोडी टोरडा पर चढकर निकलते तब किसी राजकुमार से कदापि कम सुन्दर नही लगते थे। बडा लडका श्री लाधूराम अपने ललित लावण्य के कारण बडे शोभावान युवक थे। मझले रूपचन्द एव भीखमचद भी गाव गौरव के रूपवान नमूने थे। सेठ के अनुज श्री बनेचन्द का लडका बुधमल भी कालू की कल (मशीन) का अत्यंत नूतन शौकीन पुर्जा था। नाहटा परिवार में ही श्री चम्पालाल नाहटा तन मन धन से नसर्गिक रूपवान एव

1 संसार मे ऐसे थोडे शहर होंगे, जिन्हें स्वाभाविक तौर से इतना सौन्दय उपलब्ध हुआ हो—जितना कि बीकानेर को है।

मनहर नौजवान था। इनके सावजनिक सौदय समूह मे सतोपचन्द नाहटा, जयचदलाल विरमेचा, तोलाचद साड, बालचद फतेचद आदि धनक नौजवान भी सम्मिलित होते रहते थे। माहेश्वरी समाज के श्री मोहनलाल बागडी, काशीराम राठी, कन्हैयालाल डूडाणी आदि भी सौन्दयवान नवयुवक थे।

राजस्थानी म जिसका रुप का डला कहने की कहावत प्रचलित है, ऐसा रूपवान स्व० श्री गिरधारीलाल भवर था। जाटो मे चौधरी कालूराम डोगवाल स्व० श्री उमा राम सारस्वत, गोपालराम सुनार, बालूराम सस्कर्ता सुदर जवान थे। ठाकरसीराम खडेलवाल (A) भी अच्छे आकपक युवक रहे हैं। रामस्नेही गोपालदास स्वामी जसे सुदर, अनूठे एव अनुपम साधु थे। अब श्री जेठमल राठी मेघराज साड, माणकचद कोठारी, मोहनलाल भवर, श्रीराम खडेलवाल, इन्द्रचद राठी, भोमराज नाहटा, भवर लाल राठी, कन्हैयालाल सिंधी, जुगराज बोरड, जुगराज सस्कर्ता आदि बहुत से सुदर जवान गाँव शोभा बढाने मे अग्रणी हैं। पक्के रग मे श्री भवरलाल कर्वा, भीखमचन्द सेठिया व सुशील बद (किशोर) विशेष दीदारू (देदीप्यमान) हैं। मास्टर जेसाराम जाणी भी इसी श्रेणी मे है।

नही मोहताज गहन का जिसे खूबी खुदा न दी।
कि जसे खुशनुमा लगता है देखो चाद बिन गहन ॥ (गुलाम सुराई)



स्व० महाराज कुमार विजयसिंह जी
छतरगढ़ नरेश



छतरगढ़ पट्टा के सुपरवाईजर
श्री हरिसिंह (सत्तासर वाले)

कालू मे सुसस्कृत, सयानी और धर्मपरायण महिलाए—कालू मे शिक्षा प्रसार की उत्तरोत्तर उन्नति हो रही है। इस उन्नति मे स्थानीय महिलाओ का पर्याप्त योगदान है। यहाँ की समझदार महिलाओ ने अपने बालको मे और विशेषकर बालिकाओ

मे शिक्षा के प्रति भरपूर उत्साह उत्पन्न कर दिया है। गाँव की बालिकाओं म इस तरह पढने की भारी आवश्यकता थी कि उनके प्राचीन गाँव गौरव का सुरक्षित रखन के साथ-साथ माँ महिलाओ में सलग्न सेवा भाव भी जाग्रत रखा जाय, ताकि वे प्राचीन कहावत क अनुसार— "नान बकी गौरियाँ" बनी रहें।

राजस्थान की महिलाएँ शक्ति आगार कष्ट सहिष्णु मानवता की जन्मदात्री पवित्रता की प्रतिमा प्रकृति की कोमलता का उज्ज्वल उदाहरण, आदर, स्नेह, वात्सल्य व धर्म क्रिया का प्रत्यक्ष प्रकाश तथा त्याग सेवा की प्रतिमूर्ति होती आई हैं। आज की महिलाएँ तो यहाँ सत्य, शिव, सु दरम' की जीवित कल्पना एव ब्रह्म का स्पष्ट व्याख्या-स्वरूप नव्य नमूनों का समन्वय है।

कालू की माताएँ अपनी लड़कियों को ज्ञान देती हैं कि पढ़ो लिखो और समाज सेवा कर्त्री बनो। माता पिता की, भाई बहिन की तथा तमाम मानव समाज की सेवा करने में ही कल्याण है। यहाँ की सहेलियों का वार्तालाप है कि स्वामिया की सेवा श्रेष्ठ मानी जाय। सास बहू से, ननद भौजाई से और बहिन-बहिन से सब सेवा का ही उपदेश देती रहती हैं। इसी सेवा ज्ञान की महत्ता को समझ कर यहाँ की अनेक कुमारियाँ उच्च शिक्षा मे अध्ययनरत हैं। कालू की एसी कुमारियाँ ही प्रवीण नहीं होतीं, आदर्श माताओं की सीख पर कुमार भी सेवा शिक्षा सुविज्ञ विद्यार्थी हैं।

प्राचीन समय मे यहाँ की औरतें अधिक शिक्षित नही हुआ करती, मगर सुसंस्कृत इतनी हुआ करती थी कि यहाँ की कुछ औरतें मरदानी महिलाएँ कहला चुकी हैं। सामाजिक कार्यों के सिवाय बाल कल्याण भावना म कालू की औरतें बडी प्रसिद्ध हुई हैं। यहाँ बालक का भाग्य सदव उसकी माता के द्वारा निर्मित होता है। दी फ्यूचर डेस्टीनी आफ दा चाइल्ड इज आलवेज दी वर्क आफ दी मदर। [1] बालकों के लिए माता से बढकर कोई गुरु नही है— नास्ति मातृ परा गुरू।'

कालू की महिलाएँ धार्मिक भावना म भी पीछे नही रही हैं। वि स 1854 के पास श्री बद्रीदास राठी की धमपत्नी श्रीमती शारा दवी (जतपुर के पेडीवाला की बटी) ने गाव के बीच पचायती का मदिर बनवाया। उसी समय म श्रीमती हरिया देवी विराणी न जन क 8वें तीर्थकर चन्द्र प्रभु का मदिर घर की जमीन दकर बनवाया। उसी परम्परा म श्री तानाचन्द साड की धमपत्नी सुगनी देवी न माता जी के मन्दिर म कमरे, वरामदा और रसोईघर आदि बना कर दिय। सुगनी दवी न रा० उ० मा० विद्यालय म भी एक कमरा बनवाया है। श्री अलाय चन्द सांड की माता श्रीमती वादूदेवी न डाकघर कार्यालय बनाकर सरकार को दे दिया है। श्रीमती कमला नाहटा के कमला भवन म जन स तो का चातुर्मास होता है। श्री शेरमल डूढाणी ने अपनी माता और धमपत्नी के नाम पर अनेक सस्थाओ मे कमर बनाकर कालू की धार्मिक महिला-मनोवृति को उजागर किया है।

कालू मे बसे भजनीक और भगवान भक्त महिलायें बहुत हुई हैं। गाव के ब्राह्मणो और माहेश्वरियो मे ऐसी धार्मिक अनेक महिलाएँ हैं। रूपा मासी घाटी मासा और नोपा मासी सब पारीक बडी भजनीक देविया थी। पर लेखक की पूज्य नानी जी

---

1 वीना पाट।

जनमादेवी एव माता जी श्रृगारा देवी दो दो रात तक जागरण जम्मो मे दूसरे दूसरे भजन गाये देती थी। व स्नान किये, मदिर गये बिना (चाहे कितनी देर भी हो) रोटी नही खाती। अब लेखक के घर जुगराज की माँ उसी आखिरी परम्परा पोटी मे हैं।

पहले यहाँ बालको मे ओरी माता, आँख दूखनी पाँव, झरी, ओदरी पोदरी आवडे काकडे, पाणीझरो ऊपरलो उसळनी, खुलखुलियो, रत्तानडी लीवर, पिल्ली, कोडी, कमेडा, कनमूल, गळ गळगट्टा, उल्टी दस्तादि असरय रोग चलते थे। इन सबके लिए यहाँ की महिलाएँ ही वद्य डाक्टर का सफल काय किया करती थीं। उनको नाडी (नब्ज) देखने का अच्छा ज्ञान रहता और देशी दवाइयो के काफी धासे घूटिये और सपयुक्त उकाली उतारें, डोरे जत्र आदि जाना करती थी। वे वृद्ध पुरानी औरतें, जापे-सवाड वाली जच्चा के लिए परम हितर्पिणी हुआ करती थी और बच्चा की पालन कर्त्री व तपस्विनी धाय! कालू मे आज भी ऐसे वसे अवसरा मे तुरन्त श्री जयचन्द लाल वैद की मा, सुगनचन्द जी नाहटा की सेठाणी, बनेचन्द नाहटा की धमपत्नी और भैरूदान साड की बहू आदि के नाम-काम याद आ जाते हैं। श्री कालूराम साड की बहू, बाली बाई और चुन्नी बाई (गिरधारीलाल नवर की बहिन) तथा सो भवरी देवी सस्कर्ता (C.H W) वगरह कुछ देवियाँ आज भी बालका की नब्ज की जानकार है। सीताराम मास्टर की माँ और मघाराम मारस्वा की बहू के मुँह परचे देवी देवता बोलते हैं, जिससे बालका की पीडा दूर होती है। कुछ औरतें थुथकारा झाड फूक तथा पीलिये के डोरे भी करती हैं।

कालू म सुधारवादी और सामाजिक कार्यों म चदा दात्री कुछ महिलाए भी है। जैसे—सीताराम झवर की माँ चौथी देवीजी नाहटा और भागजी वद की बहू। मगनी नवलखा, मुलतानी बाई और जेठी बाई जन धम की आदश श्राविकाएँ हैं। मजू सेठिया यहाँ धार्मिक सभाओ मे बोलने वाली लडकी है।

एक ममतामयी महिला—निमगत महिला गुण गण सिरमौर, महान व्यक्तित्व की धनी श्रीमती मथुरादेवी का जन्म आज से 78 वप पूव वि० स० 1961 म उदरासर (चूरू) निवासी श्री जीवणरामजी पुत्र ग्यानीरामजी लखोटिया के घर श्रीमती चादादेवी की कुक्षि से हुआ था। आपकी जन्मजात माधुय गुण विशिष्टता एव सुकुमारता के कारण आपका नाम भी हिन्दी व्याकरण के आंतरिक भाव पोषक पवग के अतिम स्पश व्यजन म से कु मथुरा रखा गया। आपकी माताजी ने वात्सल्य भाव के आधिक्य से निगरानी पालना और सस्नेह आपका बचपन बनाया। उस समय से ही बाल सुलभ भावो म आप भक्ति, विनय और विवेक का विशेष पालन करती आई हैं। भगवान के भजन तथा कथा बचन श्रवणकर आपका मन सदव तप्त आनदित रहता है।

13 वप की वय म आपका विवाह कालू के प्रमुख सेठ श्री रघुनाथ दास राठी क द्वितीय आत्मज श्री लालचद के साथ क्षत्रीय आनदोल्लास सहित सम्पन्न हुआ। कन्या भावनाओ से पृथक होकर ससुराल परिवार की नूतन परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाने के साथ विनय और विवेक को आपने अपनाये रखा। बडे धय क साथ ससुराल परिवार की रीति रिवाजो मे आप आदशता की काय सवृद्धि करने लगी। मात पित तुल्य सास श्वसुर की सेवा, देवर-जेठा के लेन देन सबधी अनूठे आदेश, नणदा की स्नेहस्निग्ध

आनाएँ और अय जनो के लिए भी आपका जीवन हर क्षण हर पल अन्तमु खी बना रहा है। जब भी काइ पारिवारिक जन आकर मिला आपका हृदय सच्चे स्नेह स भरपूर हो गया।

उपयुक्त कद, गौरवण हल्का शरीर, चौडा ललाट आत्मा अवलोकती ऐनकधारी आखें, हितमित सत्य धीमे बोल, विनय झुकी सुगति शात गभीर मुख मुद्रा—श्रीमती मथुरादेवी जी का भद्र परिणामी वेश वि यास पूण प्राचीन समता सस्कृति सयमित, घाघरे ओढन वाला है। पर कभी कभास तीथ व्रत के समय साडी भी काम ले लेती हैं। आपके निमल हृदय की आभा से निरतर स्नेह शालीन गुणी भाव प्रकट होत रहत हैं। इसलिए श्रीमती मथुरादेवी जी न सारे परिवार के लोगों को अपन विश्वास मे लकर शिक्षित एव सुव्यवहारिक बनाये हैं। जेठमल नदलाल जसे सत्पुत्र ही नही, मथुराजा की पुत्र वधुएँ भी अपन जीवन पर अपनी महान दयालु साम की गहरी छाप लगाय हुए परिवार की नतिक जिम्मेदारियां निभाती हैं। पुत्रियाँ श्रीमती भत्तू और सावित्री दा हैं।

किसी को भी अपन घर का सुखी घर बनाता है तो मथुराजी जसी बडी बुढियो के स्वतत्र व्यक्तित्व को अपने म बसा कर विकसित करना हागा। मुझे एक वृद्ध भक्त कवि का कथन स्मरण है जो दष्टव्य—गाँव नापासर क भक्त, वद्ध कवि गोविंद दान जी का देहावसान हुए पूरे पच्चीस वष हो गये हैं। वे कालू आते तब श्री लालचद जी राठी के घर ठहरा करते थे। मेरे घर भी उनका अनुराग अपनत्व था मिलन आ जाया करते थे। खान के लिए पूछन तब वे बताते थे कि लालचद राठी के घर आता हूँ। वही स्नान पानी सँध्या वदन करता हूँ। दो घडी एका त कान बठकर माला फेरता हूँ, तब तक सेठाणी (लालचदजी की धमपत्नी) मुह मे पानी नही लेती। मुझे खाना खिला करके ही सदव स्वय खाती है। आतिथ्य सत्कार की साकार मूर्ति है।" वे जब तक जीये कालू मे इन्ही के घर आय गये। काई भी एकाकी जीवन एक बारगी इनके घर आकर आश्रित हो गया, देवीजी के स्वभाव खुश, जीवन भर यही रहा। शिशुपाल पारीक की वद्ध एव अस्वस्थ माता जिसका इकलौता बेटा इस ससार स चला गया। उसकी अनाथ आखें इधर उधर आश्रय ताकती हुई लालचद राठी क घर लाई गई। उसके जीवन में मथुरा देवी ने पुत्र स्वरूप सवाएँ की। होली, दीपावली अथवा कोई भी छोटा मोटा भोज्य पदाथ बनता, तब मथुराजी द्वारा पहले पहल उस बुढिया का प्रसाद चढाया जाता था। मथराजी न दुभांत का इस घर मे नामो निशान मिटा दिया है। एक बार एक परित्यक्ता बहिन इस राठी परिवार म रसोईदारिन के रूप म रहन के लिए आई। किन्तु किसी कारणवश उसे इस घर से जाना भी पड गया। मथुराजी को बीच मे चले जाने का बडा रज हुआ।

आपकी अभिरुचि सव-सुखदायक है। नि सदेह इसके लिए पूरे परिवार की सफलताएँ आपकी देन हैं। आप मात्र भीतर से ही उत्तम नही बाहर से भी बहुत धर्म दक्ष व्यवस्थित हैं। लगता है विधाता रूपी कलाकार ने अपने भडार के सारे गुण गण आप में लगा दिये हैं। जिस किसी का भी आपके दशनों का वास्ता पडा है, वह आपकी बडाई का कथन करता ही गया है। फिर भी मथुराजी सादगी की मूर्ति हैं और अभिमान का आप मे नाम तक नही है। यह लिखने की नही केवल दखने की बात है कि मथुराजी

का मन सच्ची माँ का मन है। ममता इनके दिल मे गाडों भरी हुई है। इनको हर किसी के छोटे से छोटे अभाव का भी अहसास होता रहता है। इनकी आखें हर किसी की मजबूरी म गीली हो जाती हैं। ये लडकियो की शादी के समय दुबलो की स्थिति का बहुत ध्यान रखती आई हैं। एक बार गाँव नाथूसर के एक बाम्हठ परिवार की लडकी का सु दर वस्त्राभूषण एव दहज सहित सारा व्यय बडे कारुणिक ढग से अपन आत्मज को कह कर सम्पूण करवाया था।

पति की चरित्र स्वरूपा अर्धागिनी, सतान की ममतामयी माता समाज की आदश पथ प्रदर्शिका तथा प्रत्येक प्राणी क लिए क्षमा दया बरसाने वाली महा प्राकृतिक स्वभाव, कस्बा कालू निवासित महिला, दिव्य लीला श्रीमती मथुरादेवी राठी हैं। आपका स्नेह, धय शालीनता तथा मधुर बचन, गाँव के जन मन पर मढे हुए हैं। आप सरीखी शुद्ध मति गह लक्ष्मी जिस घर म विद्यमान हैं, वह सुगह वसुधा पर स्वग है।



श्रीमती मथुरा देवी राठी

कालू मे सिंह सतान एव दत्तक—ससार के सारे जगत व्यवहार सतति प्रधान मा यता के अनुसार ही चलते हैं। सुपुत्र भारतीय गहस्थी की सर्वोत्तम वस्तु मानी गई है। वही पिंड दाता तथा मा बाप को सब सुखों का देने वाला होता है। शक्ति प्रीति धनोपाजन, वश विस्तार, कुल कीर्ति लोक परलोक प्रभति सभी शुभ काय प्राय सुपुत्र हेतु ही दृष्ट य होते हैं। नि सतान दम्पति के शुष्क जीवन को हरियाने वाली अनेक की अपेक्षा एक सतान शक्ति ही पियूष धारा है। 'अ ये सबध सयुक्ता शोक सतापदायका।' (पदमपुराण भूमिखड 17 27 25) अथात अनेक पुत्र तो ज मकर शोक और सताप ही देते हैं। इसलिए एक पुत्र सिंह सतान कहलाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है—"पुत्रवती जुवती जग सोई। रघुपति भगतु जासु सुत होई॥' अर्थात सुपुत्र शब्द म जो पवित्र प्रगति के भाव हैं वसी सतान उत्प न होने से मनुष्य के परम पुण्य प्रकटित होते हैं। कालू म कतिपय ऐसे एक सतानो वाले अनेक भाग्यशाली माता पिता हैं।—सेठ फूसाराम जी क्षवर सुत श्री तुलसीराम जी का पहला विवाह सरदार शहर के पास वाले राजासर मे हुआ था। लेकिन वह पत्नी नि सतान ही चल बसी। दूसरा विवाह जयमल सर म हुआ, कि तु चार पाच वर्षों तक सतान नही हुई। नारी का पत्नी रूप से अधिक

सर्वोत्कृष्ट महत्त्वपूर्ण और गौरवशाली स्वरूप उसके मातृत्व में ही होता है। शुद्ध, सात्विक, धार्मिक एवं भक्तिरूप आचार विचार में ही पुत्र लालसा वाली माताएँ अपने उदर में वीर, बुद्धिमान, चतुर तथा विश्व हितैषी सुपुत्र रख सकती हैं? पवित्र, मानवान, भक्तिमान और योगी स्वभाव वाला पुत्र उन्हीं के होता है। नहीं तो— "कुलम गोमद्दन सुत"।

झवर दम्पति ने भी सद्गुण सम्पन्न पुत्र उत्पत्ति के लिए पण्डितों द्वारा बड़े मनन के साथ 'श्री हरिवंश पुराण' सुना। दान-दक्षिणा एवं सम्मान सहित जप तपण भोजन करके ब्राह्मण भोजन करवाया। भगवान से प्रार्थना की—'हे दयामय! सुन्दर, सद्भाव-सम्पन्न, चरित्र सदाचारी मेधावी और आपका भक्त हो ऐसा पुत्र देने की अनुकम्पा करें। मातृ भावना की ओर से विशेष व्रत-उपवास गुरु आशीष लेना देव दर्शन और दान-दक्षिणादि के साथ हुए। तब सचमुच सिंह पुत्र का जन्म हुआ जो गोभवन श्री मोहनलाल झवर है। बचपन में धारोष्ण दूध, फल और बादाम काजू से उसका पालन-पोषण हुआ। वह चतुर कुल को सन्तुष्ट करने वाला स्वजनों पर स्नेह सम्मान वाला गो सेवक और मात पित भक्ति परायण युवक है। इस तरह की सिंह सतान श्री लालजी के भवरलाल रामदयाल का नरसाराम, धानदमल सारस्वत के नदलाल बालचंद कोठारी के भीखमचद फतेचद बोथरा के इन्द्रचद मघराज वैरागी का सीताराम और अपनी माँ का प्यारा पुरुषाराम गोदारा व अन्य ना हरि भी एकल सतानें हैं।

दत्तक पुत्र—हिन्दू धर्म में पूर्ण विश्वास रखने वाले व्यक्ति अपने पूर्वजों द्वारा मान्य शास्त्रानुमोदित परम्परा में आस्था रखकर सत्पुत्र की भूमि में दत्तक पुत्र बना लेते हैं। नि सतान सतान होकर मर जाने के पश्चात लोग अपने सुख वृद्धि हेतु ऐसा करते हैं। परतु गोद आने वाले पुत्रों में अच्छे कम और बुरे अधिक निकलते हैं। सदा भागी पुत्र तो पूर्व कृत्य पुण्य तथा सौभाग्य से ही प्राप्त होते हैं। किन्तु अधिकतर तो कलह कष्ट-वृद्धि के लिए गोद आकर कुल बदनामी का कारण बनते हैं।[1] दूसरी बात सुख धन के लिए और कई तन सुख के लिए गोद आ जाते हैं। मगर मन सुख के लिए गोद आने वाले व्यक्ति बहुत कम होते हैं। कई लोग घर के लालच में खोले (दत्तक) जाते हैं और बड़ा के राज्य सरकार के अनुसार खोले के कागज करवाने पड़ते हैं। इस रिवाज को खोला गोद अथवा दत्तक के नाम से जाना जाता है। गोद कई माताओं के और कई पिताओं के जाते हैं। दादा दादी काका काकी भाई भौजाई, बाबा बडिया तथा सास श्वसुर के भी खोला जाने की प्रथा है। ठिकाणा छप्पगढ (दादीसा) के खाले श्री विजयसिंहजी और उनके श्री अमरसिंहजी दत्तक महाराजकुमार थे।[2] राजा महाराजाओं के गोद आने वालों में झगड़े भी बहुत हो जाया करते थे और प्रत्येक पक्ष के लिए गुटबंदियाँ हो जाया करती थीं। राजस्थान की अनेक कथाओं में अनिश्चित उत्तराधिकार की स्थिति में राजकुमार का चयन किए जाने हेतु हाथी के सूड में माला डालकर घुमाया जाता था। हिन्दी साहित्य में इस चयन प्रथा को मूल अभिप्राय (Motif) कहा जाता है।

---

1 फलवा जेठ का र बेटो पेट का।

2 श्री गगासिंह महाराजा श्री डूगरसिंह जी (भाई) के खाले थे और डूगरसिंह जी सरदारसिंह जी (म वी) के खोले गये हुए थे।

कालू म कई लोग खाला या गोद आये हुए बताये जाते है। स्व० चम्पालाल (पुत्र लिखमाच द जो नाहटा) एसा सुदत्तक था कि श्री लालचद नाहटा के घर मा की गोद आकर अपने सेवा सम्मान से उसके वैधव्य आदि के पुत्र सबधी सारे दुखा को भुला दिये। चम्पालाल न जो भी काय किय सारे के सारे माँ को पूछकर ही किये। श्री चम्पा लाल ने अपन ज मदायक पित परिवार के लोगो क साथ भी बडा प्रेम बनाय रखा। इस तरह गोद जान वाला मे यहाँ श्री चादमल सारस्वत, नदलाल राठा, सुगनाराम सारस्वत, श्रीराम राठा, मदनलाल डूढाणी, नथमल भादाणी राजेश कोठारी बुधमल बोथरा, इ द्रचद, बालचद बाठिया, सतदास, नथमल सोनगरा और जसराम जाट आदि हैं। कालू के बैद परिवार से लाडनू के एक धनवान घराने म बारी बारी स गाद जाने वाले दो भाई पूनमचद और गिरधारीमल बद, कलकत्ता तथा कूच बिहार के बडे प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। बाहर के कई जँवाई आदि व्यक्ति भी यहाँ गोद आकर कालू के नागरिक बने हुए हैं।



सातवाँ प्रकरण

कालू का जूना वातावरण—बीकानेर राज्य मे पहले सबसे पिछडा क्षेत्र भडाण कहलाता था। उसकी लूनकरनसर तहसील का थली आंचलिक गांव है कालू।[1] बडे नगरो की लाइन से इतना दूर कोने मे बसा हुआ है कि 'नई रोशनी' के यहाँ तक पहुँचने में काफी समय लग गया। युगो तक यह अपनी पुरानी चाल ढाल म चलता रहा। महाभारत के समय वतमान बीकानेर का क्षेत्र राज्य 'कुरुराज्य के अ तगत था। ग्यारहवी शताब्दी के पश्चात इस राज्य पर जोहियों चौहाना, साक्लो (परमारो) भाटियो और जाटो का अधिकार अवश्य रहा।[1] ब्रिटिश शासन काल मे भारत की बडी रियासतो म बीकानेर का छठा स्थान था। देशी राज्यो के विलयन के बाद राजपूताना राजस्थान बन गया। अब उसका इतिहास, भूगोल शासन नीतिया राजपूताने से बिल्कुल भिन्न परिवर्तित हैं। त्याग बलिदान और शौय की कहानी अब कही इतिहास म ही मिल सकती है। राजसत्ता के स्थान पर प्रजातन्त्र शासन जम चुका (दफन हो गया) है।

देशी राज्यो के जमाने मे तहसीलदार एव थानेदार का रोबदाब गावों कस्बो मे सबसे अधिक रहता था। कालू म उस समय ठिकाने का गिरदाबर ही सर्वेसर्वा था। उसका बहुत दबदबा था। पर उनसे ही बढकर अन्य गावों के ठाकुरों छुट भैयो, जमीदारो और सामन्तो का बडा भारी आतक हुआ करता था। गाँव वाले ही नहीं शहरी श्रीमतो तक, इनके सामने सिर उठाने का साहस नही कर सकते। उनका हुक्म अच्छा बुरा जमा भी हो मानना पडता और टालमटोल करने वाले को सजा का शिकार बनना पडता था। राजा महाराजा एव जमीदारो के मरन पर रियासत के सारे सम्बन्धित लोगो को भद्दर (दाढी मूछ बिना) होना पडता था। बचने की कोशिश करने वाले व्यक्ति को पकडकर जबरन मूड दिया जाता था। सेठ चौधरी, मुखिए और कमचारी अपने आप इस काय के लिए तयार हो जाया करते थे। बडे अफसर हाथ पर शोक सूचक काले बिल्ले लगाते और सिर पर सफेद साफा बाधते थे। जब तक होली या दीवाली का त्यौहार नही चला जाता उन दिनो तक गावा मे शोक रखना पडता था तथा गान बजान सब ब द रहत थे। राजा महाराजा की मृत्यु पर राज्य भर म एक साल तक किसी क भी घर विवाह शादियाँ नही हो पाती। राजा के मरने का शाक-सवाद गाँवो तक सिपाई लाग घाडे से चारो ओर पहुँचकर जल्दी पहुचा देते। वे बाग (जोर का रोना) देत हुए सब गावो मे प्रवेश किया करते थे। राज्य की दारोगणिया आदि सुहागिन स्त्रिया को ठाकुरा एव राजाओ की मृत्यु पर उनके पीछे अपने सुहाग चिन्ह एक बारगी उतार फेंकने पडते थे। इस शाक कृत्य की शिकार कोट रावले की सेविकाएँ जस दरोगणियाँ दासमणियाँ आदि औरतें हुआ करती थी। दरोगणिया इनके दायजे आती और प्राय जूठन पर पलती थी। जब भी राजा महाराजा अथवा उनका ठाकुर

1 बीकानर राज्य का इति० प्र० भा० पृ० 69 टा० ओझा।

चाहता, तत्काल पड़दायत बना लिया करते थे। उसके घर वाले इस काम को बडा उच्चतम समझते थे। सुन्दर दरोगणिया पति से प्रथम स्वामियों की चहेती हुआ करती थी। इस तरह के पड़दायत सम्बन्ध पर दरोगों से ठाकुर बन जाया करते थे। देशी रजवाड़ों के समय में जो रीति रिवाजें प्रचलित थी, वे आज अनहोनी बातों के रूप में दिखाई देती हैं। ठाकुरों के छोटे गांवों में से कोई भी बटाऊ या राहगीर ऊँट या घोड़े पर चढ़ा हुआ नहीं निकल सकता। उसे उस गाँव के अन्दर पैदल चलना पड़ता था। राज भय में हरिजन आदि लोग अपने विवाह के समय भी केशरिया कसूमल पगड़ी या साफा नहीं बांध सकते उन्हें सफेद साफे से ही वर (दूल्हा) बनना पड़ता था। सामन्ता में गाये जाने वाले शुभ गीत भी अन्य लोक में गाने वर्जित थे। वे अधिकारियों के समक्ष हर वक्त हाथ जोड़े खड़े रहते थे। कई जातियां मुर्दे पशुओं से और बड़े लोगों की जूठन से पेट पोषण किया करती थी। बीकानेर राज्य खालसा, जागीर और शासन तीन तरह के अनुशासन में चलता था। खालसा में बीकानेर का खुद बड़ा राज्य जागीर में जागीरदार सरदारों के गांव, शासन में माफी या धर्मादे में दिए गाँव चारणों, ब्राह्मणों के होते थे। धर्मादा से रकम नहीं ली जाती थी। जागीरदार ठाकुर बड़े राज्य को खिराज और रकम देते थे। इन पट्टायतों की रकम नहीं मिलने पर बड़ा राज्य इनके गाँवों को काट आफ बाढ़ करके स्वयं रकम उगाह लेने के तलाती आदेश कर देते थे। कभी-कभी बड़ा राज्य इन ठाकुरों के अन्याय के आरोप पर गाँव वापिस उतार भी लिया करता था। किसान इन अपने-अपने राज्यों को बराबर निश्चित लगान देता रहता, तब तक वह जमीन का अधिकारी कहलाता। नहीं तो खेत छोड़ना पड़ता, जमीन राज्य की। ढाल भाछ, ल्हासिया, कोरड आदि कर भी किसानों से लगान के साथ ले लिए जाते थे। अन्य करों में धूआं भूंगा, अग सर मलबा दण्ड आदि भी लिए जाते थे। विधवा के नाता करने पर और किसी भी बिरादरी का कोई निपटारा होने पर भी कर निश्चित था।

वि स 1950 के लगभग गाव कालू धाभाई ठाकुर मेघ सिंह के ठिकाने में था। उसने अकाल के समय भी ढाल भाछ के सिवाय कोरड-ल्हासिया के कर उगाहने शुरू कर दिये। तब यहाँ के तत्कालीन मठ भैरू दान कोठारी और चौधरी नदाराम ज्याणी आदि ने गाँव के लोगों को समझाया कि— ये नये कर मत दो और ठाकुर धमकाये तो गाँव छोड़कर अन्य स्थान पर चले जाओ। जनता ने अपनी भलाई सोचकर ऐसा ही किया और गाव के सारे लोग घर बार छोड़कर चले गये। तब उक्त मुखिए लोगों ने बीकानेर जाकर बड़े राज्य में इस बात की फरियाद की। इस कारण उस समय कालू मेघसिंह के आधिपत्य से हटकर बड़े राज्य (खालसा) में आ गया था।

पहले यहाँ के किसानों से राज्य की बेगार भी ली जाती थी। जिसके घर ऊँट होता उस किसान को कोई भी दौरे पर निकलने वाला अफसर ऊँट सहित अगले मुकाम तक पकड़ कर ले जाता था और किराये के पैसे भी नहीं देता। मन चाहे वहां छोड़ देता। तब वहां से बेचारा भूखा ऊँट और उसका मालिक बड़ा मुश्किल में अपने घर वापिस आ सकते। यह बेगार कालू में भी चालू थी। बेगार में राहगीर किसान को अपने ऊट सहित खान पीन का स्वयं प्रबन्ध करना पड़ता था। महाराजा गंगासिंह जी ने

किसान की बेगार मे काफी सुधार कर दिये। उन्होंने किसान के किराय का कानून व जबरदस्ती न पकडने की घोषणा करवादी। कालू के गढ मे माफीदारों की अन्य बेठ बेगार बारी से ली जाती थी। गिरदावर, पटवारी जकात थानेदार के घरा मे काटवाल रोजाना लकडी की भरोठियाँ डालते नायक पहरदारी करते और नाई को गट का सारा पानी भरना पडता तथा चौके बतन की सारी सफाई करनी पडती थी। मगर इन कामो क बदले उनको जात हेतु माफी की जमीनें प्रदान की हुई थी। अत गाव की, कूए की तथा आन वाले अफसर सिफाई की बेगार भी य निकालत थे।

उस समय ठिकाना की रकम न चुकान पर किसी भी किसान क कपडे तक निलाम कर दिए जात और उम अन्य कसूर लगाकर गाँव से निकाल भी देते थे। खडी फसल कटवा ला जाती और जबरन गाय भस मगवाली जाती थी। उस समय के अफसर रकम न देन पर आदमी को धप मे खडा करके बत की भी मार देते थे। मगर ये कृत्य कालू मे औपचारिक ढग से हा पति। यहाँ के राज्य काय खालसा जस ही महान थे। महाराज कुमार विजय सिंह का पट्टा इन बातो म बडे राज्य की भान्ति लाकप्रिय था।

कालू क गढ म पट्टल गिरदावर श्री अमरनाथ के सभ्य व्यवहार से आस पास की प्रजा पर पट्टे का अच्छा प्रभाव पडा था। अफसरा का आतक होते हुए भी कालू का जन-जीवन शान्ति से बीतता था। ऊपर लिखी सारी अत्याचारपूण घटनाएँ उस समय की साधारण बातें समझी जाती थी। जबकि पानी के अभाव मे तथा अकालग्रस्त क्षेत्रो के लाग यहाँ खुली खेल (सुविधा से उपलब्ध) पानी के लिए लालायित होते हुए इस गाँव कालू म आकर निवासित हाने लगते। क्योंकि अन्य गावा मे गुरजते (चलते) हुए लोगों के पशुओ के पानी पीन पर प्रतिबन्ध था। कालू म मीठे पानी के चार कूएँ और चारो ओर तालाब तथा लम्ब चारागाह थे। गाव की बहुत लम्बी भूमि सीमा जो पशुओ के साल भर चरन विचरन की सुखमय सुविधा थी। इसलिए दूसरे ठाकुरो क या खालसा के गाँवो से लाग कालू आकर बसने थे। उन्हें यहाँ एक वष की रकम माफ और नई मडत घर बनान क लिए जगल से लकडी काटन की छूट थी। य बातें अर्जी स्वीकृति से दी जाती थी। इस तरह स पट्टे क जमाने म कालू ने विभिन्न सुखो स आकर्षित हुए दूर-दूर के लोग यहा आकर बसते थे। इन आन वालो म मुख्यत ब्राह्मण समाज के लोग अधिक आय। ब्राह्मणो के लिए महाजन बस्ती के धार्मिक काय, पूजा पाठ ब्रह्म भोज दान-दक्षिणा और फरी भिक्षा याचनादि के अनेक जीविकोपाजन के साधन उपलब्ध थे। इसलिए यहा के ब्राह्मण बालका की उस समय छोटी अवस्था मे ही शादियां हो जाया करती था। क्यांकि बाहर से ब्याही हुई आन वाला उन ब्राह्मण लडकियो को काल में आन पर ब्राह्मणाचित सारी आवश्यकताएँ प्राप्त हा जाया करनी था। अत एव इस गाँव म आज तक अधिक आबादी ब्राह्मणों का रही है। गाँव की ओर से यहा अत्यधिक श्रद्धा सम्मान पालागन और पचायत के काय सौंप दिए जाने पर वे ब्राह्मण

1 उक्त समय गाव कालू म ब्राह्मण औरतें प्राय महाजना के घरो म सालें की प्रथा से सम्बधित, उन घरो को अपना मका (पीहर) मान कर रही।

समाज के लोग, सुखाधिकार स्वरूप दूर-दूर से आकर बढने गए। कालू म वे आज भी दादा नाम से सम्बोधित किए जाते हैं। स्नान करते समय कालू के द्विज बोलते हैं—'हर गगा हरे हरे, बार बार ब्राह्मण कर।"

गाव सूई से वि स 1976 मे एक इतना बडा पारीक ब्राह्मणो का परिवार कालू आया कि उसका अपना अलग एक "सूई वाला" वास ही बस गया है। ऐसे ही वि स 1995-96 मे गाँव मालसर से आये पारीको के परिवारो से एक मालसर का वास बसा हुआ है। वि स 1976 म गारवदेसर से आये हुए वरागियों का भी यहाँ अपना बडा वास (मोहल्ला) है। कालू म विजयसिंह जी के पट्टे का वह प्रारम्भिक युग विकास एव जनसंख्या की वृद्धि होने मे स्वर्णकाल कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नही होगी।

उस समय किसी भी राजा महाराजा क सिंहासनारूढ होने के समय रियासत के ठाकुरो सामन्तों और श्रीमन्तो से बडी भेंट ली जाती थी। उस भेंट को योता कहते थे जिसे सामर्थ्यानुसार सारी प्रजा देती थी। महाराजा के कुवर जन्म पर भी प्रजा का यह योता देना पडता था तथा विवाह और मृत्यु के समय भी तमाम जनता से योता लिया जाता था। तभी तो राजा की वश वृद्धि व जीवनी के लिए किसी किसान जाट ने कहा था—'ओ (राजा) जायो भलो न को परणीज्यो भलो, न मरयो भलो। ओ तो ऊँगो ऊँ ही रयो चोखो है।" यानि राजा का जन्म विवाह और मृत्यु एक भी अवसर प्रजा के लिए हित म नही राजा का एक जसा रहना ही अच्छा है। क्योकि प्रजा को न्योता (कम से कम एक परिवार से चार रुपए) देना पडता था। पर कभी कभी यह न्योता भेंट ब्राह्मणो का माफ कर दी जाती थी।

उस समय राजा महाराजाओ के चोचले बडे निराले होते थे। व अपनी रियासत क नगरो का कभी कभी देखने जाते तो वहाँ क लोग उन्हे नजराना देने बडे बडे उपहार भेंट करते थ। उनके साथ सकडो कर्मचारी रहते थे। उनके पतियों का प्रबध महाभाज्या के रूप मे होता था। रसोइये गवये, नर्तक वाद्य बजाने वाले सवारियों सहित साथ रहते। गावो म औरतें और कन्याएँ कोरे कलश (बेवडा) मामो बनान ले जाती थी।

सन् 1946 की 31 मार्च को गाव कालू म श्री अमरसिंह जी पधारे थे। तब उनके स्वागतार्थ हजारो आदमियो का आगमन हुआ था। तोपें तो नही बन्दूकें चली थी बाजे बजे और हर दरवाजे पर स्वर्ण मालाएँ पहनाई गई। भोज्य हुए और अच्छा नजराना हुआ था। श्री अमरसिंह जी ने कालू म आया हुआ सारा द्रव्य गाव कालू को ही स्कूल भवन बनवा लेने के लिए दे दिया था। उनके विवाह आदि उत्सवो पर भी कर्मचारियों, भृत्यो एव बालको को मिठाई पोशाकें एव साफे मिलते थ। कालू की देवी के लिए हर मास दोनो नवरात्रा म सरकार से भेंट एव पूजा की सामग्री आया करती थी। पहले के जमाने म भानीनाथ जी की जगह म भी राज्य की ओर से पूजा का सामग्री आया करती थी। ये कई राजा बडे उदार-दानी तथा बहादुर होते थ। इसलिए वास्तव म जनता की श्रद्धा के पात्र बने रहते थे। उसी प्राचीन गरिमा के कारण उनकी सन्तति के प्रति जनता आज तक श्रद्धावान बनी हुई है।

उस पुराने जमाने म साधारण राजपूत भी बडा आदमी माना जाता था। आदमी

ठाकुर, लडका कुवर और उसका लडका भँवर नाम से पुकारा जाता था। उस समय कहावत चलती थी कि—'राजपूत नैं रेकार री गाळ।" यानि राजपूत 'तुम शब्द-सम्बोधन को सहन नही कर सकता था। इसी सदभ मे एक प्राचीन घटना है— अेक गाँव रो राजपूत राही म अेवड चराव हो। कोई आदमी उव न पूछयो—"ओ अेवड रा गुवाळिया, यो गलो कठीन जाव।' उव उथळा दियो—"कोई मिनख न पूछ।" वो आदमी गुवाळिय कानी अचरज स् झाक्त थक पूछियो— तू कुण है ?" गुवाळिया गव सू बोल्या— म्है ठाकरा रो भाई हू।

इस तरह स उक्त घटना के साराश मे यही सकेत है कि उस समय गावो म राजपूत को सब लाग ठाकुर साहब कहते थे। ग्रामीण राजपूता के घर रावले और कोटडी कहलाते थे। उनकी स्त्रिया ऊँट के कजावे, बला अथवा नख चख तन ढक कर बाहर निकलती थी। पडदे (पर्दे) रखती और समाज मे बडी बोली का व्यवहार करती थी। राजपूतो की धाक के कारण चोरी डकती के वरन (समय) अ य लाग भी अपन को राजपूत कह दिया करते थे। प्राय ऐसा प्रसिद्ध है—

जाट जगळ ना छेडिय, हार्टा बीच किराड।
राघड कदे न छेडिये मार सिघ दहाड॥'

(जाट से जगल म झगडा करना बुरा बनिय से बाजार मे और रांघड (राजपूत) की हर समय बहादुरी बनी रहती है। उसस कभी भी वर (शत्रुता) नही करना चाहिए। तकड (शक्तिशाली) आदमी को यहाँ अभी राघड कहते हैं।)

काल् का जन सामा य सदैव ब्राह्मण और वणियो के प्रभावाधिक्य मे प्रफुल्लित रहा है। यहाँ का जन साधारण चाहे इनके बहुमत एव याव तपास[1] से सतप्त ही रहा हो, कि तु अपनी भारतीय परम्परा की महान मर्यादा वशात सभ्य समाज वाले इन मुखियो के प्रति उसके मानस म आज तक भारी सम्मान और प्रेम रहता आया है। कसे भी हो आम जनता क काम भी तो वणियो द्वारा ही सरल होते रहे। क्योंकि यहा के महाजन लाग सदव बाहर नाम से रुपयो का लेन-देन करते थे। व गाँव के किसानों को अपना आसामी बनाकर उनके विवाहादि अवसरो पर खूब रुपये देते थे। यहाँ के साधारण लाग अपन माईत (माँ बाप) क मरने पर भी काफी रुपया खच किया करते थे। उस अवसर के समय गाँव के बोहरे दु ख बटाने के मिस (बहाने) उसके घर जाकर रुपय देने का वादा करने और मुहमांगे रुपय दकर उसम अगूठा दस्तखत ले लिया करत थे। बेचारा आसामी कठिनाई के समय अच्छा मत्यु भाज आदि रस्मे पूरी करके अपना कावा' निकाल लता। कावा काज, या मुँह की राख—समय की शान, माईत के पीछे ओसर (बडा भाज्य) करके ही बचा पाता। काल् मे उस समय के मृत भोज्यो के नाम बडे वविध्य होते थे। जसे सारे गाँव का अथवा आस पास से अपन आप आ जाने वाले लोगो का सहभोज सर सारणी और ब्राह्मणो का भोज्य ब्रह्मपुरी कहलाता था। उसमें नाथ जोगी, वरागी जातकी, भोजक आदि षट दर्शन शामिल रहता था। छ म्यात, चहलम, वारह ग्वाड गगेडा छ मासी तीन घडे वगरह भी मत भोज्य होते थे। जाटो का

1 न्याय तफ्तीश।

यहा अनेक गाँव उजड (नष्ट) हो गए हैं।[1] इसलिए अकाल शब्द सुनते ही लोगों के दिल दहल जाते हैं। वे कहते हैं—"काल नाम मौत का होता है।

भडाण तो दुर्भिक्ष का घर ही माना जाता है। यहाँ दो दो तीन तीन वर्षों तक वर्षा नाम मात्र का भी दिखाई नही देती। यहा का जन-साधारण सदव अकाल की आपत्तियो व्याधियो स जूझता ही रहता है। पर सारा क्षेत्र ही इतना कष्ट सहिष्णु है कि इस दुष्ट दुर्भिक्ष को मात्र देवी प्रकोप मानकर कभी कभी वर्षा की धोक पूजा भी करते हैं। रोटा मिलती है न कही पूरा पानी, कि तु यहाँ के मनुष्य मर खप कर आधे होते हुए भी इस अमागलिक अकाल को प्रकृति की क्रूरता अस्वीकारते हुए न अन्य उद्यम करते हैं और न स्थान छोडकर दूसरी जगह जाते हैं। काग अर कुमाणस ठोड पड यो मरै।" वाली कहावत को सच्ची करते रहते हैं।

वसे तो वद पुराणों के समय म ही अकाल पडते बताये गये हैं और इतिहासकार भी इस भयकर समय का वणन करते आये हैं। मगर स्व० जगदीश गहलोत न इसके नाम रूप भेदो का विभाजन करके सन सवत् देकर सतालिका पूरा उल्लेख किया है। डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा ने राजस्थान के मध्यकाल को अकालपूण बताया है। उन्होंने सन् 1255 से 58 तथा सन् 1290 से 96 के वष महा अकाल पूण बताये हैं। सन् 1309 से 1313 के वष भी अकाल के बतलाये जाते है। तभी तो यह हमारा राजस्थान, सतकाली एव त्रिकाली काल का नामूनदार देश है। ई सन 1335 के समय अकाल पीडित जनता के लिए यहाँ समराथल स्थान पर देवगुरू जाभोजी द्वारा दूर दूर तक उनके जनहितकारी काय करवाकर भारी राहत पहुँचाई थी। बीकानेर राज्य के राव लूणकण ने ई स 1505 26 के अकालो मे पर्याप्त जन कल्याणकारी काय सम्पन्न करवाये थे। इस शताब्दी म राजपूताने मे अनेक अकाल पडे थे। ई सन् 1755 मे बीकानेर शहर की शहरपनाह महाराजा गजसिंह न अकाल के समय बनवाई थी।

वि० स० 1812 (ई० सन 1755) मे बडा भारी दुर्भिक्ष पडा था। कालू के चारो ओर हाहाकार मच गया था। एसा सुनते हैं—पुरुष स्त्री और बच्चे बिलबिला गये। पशु पक्षी तक तडफते हुए व्याकुल हो गए। भूखे लोग कूच कर मुरट, बेर, बझरडा घास, पत्ते और खेजडो की छाल तक खा गये। महाराजा न सदाव्रत खुलवाये और राज्य म नई इमारतें भी बनवाई थी।[3] ई० सन 1796 म पडने वाले अकाल को भी लोग भयकर अकाल बतात हैं। यहाँ एक अणचकिया अकाल बडा भयकर पडा था। प्रजा कई दिन तक गाती रही— 'अणचकिया काळ भळै मत आइ म्हार देश म।" (कालू के पुराने व्यक्ति इसकी सारी पक्तियाँ गा लेते हैं।) इस अकाल के समय बहुत स लोग बाहर चले गये। अकाल के दिनो मे विदेशी कम्पनियाँ यहाँ आकर बुभुक्षित लोगो को अनेक प्रकार के प्रलोभन देती और अगूठे करवा लेती। फिर विदेशो में ले जाकर उनके साथ गुलामवत्ति का व्यवहार किया जाता था।

---

1 (क) प्रजानाश गमिष्यन्ते दुर्भिक्षभय पीडिता।
(ख) तत पापक्षते लोके दुर्भिक्षे रोमहर्षणे। (गग संहिता)

2 इन्द्रायण फल के बीजों की वरडकवाटी बनाकर खाते थे।

3 दयालदास की ख्यात, जि० 2 पत्र 85/पाउलेट, गजेटियर आव् दि बीकानेर स्टेट, पृ० 85।

पाउलेट के बीकानेर गजेटियर को देखने से ज्ञात होता है कि ई सन 1834-1835 एवं सन् 1849 50 के वर्ष दुर्भिक्ष के थे। सन् 1868 69 और सन् 1891 92 ई० म अकालो के उल्लेख इम्पीरियल गजेटियर मे मिलते हैं। सुना है—इन अकालो म गाय-भैसो ने घास की जगह कीड़े मकोड़े तथा टीटणें खा ली थी, जिससे उनका दूध काला हो गया था। मनुष्य की कीमत ही नहीं रही। रोटी के बदले सतानें बिकने लगी थी।

वि स 1956 (ई सन 1899-1900) मे बीकानेर राज्य म भीषण अकाल पडा। सारे राजपूताने और भारत के कुछेक भागों मे इसका पूरा प्रभाव रहा। राज्य भर के सकट ग्रस्त लोगो म से कुछ तो विदेश चले गये और बाकी बचे लोगो के लिए सरकारी सहायता के कार्य शुरु किए गये।[1] शहरपनाह (नगर की दीवार) सुधार, गजनेर झील की खुदाई और अन्य बहुत से कार्य राज्य द्वारा चलाए गये। नगरो म सेठो और राज्य की तरफ से बीमारो बाबत अन्न क्षेत्र भी खुले। परदानशीन औरतो का यहीं इतजाम हुआ। राज्य ने जन सहायतार्थ लाखो रुपए खर्च किए और लाखो रुपए माल वसूली के माफ कर दिए। गाँवो मे सस्ता गल्ला पहुँचाने के लिए महाराजा ने गगारिसाला नियुक्त किया था। राज्य से पशुओ के घास पानी का भी पूरा प्रबन्ध हुआ था। वर्ष की समाप्ति पर लगभग एक लाख रुपये बीजा ऊँटादि पशुओ के देकर महाराजा ने किसानो के खेत बीजने मे उत्साह बढाया। मगर गाँवो के खेजडो पर कई दिनो तक छार्ने नहीं पक सकी। काल म बहुत समय तक कई खेजडे उन छीलने वाले लोगों से भयभीत रहे, जो वि स उन्नीस सौ छप्पन के अकाल म बुरी तरह छील डाले गए थे। चौ० हरिश्चन्द्र एडवोकेट ने मरुश्री म लिखा है कि डूगरगढ व कालू के बीच गुसाईसर म लोग सिघराज भाटा पीसकर आट म मिलाकर खाते।

उन दिनो हैजा आदि भयकर महामारी से हजारो आदमी मृत्यु सख्या म पहुँच गए। बदनाक दृश्य, एकाएक दस्त एव उल्टी और छटपटाकर प्राणान्त। महाराजा गगासिंह ने स्वय गाँव गाँव घूमकर उक्त आपत्तियो के समय जनता की सहायता की। इनके प्रजा हितैषी कार्यो से प्रसन्न होकर भारत सरकार ने इन्हें प्रथम श्रेणी का "कैसरे हिन्द" स्वर्ण पदक अर्पित किया था। वि स 1959 (ई सन 1902) म तत्कालीन वाइसराय लार्ड कर्जन बीकानेर आए और उक्त दोनों कार्यो के लिए राजकीय भोज के अवसर पर महाराजा गगासिंह जी की बडी प्रशसा की।[3]

---

1 तत्समय पजाब के नेता लाला लाजपतराय के कहने से बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री गोकुलचन्द नारग स्वय सेवक के रूप मे बीकानेर आये और सहायता कार्यो के माध्यम से लौटते समय यहाँ से अपने साथ बहुत से अनाथ बच्चो को लाहौर ले गए। वहा आर्य समाज के बडे अनाथालय म उन बच्चो को आश्रय दिलवाया। यदि ये बच्चे अकालग्रस्त क्षेत्र में वही रह जाते तो घुमक्कड पादरी लोग उन्हे अवश्य ईसाई बनाकर ले जाते। (सरिता 15 अक्टूबर 1960)

2 जिनमे 9348715 मनुष्य काम करते थे। इनको प्रति पुरुष 14 छटाक प्रति स्त्री 13 छटाँक प्रति बालक 8॥ छटाँक और दूध मुँहे बच्चे को 3॥ छटाँक अन्न रोजाना दिया जाता था। औषधि आदि के लिए डाक्टर मुकर्रर था। अकाल के महकमे म राज्य का सनीसर 73120—।≡ रोजाना खर्च पडता था।
बीकानेर राज्य का इतिहास चौथा खण्ड पृ० 131 ले० कुँवर कन्हैयाजूदेव

3 बीकानेर राज्य का इतिहास भाग दूसरा पृ०—506 07

वि स 1971 72 73 (ई सन 1915 16 18 19) के वष भी अकाल के रहे। इन वर्षो मे हल ही खडे नही हुए। पशु प्राय मर गए। वि स 1974 मे वर्षा हुई किंतु रत्तार (बडे चूह) अधिक हुए, उन्होंने फसल को बरबाद कर दिया। वि स 1975 मे भी वषा हुई, मगर मरी (महामारी) इतनी चली कि गाँव के गाँव खाली हो गये।

वि स 1996 (ई सन् 1940-41) का अकाल राजपूतान प्रदेश के लिए बडा भयावना रहा। इससे पहला वष वि स 1995 का कुरिया मुरिया (अर्द्धकाल) था। अत 1956 से चालीस वष बाद फिर से सवत्र हाहाकार मच गया। इससे जन हानि तो कम हुई मगर पशु धन सारा मृत्यु की चपेट मे आ गया। रेलो की सुविधा के कारण अन्न के भाव नही गिरे। रेलगाडी से प्रदेश मे अन्न का सुविधा जनक वितरण होने लगा था। घास-तूडी की कुछ गाठें भी रेलो मे भरकर आने लगी थी। कभी-कभी वे इजन मे जलते कोयले की चिनगारियो से जल भी जाया करती थीं। उस समय गेहूँ के भाग 14 और 16 सेर प्रति रुपए के बीच रहे। इस तरह से जनता ने बडी हिम्मत और साहस के साथ अकाल से सघष किया।

स्वत त्रता के बाद यहाँ जो अकाल पडे हैं व चार प्रकार के हैं। ई सन् 1968 का महाभयकर अकाल, ई सन 1950 51 वष के भयकर अकाल तथा सन् 1961, 63 के सरत अकाल और सन 1948, 1949, 53, 57 62 66 मे कुर्रा नामक अकाल पडे। इन सभी के लिए जिलाधीश बीकानेर ने समय समय पर ऐसी अभावग्रस्त स्थितियो के लिए यथा सम्भव सहायता कार्यों का सचालन करवाया है।

वालू में गढ के गिरदावर प० श्री खेमचन्द, स्थानीय प० गणेशाराम शर्मा, किशनलाल यति रामनारायण कँवर मूलाराम पारीक, दीपचन्द दूढाणी, लालचन्द राठी और श्री सेवा सदन सरस्वती पुस्तकालय के कार्यकर्त्ताओ ने वि स उन्नीस सौ छिनमे के अकाल म अपना और गाँव का चन्दा एकत्रित करके वष भर तक बडी गोशालाएँ चलाई थी। ग्वार के कम्हे चढा दिए और तूडी के ढेर लगा दिए थे। वि स 1995 मे बाहर से पशु लेकर आये हुए लोगो से भूगा (चारागाह कर) गढ के गिरदावर ने लिया था सो सस्ती मजदूरी के हिसाब से वह रकम भी अन्नाणे जोहडे (तालाब) का पश्चिमी घाट और रखवाल के लिए एक साल (मकान) बनवाने मे लगवाई।

रोग-दोख, स्याणे-रूखवडे और औषधि-उपाय—पुराने जमाने मे लूनकरनसर जसे सर्वाधिक पिछडे गाँवों के विस्तृत क्षेत्र म स्वास्थ्य समस्याओ के प्रति घोर लापरवाही बरती जाया करती थी। अशिक्षा, अधविश्वास और अत्यन्त गरीबी के कारण मनुष्य कुत्ते की मौत मर जाते थे। उनका जीवन, यातनाओ की लम्बी काली रात मे मरता भुगतता रहता था। किसी तरह की राहत का नाम नही! दिल घुट जाता श्वास अटक जाता और पथ्या पथ्य के अज्ञान म दबोचा हुआ बीमार जान जाने तक निरूपाय कराहता रहता। जन्म के समय भी ग्रामीण दाइयाँ गन्दगी भरे हाथो तथा जग लगे छुरियो या कटारी से शिशु का नाल-छेदन कर दिया करती थी। बच्चे के निमोनिये (ऊपरला या डब्बा रोग) म स्याणी औरतें गम तात करके गोल चपकिया लगवा दिया करती थी। चेचक आदि के टीके लगाने वाले आते, तब बालकों को माता-

पिता उनसे छुपा लिया करते थे। वे अभिभावक, बीमार बच्चा के नजर टपकार, देव दोष, डाकण स्यारी और जालाटिये लग जाने के अंधविश्वास म खूब थाड फूक और सोटी-युथकी, डोरे जन्त्र करवाया करते थे। औरतों के हिस्टिरिया जसी बीमारी मे भूत भूतणी या चूहडावण आदि का तन प्रवेश बताकर स्याणे लोग मार पीट करते, अँगुली मरोटते और मिर्चों की धूनी दिया करते थे। निमानिये पाणीमरे जसी मियादी के बुखार म 'कुलडिए वाली" गम ऊकाली वारम्वार पिलाते हुए रात दिन भारी ऊनी कपडो से दपटकर रोग दाटने की अहित कारक चेष्टा किया करते थे। मलेरिया मे फिटकडी तजरा चौथइये म डोरे टोने जसे टट पज और मादे को महीनो तक भूखे रखने की प्रथा बनी हुई थी। तब कई राम के डारे (भरोसे) बच जाते और पर्याप्त मदि, बिना मौत मर जाया करते थे। उनाले (गर्मी की ऋतु) म अलाई पचिए सियाले (सर्दी की ऋतु) मे ब्याऊ-खासी और चोमासे (वर्षा ऋतु) म बाले (नहरुवे) से जन साधारण पीडित पडे सडते रहत थे। गांवा मे जोइय चीचड मच्छर डको तथा विच्छुओ का पूरा कष्ट होता, पर खटमल नही।[1] आक, धतूरा और नीम उनके घरू (घरलू) हकीम थे।

जस कस्बो मे स्याणे पुरुष और स्याणी औरता से बीमारा को राहत मिलती, वसे गाँवों मे भी पुलता पुरुषों के पहुँच जान पर रोगियो को काफी सहारा मिल जाया करता था। कई वद्ध जन तो अधिक गर्मी की रात्रियो म तीन तीन बार हेला (ऊँची आवाज) कर दिया करते थे कि— अक्लेवो मोकळा है ताती लूवाँ चाल, मावा उठर आपरा टाबरा न पाणी पण जरूर जरूर पा देवा !!! '

रात क समय भयकर आंधी आ जाती, तब भी बच्चों के स्वास्थ्य व दोबस्त हेतु हेले हा जाया करत थे।[2] गाँवों म ऐसे समझदार व्यक्तियो द्वारा सौ वष तक का पुराना शुद्ध घत बढिया शराब हाथी की लीद, कुटकी, चिरायतो अपूठ काटो, केसूला के फूल, किरमाले की फली, बेल गिरी, जवहरडे, काला नमक शहद साभर भस्म आदि अनेक औषधियाँ जन साधारण को सहष मांगी दी जाया करती थी। अवसर पडने पर यहा पुराना घी, शहद, सफेद चिरमी, नर लौंग, पीपल इलाची और कस्तूरी तक पहाडी उत्पादन की चीजें सेठ साहूकारो के यहा मिल जाया करती थी।

कालू के जन उपासरे, भानीनाथ जी की जगह और स्वामी जी के मदिर म भी विभिन्न प्रकार से डोरे जन्त्र झाडे झपटे और दवा दारू देकर मनुष्या के रोग मिटाये जाते थे। उपासरे की शिष्य परम्परा म वीर "से । लाने वाले यति होते थे। कहा जाता है कि श्रीपाल एव जेसराज यति ने आकाश माग से जाती हुई किसी की अनरागि उपासरे म गिरवाली थी। वह वि स 1923 के आस पास गाँव गारबदेसर मे छोगमल बागडी के पीछे (मरणोपरात) होने वाली उनकी सती पत्नी को रातोरात 'सी" लाए

---

1 आजकल, मुसाफिरो के साथ खटमलें भी आने लगी हैं।

2 रात्रि के समय जोर की आंधी आ जाने पर आग लगने के डर से बासते (अग्नि) को जावता करने का भी हेला हो जाया करता था—' आंधी आव, बासत जरू ओट दिया।' बासत बडी मँहगी चीज थी, माग माँग कर लाते और वष भर तक रखते थे।

थ।[1] इस तरह से अनेक बारदाता के स्याणे सेवड़ों की यति परम्परा थी और वे वशीकरण, उच्चाटन, मोहन के मन्त्र तन्त्र तान्त्रिक थे। आगे चलकर श्री जेसराज के शिष्य प्राणशलाल पद्मुआ के टोने टोटके करने लगे और उनके शिष्य द्वय किशनलाल[2] गोविन्दराम आयुर्वेदिक इलाज करने वाले प्रसिद्ध वैद्य बने। वसे फट फिटोड़े, भूत जोगिनी के चक्कर डाकिनी साकनी के आखर भानीनाथजी के धूणे की भस्म से मिटाये जाते और नाथ लोग जन्त्र मन्त्र भी किया करते थे। बिच्छू आधा शीशी, पया, धरण और कनमूल (कण रोग) आदि के झाड़े डोरे यहां के ढाढ़ी दिया करते थे। हिन्दू सिकोत्तरे (सयाने) झाड़ा देते तब दुर्गा हनुमान शिव, गोरखनाथ आदि का नामोच्चारण (मन्त्र) बोलते और "कामरू देश कमख्या देवी एव स्माल जोगी" को साथ रटते हुए अपने चौपटे पखिये, झाडू या अंगोछे से फटकार मारते थे। परन्तु मुसलमान झाड़ागर बिस्मिला रहीम और रहमान" आदि के नामों से झाड़ फूक किया करते थे। नीचे एक कीड़ा झाड़ने का मन्त्र देखें—"ॐ नमो कीडा रे त कुड कुडाला, लाल पूछ तेरा मुख काला मैं तुहि पूछू कहाँ ते आया, तोड़ माम सबको क्या खाया ? अब तू जाय भस्म हो जाय, गोरखनाथजी लागू पाय, शब्द साँचा पिंड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥"[3] 53 *इस मन्त्र को पढ़कर सात बार नीम की डाली से झाड़कर कीड़ा रोग नष्ट किया* करते थे।

बवासीर की दवाई—*दुद्धी बडी जो आनिके, लौंग सग म खाय।*
या घत सग जो पीजिये खून चवेमी जाय॥
(रसराज महोदधि पृ० 26)

आधाशीशी का यन्त्र—

53	42
311	70

यह यन्त्र स्याही से लिखकर माथे म बाधते तब आधाशीशी दूर हो जाती थी।

कालू मे बीमारी शांति के लिए मन्त्र—दवा के सिवाय पढ़े एवं पुजारी लोग *दुर्गा के पाठ करते और रुपये गहने ऊँवार कर बीमार के सिरहाने रखने उतारा उतारने* लोटी ढालने नमक मिर्च अग्नि मे डालने जसे टोन टमणा करवाया करते थे। मनौतियो मे देवी देवताओ की फेरियाँ तथा चूण बरसाने के काय हुआ करते थे। गायो को गुड, कुत्ता को रोटी और जोतकी आदि को दान देकर बीमार के बुरे ग्रह टालने की प्रथा भी प्रचलित थी। अकाल अथवा ग्राम राशि पर कडे ग्रह पड़ने के समय जोतकी भी स्वय रात्रि के अन्तिम प्रहर मे हर घर के फलसे (दरवाजे) आगे जाकर अपने आप ग्रह शांति हेतु शनि बाबा की प्रार्थनाएँ कर जाया करते थे। इस तरह से कालू के ढाढी भी अपने जजमानों के घर आगे जाकर (ग्रह शांति हेतु) उनके पूर्वजों के नाम बोला करते थे। इस प्रथा को गावो म गज बोलना कहा करते और इस काय की मासिक अवधि के बाद उनको रुपये पसे, अन्न वस्त्र और अन्य धातु वगैरह देकर चुकाया करते थे। देवी की

1 इसलिए सती का दातुन (नहीं फटा) चमत्कार नहीं हुआ, तब सरकार म मामला दर्ज हो गया था।

2 श्री किशनलाल के लिए मूठ मारने और पुत्र देने की लोक धारणाएं थी। कई औरतें भी मर्दों के कामण और पुतले गड़वा देतीं, ऐसे विश्वास फलते थे।

3 कौतुक रत्न भाडागार पृ० 295।

कार, आशा रूडिय का गीत[1] भामिय का चढावा और प्रह्लाद की चिटकी, कालू गाव के विशेष टोटके हैं। काक, कुत्ते फाई आदि बालन के अपशुकनों की तरह कालू गाँव मे रात्रि के मार बालने भी बुरे सावित होते हैं। पहले किसी को स्वण गहना वगैरह पडा मिल जाता तो बुरे ग्रहो से भयभीत होकर उम वस्तु के साथ अपना अ य द्रव्य मिलाकर डाकोत को दान दे देना पडता था।

कातरा कुत्तर और टोने उपाय—राजस्थान मे आजीविका का आधार खेती रहा है, जिसकी महिमा का धमशास्त्र म काफी उल्लेख है। कालू व लोग भी खेती सबधी पुराना ज्ञान एव अनुभव रखते हैं। जाताइ वोआई वायु नक्षत्र सुभिक्ष दुर्भिक्ष आदि शकुन-अपशकुना से सम्बद्ध ज्ञान उनका कहावतों मे प्रचलित था। किसान कृषि शास्त्र और ज्योतिष विद्या का नही जानत, मगर खेती की उपयागी बातो म प्रवीण रहा करते थे। वे यथा समय खेती की कहावतें अपनी जबान पर लिए बोलते और बोलचाल की भाषा तथा सरल तुका से जुडी हुइ होन क कारण उनको प्राय कठा म बसाय रखते। खेती की कहावतें अनेक रूपो में हाती थी और समय पर सालह आन सत्य बठ जाया करती थी।

प्रत्यक्ष देखी—वि० स० 2035 की बात कालू म खेती का खा डालने वाले कातरे की पुरानी कहावत 'भादवा वदी छठ, कातरो न काई लट' पूरी उतरी! अर्थात यहाँ की सुकाल खेती का प्राकृतिक ख्याल से बर्बाद करक तुच्छ कीट कातरा ठीक भादवे वदी छठ का समाप्त हा गया था।

यहाँ खेती की फसल नष्ट हान के पुरान सात कारण—याने इति हैं। असे टिड्डी, फाका कीडे पक्षी, चूहे वर्षा की अधिकता, वर्षा की कमी और दुश्मनी आक्रमण! लोग इनका होना न होना कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन चाँद के पास कृतिका नक्षत्र को देख कर समझते थे।

काती पूनम दिन कृति चाद मद्धाने जोय, आग पीछे दाहन जिणसु निश्चे हाय।
आग व्हे ता अन्न नही, पासे व्हे तो ईत पीठ हुयाँ परजा सुखी निस दिन रहो नचीत॥

ऐसी अनक कहावतें कालू में प्रसिद्ध हैं, कि तु खेती को नष्ट करन वाले कीडो की थोडी कहावतें देखिये—दाय मूसा दोय कातरा दोय टिड्डी दोय ताव। दोया री वादी जल हर दोय वीसर दाय बाव॥ ये दो' हवा के दिन हाते, जो एक नक्षत्र से पहले चलने पर उक्त उपद्रवा का आविर्भाव होना बताते थे। राजस्थान मे वषा का आगमन बडे हष का विषय हाता, किन्तु कभी कभास उसके साथ टिड्डी जस फसल शत्रु कीट आकर किसान क उल्लास पर पानी फेर देते—

टिड्डी उडज्या अे सेत परायो जेठ साड मे वळ्या तावडे, पच पच हळियो वायो।
बोहर को सिर कसव कढायो बीज उधारो आयो॥ टिड्डी

टिड्डी दल अडे दते तब फाका दल (छोटा टिड्डा) पदा हो जाता और समुद्री लहरा की भाँति लस्स प्रवाहमान होकर खेता को सफाचट कर देती। लोग अपने खेतों से कपडो की पलाई करक बाहर निकालते, तब यह कहावत चली—

कातरियो कपूत बेटो म्हैं हूँ फाकाराय। म्हाँरी माँ न वाजा वाजिया म्हाँन ढोळ वाय॥

---

1 आशा रूडिया वास देई, गाया भरयाँ ने घास देई ओदी बाजरी रो दलियो देइ, तेल री तिल्लोडी देई, घी री घिलोडी देई माँ देई बाप दई, माई और भौजाई देई।

पहले करवो नाम से एक फसल शत्रु कीट भी उत्पन्न होता था। वह बाजरे के कच्चे सिट्टों (भुट्टों) को चूसकर दाना नहीं बनने देता। पौधे सूख जाते मगर सिट्टों में एक भी दाना नहीं बन पाता। तब उसे मार भगाने के लिए किसान लोग कई प्रकार के टोने टोटके करते थे। आग जलाकर धुआ देते तथा मामाजी, भानजे को हाथ मे चूरमे का वाटका देकर अपने कंधे बठाते और करवा' से भरे खेत की चारो सीमाओ का चक्कर काटते हुए जोर जोर से बोलाते—

'मामै चढ भाणज्यो आयो, कढज्या करवा खेत परायो।'

भानजा मजे मे बैठा चूरमा खाता रहता। बचपन म अबोध लेखक ने स्वय इसका आनद लिया था करवे को निकालने के लिए खेत सीमाओ पर ऊँटो की हड्डिया भी जलाते थे। आजकल ऐस 'बेवल' नाम के एक भूरे कीडे की आमद होने लगी है। यह दिन म पौधा की जडो मे छुपता है और रात को बाहर निकलकर सिट्टे चूसता है। चूरू जिले मे कई वर्षों से यह खेती को नुकसान पहुँचाता था। पर तु 2035 के वष मे बेवल और कातरे न चूरू सीकर झुनझुनू आदि पूर्वी जिले ही नहीं, श्रीगगानगर बीकानेर और नागौर वगैरह की खेती को भी उजाड दिया। आखिर खत्म तो हुआ मगर किसानों के हृदय से व्यथा और आगामी भय बढ गया। वे सुस्त और उदास होते हुए बोले— ऊग्यो आहेडी तो क देख थाहेडी" दुवारा खेत बीजना व्यथ समझा। ठीक भी हुआ—चोर लागे, धणी नी जाग, पिछली वाही पुण्याई लाग।" छोटी फसल को पशु पक्षी खा जाते हैं तब व्यय और परिश्रम दूसरी बार फिर कौन करे ?

महामारी[1]—वि० स० 1974 75 (ई० सन 1917 18) म बीकानेर राज्य के बहुत से भागो म अतिवृष्टि क कारण फसल नष्ट हो गई और अकाल पड गया। कालू म अन्नाभाव और वस्त्र की जरूरत बन आई थी। ऐसे कठिन समय म गाँव के लोगो ने आपस मे मिलजुलकर समय गुजारा। अतिवृष्टि के कारण सितम्बर के अ त म शीत ज्वर का प्रकोप देश म फैला और साथ ही मूर्छा और सन्निपात भी होते थे। फिर जीण ज्वर और अतिसार की कोप वृद्धि चल आई। व्याधियो ने ऐसा उग्र रूप धारण किया कि घरो मे सब बीमार, पानी पिलाने वाला तक नहीं मिलता। इन रोगो के पीछे माच 1918 तक प्लेग की महामारी भयकर रूप से फूट पडी। इसके साथ इन्फ्लुएन्जा की "मरी" (महामारी) बडे भयानक रूप म तबाही मचाने लगी थी। कालू जसे गाँव भी बुरी तरह से इन बीमारियो की चपेट म आ गये। बडी सख्या म लोग मरने लगे। शहर और गाव खाली से होने लगे। सीधे सादे सुरक्षाहीन गावो म भारी डर और आतक छा गया। त्राहि त्राहि और क्रन्दन मच गया। अशक्त और बीमारो से लोग अलग होने लगे। बीमारो को दवा पानी देने वाला भी कोई नहीं था और मृतको को जलाने वाला भी नहीं। घरो म बीमार कराहते मरते लाशें पडी सडती रहती। चलने म असमथ लोग घरो के किवाड बद करके अ दर ही मर गये। इस महामारी (वि० स० 1975) के सबध मे गाव नायूसर के कवि गोविन्ददान के पिता श्री बिडददान द्वारा रचित देवी की प्राथना रूप एक साणौर गीत प्रचलित है—

---

1 भविष्यति युगस्यान्त सवप्राणिविनाशन (गग सहिता)।

'उरड उणतार बिच, वहार करली इधर बीम हृत्य लारलो गार वगती,
आकड अबू आधार इक आपरो, साकड सिहायक धार सगती,
त्रिभागण राडती थकी, आजे तुरत, आभ नै ताडती मते अटकी
रसातल फोडती थकी मत रहीजे, गोडती समदरा असुर गटकी
भू डडा भार मत रही अत भुजाली, खडा नौ पार मत रही खिजणी,
डडा आकास ब्रह्माडा बिच डोलती, वाघ परचडा असवार बजणी,
कोप कर का ह घट तुरत भाग्यो कडड, बरड पतसाह न पकड बैठी,
जडड तू असुर कई गिट गई जोगणी पी गई हाकडो सडड पटी,
बेलका सिहायक सिंघ पर चढाली, गडाली आव त्रिहुलोक गजणी
मढाली म्हारो वचन सत मानजे, भोम पर दढाळी विपत भजणी,
ताप हर चारणा विडद" आख तनै, सारणा जनेका काज सदल मारणा रोग—
—कई सजमपुर मेलदे

विदगा चारणा तण वदुल धाव कर मात चावड सत्रु घलकियो इहगा—
भलकियो वेग आता ।

खलकियो प्रथमी रोग मिनख खावणो, मुलक मू पलकियो[1] काढ माता ॥

वि० स० 1975 की महामारी ऐसी भयकर थी कि बच्चे मृतकों के चिपके ही रह गए। पुरानी ओसर प्रथानुसार इस महामारी म मरे हुए लोगो के पीछे दो दो चार चार वर्षों बाद कभी दस और कभी पन्द्रह की सुविधा से ओसर (मृतक भोज) हुए। कई बेचारा को तानें ही मिलते रहें। श्री गोबिन्द अग्रवाल (नगर श्री चूरू) ने लिखा है कि—'घर के सदस्यों और नौकरा ने लाशें उठाने से इ कार कर दिया था। ऐसी सूरत म चूरू के स्वामा गोपाल दास जी ने वहा के लिए अजमेर से स्वय सेवक बुलवाये थे। जिन्होने घरो के निशेनियाँ लगाकर मृतको की लाशें निकाली थीं।

चूरू के सुप्रसिद्ध कवि श्री सुबोधकुमार अग्रवाल की उस प्लेग विषयक कविता का अश है—

'हो वात दुवाई के पीछे पाणी प्यावणिया नही दिसै।
घर घर मे ल्हासा पडी सड मुडदो ठावणिया नही दिख ॥
भाई न भाई छोड गयो, मोटयार लुगाई छोड गया।
बेटा माँ बापाँ न छोड्या दादो पोता न छाड गयो ॥
गवाड याँ का खुला पड या फळसा, हेल्याँ की पोळी खुली पडी।
बम अपणी जान बचावण नै सारी ही दुनिया डूला पडी।'

यथा समय महामारी प्रकोप के शात हो जाने पर ही लोगों के जीवन मे जान आई।[3] कालू के सेवा भावी लोगों ने भी दवा-पानी से बीमारो की पूरी मदद की थी।

---

1 प्लेग।

2 स्वामी गोपालदास जी का व्यक्तित्व एव कृतित्व, पृ० 86।

3 चौ० हरिश्चन्द्र नण, एडवोकेट न "मरू श्री" अकाल अक के पृ० 21 पर लिखा है—56 के अकाल को महामारी ने और भी भयकर बना दिया था। हमार मगे गुसाई सर (कालू डूगरगढ के बीच) के गादारे हैं। जहाँ एक ही गुवाडी म 16 आदमी मरे।

उस समय मृतकों के तुरंत दाह संस्कार कर आने वाले कुछ लोगों में करणीदान बोथरा, देदाराम परमानराम सारस्वत, बालूराम वर्मा मूलचंद झवर, इंदाराम पारीक, लाभूराम भादू, तालाचंद कोठारी (बडा) आदि लोग मुख्य थे। ये लोग अपने मधुर व्यवहार, सेवा सदभाव सहयोग वृत्ति और उदारता से रुग्ण वर्ग के सम्मानार्थ प्रसन्न मुख रह रहकर बड़े लोकप्रिय बन गये थे। आखिर मृत व्यक्तियों की भस्मी भी श्मशानों से इकट्ठी करके बोरियाँ भर भर कर हरिद्वार के जल में प्रवाहित करवाने के लिए भिजवाई थी।

कालू से दक्षिण के चूरू रामगढ आदि नगरों में दवा पानी के प्रबन्ध हुए। महाराजा साहब (गंगासिंह जी) ने लगभग ढाई हजार रंगरूट बीकानेर राज्य से सेवार्थ भेजे थे। बूट और मौजे प्लेग से बचाव बाबत स्वयं सेवकों के लिए भिजवाये थे। सेवा समिति अजमेर की ओर से राजस्थान में स्वयं सेवक आये और बहुत सजगता के साथ दवाइयाँ भी मंगवाई थी। अजमेर सेवा समिति के मन्त्री, कुंवर चाँदकरण जी शारदा ने मन्त्री सर्वहितकारिणी सभा चूरू और सुजानगढ बीकानेर कलकत्ता तथा शेखावाटी से जन रक्षा हेतु बराबर पत्र व्यवहार किये रखा। उस समय 'भारत मित्र" आदि पत्रों में इस महामारी की पूरी चर्चा हुआ करती थी। इन महामारियों का कालू की जनता पर पर्याप्त असर पडा जिसकी हानि के हालात जनगणना सन 1911 के मुकाबले में सन् 1921 की जनसंख्या देखकर जाने जा सकते हैं कि संख्या बढ ही नहीं पाई थी। वि० सं० 1974 75 का वर्ष बीकानेर और कालू ही क्या सारे देश में दुर्भाग्यपूर्ण रहा।

बीकानेर के बास—प्रत्येक अपव्यय और अभाव पर यहाँ यह विशेष कहावत है— बीकानेर रा वास है मोकळा काळ'र भूख प्यास है, सचगर बणर साल भर रै सरजाम स्ं रखणा चाय।" इस कहावत के अनुसार कालू के लोग अतिरिक्त विवाह औसर के, हर बात में बडी भारी किफायत सारी किया करते थे। विशेष कर पारीक ब्राह्मणों का यह सदीना रिवाज है पुराना अन्न खाने के काम लेते और नई फसल वाले को कोठे कोठियों में बन्द संग्रह करके रखते थे। कालू के किसान प्रात छाछ राबडी[1] पीकर हथाई, कूए, खालड तथा पशुधन की निगेदारी में घर से बाहर गाँव चौगान में एक दो बजे तक घूम फिरकर घर आते थे। वे खाली हाथ नहीं, ढरिया कातते जेवडी (रस्सी) बटते हुए तथा अन्य कोई पशु हितकारी कार्य करते चलते थे। प्रत्येक घर का एक पुरुष अथवा एक स्त्री कूए से पानी लाने में नियुक्त सा किया रहता था। मतलब हर घर से प्रायः एक औरत का दिन नित्य हमेशा पानी लाने में बीतता था। उन दिनों पानी और पशुओं के कार्य उनके दैनिक धन्धे होते थे। दोपहर के बाद एक समय रोटी या खीच खाकर रात को सो जाते। पशुओं के लिए घास फूस, घिटाळ ल्हासू और चारा पाला दूसरे गाँव तक जाकर काट लाते। उनके पास घास की कूडिया बागर (ढेर), पूलों के पचासे छिंवरे, चारे के किडे कराई (स्थाई बडे ढेर) हर वर्ष दुर्भिक्ष के डर से पूरे वर्ष के लिए काफी मात्रा में मौजूद मिलते थे। अन्न की भांति नया संग्रह किये हुए पुराना घास चारा ही काम में लिया करते थे। खेती की फसल खराब हो जाने पर अथवा दुर्बल स्थिति वाले साधारण गृहस्थी अकाल समय में आठ प्रहर ही नहीं, पन्द्रह प्रहर तक निराहार निकाल दिया करते थे। बहुत प्रयत्न के बाद कहीं से थोडा बहुत अन्न

1 छाछ में थोडा मोटा आटा मिलाकर पकाया हुआ पेय।

प्राप्त कर लेते तो 'लिया'¹ बनाकर घर के सारे लोग थोड़ा थोड़ा बांटकर अद्ध भूखे रहते हुए समय गुजारते थे। छोटों को यह दलिया थोड़ा अधिक दे दिया करते थे। बच्चों के लोरी, माता जसे गांव का गांव मे प्रवेश हो जाने पर शिशुओं के समूहों से गांव के चारों ओर के टीबे, गाहने की प्रक्रिया द्वारा भर जाया करते थे।

अकाला, अद्धकाला म यहीं ऊंट और बलों की कमी के कारण मनुष्य अपने घर से औरत या लड़का द्वारा हल खींचवा लेते। उसे 'हाथा हळिया' करना कहते थे। बुभुक्षित खेतीहर बीजने वाला अन्न खा न जाय ? इसलिए उसमें कंकर मिला लिया करते थे। दिन भर हल चलाते और रात को पीडी नाल (पीडा मकोडा के रेने) म सो जाते थे ताकि सुबह जल्दी नींद उड़ जाय। वे खेती बीजने वाले 'हाळी' लोग सध्या सोते समय पास के पेड़ की डाल म डोरिया (सन का रस्सी) बांध दिया करते थे। ताकि वे मृतकाय एवं भूखे पेट, उसे पकड़कर खड़े हो उठने म समर्थ हो सके। पहले इस तरह से गांव के लोग खेती किया करते थे। इसलिए लोग अभाव और कठिनाई के लिए बीकानेर राज्य के रगिस्तानी गांवों म बसने की मुसीबतें झेलते रहते। वे बातें अब नहीं रही हैं।

कालू के पुराने लोक स्वभाव एव वस्तु भाव—प्राचीनकाल में कालू के कुछ चलते चरित्र भी होते थे, ऐसा सुना जाता है। पहले इस गांव म अशिष्टता की अपेक्षा शालीनता का पलड़ा ऊपरी चढ़ा उठा रहता था। कुछेक लोग अस्पृश्यों के घर चले जाया करते और वह प्रथा के अनुसार दंड जुर्माना भोगते रहते थे। यहाँ यातायात के सारे काम प्रायः ऊंटों से ही हुआ करते थे। केवल तीर्थ यात्रा म समूह बनाकर पैदल जाते और साल छः महीना मे वापिस घर लौटा करते थे। दूर दूर जगलों भरी यात्राओं म अधिक ऊंट ही काम मे लिए जाते थे। महाजन लोगों के बाल बच्चे और स्त्रियाँ दूर देवताओं की यात्राओं के समय ऊंट किराये करके समूह से जात जाया करते थे। अपने और माहेतियों के खान बाबत साथ म चूरमा, पूड़ी पराठे तथा लड्डू जलेबी ले जाया करते थे। इस तरह से माहेतियों के खाने का लालच भरा स्वभाव असभ्य बना हुआ रहता था। वे विवाह शादियों के समय तथा दुकानदारों का माल लाते समय भी गड़बड़ कर दिया करते थे। पांच आने के किराए में एक ऊंट और आदमी पूरा दिन लगाकर लूनकरनसर से छः मान मन वजन लादकर लाया करते थे। श्री डूगरगढ़ और सरदारशहर का किराया इससे दूना तिगना होता था। बंगला फाजिलका तथा सिरसा से अनादि की कतारें (अन्न से लदे ऊंटो की टोली) आया करती थी। फिर भी मन भर के ब्याज मन भर का अनाज और रुपए का मन भर ही नमक मिल जाता था। उस समय मिरच तेल तम्बाखू तथा खांड, पांच सेर तक, चावल शक्कर और तिल आठ सेर के एव गुड़ गेहूँ, पन्द्रह से बीसा सेर के मिलते थे। घी, डेढ़ दो सेर का मिलता मगर दूध पैसा से नहीं मिलता था। लाडू और जलेबी चार सेर के बिकते थे। नारियल का एक आना और खोपरे का एक पैसा लगता था। आज गज दोवटी (मोटा कपड़ा) एक रुपए मे जूता का जोड़ा मिल जाया करता था। सोना अट्ठारह बीस रुपए तोला तथा चाँदी के चार पाँच आना भर के भाव थे। खाद्य वस्तुएँ आज के भावो को देखते

1 पानी म थोड़ा मोटा आटा मिलाकर पकाया हुआ खाद्य पदार्थ।

हुए अधिक मात्रा म सस्ती थी, मगर मजदूर लोग पस के अभाव म उनके द ान ही कर पाते थे। वे तो गुटका रोटी मिरच रोटी अथवा कादो (प्याज) रोटी खाकर ही सारा जीवन बीता देते थे। लकडी और मकान वाले कारीगर चेजारे को पाँच आने ध्याडी (दनिकी) के मिलते थे। मोटियार मजदूर का एक आना तथा लुगाई टावर की टक्का पइसो मजदूरी थी। विवाह के समय उनके सारे नेगचारा म चालास पचास रुपयो स काम निकल आया करता था। वह महाशय अपनी नूतन सौभाग्य काक्षिणी के लिए परो मे कासी की कडी, हाथा म नारळी का चूडा और माथे पर लाख के बोरले का सुहागाभूषण भेंट करके वधू को अपन ठेट घर ले आया करता था। जनता की जरूरतें उस समय बहुत थोडी हुआ करती थी। किन्तु असाधारण तथा अमीर लोगो की रईसी आम जनता से उस समय भी भारी भिन्न थी। उनके तो मेवे[1], मुरब्बे और हर मौसम के फल हर समय तयार मिलते थे। मना विभिन्न इत्र एव हीरा पन्नो से जडे सेरों सोन के जेवरातों से वे लदे रहते थे। मिलगत बहुतायत के कारण उन लोगो की अद्वितीय जरूरतें तत्काल पूण हा जाया करती थी। उनके सोने चाँदी के बतन पलग, किवाड, मूर्तिया तथा कोरणीदार कक्ष दशनीय[2] हाते थे। वि स 1996 तक य सारे ठाट प्राचीन गत चलगत मे विद्यमान थे। मगर वि स 1996 से आरम्भ होकर हर एक वस्तु मे ऐसी इकतरफी मँहगाई आई कि कम से कम पचास स लेकर डेढ सौ गुना रुपयो तक मूल्य बढ गये।

वि स 1996 (ई सन 1939) एव वि स 2000 (ई सन 1943) के समय तक दिल्ली में वस्तुओ के भाव थे, जो कल्याण' वष 20 अक 1 (गो अक) पृ० 432 से उद्धत हैं।

वस्तु	वि स 1996 (ई सन् 1939)		वि स 2000 (ई सन् 1943)	
चावल	4।।।) रुपया	मन	34) रुपया	मन
दाल	5)	,,	25) ,	,,
शक्कर	12।।) ,,	,,	40) ,	,,
तेल	20)		50) ,	,,
घी	50) ,	,	140)	,
दूध	5) ,	,,	25) ,	,,
पत्थर का कोयला	6 आना मन	,,	2) ,,	,
लकड़ी का कोयला	1।।) रु० मन		4) ,,	,,
मोटा धोती जोडा	2) रु० जोडा		12) रु० जोडा	

प्राचीनकाल में ईसा से 500 वष पूव गाय दस पसो में बछडा एक आने मे बल डेढ आने मे और भस दो आन म मिलती थी। उस समय पसे का एक मन दूध था।

---

1 बादाम, पिस्ते, अगूर अजीर, नाशपाती, अनार किसमिस, छोहारे और भाँति भाति के शरबत।

2 बडे लोगो के कमरों मे झाड फानूस गुलाब पाश, इत्रदान पानदान पीकदान आदि सामान रहता तथा गवये, कव्वाल ननकिया व भाड भी रहा करते थे।

दो-सौ वर्ष बाद चन्द्रगुप्त के समय में पैसे का दो सेर घी और 25 सेर दूध था। ईस्वी सन् की शुरुआत में 12 आने में गाय और 1 रुपया सवा सात आने में बैल मिलते थे। विक्रमादित्य के समय 80 पैसों में गाय और 512 पैसा में बैल प्राप्त होते थे।[1]

भाव सन् 1979 दिसम्बर—भारतीय राजनैतिक उथल पुथल में पार्टी टूट घटनाएँ छीना झपटी, डकैती, हड़ताल, अनुशासनहीनता दल-बदल की नीति, कोयले व डीजल की कमी और सूखे से भयंकर प्रभावित रहने वाला वर्ष 1979 कुछ समय तक स्मरण रहेगा। यद्यपि इस वर्ष गेहूँ का उत्पादन बढ़ा तथापि रोलर फ्लोर मिलों को गेहूँ खरीदने की छूट, काम के बदले अनाज योजना तथा रूस बांगला देश, कोरिया, पाकिस्तान वगैरह को निर्यात होने से राजस्थान की मंडियों में अनाज के खुले भाव इस प्रकार प्रति क्विंटल रहे। ग्वार मोठ एवं मूंग के भाव तेज गये।

वस्तु	रुपये प्रति क्विंटल	वस्तु	रुपये प्रति क्विंटल
गेहूँ देसी	150 से 185	गेहूँ कल्याण	140 से 145
चावल बासमती	275 से 575	चावल बेगमी	172 से 185
चना	224 से 226	चना काबुली	240 से 300
दाल चना	242 से 246		
दाल मूंग	380 से 415	दाल मूंग धोवा	420 से 445
गुड़	200 से 215	चीनी	445 से 470

मूंगफली साल्वेंट रिफाइंड प्रति टीन 158 162, घी 28 रु प्रति किलो दूध दो रु किलो। किराना खुले बाजार (दिल्ली)—भाव प्रति क्विंटल इस प्रकार रहे काली मिर्च 1675-1800 रु इलायची प्रति किलो 100 200, रु लौंग प्रति किलो 130 135 दाल चीनी 49 रु, लालमिर्च 425 750 रु प्रति क्वि, हल्दी 325 515 जीरा 1200-1450 धनिया 325-650 अजवायन 315-450 मेथी 290-340, सौंठ 625 700, पोस्तदाना 785-815 रु प्रति क्विंटल रहे। घास के भाव प्रति क्विंटल इस प्रकार रहे—कुत्तर घास (सेवण) 62 रु, पालो 75 रु डचाव 37 रु नीरो 100 रु,।

ई० सन् 1980 नवम्बर में चना तेज गया। गेहूँ देशी 160-165 रु, कल्याण 140-145, चना 450 550 दाल मूंग 4€0-500 दाल मूंग धोवा 525 550, गुड़ 450-500, तेल मूंगफली 1150 1250, चीनी 1150-1200 रुपये प्रति क्विंटल रहे। घी देशी 35 रु किलो, दूध ढाई रु प्रति किलो है, आगे श्रीराम जाने।

सन् 1983 श्रीगंगानगर मण्डी में विभिन्न जिंसों के प्रति क्विंटल भाव इस प्रकार रहे।

अनाज—गेहूँ 180-235 बाजरा 164 165 मक्का 190-195, जौ 108 110 मोठ 250-255, चना 216-220 चना दाल 260 265, मूंग 325 350, मूंग दाल धोवा 445-450 उड़द 445 455, उड़द दाल धुली 510-525 मसूर दाल 310-325, अरहर दाल 540-550, ग्वार 170 172 ग्वार गम 400-405, ग्वार चूरी 100-105 रुपये।

---

1 'धर्म के नाम पर' पुस्तक से उद्धृत।

गुड चीनी—गुड 188 190 चीनी गगानगर 432 435 रुपये। **तेल तिलहन**—तारामीरा 320 325 तेल 1070, खल 128 130 सरसो 430 435, तेल 1140, खल 124-125, बिनौला 175 215, तेल 1155, बिनौला खल 124 125 रुपये। **कपास**—देशी 385 435 कपास नरमा 370 415 रुपये।

कालू गाव और पुराने लोक निवास की बातें—पहले इस गाँव मे रहने वाले केवल जाट और उनकी गृहस्थी तथा कृषि कार्यों म योग देने वाले श्रमिक (बढई, बागवान, प्रजापत, नाई, लुहार तथा चमारादि) लोग ही अधिक थे। कालू के चार बास (मोहल्ला) अवशेषो के प्रमाणानुसार दूसरी कल्पना ही व्यर्थ हो जाती है कि इस गाँव पर पहले किसी अन्य का भी अधिकार वास या और वह गाँव का उजाडने बसाने म समर्थ रहा हो। दूसरे सब लोग जब यहा आकर बसे तभी इसका आकार ग्राम से कस्बा कहलाया है। मैंने इसी पुस्तक के पाठो मे कौन लोग किस गाव और दिशा से आकर बसा है, सो लिखा है। इस गाँव के प्राचीन लोग खेती और पशुपालन के अलावा शारीरिक कष्टमय कार्यों को भी विशेष महत्व देने वाले थे, ऐसा जान पड़ता है। वे अकाल, प्रकोप और चोर लुटेरो से त्रस्त हुए थेह से उठकर सघन वन की इस चमत्कारी कालिका देवी की मूर्ति के निकट गाँव की सवद्धि करने म सफल हुए हैं। तत्पश्चात और और गाँवो से आने वाले लोग भी इस सौभाग्यशाली डहरी मे सानद बस कर सम्मिलित रहते हैं। मगर इतने लम्बे समय के उपरात अन्य समाज (जाति) के आने वाले लोग अपना जीवन एक दूसरे से भिन्न व्यतीत करत हैं। हिन्दुओ की सामाजिक व्यवस्था के मुताबिक जातीय भेदभाव का पालन करके एक कस्बे मे निवास करते हुए भी पर्याप्त दूर रहते आये है। पुरानी प्रथानुसार यदि कोई व्यक्ति बेकार म हरिजनो के घर चला जाता तो वापिस आने पर उस व्यक्ति को जाति बहिष्कार या जुर्माना कर दिया जाता था। किसी काम से जाने वाले सभ्य व्यक्ति का वापिस घर आने पर दूर खडा रखकर जल का छींटा (छिडका) डाला जाता था। जूतियो की मरम्मत बगैर चमडे का काय करवाकर लाते तो जल के छींटे लगाए बिना उनको नही पहन सकते। शुद्ध अशुद्ध का इतना पाखंड था कि हरिजन के घर से दूध घी ही नही खेत का अन्न और फल लेने म भी अन्य लोग पूरे हिचकिचाया करते थे। सवर्ण रास्ते चलते तो सहयात्री हरिजन, बराबर रास्ते के किनारे चला करते थे। विवाह के समय भी हरिजन वर को रगीन नही, सफेद पगडी बाँधनी पडती थी और बडे गीत नही गाने दिए जाते। शूद्र स स्पर्श हो जाने पर उच्च जाति का हिंदू अपवित्र हो जाता और उसकी छाया तक से दूर रहते थे। शूद्रो का निवास, गाव के बाहर होता था। कुत्ते एव गधे इनका धन होता तथा मृतकों के वस्त्र इनके पहनने को बताए जाते। फूटे बरतनो म भोजन करने और कासे के आभूषण पहनने पडते।[1] इसलिए

---

1 चाण्डालश्वपचाना तु बहिर्ग्रामात्प्रतिश्रय ।
अपपात्राश्च कर्तव्या धनमेषा श्वगर्दभम ॥ (51)
वासासि मृतचेलानि भिन्न भाण्डेषु भोजनम ।
कार्ष्णायसमलकार परिव्रज्या च नित्यश ॥ (53)
और तो क्या ईश्वरीय कानून सग्रह (Penal code) वेद भगवान को सुनने तक म भी रोक दिया। आज्ञा हुई—श्रवणे त्रपु जतुभ्या श्रोत्र परिपूर्ण उच्चारणे।
जिह्वाच्छेदो धारणे हृदयविदारणम ॥
वेदान्त सूत्र (शकर रामानुज माध्व भाष्य 1।2।38॥)

लोग अधकार एव रूढ विचारा म डूबे रहते थे। वे अनान मे भ्रमित भीषण अत्याचार करते हुए तनिक भी नही सकुचाते थे। मानवता पाखड को ठाकरें खा रही थी और जातिवाद की जडो का जाल प्राय फला हुआ था। ऐसे अध परम्पराग्रस्त गावा मे असरय मूक पशुआ की बलि धम हिताय तथा मनुष्य कल्याण के बहान दे दी जाया करती थी। मानव जीवन की सास्कृतिक प्रगति यहा के लोगा मे अधिक समय तक क्रांति नही ला पाई। क्योकि सवर्णों के भय से अवर्णो को अय रीति रिवाज पालन करने पडत थ। परन्तु आज क इस प्रजातान्त्रिक युग म कालू गाव भी अब शन शन पुरान पाखडो एव भेदभावा को विस्मरण करता जा रहा है, जो अत्य त महत्वपूण और सम्मानीय है।

बस ता इस गाँव मे जाटा के पुराने चार बास हैं। मगर गादारा जाट इस गाँव के मुरय वासिन्द गान हैं और उनका एक अपना पुरातन मौहल्ला वास है। इसमे चौमीता, वरागियान मालसरवास, सारस्वता, साटो आदि के कई उप बास भी हैं। मौहल्ला, बाजार रामा मडी तथा श्री डूगरगढ सरदार शहर की सडकें भी इसके वास पास हैं। मौहल्ले की अय जाट जातिया म नण जतासर से, मूँड मूडसर से, डूडी मलकीसर स, सारण भोजरासर स और बुरडक यालकी से तथा एक पगदडा दिखणादा जाट भी इस बास म आकर बसा ह। बरागियो के वास म ठाकुर जी का मन्दिर, उनका कूआ और क याओ का उच्च प्राथमिक विद्यालय भवन भी है। गादारो के बास म गाँव कुजटी से सांड और गारब देशर से बोरड, बाहती बागडी, बैरागी, गाडिया लुहार तथा कडोल सुनार यहा आकर बसे हैं। सारस्वा हेमासर स और पारीक पुरोहित गाँव मालसर से आये हुए हैं। दूगड सोमासर के, डागा बीमासर के बोथरा-पूनरासर व साधासर के (तथा श्री भीखमचन्द जसकरन बोथरा का परिवार सोनपालसर से), तातेड सरूणा व लूनकरनसर के सेठिया—खोखराणा के तथा (श्री कालूराम सेठिया गरसर स) नाहटा—राजपुरा के नवलखा कभाणा से और क्वा (रावतसरिया) जसवतगढ (महाजन) से आये हुए हैं। इस मौहल्ले से कतिपय प्रसिद्ध व्यक्ति एव जातिया वाहर भी जा चुकी हैं। जाटों म मदूरोथ, घौक्ल मया और देवसी जाधू के घर बोलते हैं पर दूसरे लोग बसते हैं। उनका निवास समाप्त हा गया। गोदारो के वास मे राजपुरा से आकर वसने वाला रावतमल मालू और समदसर स आये हुए उसके सिंघी भानजे भी अब यहाँ नही रहे। काठारी कालूराम जेठमल वगरह सरदारशहर जाकर बस गय हैं। देराजसर से आया हुआ साडो का भानजा जासकरण लोढा यहा से नेपाल जाकर बस गया है।

कालू मे गादारो के अतिरिक्त जाटो के तीन वास और हैं जिनम भादवो के वास मे अनेक सस्थाआ सहित एक कांकरिया उपवास और जाखुओ के वास मे छात्रावास एव ओझो का उपवास बसता है। वास भादवान मे ढागवाल, कसवा लेघा गिल्ला आदि जाटों के घर हैं। पोटलिया, खाड आदि जाट कांकरिया वास के विद्यालयों मे अध्यापक हैं। वास जाखुआन म तड, धिटाला, वाजिया, सारण आदि जाटों के गुवाडे भी वसते हैं। वास जाणियान मे दो उपवास पारीको का वास और ढाई बिग्गा (नाहटों-

---

शूद्र के वेद सुनने पर सीमा या लाख पिघला कर कान म भर दे, बोलने पर जीभ काट दें, हृदय मे धारण (कठस्थ) कर ले तो छाती चीर दे।"

गुड-चीनी—गुड 188 190 चीनी गगानगर 432 435 रुपये । **तेल तिलहन**—तारामीरा 320 325, तेल 1070, खल 128 130 सरसो 430 435, तेल 1140, खल 124-125, बिनौला 175 215, तेल 1155 बिनौला खल 124 125 रुपये। **कपास**—देशी 385 435, कपास नरमा 370 415 रुपये।

कालू गाँव और पुराने लोक निवास की बातें—पहले इस गाँव म रहने वाले केवल जाट और उनकी गहस्थी तथा कृषि कार्यो म योग देने वाले श्रमिक (वढई, बागवान, प्रजापत नाई, लुहार तथा चमारादि) लोग ही अधिक थे। कालू के चार वास (मोहल्लो) अवशेषो के प्रमाणानुसार दूसरी कल्पना ही व्यथ हो जाती है कि इस गाँव पर पहले किसी अन्य का भी अधिकार वास था और वह गाँव को उजाडने बसाने म समय रहा हो। दूसरे सब लोग जब यहा आकर बसे तभी इसका आकार ग्राम से कस्बा कहलाया है। मैंने इसी पुस्तक के पाठो मे, कौन लोग किस गाँव और दिशा से आकर बसा है, सो लिखा है। इस गाँव के प्राचीन लोग खेती और पशुपालन के अलावा शारीरिक कष्टमय कार्यों को भी विशेष महत्व देन वाले थे ऐसा जान पड़ता है। वे अकाल प्रकोप और चोर लुटेरो स त्रस्त हुए थेह से उठकर सघन वन की इस चमत्कारी कालिका देवी की मूर्ति के निकट गाँव की सवद्धि करने म सफल हुए हैं। तत्पश्चात और और गाँवो से आने वाले लोग भी इस सौभाग्यशाली डहरी मे सानद बस कर सम्मिलित रहते हैं। मगर इतने लम्बे समय के उपरात अन्य समाज (जाति) के आने वाले लोग अपना जीवन एक दूसरे से भिन्न व्यतीत करत हैं। हिन्दुओ की सामाजिक व्यवस्था के मुताबिक जातीय भेदभाव का पालन करके एक कस्बे मे निवास करते हुए भी पर्याप्त दूर रहते आय हैं। पुरानी प्रथानुसार यदि कोई व्यक्ति वेकार म हरिजनो के घर चला जाता तो वापिस आने पर उस व्यक्ति को जाति वहिष्कार या जुर्माना कर दिया जाता था। किसी काम से जाने वाले सभ्य व्यक्ति का वापिस घर आने पर दूर खडा रखकर जल का छीटा (छिडका) डाला जाता था। जूतियो की मरम्मत वगर चमडे का काय करवाकर लाते तो जल के छीटे लगाए बिना उनको नही पहन सकते। शुद्ध अशुद्ध का इतना पाखड था कि हरिजन के घर से दूध घी ही नही, खेत का अन्न और फल लेने म भी अन्य लोग पूरे हिचकिचाया करते थे। सवण रास्ते चलते तो सहयात्री हरिजन बराबर रास्ते के किनारे चला करते थे। विवाह के समय भी हरिजन वर को रगीन नही सफेद पगडी बाधनी पडती थी और वडे गीत नही गाने दिए जाते। शूद्र से स्पश हो जाने पर उच्च जाति का हिंदू अपवित्र हो जाता और उसकी छाया तक से दूर रहते थे। शूद्रो का निवास, गाव के बाहर होता था। कुत्ते एव गधे इनका धन होता तथा मृतको के वस्त्र इनके पहनने को बताए जात। फूटे बतनों मे भोजन करन और कासे के आभूषण पहनने पडते।[1] इसलिए

---

1 चाडालश्वपचाना तु बहिर्ग्रामात्प्रतिश्रय ।
अपपात्राश्च कतव्या धनमेषा श्वगदभम ।। (51)
वासासि मृतचेलानि भिन्न भाण्डेषु भोजनम ।
कार्ष्णायसमलकार परिव्रज्या च नित्यश ।। (53)
और तो क्या ईश्वरीय कानून सग्रह (Penal code) वेद भगवान को सुनने तक से भी रोक दिया। आना हुई—श्रवणे त्रपु जतुभ्या श्रोत्र परिपूण उच्चारणें।
जिह्वाच्छेदा धारणे हृदयविदारणम ।।
वेदान्त सूत्र (शकर-रामानुज माध्व भाष्य 1।2।38।।)

आठवाँ प्रकरण

बीकानेर-मडल का ऐतिहासिक अश

जाट ठिकाने और कालू—अनेक साहित्यिक उल्लेखो के अनुसार महाभारत-काल के पश्चात बीकानेर का क्षेत्र और नागौर दोनो काफी समय तक सम्मिलित सभाग तन राज्य, एक रूप बन कर रहे। तत्समय से इस बडे भू भाग पर मौर्य वश अशोक महान कुषाणवश, शक क्षत्रप, जोहिया गुप्त वश हूण गुजर और वम वश रघुवशी प्रतिहार तथा चौहान आदि विभिन्न वर्शों के महान राज्य भी स्थापित हुए। क्योकि इनमें बहुत से ऐसे राज्य थे, जिन्होंने सारे उत्तरी भारत को अपने अधीनस्थ रखने का उपभोग किया। राजस्थान मे बीकानेर सभाग भी उन्ही रजवाडो के द्वारा भोगा हुआ एक विशिष्ट कोटि का मडल है।

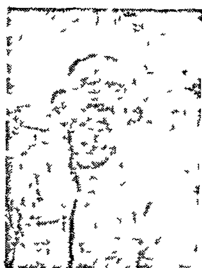
यहाँ की भौगोलिक स्थिति जलजलाकार से शुष्क (मरुकान्तार) हो जाने पर बडी भयकर बन गई थी। रेतीले निजल प्रदेश के अनेक विस्तृत भाग प्राय निजन जैसे दिखाई देते थे। शत्रुओं से आक्रान्त अथात पराजित होकर बहुत से लोग भयभीतावस्था मे यहाँ आकर शरण लिया करते थे। इसलिए सस्कृति की यहा प्राचीन परम्पराएँ ही चलती रही और लडाकू लोगों के आन जान का ताता लगा रहा तथा लूट-खसोट व लडाइ झगडो के बताव जागल प्रधान ही बने रहे। इसी सिलसिले से प्राचीनकाल म यहा यौधेय और मालव जाति ने शरण ली। फिर मध्ययुग मे जाट जाति न यहा आकर अपना जनपदीय अड्डा जमाया, जो राठौडो के आगमन तक चला रहा।

पृथ्वी, उसके सब सुपुत्र और उनकी सस्कृति आदि तत्त्व अपन प्रादशिक जीवन मे एक साथ प्रगतिशील बने रहने—वे महाजन सघ या जनपद कहलाने थे।[1] जनपद सास्कृतिक भौगोलिक, राजनतिक एव भाषा के परिप्रेक्ष्य म एक नसर्गिक एव सुरक्षित सघ व राज्य धारक घटक के रूप म प्रख्यात माना जाता था। महाभारत काल मे ऐसे अनेक जनपदो के नाम मिलत ह। गुप्त साम्राज्य म सिकन्दर के समय मे और पाणिनि के उल्लेख मे भी जनपदो की पर्याप्त चर्चा प्रचलित हुई है। मध्यकाल (सन 1226) मे महमूद गजनवी न जौद के पहाडो के निकट से एक ऐसे लोक समूह का पीछा करके मार भगाया

---

1 15वी शताब्दी म यहा एक जोइया का सगठन राज्य सहवाण नामक स्थान था। उस पचायती राज्य का विशिष्ट नाम महाजन कहा जाता था। सहवाण का क्षेत्र आज क गाँव महाजन (जिला बीकानेर) स लेकर वतमान सूरतगढ एव अनूपगढ तहसील (जिला-श्रीगगानगर) समेत लम्बेरा (भावलपुर पाकिस्तान) तक जोइया का क्षेत्र जोइयावाटी भी कहलाता था। रगमहल, भटनेर कालीबगा (जि० गगा-नगर) के गाँव भी कभी जोइयों के अधीन रहे थे। आगे जाकर उसी सहवाण क्षेत्र का नाम शाहार पड गया था और फिर राठौडों के राज्य म वह महाजन (जनपद) प्राचीन राज्य नाम, वतमान समय तक महाजन ग्राम के अथ में काम आता है।

कोठारिया का) वास हैं। इसमे सियाग, घेणा, कुण्डलिया, बाम्भू पाडाण प्रभति जाट बसते हैं। मुसलमानो का मौहल्ला और मस्जिद भी इसी वास मे स्थित हैं।[1] जाणियान वास में पारीको का वास तो हर समय साफ-सुथरा, लिपा पुता तथा स्वच्छ गह मडित गमकता दमकता रहता है। वास के बीच अपनी धर्मशाला, खेळ, प्याऊशाला है। *विशेषता*



सामाजिक पच श्री मूलाराम, पारीक

इसमे सदा दो दो भाइया की देवरूप जोडी जँचती रही है। अधिक भाइयो के होने पर भी प्रेम दो भाइयों का विशेष उज्ज्वल रहा है। जसे—मोतीराम मघाराम, रामलाल दूलाराम, भगवानाराम वेगाराम, इ दाराम चौथाराम, सुगनाराम मूलाराम, चेतराम बेगाराम, गोपालराम दानाराम राऊराम कोडाराम, गणपतराम जालूराम, गोपालराम जेसाराम रावतराम *किसनाराम मघाराम रामरतनराम, मूलाराम डूगरराम* रामेश्वर लाल लेखराम, ठाकरसीराम बालूराम, हरिराम रूपराम, भीखाराम दुर्गाराम बीझाराम-किसनाराम जगदीशराम महालचद अर्जुनराम कन्हैयालाल रामेश्वरलाल बजरगलाल, मोहनलाल रामबक्स हनुमानमल पदमाराम अजुनराम मालाराम मोहनलाल मालाराम रमाकात, बुधमम, मोहनलाल जगदीश इत्यादि सरल स्वभाव विमदवेश के व्यक्तित्व पारीक वास मे पदा हुए हैं।

●

1 अब चारो वासा के पीछे क स्थानो म नूतन कालोनियाँ बन रही हैं।

आठवाँ प्रकरण

बीकानेर-मडल का ऐतिहासिक अश

जाट ठिकाने और काल्—अनेक साहित्य पर उल्लेखा के अनुसार महाभारत-काल के पश्चात बीकानर का क्षेत्र और नागौर दानो काफी समय तक सम्मिलित समाग तन राज्य, एव रूप बन कर रहे। तत्समय से इस उक्त भू भाग पर मौर्य वश, अशोक महान, कुषाणवश, शक क्षत्रप जोहिया, गुप्त वश हूण, गुजर और वम वश रघुवशी, प्रतिहार तथा चौहान आदि विभिन्न वशो के महान राज्य भी स्थापित हुए। क्योंकि इनमे बहुत से एस राज्य थे जिन्होने सारे उत्तरी भारत का अपन अधीनस्थ रखने का उपभोग किया। राजस्थान में बीकानर समाग भी उन्हा रजवाडों के द्वारा भोगा हुआ एक विशिष्ट कोटि का मडल है।

यहाँ की भौगालिक स्थिति जलजलाकार से शुष्क (मरुस्थलाकार) हो जाने पर बडी भयकर बन गई थी। रतीले निजल प्रदेस के अनक विस्तृत भाग प्राय निजन जसे दिखाई दत थे। शत्रुओ से आक्रान्त अर्थात पराजित होकर बहुत से लोग भयभीतावस्था म यहाँ आकर शरण लिया करते थे। इसलिए सस्कृति की यहा प्राचीन परम्पराएँ ही चलती रही और लडाकू लोगो के आने जान का ताता लगा रहा तथा लूट-खसोट व लडाई झगडा के बर्ताव जागल प्रधान ही बन रहे। इसी सिलसिले म प्राचीनकाल म यहा यौधेय और मालव जाति ने शरण ली। फिर मध्ययुग मे जाट जाति न यहाँ आकर अपना जनपदीय अड्डा जमाया जो राठौडों के आगमन तक बना रहा।

पृथ्वी, उसके सब सुपुत्र और उनकी सस्कृति आदि तत्त्व अपने प्रादशिक जीवन मे, एक साथ प्रगतिशील बने रहने—वे महाजन सघ या जनपद कहलाते थे।[1] जनपद सास्कृतिक भौगालिक, राजनतिक एव भाषा के परिप्रेक्ष्य म एक नसगिक एव सुरक्षित सघ व राज्य धारक घटक के रूप म प्रख्यात माना जाता था। महाभारत काल म ऐसे अनेक जनपदो के नाम मिलत ह। गुप्त साम्राज्य मे, सिकन्दर के समय में और पाणिनि के उल्लेख मे भी जनपदो की पर्याप्त चर्चा प्रचलित हुई है। मध्यकाल (सन 1226) मे महमूद गजनवी ने जौद के पहाडों के निकट मे एक ऐसे लोक समूह का पीछा करके मार भगाया

---

1 15वीं शताब्दी म यहा एक जोइया का सगठन राज्य सहवाण नामक स्थान था। उस पचायती राज्य का विशिष्ट नाम महाजन कहा जाता था। सहवाण का क्षेत्र आज क गाँव महाजन (जिला बीकानेर) म लेकर वतमान सूरतगढ़ एव अनूपगढ तहसील (जिला-श्रीगगानगर) समेत लल्वरा (भावलपुर पाकिस्तान) तक जोइया का क्षेत्र जोइयावाटी भी कहलाता था। रगमहल भटनर कालीबगा (जि० गगा-नगर) के गाँव भी कभी जोइयो के अधीन रह थे। आगे जाकर उसी सहवाण क्षेत्र का नाम शाहार पड गया था और फिर राठौडों के राज्य म वह महाजन (जनपद) प्राचीन राज्य नाम वतमान समय तक महाजन ग्राम के अथ में नाम आता है।

जो मरते पड़त धारे धीर बीकानर की इस भूमि मे आकर बस सका। टॉड का कथन है कि भयभीत और पराजित ये जिट (जाट) लोग इस अनउपजाऊ भूमि मे बस गये जो तेरहवी शती म चौहान राज्य का पतन हो जाने पर अन्य शक्तिशाली सत्ता का अभाव देखकर अपन छोटे छोटे गणराज्य (जनपद) बनाने लगे थे। उनकी अपनी भाषा मे जाट जनपद भोमियाचारा के राज्य कहलात थे जो कृषि एव पशुपालन से विशिष्ट समाय ठिकाने होते थे।

इन जाट जनपदो के सबध म पुरानी जानकारी देन वाला कोई प्रमाणिक साहित्य व सिलालेख तो नही मिलता, पर क्यामखाँरासा', छदराउजइतसी', नणसी की ख्यात', टाड राजस्थान' और दयालदास की ख्यात' से अल्पमात्रिक जाटवश का परिचय पाया जाता है। अत बीकानर क्षेत्र मे जाट वणन के सत्य तथ्य गत पाच सौ वर्षो से पहले के अनुपलब्ध अप्राप्य हो जाते हैं।

वि० स० 1400 के पास गण वातावरण पूणरूप से अशांत हो चुका था। सभी के मन मे पृथ्वीपति बन जाने की भूख उमड आई थी। जितनी भी जमीन जिसके हाथ आई, वही उस हिस्से का पूरा मालिक बन गया। किसी ने उसे अपने नाम पर गाँव का नाम दिया और किसी न अपन नाम ज्होडे कूए खुदवाकर प्रमाणिक कब्जे कर लिए। जो आदमी जितना ताकतवर था, उसन अपना उतना ही बडा गणराज्य (जनपद) कायम कर लिया। दयालदास ने जाटो के सात राज्यो की मुख्य राजधानियाँ नाचे लिखे अनुसार मानी हैं—

	ठिकानाधारी	उपवश	राजधानिया	अधीनस्थ गाँव
1	पांडू	गोदारा	शेखसर और लाधडिया	360
2	चोग्दा	सोहाग	सूई	140
3	अमरा	सोहुवा	धाणसिया	84
4	पूला	सारण	भाडग	360
5	रायसल	बणीवाल	रायसलाणा	360
6	कवरपाल	कसवाँ	सिधमुख	360
7	का हा	पूनिया	वडो लूदी	360

तात्पय यह है कि बीकानर राज्य की स्थापना स पूव यहाँ की ध नी पर बीकानेर राज्य की इतिहास सामग्री मे मुख्य सात ठिकानो के ग्राम वणन हैं। पाउलेट, मु० सोहनलाल, कु० क हैयाजू आदि के ग्रथ प्राय श्री सिढायच से मिल जाते है।

जाट बिरादरी का आविभाव बडा विवादास्पद एव विचित्रतापूण मिलता है। कतिपय विद्वानो का कथन है कि जाट और गूजर, शक (सीथियन) यूची और हूणो के वशज हैं, बल्कि अन्य लोग जाटो को आर्यों की पीढी मे मानते हैं। स्वय कुछ जाट कहते हैं कि हम यदुवशी हैं। लेकिन इबटसन ने जाटो, गूजरो और राजपूतों को एक ही नवश से सबधित बताये हैं।[1] ठा० देशराज जधीना ने अपने जाट इतिहास म जाटो का सम्ब ध राजपूतो से होना नही माना है। टाड न राजस्थान के 36 राजवशो म जाट या जिट का स्थान बताया है, किन्तु राजपूतो के साथ सामाजिक सवध कतई स्वीकार नही किय।

1 वतमान मे राजपूता के बराबर जाट रेजीमेंट भी है। लेकिन इतिहास मे य वीर नही मान गये। इनकी नाता प्रथा और उत्तराधिकार की मा यताएं राजपूतो से पृथक हैं।

पजाव के जिट ही गगा यमुना के तट से जाट कहलाते हैं। सि धु नदी के किनारे और समस्त सौराष्ट्र मे इनका जट नाम मे जानते हैं। टाड न राजकुला की अपनी सूची मे इस वश को जिट, जेटी एव यदु भी लिखा है।

जाटो का सुयशपूर्वक कहना है कि सृष्टि सरचना के समय महादेवजी ने अपनी जटा से बभूत झाडकर पार्वतीजी के हाथो पुतला बनवाया। फिर भोलानाथ ने उसम जान डाल दी। उसी पुतले की वश परम्परा चली जो जाट जाति कहलाई। पुतले का प्रथम पुत्र गोदारा और दूसरा पूनियाँ था। उन्ही नामो से जाट जाति मानी गई है। उन दोनो मे फिर अ य गोत्र भी सम्मिलित हो गये।[1]

यहाँ जाटो की कतिपय देवलिया सती स्मारक एव सतरहवी शताब्दी तथा बाद की छतिया भी मिलती हैं उनम कोई विशेष जातियोल्लेख नही है। श्री दयालदास की ख्यातानुसार विक्रम की 16वी शताब्दी के पूर्वार्द्ध वातावरण से सबधित जाट गणराज्य तथा उनके ठिकानो की मा यता है। इ ही गणराज्यो के धराधिपति चौधरी (चारो ओर पृथ्वी धारन वाले सुदृढ मध्यावस्थित धुरी स्वरूप शासक) कहलाने लग गये। आगे जाट राज्यो के चले जाने पर जाट जाति साधारणता को प्राप्त हुई और सारे जाट, चौधरी या पटेल नाम से ससम्मा य सबोधन पाने लगे।

राजस्थान म जाट, राजपूतो से अधिक आबाद हैं। ये सैनिक आकृति परिश्रम शील एव अभय मिजाज आदमी माने जाते हैं। इनके शरीर की बनावट राजपूतो के समान तगडी, सबल एव सुदृढ होती है। ये कृषि कर्म म सवगुण कुशल सम्मानित होते हैं और हसी मजाक मे मुहफट तथा स्पष्टवादी कहलाते हैं। अत जनरल कनिंघम राजपूतों को आय सतान मानते हैं, कि तु कनल टाड न जाटों को राजपूतो के एक महान वश के नाम से सबोधित किया है।[2]

जो भी हो—कि तु जाट लोग अपनी उत्पत्ति शिवजी की जटा से मानते हुए अधिकतर शिवभक्त तथा कृष्णभक्त होते हैं और कालिकाजी, सती जी आदि देवियो तथा तेजाजी जसनाथजी, जाम्भोजी को अपनी जातीय विशेष मा यता देते है। भक्ति प्रवृति इनकी सदा से देश प्रसिद्ध रही है। बादशाह जहाँगीर के जमाने मे एक भक्त हृदया जाट वशी करमाबाई नामक महिला ने अपने सरल स्वभाव से भगवान को खिचडी का भोग लगा दिया। तब भक्त वत्सल परम प्रभु जगन्नियता ने उस भक्ता की भोली भक्ति से प्रस न होकर बाई करमा का वह अलोना सलोना प्रसाद स्वय पाया था, ऐसा

---

1 रिपोट मुदु मशुमारी मारवाड पृ० 47 48।

2 A राजस्थान की जातियाँ पृष्ठ 22

B भरतपुर के महाराज जवाहरसिंह की प्रशसा "जाटवीर" साप्ताहिक पत्र मे निकली थी, जिसका प्रकाशन आगरे से होता था।

जाट जौम धारे बडो, आयो देश मथाय।
मिल अगमने जायके, राना कऊ राय ॥ (करहिया रायसो)

आज भी मारवाड प्रदेश म जाटों की अनेक सस्थाएँ विद्यमान हैं।

जो मरते पडते धीर धार बीकानेर की इस भूमि मे आकर बस सका। टॉड का कथन है कि भयभीत और पराजित य जिट (जाट) लोग इस अनउपजाऊ भूमि मे बस गये जो तेरहवीं शती म चौहान राज्य का पतन हो जाने पर अन्य शक्तिशाली सत्ता का अभाव देखकर अपने छोटे छोटे गणराज्य (जनपद) बनाने लगे थे। उनकी अपनी भाषा मे जाट जनपद भौमियाचारा के राज्य कहलाते थे, जो कृषि एव पशुपालन से विशिष्ट सामान्य ठिकाने होते थे।

इन जाट जनपदो के सबध म पुरानी जानकारी देने वाला कोई प्रमाणिक साहित्य व शिलालेख तो नही मिलता, पर क्यामखाँरासा', छदराउजइतसी 'नणसी की ख्यात 'टॉड राजस्थान' और दयालदास की ख्यात' से अल्पमात्रिक जाटवश का परिचय पाया जाता है। अत बीकानेर क्षेत्र म जाट वर्ण के सत्य तथ्य गत पाच सौ वर्षों से पहले के अनुपलब्ध अप्राप्य हो जाते हैं।

वि० स० 1400 के पास गण वातावरण पूर्णरूप से अशांत हो चुका था। सभी के मन मे पृथ्वीपति बन जाने की भूख उमड आई थी। जितनी भी जमीन जिसके हाथ आई, वही उस हिस्से का पूरा मालिक बन गया। किसी ने उस अपने नाम पर गाँव का नाम दिया और किसी ने अपने नाम जोहडे कूए खुदवाकर प्रमाणिक कब्जे कर लिए। जो आदमी जितना ताकतवर था उसने अपना उतना ही बडा गणराज्य (जनपद) कायम कर लिया। दयालदास ने जाटो के सात राज्यो की मुख्य राजधानियाँ नीचे लिखे अनुसार मानी हैं—

	ठिकानाधारी	उपवश	राजधानिया	अधीनस्थ गाव
1	पांडू	गोदारा	शेखसर और लाधडिया	360
2	चोखा	सीहाग	सूई	140
3	अमरा	सोहुवा	धाणसिया	84
4	पूला	सारण	भाडग	360
5	रायसल	बेणीवाल	रायसलाणा	360
6	कवरपाल	कसवाँ	सिधमुख	360
7	कान्हा	पूनिया	बडी लूदी	360

तात्पर्य यह है कि बीकानेर राज्य की स्थापना से पूर्व यहाँ की धरती पर बीकानेर राज्य की इतिहास सामग्री मे मुख्य सात ठिकानो के ग्राम वर्णन हैं। पाउलेट मु० सोहनलाल, क० व हैयाज आदि के ग्रथ प्राय श्री सिढायच से मिल जाते हैं।

जाट बिरादरी का आविर्भाव बडा विवादास्पद एव विचित्रतापूर्ण मिलता है। कतिपय विद्वानो का कथन है कि जाट और गूजर, शक (सीथियन), यूची और हूणो के वशज हैं, बल्कि अन्य लोग जाटो को आर्यों की पीढी म मानते हैं। स्वय कुछ जाट कहते हैं कि हम यदुवशी हैं। लेकिन इबटसन ने जाटो, गूजरो और राजपूतो को एक ही नृवश से सबधित बताये हैं।[1] ठा० देशराज जघीना ने अपने जाट इतिहास मे जाटो का सम्बध राजपूतो से होना नही माना है। टाड ने राजस्थान के 36 राजवशो म जाट या जिट का स्थान बताया है, किन्तु राजपूतो के साथ सामाजिक सबध कतई स्वीकार नही किये।

1 वर्तमान में राजपूतों के बराबर जाट रेजीमेंट भी है। लेकिन इतिहास मे य वीर नही माने गय। इनकी नाता प्रथा और उत्तराधिकार की मान्यताएँ राजपूतों से पृथक हैं।

पजाव के जिट ही गगा, यमुना के तट से जाट कहलाते हैं। सिन्धु नदी के किनार और समस्त सौराष्ट्र मे इनका जट नाम मे जानते हैं। टाट न राजकुला की अपनी सूची मे इस वश को जिट जेटी एव यदु भी लिखा है।

जाटो का सुयशपूर्वक कहना है कि सृष्टि सरचना के समय महादेवजी ने अपनी जटा से भभूत झाडकर पावतीजी के हाथो पुतला बनवाया। फिर भोलानाथ ने उसम जान डाल दी। उसी पुतले की वश परम्परा चली जो जाट जाति कहलाई। पुतले का प्रथम पुत्र गोदारा और दूसरा पूनिया था। उन्ही खापो से जाट जाति मानी गई है। उन दोनो मे फिर अ य गोत्र भी सम्मिलित हो गये।[1]

यहाँ जाटो की कतिपय देवलिया सती स्मारक एव सतरहवी शताब्दी तथा बाद की छतिया भी मिलती हैं उनमे कोई विशेष जातियोल्लेख नही है। श्री दयालदास की ख्यातानुसार विक्रम की 16वी शताब्दी के पूवार्द्धो वातावरण से सबधित जाट गणराज्य तथा उनके ठिकानो की मान्यता है। इ ही गणराज्यो के धराधिपति चौधरी (चारों ओर पृथ्वी धारन वाले सुदढ मध्यावस्थित धुरी स्वरूप शासक) कहलाने लग गये। आगे जाट राज्यो क चले जाने पर जाट जाति साधारणता को प्राप्त हुई और सारे जाट, चौधरी या पटल नाम से ससम्मान्य सबोधन पाने लगे।

1 राजस्थान म जाट, राजपूतो से अधिक आबाद हैं। ये मनिक आकृति परिश्रम-शील एव अभय मिजाज आदमी मान जाते हैं। इनके शरीर की बनावट राजपूतो के समान तगडी सबल एव सुदढ होती है। ये कृषि कम म सवगुण कुशल सम्मानित होते हैं और हसी-मजाक मे मुहफट तथा स्पष्टवादी कहलाते हैं। अत जनरल कनिघम राजपूतों को आय सतान मानते हैं, किन्तु कनल टाड ने जाटों को राजपूतो के एक महान वश के नाम से सबोधित किया है।[2]

जो भी हो—किन्तु जाट लोग अपनी उत्पति शिवजी की जटा से मानते हुए अधिकतर शिवभक्त तथा कृष्णभक्त होते हैं और कालिकाजी, सती जी आदि देवियों तथा तेजाजी जसनाथजी, जाम्भोजी को अपनी जातीय विशेष मान्यता देत हैं। भक्ति प्रवृत्ति इनकी सदा से देश प्रसिद्ध रही है। बादशाह जहांगीर क जमाने मे एक भक्त हृदया जाट वशी करमाबाई नामक महिला ने अपन सरल स्वभाव से भगवान को खिचडी का भोग लगा दिया। तब भक्त वत्सल परम प्रभु जगन्नियता ने उस भक्ता की भोली भक्ति से प्रसन्न होकर बाई करमा का वह अलोना सलोना प्रसाद स्वय पाया था ऐसा

---

1 रिपोट मुदु मसुमारी मारवाड पृ० 47 48।

2 A राजस्थान की जातियाँ पृष्ठ 22

B भरतपुर के महाराज जवाहरसिंह की प्रशसा "जाटवीर" साप्ताहिक पत्र में निकली थी, जिसका प्रकाशन आगरे से होता था।

जाट जोम धारें बडो, आयो देश सभाय।
मिले अगमने आयके, राना कऊ राय॥ (कन्हैया गयमी)

आज भी मारवाड प्रदेश म जाटों की अनेक सस्थाएँ विद्यमान हैं।

भक्तमाल मे परमोल्लेख पाया जाता है।[1] इसलिए भक्तो के मुख करमा जाट कुलतारणी देवी कही जाती है। इस तरह भरतपुर मे राजमाता श्री गिरीराजकुमारी (जन्म स० 1926) भी जाट वंशी कृष्ण भक्ता कवयित्री हुई है। इनके द्वारा रची गई "ब्रजराज विलास" और "पाक शास्त्र' नामकी दो पुस्तकें उपलब्ध होती हैं।

जाट धन्ना, भगवान का एक परम भक्त हुआ है जिसके नाम पर धन्नावशी वैरागियो का मत प्रचलित हुआ जान पडता है। उनके मारण, गोदारा दुर्गसर बाभू कसवा, डूडी नण, लेघा मूढ ढाका, कालेरा स्यामोता जा दू सिहाग जसे सारे गोत्र (उपवग) प्राय जाटो से मिलते हैं। भादू और जाखड आदि जसे कुछ गोत्र उनके नाथो और नाइयो म भी मिलते है। विश्नाई और जसनाथी लागों के सारे गोत्र जाटो के हैं, क्योंकि ये दोनों सम्प्रदाय जाट जाति से ही बन हैं।

गाँव भोजास (तहसील श्री डूगरगढ) का श्री मेहा गोदारा राजस्थानी भक्ति काव्य का एक उज्जवल सितारा माना गया है। लगभग सवत 1575 म कवि ने गास्वामी तुलसीदास से पहले राजस्थानी रामायण का सजन किया था। राजस्थानी पणिहारि के रूप म सीता— हाथ कटागे सिर घडो सीता पाणी जाय।
चम्पो मरवो कवञ्गो, सींच छ बणराय।।"

राजस्थान मे फागसी और जँवर का जाट याय कर्ताओं के रूप म विख्यात हुए तथा भरतपुर के राजा अपनी बहादुरी के लिए ससार प्रसिद्ध है। भरतपुर का प्रसिद्ध दुग सूरजमल ने अपन प्रथम युद्ध म हमकरण जाट (सभेरिया) से लडकर लिया था। लेकिन शेखावाटी के लाटू जाट न अग्रेजो की छावनी पर शूरवीरता पूण नतिक, आक्रमण करके अपना नाम अमर किया है। वस भारत के नण नाभा, पटियाला तथा जींद के राजाओ का भी दान मान म पूरा नाम है।

पुराने जाट गण राज्यो के सम्बध मे यहाँ सात राज्य और सत्तावन छोटे ठिकाने बताये जाते हैं।[2] श्री दयालदास, पाउलेट और श्री ओझा के लिखे अनुसार जसे

---

1 हुती एक बाई ताको करमा सुनाम जानि
बिना रीति भाँति भाग खिचडी लगाव ही।
जग नाथ दव आप भोजन करत नीके,
जित लागे भाग ताम यह अति भाव ही।
गयो तहँ साधु मानि बडो अपराध कर,
भर बहुँ साँस सदाचार, ल सिखाव ही।
भइया अवार दखे खोलि क किवार
जो प जूठनि लगी है मुख धोए बिनु आव ही।

2 'सात पट्टी सत्तावन मंझिरा"
गण शब्द वदिक साहित्य मे प्रयुक्त होने वाला प्राचान शब्द है। गण पूरक और गणपति जैसे शब्द वद साहित्य मे मिलते हैं। कि तु विदेशियो के व्यवहार तथा पुरानी सेनाओ के सम्पर्क से यह तथ्य प्रामाणिक रूप से सिद्ध होता है कि भारतवप के उत्तर पश्चिम तथा उत्तर पूर्वी भाग मे राजाओ के राज्या सहित गणराज्य भी ईस्वी पूव 1000 से चौथी शताब्दी तक काफी होते थे। हमारे यहाँ के अनेक गणराज्य यौधेय अजनायन, मालव व उत्तमभद्र आदि अनेक नामो से चलते थे। इस क्षेत्र मे यौधेय गण राज्य के पश्चात जाट गणराज्य था।

सूई (त० लूनकरनसर) और पल्लू (जि० श्रीगगानगर) दोनो पास पास सिहागा के ठिकाने थे। वैसे गाँव कालू भी शेखसर, गोपल्याण और लाधडिया के बीच गोदारा का निकटीय ठिकाना रहा है। तत्समय इस क्षेत्र मे गोदारा की तेज तर्राट ताकत सभी गणराज्यो स प्रबल एव समद्धिशाली थी। इसलिए इस क्षेत्र का नाम गोदारावाटी कहलाने लगा।[1] ठा० देशराज के जाट इतिहास मे लिखे गए तथ्यानुसार गोदारो के यहाँ स्वय के सिक्के चलते थे। बीकाजी का राठौड राज्य आकर जमा, तब गोदारा न अपना प्रथम प्रभाव दिखाने हेतु उनका धूएँ भू गे का लगान (टक्स) अपन सिक्को मे दना आरम्भ किया था। परन्तु गोदारा के अपन बडप्पन अपनत्व स अधिक विश्वास पात्र बदने ढाढी हुआ करते थे तथा सारस्वत ब्राह्मण उनके दादा (गुरु) थ, जो इन यजमानो का रौब-दाब सहित खूजत रहन के सिवाय अपना कोई विशेष ध धा या कारोबार नही करते। य जाटो के बल ही साधारण खेती तथा पशुपालन का अस्त व्यस्त धघा किया करते थे। इनके निरुद्यमीपन तथा आलसीपन की यहाँ अनेकश कहावतें चलती हैं।[2] लेकिन गोदारे जाटो पर इनकी पूरी धाक जमी हुई थी। य दादा लोग बार बार उनको याद दिलाय रखते कि— हमी न तुम्हे यहाँ (इस क्षेत्र म) लाकर बसाय-बसाये हैं। कभी काफी दूर से कधे चढाकर लाये थे।" बस इतना कहने से गोदारे जाट फूल जाते और उनका काम चल जाता था। जाट के घर कसी भी मत्यु हुई हो, इनके कई ब्रह्म-भोज और ढाढियो को भी महीने भर तक उस घर पर खिलाया जाता था। यजमान चाहे कितना ही निधन क्यों न हो, मत्यु भोज तो लोहलीक करना पडता था। इनके लिए गुरु का कहा हुआ वाक्य आदरजोग रखना पडता और सब लेन-देन तथा विवाहादि कार्यो मे दादा लोगो की सलाह सम्मति बनी रहती थी। यदि कोई असमय गोदारा-जन इनकी बात को पूरी करने मे हिचकिचाता तो उसे उनका कोप भाजन बनना पडता। उसके घर पर कोई भी ब्राह्मण सूए-सूतक (कमकाड काय) निकालने तक का काय नही कर सकता। गाँव के समस्त सामाजिक कार्यो म उस गोदारा जन का बहिष्कार कर दिया जाता था। राजवी भाई लोग भी इन दादा लोगो के भय स उससे किनारा देने लगते थे। इस तरह से—'आप डूबतो पाडियो ले डूबियो जजमान" वाली कहावत चरितार्थ हो गई। मास मदिरा, लडाई झगड और मस्ती तथा जबरदस्ती का विलासी जीवन व्यतीत करन वाले भोमियो (प्रमुखो) ने जटायत (वतमान बीकानेर डिवीजन का क्षेत्र) की धुरी, गोदारा राज्य की धरती से इन मालिको न हाथ धो लिया।

उन गोदारो जाटो के यहाँ अनेक गणराज्य वास थे जिनमे 'गोपल्याण" उनका आद (प्रथम) गाँव कहलाता था। शेखसर कपूरीसर, मलकीसर ऊँचाइडो डेलाणो, धीरदाण, पच्चागो, पाण्डुसर, कागासर, छटासर नकोदेशर लाधडियो धोळियो

1 गोदारावाटी की तरह सारणो के क्षेत्र को सारणोटी और सिहागो का स्थान सिहागोटी कहलाय।

2 (क) मूज की म्होरी डोरियै को तग, ओ है सारसुतों को ढग।
(ख) सारसुत बेसहुरी सग्या गुर गोदारा का हूआ।
नित सिनान को नेम राख, सूतक गिण न सूआ॥
जलम भोम भडाण जठ कोई ग्होडा न कूआ।
मासर माल आघडा लीज भण गिण न कोई भूआ॥

रहोडरा, गुमाईसर खारडो, रहजरासर, राजपुरो और रूणिय क वास आदि। गाँव गोपल्याण धणी (स्वामी) के छुटमाइयो तथा पुत्र पौत्रो के नाम वसे अनुज रूप अलायके मौजीज गाव थे। प्राचीन लिखत तथा श्रुति वार्तानुसार उक्त सब ग्राम गादारा की राजधानी शेखसर[1] के हित अधीनस्थ थे। काल के बीसा तालाबो एव छोटे नाडों क नाम उ ही भोमियों के है जो यहाँ की भूमि के किसी न किसी बडे भाग पर काबिज बने हुए रहे थे।

कालू—उस समय चारा और गोदारा गणराज्य गावा के मध्य एक शीष शिरोमणि उनका गणराज्य पारिवारिक ठिकाना कालू था। यह राजधाना के मालिक गोदारा द्वारा छोटे भाई को बटवारे म दिया हुआ खास सुख निवास स्थान था जो लम्बे समय तक सबलता एव विभवता सम्पन्न निकटस्थ पाण्डु नातेलो का (राजवियो की भाँति रक्त सम्बधित) जनपदीय परगना कहलाता रहा। इसम गोदारा का अपना कूआ जोहडा ताल पाल, छत्री, मदिर मढ, तकिया और जगेरी जसी अनेक सावजनिक संस्थाएँ थी। प्राचीन काल म यहाँ मेगा नाम का एक गोदारा चौधरी बडा धार्मिक उदार एव विवेकशील व्यक्ति उत्पन्न हुआ था। जिसके भक्ति भाव भीने विचारो स प्रभावित अपना गणराज्य ही नहीं, पास पडौस का तमाम इलाका पुण्य स्थली स्वरूप अनूप स्थान बन गया था। उस चौधरी सरदार की सेवा भावना भरी कथाओ की चाँदनी चारो ओर दूर दूर तक पहुँच गई थी। तब से लेकर अब तक यह गाव द्वारिका तुल्य[2] (लोक तीथ) कहा जाता रहा है।

वसे ता काल मे बडे बडे गोदारा का नाम चलता है। पर एक बार यह गाँव "कालू भोपत वाला" भी कहलाया था। यहाँ जाणियो के वास मे वि० स० 1551 की एक भोमिया की देवली (प्रस्तर मूर्ति) पर अभिलेख है। वह चूहड नाम क व्यक्ति पर बने मढ म है सो गौदारा जाट विवाह करके आते हैं तब उस जगह प्रथम गठ जोडे की धाक देने जाते है; सभी कहते हैं चूहड भोमिया गादारा जाति का था।[3] उसकी पत्नी, जो जाणियों जाटा की बेटी थी, अपने पीहर की भूमि रेख म चूहड के साथ सती हुई थी। इसलिए वही उसका स्मारक बना। कि तु जाणी कहते हैं— चूहड हमारा पूवज था और उसका परिवार भडाण है, गाँव जेसा से आकर यहा आबाद हुआ था।

वि० स० 2038 के जेष्ठ सुदी मे लेखक ने स्वय इस बाबत भडाण जाकर चूहड जाणी के विषय मे वहा के बुजुग लोगा से जानकारी लेनी चाही। जेसा से पहने निकटीय वास मेहराणा गाँव मे चूहडजाणी के लिए वहा एक कहावत की वाक्य बडी प्रसिद्ध है, जो सुनने को मिली।[4] परन्तु वह कालू के चूहड भोमिये के काफी समय बाद का चूहड

---

1 शेखसर उस समय जन मन धन सब प्रकार से प्रसिद्ध बना कर रहा।

2 "कालू बडी द्वारका मेखो दीनानाथ"

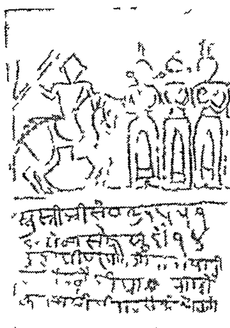
3 चूहड भोमिया की एक देवळी गाव कपूरी सर में भी बताते हैं। कहते यह गाँव चूहड ने बसाया था। इसी शताब्दी म चूहड कालेरा ने चूरू नाम का गाँव बसाया था। ख्यात के वामा मे भी चूहड का नाम आता है।

4 मेहराणो गुजरात जठ है चूहड जाणी।

जाणी मालूम हुआ कि उसके नौजवान पर पौत्र न बताया—"मेरे दादा ने भडाण के पाँच गावो (जेसा, सायेरा, धोरेरा, महराणा और दुलमेरा) को ओसर जिमाया और ढाढी को दान दिया। तब उसकी कविता बनी हुई है।

जैसा म वद्धजनो[1] से थोडी जानकारी पाकर गाव ऊँचाइडा आकर देखा। तब चूहड भोमिया के ऊँचाइडा से काल् आकर बसन के कुछ सत्य-तथ्य मिले। वहा गाव उदेसिया मे एक सती देवली देखा। यहा जाट जागीरदारी के वक्त की बहुत सी बातें मिली और चूहड भोमिया का गोदारा जाट होना पाया गया।

(देवळी घाडे पर पति सामन, तीन सतिया हाथ जोडे खडी है।)



सुस्ती श्री सवतु 1551	(स्वस्ति श्री सवत 1551 वष मास वशाक सुदी 14
वरसे मासेक (?) सुदी 14	चूहड पिया (पति) गोदारा साथ सती 3
चुहर पीयापति गोदा नावा थो (?)	गति प्राप्त की अग्नि सग स्रोहर्दि सती होठ म)
सती 3 नै गति प्राप्त भ्रगनी (?)	
कत्रस (?) सो दूरिसतो को ओठ मे	

लख अशुद्ध खुदा है तथा नकल करने रग भरने मे भी गलती हा सकती है।

कालू चाहे खालमे रहा हो, चाहे पट्टे मे, परन्तु गोदारे जाटो के हाल हुक्म काफी समय तक अपने वसे ही चलते रहे। खेत जमीन व रकम माफी आदि के लोक कार्य इन्ही के हाथ रहे थे। लेखक ने चौधरी हरना गोदारा के हाथ म सरकारी चौधर की रजत बीटी (अगूठी) से राज्य के तथा अन्य महत्त्वपूर्ण कागज कई बार छपते देखे

1 श्री मानाराम गोदारा, उदाराम खाती ठा० गणेशदान आदि से।

हैं। जीवण और उसके पोने पूरण तक यहाँ राजकीय चोधरी गादारा थे। लेकिन अब वह बात नहीं रही, गोदारा के अपने निजी मस्थानिक स्थान भी बग्बाद हुए जा रहे ह।[1]

अब तो कालू म केवल नाम ही गोदारा है। जमे दिल्ली नखनऊ मे पत्थर फोडने, तागा चलाते हुए कुछ मुसलमानो को बादशाही खानदान तथा नबाबी सल्तनत के वगज होने के अभिमान में आज भी देव सकते है। वमे ही कालू के गोदारे चध के बडप्पन एव नेतागिरी के वान म अकडे हुए चलने पहचान लिए जाते है। पूवजो के बनाये घर जर व जमीन बेचकर गाँव क किनार जा बसे हैं। इनका वास अब सव जाति समृद्ध है। स्थिति कसा भी हो, मगर चौगर छाँटने (नेतागिरी) के पेशे से बाज नही आत। और नही तो किसी का पेट मदन करके अथवा गले के गलगठो पर घोती के पल्ले से झाडा (मन्त्र) फूककर अपनी विशिष्टता प्रदशन का प्रयास करते हुए फूले नही ममाते हैं। इनकी अफड विद्या का मन्त्रोच्चारण है—

'गोदारा गहलात भाई गळ गळगठा झड यड जाई।'
'गादारा गहलोत भाइ गळ-गळगठा यड झड जाई।'

बीकानेर राज्य सस्थापन नासक और वतमान रूप—रामायण महाभारत ऐतिहासिक वता तो में बीकानेर का जागल भू भाग आध्यामिक सांस्कृतिक एव परम पवित्र पौराणिक प्रदेश कहलाता है। पुरातात्विक युगीय शोध के अनुसार मानना पडता है कि बीकानेर मडल की सीमा पर सटी हुई वदिक व सिन्धु घाटी की सभ्यताओ का मिलाप हुआ था। भारत की प्राचीनतम सरस्वती और दपद्वती सरिताओ के बीच वाली घाटी अत्यन्त आदर्शों मुख उसकी उत्तम अनुपम तथा समृद्धि का प्रभाव बीकानर राज्य पर पूण रूपेण पडा।

इस जागल मागल मरुभूमि म बडे बडे विकट राजपूता का आगमन एव जन्म हुआ, जो अपने देश धम प्रजा रयन वश परम्परा तथा दीन व असहाय जन की रक्षा हित जीवन पयत प्राण प्रण से व्यग्र वीर बन रहे। मारवाड के राव जोधाजी ने जाधपुर बसाया और अपन चौदह बटो के पृथक पृथक राज्य बसाने के प्रयत्न किये। बीकाजी उनके छठे बेटे थे जिनका जन्म वि स 1495 श्रावण सुदी 15 (ई स 1438 दि० 5 अगस्त) मगलवार माना जाता है। दिनेर बीका, बल बुद्धि म सबसे तेज थे। एक दिन दरबार मे बठे काका काघल जी के साथ कानाफूसी करते हुए राव जोधाजी के नजर मे आ गए। जोधाजी ने (नन्य रानी के प्रेम हित) व्यग के माथ बीकाजी को सम्बोधन किया—"चाचा भतीजा कोई नया प्रदेश जीतन की सलाह कर रहे हो क्या ?"

इस पर काघल जी ने विनीत उत्तर दिया कि 'आपकी मर्जी हो तो नया देश जीतना क्या बडी बात है ?' तत्पश्चात राव बीकाजी तथा काघल जी न नापा साखला

---

1 जोहडा, कूआ ताल पाल छत्री सहारण रेख गुसाईजी की वणी वह का जोहडा मढ आदि स्थानो के समाप्त प्राय नाम रहे हैं। मंदिर चूहड भोमिया का मढ कूआ वगरह अब अन्य लोगो के अधिकार म है।

2 श्री मनु के मत मे सरस्वती तथा दपद्वती नदियो के मध्य का भाग ब्रह्मवन का पवित्र देश था।

की राय से जोधपुर से उत्तर दिशा का विस्तृत इलाका अपने कब्जे में करने का विचार किया और मंडोर में शिवजी के तथा देशनोक में विद्यमान श्री करणी माता के दर्शन करके उत्तरी रेगिस्तान के कम जन सभाग राज्य बीकानेर के स्थान पर अधिकार प्राप्त किया। यहां से उत्तर की तरफ भाटी राजपूतों का राज्य था। पूर्व में जाट तथा अन्य छोटे छोटे राज्य थे। इसलिए बीकाजी चाडासर (गजनेर के निकट)[1] जाकर रहने लगे और गढ़ व कोटमन्देसर में किले की स्थापना करते हुए राज्य बढ़ाने लगे। राव बीकाजी ने यहां भैरूजी का मंदिर बनवाया और पूगल के राव शेखाजी की कन्या के साथ अपना पाणिग्रहण सम्पन्न करवा लिया। मगर भाटी उनकी राज्य संवर्द्धि शक्ति को सहन नहीं कर सके। अतः उनका विरोध देखकर बीकाजी ने वहां का किला छोड़कर थोड़े पूर्व की ओर राती घाटी पर आकर वि. सं. 1542 (ई. स. 1485) में गढ़ बनवा लिया। वि. सं. 1545 (ई. स. 1488) में गढ़ के पास अपने नाम एक नगर बसाया जो हमारा जिला बीकानेर है।[2]

बीकाजी ने भाटियों को हरा कर सुदृढ़ गढ़ बनवाया, बीकानेर नाम से नगर बसाया और नया राज्य स्थापित करके उसकी सीमाओं को बढ़ाते रहे। तब शक्तिशाली जाट भी विरोध करने लगे। किन्तु बीका जी बहुत चतुर थे, वे जाटों की फूट को जान गए और अपने ओजस्व व्यवहार से गोदारे जाटों को अधीन बना लिए। बीकाजी ने गोदारों के सरदार को यह अधिकार दिया कि 'बीकानेर राज्य के नये राजा के राज तिलक समारोह पर सर्व प्रथम उन्हीं के (जाटों के) वंशज तिलक करेंगे।' तत्पश्चात अन्य जाटों और राजपूत राजाओं को हराकर बीकाजी ने जयपुर की ओर मोहिलों के राज्य तक तथा उत्तर पूर्व में हिसार तक अपने राज्य की सीमाएँ बढ़ाली। जाट ही नहीं जोहिए चौहान, साखले भाटी आदि सरदार भी बीकाजी से बड़े प्रभावित हुए। बीकाजी ने बीदाजी को भी अपने अधीनस्थ कर लिया। खीची राजपूतों के 140 गाँव और विलोचिया व कायमखानिया के जो सिंध और शेखावाटी के अतराफ में थे बीकाजी के कब्जे में आ गये।

राव बीका पितृ भक्त भ्रातृ सहायक और माता करणजी के अनन्य उपासक थे। छंद राउ जैत सी' में 43 44 45 47 संख्यक छन्दों में बीका के अधिकृत स्थान दरावर, मुम्मणवाहण, सिरसा भटिण्डा भटनेर, नागड नरहड और नगौर आदि

---

1 दूसरा बाब (तवारीख राज्य श्री बीकानेर)

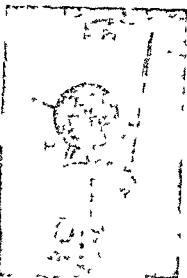
राघल बांक बीर रो सीधो सरळ सुभाव।
भूपत कीयो मतीज नं आप रह्यो उमराव ॥ (रविमुकनदान)

2 पनरं सं पताळव सुद वशाख सुमेर।
थावर बीज थरपियो बीके बीकानेर।

3 सं० 1525 के जैन भाडासर जैन मंदिर के लेखानुसार पहले यहाँ एक बस्ती थी। उसी को बीकाजी ने अपने नाम से बीकानेर बसाकर नवीनी करण कर दिया। नेर शब्द नगर का अपभ्रंश! जैसे नगर=नइयर=नइ+यर=नेर। नेर प्रत्यय शहरों के नाम के अन्त में संयुक्त होता है कि भटनेर, गजनेर सांगानेर! किले के बावत भेडिया व भेड के बच्चे वाली भी मात्र दंत कथा है। (ऐतिहासिक)

स्थाना य नाम पाय जाते हैं। बीकानेर राज्य की स्थापना म जिन ठिकानो को समाप्त किय उनके विषय मे अनेक कवित्त प्रचलित हैं।

> तमवा किये कत्तल प्रवल पूनिया पजाये।
> सारण न मियाग, भिडे रण सोहु भजाये॥
> वणीवाल बागाड जेर कर अमल जमाय।
> भारत कर गोदार भीम ज्यू गदा भमाये॥



राव बीका जी

राव बीका वि स 1561 (ई स 1504) तक समयोचित शासक रहे। उनके पर शास्वास बाद बडा लडका राव नरा (जन्म 1525 स्वगवास 1561) कुछ महीने ही राज्य भाग सके। फिर राव नरा के अनुज श्री लूणकरण इस राज्य के शासक (वि स 1561 से 1583 ई स 1505 26) हुए। लूणकरण के राज्य काल म राज्य वैभव बहुत बढा और प्रजाभी सुखी तथा सम्प न रही। राव लूणकरण ने भाई घडसी की साथ लकर बडी फौज बनाई जिससे सब शत्रु भयभीत हो गए।[1] नारनोल के नवाब पर उन्होंने चढाई की तब उनके धोखेबाज सरदार, विपक्षियों से मिल गये। इसलिए राव लणकण खेत रहे। फिर जतसिंह (वि स 1583 1598 ई स 1526 से 41) बीकानेर के शासक बने। इन्होंने अपने अनुजगणो की साथ लकर पिता के दुश्मनो को दड दिया। राव जतसी ने अनेक राज्य अपने अधीनस्थ किये। बाबर का बेटा कामरा युद्ध के लिए बीकानेर की तफ आया, जतसी ने उसको बुरी तरह हराया। राव जतसी के छोटे भाई करनीसी जिसकी जागीर रेणी थी बडा दानी था। एक चारण के दोहे पर उसने एक करोड रुपए का पुरस्कार दिया। कई गाँव और अपने बटे कीरत सिंह का भी कवि चारण के सुपुर्द कर दिया। उसन (चारण ने) कीरत सिंह का विवाह सिरोही के एक ठाकुर की लडकी से करके कीरत सिगोत बीका का वश उजागर किया। उस चारण के वशज कालू के पास नाथूसर नाम के गाव का शासन सभालते तथा अन्य गाँवो क भी भागते रहे हैं।

जतसी के दूसरे भाइयो म स प्रताप सिंह के प्रतापसिगोत बीका कहलाय। वरसी के पुत्र नाराण वश के नारणोत बीका कहलाए। रतन सिंह क रतनसिघोत बाको ने महाजन का ठिकाना सचालित किये रखा। तेजसिंह के तेजसिघोत बीके प्रसिद्ध हुए।

---

1 खीची मोयल खरळ, ममर साखला सघारे।
जेर कर जाइया माम भाटया चो मारे।
पूगळ धर अपणाय, वीर जादवा विभाडे।
भुरटा हास भजाय च द रजनामो चाढ।

श्री जनसी के उत्तराधिकारी राव कल्याणमल (वि० स० 1598 1630 ई० स० 1542 से 1574) बने जिन्होंने अपने पुत्र रायसिंह को साथ लेकर ई स 1570 मे नागौर जाकर मुगल बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार की। राव कल्याणमल ने बादशाह से मित्रता करके अपने राज्य को बहुत लाभ पहुँचाया। राव कल्याणमल के बाद उनके बडे पुत्र रायसिंहजी बीकानेर के शासक (वि० स० 1630 68) बने जिनका शाही दरबार म बडा सम्मान रहा। इनको बादशाह द्वारा राव एव महाराजाधिराज की उपाधि प्रदान की गई। इन्होने गढ बनवाया तथा कवि लेखको और विद्वानो को सदव सम्मानित किए रखा। मुहम्मद कासिम फरिश्ता ने अपनी किताब तारीख फरिश्ता म लिखी है कि— खिताबी फर्मान के साथ राव रायसिंहजी को दर्बार शाही स 52 परगनात कब्जा इक्तदार मे दिय गय जिनकी तादाद दाम मिजान कुल 40206274 (चार करोड दो लाख छ हजार दो सौ चौहत्तर) थी।" रायसिंह बडे दानी थ। उसन 2० गाँव दो हजार हाथी 50 हजार घोडे और सवा तीन करोड रुपया तथा करोड के तीन पसाव 52 चारन भाटों को दिय।[1] इन्होंने प्रजा के साथ सुन्दर व्यवहार करके सिरसा हिसार और गुजरात तक अपने परगने कायम किय। 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' के रचयिता तथा ओज पूर्ण कविता के प्रसिद्ध कवि पृथ्वीराज[2] इन्हीं रायसिंह के छोटे भाई थे। बादशाह अकबर न राव पृथ्वीराज कल्याणमलोत को गढ गागरून बख्शा था।[3]

फिर श्री रायसिंह के ज्येष्ठ आत्मज श्री दलपतसिंह (स० 1668 70 ई 1612-14) ने बीकानेर का राज्य सभाला। दो साल बाद इनके छोटे भाई सूरसिंह ने जहांगीर की मदद से बीकानेर के राज्य (वि० स० 1670 88 ई० स 1614 31) पर कब्जा पाया।[4] सूरसिंह के राज्यकाल मे चूरू मडल के सरदारो ने महाराजा का बहुत विरोध करवाया था। सूरसिंह का देहावसान हो जाने पर इनके बडे कुवर कर्णसिंह बीकानेर के उत्तराधिकारी (वि स 1688 1726 ई स 1631 69) बने। राजा कर्णसिंह के वक्त मे कुछ वाकेआ (घटनाए) हुए बादशाह आलमगीर (औरगजेब) ने मदिरो व तीर्थों की मूर्तियाँ तुडवाईं और हिन्दुस्तान के सब राजपूत राजाओं को मुसलमान बनाने की तजवीज की। काबुल लडाई की मदद के बहाने एक बडी सेना के साथ बादशाह न तमाम राजपूत राजाओं को दरिया अटक पर इकट्ठे कर लिए। उस समय श्री कर्णसिंह को एक सय्यद जीवनशाह मित्र ने बताया कि बादशाह औरगजेब कट्टर मुसलमान है। वह आपको अटक पार लेजाकर सब राजाओं को जबरन मुसलमान बनायेंगे।' इस पर राजपूत राजाओं ने सलाह करके अत्यन्त चतुराई के साथ फौज म घोषणा फिरवादी कि—'कल सारी नावें सुरक्षित रखी जाँय। पहले हम (राजपूत राजा) पार होवेंगे।' इस पर मुसलमान नाधिन होकर अपने बडप्पन के साथ नावों म बठकर पार चले गये। नावें

1 तवारीख बीकानेर राज० पृ० 132

2 यावा० नरश प्र० भाग मूल ले० मेजर के एम पनिक्कर मिनिस्टर हण्डवाईस प्रेसिडेट

3 मुहणोत नणसी री ख्यात प्रथम भाग पृ० 188

4 जहांगीर का आत्म चरित पृ० 287

महाराजा श्री डूगर सिंह जी भी नि स तान परलाक गामी हुए। तब पुन ठिकाना श्री छत्रगढ से उनके अनुज श्री गगासिंह जी (वि स 1944 भाद्र पद सुदी 13 अगस्त 1887 ई०) को बीकानर राज्य गद्दी पर बिठाय गए। तत्समय श्री गगासिंह जी फक्त सात वष के होनहार बालक थे और राजमहला म इनका लालन पालन हा रहा था। पर तु इस सुख-सुविधा के समय बालक गगा सिंह जी का राजतिलक से प्रथम शोक वस्त्र पहन कर भ्रातृ दु ख भी भोगना पडा था।

अगस्त का महीना गढ का छायादार मदान, सायकाल बालक गगासिंह जी अपन माथियो क साथ खेल रहे थे। उस समय महाराजा डूगर सिंह जी का देहा त हुआ। दो वद्ध सरदार गभीरता पूवक बालक गगा सिंह जी तथा उनके साथियो के पास पहुँचे। सरदारा की उदास मुख मुद्राएँ देखकर तीव्र बुद्धिमान श्री गगा सिंह जी तत्काल समझ गय कि कोई अशुभ समाचार है। वद्ध सभासद छाटे बालक महाराजा गगासिंह जी को महला मे ले गए और नाक की स्थिति म नासक बनाकर बठा दिया। तेरह दिन समाप्त हो जाने पर 31 अगस्त सन् 1887 ई० को बालक गगासिंह जी ने बडे बडे सरदारा और अफसरो के समक्ष अपने पूवजो की राज्य गद्दी सम्भाली। प्रतिष्ठित जन दशनाथ आय खम्मा बोली। बालक महाराजा ने हाथ उठाकर खुशी ला (खुशी रहो) खुशी लो श द कहे।



सात वष के महाराजा

राजा ईश्वरावतार और राज्य सिंहासन ग्रहण करना एक धार्मिक कृत्य के रूप मे अत्य त समारोह के साथ सम्प न किया गया। सव प्रथम गणेश पूजन हुआ और फिर राजसी वस्त्राभूषण पहिनाकर महाराजा श्री गगासिंह जी को सिंहासन के पास खडा किया। महाराजा गगासिंह जी ने तीन बार सिंहासन को प्रणाम किया, जिसके दायें बायें बीकानर राज्य के प्रधान राजपूत सरदार अडे खडे थ। इसके बाद महाराजा ने सरदारो की ओर देखा, तब उन सरदारा न महाराजा स प्रायना की। आप पर भगवान की महत्ती कृपा है और राज्य कुल के देवताआ का असीम अनुग्रह भी है।

इसलिए आप सिंहासन पर विराजिये।' सिंहासन पर बैठते ही 121 तोपों की सलामी हुई, नौबतखान में बाजे बजे और राज्याभिषेक संस्कार शुरू हुआ। मुख्य तौर से शेख सर के गोदारा जाट ने महाराजा के मस्तक पर तिलक चढ़ाया। फिर बीकाजी के वंशज राज्य के बड़े सरदार महाजन के राजा ने महाराजा के मस्तक पर तिलक लगाया। सरदारों में द्वितीय तिलक कर्ता राव बीकाजी के अनुज बीदा के वंशज बीदासर के ठाकुर थे। तृतीय तिलक कर्ता रावतसर के सरदार बाघलजी (काकावाद) के वंशज थे। चतुर्थवार में बीकाजी के वंशज ठाकुर भूकरका ने महाराजा के मस्तक पर तिलक लगाया। तत्पश्चात बेलासर के ज्ञानी पडिहार गुसाईजी आदि ने तिलक किये और राज्य के टीकाई पुरोहित ने आरती की। इस समय छत्र चँवर सिंहासनादि राज्य चिन्हों तथा क्षत्रियोचित सभी शस्त्रों एवं वाहनों की पूजा की गई। उपस्थित अफसरों और सरदारों ने महाराजा से मुजरा किया और भेंट उपहार दिए। 15 दिन बाद 19 सितम्बर 1887 ई० को महाराजा के पिता श्री लालसिंह जी का परलोक वास हो गया। श्री गंगा सिंह जी को सिंहासनारूढ होने के समय पहले भ्राता का एवं बाद में पिता का (दोनों ओर) वियोग भोगना पड़ा था।

सिंहासन आसीन होने के समय महाराजा गंगासिंह जी की आयु कम थी। अतएव शासन प्रबन्ध रिजेन्सी कौंसिल[1] को सौंपा गया। राय साहब प० रामचन्द्र दुबे द्वारा महाराजा ने दो वर्षों तक बीकानेर रहकर ही शिक्षा पाई। 9 वर्ष की अवस्था में महाराजा अजमेर मेयो कालेज के विद्यार्थी बने जो 14 वर्ष की उम्र में वहाँ की सम्पूर्ण पढ़ाई करके सन 1895 ई० से आप सैनिक शिक्षार्थी कहलाये। साथ साथ शासन प्रबन्ध का ज्ञान दफ्तरों के कार्यों की जानकारी, घोड़े की सवारी और रिजेन्सी कौंसिल का कार्याध्ययन भी किया। इन सबके लिए सर ब्रायन इजरटन, के सी आई ई जैसे आदर्श अध्यापक महानुभाव इनके साथ रहे। श्री गंगासिंह जी 14 वर्ष की अवस्था में आश्चर्य जनक निपुणता के साथ अच्छी अँग्रेजी बोलने लगे थे।

महाराजा श्री गंगासिंह जी के लिए राजसी सिद्धान्तों के अनुसार इस समय राज्य के भिन्न भिन्न भागों में दौरा करना शासकीय बातों का अनुभव करना सेना की ओर ध्यान रखना सरदारों तथा जागीरदारों से मिलना तथा धार्मिक एवं राजकीय उत्सवों में सम्मिलित होना भी आवश्यक समझा गया था। ई स 1896 में वायसराय लार्ड एलगिन बीकानेर आये और इनके राज्योचित गुणों से बहुत प्रभावित हुए। फिर ये उत्तरी भारत की शिक्षोन्नति हेतु अनेक सज्जनों को साथ लेकर लाहौर दिल्ली, आगरा, अमृतसर कानपुर लखनऊ कलकत्ता और दार्जिलिंग गये। इस यात्रा में बहुत से राजा महाराजाओं तथा साहूकारों ने आपका स्वागत किया था। तब राज्य मसनद होने के 11 वर्ष बाद आप अट्ठारह वर्ष के हुए और वायसराय ने अपने एजेन्ट सर आयर मार्टिंडेल के हाथ खरीता भेजकर 16 दिसम्बर सन 1898 ई को पूर्ण शासनाधिकार सौंप दिये। सर आयर मार्टिंडेल ने वायसराय का सलाहात्मक व प्रशंसात्मक खरीता पढ़कर सुनाया। गंगासिंह जी ने भली भाँति जान लिया था कि राजा का काम पोलो

---

1 नाबालिग शासक की रियासत का राज्य प्रबन्ध भारत सरकार एक शासन-समिति बनाकर करती। यह समिति राज कार्य सम्भालती बालक नृप का शिक्षा प्रबन्ध करती तथा रिजेन्सी कौंसिल कहलाती थी।

और आखेट के खेल तथा दावतों के मनोविनोद ही नहीं, प्रजाहित के मनन चिंतन भी बहुत जरूरी होते हैं। तब वे प्रजा के कष्ट निवारण में लग गये।

वि स 1956 ई स 1899 के समय देश में भीषण अकाल पड़ा। चारे, पानी और अन्न की कमी के कारण स्थान स्थान पर पशु एवं मनुष्य मरने लगे। रिजेंसी कौंसिल ने पहले के अकालों में इस फंड का द्रव्य शेष कर रखा था। फिर भी महाराजा तन मन धन से जा जाकर जनता से मिलने लगे तथा स्वयं कष्ट उठाकर प्रजा सहायता के कार्यों में जुट गए। 18 वर्ष के महाराजा ने अनेक कस्बों एवं स्थानों पर अकाल पीड़ितों की सहायतार्थ कमेटियाँ नियुक्त कर दीं। सेना द्वारा गाँवों में अनाज भिजवाया और राहत कार्य भी खोले। हैजा और चेचक आदि रोग फैल गए। तब महाराजा ने अदम्य उत्साह के साथ चूरू, सुजानगढ़ तथा श्री गंगानगर (जो पहले रामनगर कहलाता) के गाँवों तक कम्पाउंडर भेजे और दवाइयाँ बँटवाई। स्वयं विभिन्न तहसीलों में गये और प्रजा के दुर्भिक्ष जनित दुखों को दूर करने के प्रयत्न किए। जनता की सराहना से खुश होकर महारानी विक्टोरिया ने श्री गंगासिंह जी के लिए कैसर हिंद का स्वर्ण पदक भेजा। आगामी अकालों के भविष्यागमन भय से महाराजा ने रेल एवं नहर की योजनाएँ बना डालीं। ब्रिटिश अधिकारियों ने चीन विजय में सहयोग पाकर श्री गंगासिंह जी का अच्छा स्वागत किया और सम्राट एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक पर अतिथि स्वरूप लंदन पहुँचने के लिए निमन्त्रण पत्र भेजा। वहाँ जाने पर सम्राट तथा सम्राज्ञी बहुत प्रसन्न हुए और अपने राज्य कुटुम्ब के सदस्यों के साथ इनको बैठक दी।

श्री गंगासिंह जी इंगलैंड यात्रा से जब आये, तब साथ में काफी अनुभव भी लाए। वहाँ की शासन प्रणाली तथा सुव्यवस्था से वे बड़े प्रभावित हुए थे। उन्होंने अपनी राजधानी को सुंदर बनाने के लिए चौड़ी सड़कें और उनके दोनों ओर छायादार वृक्ष मनोहर मुद्यान[1] तथा कलामय महलों का निर्माण करवाया। रिजेंसी का स्टेट कौंसिल बनाया। प्रत्येक महकमा एक सेक्रेटरी की अध्यक्षता अधीनस्थ किया तथा स्वयं प्रजा हित की योजनाएँ सफल करने एवं राज्य व्यवस्था व नीति निर्धारित करने के लिए उत्साहित हुए। वे प्रत्येक विभाग के लिए एक निरीक्षक शासक एवं सबके महान नियंत्रक रूप, अभिनव सूर बन गए। पुरानी प्रणाली की कठिनाइयों को मिटाने के लिए समयानुसार महकमा खास की स्थापना करके प्रधान मंत्री का पद ही उड़ा दिया। पोलिटिकल एजेंट को भी महाराजा से सहमत होना पड़ा और नये सुधारों की घोषणा कर दी गई। सन 1902 में मंत्री मंडल की स्थापना हुई, जिसमें महाराजा भैरूसिंह, ठाकुर रघुबीर सिंह महाराजा हरि सिंह, मिस्टर रुस्तम जी कूपर तथा कुंवर पृथ्वी सिंह थे। पोलिटिकल एजेंट ही नहीं, यहाँ के बड़े बड़े अफसर भी इन सुधारों की सफलता को सन्देह की दृष्टि से देखने लगे। लेकिन महाराजा साहब ने बीकानेर राज्य को हर तरह से सुखी, प्रगतिशील एवं सुव्यवस्थित बनाने के लिए प्राचीन नीति

1 कुंवर कन्हैयाजू ने बीकानेर राज्य का इतिहास पृ० 160 पर यश के बगीचे में कनेर और मेनार के वृक्ष बताये हैं।

परम्परा का कतई अ धानुसरण नहीं किया। महाराजा ने अपनी रियासत का आधुनिक ढग से बदलने क लिए अनेक राज्य कार्यों को नूतन परिवतन क साथ सफल करवाये। प्रथम पुलिस तथा अय विभाग का नव्य गठन करके अफसरो के काम की जांच का प्रबन्ध किया। द्वितीय नई फसल पैदा करने के उपाय प्रचलित करके खेती के नवीन तरीकों से काश्तकारो की दशा सुधारने का वातावरण तयार किया गया। तृतीय राज्य मे रलें चाने और सडकें बनवाने का कार्यारम हुआ।[1]

महाराजा के नय शासन-सुधार काय हात देखकर कुछ बड़े राजपूत सरदार इनके विरोधी बन गय। वे जान गय कि इस शासन प्रबध मे हमारी मनमानी नही चलेगी। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारभ स ही कुछ सरदार बीकानेर शासको क विरोधी बन रहे थे। इन लोगो ने पास पडोस के स्थानो मे डाक रलवान चोरो डाकुओं को शरण देन और आपसी लडाई झगडो के समय अपना रखे थे। य भोलो जनता का मारपीट कर बलपूवक धन लूट ले जाते और कभी कभी राज्य की भूमि पर भी कब्जा करने का प्रयत्न किया करते थे। ऐस विरोध कर्ताओं में चूरू के ठाकुर और वहां के अन्य लोग अधिक थे। अजीतपुरा के ठाकुर भरतसिंह बीदासर के ठाकुर हुकमसिंह और गोपालपुरा के ठाकुर रामसिंह इस विरोधी आन्दोलन के अगुआ थे। अजीतपुरा का ठाकुर युवावस्था म श्री डूगरसिंह के वक्त भी विद्रोह म भाग ले चुका था। तत्समय से यह दडित एव क्षम्य था। रि कौंसिल इसके व्यवहार से नाराज थी। पोलिटिकल एजेन्ट ने चाल चलन बाबत जमानत ले रखी थी। हिसार जिल की ब्रिटिश पुलिस न इसकी शिकायत की थी। बीदासर का ठाकुर और उसका पिता विद्रोह मे भाग लेने के कारण श्री डूगरसिंह क राज्य-काल मे अपनी जागीर जब्त करवा बठे थे। गोपालपुरा का ठाकुर सदव चोर-डाकुओं के साथ रहकर धन कमाया करता था। जोधपुर के रजिडेन्ट न लिखा था कि एक प्रसिद्ध रल की डकती क बारे म गोपालपुरा के ठाकुर पर उसम भाग लेने का सदह किया जाता है।

1904 ई० मे इन जागीरदारो न गगासिंह के विरुद्ध जनता का भडकाना आरभ किया। भय और लालच द दिखाकर अन्य लोगों का अपनी तरफ करना चाहा। इन लोगों ने सेना को मुसलमानो को धनी व्यापारियो और सेठों का भी भडकाने का प्रयत्न किया। इन जागीरदारों के मकानों पर शासन के विरुद्ध सभाएँ जुडने लगी थी। बात गगासिहजी तक गई। उ होन तब अपने ज मोत्सव के दरबार अवसर पर भाषण द्वारा चेतावनी दी। परन्तु षडयत्र के अगुए तो नही माने। तब 29 अक्तूबर को जरूरी काय-वाही हेतु इनके कामो की जाँच के लिए महाराजा ने एक कमेटी को हुक्म दिया। कमेटी ने पाया कि विरोधियो को कुछ समय और मिल जाता तो राज्य म भारी विद्रोह फल जाता। तब इनके अपराध की जाच हेतु एक कमीशन बठा। कमीशन के समक्ष भी इन अभियुक्तो का राजद्रोह अभियोग स्पष्ट प्रमाणित हो गया। इसलिए 1905 ई० मे महाराजा का दरबार लगा। उसमे पोलिटिकल एजेन्ट सम्मिलित हुआ था। महाराजा न कहा जागीरदारो की जागीर तथा मान मर्यादा की साधिकार रक्षा की जाएगी किन्तु उन्हे भी राजभक्त बनकर रहना चाहिए।' फिर कमीशन की रिपोट पढी गई जिसम उन लोगो के भीषण अपराध थे।

1 उक्त समय से पहले यहाँ केवल एक जोधपुर बीकानेर रेल्वे लाइन (1880 92 की)

महाराजा उन्हें अधिक सजा देना नहीं चाहते थे। इसलिए अजीतपुरा के ठाकुर की आधी जागीर तथा गोपालपुरा और बीदासर के ठाकुरों के सभी स्थान घटाकर एवं एक गाँव जब्त कर लिए। विद्रोही ठाकुरों को विश्वास था कि ब्रिटिश सरकार उनका पक्ष लेगी। जाँच कराई, तब लार्ड कर्जन ने महाराजा गंगासिंह के निश्चय का समर्थन किया। फिर भी बीदासर के ठाकुर ने गाँव देने में विरोध किया। इसलिए एक सेना भेजी गई, जिसने सोमासर को अपने अधिकार में ले लिया। छः वर्ष के शासन प्रबंध से प्रसन्न 1904 ई० में ब्रिटिश सरकार ने गंगासिंह को के सी एस आई की पदवी प्रदान की तथा सर आर्थर मार्टिन्डेल ने इनकी प्रशंसा की।

शासन सुधार के लिए महाराजा साहब प्रति वर्ष शासन समिति (एडमिनिस्ट्रेटिव कॉन्फ्रेंस) की सभा करने लगे। वे नीति निर्धारित करके ही संतुष्ट नहीं हुए वरन् 1903 ई० से 1907 तक राज्य के भिन्न भिन्न भागों का दौरा करते हुए नये सुधारों के अनुसार कार्य होते देखे। राज्य के ठाकुर भोमिये और प्रजा को चोरी-डकैती द्वारा तंग करें, वे कैद में धर दिये गये। राजाओं के दौरा में हाथी घोड़े तम्बू, शिकार एवं अन्य वस्तुओं तथा बेगारों का दबाव जनता पर पड़ता था। परन्तु श्री गंगासिंहजी के दौरे, प्रजा या रियाया के कष्ट एवं शिकायतें सुनने तथा उनको निवारण करने के हित में हुए थे। आप तो ऊँट या घोड़े से ही यात्रा कर लिया करते थे।

भारतीय नरेश अपने निजी खर्च का राजकोष से अलग नहीं रखते। वे राजकोष का अपना ही धन समझते और मनमाना व्यय करते थे। यह प्रथा प्रायः छोटी रियासतों में प्रचलित थी, जो हिन्दू राज्य प्रणाली के सर्वथा विपरीत थी। फिर भी आखेट घुड़दौड़ तथा पोलो आदि के खेलों में राजा लोग राजकोष से धन खर्चते रहते थे। महाराजा गंगासिंह ने इसे गलत समझा और अपना निश्चय किया कि निजी कोष राज्य कोष से पृथक होना चाहिए। इसलिए सन् 1902 में ही गंगासिंह ने अपना निजी कोष[1] राज्य की साधारण आय का 5 प्रतिशत तय कर लिया था। उन्होंने अन्य विभागों के व्यय हेतु भी नियम बना दिये थे। इसलिए वार्षिक बजट में सरलता तथा अर्थ विभाग का आधुनिक संगठन बन गया था। फिर न्याय विभाग का संगठन करते समय महाराजा को नये कानून और नियम भी बनाने पड़े। अतः 1908 से 1931 के मध्य जी साहब द्वारा सत्तर (70) नये नियम बनाये गए। श्री गंगासिंह जी ने राजपूताने में सर्वप्रथम चीफ कोर्ट की स्थापना की तथा जज के पद पर अनुभवी अफसर नियुक्त किये। भविष्य में यह चीफ कोर्ट बदलकर हाई कोर्ट बना दिया।

फिर महाराजा ने एक रेवेन्यू बोर्ड खोला, जिसमें मालगुजारी का सारा प्रबंध होता था। महकमा खास का पुनः संगठन हुआ जिसमें सेक्रेटरियों के अधिकार बढ़े। अब तो महाराजा साहब भारतीय नरेशों के संगठन की ओर भी ध्यान देने लगे थे। लार्ड कर्जन गंगासिंह जी के इस व्यक्तित्व दूरदर्शिता एवं राज्य प्रबंध से बहुत प्रसन्न थे। सन 1905 में प्रिंस तथा प्रिंसेस ऑफ वेल्स, बीकानेर आये और महाराजा से जीवन पर्यंत की मित्रता स्थापित करके गये। सन 1908 में लार्ड मिंटो ने दूसरी बार बीकानेर आकर एक नई मान्यता उत्पन्न कर दी थी।[2]

---

1 प्रिवी पर्स।

2 वायसराय किसी रियासत में एक बार से अधिक नहीं जाता। अतः दूसरी बार आने से ज्ञात हुआ कि बीकानेर नरेश के सुधारों एवं सुप्रबंध से ब्रिटिश सरकार प्रसन्न है।

मई ई स 1910 मे सम्राट एडवर्ड सप्तम का देहान्त हुआ उनके पुत्र प्रिंस आफ वेल्स, पचम जार्ज सम्राट बने। श्री गगासिंह जी उनके एडीकाग घोषित हुए और कर्नल की उपाधि पाई। उक्त राज्याभिषेक मे आप महाराजकुमार सहित सनिमत्रण लदन पधारे। केम्ब्रिज वि वि ने आपको वहा एल एल डी (डॉक्टर आव ला) की उपाधि दी और अनेक सभा जलसो म सम्मान पाया। आगे जाकर सम्राट भारत आये, तब लार्ड हार्डिग द्वारा श्री गगासिंह जी राजपूताना के प्रतिनिधि रूप, शाही दरबार म प्रबधक समिति के सदस्य बनाये गये। वहाँ श्री गोपाल कृष्ण गोखले जसे सब प्रसिद्ध नेताओ से आपकी मित्रता हो गई।

ई० स० 1912 म श्री गगासिंह जी को शासन करते पच्चीस वर्ष हो गये थे। यद्यपि पूर्णाधिकार प्राप्त किये हुए केवल तेरह वर्ष हीं हुए थे तथापि तेरह वर्षो म ही इतना अधिक कार्य हुआ कि बीकानेर, वतमान समय का सुव्यवस्थित राज्य बन गया था। प्रजा की दशा सुधार उन्नति काश्तकारो को रबी की फसल हेतु प्रोत्साहन, रुई की खेती जानवरो की नस्ल सुधार सिंचाई के लिए लगभग 600 कूए खनिज एव कोल (कोयले) की खोज तथा 400 मील लम्बी रेलवे लाइन निकाल दी गई थी। इस तरह से राज्य की उन्नति एव प्रजा भलाई के लिए महाराजा ने जी जान से प्रयत्न किये। स्कूल, अस्पताल बीकानेर मे एफ ए कालेज नोखे म स्कूल की स्थापना लडकियो की पढाई वाले प्रबधित स्कूल स्थापित हुए। महाराजा को यही से अपने सभी महकमो म योग्यतम एव अनुभवी प्रभारी रखने लाने का शौक पड गया था। अत एव सफलता एव सुधार के इन अल्पकालिक मुर्खों म घूमने जन सामान्य को भी राज्य रजत जयती मनाने का मौका मिला था।

सितम्बर ई० स० 1912 का राज्य म जयती मनाई गई। पहले पूजा पाठ दान-दक्षिणा एव देव दर्शनादि धार्मिक कृत्य हुए। प्रजा के स्वामी भक्ति पूर्ण प्रेम भरे अभि-नदन व बधाइ पत्र स्वीकृत किये और कदी छोडे गये। सितम्बर 20 व 21 को फौजी तथा बडे अफसरों को दावतें दी गई। महाराजा 22 तारीख को श्री लक्ष्मीनाथ जी के मदिर गये और 23 को फौज मे फौजी बड भेंट किय। 24 का सत्य उत्सव मनाया गया तथा 101 तोपो की सलामी हुई। इसके बाद महाराजा ने गगा निवास हॉल म दरबार किया। कर्नल विन्ध्म ने श्रीगगासिंहजी साहब को बधाई दी और अपने भाषण मे कहा कि "बीकानेर के अतिरिक्त अन्य किसी भी भारतीय राज्य म प्राचीन सभ्यता एव राजा तथा राज परिवार की प्रथाओ का पाश्चात विज्ञान, शक्ति एव कार्यकुशलता के साथ इतना सुदर सम्मिश्रण नही मिलता।"

महाराजा ने उस समय अपने भाषण मे एक व्यवस्थापिका सभा (लेजिस्लेटिव-असेम्बली बीकानेर) स्थापित करने की घोषणा की जो अत्यन्त साहस भरी बात थी।

ट्रावनकोर, मैसूर और बडौदा मे गत बीस वर्षो स ऐसी सभाएँ थी। परन्तु उन बडे राज्यो की तथा बीकानेर की स्थिति म बडा अन्तर था। वहाँ की प्रजा शिक्षित थी और ब्रिटिश प्रान्तो की भांति शासन कार्य प्रचलित था। बीकानेर की दशा इनसे विपरीत थी, पर महाराजा साहब ने तो व्यवस्थापिका सभा की घोषणा कर ही दी। प्रजाहित की अन्य घोषणाए भी की, जिनम भाषा की, कई कर उठाने की, शिक्षा विभाग सगठन और छात्रवृत्ति एव छात्रावास तथा पर्दे म रहने वाली बालिकाओ के

लिए शिक्षा आदि की मुख्य घोषणाएँ थी। बीकानेर मे स्त्रियो के लिए अलग अस्पताल अन्य स्थानो मे नए अस्पताल तथा "एक्सरे" मशीन भी मँगाई गई। चाँद कुवर बाई अनाथाश्रम और किंग जाज अपाहिज आश्रम स्थापित कर इन लोगों के दर्जो का उपकार किया किसानो के शेष रहे लगान माफ, सरदारो के अनेक कर माफ तथा राज्य के सर्व विभागो में योरोपीय अफसर नियुक्त किये गए। महाराजकुमार के अध्यापक कर्नल बेक ने अपने भाषण म श्री गगासिह जी के सद् व्यवहार और कृपा की प्रशसा की। इस समय अनेक भारतीय नरेश बीकानेर आये और महाराजा के प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित किया।

जयन्ती के बाद महाराजा न भारतवष एव साम्राज्य के कार्यो मे भाग लेना आरम्भ किया और थोडे ही समय में बीकानेर को जगत विख्यात बना दिया। वे सनिक सेवा को स्वय राठौड राजपूत राजा की सबसे बडी अभिलाषा बतात। महाराजा श्री गगासिह जी बीकानेर के अत्यन्त प्रभावशाली एव विशेष समझदार भूपति थे। इनका शासन समय बीकानेर राज्य का स्वण युग माना जाता है।[1]

वि स 1994 भाद्रपद (ई स 1937 सितम्बर) मास म श्री गगा सिंह जी को सिंहासनारूढ हुए पूरे पचास वष हो गये थे। इतनी अवधि तक बीकानेर के राज्य सिंहासन पर किसी राजा ने शासन नहीं किया। इसलिए श्री गगा सिंह जी की स्वण जयन्ती व स्वण तुलादान के वहत आयोजन हुए। लालगढ की यज्ञशाला म प्रात आठ बजे गणेश पूजन, स्वस्तिवाचन और नवग्रहो क पूजन अचन हुए। तुला के एक पलडे म गद्दी तकिए के सहारे श्री गगासिह जी विराजे, दूसरे में आठ हजार छ सौ तोला सोना उनके वजन से भी अधिक चढाकर तुलादान किया गया। उस समय यह स्वण तीन लाख रुपए का माना गया था, जो अनेक यूरोपियन वासियो वायसराय लाड लिनलिथगो तथा बहुत से नरेशो एव वडे वडे अफसरो के समक्ष घोषणा के अनुसार "पीपल्स गोल्डेन जुबली कमेटी" द्वारा वितरित करवाया गया। शास्त्रोक्त विधि से तुलादान हुआ 101 तोपो की सलामी हुई और 106 कदी छोड गए। महाराजा मन्दिर गए, नगर म सोने चाँदी के काम सहित दरवाजे एव तोरण देखे। लोहारो न अपने मोहल्ले मे बडी कारीगरी के साथ एक दशनीय लौह दरवाजा बनाया था। बीकानेर इन्द्रपुरी बन गया था।

स्थान स्थान पर भोज व राज्य भर क स्कूलो म बच्चों को मिठाइयाँ बटवाई गई। अनेक सस्थाओ और शहरो से अभिनन्दन डेपुटेशन बधाई पत्र तार और कविताओ के ताँते लग गये। महाराजा न प्रजा को सदेश दिया और लाखो रुपयो के सावजनिक कार्यों की घोषणाएँ की। सरदारो अफसरो एव अन्य कमचारियो को पदवियाँ, गाँव ताजीम तरक्कियाँ प्रदान की। इस अवसर पर महाराजा ग्वालियर कपूरथला जयपुर जोधपुर पटियाला दतिया बनारस और दरभगा के महाराजाधिराज आये। उदयपुर

---

1 ई स 1916 म हरिद्वार स गगा की एक शाखा निकालन के लिए अग्रेज सरकार ने विचार किया तब भारतीय जनता न उसका पूरा विरोध किया। सरकार न इसकी जाँच कमेटी म श्री गगा सिंह जी को भी नियुक्त किया। इन्होने निभयता क साथ सरकार को बताया कि इस काम से हिन्दू जनता के हृदय पर चोट लगेगी और परिणाम अच्छा न होगा। सरकार न महाराजा के विचारो को मान्यता दी और शाखा निकालन का काय स्थगित कर दिया।

के महाराणा, दाता तथा बाकानेर के महाराणा, कोटा व कच्छ के महाराव प्रतापगढ के महारावत और बूंदी नरसिंहगढ़, सीतामऊ और सेगगढ के राजा भी इस मौके सम्मिलित हुए थे। पालनपुर क नवाब सर ताले मुहम्मदखां तथा पालीताणा के ठाकुर एव अनक स्थाना मे दीवान राज कुटुम्बी व प्रतिष्ठित सरदारादि ठिकानेदार आये थे।

राज्य के अनेक शासकों तथा भारत के बहुत स नरेशों स इनकी (गगासिंह जी की) पूर्ण मित्रता थी। राजपूताने के समस्त राज्यो के शासको क साथ अच्छे सम्बन्ध थे। ये धर्म सम्बन्धी कार्यों म पूर्ण रूप स भाग लिया करत और शासन को ईश्वर वरदान मानते थे। वे भारतीय सभ्यता के अनुसार राजा और प्रजा के बीच उस पवित्र सम्बन्ध को, जा यहाँ की परिस्थिति के अनुकूल एव वाछनीय था दखना चाहते थे। इनके शासन समय मे जनता को पाक, डाक तार, बिजली, टेलीफोन बक, स्वास्थ्य, यातायात, पुस्तकालय म्यूजियम, शिक्षा, सिनेमादि की अनेक आधुनिक सुविधाएँ प्राप्त हुई। जमींदार परामर्शिणी सभा, म्यूनिसिपेलिटियाँ, सहकारी समितियाँ, ग्राम पँचायतें आदि सस्थाओ के कार्यालय भी स्थापित किये गए। चारी डकतियाँ प्राय खत्म एव आवागमन के रास्ते सुरक्षित बन गए थे। इसीलिए वायसराय लार्ड चेम्स फोर्ड, रीडिंग इर्विन और विलिंगडन ने बार बार से महाराजा गगासिंह जी की प्रशसाएँ की थी।

महाराजा श्री गगासिंह जी ने राजधानी म बडे बडे भवन बनवाकर सर्वाधिक नगर विकास किया और फिरोजपुर कटान्मेंट के पास सतलज नदी से एक जलधारा (नहर) पृथक कर बाकानेर राज्य का निजल पडा बहुत बडा क्षेत्र सरसब्ज बना दिया था। जलागमन फलस्वरूप उस एरिया म बडी बडी मडियाँ स्थापित हो गई, जिनस किसाना, व्यापारिया एव राज्य को अच्छा लाभ होने लगा। प्रजा, सुखहित वाह-वाह करते लगी थी।[1] राज-काज म सवथा नागरी लिपि मे उर्दू एव अग्रेजी, किन्तु प्रजा क साथ भाषण तथा वार्तालाप के समय श्री गगा सिंह राजस्थानी से बडा प्रेम और लगाव रखते थ। हिन्दी का इनको समुचित मान था, परन्तु अग्रेजी भाषा पर पूर्ण अधिकार था। श्री गगासिंह जी के साथ अग्रेज सरकार क अच्छे तालुकात थे। उनसे इन्हें काफी खिताब उपाधियाँ मिली थी। भारत क सारे वायसराय महाराजा क यहाँ बडी खुशी के साथ आये थ। वायसराय ही नहीं प्रिंस आफ वेल्स, भारत के सर्वोच्च सेनापति आदि उच्चाधिकारी भी इनके समय मे सहर्ष बीकानेर पधारे थे।

श्री गगा सिंह जी ने अनेक बार लदन की यात्राएँ की और इम्पीरियल वार केबिनेट एव वार कान्फ्रेंस म भी शामिल हुए थे। लीग आफ नेशन्स तथा गोलमेज कान्फ्रेंस म भारतीय नरेशों की ओर से भाग लिया था। ये दोनो विश्व युद्धो म सम्मिलित हुए और वर्सेलिज के सन्धि पत्र पर भारतीय प्रतिनिधि की हैसियत से हस्ताक्षर किये। ये इ० स० 1921 मे नरेन्द्र मडल के प्रथम चान्सलर नियुक्त हुए और भारत के देशी नरेशो द्वारा सम्मान पाया। हिन्दू विश्व विद्यालय के कुलपति रहे और केम्ब्रिज वि०वि० तथा एडिनबरा विश्व विद्यालय से उपाधियाँ पाई थी। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से इन्हें

---

1 कर सम ल्याया तू कठण धोरा मझ गग धार!
भागीरथ मन भोमगा, जोधा तन जुहार॥ चतुरदान सामौर

डी०सी०एल० (डॉक्टर आव सिविल ला) की उपाधि मिली और सम्राट एडवड मप्तम द्वारा इनको जी सी आई इ (नाइट ग्रड कमा डर ऑव दि इण्डियन एम्पायर) की उपाधि मिली। महात्मा श्री गांधी, गोखले और मालवीय इत्यादि नेताओ से इनकी मित्रता थी। ये अ तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नेता थे, जो 2 फरवरी 1943 ई० को बम्बई मे प्रात काल अपनी कीर्ति अवशेष छोडकर स्वगवासी बन गए। वायुयान द्वारा बीकानेर लाये जान पर देवी कु ड सागर स्थान म इनके पार्थिव शव का सशोक दाह सस्कार किया गया। दो वष और इहलोक मे रह लेते तो जरूर प्रजा श्री ग गासिह महाराज की डायमड जुबली (हीरक जयती) मनाती। कितु कान भगवान की लीला! इनके बाद महाराजा शादू ल सिंह जी ने (सन् 1943 49 तक) बीकानेर राज्य का सिंहासन सभाला। इस समय स्वत त्रता की लडाई चल रही थी। 14 अगस्त 1947 की रात को भारत स्वतन्त्र हो गया। तब श्री शादू ल सिंह जी ने भारतीय रियासतो के भारतीय सघ मे सम्मिलित होने के समझौते पर सवप्रथम हस्ताक्षर करके दूसरे राज्यो को उत्सा हित किया। इस काय हेतु उस समय सरदार वल्लभ भाई पटेल ने महाराजा श्री शादू ल सिंह जी की पर्याप्त प्रशंसाएँ की थी। अपने राज्य मे पूण उत्तरदायी सरकार बनाने की पहल भी इ ही द्वारा हुई थी। आगे जाकर 30 माच सन 1949 ई० को श्री सरदार वल्लभ भाई पटेल के द्वारा बहद राजस्थान का उद्‌घाटन हुआ और बीकानेर राज्य उसमे विलय हो गया। कितु भारत सरकार ने महाराजा शादू ल सिंह को सवधानिक महाराजा के रूप मे बाइज्जत मा यता प्रदान की थी। श्री शादू ल सिंह जी के परलोक गमन पश्चात् महामहिम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद द्वारा उनके बडे कु वर श्री करणी सिंह (ज म 1924 ई०) को बीकानेर राज्य घराने का राजकीय सम्मान मिला और वे महाराजा के नाम से सम्बोधित होते रहे हैं। ये ई० सन 1952 से इस बीकानेर क्षेत्र के प्रतिनिधि निदलीय सदस्य के रूप म लम्बे समय तक लोक सभा के सदस्य बने। लोक सभा म लिफ्ट सिस्टम द्वारा राजस्थान नहर के पानी को ऊपर उठाकर लूनकरण-सर क्षेत्र के लोगो के लिए लाये जाने के बार बार प्रस्ताव रखे। 1959 म एक सिनेमा फिल्म बनाकर क्षेत्र के जलाभाव को दिल्ली म प्रदशन करवाया था। तब सिंचाई और विद्युत मत्री डा० के० एल० राव ने इस प्रोजेक्ट को प्राथमिकता देने का वादा किया था। डा० श्री करणी सिंह के अथक प्रयास से 5 जुलाई 1968 के दिन लूणकरणसर बीकानेर सिंचाई का शुभारम्भ राजस्थान के मुख्य म त्री श्री मोहनलाल सुखाडिया द्वारा हुआ। मात भाषा राजस्थानी को गौरवपूण स्थान दिलवाने और महत्त्वपूण हस्त-लिखित ग्र थो का सरक्षण करवाने का काय भी आपने किया हैं। आप क्ले पीजन तथा स्कीट शूटिंग म भारत के राष्ट्रीय चम्पियन और निजी वायुयान चालक का लाइसेंस प्राप्त करन वाले प्रथम बीकानेरी हैं।

महा० श्री करणीसिंह बम्बई विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त एक सभ्य रईस हैं। य अन्तराष्ट्रीय निशान बाजी म सतत भाग लेन वाले यशस्वी स जन कहलाते हैं। अब श्री करणी सिंह जी के महाराज कुमार श्री नरे द्र सिंह बीकानेर के राजघराने मे ज मे (1946 ई०) एक सावजनिक कायकर्ता व नौजवान सरदार हैं। आप अपने पूवजो की कीर्ति का बडा गौरव रखते ह।

लोक कथन

प्रजा मे गगासिह जी के जीवन की अनेक घटनाएँ रामायण महाभारत की कथाओ की भाति प्रचलित हैं जो इतिहासो में नहीं मिलती। वे जन सवक भावुक तथा परम उदार थे। उनका व्यक्तित्व रोबीला था। वे ब द गल का कोट पहनते और ब्रिचश तथा मौसम के अनुसार रगीन साफा बाँधा करते थे। स्वय काम करना और दूसर स करवाना उनका सिद्धा त था। महाराज अशोक के बाद हि दुस्तान से सेना सहित काबुल की सीमा के उस पार जाने वाले श्री गगासिह ही थे। सर ब्राचन जट के सी आई ई, जो श्री गगा सिह के नाबालिग होने तक शिक्षक थे ने महाराजा का दनिक काय क्रम बताया है। उसम उन्होने जल पान से पहल घोडे की सवारी व निशाने बाजी का हाल लिखा है। ई स 1999 के पास शेले और निशाने बाजी के अलावा श्री गगासिह प्रात काल जल पान से पहले घोडे की सवारी भी किया करत थे। कभी कभी आप 18 मील गजनेर तक जा आते और उस समय साधारण वेश मे रहा करते थे।

1 एक दिन वापिस आते वक्त रास्ते म उनके घोडे के पेट मे पीडा खडी हो गई, घोडा गिर गया और देर तक छटपटाने लगा। पीछे से एक आदमी लकडिया का लादा लिए बीकानेर आता दिखाई दिया। महाराजा ने बीकानेर पहुँचा देने के लिए उससे कहा। लादे वाला गिडगिडाया कि 'पहले शहर लादो वेच आऊँ पछ थान पोहुँचा देसू।' तब महाराजा ने कहा—'अरे भाई मैं वेगार म नही ले जाता, पाँच रुपया भाडा दूगा। अफसर फौज मे ल जाकर छोड देना।' बात का विश्वास हो गया और लादा छोडकर महाराजा को ऊँट चढ़ा कर बीकानेर ले चला। आग के आसन महाराजा एव पीछे लादे वाला बठा था। महाराजा ने पूछा—"और क्या हाल चाल है चौधरी? अरे भाई तुम लाग राज्य क आदमियो स इतना क्यो डरत हो?' लादे वाले ने कहा—'ब धिगाण वगार म पकड लव अर पइसा पूरा देव नही।' इस पर महाराजा वाले — तुम बेगार की दरख्वास्त क्यो नही करते?' चौधरी— कुण सुणसी? घणी गगा सिह महा०, सुणा हम्मैं मोटा हुया है जका घणा आछा बताइज। पण उणा तक या बात पुगाव कुण? महा० ने कहा—'मैं कहूँगा, तुम्हे अब जबरदस्ती और बिना पसे कोई बगार म नही ले जायेगा।" बातो बातो मे बीकानेर आ गया, लाग आते जात दिखाई देने लगे। वे महा० को ऊँट चढे देखकर—'घणी खम्मा! घणी खम्मा!" बोलने लगे। जाट बेचारा डर गया किन्तु महा० उसको पाँच रुपए देकर रिसाल की सवारी से किले म पधार गय। चौधरी को खाना खिलाने के लिए भी कहत गए। बगार के उचित आदेश हो गये।

2 फाल्गुन का महीना मजे का दिन, कचहरी मे एक कदी की पेशी थी। उसको दो सिपाहियो द्वारा हाथो परा में बेडी लगाए हुए तारीख भुगता कर वापिस जेल ले जाया जा रहा था। रास्ते म गढ के पास रसिए डफ बजा रहे थे। कदी ने कहा—मुझे डफ पर एक धमाल बोलने दो।" लेकिन सिपाही नही माने। तब किसी अन्य व्यक्ति ने सिपाहियो से कदी की सिफारश करके डफ दिलवा दिया। कदी धमाल का गायक था। उसन बहुत ऊँचे स्वर से बीकानेर राज्य और महाराजा गगासिह के नाम पर बनाई हुई धमाल गाई— गहरो तपियो जो राज गगासिह का गहरो तपियो। '

महाराजा वही महलो म बठे थे। धमाल की स्वर लहरी से प्रभावित हुए। उ होंने अपन अरदली से कहा—"इस धमाल बोलने वाले रसिये को लाओ।" मुख्य लोगा न अज की "खमा अन्न दाता ! एक कोई कैदी था। जेल के सिपाई कचहरी उसकी पेशी करवाकर वापिस लिए जा रहे थे। रास्ते मे डफ बजने देखकर उस कदी ने भी डफ बजा गा लेन की अनुनय की। उपस्थित लोगा के कहने पर सिपाई मान गय और वह डफ बजा कर धमाल बोलने लगा। अब जेल पहुँच गया।" महाराजा न कहा "कदी को छोड दो।'

3 महाराजा गगा सिंह गगानगर जा रहे थे। माग मे व विश्राम कर रहे थे। चारा ओर कडा पहरा था। कोई विश्राम मे बाधा नही डाल सकता। एक व्यक्ति के रोने की आवाज आई। महाराजा ने तत्काल उस व्यक्ति को हाजिर करन का हुक्म दिया। वह एक गरीब चमार था। कोई दुष्ट उसकी पत्नी का छीन ले गया था और सरकारी अफसर सहायता नही कर रहे थे। महाराजा ने तत्काल उसकी औरत और दुष्ट को खोजकर लान का हुक्म दिया। एक ही घण्टे म अपराधी गिरफ्तार कर लिया गया। औरत चमार को पुन सौंपी गई।

4 श्री गगा सिंह राजा भोज और विक्रमादित्य की तरह रात्रि के समय सादी पोशाक पहन कर निकलने और अपनी प्रजा के सुख दुख का ज्ञान किया करते थे। एक बार रास्ते म कहा सिपाइयो की रात्रि ड्यूटी निरीक्षण का अचानक विचार हो गया। ड्यूटी पर खड़े एक सिपाई को नीद म ऊघते देखकर उसके हाथ से धीरे से बन्दूक निकाल ली और उसकी जगह ठुड्डी के नीचे लाठी ठहरा कर पकडा दी। दूसरे रोज गिडगिडाते सिपाई को मुस्कराते हुए महाराजा ने पर्याप्त नसीहत के साथ ब दूक सम्भला दी।

5 मिश्र से श्री गगा सिंह न ई स 1915 फरवरी को लेफ्टेनन्ट जनरल सर जान मक्सवल कमाडर इन चाफ की सलाह से स्थान कतीबा एल खेल के पास बहद शत्रु सेना के साथ लडाई मे अपनी सेना का स्वय सचालन किया। तब शत्रु सेना के छक्के छूट गये। वे रात को अग्रेजी छद्मवश से (शत्रु के दो सनिक) शिविर मे महाराजा की खाट के निकट घुस गए। माता करणी ने उठ उठ के सम्बोधन से बीकानेर नरेश को उठाकर एक कोने में खडा किया और बिजली चली गई थी। वे सनिक खाट के कम्बल पर दो फायर करके लौट पडे। बिजली आई। महाराजा न उन दोनो के वहीं ढेर कर दिये।

6 रात्रि भ्रमण— गगा सिंह के व्यक्तित्व सम्बधी अनेक विचित्र बातें घटित हो जाती थी। एक बार रात्रि भ्रमणार्थ नगर म प्रवेशित हुए। तब एक सेठानी का गहनो से लदी देखकर पूछा—'बाला गहणा घणो पहर्यो है ? काई चार डाकू खोस लेवला ?

सेठानी ने कहा— राज्य गगा सिंह कर।' सुन कर नृप तो आगे निकल गय। उस जमाने म गगा सिंह की भारी कीर्ति प्रसिद्ध हुई थी।

7 बीकानेर का कोई ग्रामीण किसी के साथ कलकत्ता चला गया। वहाँ हवड़ा का पुल देखकर आश्चर्यान्वित हो उठा। और महाराजा गगा सिंह की वाह वाही करने लगा कि वाह ! गगा बाबा वाह ! भला बणाया है।

8 महाराजा गगा सिंह अपनी निजू स्पेशल (रेल) मे यात्रा किया करते थ। एक बार कलकत्ता रास्ते म एक अग्रेज स्टेशन मास्टर ने उनकी गाडी को पहले लाइन क्लियर नही दिया। महाराजा ने उसका बुलवाकर कारण पूछा। टालमटाल की कोशिश पर श्री गगा सिंह जी ने गुस्से म आकर उसके थप्पड जमा दिए। ऐसी दूसरी घटना है— इलाहाबाद क्षेत्र के स्टशन मास्टर के हाजिर न होने पर तत्काल बरखास्त कर देने के लिए ऑडर करवा दिए थे और उसके विनय पूवक गिड गिडाने पर वे ऑडर वापिस कसिल (रद्द) भी करवा लिए। इस तरह से वे बडी सजगता के साथ यात्रा किया करते थे। मुख्य स्टेशनों पर डिब्बे की सीट पर बठे ही खिडकी मे झाक कर प्रजा जना से कुशल समाचार पूछा करते थे। पर लोग उनसे डरते डरते ही बात किया करते।

9 ई स 1939 की बात—महाराजा की स्पेशल भटिण्डा से बीकानेर जा रही था। रास्त के ग्राम महाजन स्टेशन पर— महाजन रो काई देखा, हरिसिंह नी रया कहकर आपने अपने डि बे की खिडकियाँ बन्द करवाली। वहाँ के लोग उनके दशना की तरस लिए ही रहे। आग लूणकरणसर स्टेशन पर गाडी ठहराई तब वहाँ के प्रमुख जन स्पेशल से दूर खडे "घणी खम्मा म्हारा अन्नदाता न!' बोल रहे थे, उनको पास बुलवाकर सुभिक्ष सुकाल और दुख सुख आदि के समाचार पूछे। वहा सामूहिक परिचय के साथ गाटा के राजवी केशरीसिह (नायब तहसीलदार) से नाम पूछा और उसके बताने पर मुस्करायें! बोले— म्हार राज्य म ही केशरीसिंघ है काई ?" इस पर वह भयभीत केशरीसिह[1] धीरे से मुह झुका कर गायब हो गय। तब स्थानीय सेठ श्री जेठमल बोथरा ने क्षेत्रीय लोगा व नेतृत्व म महाराजा के पास जाकर विनीत भाव से पानी आदि के अभावों को अज रूप बयान किए। फिर सब सुखो की रग बद्ध हाँ भरते हुए दूर से आये ग्राम वासियो ने घणी खमा!" के उदघोष से स्पेशल को विदा (रवाना) किया।

10 महाराजा गगा सिंह का आज विस्मय बीकानेर रियासत म ही नही बाहर भी दूर दूर तक प्रसारित रोब दाब था। वे जहाँ कही जात, लोग भयभीत हो दूर खडे ही देखा करते थे। उनकी सवारी निकलती पुलिस की सीटी बजती तब नर नारियों के समूह मे रहत हुए भी प्राय अल्प सख्यायित अफसरा को छोड कर तत्कालीन तमाम जन उनके दशना से वचित रहते। किसी भी गाव राजा को उनसे सम्बंधित काय सौंप दिया जाता, वह काय बडा महान माना जाता था।

स्वण जयती महा सव पर कुछ चन्दिदा स्थाना के स्कूलो से भाव पाठ हेतु छात्र उपस्थित होने जरूरी समझे गए। पर उनके साथ एक एक मास्टर जाने के लिए आवश्यक हुए। अन्त मे अध्यापका ने स्वतिपाठिया स्वय ले ली। लेकिन कुछ उत्साही

---

1 तत्समय महाराजा गगासिंह बीकानेर राज्य स्थली के बब्बर शेर। उनके सामने किसी अन्य केशरी सिंह का नाम बताया जाना उचित नहीं जचता। केशरी सिंह वन का राजा सबसे ताकतवर व निर्भीक प्राणी होता है। वह अपनी स्थली मे अन्य सिंह का प्रवेश नहीं होने देता।

गाँव कालू म उस समय केहरी सिंह यादव (नारनाल) नाम के एक कस्टम थानेदार थ। उसने इस घटना के पश्चात अपने हस्ताक्षर केहरी सिंह की बजाय कवल कहर नाम म करना आरम्भ कर दिया था, क्योंकि कहरी सिंह माने केशरी सिंह होना है।

खेल मास्टरा म स छात्रो के साथ सज धज कर गए। छात्रों ने यथा समय अपने झण्डे लहराये मार्च पास्ट किया और 'Long Live our Maharaja' के नारे लगाए। आयोजन विसर्जन होने के बाद महाराजा गगा सिंह सबका अभिवादन स्वीकार करते हुए मेहमानो क साथ निवास स्थान पधार गए। तब जाकर छात्र और अध्यापक भी फारिग हुए। तत्समय किसी मजाकिये साथी ने एक छात्रा क साथ आए सरल सीधे मास्टर से मजाक कर लिया कि—'आपके छात्रो का कायक्रम अन्नदाता को बिलकुल पसन्द नही आया। व नाराज हो गए हैं।" बस! इतना सुनते हा वह मास्टर रोने लग गया। बुरी तरह स पछाड़ें खाने लगा और जमीन पर गिर पडा। होश चला गया और प्रलाप करने लगा। तब अन्य लोगो ने उसको समझाया कि आपके छात्रा की परेड से साहब बहादुर बडे खुश हुए हैं और सध्या आपक लिए इनाम आयेगा।' लेकिन वह तो पागल हा गया और अपने को गालियाँ बकता रहा। आखिर बात को गापनीय रखते हुए उसको हास्पिटल मे भर्ती करवाया गया और वहाँ उपस्थित अध्यापको ने तीन माह तक उसका वहाँ पूरी देख भाल रखी।

गगनहर, अनिवाय शिक्षा पचायत राज्य हिन्दी राज भाषा बनाना विधान सभा कायम करना न्यायदतिया के कारण जागीरदारो के अधिकार छीनना आदि काय बीकानेर म होने उस समय आश्चय जनक गिने जात थे। लकिन प्रजा सुख की प्रक्रिया गगा सिंह की अपनी थी। व आखिरी समय तक भाखरा बान्ध द उच्छ्वास करते रहे। परिजनो न आश्वासन दिया कि आपकी भाखरा का योजना अवश्य पूरी होगा। तब उनकी आत्मा इहलोक का छोड सकी थी।

श्री गगासिंह जी के युग म सारे ससार मे अग्रेजो की धाक थी। सब राजा महाराजा उनके सेवक थे। एसे समय म गगासिंह अकेले अपने राज्य मे आन्दोलन कर्त्ताओ को मन मानी करने दें ? कैसे हो सकता था। तत्समय के शासन कानून एव प्रबन्ध का तकाजा था। गगा सिंह ने आन्दोलन कर्त्ताओ पर मुकदमे चलाये। फिर भी सच्चे देश भक्त व्यक्ति का पहचान ने की उनमे प्रखर प्रज्ञा थी। श्री जयनारायण व्यास की सिफारिश करते हुए उन्होने जाधपुर के तत्कालीन अग्रेज दीवान सर डोनाल्ड एम फिल्ड को एक पत्र 21 फरवरी 1937 ई को लिखा था। उसम श्री व्यास का एक चरित्रवान, देश सेवक तथा जिम्मेदार व्यक्ति बताया था और लिखा कि अपने हट जाने पर शासन की बागडोर एसे ईमानदार व्यक्ति क हाथो मे ही सौंपी जानी चाहिए।

21 फरवरी सन 1937 को प्रमुख नेता श्री जयनारायण व्यास के सम्बन्ध मे जाधपुर के तत्कालीन प्रधान मन्त्री को भेजे गये गोपनीय पत्र मे देश की भावी राजनीतिक स्थिति के विषय म जो बातें उस समय लिखी थी, वे 10 वर्षो बाद अक्षरश सत्य हुई।

बीको 1 नरो 2 लूणसी 3 जतो 4 कल्लो 5 राय 6
दलपत 7 सूरो 8 करणसी 9, अनुपम 10 सरूप 11 सुजाय 12 । एक ।
जोरो 13 गज्जो 14 राजसी 15 परतापो 16 सूरत 17
रतन सिंघ 18 सरदार सिंघ 19 डूग 20 गगमहिपत 21 । दो ।
प्रज पालक सादूल सिंघ 22 करणी सिंघ कुळ मोड 23
जगलधर बीकाणपत रण बका राठौड । तीन ।

आज बीकानेर राज्य की शासक प्रथा समाप्त है पर तु बीकानर मडल सास्कृतिक दृष्टि से भि न कोटि का स्थान माना जाता है। वह अपनी मात्र महत्वपूण गाथाओ से ही नही, स्थापत्य कला कुशलता परिपूण गढो, महलो, कोठियो उद्यानो पार्को, अन्य स्मारको पव त्योहारों, शूरवीरता तथा विभिन्न लोक प्रथाओं मे अपने पुनीत प्रदेश का प्रख्यात जिला कहलाता है। प्राच्य स्थल, देवप्रासाद, नगर द्वार, भित्ती चित्र, सुसज्जित बंगले, हवेलियां और तीथ तालाबादि सब स्थान बहु शानागार ह।

बीकानेर वसुधरा ऐतिहासिक दष्टि से सतत परम पवित्र रही है। यह मनस्वी ऋषि मुनियो की चरणरज से गौरवशालिनी बनी है। बीकानेर नगर से पचास कि० मी० पश्चिम म श्री कालायत सास्य दशन के प्रणेता कपिल मुनि का आश्रम रहा है। मुनि श्री ने अपनी माता देवहूती को यही पर सारय योग-दशन का ज्ञानोपदेश किया था। याज्ञवल्क्य, च्यवन एव गुरुदत्तात्रेय भी इसी पुण्य स्थली म तप साधना रत रहे थे जिनकी साख मे क्रमश जागीरी तालाब', चिमन गुफा' और दियातरा नाम का ग्राम विद्यमान है। बीकानेर की दक्षिण दिशा मे तीस कि मी दूर देशनोक स्थित माता करणी का द शनीय मदिर थोडा आग जाभोजी का 'मुकाम' पूव मे शिववाडी की मदिर महिमाओ से काफी उधर जसनाथ जी का कतरियासर (बाबा का) पूनरासर, कस्बा कालू मे कालिका जी का धाम और गाँव गारबदेशर मे मुरलीधरजी का चमत्कारी मदिर है। तहसील लूनकरनसर खास मे भडाण की पावन भावना पूजित श्री बजरगबली का भव्य भव्य देव द्वार है।

ठिकाना छत्रगढ के विस्तृत सूखे बजर रेगिस्तान के पुराने पडे नसगिक भू भाग को लहलाते खेतो म परिवर्तित कर देने वाली राजस्थान नहर परियोजना का विश्व की विशालतम सिचाई याजनाआ म बीकानर का प्रमुख स्थान है। नगर से अट्ठारह कि मी दूर उक्त नहर की अतिम लिफ्ट पम्पिग स्टेशन गाँव हुसगसर के स्वर्णिम टिला की शिखर कतार चोटियो पर बदले बीकानर के मरुस्थलीय गौरव को हरे भरे पेडों की पत्रावली-पताका गगन घोष गजना मे मिलाती हुई मालूम होती है।

बीकानेर से पतीस कि मी पश्चिम गजनेर क्षेत्र मे पशु पक्षियो का एक विशेष रमणीक अभयारण्य है। यह निभय विचरण करन वाले जानवरो क लिए बहुत मशहूर एव मनभावना स्थान है जो तमाम जीवो के लिए लगभग बीस कि मी प्रसरित अभयारण्य है। यहा की झील का प्राकृतिक सौन्दय श्री गगासिह जा ने बडा मनोहारी बना दिया है। इसलिए यहाँ के पशु पक्षा सदव जल तृप्त रहत हैं। पशु पक्षिया का नदन कानन यह अभयारण्य अब तारबदी मे वन विभाग द्वारा सुरक्षित रहता है। यहाँ सूअर, रोझ (नील गाय) चीतल, चिकारे एव कृष्णमृग जस पशु और हंस, मुर्गाबी, सारस बगुले बतख बटर बुलबुल बाज, गौरेया, पपया प्रभृति अनेक पक्षी रहते हैं। शीतकाल म साइबेरिया, यूरोप तथा मगोलिया जसे दूरस्थ देशा से सैकडा तरह के प्रवासी पक्षी यहाँ आत हैं। गोडावण तिलोर, मोर और बटबड यहा के विशेष मा य पक्षी है विदेशों स आने वाल विचित्र पक्षियों म इम्पीरियल सन्ड ग्राउज ऊँची टाँगों वाला धाली कानी स्टिल्ट चिडिया पडीवड पला बटरड प्लोवर ह्वीटइयर तथा स्थानीय चौडे डना वाली चील है। इम्पीरियल मजेस्टा अर्थात चिडिया टालों म साईबेरिया क लाखो मारस पक्षी आते हैं।

गजनर, जस अन्तराष्ट्रीय जीवों का सगम स्थल, वस ही हिन्दू मुस्लिम एकता का धार्मिक स्थान भी है। यहाँ अनक सम्प्रदायो के अनक मदिर, मस्जिदें और पीरजी की बडी दरगाह है। बीकानेर महाराजाओ के महल एव उपवन, कला कारीगरी के विशिष्ट नमून हैं। गजनेर के बाग मे खजूर, नीम्बू अनार, जामुन और बिल्व के पेड यथा समय से अच्छे फल देते हैं। कच्ची फुलवाद की यहाँ भारी बहार है। पयटन की दृष्टि से गजनेर सदा से विदेशियो का आनददायक स्थान रहा है वसे ही शोधार्थी विद्यार्थियो के लिए अभिनव बीकानेर विश्व का आकषक नगर बन गया है।

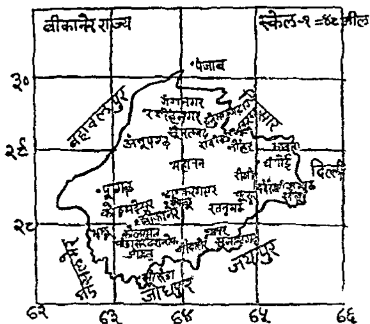


गजनेर पलेस

सुना है इस समय दूसरा अभयारण्य छत्रगढ क्षत्र के समारदेसर मे (बहुत विस्तृत जगह म फला राजस्थान नहर का पानी) घाना पक्षी अभयारण्य स्थान बनाने क लिए उपयुक्त सरोवर माना गया है। पानी बढ रहा है और पक्षियो के बच्चो का भोजन 'काई' बन रही है। दिनांक 12 2 81 के युगपक्ष के अनुसार बीकानेर क जिलाधीश तथा अन्य बडे अफसरो न इसका निणय लेकर उस एरिया के चारो ओर वक्ष लगवाना आरभ करवा दिये हैं। पचास वगमील म यह जलजलाकार क्षेत्र मछली पालन पशु पक्षी प्रजनन तथा विदेशी पक्षियो के विचरण विहार एव हरिण नील गायें आदि पशुओ के विचरण के मुख्य स्थान के रूप मे विकसित किया जा रहा है। इससे हमारा (कालू का) पुराना ठिकाना छत्रगढ क्षेत्र भी अब देश विदेश की रग बिरगी, तरह तरह के कद और किस्म की पृथक पृथक चोच वाली चिडिया का अद्भुत चित्ताकषक बसेरा बन जायेगा।

जागीरदार, बीकानेर राज्य और कालू —

राजपूताने मे अभिहस्तांकित प्रथा—प्राचीनकाल के सम्राट आमतौर पर अपने सामतो सेनापतियो एव उच्च कमचारियो को सरकारी खजाने से वेतन भुगतान की अपक्षा भूमि के भू खडो को भूमिकर अभिहस्ताकित कर दिया करते थे। प्राचीन नीतिकार श्री मनुजी का भी कहना है कि—'सौ गावो का कर सग्रह कर देन वाले राज्य उच्चाधिकारी का एक गाव का भूमि कर अभिहस्ताकित किया जाना उचित होता है और सगठन प्रब ध बना रहता है।"



बीकानेर राज्य

देहात छत्रगढ इस्टेट—साँकल कालू

राजस्थान के राजपूत चन्द्रवंशी और सूयवशी हैं, जा सब क्षत्रिय कहलाते हैं। ये भूमि, गौ माता जनता और संस्कृति के रक्षक एव शूरवीर कहलाते थे। इनका जीवन सचमुच सैनिक जीवन था। राजपूताने की रयत को सुखी बनाये रखने के लिए इन्होंने सदैव अपना गौरव समझा और दृढ प्रतिज्ञ तथा परमार्थी जीवन जीते रहे।

राजस्थान के जातीय सगठन में पहले राजपूत राजा, अपने राजपूत सरदारों के मध्य अपने आपको सब शिरोमणि पृथ्वीपत श्रेणी का महान शाहशाह बनाये रखने के लिए सप्रयत्न रहा करते थे। पर ऐसे राज्य का राजनैतिक आधार विशेषताएँ एव व्यवस्थाएं मात्र जमींदारी प्रथा द्वारा ही पूर्ण नहीं होती थी। राज्य के महान सरदारों का भू धारण विधान सैनिक सेवा तथा कर देने में ही नहीं अपितु नातेदारी व्यवहार के अनुसार राजा महाराजाओं के मौलिक भूमि उपभोग में उन सबका सहकारी अधिकार के रूप, उन उपभोक्ता पदीय विजेताओं से रक्त सबधित माना जाता था।

राजपूताने की रियासतो में भूमि का विभाजन खालसा और जागीरदार दो विभागों द्वारा व्यवस्थित रहता था। खालसा तो रियासती राज्य ही होता था। मगर जागीर भू धारण प्रणाली कई श्रेणियो में विभक्त हुआ करती थी। उनमें से प्रथम श्रेणी की जागीरें ऐसी हुआ करती थी कि जिनके धारण कर्ता सरदार उस भू खण्ड विशेष के प्रथम शासक या विजेता से सबधित रहते थे। अत ऐसे सदीने आधिपत्य तथा सबध के कारण ही धारक इनका भोगते थे। ये जागीरें अनुदान की दी हुई नहीं होती और न ही व्यवस्था के सदस्य होने का कारण थी। परन्तु दूसरी श्रेणी का सामती सेवा तथा लगान मुक्त मानो अनुदान होता था। ये शासक के कुटुम्बियो के जाति व धुआ द्वारा भोग जाते थे। राजा के छोटे पुत्रों के पालनार्थ तरीके भी यही थे।

राजपूताने की अन्य रियासतो की भाँति बीकानेर राज्य की भी काफी भूमि सरदारो में बटी हुई थी। यह प्रथा राज्य स्थापना के साथ ही उत्पन्न हुई थी। कुछ पुराने ठिकाने जिनकी महत्वपूर्ण सेवाएँ राज्य को मिली हो कई रिश्तेदारी के कारण जमी हुई जागीरें थी और कतिपय अच्छी सेवाओं के उपलक्ष्य में सवद्धित जागीरें थी। इन सरदारो में ज्यादा राठौड ही थे जो बीका बीदावत और कांधलात कहलाते थे। दूसरी शाखाओ में सीसोदिया कछवाहा चौहान भाटिया तवर परमार व पडिहार प्रभति राजपूतो ठिकाने थे। दूसरी शाखा में भाटियो के ठिकाने अधिक थे। इन सबकी जागीरदारी श्रेणियो में राजवियो की दो कोटियाँ उच्च एव मुख्य मानी जाती थी जो कि ड्योढी वाले राजवी तथा हवेली वाले राजवी के सबोधन से पुकारी जाती थी। प्रथम कोटि के राजवी सरदार बीकानेर महाराजा के निकट सबधी होते थे। इनका सम्मान भाइयों के बराबर प्रतिष्ठित रहता था। महाराजा के पूर्वज श्री गजसिंहजी राजवी कहलाते और दो परमोच्च श्रेणियो में समाये थे। प्रथम श्रेणी में जो राजवी थे वे ड्योढी वाली के नाम से प्रसिद्ध थे और द्वितीय श्रेणी के राजवी हवेली वाले राजवी कहलाते थे। ये दोनो ही शाखाएँ महाराजा गजसिंह के पुत्रो पौत्रो की थी। इनके अलावा गजसिंह के छोटे भाई तीन अमरसिंह तारासिंह और गूदडसिंह के वशधरो की गिनती भी राजवी सरदारो में होती थी। किन्तु पीढी दूर पड जाने के कारण ये ताजीमी एव गैर ताजीमी सरदार के नाम से सबोधित किये जाने लगे थे। ये लोग धीरे धीरे गढ से बाहर होते गये

और अपने डेरे (कोठियाँ) बनाकर अलग रहने लगे । जिन्हें पहले हवेलियाँ कहा जाता था । इनके निर्वाह हेतु जागीरें भी और यथा समय राज्य से नकद रकम भी मिल जाया करती थी । बीकानेर राज्य में एक सौ तीस ताजीमी सरदार थे जो तीन श्रेणियों में बटे हुए आनंदप्रद जीवन व्यतीत किया करते थे । प्रथम वर्ग के 33 ठिकानों में से महाजन, बीदासर, रावतसर और भूकरका के महाराज प्रमुख माने जाते थे । ये चारों रियासत कहलाते थे । ये राजा से मिलने जाते तब हुजूर स्वयं इन्हें हाथ मिलाकर अन्दर लेते और ससम्मान वापिस बाहर पहुँचाते थे । अतः ये दोलडी ताजीम और हाथ-कुरब वाले ताजीम कहलाते थे । द्वितीय वर्ग में 28 ठिकाने थे । इनके ताजीमदार मिलने जाते तब महाराजा फकत बाँह पसार कर हाथ मिलाते थे । ये इकोलडी ताजीम तथा बाँह पसाव की कुरब में प्रसिद्ध थे । तृतीय वर्ग के जागीरी ठिकानों वाले ताजीमदारों को केवल ताजीम वाले मानते थे । ये गढ़ में जाते तब महाराजा के सामने खड़े रहकर दूर से अभिवादन करते थे । इनके 69 ठिकाने थे । इस तरह से गजसिंह के तीन भाइयों की संतानों के अतिरिक्त 33 + 28 + 69 = नये पुराने 130 ठिकाने थे ।

गैर ताजीमी जागीरदारों के ठिकाने भी बीकानेर राज्य में संतोषप्रद ढंग से व्यवस्थित थे । इनमें कुछ नये तथा कई पुराने सम्मान घटा बढ़ी के जरिये राज्य की उत्तम सेवाओं के कारण जागीरें भोगते थे । इन कुछ को अपनी शादी गमी के समय महाराजा को नजराना भेंट करना पड़ता था । लेकिन रुक्का संबंधित ठिकानेदार इस रस्म से मुक्त रहते थे । ऐसे मौकों पर महाराजा साहब इनकी हवेलियों पर जाया करते थे । इनको सिरोपाव नक्कार निशान, घोड़े, सोने चाँदी की छड़ी तथा चपरास आदि के सम्मान भी प्राप्त थे । कइयों को मुकदमे के समय कचहरी जाना भी माफ रहता । इनके लिए राज्य से नियमित शराब मिलने का प्रबंध था । लेकिन जागीरों के गाँवों में खनिज आदि पर बड़े राज्य का सतत स्वामित्व रहता था । कर्जदारी तथा नाबालिग वगैरह के मौके ऐसे ठिकानों पर कोर्ट ऑव वार्डस के द्वारा शासन व्यवस्था हो जाया करती थी । बीकानेर महाराजा द्वारा सैनिक शिक्षा के सिवाय इनको पढ़ाने लिखाने तथा उच्च पद दिलाने का भी पूर्ण प्रबंध था और सरदारों की लड़कियों को पढ़ाने की व्यवस्था भी अच्छी थी । इन सरदारों में विशेष सुधार तो नहीं हो पाये, मगर प्रथम और द्वितीय विश्व युद्धों में बीकानेर राज्य के सैनिकों ने राजपूती शौर्य प्रकट करके बेजोड़ यश प्राप्त किया था ।

राजवी सरदार (ड्योढी वाले राजवी) —महाराजा गजसिंह के कई पुत्रों में से छत्रसिंहजी दूसरे पुत्र थे । वे अपने पिता की मौजूदगी (वि. स. 1836 भादवा सुदी 2, ता० 12 सितम्बर 1779) में ही परलोकगामी बन गये ।[1] छत्रसिंह अपने पीछे दलेलसिंह नाम का एक शिशु पुत्र छोड़ गये थे । बालक दलेलसिंह के पितामह (दादाजी) गजसिंह भी वि. स. 1844 (सन 1787) को परलोकधाम जा बसे । उनके पश्चात् गजसिंह के

1 संवत् 1836 वर्षे शाके 1701 भाद्रपदमासे शुक्ले तिथौ द्वितीयायाँ रविवासरे घ० 5 । 29 हस्तनक्षत्रे घ० 9/46 शूलयोग (गे) घ० 2/8 बालवकर्णे एवं पंचांगशुद्धौ महाराजाधिराज श्रीगजसिंहजी—तत्पुत्र महाराज श्री छत्रसिंहजी श्री परमेश्वर परम भक्ति ससवर्नाचित परमधाममुक्तिपद प्राप्त । (स्मारक का लेख)

सुल्तानसिंह अजवसिंह महोकमसिंह देवीसिंह और कुशालसिंह आदि सब पुत्र बाहर चले गये, क्योंकि राजा के एक कुंवर और बकरी के दो बच्चे तक ही ठीक हैं, अधिक होने पर निराश्रय तथा अपने बलबूत पर जीना पड़ता है।

गजसिंहजी के पुत्र राजसिंह तथा पौत्र प्रतापसिंह भी छ मास के अन्दर ही स्वर्ग सिधार गये, तब उनके पुत्र सूरतसिंहजी राजा बने।

वैसे तो 'दयालदास की ख्यात', 'नैणसी मुहणोत की लिखी देश दर्पण', कैप्टेन पाउलेट के 'गजेटियर आव दि बीकानेर स्टेट' मुंशी सोहनलाल कृत 'तवारीख राज्य श्री बीकानेर' श्रीराममीर मुंशी की ताजीमी राजवीज, ठाकुरस एण्ड खवासवाल्स आव बीकानेर' और लिस्ट ऑव रूलिंग प्रिंसेज चीफ्स एण्ड लीडिंग परसानजिज में दिये हवालातों के अनुसार छोटे बड़ों की कई भ्रांतियाँ हैं। किन्तु बीकानेर राज्य की ख्यातों के अनुसार छत्रसिंह सूरतसिंह की अपेक्षा आयु में जेष्ठ था। आचार्य आख्यान कल्पद्रुम" आदि कतिपय ख्यातों के आधार पर डा० ओझा ने भी सूरतसिंहजी से छत्रसिंह को बड़ा बताया है। इसलिए उनका कुंवर दलेलसिंह गद्दी का वास्तविक अधिकारी था। मगर उसकी अल्पवयस्कता को देखते हुए सूरतसिंहजी ही राजा बनाये गए। उस समय बीकानेर राज्य की स्थिति अच्छी नहीं थी। पड़ौसी राजा भी दुर्बलता का दृश्य देखते हुए इधर लपकने लगे थे। मरहठे ठग पिण्डारी तथा कुछ विरोधी सरदार भी भेद बताते हुए स्वच्छन्दता का व्यवहार करने लगे थे। इसलिए राज्य के स्वामधर्मी सरदारों ने सूरतसिंह को राज्य गद्दी पर बिठाना उचित समझा। फिर तो सरदार कर्मचारी और फौज वगैरह सूरतसिंह के साथ हो गये। तब दलेलसिंह ने अपनी मातृ शिक्षानुसार महाराजा सूरतसिंह के प्रति अत्यन्त आदरभाव ही बनाए रखा। सूरतसिंहजी ने भी कृतज्ञता पूर्वक प्रिय दलेलसिंह की बड़ी कद्र की और बीकानेर दुर्ग में उनके रहने के लिए एक अलग भवन बना दिया था। राज्य सिंहासन के प्रति गाढ़ी भक्ति देखकर बीकानेर महाराजा ने अजीज दलेलसिंहजी के लिए हाथ खर्च बाबत छत्रगढ़ जो उनके पिता छत्रसिंहजी के नाम पर बसाया गया था कुछ और गावों से मिलाकर यह ठिकाना महाराजा की उपाधि समेत अता कर दिया।

श्री दलेलसिंह का वि० स० 1895 वैशाख सुदी 7 (1 मई 1838 ई०) को परलोकवास हो गया। तब प्रचलित राज्य रीति अनुसार उनके जेष्ठ पुत्र शक्तिसिंह पिता की संपत्ति के स्वामी हुए। क्योंकि मदनसिंह खड्गसिंह और खुमाणसिंह उनसे छोटे थे तथा लक्ष्मणसिंह पहले ही चल बसे थे। वि० स० 1905 के फाल्गुन मास (फरवरी 1849) में श्री शक्तिसिंह का देहावसान होने पर उनके मात्र एक पुत्र श्री लालसिंहजी उत्तराधिकारी बने। लालसिंह ने क्रम से बीकानेर नरेश श्री रत्नसिंह और बाद में सरदारसिंह जी, दोनों से बड़ा राज्य प्रेम बना रखा था। बीकानेर महाराजा सरदारसिंह के केवल एक ही पुत्र तख्तसिंह था जो वि० स० 1924 पौष सुदी 9 (4 जनवरी 1868) को परलोक गमन कर गया। तब उक्त महाराजा सरदारसिंह को अपने डयोढ़ी वाले राजवी श्री लालसिंहजी की संतान पर ही मन रखना पड़ा।

छत्रगढ़ाधीश महाराजा लालसिंह (जन्म वि० स० 1888 अगहन शुक्ला 12 दिस 1831 ई०) राजा और प्रजा के बड़े शुभचिंतक थे, इसलिए राजा प्रजा दोनों ही उन पर

गहरी श्रद्धा मेहरबानी रहती थी। लालसिंह के तीन पुत्र गुलाबसिंह डूगरसिंह और गगासिंह हुए। गुलाबसिंह बाल्यावस्था मे ही स्वर्ग सिधार गये, किन्तु डूगरसिंह की शिक्षा-दीक्षा बीकानेर महाराजा सरदारसिंह द्वारा गोद लेने के ढग से हुई। सरदारसिंह का देहावसान वि० स० 1929 (सन 1872 ई०) में हो गया। तब उनकी राजमहिषी और सब प्रमुख सरदार वर्ग तथा अंग्रेज सरकार ने पूरी जानकारी लेकर डूगरसिंह को नरेश सरदारसिंह का उत्तराधिकारी बना दिया।

डूगरसिंह का गेहुवा रग सुन्दर चेहरा और शरीर लम्बा तथा बलिष्ट था। वे निशाना लगाने मे सिद्धहस्त और अश्वारोहण म निपुण थे। महाराजा डूगरसिंह दृढ-चित्त, साहसी, न्यायी विचारशील, ईश्वरभक्त और निराभिमानी शासक थे। कर्त्तव्य-परायणता, सहानुभूति आदि गुणो के कारण बीकानेर राज्य के इतिहास मे उसका नाम चिर स्मरणीय रहेगा। वह उदार गुणग्राहक शासन सुधारक, विद्यानुरागी राजा था। महाराजा सूरतसिंह रत्नसिंह और सरदारसिंह के समय से ही राज्य ऋण ग्रस्त और खजाना खाली था। डूगरसिंह ने पुराना सब ऋण चुकाकर राज्य के वैभव को बढाया। लाखो रुपये इमारतो, देव स्थानों, यात्रा तथा अन्य कार्यो मे व्यय करने पर भी परलोक-वास के समय उसने पर्याप्त निजी धन छोडा था, जिससे राज्य का रेल्वे आदि के कार्यों मे बडी सहायता मिली। पन्द्रह वर्ष राज्य करने के बाद वि स 1944 (सन 1887 ई०) म महाराजा डूगरसिंह का नि सतान स्वर्गवास हो गया। तब डयोढी वाले राजवी लालसिंह के द्वितीय पुत्र एव इनके अपने भाई गगासिहजी (जन्म वि स 1937 आश्विन सुदी 10 13 अक्टूबर 1880) का बीकानेर राज्य सिंहासन पर 31 अगस्त 1887 ई० को राज-तिलक हुआ। गगासिंह जी को सिंहासनारूढ हुए सत्रह दिन ही हुए थे कि उनके पिता स्वर्गस्थ महाराज लालसिंह जी का 56 वर्ष की उम्र मे परलोकवास हो गया। परन्तु बालक महाराजा ने धैर्य रखकर राज्य कार्य में किसी प्रकार की त्रुटि न आने दी और शासन कार्य सुचारू रूप से होता रहा। महाराजा की छोटी आयु और प्रत्यक्ष अभिभावक के अभाव मे शासन कार्य रीजेंसी कौंसिल द्वारा होना निश्चित हुआ। राज कौंसिल, रीजेंसी कौंसिल के रूप म परिवर्तित कर दी गई। आगे चलकर रीजेंसी कौंसिल मे कई परिवर्तन हुए तथा कौंसिल द्वारा राज्य म अनेक सुधार कार्य किए गए। वि स 1946 (ई० स० 1889) स वि स 1951 (ई स 1894) तक महाराजा गगासिंह ने मेयो कॉलेज में रहकर शिक्षा प्राप्त की, जिससे शासन कार्य का शीघ्र ही पर्याप्त अनुभव हो गया। वि स 1955 (ई स 1898) मे महाराजा ने देवली की छावनी मे रहकर सनिक शिक्षा प्राप्त की। इसी वर्ष इनकी आयु 18 वर्ष की होने पर राजपूताना के एजेन्ट गवर्नर-जनरल सर आर्थर मार्टिडेल ने बीकानेर मे अंग्रेजी सरकार की तरफ से इनका मार्गशीर्ष सुदि 3 (दिनाक 16 दिसम्बर) को एक बडे दरबार मे बीकानेर राज्य का सपूर्ण अधिकार सौंप दिया। इस अवसर पर महाराजा गगासिंह ने अपनी भावी शासन-नीति प्रकट की। वि स 1956 म बीकानेर राज्य मे भीषण अकाल पडा तथा उसी वर्ष विसूचिका (हैजे) की भयकर व्याधि ने भी बडे वेग से आक्रमण कर दिया। महाराजा गगासिंह ने उस समय जिस तत्परता से उक्त दोनो सकटो का सामना किया, उसकी सर्वत्र बडी प्रशसा हुई।

महाराजा गगासिंह का शिक्षानुराग प्रशसनीय था। इनके समय म शिक्षा की बडी

उन्नति हुई। चिकित्सा के क्षेत्र म भी बहुत विकास हुआ। रेल तार और डाक के महकमों का विस्तार किया गया तथा सडको द्वारा गमनागमन की शिकायतें दूर की गई। वि स 1982 पौष वदी 5 (ता० 5 दिसम्बर 1925 ई०) का बीकानेर राज्य की सीमा मे महाराजा ने गगनहर लाने का शिलान्यास करके बहुत बडा व्यय साध्य काय किया। ये बडे उदारचित, दृढप्रतिज्ञ एव शस्त्र तथा अश्व सचालन आदि क्षत्रियोचित गुणो स सपन्न थ। इनको स्वदेश और निज धम पर पूण श्रद्धा थी। राज्य म प्रचलित कुरीतियो को मिटाने में य सन्व प्रयत्नशील रहे। महाराजा दूरदर्शी और निर्भीक व्यक्ति थे। लोक हितकारी कार्यों कला कौशल और औद्योगिक उन्नति की तरफ इनकी गहरी रुचि थी। उनके कठोर परिश्रम और बुद्धिमतापूण शासन प्रणाली स राज्य की वार्षिक आय एक करोड ततीस लाख रुपये तक पहुँच गई थी तथा राज्य कोष धन मे परिपूर्ण था। महा के 50 वष के शासन काल म बीकानेर राज्य उन्नति के चरम शिखर पर पहुँच गया।

छत्रगढ के महाराजा लालसिंह के दोनो पुत्र (महा० डूगरसिंह और गगासिंह) गोद चले गये, इसलिए छत्रगढ का कोई वारिस नही रहा। उस ठिकाने को सही सलामत रखने के लिए लालसिह जी की धमपत्नी चन्द्रावत (जो तत्कालीन बीकानेर नरेश की सगी माता थी) के स्नेहाग्रहवशात महाराजा सर गगासिहजी ने अपने छोटे महा० कुमार विजयसिह को (जिसका जन्म वि० स० 1966 चत्र शुक्ला 8 दिनाक 29 माच 1909 ई को हुआ था) उसी साल महा० लालसिह के नाम पर माता चन्द्रावत का गोद (दत्तक) दे दिया। चन्द्रावत अपनी अतिम अभिलाषा सफल देखकर वि स 1966 माग शीष सुदी 1 (ता० 13 दिसम्बर 1909 ई०) को परलोकगमन कर गई। श्री गगासिह को इसका शोक हुआ और राज्य के मुखिया लोग उनसे सवेदनापूवक मिले। सम्राट जाज पचम तक ने (जो उस समय युवराज था) सवेदना पत्रिका भेजी थी।

श्री ओझा ने बीकानेर राज्य के इतिहास के दूसरे भाग के 11वें अध्याय मे लिखा है कि स्व० महा० डूगरसिह के समय मे महा० लालसिह (जो छत्रगढ जागीर से उन्ही के पिता थे) की जागीर आदि म वृद्धि हो गई थी, परन्तु फिर भी वह उसके पद के योग्य नही थी। अत एव श्री गगासिह जी ने महा० कुमार विजयसिंह के पद के योग्य तत्कालीन लगभग एक लाख रुपये वार्षिक आय की जागीर वृद्धि कर दी जिसम अनूपगढ मुख्य रहा। सभवत कालू भी इसी समय छत्रगढ अधीनस्थ हुआ था। वहा का स्वामी श्री विजयसिह अनूपगढ का महाराजा कहलाया तथा बीकानेर म लालगढ के महलों के समीप ही विजयभवन नामक उनका सुन्दर महल बना।

जूनियर महा० कुमार विजयसिह जो बडे पितृ भक्त, दृढ चित्त काय-कुशल और होनहार थे। वे राज्य के शाही वभव को छोटी उम्र तक ही भोग सके। विजयसिह बडे शासकीय कुशल नप थे। वे उदात्त हृदयी थे, पर अनीति व काय पर कठोर भी कम नही थे। इसलिए इनके पास रहने वाले व्यक्ति बडे सावधान होकर रहते थे। इनके स्वभाव पर य कहावत चल गई थी कि— किसी को अच्छा खाना पीना व भ्रमण करना हो तो गगासिह जी के पास रहो और बफिक्री आरामदारी चाहने वाले व्यक्ति को श्री शादूल सिंह की नौकरी म रहना चाहिए। किसी को मार या जूते खाने हो तो विजयसिह के पास जाकर रहो।' विजयसिह हर साल (एक दो साल) कार्तिक के महीने म गाँव कालू के तालाबो वाले मदान मे कुरजो की मृगया (शिकार) के लिए चापडियाँ बनवाते थे।

ठिकाने से आदमी भेजकर ताल मे बैठती और उडती उतरती कुरजा की राजाना गिनती करवाकर मगवाते थे। तत्पश्चात अफवाह हो जाती थी कि विजयसिहजी शिकार करने आयेंगे। पर आखिरी बार वि स 1988 के कातिक शुक्ल पक्ष म रोल्स कार द्वारा 'अचानक कुरजा की शिकार बाबत कालू आये। शिकार के लिए लगी हुई चोपड़िया देखी और अनाणा के ताल से ही वापिस चले गये। गाव का बडा एव भव्य देख सुनकर शिकार करने का विचार बदल दिया।[1]

महाराज कुमार श्री विजयसिह बहादुर वि स 1988 माघ सुदी 5 तारीख 11 फरवरी 1932 ई को परलोक सिधार गये। महा गगासिह का बडा दुख हुआ। वे दो रोज तक खाना खाने थाल नही बिराजे। तब महाजन राजा हरिसिह जो बडे समझदार एव बुद्धिमान थे गगासिह को सान्त्वना देकर व सासारिक रास्ते पर लाये थे। लेकिन मन का दुख कम करने के लिए महा गगासिह ने स्व० महा० कुमार विजयसिह के नाम पर एक बडा हास्पिटल बनवाया, जो प्रिंस विजय मेमोरियल हॉस्पिटल (बीकानेर) के नाम से दूर-दूर तक मशहूर है। इसका उद्‌घाटन वि स 1993 (सन 1937) मे उदयपुर महा श्री भूपालसिह के हाथो से हुआ। महाराणा भूपालसिह की कार हॉस्पिटल से सटकर ठहरी और महाराणा न भव्य स्वण निर्मित ताले खोले। श्री गगासिहजी का गला भर आया। इसी सुसमय उदयपुर के महाराजकुमार भगवानसिह से बीकानेर की भवरबाई सुशील कुवरी का सबध सुनिश्चित हुआ था।

इस हॉस्पिटल म गगासिह जी ने दोनों विभागों के मुख्य द्वारो पर श्री विजय सिह जी के स्टेच्यु (मूर्तियाँ) लगाकर सतोष प्राप्त किया था। अब इस चिकित्सालय से सम्बद्ध सरदार पटेल मेडिकल कालेज भी चलता है। इस अस्पताल म छनगढ ठिकाने की भी अशत राशि लगी हुई है, अत कालू गाँव को भी इसका गव है।

महाराज कुमार विजयसिह जी के तीन पुत्रियाँ हुई थी, पुत्र नही हुआ। इस दशा मे गगासिह जी ने अपने छोटे पौत्र भवर श्री अमरसिह (युवराज शादूलसिह जी के दूसरे कवर) को श्री विजयसिह के खोले (दत्तक) नाम कर दिया। विजयसिह जी की बडी लडकी का विवाह वि० स० 2001 मे जसपुर (मध्य प्रदेश) महाराज कुमार के साथ सम्पन्न हुआ। तब पट्टे के सारे कमचारियो को विजय भवन से केशरिया साफे और मिष्ठान भिजवाये जो अध्यापक होने के नाते लेखक ने भी प्राप्त किये थे।

अमरसिह जी का जन्म वि० स० 1982 पौष वदी 11 (ता० 11 12 1925) शुक्रवार का है। वह सुशील, चतुर, मृदुभाषी, हसमुख और अच्छे स्वभाव वाले हैं। आपका साहित्य प्रेम सराहनीय है जा माता बाघेली के उदर से अवतरित है। लेखक की पुस्तक 'कळायण' पर एक हजार का पुरस्कार देना इसका प्रमाण है। इनके स्वभाव मे हास्य एव विनोद भी मिलते हैं। आपकी धम मे पूरी रुचि है तथा घुडसवार एव टेनिस के भी शौकीन हैं। वि० स० 2000 म श्री शादूल सिह जी के साथ द्वितीय विश्वयुद्ध के मोर्चे पर यूरोप जा आये हैं।

---

1 उन दिनो वे अपने नये बने भवन म रहने ही वाले थे। उस समय विजय भवन की सु दरता एव सजावट की तारीफ होने लगी थी। वक्त की बात एकीकरण के बाद वही विजय भवन अमरसिहजी द्वारा सन 1950-51 मे राज्य सरकार को विक्रय कर दिया गया।

गगासिंह जी ने भवर श्री अमरसिंह को बीकानेर म ही ग्वरू करणीसिंह जी के साथ लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान डॉ० दशरथ गमा एव ठाकुर रामसिंह जी जसे याग्य शिक्षको के द्वारा शिक्षा दिलवाई थी। इसलिए इनम किसी प्रकार क राजपूती दुर्व्यसन नही पनपे। य शिक्षा म उन्नति करके बडे ठाठ बाट स कालू पधारे। सप्ताह भर पहले गाँव क बाजार घरो एव दुकानो पर सफेद कली तथा रगीन पोताई आरम्भ हो गई। लूनकरनसर से कालू तक का रास्ता साफ करवाया गया था। दस दिन पहले ही उक्त रास्ते के दोनो किनारो पर खडे फोग, झाडिया एव बोझे आदि काटकर माग खुला एव विस्तत बना दिया गया और बीच रास्ते के गडढे कंकर पत्थर तथा बूज भी निकाल कर धरती को समतल व साफ सुथरी बना दी था। गढ के लोग उतावले हो गए। बहुत सारा सामान एकत्रित करते हुए चौधरी कमचारी एव मुखिये लोग भय तथा हष विभोर, फूले नही समा रहे थे। लेकिन अन्य सजावट तथा आरामदायक सारा सामान बीकानेर से राज्य द्वारा सीधा कालू आ गया था।

युवा छतरगढाधीश श्री अमरसिंह जी बहादुर दिनाक 31 3 46 को प्रात 9 बजे सवप्रथम अपनी रियासत के गाँव कालू को देखन आय। तब ठिकाने स राज्य सम्मान बाबत कालू म जनमोहक 11 गेट बीकानेर गवनमेन्ट द्वारा भिजवाय गए। उनको बनाने सजाने वाले मिस्त्री मजदूर भी चार रोज पहले राज्य स आये थे। इनके अलावा कतिपय स्थानीय धनी मानी व्यक्तियो ने अपने अपने मोहल्लो म पथक पथक दरवाजे बनवाये थे। सुन्दर सरकारी बडबाजा स्टाफ (गगा रिसाले का मनिक बड) भी राज्य की ओर से आया था। गढ के कक्षो के अतिरिक्त अनक अलग अलग कम्प भी लगे थे।

ग्राम प्रवेश के समय बन्दूकें छुडाई और खमा खमा की जय ध्वनियाँ उमड पडी। प्रत्यक दरवाजे पर भेंट नजराना, आरती तिलक और हार पहनाये गए। प्रथम आगमन पट्टा स्कूल (धमशाला भवन) मे हुआ। छात्रो ने स्वागत गान गाया। हम अध्यापको (श्री पुष्करदत्त शर्मा नानूराम सरकार्ता और नाथूराम शमा) से हाथ मिलाये बच्चो को लडडू बँटवाय और फिर ठहरन के अपने स्थान गढ को चले गये। वहा गाव की एकत्रित औरतों ने बेहडले (कलश) बनाय। गीतेरणा तथा नत्यको क समायोजन आरम्भ हुए और प्रव धको की भाग दौड म वद्धि हुई। उनक इ तजामिया पुलिस आफिसरो न सल्यूट लिए अन्य कमचारियो न सिर झुकाय बड का मधुर ध्वनि न गाव के प्रत्यक घर को रस आप्लावित कर दिया तथा लोगो के तनमानमयिम मन मयूर नाच उठे। सध्या-सामूहिक सादर भेंट नजराना हुआ।

श्री अमरसिंह जी के साथ उनके ठिकान के तत्कालीन सुपरवाइजर ठा० श्री श्यामनसिंह थे। निजी सचिव ठा० श्री निहालसिंह जी सेंगर, ए० डी० सी० अणदसिंह रामपुरा (चूरू) और एकाउन्टेन्ट सुब्रह्मण्यम साथ आय थे। विशेष अधिकारीगण एकाउन्टेन्ट तथा उनके हाजरिय खाने पिलाने, नहलाने और कपडे जूते आदि पहनाने वाल अनक व्यक्ति थे। रसोइया श्री बन्ना महाराज (जो अब बीकानेर म पेट्रोल पम्प क मालिक हैं।) उनके साथ था। वह उनके लिए शुद्ध फुलके एव साधारण दाल सब्जी तथा शुद्ध पवित्र एव विशिष्ट शाकाहार भोजन बनान म नामी रसोइया था।

इस अवसर पर कालू सर्किल के सार चौधरी मुखिये कमचारी एव आस पास के मान्य महानुभाव सहृदय भप दशनाथ कालू आकर समायोजन मे सम्मिलित हुए थे। गढ

के कम्प, चौधरिया के घर और मन्दिर धमशाला भी भरी पूरी हो गई थी। तीन दिन तक सामूहिक भाजन मे खीर और हलुवे के बडे बडे कडाहे तथा अ य पदाथ बनते रहे। श्री अमरसिंह जा ने स्थानीय राज्य कमचारियों, सभ्य नागरिको व अ य महानुभावा के बीच पक्ति क साथ बठकर भोजन किया था। दो दिन कालू म ठहरे, प्रजा की दाद फरियादें सुना और दिनाक 2 अप्र ल का अपनी प्यारी जनता स विदा मांगी। तब गाव कालू के लागों न स्कूल भवन बनवान के लिए द्रव्य एकत्रित करन हेतु श्री अमरसिंह जी का एक रात और ठहरान, चाहा, क्योंकि गाँव म स्कूल का अपना भवन नही था। परन्तु साथ आय हुए सक्रेटरी एव सुपरवाइजर ने गाँव के धनी मानी लागो के साथ बठकर तत्काल पच्चीस हजार रुपया का चन्दा एकत्रित कर दिया। श्री अमरसिंह जो के नजरान म आय हुए दस हजार रुपय श्री फतहचन्द बाफरा कालू के इक्यावन सौ रुपये तथा सब श्री बवर, डूडानी, नाहटा साड, गुराजी, ब्राह्मण समाज आदि सज्जना क दो दो हजार रुपय भी तुर त इकट्ठे हो गए। इन पक्तिया के लेखक की कलम से उक्त चन्दे राशि की लिस्ट बनी और लेखक द्वारा श्री सरस्वती पुस्तकालय मे महाराज कुमार श्री अमरसिंह जी को "कळायण" नाम की एक पुस्तक भी भेंट की गई, जिसकी पाडुलिपि वे जाते समय अपन माथ स गए। उस अगले वष डॉ० दशरथ शर्मा एव प्रोफेसर श्री नरोत्तमदास जी स्वामी की सम्मति से प्रकाशित करवा दी गई।

इस पटटे का प्राचीन काल—कालू पर महाराजा गगासिंह जी बहादुर की नजर अच्छी तरह अवस्थित हुई और उनकी दृष्टि इस गाव पर जम गई थी। महाराजा गगा सिंह बडे बुद्धिमान एव दूरदर्शी थे, इसलिए कालू के असाधारण महत्व पर उनका ध्यान जाना स्वाभाविक था। उन्होने इस गाँव को वि० स० 1966 मे अपने प्रिय शिशु महाराज कुमार विजय सिंह की ईस्टेट मे चयन करके पृथक प्रशासन म एक सर्किल कार्यालय के अधिकार उपलब्ध करवा दिय और गाँव के किनारे एक रमणीक टीले पर गढ बनवा दिया था।

श्री गगासिंह जी द्वारा कालू के अधीन चार तहसीलो के 18 ग्राम छाटे गए थे, जिनकी रकम, लगान तथा सारी न्याय व्यवस्था कालू के गढ स ही हाती थी। शेष बीकानेर राज्य की सारी तहसीलो म इस समेत इनके छोटे बडे 6 सर्किल और 84 ग्राम दिये हुए थ। कालू का अभिनव अध्याय यही से आरम्भ हुआ है। इस अवधि म कालू की बडी उन्नति हुई। आज के इस सुन्दर सुमत गत दिखाई देने वाले कस्बे की सुरचना उसी समय से प्रारम्भ हुई है। यहा के गढ म पटटे के सुनिश्चित गिरदावर पटवारी और हवलदार आदि कमचारी रहने लगे थे। तब उन्हाने कालू गाँव के एव देवी प्रकाप वाले अ ध विश्वास का समाप्त करके पक्के मकान बनाने मे बडा योग्य सुझाव दिया, जिससे गाव के आवास निर्माण इतिहास मे आश्चय जनक परिवतन हुआ।

पहले पहल जूनियर महा० कुमार श्री विजयसिंह जी बहादुर की नाबालगी के समय इस गढ के बडे आफिसर श्री अमरनाथ जी गिरदावर को अटलाधिकार देकर कालू भेजा गया था। उन्होने यहा कालिका जी की मान्यता देखी और मन्दिर जाकर दशन किय। उस समय यहाँ के लोग बगाल, आसामादि जाने लग गए थ और अपनी विलक्षण बुद्धि से नय-नय व्यवसायो द्वारा धन कमाकर लाने लगे थे। 'बणिय का रोड (पत्थर) म राजपूत का घोड म अर जाट का लपोड (फिमाद) म धन लगता है" कि

कहावत के अनुसार बणिये लोग अपने मकानों को पक्का (चूने म) बनवाना चाहते थे। मगर मकानों पर चूना फिरवाने के लिए ग्राम देवी कालिका जी ने मनाही कर रखी थी। क्योंकि गाँव के बीच प नेचन्द डागा के मकान (जो आजकल नथमल पुगलिया का है) की जगह पहले एक साल (मकान) के किसी ने चूना लगवा लिया था। इस कार्य वावत कारीगर की कम जानकारी के लिए वह मकान अपनी आद्रता के कारण ढह पड़ा और देवी का प्रकोप प्रकट हो गया। बास जाणियान की बुढिया के मुँह देवी का उच्चारण हुआ कि—'मेरे मंदिर के सिवाय इस गाव म कोई भी आदमी अपना मकान पक्का नहीं बना सकता।" यह बात गाँव के गिरदावर श्री अमरनाथ तक पहुँच गई। गिरदावर गाँव बरनाळा जिला हिसार का रहने वाला आर्यसमाजी पंडित था, उस पडी धुढिया को गढ़ बुलाकर "बुढिया व पक्के मकान न बनाने के कालिका के नाम से परचे प्रसारित करने के आरोप मे लेकर खूब डाटा फटकारा।' और कहा कि—"आइन्दा ऐसी असत्य अफवाह कभी गाव मे फला दी तो तुम्हे पूर्ण दोषी जानकर तुरन्त ठिकाणा छतरगढ़ से बाहर करने की कार्यवाही कर दी जायेगी।

उक्त घटना के बाद तत्समय इस विषय म देवी का परचा फिर कभी किसी के मुह नहीं हुआ और गाँव कालू मे काफी पक्के मकान मन्दिर धर्मशाला तथा हवेलियाँ बनने लगी। पहले देवी का भवन ही गाँव म दर्शनीय व पक्का मकान था। फिर तो उसमे लगकर ही तत्काल ब्रह्माणी देवी का मन्दिर और आगे भगवान का मन्दिर राम देव जी, शिवजी एव गुराजी की दो सालें (मकान) आदि छोटे मोटे अनेक सार्वजनिक पक्के स्थान बन गये थे। पास म एक त्रिघाट वाला बडा तालाब भी पक्का बनाया गया।[1]

कालू के गढ म पहले हर वक्त एक दो सिपाही तैनात रहते थे। यदि कभी गाँव के किसी आदमी को दूसरे की शिकायत पर गिरदावर द्वारा गढ बुलवा लिया जाता तो उस व्यक्ति के होश उड़ जाया करते थे। कोट के नाम से बड़े बड़ो के थरणे (पर) कापन लगते थे। मार्ग म मिलने वाले सब लोग आश्चर्य चकित हुए उससे पूछते थे— गढ क्यो बुलाया है ?" गढ के डर और शिखर की चढाई से तो प्रत्येक व्यक्ति का दम फूल जाया करता था। प्रोल म पग धरते ही वह अपराधी आदमी तुरन्त माफी माँग लिया करता अथवा हाँ भर लिया करता था। कसूर बक्सा नहीं जाता, लखपति व्यक्ति तक के नन्ने ले लिए (अपमानित कर दिए) जाते थे। चौधरी चौकीदार चपरासी आदि लोगों अफसरों की हाँ म हाँ मिलाने वालो का जमघट भी वहाँ सदैव मौजूद रहता था। वे भी बुलाए हुए आदमी को शर्मिन्दा करने म पूरा सहयोग करते और फसने के बाद वे वहाँ के अपने काम उसको सौंप दिया करते थे। किसी की भी बदनीयत उगलने के लिए कालू और उसके आस पास के गावो मे कहावत चल गई थी कि— 'छतरगढ़ वाले जूते याद नहीं है क्या ?' दंड जुर्माना बेगार, बन्दोबस्त आदि से ठिकाना छतरगढ का पूरा शासन चलता था।

गाँव वाले अपने विवाह शादियो, ओसरा मोसरा अन्य उत्सवो आदि के भोज्य अवसरो पर गढ का पातिया (जीमणवार) करवाया करते थे। तब भी वे हजूरिए गढ

1 अब यहाँ हनुमानजी तथा हरिरामजी के भवन भी बन गए हैं। उत्तरोत्तर यह गाँव, कस्बा और नगर का रूप लेता जा रहा है।

वालो के साथ रहते थे और गढ यदि थालियाँ (भोजन भेंट) भिजवाई जाती तो उसम भी इन लोगा की हिस्सा पाँती रहती थी। वसे विवाहोत्सव पर गाँव का कोई भी व्यक्ति अपनी हैसियत के अनुसार वर के लिए सजाई समेत घोडी गढ से ही मगवाया करता था। वर विवाहित होकर पहले गढ जाता। इन्हीं बहुत सी बातो के लिए गढ का पूरा सम्मान था। कोई कमचारी कभी कभार गाँव मे अपना आगमन करता तो सब लोग उससे जयरामजी की करते म मुस्कते हुए से मिलते थे। गढ की धाक थी, पट्टे का हार्दिक गौरव तथा गुमान भी था। चार जार का वसर होना यहाँ बडा मुश्किल था। ऐसी घटनाएँ अप्रत्याशित ही हुआ करती थी। कालू का गया हुआ धन डाकुओ से भी राज्य प्रब ध पडताल से वापिस मगवा लिया जाया करता था।

कालू सर्किल की तरह ही गाँव करयाना (तहसील भादरा), श्री विजय नगर (तह०—अनूपगढ), छतरगढ (तह०—बीकानेर), श्री विजय भवन (तह०—बीकानेर), लालगढ (तहसील-नोखा मडी) वगरह गाँव भी पट्टे के बडे सर्किल थे। प्रत्येक के नीचे लगभग 16 ग्राम लगाए हुए थे। छतरगढ के नीचे 22 ग्राम और कालू के 18 गाँव थे। जागीर महकम का नाम छतरगढ चलता रहा। मगर विजयसिंह जी के पट्टे मे कालू ही मान्यता प्राप्त बडा गाँव था। पट्टायत श्री विजयसिंह जूनियर महाराज कुमार बीकानेर के नाम पर महाराजा श्री गगासिंह साहब ने मा धाता सिंह की शिवपुरी और बुगिया बलोचिया की कीमतन लगी खालसा की जमीन म श्री विजयनगर नाम का गाँव बसा कर गगनहर की जी बी टेल शाखा द्वारा तुरन्त पानी पहुँचा दिया था। वहाँ से अनूप गढ के निकट की कामयाब धरती वाले अनोखे उपनिवेश विस्तृत क्षेत्र घडसाना छतरगढ और उसके अधीनस्थ मुन्लाई[1] रायमल वाली, करणीसर ससार देसर, मम्मेंवाला, गोमे वाली, जोगडो फूलेजी, महादेव वाली देसली, हिसाम्मकी आदि पुरान वास श्री विजयसिंह जी के पट्टे मे ही थे। सरावगियो वाला लालगढ, ऊपनी कल्याणसर बापऊ राजेडू मढसर गाढवाला, अक्कासर कर्नरियासर, पेमासर नौरगदेशर प्रभति गाँव श्री विजयसिंह जी के पट्टे चयनित अधीनस्थ सम्मिलित रहे। यह गडरिया की गल्ल नही, एक सर्किल, कालू की देख रेख अधीनस्थ गाँवा के पुरान नक्शे सहित एतिहासिक नाम द्रष्टव्य हैं।

छतरगढ इस्टेट के एक सर्किल कालू के देहात 18 गाँवों का विवरण—

1 तहसील लूनकरनसर म श्री महाराज कुमार साहब क पट्टे के दो (2) गल्व शेरपुरा और कालू।

2 तहसील श्री डूगरगढ म पट्टे के पाच (5) ग्राम, लोडेरा, गुमाईसर, उदरासर छोटा, बडा, (बास दो) और बिग्गा।

3 तहसील सुजानगढ मे पट्टे का एक (1) ग्राम जेतासर।

4 तहसील सरदारशहर मे पट्टे के दस (10) ग्राम, बुकनसर रगाईसर मेहरासर, भादासर (छोटा, बडा दो बास) जेसगसर ढाणी पाचेरी, गिड्गिचिया खेजडा (दो बास)।

कालू सर्किल के गावा की आपसी दूरी—शेरपुरा अपने सर्किल कालू से 32 मील

1 भुटलाई आदि 34 गाँव फौज की छावनी बनाने बावत खाली करवाये जा रहे हैं।

कहावत के अनुसार बणिये लोग अपने मकानों को पक्का (चूने में) बनवाना चाहते थे। मगर मकानों पर चूना फिरवाने के लिए ग्राम देवी कालिका जी ने मनाही कर रखी थी। क्योंकि गाँव के बीच पं. नेमचन्द डागा के मकान (जो आजकल नथूमल पुगलिया का है) की जगह पहले एक साल (मकान) के किसी ने चूना लगवा लिया था। इस कार्य बावत कारीगर की कम जानकारी के लिए वह मकान अपनी आद्रता के कारण ढह पड़ा और देवी का प्रकोप प्रकट हो गया। बास जाणियान की बुढ़िया के मुँह देवी का उच्चारण हुआ कि— 'मेरे मंदिर के सिवाय इस गांव में कोई भी आदमी अपना मकान पक्का नहीं बना सकता।" यह बात गाँव के गिरदावर श्री अमरनाथ तक पहुँच गई। गिरदावर गाँव बरनाळा जिला हिसार का रहने वाला आर्यसमाजी पंडित था, उस पंडी बुढ़िया को गढ़ बुलाकर "बुढ़िया व पक्के मकान न बनाने के कालिका के नाम से पर्चे प्रसारित करने के आरोप में लेकर खूब डाँटा फटकारा।' और कहा कि— "आइन्दा ऐसी असत्य अफवाह कभी गाँव में फैला दी तो तुम्हें पूर्ण दोषी जानकर तुरन्त ठिकाणा छतरगढ़ से बाहर करने की कार्यवाही कर दी जायेगी।

उक्त घटना के बाद तत्समय इस विषय में देवी का पर्चा फिर कभी किसी के मुँह नहीं हुआ और गाँव बालू में काफी पक्के मकान मंदिर धर्मशाला तथा हवेलियाँ बनने लगीं। पहले देवी का भवन ही गाँव में दर्शनीय व पक्का मकान था। फिर तो उससे लगकर ही तत्काल ब्रह्माणी देवी का मंदिर और आगे भगवान का मंदिर राम देव जी, शिवजी एवं गुराजी की दो सालें (मकान) आदि छोटे मोटे अन्य सार्वजनिक पक्के स्थान बन गये थे। पास में एक त्रिघाट वाला बड़ा तालाब भी पक्का बनाया गया।[1]

बालू के गढ़ में पहले हर वक्त एक दो सिपाही तैनात रहते थे। यदि कभी गाँव के किसी आदमी को दूसरे की शिकायत पर गिरदावर द्वारा गढ़ बुलवा लिया जाता तो, उस व्यक्ति के होश उड़ जाया करते थे। कोट के नाम से बड़े बड़ों के थरणे (पैर) कांपने लगते थे। मार्ग में मिलने वाले सब लोग आश्चर्य चकित हुए उससे पूछते थे— गढ़ क्या बुलाया है?' गढ़ के डर और शिखर की चढ़ाई से तो प्रत्येक व्यक्ति का दम फूल जाया करता था। प्राल में पैर धरते ही वह अपराधी आदमी तुरन्त माफी माँग लिया करता अथवा हां भर लिया करता था। कसूर बक्सा नहीं जाता, लखपति व्यक्ति तक के जूते ले लिए (अपमानित कर दिए) जाते थे। चौधरी, चौकीदार खपरामी आदि लोगों, अफसरों की हाँ में हाँ मिलाने वालों का जमघट भी वहाँ सदैव मौजूद रहता था। वे भी बुलाए हुए आदमी को शर्मिन्दा करने में पूरा सहयोग करते और फसने के बाद वे वर्ग के अपने काम उसको सौंप दिया करते थे। किसी की भी बदनीयत बदलने के लिए बालू और उसके आस पास के गाँवों में कहावत चल गई थी कि— 'छतरगढ़ वाले जूते याद नहीं है क्या?" दंड जुर्माना, बेगार, बन्दोबस्त आदि से ठिकाना छतरगढ़ का पूरा शासन चलता था।

गाँव वाले अपने विवाह शादियों, ओसरों मोसरों अन्य उत्सवों आदि के भोज्य अवसरों पर गढ़ का पातिया (जीमणवार) करवाया करते थे। तब भी वे हजूरिए गढ़

---

1 अब यहाँ हनुमानजी तथा हरिरामजी के भवन भी बन गए हैं। उत्तरोत्तर यह गाँव, कस्बा और नगर का रूप लेता जा रहा है।

वालों के साथ रहते थे और गढ यदि थानियाँ (भोजन भेंट) भिजवाई जाती तो उसम भी इन लोगा की हिस्सा पाँती रहती थी। वसे विवाहोत्सव पर गाँव का कोई भी व्यक्ति अपनी हैसियत के अनुसार वर के लिए सजाई समेत घोडी गढ से ही मगवाया करता था। वर विवाहित हो कर पहले गढ जाता। इ हीं बहुत सी बाता के लिए गढ का पूरा सम्मान था। कोई कमचारी कभी कभार गाँव म अपना आगमन करता तो सब लोग उससे जयरामजी की कहने मे भुकते हुए से मिलत थे। गढ की धाक थी, पट्टे का हार्दिक गौरव तथा गुमान भी था। चोर जार का वसर होना यहाँ बडा मुश्किल था। ऐसी घटनाएँ अप्रत्याशित ही हुआ करती थी। कालू का गया हुआ धन डाकुओं स भी राज्य प्रबन्ध पडताल मे वापिस मगवा लिया जाया करता था।

कालू सर्किल की तरह ही गाँव कल्याना (तहसील भादरा), श्री विजय नगर (तह०—अनूपगढ), छतरगढ (तह०—बीकानेर), श्री विजय भवन (तह०—बीकानेर), लालगढ (तहसील-नोखा मडी) वगरह गाँव भी पट्टे के बडे सर्किल थे। प्रत्येक के नीचे लगभग 16 ग्राम लगाए हुए थे। छतरगढ क नीचे 22 ग्राम और कालू के 18 गाँव थे। जागीर महकमे का नाम छतरगढ चलता रहा। मगर विजयसिंह जी के पट्टे म कालू ही मान्यता प्राप्त बडा गाँव था। पट्टायत श्री विजयसिंह जूनियर महाराज कुमार बीकानेर के नाम पर महाराजा श्री गगासिंह साहब न मा बाता सिंह की शिवपुरी और बुनिया बलोचिया की कीमतन लगी खालसा की जमीन म श्री विजयनगर नाम का गाँव बसा कर गगनहर की जी बी टेल शाखा द्वारा तुरन्त पानी पहुँचा दिया था। वहाँ से अनूप गढ के निकट की कामयाब धरती वाले अनोखे उपनिवेश विस्तृत क्षेत्र घटसाना, छतरगढ और उसके अधीनस्थ मुटलाई[1] रायमल वाली करणीसर, ससार देसर मम्मेंवाला गोमे वाली, जावडो फूलेजी, महादेव वाली, देसली, हिसाम्मकी आदि पुरान वास श्री विजयसिंह जी क पट्टे म ही थे। सरावगियो वाला लालगढ, ऊपनी कल्याणसर वापऊ, राजेडू, मढमर गान्वाला, अक्खासर, कनरियासर, पेमासर, नौरगदेसर प्रभति गाँव श्री विजयसिंह जी क पट्टे अधनित अधीनस्थ सम्मिलित रहे। यह गडरिय की गल्ल नहीं, एक सर्किल कालू की देख रेख अधीनस्थ गाँवा के पुरान नक्शे सहित एतिहासिक नाम द्रष्टव्य हैं।

छतरगढ इस्टेट के एक सर्किल कालू के देहात 18 गाँवों का विवरण—

1 तहसील नूनकरनसर म श्री महाराज कुमार साहब क पट्टे क दो (2) गाव शेरपुरा और कालू।

2 तहसील श्री डूगरगढ म पट्टे क पाच (5) ग्राम, लोडेरा, गुसाईसर उदरासर छोटा बडा, (वास दो) और बिग्गा।

3 तहसील सुजानगढ मे पट्टे का एक (1) ग्राम जेतासर।

4 तहसील सरदारशहर में पट्टे के दस (10) ग्राम बुकनसर, रगाईसर, मेहरासर, भादासर (छोटा बडा दो वास) जेसगसर, ढाणी पाचेरी, गिडगिचिया, सेजडा (दो वास)।

कालू सर्किल के गावा की आपसी दूरी—शेरपुरा अपन सर्किल कालू से 32 माल

1 मुटलाई आदि 34 गाँव फौज की छावनी बनाने बाबत खाली करवाये जा रहे हैं।

उत्तर मे और तहसील लूनकरनसर से कालू 12 मील दक्षिण की तरफ कच्चे रास्ते रहे हैं। तहसील श्री डूगरगढ से गुसाईसर 15 मील और वहाँ से लोडेरा 3 मील तथा लोडेरा से पट्टा सर्किल कालू 8 मील, ये सब श्री डूगरगढ से उत्तर की तरफ रहत हैं। श्री डूगरगढ से उदारासर के दोनो गाव 16 मील हैं गुसाईसर से 10 मील, बिग्गा से 16 मील और भादासर से भी 16 मील हैं। डूगरगढ से बिग्गा केवल 10 मील ही है। बिग्गा मे तहसील सुजानगढ का पुराना हमारा जेतासर 24 मील और भादासर से 32 मील पडता है। सरदार शहर से भादासर के दूर दोनो बास 16 मील रगाईसर से 18 मील और रगाईसर से मेहरासर 6 मील, मेहरासर से गिडगिचिया 10 मील और उनसे बुकनसर 8 मील तथा खेजडा के दोनो बास 10 मील हैं। खेजडा से ढाणी पाचेरी 8 मील है और वहा से जेसगसर 10 मील तथा सरदारशहर भी 10 मील है। गिड गिचिया सरदार शहर से सिफ 6 मील है। कालू से रगाईसर पूव मे (अपने पट्टे का गाँव) 24 मील रहता है और रगाईसर से बुकनसर 20 मील है। इस तरह से जूनियर महाराजकुमार श्री विजयसिह जी के पट्टे मे कालू के अधीनस्थ राज्य की केवल चार तहसीलो के 18 अनोखे गाँव छँटकर आए थे। इसी भाति से आठो सर्किलो म खालसे के खूबसूरत चुनिदे कुछ बडे और छोटे चौरासी (84) ग्राम महाराजा साहब ने अपन लाडेसर अजीज जूनियर महाराजकुमार को गद्दी का हकदार न होने के कारण परवरिश और प्यार के नाते पृथक इस्टेट बनाकर अता फरमाय थे।

महाराजकुमार विजयसिहजी पर गगासिहजी का अत्यधिक प्यार था। उनकी असामयिक मृत्यु से महा० का मन मुरझा सा गया। वे हर समय विजयसिह के नाम का उत्कष देखने के लिए द्रवित दिल रहते थे। इस कारुणिक प्रसग पर हर समय महाजन राजा हरिसिह से सलाह होनी रहनी थी। वि स 1990 (ई० सन् 1933) म हरिसिह महाजन का नि सतान देहा त हो गया। महाजन बीकानेर राज्य के चार बडे ठिकाना म (जो सिरायत कहलाते थे) सबसे बडा ठिकाना था। गगासिह न इसे छत्रगढ ठिकाने म मिलाने का पहले से ही निश्चय कर रखा था। मगर महा हरिसिह के चाचा दूदेर के ठाकुर भूपालसिह उस समय मौजूद थे। इसलिए गगासिह ने दूदेर वाले वद्ध ठाकुर को भी खुश करना चाहा। ऽ 7 गाव उस वाले भी छत्रगढ के ठिकाने से पृथक न हो, ऐसा सोचकर भूपालसिह को महाजन के ठिकाने का स्वामी बना दिया। भूपालसिह भी नि सतान और वद्ध था।

ठिकाणे छत्रगढ का लगभग 50 वष सहष शासन चलता रहा और सन 1951 के बाद यह एकीकरण की उनकी लू लपटा से झुलसा जाकर राजस्थान राज्य सरकार के शासन मे मिल गया। स्टेट से दूसरे नम्बर म एसी बडी जागीरें खत्म हुई हैं।

वसे बीकानर राज्य की नली थली मगरा वाली तीन प्रकार की जमीन स ही उक्त पट्टे की भूमि विशेषता रही है। मगर श्री विजयनगर के अलावा पट्टे का अधिक भाग थली प्रदेश से ही सबधित रहा। श्री विजयनगर, घडसाना की जमीन नाली वाला और शेष सारे गाव घुमावदार धोरा पडाला से घिरे पाय जात हैं। य गर्मी के दिनो म तपते हैं और रात का ठड स शीतल रहते हैं। सर्दियो म भी य ठडे और गम रहन हैं। वर्षा की हरियाली स लहलहा जात हैं। कहीं कही ताल तालाबो की भाकियाँ भी मिलती है, जो वर्षा के जल मे भरी पूरी होकर बडा आकषक लगती हैं। कार के मन्दिर के

गाँवों मे कुए 30 पुरस से 60 पुरस (3॥ हाथ का पुरस) तक के गहरे हैं। पानी कही खारा कही मीठा पर स्वास्थ्यप्रद मिलता है। साठीके कुओ मे लूली (जोड) लग लाव (पानी निकालने की मोटी चम रस्सी) से पानी निकाला जाता है। खान खदेडो के अलावा खेजडे (शमी), नीम पीपल और जाल के पेड होते हैं तथा मोठ बाजरे के अनाज उपजते आये हैं। यहा मतीरा नाम का फल बडा श्रेष्ठ समझा जाता है। पशुपालन म गाय भस ऊँट घोडे और भेड बकरियो के ठाट लगे रहते हैं। खुश्क आब हवा के कारण पुरुष स्त्री, तकडे श्रम जकडे जुडे मन से, आलस मुडे प्रसिद्ध मा यता, परम प्राणी रहे हैं। अब नई सभ्यता ने उन्ह अमीरी-आसन पर बैठ जाने का सकेत दे दिया है।

मूलत जब हम कालू के पुरानेपन की बात करते हैं तो मन म तत्काल उसके शासको का जागीरी स्थान छत्रगढ स्मरण आ जाता है। उस छत्रगढ़ के ठाटबाट अभी हाल ही म बडे बढे चढे हैं। नहर के आ जाने से वहा का क्षेत्र बडा हरा भरा, उपजाऊ और सजल सफल मूल्यवान महिमावान बन गया है। अत एव कालू के इतिहास को खोलते ही छत्रगढ का नाम आखों के सामने आ खडा हो तो आश्चय की बात नही है।

छत्रगढ को नहरी इलाका कहना दूरस्थ बुजुर्गों को बडा विचित्र महसूस होता होगा ? किन्तु भावदर्शी सर गगासिहजी वह.दुर को आज से 75 वप पहले ही ज्ञात हो गया था कि यहाँ की भूमि पानी लेकर रहेगी। बीकानेर राज्य के इतिहास लिखने वालो के मतानुसार यह छत्रगढ ड्योढी वाले राजवियो का ठिकाना रहा, जिसको महाराजा गगासिह ने अनूपगढ इस्टेट तक का नाम दे दिया था।

छत्रगढ इस्टेट के सर्किल कालू म वि स 1975 85 के दरम्यिान गिरदावर श्री अमरनाथजी थे। उस समय बालकराम पटवारी, चन्द्रहाम घेब रावलपिडी, अमरजी-बीकानेर पटवारी आसारामजी शर्मा हैडमास्टर, दीपजी, मगलजी हवलदार मेघाराम जाणी लोकल सिपाही, रावतराम चौयाराम रसोइया आदि का सारा स्टॉफ कालू के गढ मे रहा करता था। गढ के मुख्य दरवाजे के भीतर सामने बडे अफसरों के आगमन पर ठहरने वास्ते व गिरदावर के रहने हेतु एक बडे चौक पर विस्तृत बरामदा था। उसके मलग्न पीछे चिकने कलीदार अनेक कक्ष थे। सोने रहने और नहाने के भी उसके अदर अलग से स्थान थे। आगे पानी का हौज सब्जी की क्यारिया लगी हुई थी। गिरदावर हर रोज चौक एव अपने बरामदे म अभिन्न लोगो के साथ बठते थे। गढ में ठिकाने के अ य कमचारी भी रहते थे। अन्य लागों के लिए दूसरे उतरादे चौक में पृथक पृथक कमरे बने हुए थे। दो गहस्थी के लिए अ दर क्वाटर भी बनें हुए थे। एक पूरा मकान गिरदावर के भोजन आदि की व्यवस्था हेतु हर समय रोका हुआ रहता था। ऊँट, टोरडे घोडी वछेरो के भी गढ में स्थान बने हुए थे। सवत 1992 मे गिरदावर खेमच द एव पटवारी हसराज ने गढ़ म एक बडा कुड ग्राम बरजागसर से कारीगर बुलवा कर बनवाया था जो आज भी छात्रावास की जलपूर्ति के लिए दढता के साथ विद्यमान है।

गाव कालू के इस प्रसिद्ध गढ या कोट की अब बात करें तो वहाँ केवल लघु खडहर खडा है। गाव के लापरवाह अगुओ, वहाँ के पडौसिया एव बुद्धेक रा० उ० मा० विद्यालय के प्रधान अध्यापकों ने गढ की सुविधाओ पर पूरे तीस वर्षों तक चाँदनी रातें मनाई हैं। सारा सामान छात्रावास का सामान, चौखटे, कपाट एव भाठे ईटो तक को

पारकर ले गय । आजादी के बाद गाव के दो सार्वजनिक स्थान (गढ और लाईब्रेरी) इस गाँव के कुछ लोगा के पारिवारिक खान पान का रमोवडा तथा ऐशोआराम के स्थान बन गये । कि तु गाँव के वतमान नेताओ, लागों तथा बाहर स आये हुए व्यक्तियों का इस गढ के ऐतिहासिक महत्व का कतई ध्यान नहीं रहा ।

गढ कभी बडा रमणीक एव महत्वपूण कोट रह चुका है । यह गाँव से अलग एक ऊँचे धार (टील) पर तीन तरफ क ताल तालाबों के बीच म ह । स्थान ऊँचा और खुला वर्षा क दिना म हरियाली एव जलाशयो के भर जाने पर बडा मनभावना तथा लुभावना लगता है । उस समय (आजादी से पहले) गढ के सचालित शासन से यहाँ की प्रजा सतोष और भय से अनुशासन बद्ध रहती थी । चारो और जारा (व्यभिचारिया) के लिए यह गढ प्रथम भयावना स्थान था । उक्त लागो के लिए यहा शारीरिक दड जुर्माना हेतु विस्तृत मोटा परकोटा बना था और समय समय पर ऐसे लागा को धूप म खडा करके बतो की पिटाई से सुधारा जाता था । सन् 1950 और 1951 तक इसका पूण प्रभुत्व चलता रहा । देश आजाद होने के बाद, गाव के हम कायकर्ता लोग इस्टेट कायकारी ऑफिस बीकानेर श्री विजय भवन गये और कालू के बोडिग के लिए इस स्थान को वहाँ की सारी जरूरी सामग्री समेत माँग कर प्राप्त कर लाए । बाद मे इसी के बल पर हम लोग राज्य सरकार से बारम्बार कालू मे हाई स्कूल खुलवाने की माँग लेकर जयपुर के चक्कर लगाने लगे । मगर हायर सकेण्डरी खुलन तक इसके एक तरफ के मकानो म राजस्व विभाग के क्षेत्रीय गिरदावर और पटवारी आकर रहने लगे थे और दूसरी तरफ के सामने वाले बडे खास महल में सरपंच श्री गिरधारालाल मवर न कई माह तक पचा यत कार्यालय लगाय रखा था । सन 1956 के जुलाई मास म हायर सकेण्डरी स्कूल खुला और गढ का स्थान बाडिग (छात्रावास) मे परिवर्तित हा गया । बाहर से आने वाले बालको तथा अध्यापको के लिए यह ठहरने का स्थानाश्रय बन गया । पर शिक्षित लोगो ने अपनी मधुमक्खी वति से इसे उजाड दिया । यहा रहन वाले अध्यापकों एव छात्रो ने ईधन की जगह गढ की पुरानी खाटें ही तोड ताडकर जला डाली । सरकारी भय मिट जाने के बाद कुछ ऐस बेईमान और असामाजिक लाग आकर बसे एव इस ऐतिहासिक इमारत के पत्थर और चौखटे तक चुरा ल गय । प्रजात त्र राज्य का उदय हुआ पर राजाओ के राज्य समाप्ति के साथ ही गढ खत्म प्राय खडहर बन गया ।

पहले यहाँ गिरदावर श्री अमरनाथ जी एक उत्साही आफिसर, निडर निर्णायक तथा पट्टे के शासन कार्यों के नीतिन अधिकारी थे । उ होने विजयसिहजी क नाबालिग ठिकाने की उन्नति ही नही की कई काम खालसे की भाँति अत्य त सुदढ बनाकर उत्कष की चरम सीमा तक पहुँचा दिये । क्योकि कालू से ये महाराजा गगासिह जी बहादुर के हाथ अपने सिर रखे कामदार बनकर सारे पट्टे (आठों सर्किलो) की देख-रेख हेतु विजय भवन (बीकानेर) बुलवा लिए गये थे । वहाँ जाकर इ होंन पट्टे के सुपरवाइजर श्री हरि सिह जी (उतासर) और बडे कामदार श्रीकृष्णजी के साथ अच्छी योग्यता से काय सभाला । पट्टे के अतिमकाल (सन् 1951) म भी महाराज अमरसिह के ठिकाणे की जमीनें बेचने के लिए बडे कामदार श्रीकृष्णजी और सुपरवाइजर श्री गिरधारीलाल व्यास के साथ वद्ध और अस्वस्थ होने हुए भी इ होने अपने अनुभवाधार पर इस राज्य के खजान को पूरित करने के भारी प्रयत्न किय और कालू के लोगो को वास्तव म पुरानी प्रीति पर लाभान्वित

करने का अपनत्व दिखाया। वे पट्टे के केवल कर्मचारी ही नहीं बल्कि लोकप्रिय कमावनी (आमदनी) वृत्ति के व्यक्ति थे। सन 1951 मे गावों के बीच की जमीन के पट्टे सस्ते म बना देने लगे और घडसाने की कामयाब होने वाली जमीन को भी एक आन बीघे के हिसाब से, दो वर्ष की रकम देने वाले व्यक्ति को देत गये। मगर उस समय घडसाने की जमीन लेने वाला कौन था? अमरनाथजी ने लोगो से अपनत्व बना बनाकर पट्टे बनाये। दिनांक 15-10-51 को सबन पट्टा स्टॉफ कालू भी आया और लाख कहन पर भी घडसाने की जमीन तो एक दो व्यक्तियों ने ही ली पर गाँव के बीच मोहल्ला मे मजरुआ खाली जमीन के नई आबादी के लिए लोगों ने पट्टे बनवाए। ये पट्टे दिनांक 30 10-51 को तुरत तयार होकर आ गए। जिनमे इन पक्तियो के लेखक के भी दो पट्टे हैं। तत्कालीन कालू सर्किल के गढ मे एक गिरदावर ने ठिकाणा छतरगढ की रसीद बुकें अपने पास रखकर, राज्य का यह ठिकाणा चले जाने के बाद नहर के निशान लगने तक ब्लेक में बेचकर काफी रुपया कमाया।

छतरगढ़ ठिकाने का विलीनीकरण—इस तरह से छतरगढ इस्टेट का पुरातन आधिपत्य अपने रक्त सबध के कारण छतरगढ के गजसिहान राजवी वि० स० 1836 (ई० सन 1779) से वि० स० 2007 (ई० स० 1951) तक बीकानेर राज्याधिकारी नरेशों के साथ परम सम्मान्यता के साथ वभव भोगमान सिंहासनारूढ रहे। फिर भी इन जागीरदारो के अधिकारो को वधानिक मान्यता प्राप्त नही थी। बीकानेर के महाराजा गगासिंह अपने प्रजा राज्य के आर्थिक विकास के प्रति सदैव सचेष्ट रहते थे और इस मामले मे वे किसी भी निजी सबधी को, नातेदार या भाई-बन्धु नहीं मानते थे। गगनहर लाने के समय की उनकी प्रशासन व्यवस्था का चुस्त असर अपने राजवी भाइयो पर भी पड़ा। लालगढ जाटान (श्री गगानगर) के पास के 11 गाँव पहले से ही छतरगढ ठिकाने के अधीनस्थ आ रहे थे। नहर योजना बनने से वे खालसा मे लेकर उनकी अन्य स्थानो में पूर्ति कर दी गई। महाराज श्री भैरू सिंह तवर रिडी, जो इनके प्रिय जागीरदारों म थे, के लिए भी उक्त समय उनका गाँव मुकन (श्री गगानगर) छीनकर चौबीस घण्टों के अन्दर बीकानेर रियासत से बाहर चले जाने का ज्यादती पूर्ण आदेश कर दिया था। न कोई सुनवाई न कोई सिफारिश, ऐसे मौका पर व कानून को अपनी एडी तले या जूती मे बता दिया करते थे। श्री तवर बडे योग्य जागीरदार थे उनके परिवार को लेने के लिए जयपुर से तत्काल स्पेशल ट्रेन आई थी। प्रजा मे कई दिन तक इस घटना का अफसोस बना रहा।

राजस्थान के एस बडे जागीरदार जोधपुर म ईडर ठिकाना, बीकानेर में छतरगढ खारडा और रिडी तथा जयपुर के सीकर शेखावटी म अनेक बडे जागीरदार माने जाते थे।

ड्योढी वाले राजवियों म छतरगढ (नवीन नाम अनूपगढ़) के बाद "खारडा और रिडी" के नाम लिए जाते थे। ये भी महाराज श्री " " और बहादुर लिखे जाते थे। महा० गजसिंह के छत्रसिंह और उसके दलेलसिंह हुआ। दलेलसिंह के शक्तिसिंह मदनसिंह सगसिंह और गुमानसिंह नाम के चार पुत्र हुए। बीकानेर महाराजा सरदारसिंह के देहान्तोपरान्त शक्तिसिंह के वशधर राज्याधिकारी बनाए गए और छतर-

गढ के जागीरदारो को भी उन्होंने सम्मानित किए रखा।[1] किन्तु दलेलसिंह के दूसरे पुत्र मदनसिंह के सुत खेतसिंह को अनेक गांव दिए। खेतसिंह के पुत्र भैरूसिंह बहादुर ने पारडे के समृद्ध ठिकाने को पूरी तरह भोगा। महा० गंगासिंह ने भैरूसिंह को दो गांव भी दिए थे।

ड्योढी वाले राजवियों मे भैरूसिंह के बाद सलाना राज्य के राजा जसवंतसिंह के द्वितीय पुत्र महा० मांधातासिंह भी छतरगढ खारडा एवं रिडी के बराबर ही सम्माननीय मान प्राप्त थे। ये विद्वान, इतिहास प्रेमी, प्रबंधकुशल गुणग्राही और पूर्ण राजनीतिज्ञ श्रीमान बीकानेर राज्य की कौंसिल के वाइस प्रेसीडेंट थे। इनकी धर्मपत्नी भी महाजन, बीदासर मांन्धा की रानियों की भांति राणी शब्द से संबोधित की जाती थी।

दलेलसिंह के तीसरे पुत्र खंगसिंह के मुकनसिंह और तख्तसिंह नाम के दो पुत्र हुए। तख्तसिंह तो निःसन्तान मर गए किंतु मुकनसिंह के वंशजों ने रिडी की जागीर प्राप्त की। इसका तीसरा बेटा नाहरसिंह था। जिसके जगमालसिंह नारायणसिंह और पृथ्वीसिंह हुए। पहले ये खिलेरिया गाँव के जागीरदार थे। फिर गंगासिंह ने उठाकर रिडी गांव प्रदान कर दिया।

हवेली वाले राजवी—इन राजवियों मे महा० गजसिंह के पुत्र सुल्तानसिंह महोकमसिंह और देवीसिंह के पुत्र हवेली वाले राजवी कहलाते थे। बनीसर, नापासर आलसर, साईसर, सलुंडिया, कुरमडी, बिलनियासर एवं घरनाक आदि ठिकाने उक्त हवेली वाले राजवियों के थे।

इन सब राजवी सरदारो का व्यक्तिगत जीवन भी महाराजाओ के समान ही विलासी और रहीसी ठाट मे रहता था। क्योंकि ज्यादातर राजवी राज्य के राजवंश से भाई तथा संबंधी होते थे। किन्तु उस समय तो साधारण राजपूत भी अपने को अन्य लोगों से उच्चतम मानता था। उसका जीवन भी अधिकतर सेना मे नौकरी करने के कारण महत्वशाली समझा जाता था। पुलिस मंडल मे उस समय उन्ही का बोलबाला था। सेना मे भर्ती के समय राजपूतों का स्थान देना अधिक महत्वपूर्ण माना जाता था।

कालू और पट्टे का आपसी संबंध—कालू का ऐतिहासिक महत्व ठिकाना छत्रगढ के साथ बीकानेर राज्य के इतिहास मे अनोखी विशिष्टता प्राप्त रहा है। यहां कालिकाजी, भानीनाथजी एवं जैन मंदिर आदि प्राचीन स्थानों के कारण ठिकाने के चौरासी गाँवों मे जैसा सम्मान कालू को मिला तत्कालीन समय मे संभवत वैसा सम्मान अन्य किसी गाँव को नहीं मिला होगा। राज्य मे कालू की श्रद्धा निष्ठा, निराली थी। चैत्र और आसोज के नवरात्रों मे सदैव बड़े राज्य से कालिकाजी का पूजापा आया करता था। भानीनाथजी के शिवद्वारे मे भी राज्य से चढावे का नियमित विधान था। गाँव कालू के धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थान बड़े तथा छोटे दोनों, द्वय राज्य द्वारा पूजमान रहा करते थे। ठाकुरजी के मंदिर (स्वामीजी वाला) सत्यनारायणजी के मंदिर और प्याऊ के पीछे काफी खेत एवं जमीनें थी। छत्रगढ ठिकाने के आफिसर लोग तो इनका हर समय विकास चाहते थे। वे देवस्थानों के लिए जनता की मांग मनसा (इच्छा) की

1 वंशक्रम—(1) छत्रसिंह (2) दलेलसिंह (3) शक्तिसिंह (4) लालसिंह (5) विजयसिंह और (6) अमरसिंह (7) रा० कु० चन्द्रशेखरसिंह।

तत्काल सपूर्ति करवा दिया करते थे। इसकी धार्मिक महत्ता का पूर्ण ध्यान रखते हुए वे ठिकाने का अपूर्व शासन प्रेम दर्शाया करते थे। उनका यह बडप्पन था, धार्मिक नीति एव प्रजा प्रीति की महानता थी। इसलिए कालू के मुखिये लोग गाँव विकास की किसी भी बात को नि सकोच पट्टे वाला के सामने रख दिया करते थे। वे भी प्राय सावजनिक कार्यों में कभी बाधा उपस्थित करन मे नजर नही चढते थे। जब तक छत्रगढ का ठिकाना कायम रहा तब तक राजा प्रजा का विशेष आदर-प्यार निरतर मुकालवत बना रहा।

शासन प्रब ध के ढग से ठिकाना छत्रगढ के मुख्य तीन पद विशेष जागरूक रहते थे—सुपरवाइजर, कामदार और गिरदावर। ये तीनो पद पट्टे मे सवदा मा य कायकारी अधिकारी कहलाते थे। इन तीनो पदा के लिए ठिकाने का शासन-सुप्रब ध आज भी कालू आदि बडे गावा म मुखरित है। इ हीं अधिकारिया ने ठिकाने के गावो का भूमि ब दोवस्त करवाकर कृषका को खेत दिए और नई मडत मे साधारण सरकारी सहयोग दिलवाकर गावों के निवास-गृहा की सख्या बढाई है तथा जनता से अच्छा व्यवहार बनाकर अपने नाम को हमेशा के लिए रोशन किया है।

एकीकरण के समय महाराजकुमार श्री अमर सिंह के अनेक गावो मे राज्य कमचारियो के रहने बाबत जो गढ एव कमरे बने हुए थे। उ होंने वे सब, गढ और कमरे उ ही गावो म सावजनिक सस्थाआ को भेंट कर दिए। छत्रगढ का गढ[1] देने के बाद सर्किल कालू का सामान स भरा पूरा बडा गढ छात्रावास के लिए दे दिया। शेरपुरा और भादासर के गढ वहाँ की पाठशालाओ के लिए गाँव को सौंप दिय। इस तरह से 84 गाँवो के धार्मिक म दिरो एव अ य देवस्थानों के पीछे ठिकाने से डालिया (जमीनें) आदि पाँच सौ पाच सौ हजार-हजार बीघा के खेत दिए हुए थे। वे सब श्री ठाकुर जी के नाम खातेदारी कर दिय। गाँव कालू के बीच बाजार में श्री सेवा सदन सरस्वती पुस्तकालय का भवन बनाने हेतु 1250 गज जमीन का पट्टा और राजकीय मिडिल स्कूल भवन के पीछे 75000 (पचहत्तर हजार) गज जमीन का पट्टा (छात्रा के खेल मदान हेतु) दानों सस्थाओं का दो पट्टे बनाकर दे दिए। इस तरह से उनक अपन सार सर्किला के 84 गाँवों म मन्दिरों स्कूलो एव अ य धार्मिक स्थानों के लिए नि शुल्क पट्टे बनाकर द दिय थे, जो हजारों विद्यार्थियों अध्यापको तथा पडित पुजारिया एव अ य सस्था प्रधानों के काय सचालन म सहायक हुए हैं। उ होंने ठिकाने से प्याऊओ, धमशालाओ के पीछे भी पर्याप्त जमीनें खातदारिया करके सावजनिक कार्यों के लिए धममादे नाम से दी थी, जिससे स्व० महाराजा अमरसिंह अब तक प्रमान होकर अपने कारबार म लग गये हैं। इनके ठिकाने छत्रगढ स पी बी एम हॉस्पिटल बीकानेर म भी राशि लग चुकी थी और जी बी (श्री विजयनगर अनूपगढ) नहर म भी काफी द्रव्य व्यय हुआ था।

राजस्थान नहर विभाग म अनेक तहसीला उप तहसीलों (उपनिवेशन) का निमाण हुआ, वहीं छत्रगढ न एक या दो तहसील कार्यालय भी बने हैं। उन की बिल्डिंग, हैडक्वाटर और छत्रगढ मडी का भी सु दर निर्माण हुआ है। लेकिन पूरी तहसील न०

1 भावलपुर जसी रियासतों की सीमा पास होने के कारण उक्त गढ़ म शस्त्रागार हेतु एक बडा तहखाना बना है। अब सारा भवन समाज कल्याण छात्रावास के नाम आता है।

एक का 90 प्रतिशत क्षेत्र, छत्रगढ़ नरेश अमरसिंह जी द्वारा भू दान म दी हुई भूमि का भाग है। वर्तमान सरकार ने भयंकर अकाल के समय भारतवर्ष में सबसे अधिक पशु बाहुल्य राजस्थान के लिए इस क्षेत्र म चारा (घास) उपजाने की योजना चालू कर रखी है।[1] क्योंकि यह भूमि एक लाख बयालीस हजार बीघा का बहुत बडा क्षेत्र है। मगर राजस्थान नहर आ जाने के बाद बेरोजगार नौजवानो, मेहनतकश मजदूरो छोटे दुकानदारो, कारीगरो तथा समस्त किसानो ने छत्रगढ को अपना निवास स्थान बना रखा है और इस तिल तिल सरस धरा के अहसान मन्द हैं।

छत्रगढ़ाधीशों के चिरस्थायी नाम—यदि छत्रगढ नरेशा की विकास भावना का पूरा अन्वेषण किया जाये तो क्षेत्रीय इतिहास को एक अनूठा मोड मिल सकता है। इस ठिकाने में राजवियो ने स्वय एव गुणा से प्रेरित, उनकी प्रजा तथा उनकी व बीकानेर की गद्दी पर बठने वाले महाराजाओ न अपने राज्य की स्मृति नूतन बनाये रखने के लिए बडे बड़े तीर्थों तक जाकर अपने व पूर्वजो के नाम से अनेक देव स्थान व धार्मिक स्थान बनवाने का अपना परम्परागत पुण्य समझा है। ऐसे धार्मिक अनुष्ठानो से छत्रगढ़ का नाम काफी कीर्तिमान हुआ है। इन तत्कालीन धार्मिक विकास कार्यों मे छत्रगढ़ के राजाओं व उनके पुत्रो के नाम पर आज भी ग्राम-वास मन्दिर महल छत्रियाँ प्रतिमाए इत्यादि और दर्शनीय स्थान और कला विशेष सस्था सामग्रिया मिलती हैं।

गाव—छत्रगढ ठिकाने के महाराज गजसिंह जी के वशज होने के कारण सतत गजसिंहोत कहलाये। श्री गजसिंह ने अपने समय म ही गजनेर बसाकर ग्रामवास की परम्परा प्रस्फुटित की थी। फिर उनके कुवर छत्रसिंह के नाम वि स 1833 35 म छत्रगढ बसाया गया। इसके बाद श्री लालसिंह ने अपने नाम पहला लालगढ़ बसाया। श्री डूगरसिंह जो लालसिंह के कुवर थे न वि स 1937 (ई स 1880) म श्री डूगरगढ़ बसाया। श्री गगा सिंह न अपने पूवजो और पुत्रो के नाम पर अनेक नगर बसाये। जिनम अपने गत वश के बुजुर्गों का भी विस्मरण नही किया। श्री गजसिंह के नाम श्री गजसिंहपुर और अपने पिता श्री लालसिंह के नाम से लालगढ तथा अपने कुवर विजय सिंह जी के नाम विजय नगर बसा कर छत्रगढ के राज्य वश का नाम नामून बनाये रखा। छत्रगढ़ाधीश श्री अमरसिंह के नाम पर भी अमरपुरा अमरगढ आदि गाँव बसाए गये है। श्री गगासिंह ने इस नगर एव ग्राम बसाने की परम्परा म अपने नाम श्री गगा नगर, गगाशहर गगापुर आदि गाँव बसाये जो आज भी उनके विकास कार्यों की याद दिलाते हैं।

महल एव मन्दिर—विकास कार्यों की क्रान्ति कौमुदी म श्री छत्रसिंह के कुवर दलेल सिंह के लिए किले मे वि स 1844 50 म बना हुआ "दलेल निवास" छत्रगढ ठिकाने का प्रथम मुख्य महल है। महाराजा श्री डूगरसिंह को भी इमारतें बनाने का बहुत शौक था। उन्होंने अपने पिता छत्रगढ के महाराज श्री लालसिंह के नाम लाल निवास, पितामह शक्तिसिंह के नाम शक्ति निवास और अनुज के नाम गगा निवास आदि अनेक सुन्दर महल अपने वश के गत ठिकाने छत्रगढ नरेशो के नाम बनवाकर उनकी प्रतिष्ठा कायम की।

1 इसकी सस्था का नाम कृषि गो सेवा ग्राम सुराज्य शोध सस्थान छत्रगढ़ है जिसम दो ढाई मील जमीन गौशाला के नाम स्थापित है।

महाराजा गगासिंह ने अपने पिता छत्रगढ नरेश श्री लालसिंह के नाम नूतन शिल्पकला से लालगढ पलेस, सुन्दर एवं भव्य महलो से युक्त निर्मित करवाया। राज्य की नई इमारतों के साथ अपने सगे भाई श्री डूगर सिंह के नाम डूगर मेमारियल कॉलेज, छत्रगढाधीन जूनियर महाराज कुमार श्री विजयसिंह के लिए उन्नत कलाकौशल पूर्ण विजय भवन विजयसिंह मेमोरियल हास्पिटल आदि अनेक स्थान बनवाये जो छत्रगढ ठिकाने से सम्बन्धित हैं। नवीन शिल्पकला के नमूने स्वरूप गगा निवास दरबार हॉल भी देखने योग्य है।

श्री डूगर सिंह ने धार्मिक परम्परा में हरिद्वार मे गगा और काशी मे डूगरेश्वर मन्दिर भी बनवा दिये। देवी कुंड सागर की छत्रिया पर डूगर सिंह जी ने छत्रगढ के महाराज छत्रसिंह के नाम पर गिरिधर, दलेलसिंह के नाम पर बद्रीनारायण, शक्तिसिंह के नाम पर गोपाल, अपनी माता जुहार कुवरी के नाम पर गणेश, विमाता प्रताप कुवरी के नाम पर सूर्य और अपने ज्येष्ठ भ्राता गुलाबसिंह की यादगार में गुलाबेश्वर का मन्दिर बनवाया। महाराज डूगरसिंह ने अपने पिता लालसिंह के नाम शिवबाटी म लालेश्वर" का सुन्दर शिव मन्दिर भी बनवाया।

प्रतिमाएँ और छत्रियां—लालगढ पलस के विशाल एव सुन्दर महलो तथा उद्यान से सुसज्जित होने हुए भी श्री गगासिंह जी ने अपने पिता छत्रगढ के महाराज श्री लालसिंह जी की सफेद सगमरमर का सुन्दर प्रतिमा स्थापित करवाई जिसका उद्घाटन वि स 1972 माग शीर्ष बदी 3 (ई में 1915 ता० 24 नवम्बर) को लार्ड हार्डिञ्ज ने किया।

बीकानेर म सुव्यवस्थित शाति व्यवस्था की नींव छत्रगढ के महाराज लालसिंहजी के पुत्र महा० श्री डूगरसिंहजी ने डाली थी। अत एव वहाँ के नागरिकों न डूगरसिंह की स्मृति चिरस्थायी रखने के अपने कर्त्तव्य पालन के माध्यम से धन सग्रह किया और जूनागढ के मुख्य द्वार (करणपोल) के सामने गगानिवास पब्लिक पार्क के किनारे शिखर बद छत्री म सगमरमर की प्रशस्त वेदी पर उनकी उज्ज्वल प्रतिमा स्थापित करवाई। प्रतिमा का उद्घाटन वि स 1973 आसोज सुदी 9 (ई स 1916 ता० 5 अक्टूबर) को उन्ही के सगे भाई बीकानेर महा० श्री गगासिंहजी बहादुर के हाथों से हुआ। गगासिंहजी ने जब विजय मेमोरियल हॉस्पिटल बनवाया तब उसके जनाना एव मर्दाना दोनों दरवाजों में छत्रगढ नरेश श्री विजयसिंहजी के दिव्य स्टेच्यु (प्रतिमा) स्थापित करवा दिए और गगा निवास पब्लिक पार्क म घोडे पर सवार अपनी स्टेच्यु भी बनवादी।

छत्रगढ नरेशो की गिनती सदैव राजपरिवार म होती रही है। इसलिए बीकानेर महाराजाओ और छत्रगढ ठिकाने के भूपति वीरोदात्त भावनाओं से ओत प्रोत रहे। इन्होंने अपनी फौज के साथ बीसवीं शताब्दी के दो विश्वयुद्धों म स्वेच्छया सम्मिलित होकर तेज तत्परता और कर्त्तव्य परायणता के कीर्तिमान स्थापित किये हैं।[1]

वि० स० 1971 (ई० स० 1915 ता० 29 जनवरी) म जब तुर्की सेना बडी तेजी

---

1 बीकानेर की प्रसिद्ध ऊँट सेना—गगा रिसाला—सभवत जसलमेर रिसाले का छोड कर जो गगारिसाले के काफी बाद मे बना अपनी तरह की एक ही सेना थी जो बीकानेर रियासत के बाहर सेवा के लिए चुनी हुई थी।

चतुर नरेश लालसिंहजी की सलाह, उत्साहपूर्वक ग्रहण किया करते थे। सन् 1868 जनवरी मे सरदारसिंहजी के इकलौते महाराजकुमार इहलोक त्याग चले। तब महाराजा ने श्री लालसिंह के कुवर डूगरसिंह को अपने पास रखकर पढाया लिखाया। ई० स० 1872 मे महाराजा सरदारसिंह बैकुण्ठवास चल बसे। तब पीछे कई सरदार हकदार बने। परन्तु राजमहिषी और राज्य के प्रमुख सरदारो की सत्य राय से अग्रेज सरकार ने छत्रगढ नरेश श्रीलालसिंहजी के पुत्र श्री डूगरसिंह जी को बीकानेर का महाराजा घोषित कर दिया।

छत्रगढ महीपाल महाराजा श्रीलालसिंहजी बडे बुद्धिमान तथा गुणज्ञ थे। उनके धार्मिक जीवन तथा दयालुता के कारण लोग उनका बडा सम्मान करते थे। अपने बडे पुत्र महाराजा डूगरसिंहजी के राजत्वकाल के प्रारभ मे इनका शासन प्रबध से घनिष्ठ सम्बन्ध था। आप चार वर्षों तक स्टेट कौंसिल के सभापति रह चुके थे। महा० डूगरसिंह के सतान न होने पर आपका (लालसिंहजी का) छोटा बेटा श्री गगासिंह जी उनके उत्तराधिकारी बनाये गये।

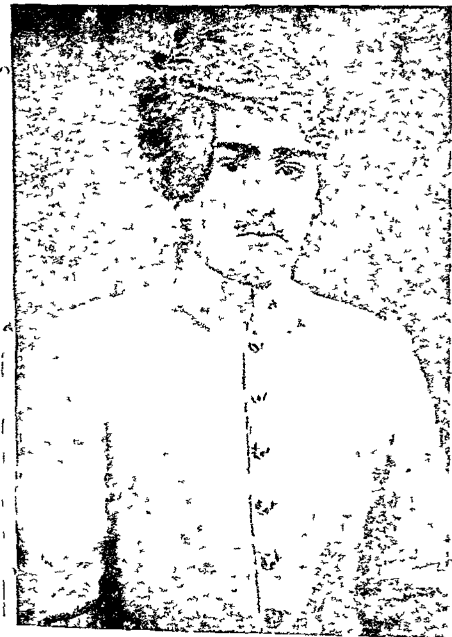
छत्रगढ महाराजा लालसिंहजी ने अपने द्वितीय पुत्र श्री गगासिंह को सिंहासनारूढ होते देखा। किन्तु अस्वस्थता के कारण अधिक दिन जीवित नही रहे। 15 दिन बाद 16 सितम्बर सन् 1887 ई० को वह ससार छोडकर चल बसे। शासन के आरभ में श्रीलालसिंहजी अपने सप्त वर्षीय बालक नरेश को प्रेम पूर्ण सलाह नही दे सके। परन्तु उनकी रानी चन्द्रावतजी साहिबा, जो गगासिंह की सगी माजी थी। महाराजा की शिक्षा तथा उन्नति के लिए निरतर उत्सुक बनी रही।

श्री गगासिंह जी की माता चन्द्रावत जी साहिबा—श्री लालसिंह के देहावसान उपरांत *श्री चन्द्रावत जी के पास उनके अपने ठिकाने छत्रगढ जागीर की आय के 9 लाख रुपये* थे। रिजेन्सी कौंसिल ने वे रुपये चन्द्रावतजी से लेने चाहे, जो उनके पति द्वारा मिला। राज्य का नही, स्वय का द्रव्य था। कौंसिल ने मांगा तब चन्द्रावतजी ने इसे अनधिकार चेष्टा बतलाई। तब रिजेन्सी कौंसिल ने स्पष्ट कहा—' यदि मा जी साहिबा यह राशि कौंसिल को न देंगी तो कौंसिल उनके पुत्र महाराजा गगासिंह को उनसे पृथक रखेगी।" इस पर माजी साहिबा ने समस्त सपत्ति कौंसिल को सौंप दी।

भारतीय माताओ की भांति आप महाराजा को आदर्श नरेश बनाने की योजनाओ मे पूरा भाग लेती थी। महाराजा के अभिभावको एव अध्यापको का आप—साहिबा का सदैव सहयोग रहता था। आपकी उदात्त भावना तथा उच्चविचार सब प्रसिद्ध थे। विवाहयोग हो जाने पर *रिजेन्सी कौंसिल ने राजमाता की सलाह मे ही प्रतापगढ की* राजकुमारी के साथ 7 जुलाई सन् 1897 ई० को बडी धूम धाम से महाराजा का प्रथम विवाह किया था। महाराजा ने भी रिजेन्सी कौंसिल मे लिए गये छत्रगढ स्टेट के रुपये माताजी को लौटा दिये तथा छोटे महाराजकुमार विजयसिंह को उस राजपरिवार मे गोद दे दिया था। 13 दिसम्बर सन् 1909 को चन्द्रावतजी का असामयिक स्वर्गवास हो गया। दया उपकार जैसे गुणों के कारण सारी प्रजा मे शोक छा गया। गवर्नर जनरल के एजेन्ट सर इलियट कालविन ने समवेदना का तार भेजा और उनकी प्रजा हित भावना की प्रशसा की। प्रिंस आफ वेल्स (बाद मे सम्राट पचम जार्ज) भी इस दुखद समाचार से दुखी हुए और महाराजा के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट की थी।

महाराजकुमार विजयसिंह—*बीकानेर महाराजा डूगरसिंह जी और गगासिंह*

छत्रगढ महा० लालसिंह के पुत्र थे। इसलिए उन्होंने पिता के ठिकाने को सुव्यवस्थित बनाये रखा। श्री गंगासिंह ने अपने पुत्र विजयसिंह को छत्रगढ का नरेश नियुक्त करके वंश मर्यादा पालन का सुकार्य किया। श्री विजयसिंह बडे अच्छे प्रजा हित रक्षक वीर भूपति थे। उसकी शौर्य भावना से प्रेरित होकर महाराजा ने उसे फौज में पद दिये। परन्तु सत्वर संसार छोड जाने के बाद महाराजा ने अपने पौत्र श्री अमरसिंहजी को छत्रगढ का राज्य दिया।



श्री अमरसिंह जी नरेश—छत्रगढ

श्री अमरसिंह जी—श्री अमरसिंह जी निर्लोभी सरल एवं समझदार सरदार; उन्होंने एकीकरण के समय छत्रगढ ठिकाने की काफी जमीन, गढ और महल जनता हित सार्वजनिक कार्यों के लिए दान में दिये हैं। भूदान में दी हुई उनकी कामयाब जमीन उनके नाम को सदैव रोशन किये रखेगी। श्री अमरसिंह जी फौज में पहले कप्टिन और फिर कप्तान के पद पर रह चुके है। वह दूसरी लड़ाई में अपने पिता महाराजा श्री शार्दूलसिंह के साथ विदेश भी गये हुए हैं। अब अपना व्यवसाय करते हैं।

श्री अमरसिंह जी का व्यक्तित्व सदा से सादा एवं सरल रहा है। उनकी दयालु प्रकृति ने अपने नौकरों तक के घरों की समाल तथा देख भाल की है। वे अपने कर्मचारियों की दवा दारू तक का ध्यान रखते हैं। आपका लालन पालन एवं प्रारम्भिक शिक्षाएं पितामह श्री गंगासिंहजी बहादुर (बीकानेर महाराजा) की देख रेख में हुई हैं। डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने सन् 1941 के अपने बीकानेर के इतिहास लेख में भंवर श्री अमरसिंह को एक सभ्य एवं होनहार नरेश लिखा है। आपका विवाह जामनगर (काठियावाड) के राजघराने में हुआ। आपका जीवन सब प्रकार सुख संतोषमय समृद्ध है। आपका बड़ा पुत्र राजकुमार चन्द्रशेखरसिंह एक होनहार युवक है।

आदर्श राजमाता—श्रीमती सुदर्शना कुमारी जी साहिबा रीवा के महाराजा वेंकटरमणसिंह जी की सुपुत्री थी। आपका विवाह वि० स० 1979 (1922) में बीकानेर के महाराजकुमार श्री शार्दूलसिंहजी के साथ हुआ था। आपको द्वय तरफ से पूर्वजों की आदर्श पुण्य परम्परा प्राप्त हुई थी। धार्मिक भावों के साथ आप प्रसिद्ध कवि कुल की पावन प्रतिभा पीहर से लाई थी। इसलिए समय समय साहित्यिक जगत को आपकी कारुणिक कविताएँ ज्ञानोपदेश से लाभान्वित किया करती थी। ई० सन 1932 में छत्रगढ नरेश जूनि महाराज कुमार विजयसिंह का असामयिक निधन हो गया। उस समय बड़ी मार्मिक कविताएँ प्रकाशित हुई थी। उनमें अपने दुख को प्रकट करते हुए आपने अपना हृदय हल्का ही नहीं किया, अपितु जनता के समक्ष उसका सत्य स्वरूप स्पष्ट खड़ा कर दिया था।



कालू नरेश की राजमाता बाघला जी

आपके तीन सन्ताने बड़ी सुशील कुमारी जिसका विवाह महाराजकुमार भगवतसिंह जी उदयपुर के साथ (वि स 1996) में हुआ। मझले भू०पू० बीकानेर महाराजा डॉ करणीसिंह, तृतीय श्री अमरसिंह हैं। श्रीसुदर्शनाकुमारीजी ने सतत सेवा पूजा, शिक्षा दान एवं सद्गुणी धर्म प्रसार में अपना जीवन बिताया। आज भी बीकानेर में छात्राओं का आदर्श नामकर्ता "सुदर्शना महाविद्यालय' ज्ञान स्तम्भ रूप उजागर है। श्रीमती सुदर्शना कुमारी जी अब इस असार संसार में नहीं हैं, परन्तु आपकी पुत्रवधू भू पू महारानी (डॉ० करणीसिंहजी की धर्मपत्नी) सुशीलाकुमारी जी क

-धार्मिक एव दातव्य ट्रस्ट से अनेक सार्वजनिक पुण्य काम पूरित होते हैं। सचमुच -धार्मिकता का प्रसार महान महिलाओं द्वारा ही होता है।

कालू क्षेत्र मे विरोध और धरना—वैसे तो विरोध, क्रोध, धरना मरना सब एक स्वभाव के ही अंग होते हैं। परन्तु धरना प्रथा एक हठधर्मी है। उसमें लघुता, निर्भयता, स्पष्टता तथा दृढ़व्रत की सत्य प्रवृत्ति बडी बलवती होती है। इसलिए प्रत्यक्ष की कमी पड़ने पर भी मनुष्य सीना तानकर बडी से बडी शक्ति विभूतियां का सामना करने के लिए तैयार हो जाता है। धरना, हड़ताल, घेराबन्दी तथा काम रोको आदि के हुल्लड आन्दोलन जिले और तहसील मे सभी जगह होने लगे हैं। गाँव कालू मे भी लड़ाई, द्वेष एव गुटबन्दी के कारण 21 जनवरी 1981 को ग्राम पंचायत कालू के विरोध में श्री सरस्वती पुस्तकालय कालू भवन के आगे कुछ लोगो ने गबन के नाम पर धरना शुरू कर दिया। इसमे जनता पार्टी, कांग्रेस पार्टी, कम्यूनिस्ट पार्टी और लोकदल वाले अनेक लोग सम्मिलित हुए थे। चोपडी बनी, माइक लगा तथा धूना जलाकर काफी लोग प्रदर्शन पर बैठ गए। सहायक लोग शीत की वजह से सूखे लक्कड लाकर धूने के पास गिराने लगे। एक साथी रामदास, याचक के रूप मे आटा लाकर अन्य साथियों को रोटियां पका कर खिलाने लगा। वे दिन भर पंचायत और सरपंच के विरुद्ध मे असत्य नारे तथा गालियो जैसे खुरापाती गान गाते थे।[1] अनेक दलों के सामूहिक विरोध की हरकत से गाव भर मे पर्याप्त चर्चा व्याप्त हो गई। मगर सरपच धैर्य के साथ सब कुछ देखता सुनता रहा और वह अपने सिद्धान्त तथा विधान से टस से मस नहीं हुआ। विरोधी बल दिखाकर बहुत सारी भूमि कम पैसो मे लेना चाहते और पट्टे वितरण का अपना तरीका बता रहे थे। आखिर जिले के एस० डी० एम० (श्री वृद्धिचन्द्र जी) ने आकर मध्यस्थ रूप मे वाजिब माँगे मनवा देने का आश्वासन देकर दिनांक 15 फरवरी 1981 को धरना उठवा दिया। ग्राम पंचायत के सदस्यो की धैर्यशीलता के कारण शब्दानादर के सिवाय किसी प्रकार का झगड़ा व लट्ठबाजी नहीं हुई। कालू का यह धरना कतई सफलता असफलता का निर्णायक नहीं बना। धरने की परम्परा प्राचीन समय से पाई जाती है। पहले यह आयोजन एक तरह से संकल्प या प्रतिज्ञा की भांति प्रचलित था। समुद्र को पक्ष मे करने के लिए श्री रामचन्द्र जी ने भी धरना दिया था।[2] कहा जाता है—धरना किसी देवता या राजा से अपना सत्य कार्य छाती ठोककर पूर्ण करवा लेने का कष्टकारी प्रण माना जाता था। किन्तु मध्यकाल में इस धरने रूपी धन्धे ने कई हलके स्वरूप धारण कर लिए, जो धागा, तागा त्याग, सथारा, तलिया, अवधरा, गुड्डा बाधना[3] और खड़े कर लेने आदि के अनेक नामों से प्रसिद्ध हुए हैं। कुछ लोग जूते पहनने छोड देते और कई किसी पर केश वृद्धि कर लिया करते थे।[4] अधिकतर

---

1 इस धरने मे रोटी कपडा और भूमि देने के नारे थे जो वर्तमान काल मे किसी माँग की अनुचित दबाव से प्राप्ति की प्रेरणा के हीन पाठ थे।

2 वाल्मीकि रामायण, युद्ध, 21 8 9

3 ढाढी-ढोला नाराज होकर गुड्डा बनाते और उसे जूतों से पीटा करते थे। ये अपमान के कार्य होते थे। कालू मे वि० स० 1981 के समय रुकनदीन ढाढी ने गाव के बीच केलो की डाल पर चौ० हरखाराम के गुड्डे को बाधकर जूते मारे थे।

4 लूनकरनसर के हुक्माराम गौड ने सरकार से अपनी मागें मंजूर करवाने के लिए सन् 1960 से 1973 तक अपने मस्तक के बाल (केश) बढाये रखे थे।

व धधे हठ या क्रोधावशात साधु भिक्षु पुरोहित, चारण, ब्राह्मण और ज्योतिषी रूठ कर किया करते थे। परन्तु इसके पश्चात तो इस प्रथा में भोपे, सरगड़े ममी, ढोली तथा सत्यानासी एव हिंजड़े इत्यादि माँगणहार लोग भी अपने किसी यजमान के घर अथवा राजदरबार के आगे जीभ लिप्सा तथा नापे दिखणा हेतु धरना देन लगे। इनमें से कई पेशेवर याचक अपने यजमान की इज्जत हत्तक सम्ब धी साखी तथा भाडी के गीत बनाकर भी प्रचलित कर दिया करते थे।[1] गत शताब्दी में धनवान या किसी सेठ के घर जन्म तथा विवाह के समय पूरा नेग न मिलने पर हिंजड़े भी धरने का रूप बनाने लगे। ऐसे अवसरों पर कतिपय नागे (चाकूमार) धरना देते हुए अपने बदन पर छुरा मार लिया करते थे। तब इस काय के शुरू होने में पहले ही घर के सभ्रान्त एव साहूकार बदनामी से डरकर धरनाधारी को भेंट चढ़ावा लेकर मना लिया करते थे। इस तरह के धरनाधारी मनुष्य अपना मिष्ठ खाना पोशाक और रुपये लेकर राजी खुशी धरना स्थान छोड़ दिया करते और उन दोनों (याचक यजमान) का आपसी सुख प्रेम का पूर्व व्यवहार वापिस विश्वस्त बन जाया करता था। हेमासर वास के ब्राह्मणों का एक गढ़ था। चल्ढिये राजपूतों ने विवाह के अवसर पर माग लिया, पर वापिस नहीं दिया। तब उनको सारस्वो ब्राह्मणों ने उसके विरोध में धरना दिया और अन्न जल त्याग कर मर गए।

हमारे यहाँ सत्ता के सामने बीकानेर महाराजा सूरसिंह के समय (सन् 1914) में दिये गए एक धरने की असफलता के कारण किले के सामने ही दो व्यक्ति चिता जलाकर मर गये। महाराजा ने उस स्थान पर सूरसागर तालाब बना दिया। पूलासर के निवासी पारिया (ब्राह्मणों की एक पारीक उपजाति) की विचित्र कथा भी यहाँ प्रचलित है कि एक व्यक्ति तूम्बे (इन्द्रायण) की बेल से उलझ कर गिर पड़ा और उस पर तागा करके वहीं बैठ कर प्राण दे दिये। कालू में बाप, बेटे पर कुपित होकर अबपरा करते हैं, तब मस्तक व दाढ़ी मूँछ के बाल (केश) बढ़ा लेते हैं। मयारा और त्याग के समय अन्न जल तक का त्याग कर देते हैं। पुराने समय में धरने का रूप बनाते समय प्रथम एक आदमी अपना शरीर छेदन कर खून से बिछायत रंग देता। तब उस पर दूर दूर से बुलाये हुए धरनाधारी आकर बैठते और भूखे-प्यासे रहकर पाँच सात दिन तक इष्ट पूजन किया करते थे। इसी मध्य, सामने वाले प्रतिष्ठित जन उनको मना लेते तो धरना सफल माना जाता, नहीं तो वे फिर पुन तैयार होकर धरने का उग्र रूप बनाते। उस उग्र रूप को चाँदी करना कहा जाता था। चाँदी का मतलब किसी एक पुरुष या स्त्री को तेल लगाकर जला देना होता था। इसमें एक गाय को भी साथ जलाते थे। कतिपय धरनाधारी हाथ पर जीभ तथा गले पर कटारी चला लिया करते थे। उनमें से मरने वाले मर जाते किन्तु असफल धरने से बचे-खुचे लोग घायलावस्था में अन्य दूरस्थ स्थान पर जाकर पराजयी जीवन यापन किया करते थे। यह प्राचीन प्रथा कृत्य, शापित एवं विकराल बने ब्राह्मणों से दबाव रूपी गम्भीर रूप में सुदृढ़

---

1 वि० स० 1960 के लगभग स्थानीय भादाणियों की माता का बड़ा मत्यु भोज (मरे मारणो) नहीं हुआ। तब ब्राह्मणों ने उनकी बदनामी करने के लिए साखी बनवाकर प्रसारित करवा दी थी। "भादाणी रे! तेर लाग्या जलम न पाणी ' माऊ ओ! तन, सर सारणी काऊ।" वे अपमान सहन नहीं कर सके और अन्य स्थान पर जाकर बस गए। इस तरह से यहाँ किसी भाई ने एक छाट कर का गीत भी प्रसिद्ध करवा दिया था।

हुआ जान पडता है। परशुराम द्रोण और चाणक्य जसे गुरुओं को इस परम्परा का प्रथम कड़ियाँ कही जा सकती हैं। मध्यकाल के बाद चारणों और पुरोहितों के धरने हुए अधिक प्रख्यात हैं।

कालू म कालिका जी के भोपे अपनी लाग लूण (भेंट राशि) लेने के लिए जीभ का खड कर लिया करते और शीश खड करने की धमकी भी दिया करते थे। अगस्त इ स 1955 म रा० मिडिल स्कूल कालू के छात्रो न माता जी के मन्दिर म जाकर बिना आज्ञा कु ड का पानी पी लिया, भक्त राधाकिशन ने उसके विरोध में अपनी जीभ का खड (छेदन) कर लिया था।[1] गाँव मे किसी के अनतिक कार्य कर लेने पर श्री मूलाराम, भरूदान प्रभति कुछ सज्जन उसका पश्चाताप करवा कर ही उस स्थान से हटते थे।

कालू और उसके निकटीय गाँवों म सती प्रथा प्रचलित थी। अज्ञानता वश इन सतियों का स्मरण कराने वाले स्मारकादि को यहाँ के लोग नही बचा सके। पर तु लूनकरनसर तहसील के क्षेत्र में देवली रूप काफी सती स्मारक मिलते हैं। सती देवलियों की भाँति इस क्षेत्र म वीर, जुझारों के बहुत से चबूतरे भी पाये जाते हैं। कालू मे भानीनाथ की जगह मे और हुसेरा मे जसनाथ जी की बाड़ी में जीवित समाधियाँ भी हैं। गाव लूनकरनसर म खरथ जी बूचा और अखजी चौहान धर्म-भाई थे। खरथजी इह लोक स कूचकर रहे थे। उस समय अखजी चौहान मुसाफिरी स घाडे चढे हुए लूनकरनसर मे प्रविष्ट हुए और सीधे खरथ जी के पास पहुँचे। खरथजी के साथ अखजी का बडा प्रेम था और लूनकरनसर के कुछ लोगों ने खेरथजी की ल्हास (शव) को श्मशानों की अपनी रेखा म जलाने नही दिया। वे कहते थे—"ल्हास को अपने गाव ले जाकर जलाओ।" अखजी जो वीर पुरुष थे वे अपने धर्म भाई की रात की अटकी ल्हास को अपनी खोले म लेकर चिता पर बैठ गए और अपने पक्ष के लोगों को कह दिया—'आग लगा दो!' ल्हास को रोकने वाले लोगों की अखजी की वीरता के सामने हिम्मत नही बनी और अखजी खरथजी एक साथ जल गए। लूनकरनसर मे बुच्चों की छत्री सभवत इन्ही पर है।

कालू मे फाँसी—अफीम के आत्मघात तो कम, किन्तु कूआ म गिरकर मरे जाने के हर साल एक दो पुरुष स्त्रियों के मृत्यु मामले हो जाया करते थे। आखिर गत दशक में सून पडे कूआ का पचायत ने लोहे की मजबूत जाली से ब द करवा दिये। तब जाकर य आत्मघातें ब द हुई हैं।



---

1 वि०स० 1971 म राधाकिशन के दादा माता जी के भक्त भोमा ने किसी स अडकर अपनी जीभ पकड कर कटारी से काट ली थी। वि० स० 2039 के आसोज के नवरात्रों म राधाकिशन के मझले बेटे न चमत्कार बताने के लिए अपनी जीभ का खड कर लिया।

नवम प्रकरण

(नमो मात्रे पृथिव्यै ।।2 अथर्व०)

ऐतिहासिक परिपार्श्व—राजस्थान और कालू

इतिहास का स्वरूप—किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के इतिहास से हमें उसके अतीत समय की संस्कृति एवं उत्थान पतन स्वरूप क्रमिक कहानी मिलती है। यह पूर्वजों की बल बुद्धि एवं प्रगति का चिरस्थायी यशस्वी स्तम्भ होता है। उस भूतकालिक ज्ञान से वर्तमान समृद्ध बनता है और भविष्य भव्य प्रकाश पाता है। जो देश और जाति उन्नत होते हैं, वे बारम्बार अपने इतिहास की उज्जवलता का पथ प्रदर्शन लेते रहते हैं। अंग्रेज यहाँ आये तब उन्होंने पहले पहल भाषा एवं इतिहास का पता किया था। डॉ० श्री ओझा के शब्दों में—

'इतिहास जीवन और जागृति का प्रमाण है।'[1]

इतिहास शब्द की बड़ी महत्ता है। भारतीय परम्परा में इतिहास चतुर्दश विद्याओं में एक विद्या है। पुराण शब्द भी इतिहास का उपलक्षण है। इतिहास नाम का प्रयोग अथर्व वेद, शतपथ ब्राह्मण महाभारत, निरुक्त भाष्य पतंजलि, कौटल्य अर्थशास्त्र और शुक्रनीति आदि अनेकों ग्रन्थों में हुआ है। इतिहास की महिमा का वर्णन मनुस्मृति और बृहद्देवता में 'इतिहास पुरावृत्त ऋषिभिः परिकीर्त्यते'' लिखा हुआ मिलता है।[2] अमर के ग्रन्थ में भी 'इतिहास: पुरावृत्तम' इतिहास और पुरावृत्त का नाम साथ है।[3] भरत मुनि ने इतिहास को नाटक का शरीर माना है— 'इतिवृत्त हि नाट्यस्य शरीर' अथर्व वेद में तो पुराण का स्पष्ट अर्थ इतिहास है—

'इतिहास पुराण: पञ्चम वेदानां वेद इति'—(साय भाष्य 4 62) वेद पुराण और रामायण, महाभारत ही इतिहास के लक्षण हैं। इसके सिवाय अवदान (बौद्ध साहित्य) चरित अनुचरित (रामायण) कथा (भामह) परिकथा (हेम चन्द्र), परकृति (राजशेखर), अनुवंशश्लोक (वायुपुराण) आदि अनेकों शब्द इतिहास विद्या के वाचक रूप मिलते हैं।

इतिहास की व्याख्या—इति का अर्थ है समाप्ति और हास का अभिप्राय घटित घटना वर्णन है। पर दूसरा साहित्यिक अर्थ— इति=ऐसा, हास=हुआ।' 'यानि ऐसा हुआ! ऐसा हुआ!! इस पर प्रत्येक व्यक्ति की जिज्ञासा जाग्रत हो जाती है कि— "कब हुआ? कैसा हुआ? क्यों हुआ? अत एव इतिहास पढ़ने की उत्सुकता मन में लिए ही प्राचीन ग्रन्थ पढ़े जाते हैं।

राजस्थान में इतिहास गत दो ढाई शतकों से लिखने के प्रयत्न पाये जाते हैं। दयालदास की ख्यात और डब्लू० पी० पॉवलेट, सर विलियम हन्टर जैसे लोगों ने गजेटियरस लिखने की गति प्रथा चलाई। कर्नल टाड तथा जनरल कनिंघम राजस्थान की

---

1 बी० रा० का० इति० प्र० भा०। 2 बृहद् देवता 4 46। 3 नामलिंगानुशासन 1 6 4

विचित्र वार्त्ताओं से लालायित इतिहास निर्माता बने। वि. सं. 1942 में मु. सोहनलाल ने 'तवारीख राज श्री बीकानेर" तथा कुंवर कन्हैयालाल देव का 'बीकानेर राज्य का इतिहास' सन 1912 में छपा। बीकानेर की स्थापना (उन) में सब राजाओं की भाग्य कुंडलिया बनी हुई हैं।

कालू राजस्थान के उत्तरी भाग में बसने वाला एक गौरवशाली वन गाँव है। आर्य ऋषियों ने यहां की निकटस्थ बहने वाली सरस्वती नदी के किनारे ही वैदिक ऋचाओं का सजन किया था तथा सभ्यता विश्व भ्रायम के संदेश में उन्होंने अपनी आर्य संस्कृति का उदघोष व प्रसार किया था। इसके पश्चात ब्राह्मण काल में मत्स्य ध्वसन द्वैतवन के द्वारा इसी सरस भूमि पर बहुत से अश्वमेध यज्ञ भी किए गए।

भूतपूर्व बीकानेर राज्य का कुछ भाग बागड़ नाम का विशाल मरुभूमि कहलाता है।[1] शब्द कल्पद्रुम काण्ड 2 पृष्ठ 229 में उक्त राज्य का पुराना नाम जांगल देश बताया है—

स्वल्पोन्नतृणायस्तु प्रवात प्रचुरातप ।
स ज्ञेया जागला देशा बहुधा यदि सयुत ॥'

वेदों में वर्णित आर्यो की महान उत्तम नदी सरस्वती' इसी भूमि को पवित्र करती हुई एवं रंगमहल के पास स्तूपद्धति का अपने वक्षस्थल में समेटती हुई आगे चलकर सिंध नदी के पास समुद्र में समा जाती थी। इन मरू और जांगल भू भागों की संस्कृति बडी अनूठी है।'

(भूमि जन और जन की संस्कृति इन तीनों की सम्मिलित सत्ता राष्ट्र है।)

पूर्व मध्यकालीन इतिहास बतलाता है कि राजस्थान प्राचीन काल से ही स्वाभिमानी व वीर लोगों का रण क्षेत्र और भारतीय इतिहास का केन्द्र बिंदु रहा है। डॉ० श्री ओझा के अनुसार— प्राचीन काल से लगाकर वि. स. 1249 (ई. स. 1192) अर्थात अजमेर में मुसलमानों का राज्य स्थापित होने तक इतिहास के साधन उस काल के शिलालेख ताम्रपत्र और सिक्के आदि हैं।' यहाँ के सकडों शिलालेख व प्राचीन, राजस्थान के आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन पर काफी प्रकाश डालते हैं। सोने चाँदी तांबे और मिश्रित धातुओं के बने सिक्कों पर त्रिशूल छत्र हाथी घोडे चँवर पेड देवी देवताओं की आकृतियाँ तथा सूर्य नक्षत्रादि खुदे हुए मिले हैं। यहाँ स्मारक मंदिरों के खंडहर और अन्य शिल्पकला सम्बंधी वस्तुएँ व ऐतिहासिक साहित्य (ख्यातें बातें, रासो, वंशावलियां) आदि सामग्री भी प्राप्त हुई है। उपरोक्त प्राचीन सामग्री कालू और उसके कांकड़ सीमाड़ी गावों में भी पाई जाती हैं।

आइन अकबरी के रचयिता अबुलफजल के अनुसार उक्त समय प्राचीन गाँवों की व्यवस्था वर्ण आश्रम धर्म पर आधारित था। निम्न सेवा कार्यों को करने वाले शूद्र कहलाते थे। डा० जी० एन० शर्मा ने लिखा है कि ये लोग अपने कार्यों से उदर पोषण नहीं कर पाते तो उन्हें खेती और पत्थर ढोने की छूट थी। जन साधारण का भोजन राबड़ी रोटी था। प्रातः केवल राबड़ी और मध्याह्न रोटी या खीच खाकर दिन

1 बीकानेर राज्य का इतिहास—प्रथम भाग पृष्ठ 5
2 मरु जांगल (पत्रिका) सन 1979 से श्री भूरसिंह राठौड़।

व्यतीत करते थे। दाल लापसी की दावतें हुआ करती थी। गरीब अमीर के जीवन म बडा अन्तर था। कृषक की हालत स तोषजनक नही थी। शासक व जनता के बीच 'आपसा व तुमका' सम्बन्ध चलता था। जनता के भौतिक एव धार्मिक सुखो की ओर राज्य का पूरा ध्यान रहता था। ब्राह्मण तथा व्यापारी लोग शासन के सहारे अच्छी दशा म रहत, लेकिन अकाल आदि क समय गरीबो पर बडी भारी मुश्किल बन आया करती थी। वस्तुआ के भाव सस्ते होन पर भी दुर्भिक्ष के समय लाग स्वय हाली भोग लिये रह जाते या बच्चे तक बेच दिया करते थे। किसान को अपनी पदावार का चौथा और पाँचवा हिस्सा राज्य की मालगुजारी म देना पडता था। कभी कदा कूत, लाठा बटाई आदि पुराने तरीका को भी राजस्व वसूली के लिए अपनाया जाता था। किन्तु मुसलमानों क भारत प्रवेश तक चार लुटेरो का भय अधिक नही था। क्योकि अपराधियो को सख्त सजायें दी जाती थी। उस वक्त चोरो के हाथ और झूठे व्यक्ति की जीभ तक काटली जाती थी। भय वश समाज मे ईमानदारी व धर्मप्रियता का प्रचलन अधिक था।

बौद्ध धम राजस्थान स उठ चुका था, मगर हिन्दुओ की जाति प्रथा उस समय बडी कट्टर बन गई थी। य लाग नका हूणो व विदेशी सारी जगली जातियों को मलेच्छ कहन लगे थे और छूआछूत का बालबाला हा गया था। धनी लागो के लिए बहु विवाह की छूट थी। लडकी का बारह वष और लडक का सोलह वष म विवाह कर देना धम माना जाता था। स्त्रियों की पुनीत भावना श्लाघनीय थी। सती प्रथा म पूण विश्वास था।

बारहवी शताब्दी से राजस्थानी जनता मे मुसलमाना का मिश्रण हो गया। दोनो जातियो म आपसी घृणा के भाव थे। इसलिए हिन्दू औरतो पर बन आई थी। वे अपने बचाव के लिए अनूठा जौहरव्रत अपनाने लगी। चित्रकला गान विद्या और नत्य का अधिक प्रचार हाने लगा था। मुसलमान धार्मिक जोश के साथ स्वाभिमानी नरेशों को पराजित करन पर उतारू हो गए थे। ई स 1336 के पास सिसोदा के हम्मीर ने आये मुहम्मद तुगलक को बुरी तरह हरा कर सदा के लिए राजस्थान स निकाल दिया था। ई स 1459 मे जोधपुर और सन् 1485 म बीकानेर शहर भी बस गये थे।

सोलहवी शताब्दी के मध्य राजस्थान के राजपूत नरेश आपस म झगडत हुए कमजोर हो गये थे। इसलिए राजस्थान परतन्त्र हो गया था। जनता धम की ओर जा रही थी। जन मन्दिरों शिलालेखो तथा हस्तलिखित ग्रन्थो से मालूम होता है कि इस समय जन धम का प्रचलन अधिक हो गया था। मीरा दादूदयाल तथा सुन्दरदास आदि भक्त कविया की रचनाआ से भक्ति माग द्वारा भी वष्णव धम का प्रचार हो रहा था।

ई स 1556 से मुगलों व राजपूतो के ववाहिक सम्बन्ध बनने लग थे। सन 1559 मे चित्तौड के महाराणा उदयसिंह ने अकबर से उदासीन रहकर राज्य एव धम की सुरक्षा हेतु उदयपुर बसाया था। ई स 1572 मे उनकी मृत्यु हो गई तब उनक पुत्र प्रतापसिंह ने राज्य गद्दी सम्भाली। जोधपुर मे राव चन्द्रसेन और आमेर के मानसिंह उस समय बादशाह के साथ थे। आगे चलकर राजस्थान के राजाआ को औरगजेब भी अपन पक्ष म करना चाहता था, पर सन 1657 मे औरगजेब से बिना अनुमति लिए ही बीकानेर नरेश

मरणसिंह उसे दक्षिण म छोडकर बीकानेर चला आया था । इसके पश्चात मुगल साम्राज्य का पतन होने का समय आ गया । बादशाह औरंगजेब की हि दू धम विरोधी नीति के कारण राजपूत सिक्ख, मराठा एव जाट भी बादशाह के विरोधी बन गये । राजस्थान ही नही, आगरा मथुरा अलीगढ, मेवात मेरठ आदि स्थानो के जाट मालगुजारी वद्धि के सवाल को लेकर काफी उग्र हो गये थे । म दिर गिराने के प्रश्न पर मथुरा के जाटो ने मुसलमान फौजदार को मार ही डाला । बादशाह ने जाटो का दमन करवाना चाहा । हिदुओ पर जजियाकर लगाया । लेकिन सन् 1685 से लेकर 169 ई० तक जाटो ने बहुत सी गद्दियों पर जाट राज्य की झडी घुमा दी थी ।

मुगल साम्राज्य के शासको म अकबर चतुर बादशाह था । उसने राजपूतो के साथ विवाह परम्परा की नीति अपनाकर एक बहुत बडे सघष को टाल दिया । बादशाह साम्राज्य का सर्वोच्च शक्ति था । उसके नीचे अमीर उमराव भी पर्याप्त समृद्ध थे । उस समय मध्यम श्रेणी के लोग कमचारी व्यापारी एव कलाकार सम्पन्न समझे जाते थे । हिदुओ मे ऊँच नीच का भेद भाव बना हुआ था । राजपूत, ब्राह्मण, वश्य, कायस्थ आदि लोग अपने को बडा समझते थे । साधारण वग म किसान मजदूर और औरतो की हालत बदतर थी । सती होना अफीम खाना, फासी खाकर मर जाना आदि आत्म घात चलते थे । दुर्भिक्ष, महामारी आदि आपत्ति के समय जन साधारण का जीवन व्यतीत करना मुश्किल हो जाता था । ई सन 1578 म एक भीषण अकाल और व्यापक पडा था । जिसमे बीकानेर के राजा रायसिंह न प्रजा के सुख दुख का ध्यान रखकर राज्य की ओर से तेरह महीनो तक अन्न भडारो से भूखी जनता को अनाज दिलवाने की गाँवो तक मे सु दर व्यवस्था करवाई थी । दयालदास की ख्यात के अनुसार उस समय वह अपने राज्य मे महामारी के समय दवाइयो का प्रबध भी करता था । कालू का प्रबन्ध राज्य के पटवारी तथा गाँव के मुखिया द्वारा सचालित होता था । पटवारी भूमि के मोटे कागजात रखकर उनके मुताबिक राजस्व वसूल करता था । स्थानीय व्यवस्था हेतु गाँव की पचायत मे एक मुखिया और अय पुख्ता पुरुष होते थे । ये सब याय तय करने, धार्मिक, सामाजिक कार्यों पर मिल जुलकर विचार विमश करत थे । गाँव की स्थिति सुख शाति मय थी । डॉ० गोपीनाथ शमा के अनुसार हर गाँव के लोग किसी भी जाति के होते हुए एक दूसर के सुख दुख म साथ बटाते थे । हर मौके पर एक परिवार के होकर रहते थे । छोटा या बडा कोई भी उत्सव राजस्थानी काव्य क उद्धरणो के दोहराने से ही सफल माना जाता था । कालू म जन उपासक रामस्नेही सम्प्रदाय एव नाथ महत शिक्षा को बढावा देन म प्रयत्नशील थे । व अपन शिष्या का धार्मिक ग्रथों की प्रतिलिपियाँ तैयार करके पढाते थे । य पुस्तकें हस्तलिखित होती थी । गाँव के साधु स त अपने व्याख्यानों तथा शिक्षा की कथा वार्ताओ से प्रौढो को भी आकर्षित करने मे बडे पटु थे । स्थानीय शिक्षक, पेड या फूस के छोटे छप्पर के नीचे खुले मदान मे बठकर बालको को शिक्षा देते थे । उस समय कालू के कुछ लोग बाहर पढने भी जाया करते थे । गाँव की आर्थिक स्थिति अच्छी थी, गाय भस के दूध व उसके पदार्थों का उत्पादन था । भेड बकरियो की उन भी गाँव के लोगो की जीविका का साधन थी । कालू गाँव के अधिकतर लोग उस समय कृषि पर आधारित रहत तथा मात्र धर्मावलम्बी थ ।

हिंदुओं को जबरन या पद लाभ से मुसलमान बनाया जाने लगा। तब से हिंदुओं ने अपना देव पूजन, शिक्षा, साहित्य और संस्कृति तथा धार्मिक जीवन बनाने की ओर विशेष ध्यान दिया। समय के कवि लेखक इसी भावना से धार्मिक साहित्य की रचना करने लगे। गांवों में अनेक तरह की धार्मिक एवं न्याय व्यवस्थाएँ शुरू हो गई। इस समय बीकानेर के पृथ्वीराज बड़ी जागरूक कविता किया करते थे। कालू में कालिकाजी का प्राचीन समय से विश्वास था। मध्यकाल की एक धार्मिक कथा यहाँ प्रचलित है कि अहिच्छत्रपुर (नागौर) के शासक ने एक ब्राह्मण को वचन दिये—"तुम जितनी दूर को एक दिन में अपनी स्हाढ़ (ऊँटनी) पर यात्रा कर भूमि तय कर आओगे, उतना राज्य तुम्हारा होगा।" ब्राह्मण अपनी स्हाढ़ पर बहुत दूर की यात्रा करके वापिस अहिच्छत्रपुर की तरफ जा रहा था, तब दिन ढल रहा था और ब्राह्मण गांव कालू से होकर कालिकाजी के मढ़ के पास से निकल रहा था कि अचानक उसकी स्हाढ़ गिरकर टूट गई। ब्राह्मण ने धोक दी, देवी का परचा हुआ—"क्यों रे ब्राह्मण! मेरे स्थान को नहीं जाना?" फिर देवी ने ब्राह्मण की प्रार्थना पर स्हाढ़ की टूटी हड्डियों में गोपनीय ढंग से चाँदी की मेल जोड़कर खड़ी कर दी और कहा—"चला जा! मगर राजा के शहर के बाहरी दरवाजे पर पहुँचकर स्हाढ़ गिर जायेगी।" वैसा ही हुआ। सच्चा स्हाढ़ वहाँ पहुँचकर गिर पड़ी। उसकी हड्डियों में कीलें ठोकी जुड़ी हुई मिला।

इसी तरह मुगल काल में भी कालू की कालिकाजी की अनेक चमत्कारिक घटनाओं के साथ गीत मिलते हैं जो देवी ने अपने भक्त राजाओं को मुगलों की कैद से मुक्त करवाये हैं। जैसे राजपूताने के एक राजा को मुगल बादशाह ने कैद कर लिया था। तब राजा ने कालू की कालिका का स्मरण किया। इस पर देवी ने जेल के कपाट खोलकर भक्त महाराजा को स्वतन्त्र करवा दिया। बादशाह और उसकी हुरमें घबरा कर देवी की शरण में गांव कालू की यात्रा कालिकाजी का धोक पूजना करने आये।

सिंह चढ़ी माता हाकल मार मेरो भक्त नप बार आव।
हाथा पगा री बड़ी कटाई गळ सू तोप चढ़ाई।
पकड़ पछाड़ यो तेर बादशाह न बठ हुरमा अल्ला जप।
जागो सूब चौर वाळी तेरे भवन म उजियाळो॥

इस तरह कालू की कालिकाजी के तत्कालीन चमत्कारिक काफी गीत मिलते हैं। औरंगजेब मरा मुगलों का वैभव गया। सन् 1612 में बहादुरशाह भी नहीं रहा। जजिया कर हटा और साथ ही डेढ़ सौ वर्षों के मुगल राज्य का अन्त हो गया। पर मारवाड़ नरेश अजीतसिंह अपनी पुत्री का विवाह बादशाह के साथ करके बीकानेर राज्य का फौजदार बना।

अकबर के समय से अब तक प्रान्तीय संगठन वैसा ही चलता था। अंग्रेजों ने इस वक्त इस प्रान्त का नाम राजपूताना ऐजेन्सी रखा। मगर अब इसमें चारों ओर मरहठे घुसने लगे। जगह जगह भयंकर विरोध और संघर्ष चले। कई राजाओं ने उनसे संधियां भी की और कई अंग्रेजों से मिलने लगे। मार्च 1818 ई० में बीकानेर महाराजा श्री सूरतसिंह ने मरहठों के कारण अंग्रेजों से संधि करली।[1]

---

1 लगभग सत्तर वर्ष तक मरहठों और पिंडारियों से प्रताड़ित रह लेने के पश्चात राजस्थान की रियासतों ने अंग्रेजों के संरक्षण में पहली बार शान्ति की श्वास ली। इस दासता को उन राजाओं ने वरदान के रूप में माना और अंग्रेजों की सहायता करने में ही अपना हित समझा है।

खालसा की रकम रीति—

बीकानेर जिले के जागीदार अपने क्षेत्र का भू राजस्व, जो निश्चित द्रव्य था, यथा समय राज्य में दाखिल करवा देत थे। ब्राह्मणों, चारणा, देवस्थानों तथा काम करन वाला के लिए भूमि की रकम प्राय माफ रहती। खालसा मे काश्तकारों से हँसल (लगान) अन्य बहुतेरी लागो के साथ लिया जाता था। इस तरह से बीकानेर का भू-राजस्व लगभग लाख रुपय बनता था।

काश्त के साथ किसान पशु पालन अधिक मात्रा म करते थे। बीकानेर म रजा, ऊन की कम्बलें हथियार आदि बनते थे। बढिया कपड़े हाथी दात चावल मेवा नारियल, मिच मसाले आदि पदाथ बाहर स मगाय जात थे। किन्तु दुर्भिक्ष के कारण बहुत से लोग जानवरो के साथ इधर उधर भटकने हुए मर जाया करत थे। धान (अन्न) अधिक महगा हो जाता तब लोग अपन परिवार तक को छोड दिया करते थे। ई स 1764 94 1804 12 में भयकर अकाल पडे थ। कालू गाँव भी इनसे उजडा बसा है।

राज समाज और कालू—राजस्थान म इस समय शिक्षा व कला की खब उन्नति हुई, पर सामन्तशाही सम्बन्ध काफी ढीलें पडन लग। राजा लाग राजपूतो के सिवाय अन्य जातिया के भाडेता सनिक रखने लग गय थे। क्योंकि राजपूतो को सेवा के बदले जागीरें देना पडती थी। इसलिए वे कभी भी गद्दी छीनने को उतारू हो जाया करते थे। तब राजा लोग सलाह तथा शासन व्यवस्था हेतु ब्राह्मणो महाजना एव कायस्थ लोगो को रखने लग थे। विषय वासना तथा चरित्र हीनता बढ गई थी। सुरा-सुन्दरी का प्रचलन मनोरजन का प्रमुख साधन बन गया था। शराब और अफीम का जोर राजपूता म और उनके साथ रहन वाले अन्य लागा मे भी फल चुका था। स्त्रिया विलास की वस्तु समझी जान लगी, तब महिलाओ मे सती प्रथा का उत्साह भी बढने लग गया था। कई स्त्रियो को मजबूरन इस प्रथा का पालन करना पडता तथा त्याग, बलिदान और सम्मान के लिए ससार के अद्वितीय जौहर व्रत द्वारा भी सतीत्व की रक्षा होती थी। हजारो रमणिया प्रिय पुत्रो को गोद म लिए मृत्यु का आलींगन कर लिया करती थी। सद्गुणों के विकास का इससे अधिक भागवत रूप प्राचीन एव अर्वाचीन समय म और क्या हा सकता है?

इसलिए कालू गाव के निकटीय अनक गावो और जातियो मे सतिया हुई है तथा सभी परिवारो की अपनी सतिया गाई जाती हैं। *यहा की जनता म सदव सती गौरव-*गान मा य रहा है। कालू गाव मे अभी एक महासती आलेख की प्राप्ति हुई है, जिसको नीचे लिखा जा रहा है।

सन 1973 क जून मास म गाव कालू के घ नाण तालाव की पाल खोदते समय जमीन मे दबी हुई एक महासता की देवली (प्रस्तर अभिलिपि) प्राप्त हुई। देवली को गाव के लोगा ने बडे उत्साह पूर्वक देखा। इन पक्तिया के लेखक ने भी देवली का अवलोकन किया तथा प्रस्तर अभिलेख को लिख लिया। सूचना मिलते ही इसे तत्कालीन जिलाधीश बीकानेर ने मगवा लिया। पता नही उक्त देवली अब कहा है?

यह प्रस्तर अभिलेख खण्ड 1 24 मीटर ऊचा 0 31 मीटर लम्बा एव 0 08 मीटर चौडा है। इसके ऊपर के भाग मे एक स्त्री एक पुरुषाकृति को गोद मे लिए बठी

है। वह स्त्री की आकृति से छोटा है एव उसका पुत्र प्रतीत होता है। स्त्री आकृति के दाहिने हाथ मे माला एव बाया हाथ उसके वक्ष पर है, जिसम वह कुछ लिए है जो स्पष्ट नही है। पीछे अग्नि शिखा दिखाई दे रही है। इस आकृति के ऊपर सूय एव चन्द्र चित्रांकित हैं। लेख का पाठ निम्नानुसार है—

समत्त 1798 मती च
त वद 11 वर आदत व
र माहसना बठ ट 2) सुज
नार साथ सती हुई गा
व कालू मुहुत ब्रह्म रूप स
शिगना (?) देवली चडा
इ महाराज श्री श्री ज
रावर सघ जी मुहता
श्री वषतावर सघ

[सवत 1798 की तिथि चत बदी 11 दिन आदितवार (रविवार) का कालू गाव मे ब्रह्म मुहुत मे अपने बेटे एव स्वजना के साथ देवली चढकर महासती हुई। इस अवसर पर महाराज श्री श्री जोरावर सिंघ जी[1] एव मुहता (दीवान) श्री वषतावर सिंघ जी उपस्थित थे]

प्रसगोक्त लेख म लिपि सम्ब धी अनेका अशुद्धिया हैं। फिर भी महाराज श्री जोरावर सिंह जी के राज्य काल मे अपने बेटे के साथ महासती होने का यह प्रथम अभिलेख प्रकाश में आया है जो अत्यन्त महत्वपूण है। लेख की 6 से 9 पक्ति मे महाराज श्री श्री जोरावर सिंघ एव मुहता (दीवान) श्री वखतावर सिंघ जी का नाम महासती होने के अवसर पर उनकी उपस्थिति का प्रमाण है।''[2]

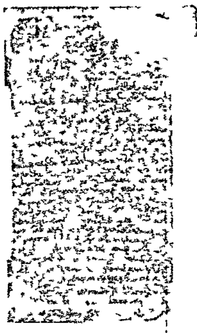
उदात्त भावनाओ में भ्राया कालू—इस समय यहा के हिन्दू राजा और अय लोग धम के लिए काफी खर्चीले तथा सहिष्णु भावना के रहे। मुसलमान शासका ने बहुत से मदिर तोडकर उनकी जगहो पर मस्जिदें बनवा दी थीं। परन्तु अब उन मुसलमाना का शासनाधिकार बिल्कुल समाप्त हो चुका था। अत यहाँ के राजा-महाराजा मदिरों क साथ अय धार्मिक सस्थाओ को भी खर्चे बाबत काफी जमीन मापी मे देत रहे। धम गुरुओ का भी राजा लोग खूब सम्मान करते थ। वे परम्परा का निर्वाह करके सस्कृति को सवारते निखारते थे तथापि रूढिगत विचारा को पनपा कर सदामत का बुरा कर रहे थे। वे देवी देवताओ मूर्ति पूजन जाति-पाति छुआछूत, मोसर मासर के भोज्य आदि कार्यों म पूरी भिन्नता का पालन करते करवाते थे। बीकानेर महाराजा श्री सूरतसिंहजी ने ऐसे मदिरा आदि के लिए बहुत से दान व ताम्र पत्र प्रदान किये थे। कालू के काकडसीमाडी गाव गारवदेसर के महंत को दिये गये ताम्रपत्रो म मे एक आलेख देते हैं जिसम कालू का उल्लेख दृष्टव्य है —

1 श्री गौ० हा० बी० रा० का इति० पृष्ठ 307 एव 321 पृष्ठ 322 है

2 राजस्थान भारती सयुक्तांक जुलाई दिसम्बर 1974 भाग 16 अक 3 4 सादूल राजस्थानी रिसर्च इस्टीट्यूट बीकानेर।

सही ॥ श्री लिछमीनारायणजी ॥

॥ स्वस्ति श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा शिरोमणि महाराजा जी श्री सूरतसिंहजी वचनायनु श्री जी साहब मेहरबानी करके स्वामी हरिदास मोहनदास के शिष्य को इतनी जमीन ताम्रपत्र करके दे दी है। ताम्रपत्र पर अमल किया जायेगा तथा इसके अनुसार गाव गारबदेसर म असतल के पीछे 300 बीघा जमीन अक्षरे तीन सौ डोरी बीस के हिसाब से नापकर दी है। पश्चिम उत्तर दक्षिण दिशा मे गारबदेशर के गुवाडे आगे वाशिन्द हैं और उसी जगह निवास करेंगे। जगात की तरफ से नई माप गारबदेसर के पीछे दी जायेगी। पाच पचास वष बाद स्वामी जी अथवा स्वामीजी के शिष्य गुवाडा उठाना चाहेंगे ता उठा नही सकेंगे। इस जमीन म गारबदसर की गुवाडी नही बसाई जा सकेगी बाहर से आई हुई राजपूत व ब्राह्मण जाति की गुवाडी (घर) निवास करेंगे। खेत चार (4) जमीन बीघा 975 अक्षरे बीघा नौ सौ पचहत्तर, डारी बीम के हिसाब से आगे पट्टे की तरफ से दी गई थी। उसके अनुसार दी गई हैं और इस पर अमल किया जायेगा।

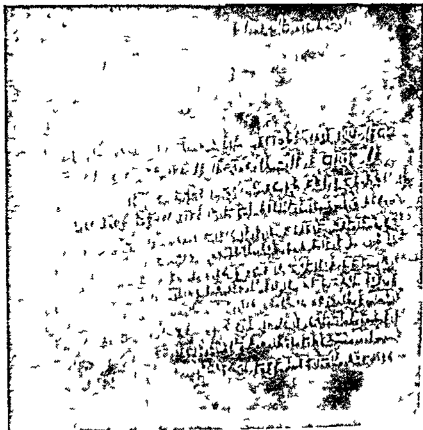


ताम्र पत्र

जगल के खेतो म पशु जैसे चरते आय हैं जसे ही चरेंगे। गाँव कालू म खत पाँच (5) छाटा मोटा, जमीन बीघा 750 अक्षरे साढे सात सौ डोरी बीस के हिसाब स आगे जाटो की दी हुई है। इसी के अनुसार अमल किया जायगा। सारी जमीन बीघा 2025 अक्षरे बीघा दो हजार पच्चीस डोरी बीस के हिसाब से है। बाहर तालाव गारबदेशर के पीछे है जिसमें पशु सदा की भाँति पानी पियेंगे। श्री जी का पुण्य बढायेंगे। सवत् 1852 मीति दूजा भादवा वदी 5 मुकाम पायतख्त श्री बीकानेर कोटदाखल। कुआ 1 करमाणी तथा तालाब 1 नडकी। श्री ठाकुरजी भगवान की सेवा भाव मे।

श्री लक्ष्मीनारायणजी

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज राजराजेश्वर नरेन्द्र शिरोमणि श्री रतनसिंहजी महाराज कुवार श्री मीरन्यार सींहजी वचना तू श्री जी साहबा कीरपाकर गाँव गारब द्रेसर र महत बदरीदास अमरदास र चेल हरीदास र पोता चेल बरागी न वा गारबद्रेसर र मडल र बरागी या न ईया बरसा में माछ वा नतो वा डगरा भाडो लागो सु हम श्री जी सायबा कीरपा कर छोडिया छे सु माछ वा नतो वा नीजराणो वा डगरो भाडो वा गढ़ सु रकम उतर सु सरब माफ कीवी छ सु खेचल न हुसी श्री जी सायबा रो पुन बधार सी तरा तावा पत्र कर दीयो छ सु माहारो पुत पोतो पालीया जा सी माहारा साम धरमी चाकर हुसा सुद या कन लवण री अरज न करसी नही म चुक गुनो आसी तो



ताम्र पत्र

अदालत म बुनाय तपावस कर गुन साह घर माह गुन गारी लीज सो ममन 1900 माती वसाख वदी 7 मु । पाय तखत श्री बीकानर कोट दाखल हुवो मोहतो लालाधर ।

गांव कालू और बीकानेर राज्य के शासक—राजस्थान म मरहठा शक्ति का प्रवेश ई० सन् 1726 के लगभग हुआ और इनमे होन वाला सघष ई सन् 1818 म समाप्त हुआ । जब यहाँ के अधिकांश नरेशो ने अंग्रेजों क साथ 'सहायक सधियाँ करली । इस समय के बीच यहा के नरेशा की वडी दयनीय स्थिति थी । सम्पूण राजपूताने के नरेशा म एक विवशता घर कर गई थी । "मराठो न राजपूताने के कई राज्या पर चौथ लगा दी थी, पर तु बराबर उनके पास नही पहुँचती थी । जब उन्ह फौज का वेतन चुकान के लिए कठिनाई पडती थी तब उन्ह अलग अलग राज्या अथवा प्रजा से जसे भी बन पडे उसी प्रकार रुपया वसूल करना पडता था । इस तरह मरहठा के उत्पात का सदव भय बना रहता था । जयपुर म मरहठा न कई बार आक्रमण कर क्षति पहुँचाई थी । बीकानर राज्य की कई रियासतें जयपुर की सरहद पर होन से मरहठो का डर होना स्वभाविक था ।

बीकानेर महाराजा सूरतसिंह ने वि स 1850 म एक परवाना ठा० ईसरीसिंह को लिखा कि चूरू मे दक्षिणिया की फौज लगी हुई है ।[1] अच्छे आदमी लेकर परवाना

1 राजस्थान भारती भाग 6, अक 1 2 नवम्बर 1958—पृष्ठ 48—सगतसिंह ।

पहुँचते ही आधी मजल तय करने के बाद पानी पीना (शीघ्रातिशीघ्र पहुँचना)। धरती का मामला है। दरबार की धाम धर्मी होगी। अत घडी एक का विलम्ब मत करना।

परवाना इस प्रकार है —

श्री लक्ष्मीनारायण जी

श्री लक्ष्मीनारायणजी भक्तराज
राजेश्वर महाराजाधिराज
शिरोमणि महाराजा श्री सूरत
सिंहजी ना मुद्राया विजयते ॥1॥

स्वस्ति श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा सिरोमणी महाराज श्री सूरतसिंहजी *वचनायतु राठौर ईसरीसिंघ जालमसिंघोत जोग थाँ सू सुपरसाद बचीजो।* अपरच चुरू दिखणियाँरी फोज लागी छैं। दरबार रो सामधरम होंसी सु घडी 1 री ढील न करसी हुक्म छ। सवत् 1850 मिती माह सुदी 2 मु० गाँव कालू।"[1] (यो कागज कालिकाजी र मदिर कालू मे विराज महाराजा सूरतसिहजी लिख्यो।)

बीकानेर महाराजा श्री सूरतसिंह जी ने ई० सन् 1808 मे अग्रेजों का सरक्षण चाहा और उसके लिये माग की। इस समय तक अग्रेजो की नीति यमुना नदी के पश्चिम के राज्यों मे सम्बन्ध स्थापित करने की नही थी। इसलिए बीकानेर राज्य को अग्रेजो की ओर से कोई सरक्षण प्राप्त नहीं हो सका। ई० स० 1812 म पुन सूरतसिंह ने अग्रेजों से समझौता करना चाहा, लेकिन इस बार भी उसे सफलता नही मिली। ई म 1818 मार्च में अग्रेजो ने अपने हित मे बीकानेर राज्य मे सधि स्थापित की। इस सधि म बीकानेर को अग्रेजों की आवश्यकतानुसार सनिक सहायता देने की बात मजूर करनी पडी। लेकिन बीकानेर राज्य मे कोई खिराज लेन की बात नही रखी गई क्योंकि यह राज्य इस सधि क पहले, किसी राज्य को खिराज नही देता था। सन 1818 की सधि बहुत महत्वपूर्ण सधि थी। जिसे आगे चलकर बीकानेर राज्य एव उसकी रियासता पर राजनैतिक आर्थिक एव सनिक प्रभाव पडे।

अग्रेजो राज्य की सुदृढता—ई० सन 1819 स पहले ही राजपूताने के सब राज्यो ने अधीनता के साथ अग्रेजों से सधियाँ स्वीकार कर ली थी। अग्रेजो को उस समय बडी सफलता के साथ अजमेर का परगना मिला और वे व्यापारी वग स नामक-शाहशाह तक पहुँच गये थे। उनका कोठियाँ, किले सेनाएँ और विजय पर विजय आदि की उपलब्धियो से 139 वप तक भारत का राज्य-शासन हाथ लगा रहा। इसलिए राजस्थान म धार्मिक सामाजिक साहित्यिक, आर्थिक एव राजनैतिक आदि सब विषयो म बडा भारी बदलाव आ गया जो सन् 1947 ई० तक चलता रहा।

राजपूताने के बेचारे राजा महाराजाओं को एक ओर मरहठे और पिण्डारी परेशान कर रहे थे तथा दूसरी ओर अपने राज्यो के जागीरदार जूतियाँ खोलकर पीछे पड रहे थे। अग्रेजो ने सन् 1810 से 1857 तक इन राजाओं को पूणरूप से आश्रित सहयोग दिया। प्रत्यक राज्य दरबार म एक अग्रेज रेजीडेण्ट (राजदूत) रहता और वह

---

1 राजस्थान भारती, भाग 16 अक 3 4 जुलाई दिसम्बर 1974 पृष्ठ 72 73—"मह लावत राठौड और सारूडा।" —श्री सगतसिंह

सहायता के साथ भिटाने, अपना प्रभुत्व जमाने तथा पूर्ण शासन कायम करने के लिए जोरों से प्रयत्नशील कार्यरत रहा करता था। इस प्रकार राजपूताने में अंग्रेज अपनी सेनाएँ रखते कि राजाओं पर पूरा नियंत्रण रखा जा सके तथा राजाओं का रहा सहा हाल-हुक्म भी छीन लिया जाये।

बीकानेर राज्य के 40 गांवों (टीबी और बेनीवाला वगैरह सहित) पर अंग्रेजी इशारे से सिक्खों ने अधिकार जमा लिया। सन् 1827 में अंग्रेजों ने ये गाँव पंजाब में मिलाकर बीकानेर राज्य से अन्य मौजगढ़ व मारोठ उत्तर पश्चिमी क्षेत्र के अनेक गांव फिर बहावलपुर के नवाब को दिलवा दिये।

इस समय अंग्रेज अधिकारी देशी रजवाड़ों से सैनिक सहायता भी लेने लगे थे। सन 1941 45 48 के युद्धों में सिक्खों के विरुद्ध लड़ने और काबुल युद्ध के समय उन्होंने बीकानेर राज्य से ऊँटों की सेना का पूर्ण सहयोग लिया था। अंग्रेज यहाँ के राजाओं का शासन आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर बनाना चाहते थे। निर्धारित खिराज समय पर न पहुँचने पर अंग्रेजी सरकार कर्ज चढ़ाये रखती और राजाओं से अपनी शर्तें मनवाती रहती थी। अपने हित के लिए अंग्रेजों ने यहाँ की प्राचीन शिक्षा प्रणाली को भी बदलना चाहा। इसलिए ई० सन 1832 में राजपूताने के राजाओं को एक प्रस्ताव भेजा कि—'अंग्रेजी सरकार से अपने सारे पत्र व्यवहार अंग्रेजी भाषा में ही किया जाय।' इसलिए कोटा और जैसलमेर के राजाओं ने अपने दरबार में अंग्रेजी सचिव रखे थे। गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी के शिक्षा सदस्य लार्ड मेकाले भारत में सर्वत्र सतत अंग्रेजी शिक्षा संस्कृति की स्थिति सुदृढ़ करने का बड़ा इच्छुक था। ई० सन् 1819 से अंग्रेजी के स्कूल खोले और ई० सन 1835 में 2 फरवरी को मेकाले ने भारत में शिक्षा का माध्यम पूर्वी भाषाओं के स्थान पर अंग्रेजी को लागू करवा दिया। वह प्राचीन *भारतीय शिक्षा साहित्य के विरुद्ध था। वह अंग्रेजी भाषा, साहित्य और विज्ञान का* प्रचार प्रसार करवाता था। वह राष्ट्रीयता के भावों को नष्ट करके अंग्रेजी सत्ता चलाने के लिए भारतीयों को यंत्रवत् बना देना चाहता था। राजा महाराजा इस कूटनीति से बच नहीं सके और उनकी स्वीकृति से ई० सन् 1842 1843 1844 में अंग्रेजी शिक्षा के लिए क्रमशः अलवर भरतपुर तथा जयपुर आदि स्थानों में अंग्रेजी पढ़ाई का पूर्ण प्रबन्ध कर दिया गया। अंग्रेजी सरकार ने उन पढ़े लिखे लोगों को नौकरी देने का भी वादा किया था। राज्य से सम्बंधित लोग अन्य पाठशालाओं से अपने बच्चों को उठाकर अंग्रेजी स्कूलों में भर्ती करवाने लगे।

शिक्षा के साथ समाज-सुधार की अपनी शृंखला बना लेने के लिए अंग्रेजों ने सन् 1929 में कानून द्वारा सती प्रथा पर रोक लगवा दी और राजपूतों में जो कन्या मार डालने की प्रथा थी उसे बन्द करवाया। सन् 1837 में बीकानेर के महाराजा श्री रतनसिंह तीर्थ यात्रा हेतु 'गया धाम' में थे। तब वहाँ सारे राजपूतों से कन्याएँ न मारने की प्रतिज्ञाएँ करवाई थी।

तत्कालीन सामाजिक स्थिति में गरीब लोग अपने बच्चों को बेच दिया करते थे। जागीरदार तथा धनवान लोग उन्हें खरीदकर घर व खेत का कार्य करवाया करते थे ये बच्चे (पुरुष) गोला-नाला, चाकर-खवास तथा हाजरिये-नाजरिये आदि नामों से सम्बोधित किए जाते थे। लड़कियाँ होती, तब सारे कामों में छोकरी डावडी गोली,

माणस, वडेरण वगैरह नामों से पुकारी तथा मारी पीटी जाती थी। ये बच्चे पशुओं की भांति आगे से और आगे भी बेच दिए जाते तथा बदल भी लेते थे। सन् 1847 में इस प्रथा को भी अवध घोषित करार की गई।

अंग्रेजी सरकार ने राजपूताने के लिए सन् 1849 में न्यायालय सन् 1889 में रेलगाड़ी, सन् 1848 में जनगणना तथा सन् 1853 में डाक वितरण की पूर्ण व्यवस्था करदी। चेचक के टीके भी इसी समय से लगाने चालू कर दिये थे। धर्म भीरू लोग इन कार्यों के बाबत धर्म समाप्त कर देने की बात का सोचने लगे। मई सन 1857 में धर्म रक्षा के वास्ते सैनिकों ने स्वतन्त्रता-संग्राम मचा दिया। उस समय मुगल बादशाह बहादुरशाह ने राजाओं को लिखा कि—"वे अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने में सहायता देवें ताकि हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र करवाया जा सके।" लेकिन राजा लोग तो अंग्रेजों के भक्त बन गये थे। इसीलिए यह भारतीय आन्दोलन, करीब 90 वर्ष तक चल कर ई सन् 1947 में भारत को आजाद करवा सका।

जनरल लारेंस का इतिहास में उल्लेख है कि—"विद्रोह के कारण भागे हुए अंग्रेजों का पता करने व उनकी सुरक्षा रखने में जैसी सहायता बीकानेर नृप ने दी वैसी अन्यत्र नहीं मिली। बीकानेर की सीमा के समीप हांसी हिसार तथा हरियाणा क्षेत्र के विद्रोह को दबाने के लिए बीकानेर महाराजा सरदारसिंह अपनी सेना लेकर पालिटिकल एजेण्ट लॉलरिज के साथ गये थे। विद्रोह में हिन्दू व मुसलमान इसलिए हथियार लिए लड़े थे कि उनका धर्म खतरे में था।

ई स 1858 के बाद अंग्रेजों की ओर से राजाओं के कार्यों में हस्तक्षेप होने लगे। राजा भक्त बन गये पर अंग्रेज अन्दर ही अन्दर इन्हें शक्तिहीन करना चाहते थे। इसी वर्ष के नवम्बर माह में इंगलैण्ड की महारानी विक्टोरिया का आदेश प्रकाशित हुआ कि—'हिन्दुस्तान पर शासन करने का अधिकार ईस्ट इण्डिया कम्पनी से इंगलैण्ड की महारानी अपने हाथ में लेती है। अब भारत स्थित गवर्नर जनरल वाइसराय (महारानी का प्रतिनिधि) कहलायेगा।" फिर ई सन् 1884 में अंग्रेज सरकार ने घोषणा की— 'किसी देशी राज्य का उत्तराधिकार वैध नहीं माना जायेगा जब तक कि अंग्रेज सरकार स्वीकृति नहीं देगा।" ऊपरी उदारता दिखाने के लिए अंग्रेजों ने ई स 1861 में 'स्टार ऑफ इंडिया' (सितारे हिन्द) आदि की उपाधियाँ राजाओं को बाँटनी आरंभ की। हिन्दुओं के सूर्य महाराणा उदयपुर को सितारे हिन्द का खिताब देकर सूरज से सितारा बना दिया। किन्तु देशी राज्यों में शांति सुरक्षा, कुशल व्यवस्था एवं अंग्रेजी शासन को सुन्दर बनाने के लिए कुछ सुधार कार्य भी किये। इस समय भारत के मुख्य नगरों को रेल से जोड़ा गया जो यहाँ के राज्यों से लाइनें निकली। जोधपुर एवं बीकानेर राज्यों ने ई स 1889 में अपनी रेल लाइनें चलाई जो मारवाड जंक्शन से जोधपुर-मेड़ता, बीकानेर भटिण्डा (पंजाब) तक पहुँची।[1]

वैसे तो यहाँ ई स 1860 से महारानी विक्टोरिया के सिक्के भी चलन लग गये थे। लेकिन बाद में उन्होंने राजाओं को समझाकर उनकी टकसालें बन्द करवाली और उनके सारे सिक्के खरीद लिए गये। अंग्रेजी सरकार यह भी नहीं चाहती थी कि देशी

---

1 बीकानेर से भटिण्डा लाइन कालू के तहसील मुख्यालय गाँव लूनकरनसर से होती हुई निकली।

राज्या की सनिक शक्ति बढी रहे। ई स 1889 में जयपुर, जाधपुर, बीकानेर एव अलवर आदि राज्यों मे नई सेनाएँ सगठित करवाई जा 'इम्पीरियल सर्विस ट्रूप्स" के नाम से प्रसिद्ध हुई। अब तो अग्रेजी प्रा तों की तरह दीवानी एव फौजदारी कानून भी आवश्यक परिवतन के ढग से लागू कर दिये थे। इस वक्त डाकुओ का खात्मा तथा विद्रोही जागीरदारों का दमन, सेना से अलग पुलिस व्यवस्था करके किये गये और जेलो का सुप्रब घ हुआ।

ई सन् 1879 (वि स 1936) म अग्रेज सरकार क साथ बीकानर राज्य का समझौता हुआ।[1] जिसमे हमारे तहसील मुख्याल लूनकरनसर म बनाये जाने वाले नमक का तोल निर्धारित करके इसकी खपत के लिए कानून निर्धारित किए गये। लिखित दस शर्तों का इकरारनामा बीकानेर महाराजा डूगरसिंह ने स्वीकार किया। पहली शत थी कि लूनकरनसर और छापर के सिवाय कही नमक कारखाना नही चलाया जायेगा। दूसरी—उक्त दोनो कारखानो म नमक की कुल पदावार एक वप मे 30 000 अग्रेजी मा से अधिक नही होगी जो उसका ब्योरा प्रति वप अग्रेज सरकार को प्रस्तुत कर दिया जायेगा। तीसरी—बीकानेर महाराजा ने स्वीकार किया कि नमक का आयात और नियात ब द रहेगा। चौथी—नमक कर अग्रेज सरकार ले चुकी है, बीकानेर राज्य नही लेगा। पाचवी—किसी नशीले पदाथ या वस्तु के निर्यात को रोकने का महाराजा ने इकरार किया था। छठी—महाराजा का शत एक दो तीन का पूण पालन करते हुए अग्रेजी सरकार से प्रतिवप 6000 रुपये लेने का इकरार था। सातवी—महाराजा को फलौदी व डीडवाना का नमक अपने राज्य के खान पान बाबत बीस हजार मन हर साल खरीदना होगा, जिसका मूल्य प्रति मन, आठ आने से अधिक नही हो, यह अग्रेज सरकार का इकरार था। आठवी—नमक के पुरान सग्रह और "कर" के बाबत थी। वायसराय के निर्धारण करन पर यह कर दो रुपए आठ आने तक लगता था, अधिक नही। नवी शत थी कि यह इकरारनामा अग्रेजी सरकार की आमदनी की रक्षाथ है सो शर्तें पर्याप्त न होने पर पलटा जा सकता है। दसवी शत—इकरारनामा अग्रेज सरकार द्वारा निश्चित की हुई तारीख से काय मे लाया जायगा। यह शतनामा 24 जनवरी ई स 1879 (फाल्गुन वदी 30 वि स 1935) को लिखा गया और 8 मई को म जूर हुआ।[2] लूनकरनसर के नमक का नियात रोकन क लिए अग्रेज सरकार न चौकी लगा दी। इस तरह सन् 1879 व 82 के बीच नमक बनाने पर रोक और किसी प्रकार चुगी न लेने पर पाब दी लगाकर राजाओं को काफी नुकसान पहुँचाया तथा अनेक लोगो को बेकार बना दिया। आगे जाकर केन्द्रीय सरकार के नमक विभाग की सही आमदनी ई स 1903 के अ त तक एक करोड ग्यारह लाख हो गई।[3] बीकानेर राज्य की अग्रेजो के साथ ऐसी सधियां पहले और बाद म भी हुई।

वि स 1950 (ई स 1893) म भारत सरकार और बीकानर दरबार म मुद्रा प्रचलन सम्ब धी अहदनाम को शर्ते निश्चित हुई। जिसमे 30 वप के लिए बीकानेर की

1 ट्रीटीज एगजमेंट्स एण्ड सनदज जि० 3 पृ० 293 95 बीका० रा० का इति० भा० दू० के पृ० 477

2 बीका० रा० का इति० 2 पृ० 479 (श्री ओझा)

3 राजस्थान का सक्षिप्त इतिहास, पृ० 203, डॉ० सुखवीर सिंह।

टकसाल स रुपये बनाना ब द होकर अंग्रेजी टकसाल स महाराजा के नाम का चांदी का सिक्का 'जिसकी एक तरफ सम्राज्ञी विक्टोरिया का चेहरा और नाम तथा दूसरी तरफ हिन्दी और उर्दू म महाराजा गगासिंह बहादुर, सन तथा बीकानेर राज्य का नाम एव मारछलें हैं'—बनकर प्रचलित हुआ। फिर रेल यातायात सम्बन्धी सन्धि 15 दिसम्बर *1899 को बीकानेर दरबार और ब्रिटिश सरकार के मध्य हुई जिसका अहदनामा महाराजा* बीकानेर की ओर से किया गया।

सन 1882 मे काश्तकारो का सुन्दर व्यवस्था के लिए बीकानेर महाराजा श्री डूगरसिंह न जमीन की पमाइश करवाकर उचित मालगुजारी निर्धारित करवादी। पहले पमाइश हनुमानगढ की करवाई गई। इसके बाद सारे राजपूताने मे कई प्रकार के न्यायिक सुधार हुए। बीकानर का भी उसके फायद मिल। बीकानेर राज्य में उस समय प्रशासनिक सुधार और सुव्यवस्था के काय भी हुए। जयपुर के राजा रामसिंह को ई सन् 1851 मे शासन करन के पूण अधिकार मिल चुके थे। उसने अपने राज्य में काफी उन्नति के काय करवाय। कॉलेज, पुस्तकालय, वाचनालय और सन् 1875 म 33 राजकीय प्राथमिक पाठशालाएँ खुलवाई। उस राज्य में 379 सहायता प्राप्त पाठशालाएँ भी इस समय थी। जिनमें करीब दस हजार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे। सन् 1878 मे यहाँ गस प्रकाश का प्रबन्ध हुआ। नगर पालिकाएँ आदि अनेक सस्था कार्यालय कायम हुए। ई सन् 1876 मे जयपुर का अजायबघर भवन बना, जो अब राजस्थान का केन्द्रीय सग्रहालय है।

जोधपुर मे महाराजा तख्तसिंह के राज्यकाल मे, शासन-व्यवस्था बिगड चुकी थी, सो आगे जाकर ठीक हुई। जागीरदारों का दमन और डाकुओ की समाप्ति मे अंग्रेजी राज्य का अधिक सहयोग प्रयत्न रहा। पुलिस व न्याय-व्यवस्था में भी अच्छे सुधार हुए। सन् 1884 मे नगरपालिका तथा 1894 म कॉलेज व अस्पताल खुल। स 1956 के अकाल मे यहाँ की स्थिति एक बार फिर गडबडा गई थी।

उदयपुर के महाराजा सज्जनसिंह न जनता की भलाई के लिए सिंचाई के निर्माण काय तथा भूमि बन्दोवस्त करवाया। फिर उनकी जगह महाराणा फतहसिंह न अपने नाम फतहसागर जसे तालाब बनवाकर जन यश लाभ लिए। महाराणा की पहुँच वायसराय लाड कजन तक थी। इसी समय चित्तौड गढ से उदयपुर तक रेल लाइन बनी।

बीकानर महाराजा गगासिंह ई स 1886 म राज्य गद्दी पर बठे। 87 स 1898 तक अल्प वयस्क होन के कारण रीजेंसी रही। लेकिन इस समय से नगरपालिका, भूमि बन्दोवस्त के बाद स्थिर लगान, काश्तकारो की स्थिति पर पूण विचार, घग्घर की नहरो से उत्तरी भाग की सिंचाई एव 1930 मे नय तरीके से सचिवालय की व्यवस्था हुई।

पाश्चात्य शिक्षा समृद्धि हेतु अजमेर म (सन् 1875 म) वायसराय लाड मेयो ने अपने नाम कॉलेज खोला। इसके द्वारा राजाओं को आधुनिक ढग की शिक्षा मिली और वे अंग्रेज भक्त बनते रहे। आग चलकर राजा महाराजा तथा राजवश के ज्यादातर सरदार राजपूताने में निरकुश व विलासी बन गये। इन्होने अपने राज्यो म केन्द्रीय सरकार से मनोनीत दीवान रख लिए और केन्द्रीय शासन के अनुकरण पर जनतान्त्रिक सस्थाओ की स्थापना आरम्भ की। किन्तु ये राजा लोग अपनी प्रजा का दबान म

निरकुश ही बने रहे । उनके रनवासो मे मकडा सुन्दर स्त्रियाँ रहती थी और कई अपने विलास हेतु वेश्याओं को भी रखने लगे थे । वि म 1954 के लगभग गाँव काल के ठाकुर मेघसिह ने भी गाँव की जनता को बुरी तरह से तग कर रखा था । वह शराबी और विलासी था ।

जोधपुर के द्वितीय नप जसव त सिंह के अ त पुर मे एक "नन्ही जान" नामक वेश्या का आवागमन था । इसके लिए गुरू, स्वामी दयान द सरस्वती ने महाराजा को खूब समझाया । महाराजा तो नही माने, मगर उस वेश्या ने रसोइये से मिलकर स्वामीजी को विष खिला दिया । जिससे सन 1883 मे उनकी मृत्यु हो गई ।


विषपान अमृतदान

पश्चिमी शिक्षा से भारतीयो म राजनतिक चेतना आई । सब प्रातों मे राजनतिक सस्थाएँ स्थापित हुई । इनम इण्डियन एसासियेशन, ब्रह्मसमाज एव आय समाज प्रमुख हैं । देश म स्वतन्त्रता तथा समानता की भावना का विकास हुआ । स्वामी दयान द सरस्वती ने अछूतोद्धार, राष्ट्रीय शिक्षा तथा स्त्री शिक्षा आदि के लिए खूब प्रचार किया जिसका प्रभाव सारे देश पर पडा । उनका कहना था—' कोई कितना भी करे, परन्तु स्वदेशी राज्य सवश्रेष्ठ होता है । माता पिता के समान कृपा, न्याय और भव्य भाव रखते हुए भी विदेशियों का राज्य सुखदाई नहीं हो सकता ।" इसी समय सन 1885 मे अग्रेजी साम्राज्य के नीचे भारत के लिए औपनिवेशिक स्वराज्य की प्राप्ति हेतु अवकाश प्राप्त अग्रेज ए ओ ह्यूम ने इण्डियन नेशनल काग्रेस की स्थापना की । तत्कालीन वायसराय लाड डफरीन ने अपन शब्दों मे इस शिशु सस्था की मगल कामना करत हुए अनक अधिकारियों के समक्ष आशीवचन कहे । इसके प्रथम अध्यक्ष डबल्यू सी बनर्जी बने और इसमे 70 हिन्दू तथा 2 मुसलमान प्रतिनिधियो ने भाग लिया । यद्यपि इन्होंने अग्रेज सरकार के प्रति पूण शाम धर्मी के भाषण दिये, तथापि इगलण्ड की जनता न इस सस्था को अग्रेजी सरकार के लिए बडी खतरनाक होना बताया । किन्तु भारतीय जनता में काग्रेस की स्थापना से राजनतिक चेतना को पूरा बल मिला । स 1898 म बालगगाधर तिलक ने काग्रेस मे प्रवेश ले करके भारत को पिछडा देश बतलाने वाले नये वायसराय लाड कजन से मोर्चा लेते हुए काय शुरू किया । इन्हीं से प्रभावित होकर पूना के चापेकर भाइयो ने अपने वहाँ के कलेक्टर रैण्ड को मार डाला । उस समय राजद्रोह के अपराध मे तिलक को 18 माह की कडी कद हुई । इस पर जनता अधिक भडक उठी थी ।



सन् 1905-14 मे राजनैतिक जन-जागृति—देश म राष्ट्रीयता देशभक्ति और राजनतिक अधिकार प्राप्त करने के लिए जागति उत्पन्न हुई । स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द ने राजस्थान मे रहकर धम और समाज सुधार के माध्यम से वहाँ के लोगो मे चेतना पदा की । उन्होने हिन्दू धम की श्रेष्ठता बतलाकर जनता का आत्म विश्वास जगा दिया । स्वामी दयान द प्रथम स त थे जो भारत को उन्नत, स्वतन्त्र, स्वावलम्बी तथा शक्तिशाली बनाना चाहते थे । इसलिए स्वामी जी ने धम और

समाज सुधार को प्राथमिकता दी। काग्रेस की स्थापना हो चुकी थी और उसका काम जोरो शोरो पर था। तिलक ने भी "स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" का नारा दे दिया था। इसी समय जापान ने रूस को पराजित करके दुनिया को दिखा दिया था कि पश्चिमी राष्ट्र अजेय नही है।

निभयता, स्वाभिमान, स्वतन्त्रता एव स्वराज्य भावना से ओत प्रोत सन 1906 मे राष्ट्र प्रेम की धुन लिए पुर जोर शब्दो मे गीत गान वाला तरुण स्वामी श्री केशवानद भी आगे आय—"उठ चक्ले फिरगिया डेरा, राज नही रहना वे तेरा।"

उस समय राजस्थान मे रहकर श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा, सिरोही म श्री गोविन्द स्वामी, ब्यावर-अजमेर में दामोदरदास राठी, जयपुर म अर्जुनलाल सेठी, शाहपुरा मे केशरी सिंह बारहठ, खर्वा का गोपालसिंह, गुजर नवयुवक भोपसिंह (शस्त्र सग्रही) आदि ने राजस्थान म आतकपूर्ण कायवाहिया आरम्भ कर रखी थी। इन्होने ई स 1913 मे "वीर भारत समाज नाम की सस्था क्रातिकारियो को क्राति का प्रशिक्षण देने के लिए स्थापित की। बम्बई प्रात म "अभिनव भारत" मध्य भारत मे "आर्य बाधव समाज', बगाल म अनुशीलन समाज" आदि सस्थाएँ भी इस समय (अन्य प्रा तो मे) कायशील थी। बीकानेर के महाराजा गगासिह उदयपुर एव कोटा के क्रम से श्री फतहसिंह, उम्मेद सिंह आदि कुछ नरेश राजस्थान के इस गुप्त सनिक सगठन से छिपे तौर पर सहानुभूति पूवक प्रेम बनाये रखत थे। य सब इनकी सफलता अँग्रेजो की वापिसी और अपनी स्वतन्त्रता की अन्दर ही अन्दर आशा लगाये हुए थे। इस समय राजस्थान म भारी क्रातिकारी कायवाहियाँ चल रही थी।

प्रथम विश्वयुद्ध मे कालू से भी सैनिक गये—वि स 1971-72 (ई. स 1914 15) का यूराप मे इगलण्ड का जमनी से युद्ध छिड गया। लेकिन उस समय भारतीयो ने अग्रेजों के प्रति एक तरह की स्वामी भक्ति दिखलाई। बचार जमन वासी चाहते थे कि भारत अग्रेजो स विरोध करेगा किन्तु उनके लिए सार काय उल्टे हो गय। ई स 1914 की 3 अगस्त (श्रावण सुदी 12, वि स 1971) का बीकानेर महाराजा गगासिह ने भारत के वाइसराय गवनर जनरल लाड हार्डिग्ज और सम्राट पचम जाज को तार भेजकर युद्ध म सम्मिलित होने की इच्छा प्रकट की। अग्रेज तो यही चाहते थे, अत एव ता० 26, 27, 28 अगस्त 1914 (भाद्रपद सुदी 6 7, 8 वि स 1971) बीकानेर की सनाएँ युद्ध क्षेत्र के लिए अन्य राज्यो की सेनाओ के साथ रवाना हुई। गगा रिसाला और शादूल लाइट इन्फन्ट्री के सैनिक भी सम्मिलित थे जो मेजर जीवराज सिंह बीदावत, लाखणसर और मेजर जनरल राजा जीवराज सिंह साडवा की अध्यक्षता में मिश्र (Egypt) तथा पलेस्टाइन म नियुक्त किये गये। ऊँट सेना की बडी माग-वृद्धि हुई, बीकानेर के वीर सनिक पूव म पलस्टाइन से लेकर पश्चिम म सालम (Sollum) एव दक्षिण म खारगा तक शत्रु दल को तुर त निगह दास्ती म लग गय। बीकानेर क गगा रिसाले के बीस सनिको ने कटारा स 20 मील पूव बिर एल-नस म बड़े वीरोचित काय किये। दो सौ बदूकी शत्रुओ स घिर जाने पर बीस सनिकों ने बडे जोर से मुकाबला किया। इनकी वीरता का उल्लेख 'आफिशियल हिस्ट्री आव दि ग्रेट वार, मिलिटरी ऑपरेशन्स इव इजिप्ट ऍड पलेस्टाइन नामक ग्रन्थ की पहली जिल्द म मिलता है।

पृथक ह। इस पर लार्ड कर्जन ने सर्वाधिक जागरूक प्रांत बंगाल का विभाजित कर दिया था। यह पहला उकसाव था। अनेक विरोधों के बावजूद भी 13 अक्टूबर 1905 म बंग-भंग की योजना बन गई थी। विभाजन के बाद तो अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध आंदोलन और भी तीव्र रूप म शुरू हो गया था। माल शिक्षा एवं सम्मान का सर्वत्र बहिष्कार होने लगा था और जिसमे फिरोजशाह मेहता, गोपालकृष्ण गोखले जसे नम्र दलीय नेताओं को भी सम्मिलित होना पड़ा।

जन-क्रांति का शुभारंभ—अंग्रेजों प्रांतों म उनके शासन के प्रति विरोध का प्रचंड बवंडर चलने लगा। लार्ड ने घबरा कर स्थानीय नरेशों से प्रेम सम्पर्क बढ़ा लिया। सन् 1911 में सम्राट पंचम जार्ज ने दिल्ली मे दरबार किया। चतुर राजा लोग भी समझ गये कि जनता अब किसी का नहीं बरशेगी। इसलिए महाराजा गंगासिंह ने अपनी रजत जयंती के समय सन 1912 मे प्रतिनिधि सभा" खोलने का फरमान कर दिया। यह एक दोहरी चाल थी। लेकिन क्रांति समयोचित एव उन्नतिप्रद संकेत था। जिसके कारण गाँवो मे स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए लोक ललक उठे। सुचेतना की यह लहर सन 1913 में साधु सीताराम को साथ लेकर उदयपुर के काश्तकारो ने ठिकानो की बढ़ी लाग बागो तथा अत्याचारों के विरुद्ध, क्रांति प्रबल कर दी थी। चलते युद्ध के समय श्री महेन्द्रप्रताप हरदयाल आदि क्रांतिकारियों ने जर्मन सम्राट से मिलकर सशस्त्र क्रांति की योजना बना ली और उसकी निश्चित तारीख 21 फरवरी 1915 रखी। फिर तो राजस्थान म स्थान स्थान पर क्रांति के कार्यालय बन गये थे। मगर किसी द्रोही ने भेद बताकर सभी को गिरफ्तार करवा दिये। भूपसिंह विजयसिंह पथिक, जयसिंह धाकड़ घनश्याम जोशी आदि नेताओं ने सन 1916 म जनता की पूरी सहायता की थी। ग्रामीणों पर पुलिस के अत्याचार हुए, मगर उन्होंने पंचायती राज्य कायम करके चरखे व करघे के प्रचार से जनता को जागरूक किया।

राजपूताना के कई व्यक्ति सन 1918 के दिल्ली कांग्रेस अधिवेशन म गये। फिर गणेशशंकर विद्यार्थी, चाँदकरण शारदा जमनालाल बजाज गिरधर शर्मा स्वामी नरसिंह देव सरस्वती आदि ने राजपूताना मध्य भारत" सभा खोली। प्रताप' नाम का साप्ताहिक पत्र निकालना शुरू किया और युद्ध समाप्ति के बाद अहिंसात्मक असहयोग आंदोलन चलाया। 6 अप्रैल 1919 म देश व्यापी हड़ताल और प्रदर्शन तथा गिरफ्तारियाँ भी। जलियाँवाला बाग की घटना के बाद तो राजपूताने के राजाओं पर भी जनता के असंतोष, आरोप तथा विरोध चलने लगे। सन 1920 म केसरीसिंह बारहठ अर्जुनलाल सेठी गोपालसिंह आदि छोड़ दिये गये। इस समय राजस्थान केसरी" तथा नवीन राजस्थान नाम के पत्र बजाज और पथिक के द्वारा निकाले गये। तब कालू के लोगो पर भी इसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहा। वे भी उन नेताओं की बातें समाचार पत्रों मे पढ पढ कर खूब प्रचार करने लगे जो शक्ति का प्रयोग कर अंग्रेजों को देश से बाहर निकालना चाहते थ। ऐसे लोगों म यहाँ कालू म मुख्य समाचार पत्र प्रेमी पंडित श्री चेतराम पारीक गांव के पहले कांग्रेसी थ।

कालू म प्रथम आर्य समाज का उदय हुआ, जिसके साथ राष्ट्रीयता भी पनपने लगी। बाहर के लोग आर्य समाज के जरिये भाषण देने आया करते थे। तब कालू के नवयुवक शांतिपूर्वक सुनकर काफी प्रभावित होते। बस तो कालू के युवक धार्मिक चर्चाएँ

ही करते थे, किन्तु महात्मा गांधी के बढ़ते हुए प्रभाव की बातों से जनता को निरन्तर समझाते रहते थे। लेखक के बड़े भाई पूज्य श्री बालूराम सुरवर्ता गाँव के ऐसे नवयुवकों मे अग्रणी थे। वि स 1984 की खरीदी हुई उनकी सत्यार्थप्रकाश गांधीजी के नाटस और उनके अन्य कागजात अभी तक सुरक्षित हैं। वे कालू गाव म राष्ट्रीय कॉग्रेस के प्रथम चवन्नी सदस्य थे। यहाँ के स्वामी श्री गोपालराम (भाट), उमाराम सारस्वत, कालीराम (बुधरदास) मुगनाराम सुनार रामेश्वरलाल गौड़ (रतनगढ) गणेशाराम गोदारा गोपालदास कानेरा आदि सगठित कॉग्रेस कार्यकर्ता थे। गाव के लोग इनसे बातें करना अपना अहित समझते थे। वि स 1987 (ई स 1931) के बाद इस सघ के काफी जन धीरे धीरे परलोकवासी हो गये। मगर राष्ट्रीयता की आदर्श लहर बाद के ग्रामीण युवकों एव विद्यार्थियों म पूर्ण व्याप्त रही। यहाँ पर राष्ट्रीय भावना को जागृत करने के कारण कालू के पटवारी हुँमराज आर्य को त्याग पत्र देना पडा। उस समय बाबू रूपचद नाहटा (जो आगे जाकर नपाल के उत्तरदायी शासन की माग म दो दशक तक काठमांडू जेल म रहा) साहनलाल, बुधमल भोजक, इन पक्तियों का लेखक आदि कॉग्रेस के सदस्य रहे। धीरे धीरे गाँव मे पर्याप्त प्रचार पनपन लगा और अनेक व्यक्ति कॉग्रेसी बन गये।

असहयोग आन्दोलन म टाक के मुसलमानों न पूरा भाग लिया तथा बजाज के अतिरिक्त बहुत से मारवाड़ी व्यापारियों न भी कांग्रेस को खूब आर्थिक सहयोग दिया। स्वदेशी वस्त्र धारण करने पर बीकानेर के महाराजा गगासिंह ने शिवमूर्तिसिंह और सम्पूर्णानद तथा आनन्द शर्मा को नौकरी से निकाल दिये। इन की नीति के साथ राजस्थान के गाँवों म भी स्वदेशी वस्तु प्रचलन, खादी का पहनावा और राष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना होने लगी थी। गाँधीजी नेता नहीं अब महात्मा बन गये थे। सन् 1922 म उन्होंने नागरिक आन्दोलन चलाने की सरकार को सूचना दी। गांधीजी गिरफ्तार कर लिये गये और छ साल की सजा बोली गई। लेकिन फरवरी 1924 म अस्वस्थता के कारण छोड दिये गये।



महात्मा गांधी

। ? फरवरी 1921 म राष्ट्रीयता के भावों की वृद्धि तथा सगठन राजनैतिक कार्य-कलापों को बढावा देने के लिए विजयसिंह पथिक, रामनारायण चौधरी तथा हरि भाई किंकर ने राजस्थान सेवा सघ की स्थापना की। श्री माणकलाल वर्मा, नानूराम व्यास शोभालाल गुप्त, लाधूराम जोशी और श्रीमती अजना देवी इसके कार्य कर्ता सदस्य बने। जोधपुर म इससे पहले मारवाड़ हितकारिणी सभा चाँदमल सुराणा और फिर जयनारायण व्यास द्वारा सचालित थी। इसके 10000 सदस्य बना लेने पर श्री व्यास लोक नायक कहलाये। लगान न देने पर उदयपुर जोधपुर सिरोही शीना पालनपुर, ईडर आदि राज्यों ने भीलों गगासियो आदि पर गोला चलाकर भय से इकरारनामे करा लिये। देशी राज्यों म कई गाँव कई बार जला दिये गये और सकड़ों व्यक्तियों को मौत

क घाट उतार कर लगान वसूल किया गया। नेताओ को बहुत दूर क अज्ञातवास दे दिये गये। इसके बाद किसानो पर अत्याचार के विरुद्ध जन आ दोलन छिड गय। जनता की दुर्गति हुई। समाचार पत्रो मे शासन की अमानुषिकता का पूरा विवरण छपने लगा। सन 25 म जयपुर राज्य ने भी निर्दयता पूण दमन किया। सन 1926 मे असतोष के कारण जयपुर राज्य म पाँच दिन की पूण हडताल रही जिसके विरुद्ध हडतालियो पर लाठियाँ चलाई गई और गिरफ्तारिया भी हुई। सन 1929 म राजस्थान क सारे नेता राज्य शासन के दमन चक्र म पीडित किय गय। नरेन्द्र मडल बटलर जाँच समिति, साईमन कमीशन आदि सब कायवाहियाँ जनता क बढते असतोष को मिटाने के लिये अग्रेजी सरकार द्वारा की गई। मगर जनता का विरोध इन सबके विरूद्ध भडकता गया। उस समय राजस्थान म सत्याग्रह का केन्द्र अजमेर था। अजु नलाल सेठी, जीतमल लूणिया अचलेश्वर प्रसाद शर्मा, हरिभाऊ उपाध्याय आदि अनेक नेता बार बार गिरफ्तार हुए और सत्याग्रह करते रह।

साईमन समिति की रिपोट पर ब्रिटिश सरकार ने भारत के प्रतिनिधि नरेशो सहित सन 1930 31 म शासन की भावी योजना हेतु करीब दो माह तक गोलमेज सम्मेलन चलाया। जिसका नतीजा प्रातीय शासन के आंतरिक मामलो म स्वतत्रता दने के हक मे हो दिखाई दिया। महात्मा गाँधी ने वायसराय लाड इर्विन से मुलाकात करके समझौता किया। इसके बाद 23 माच स 31 को भगतसिंह राजगुरू व सुखदेव को फाँसी दकर उनकी लाशें नष्ट कर दी गई। इससे जनता मे बडा रोष व्याप्त हुआ। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन म महाराजा गगासिह न सघ पालिका म जनता प्रतिनिधियो को लेने की माग को ठुकरा दिया। चार माह तक सम्मेलन चला और गाधी जी के भारत आ जाने पर काग्रेस को गैर कानूनी घोषित करके गाधी जी सहित सब नेता गिरफ्तार कर लिये गये। राजस्थान म भी काग्रेस से सम्बद्ध एव अन्य सस्थाओ के कायकर्त्ताओ को पकड लिये। सन् 32 म तीसरा गोलमेज सम्मेलन हुआ, मगर राजाओ ने भारतीय सघ म सम्मिलित होने का सम्मेलन मे उत्साह नही दिखाया। इन सबके बावजूद अगस्त स 35 म ब्रिटिश पालियामट न भारत के लिए एक नया सविधान बनाया। इसक बाद द्वितीय महायुद्ध आरम्भ हो गया और रियासतो राज्यो व जनता क बीच वसे ही झगडा के रूप अम्बार झुके रहे।

आगे चल कर द्वितीय महायुद्ध शुरू हुआ। 3 सितम्बर 1939 म अग्रेजो का जमनी से युद्ध शुरू हो गया, वायसराय ने भारत को भी युद्धरत घोषित कर दिया। काग्रेस ने उक्त घोषणा का विरोध किया और राज्यो के काँग्रेसी मत्री मडलो (आठ) ने नवम्बर 39 म अपना इस्तीफा दे दिया। काग्रेस का विरोध होते हुए भी भारतीय राजाओ ने युद्ध आरम्भ होते ही भरसक सहायता दने के लिए वायसराय को तार दे दिये। महाराजा गगासिंह न 6 सितम्बर को तार दिया तथा डेढ लाख रुपये और 1000 पौंड का भेंट किए। सेना, शुतर सेना (गगा रिसाला) सादू ल इफेन्ट्री विजय बटरी आदि सेनाओ का लदन क लिए यूरोप भेजा गया। बीकानेर म एक युद्ध बदी शिविर और युद्ध म घायल तथा बीमारो के लिए दो सैनिक सफाखाने भी खाले। वायुयान लघु टक के क्रय बाबत, भारतीय और अग्रेज सनिको की सुविधा हेतु तथा लदन जनता की सहायताय एव रडक्रॉस आदि अन्य सहायता कार्यों के लिए श्री गगासिंह

ने अपन खजान और रियासत का स्थिति से 15 19063 रुपय, छ आने, दा पाई की आर्थिक सहायता भी पहुँचाई। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सन् 1942 म ब्रिटिश सरकार की ओर से कुछ प्रस्ताव लेकर शान्ति बनाये रखने हेतु सर स्टफड क्रिप्स भारत आया। राजाओ न उसको पूण सहयोग दने क वचन दिय। मगर कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के नेता बिल्कुल इन्कार हो गए। क्रिप्स बचारा दोहरी वार्ते लकर वापिस लौट गया।

जून 42 मे भारत के प्रसिद्ध क्रातिकारी रामबिहारी बास का प्रेरणा स बदी कप्तान माहनसिंह न 16000 सनिको का आजाद हिन्द फौज का सगठन बना लिया था। जमनी पहुँचे हुए सुभाष चन्द्र बास न 5 जुलाई 43 का सिंगापुर म भारतीयो का नेतृत्व एव आजाद हिन्द फौज की अगवानी का काय हाथ म ले लिया। तब 21 अक्तूबर 43 को अस्थायी अजाद हिन्द सरकार का स्थापना हुई, जिसका जापान जमना इटली आदि दशा ने प्रामाणिकता प्रदान का। कांग्रेस न गाधी जी की गरिमा के साथ 'अग्रेजा भारत छोडा' का प्रस्ताव पारित कर दिया। इस पर दश के बड बडे नेता गिरफ्तार कर लिये गए। तब भारतीयो न ऐसी-एसी शासन विराधी कार्यवाहिया आरम्भ की जिसस अग्रेजी सरकार के नाक म दम आ गया। जत आन्दालन हुए, गोलिया चली और जलें भरी गई। सन् 1945 मे अमरिका की सहायता से महायुद्ध म अग्रेजा का विजय हुई। किन्तु वे भारत का शासन जनता के सहयाग बिना चलाना कठिन समझन लगे। इसलिए 14 जनवरी 45 का कांग्रेस कायकारिणी क सदस्य जला से मुक्त कर दिये और तत्कालीन वायसराय लाड ववल न अपना कायकारिणी के गठन हतु भारतीय नेताओ का एक सम्मेलन (हिन्दू मुस्लिम सहित) शिमला म बुलवाया, उस समय फरवरी 46 म बम्बई क नौ सेना क सनिका ने विद्राह कर दिया और बिहार म पुलिस न हडताल कर दी। इसलिए माच 46 म पुन शान्ति की वाता हतु लदन स अग्रेज मन्त्रीमडल मिशन (अग्रेज भारतीयो तथा कांग्रेस एव लाग का) भारतीय गतिराध को कूटनीति पूवक मिटान क लिए आया। 16 अगस्त 46 का सीधी कारवाइ करन के दिन कलकत्ता म हिन्दुओ का बहुत बडी सख्या म कत्ल कर दिया गया। अगले साल लाखा स्त्री पुरुष एव बच्चे बबरता के साथ साप्रदायिक क्रूरता क शिकार हा गय।

भारत क वाइसराय लाड ववल न शिमला म दश क राजनीतिज्ञा का एक सम्मेलन बुलाया, किन्तु वह जिन्ना साहब की जिद क कारण असफल रहा। श्री गापाल प्रसाद व्यास न लिखा—

> सूर सूर, तुलसी शशि उडगन कशवदास,
> पत निराला वल्ब हैं लालटन है व्यास
> लालटेन है व्यास कि जिसम तल नही है
> बत्ती बिगडी हुइ कि जलना खल नही है
> (मॉडल उनतालीस का, बनना मल नही है)
> छद, रस अलकार से यद्यपि कासो दूर है
> फिर भी इसका क्या करें ? आदत स मजबूर है
> आदत स मजबूर जिस तरह मिस्टर जिन्ना
> बठे शिमला शिखर, बजाव ता धा धिन्ना
> सब के सही मिजाज मगर वे ऐचक तिन्ना

यद्यपि पाकिस्तान में, य भी वासा दूर है
फिर भी इसका क्या करें ? आदत से मजबूर हैं

16 अगस्त 1946 का मुस्लिम लीग न सीधा कार्यवाही दिवस ' मनाया जिसस देश क कई भाग म ज्वाला धधक उठी और अपार जन धन की हानि हुई। स्मरण हा दिल दहला दे, ऐसे काण्ड हुए। घर जला दिये फसलें नष्ट की गई मदिर नष्ट किय गए औरता का उठा ले गय। नोआखाली के हिन्दुआ पर मान वाले अत्याचारा का बदला बिहार क मुसलमाना को भुगतना पडा। सन 1947 माच म लाड माउण्टबेटन, लाड वेवल के स्थान पर आये। गांधीजा क बिना काग्रेस क नताआ और कांग्रेस काय समिति ने राष्ट्र मे होन वाल दगा लूटपाट आदि नरसंहारी घटनाआ के दबाव म विवश होकर विभाजन की माग को मा यता द दी। 15 अगस्त 1947 का विभाजन क साथ भारत स्वतन्त्र हो गया।

पाशविकताएँ पनप उठा भारी नरमध हुए और असख्य बेकसूर जानें गईं। घर बार खेती जायदाद और नाखा क कारोबार छोडकर भिखारी के रूप मे पजाब व सिंध के लोगा का अनिश्चितता की राह नापना पडा। महा भयकर उपद्रव हुए। बीकानेर के महाराजा ने मुसलमाना से भरी रेल गाडिया सुरक्षित पाकिस्तान पहुँचा देने क प्रयत्न किए मगर कई रेलें बीच म ही रोक कर उपद्रवियो के हाथो से खत्म कर दी गई। लोहारू मे इस तरह की रेलगाडियाँ राजगढ नोहर भादरा होती हुई तथा कई गगानगर द्वारा पाकिस्तान पहुँच गई। कितु पीछे कई ट्रेनें दुर्गति के गत मे घिर कर तहस नहस हो गइ। बीकानेर श्रीगगानगर और चूरू के मुसलमान भी घर बार माल असबाब सब छोडकर भाग निकले। उनकी गाय भैंसें आदि पशुआ के समूह भटक गये। इन पशुओ के समूह का गांवा म ले जाकर सरकार द्वारा नीलाम किए गये। गाँव कानू म भी एसी गाया भसा के वाग (झुण्ड) आय थ जो जनता ने बोली देकर एक-दो एव दो की सख्या मे खरीद लिए। लेखक न तीस-तीस रुपया म तीन बिना ब्याई पाडियाँ (भैंसें) खरीदी थी।

इस भयकर अदला बदली म यहाँ के मुसलमान पाकिस्तान गय वसे ही वहा के हिन्दू भी यहा आकर निर्वासित हुए। 6 लाख मरे 1 करोड 40 लाख अपन घरो से निकाले गये। दोना ओर से एक लाख जवान लडकियो का अपहरण किया गया जिनके जबरदस्ती से धम परिवतन और नीलामा मे बेचे जाने के काण्ड भी हुए। नय बने राष्ट्र पाकिस्तान क साथ लगभग दा सौ मील तक बीकानेर की सीमा थी। इसलिए उस समय बीकानेर का बहुत महत्वपूण स्थान रहा। एक देश स दूसरे देश आन जाने वाल लोगो को बीकानेर राज्य से विभिन्न सहायताएँ मिला। राज्य का दृढ निश्चय यह रहा कि जाति और धम का ध्यान रखे बिना अधिक से अधिक लोगा का बचाकर मानवीय काय को हर प्रकार से पूरा किया जाय। मुसलमानो का रहना असम्भव जानकर उन्ह रियासत की सेना क सरक्षण म सुरक्षित पहुँचाये। दोना तरफ से आने जाने वाल शरणार्थियो को स्थान, भोजन और हानि पूर्ति सहित उनके आसू पोंछे (सुरक्षा का प्रबन्ध किया)।

शरणार्थियों के लिए भारत में कहीं भी ऐसी आर्थिक सहायता नहीं हुई।[1] लेकिन बीकानेर ने अपनी धार्मिक, सहिष्णुता और धर्म निरपेक्षता की परम्परा रखी। चूरू, राजगढ़ और सुजानगढ़ में भी राज्य ने ऐसे ही प्रबंध करवा दिये। (गंगासिंह जी जैसे अपने को राज्य और प्रजा का सबसे बड़ा सेवक कहते, वैसे ही महाराजा शार्दूलसिंह 'प्रजा हित व्रतिनोवियम' के जीवन आदर्श नियमों पर चले। उनकी नगर निर्माण योजना में गहरी रुचि थी। राज्य के कस्बों में नल कष्ट निवारण में उनका यह सफल सबूत है।

ब्रिटिश सरकार ने 20 फरवरी 1947 को घोषणा की थी कि वह जून 48 तक भारतीयों को सत्ता सौंप देगी। मार्च में लार्ड वेवल की जगह लार्ड माउन्टबेटन आया, तब साम्प्रदायिक दंगे बढ़ रहे थे। उसने ब्रिटिश सरकार से सलाह मशविरा करके कूट

---

1 शरणार्थी बनकर आये और पुरुषार्थी बनकर बस गये। ऐसी घबरायी स्थिति से एक टाटा बनिया का परिवार अंग्रेजी राज्य के सिंध प्रान्त से भागते हुए जान बचाकर कालू का वासिन्दगान बना। यह वंश तालुका (तहसील) शक्‍द, जिला— नवाबशाह का रहने वाला तीन भाइयों का एक घराना—साँवलराम ब्रेडाराम आसनराम पिसरान (मानचन्द) मि घी गांव कालू में रहने लगा। इस परिवार ने अगस्त 1947 में अपनी जन्मभूमि छोड़कर हिन्दुस्तान में प्रवेश पाया था। किन्तु अन्य भाषा देश और कठोर आबहवा के संकटों के कारण ये लोग शीघ्र किसी एक जगह आवास बनाकर नहीं बैठ सके और कुछ समय के लिए (दिसम्बर 1947) श्री डूंगरगढ़ में किरायेदार बनकर रहे।

इनमें साधारण व्यापार की योग्यता और व्यवहार चातुरी थी। सन् 49 में इन्होंने कस्बा कालू में आकर बीच बाजार में परचून की दुकान खोली। दूसरी दुकान सब्जी मिठाई और चाय की चलाई कि कालू के मध्य मदार मे-स्टैण्ड पर एक दफ्तर ते उपस्थित हो गया। सावल में सहनशीलता बडाराम में मिलनसारी। इन्हें अपने आप चेजे का, लकड़ी का, मिठाइयां बनाने और खेती क्रमचे के काम करने में बड़ी मुस्तैदी से जल्दी सफलता मिल गई। पीछे का एवज में जमींदारी, व्यापार माल-असबाब और पशुधन पुरुषार्थ से पुनः बना लिए। छोटी दुकानें खोलकर बैठ तथा शारीरिक मेहनत और कार्यकुशलता में भटके जीवन को स्वयं सार्थक कर लिया।

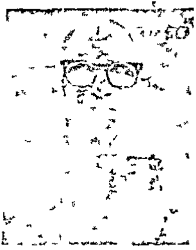
इन्होंने सुना—बरबाद हुई पिछली सम्पत्ति के लिए भारत सरकार सहायतार्थ राशि देती है। इन्होंने भी लाख रुपयों के लिए आवेदन पत्र भरे। मगर यहाँ की सरकार से पूरी जानकारी व पहुँच न होने के कारण वे फॉर्म अधूरे रह गये और सहायता नहीं मिली।

ये सनातन धर्मी हैं शरणार्थी कहलाते हैं। आपस में सगे सम्बन्धियों से मिलते हैं—तब जयराम जयराम का अभिवादन करते हैं। जयपुर जोधपुर, बीकानेर आदि नगरों में इस बिरादरी वालों के अनेक मन्दिर बने हुए हैं। इनकी भाषा सिंधी है, जो आपस में बोलते हैं, लेकिन अन्य लोगों के साथ राजस्थानी का प्रयोग करना सीख लिया है। इनके बडे-बूढ़े लहंदा लिपि में हिसाब किताब लिखते, किन्तु नई पीढ़ी में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचलन हो गया है। ये अभी भी उस खण्डित राष्ट्र स्वतन्त्रता की घटना को स्मरण करके बीकानेर राज्य और उसके तत्कालीन महा० का गुणगान करते हैं।

नीतिपूर्ण योजना में भारत का दो राष्ट्रों में विभाजन करने की घोषणा कर दी, जिसे दोनों वर्गों के राजनैतिक दलों ने मान लिया। ब्रिटिश पार्लियामेंट के प्रधानमंत्री एटली ने घोषणा करके भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम पारित कर दिया। 15 अगस्त 1947 से हिन्दुस्तान के दो भाग—स्वतन्त्र भारत और पाकिस्तान बन गए। इस अवसर पर डॉ० राजेन्द्रप्रसाद ने अंग्रेजों की उदारता बताते हुए कहा—'यह स्वतन्त्रता हमारे बलिदान, कष्ट सहिष्णुता, संसार की घटना परिस्थितियों तथा अंग्रेज जाति की ऐतिहासिक परम्परा व प्रजातान्त्रिक भावना के कारण मिली है।' इस कथन के बाद डा० के० एम० मुंशी ने भारत और ब्रिटेन दोनों की प्रशंसा की थी। भारतीय स्वतन्त्रता के लिए महात्मा गांधी, रासबिहारी बोस, सुभाषचन्द्र बोस और सावरकर जैसे सैकड़ों क्रान्तिकारियों ने इसके लिए एक लग्न से अपने आपको निछावर कर दिया। तब कहीं देश को ये आगे में कठिन स्वतन्त्रता प्राप्त हुई।

कांग्रेस, रियासतों को भारत का ही एक भाग मानती थी। इसलिए राज्यों में प्रजामंडल आदि संस्थाएँ कायम हुईं और जनता में विशेष जागृति आ गई। राजाओं ने इस जागृति को नष्ट करने के लिए जाब्ता फौजदारी संशोधन कानून तथा जन सुरक्षा कानून बनाकर सब राजनैतिक संस्थाओं को सरकारी मान्यता प्राप्त करने के लिए बाध्य किया। लेकिन उनकी कठोर शर्तों के बावजूद जन नेताओं ने अपने स्वेच्छाचारी राजाओं के विरुद्ध संघर्ष प्रारम्भ कर दिया। ऐसे संघर्ष सन 1939 से 48 तक निरन्तर चले थे। जन नेताओं पर पुलिस अत्याचार तथा कठोर कारावास आदि की यातनाएँ हुईं। जनता का द्रव्य नाश और स्त्री नेताओं की इज्जत हनन। कई व्यक्तियों को अपनी जान से भी हाथ धोने पड़े। जोधपुर का बालमुकुन्द बिस्सा, बीकानेर का बीरबल, जैसलमेर का सागरमल गोपा, भरतपुर का रमेश स्वामी, धौलपुर का पंचम और कोटा का नन्नूराम शर्मा वगैरह अपने राज्यों के शासन सुधार आन्दोलनों में मारे गए।

किसान आंदोलन और कालू के व्यक्ति—कालू के अधिकतर व्यक्तियों का मुख्य धंधा खेती का था परन्तु खेती की यहाँ हालत खराब थी। गाँव की जमीन का अधिक क्षेत्र बंजड़ आराजी गैर मक्बूजा और सूखा था। इसलिए अकाल अधिक पड़ते थे। अकाल के कारण मनुष्यों एवं जानवरों की मौत भी हो जाया करती थी। जिससे जन साधारण को काफी कष्ट सहने पड़ते थे। वि० स० 1956 और 1996 (ई० सन 1899 व 1939) के अकाल महाभयंकर दुर्भिक्ष थे जो अभी भी लोगों को याद है। ऐसे समय में लोग बड़ा मुश्किल से गुजर कर पाते थे। यहाँ के खेती के ढंग भी पुराने चलते थे। इसलिए ठिकाने की रकम देने में भी कठिनाई होती थी। तिस पर बेठ बेगार लाग बाग भी सिर चढ़ी रहती। इसलिए सामन्तशाही के विरुद्ध किसानों के जो भी आन्दोलन हुए कालू के नेता लोग उनके साथ रहे। पटवारी श्री हंसराज आर्य नौकरी से स्तीफा देकर किसान आन्दोलन में कूद पड़े।



श्री हंसराज आर्य

जनता को उत्तरदायी शासन देने का रियासती जिक्र—देश के राष्ट्रीय आन्दोलन का सगठन बन रहा था। देशी रजवाडे भी सगठित होने लगे थे। हरिपुरा कांग्रेस के बाद देशी राज्यों मे राजनीतिक काय हेतु "अ० भा० देशी राज्य प्रजा परिषद्' की स्थापना हुई। उन्ही दिनो मैसूर के राजा ने जन जागति के विरुद्ध दमन चक्र चला दिया। राजपूताना की अन्य रियासतें जयपुर, जोधपुर बीकानेर एव जैसलमेर में भी वहा की जनता अधिकारों के लिए अपने-अपने ढग से आन्दोलन करने लगी थी। जयपुर का जनता का सत्याग्रह कांग्रेस के सम्माननीय नेता एव कोषाध्यक्ष श्री जमनालाल बजाज के नेतृत्व मे सगठित होकर चला था। उस समय मेवाड प्रजा मडल' को गरकानूनी घोषित करके वहाँ के नेता जेल मे ठूस दिए गये। क्योंकि हैदराबाद त्रावणकोर तथा कोचीन में सरकारी दमन काय चल रहा था। सारे देश मे विद्रोह की आग सुलग रही थी। तब राजपूताना शीतल कैसे रहता?

तत्कालीन समय मे भारत की 562 रियासतों मे से केवल एक रियासत "औंध" ऐसी निकली, जिसने महात्मा गाधी के विचारानुकूल सबसे प्रथम अंग्रेजों के शासनकाल मे ही जनता को पूरी तरह उत्तरदायी शासन दे दिया था। गाधीजी से अपनी रियासत के लिए निर्मित विधान को स्वीकृत करवाया और अपने खच हेतु छत्तीस हजार (तीन लाख की आमदनी में से) रुपयो के बजट से काम चला लेने का पथ प्रदर्शित किया। गाधीजी ने 19 नवम्बर 1939 के "हरिजन" मे 'औंध" राज्य के बारे में लिखा था "औंध मे शासन सुधार,के काय हो रहे हैं तो दूसरी तरफ कई देशी रियासतो में दमनचक्र के अखड चल रहे हैं।" मतलब—सत्याग्रह स्थगित कर दिये जाने पर भी राज्य मे प्रजाकीय सगठित सस्थाओं को कानूनी रूप नहीं दिया जा रहा था।

उत्तरदायी सरकार बनाने के लिए आन्दोलन—ई स 1920 के कांग्रेस (नागपुर) अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित था कि "सभी नरेश अपने राज्यों में तुरन्त उत्तरदायी सरकार स्थापित कर देवें" 5 माघ सन 1938 को कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन का प्रस्ताव था कि कांग्रेस, रियासतों को भारत का ही एक भाग मानती है, जिसे कभी अलग नही किया जा सकता।

बीकानेर राज्य मे जनता हेतु राजनैतिक चेतना का आविर्भाव होना जरूरी था। इसलिए 'प्रजा परिषद" की स्थापना सन 1942 में रघुवरदयाल गोयल ने की। किन्तु राज्य ने इसे गैर कानूनी घोषित करके खत्म कर देने के आसार प्रकट किये। गोयल को राज्य से निर्वासित कर दिया। छ महीनो बाद बीकानेर मे आया। तब पुन गगादास दाऊदयाल आचार्य के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। 26 जनवरी 1943 को स्वतन्त्रता दिवस मनाने पर वैद्य मघाराम, भीखालाल, रामनारायण आदि भी गिरफ्तार किये गये जो गगासिह जी के जीवन-काल में नहीं छूट सके। 2 फरवरी 1943 को महाराजा का देहान्त हुआ तब इन्हें छोडने का नम्बर आया।

बीकानेर की भौतिक रूप सम्वृद्धि गगासिह जी ने की। उत्तरी भाग मे गगनहर लाकर सर सब्ज क्षेत्र बना दिया। जिसके लिए न केवल बीकानेर वल्कि राजस्थान भी कुछ हद तक ऋणी है। परम प्रतापी श्री गगासिह राजस्थान के महान प्रभावशाली शासक ही नही, अपितु भारत के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र के ख्याति प्राप्त

व्यक्तित्व वाले भूपति थे। महाराजा का घोषणाएँ "मेरी प्यारी प्रजा" के सम्बोधन से राजस्थानी भाषण व्यक्तव्य तथा अंग्रेजी स्पीच देने के तरीके बडे मधुर एवं निराले थे। उनके शासनकाल में प्रगतिशील राज्यों की भांति न केवल धारा सभा, तथापि नगर पालिकाएँ जिलाबोर्ड व पंचायतें भी स्थापित थी। महाराजा अपने निजी खर्च की सीमा बंधी, राज्य के आय, व्यय का हिसाब धारा सभा में पेश करने लगे थे। शहर में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य करने जैसे अनेक गौरवपूर्ण सुधार कार्य, श्री गंगासिंह जी ने कर रखे थे। मगर राजनैतिक दृष्टि से बीकानेर राज्य अन्य राज्यों से आगे नहीं निकल सका। महाराजा ने अपने शासन के अन्तिम 20 वर्षों में भारत में अपूर्व जन जागृति की लहरें उठती देखी, लेकिन बीकानेर में एक तरह से दमन, उत्पीडन व शोषण ही प्रकट होता रहा। महाराजा गंगासिंह का ई स 1943 में दो फरवरी को देहावसान हो गया। उनके उत्तराधिकारी श्री सादूलसिंह भी पितृ परम्परा नीति लिये रहे। 1945 और 46 में जागीरदारों के अत्याचारों के विरुद्ध दूधवाखारा, बीकानेर राजगढ के किसानो द्वारा किया गया। सत्याग्रह राज्य ने कडाई के साथ दबा दिया। चौ कुम्भाराम आर्य पुलिस इंस्पेक्टर की नौकरी छोडकर प्रजा परिषद में आ गये। किन्तु रघुवरदयाल गोयल, गणपतसिंह हीरालाल शर्मा और कुम्भाराम वगैरह परिषद के सब कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर लिए गये। इसके पश्चात 30 जून को राय सिंह नगर में बीकानेर राज्य का प्रथम राजनैतिक सम्मेलन किया गया। इसका संयोजक रामचन्द्र जैन, स्वागताध्यक्ष चौ० हरदत्तसिंह रहे। बीकानेर से महाराजा सहित राजकीय ऑफिसर शामिल हुए। वहाँ लाठियाँ चली, कई नेता गिरफ्तार कर लिये गये। इसमें बीरबल जीणगर शहीद हुआ। यह जाग्रति देखकर महाराजा ने 26 जुलाई को उत्तरदायी सरकार स्थापित करने की घोषणा कर दी। राजनैतिक बंदी छोड दिए। 13 सितम्बर 1946 को बीकानेर में कार्यकर्त्ता सम्मेलन हुआ। उसमें रामचन्द्र जैन रामलाल, मालचन्द्र हिसारिया आदि को वहीं पर फिर गिरफ्तार कर लिया। कुम्भाराम पर वारंट निकाला गया। अक्टूबर 29 को प्रजा परिषद ने पुनः कार्यकर्त्ता सम्मेलन बुलाया। उस समय चौ० हरदत्तसिंह मुंसिफ पद छोडकर प्रजा परिषद का सदस्य बना था, पर गुरुदयालसिंह आदि के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। तत्कालीन समय में बीकानेर राज्य के जागीरी गाँव कांगड के किसानों ने अनुचित लाग बाग एवं लगाने के लिए जागीरदार का विरोध किया उसके आदमियों ने गाँव में लूट मार बेइज्जती एवं किसानो के घर नष्ट किये। इसलिए महाराजा के सामने जाने पर भी उनकी सुनी अनसुनी कर दी गई। तब प्रजा परिषद ने अपने सात व्यक्तियों को जाँच के लिए कांगड भेजा। जागीरदार ने इन सातों को अपने गढ़ में बुलवाया और नग्न करवाकर बुरी तरह से पीटा। इनमें से एक दो आदमी तो बेहोश हो गए। फिर श्री हंसराज आर्य की हिम्मत एवं बुद्धिमानी से वे स्वामी सच्चिदानन्द, केदारनाथ दीपचन्द मौजीराम रंगा रूपराम और स्वयं सहित सातों गाँव से बाहर निकल पाये। इतिहास में यह काण्ड 'कांगड काण्ड' के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। ई स 1947 में देश स्वतन्त्रता के समय भी यहाँ राष्ट्रीय ध्वज का अपमान किया गया।

चालू के पास गाँव करणीसर में उस समय जागीरदार द्वारा एक कांग्रेसी नेता श्री जगरामदास स्वामी को मरवा दिया गया। गारवदेसर के ठाकुर की लडाई में

अपने गाँव बीकमसर में श्री अलानीन खत्म हुआ ।[1] श्री दूलाराम नाई और कांग्रेसी नेता तेजमाल बागडीका गारद देना छोडना पडा । महाजन के राजा ने बहुत से लोगों को इस समय गाँव से निकाल दिए । आटसर के ठाकुर ने गुलाराम का गिरफ्तार करवाने की बडी कोशिश की । महजरासर के ठाकुर ने भी मोपालाराम को ढाणी बसाने के लिए बाध्य किया था ।[2]

कांग्रेस प्रतिष्ठान और राज्य परिवर्तन—वैसे तो बीकानेर राज्य में प्रतिनिधि सभा 1913 से स्थापित थी और उसमें 35 सदस्य बनते थे । किन्तु स० 17 में यह विधान सभा कहलाने लगी । 1937 में इसकी सदस्य संख्या 45 हो गई । 6 कार्यकारिणी परिषद के 20 चुनिंदे और 19 मनोनीत । विधान सभा को लोक प्रिय बनाने हेतु इसके पुनर्गठन की घोषणा महाराजा ने 1946 में की और 47 में बीकानेर संविधान अधिनियम लागू किया । 4 अप्रैल में महाराजा ने उत्तरदायी सरकार बना देने की घोषणा की । तब तक के लिए एक अन्तरिम मन्त्री मण्डल 18 मार्च 1948 का बनाया गया था इसमें 9 मंत्री, एक प्रधान मन्त्री, चार प्रजापरिषद से, शेष विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि मनोनीत किये । प्रजापरिषद से हरदत्त सिंह उप प्रधानमन्त्री तथा गौरीशंकर मस्तानसिंह व कुम्भाराम को मन्त्री बनाया । लेकिन यह भंग हो गई और दूसरे वर्ष बीकानेर राज्य राजस्थान संघ में मिल गया ।

जोधपुर राज्य में स्थापित मारवाड लोक परिषद' महाराजा की कृपा पात्र बन कर स० 1938 में स्थापित हुई थी, पर इसके विरोध में राज्य सरकार के संकेत से खुली श्री 'राजभक्त देशहित कारिणी सभा" सही मानी गई । दिसम्बर 38 में तत्कालीन का० अध्यक्ष श्री सुभाषचन्द्र बोस जोधपुर आये । उन्होंने ऐसी परिस्थितियाँ देखकर कहा था कि 'जोधपुर राज्य में नागरिक स्वतन्त्रता तथा उत्तरदायी सरकार स्थापित करने के लिए स्थिति गडबड है ।" स० 38 में जोधपुर राज्य में सलाहकार बोर्ड बना, लेकिन दिखावा मात्र कार्यशील रहा । श्री जयनारायण व्यास उसके सदस्य बने । मगर सुधारों के प्रति वे निराश होकर वापस निकल गये । 'लोक परिषद" से सन 1940 में फिर उत्तरदायी शासन की लडाई शुरू की । तब श्री व्यास, अचलेश्वरप्रसाद शर्मा किशोरमल मेहता आदि को अच्छे व्यवहार से गिरफ्तार करके परिषद को अवैध आदेशित कर दिया । आखिरी आंदोलन के सामने महाराजा के घुटने टिक गये । परिषद से समझौता हुआ, सब राजनतिक कार्यकर्ताओं को छोडा । राज्य की आर्वे म० 1941 में खुली जबकि नगरपालिकाओं के चुनाव में लोक परिषद का लोकप्रियता के साथ भारी बहुमत रहा । फिर सन् 42 में किसानों व जागीरदारों के मध्य लागबाग लगानादि के विषय में झगडे बढे । लोक परिषद की प्रेरणा से लाडनूं, नीमाज, चाडावल आदि जागीरी गाँवों के किसानों में खूब जागृति आई, लेकिन जागीरदारों द्वारा कई स्थानों में किसान बुरी तरह पीटे गये । लोक परिषद को पुनः सत्याग्रह करना पडा । तब श्री व्यास, बालमुकुन्द

1. कथा मत कर गीरवो, बम बीका र बास,
   तीनू मेला लाभसी, मोर फोट सावास ।
2. श्री गिरधारीलाल जयनारायण और दुर्गादत्त गाँव के नाम विजय नवन गये । भारी मटकार मिली । लेखक को भी काल अमर चन्द बामनार ने धमकी दी ।

मथुरादास माथुर, छगनराज, मीठालाल त्रिवेदी, अचलेश्वरप्रसाद वगैरह को गिरफ्तार करके जेल भेज दिए। जिसमे पिटाई से बालमुकुन्द की मृत्यु हो गई। जनता म रोष फैला, बम तक गिराने के प्रयास हुए। आगे जाकर 1944 मे यह राजनैतिक वातावरण सुधरा। सन् 45 में देश राज्य लोक परिषद के अध्यक्ष प० जवाहरलाल नेहरू जोधपुर आये। महाराजा न मिलकर जनहित सद्भावना नसीहत मानी। किन्तु स० 1947 म काश्तकारो का जागीरदारा के साथ भारी विवाद बढ गया। डाबरा-गाँव के किसान सम्मेलन म नेताओ पर गोलियाँ व तलवारें चल गई, जिसमे नरसिंह कछवाहा, राधा किशनतान, मथुरादास द्वारकाप्रसाद पुरोहित, छगनराज प्रभृति लोग घायल हुए। फिर इसी साल जोधपुर राज्य न अपन प्रतिनिधि, केन्द्रीय सविधान सभा म भेजे। पर जोधपुर नरेश उम्मेदसिंह 47 म स्वर्गवासी हो गय। तब उसके नौजवान महाराजकुमार हनुवन्त सिंह जोधपुर राज्य को पाकिस्तान मे मिलान को तयार हो गय। फिर उसे अपना राज्य भारत सघ म सम्मिलित करना पडा। अन्त म महाराजा न 31 अगस्त 1948 मे राज्य के शासन सबधी कामो के प्रति जिम्मेवार मत्री मडल की स्थापना कर दी। मुख्यमत्री श्री व्यास दीवान पी एस राव, मत्री द्वारकाप्रसाद, मथुरादास, नाथूराम मिर्धा, हनुवन्त सिंह व बहादुरसिंह हुए। यह मत्री मडल राजस्थान के निर्माण (30 मार्च 1949) तक चला और फिर जोधपुर राज्य वृहत राजस्थान म विलीन हो गया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति क लिए अ य राज्यो की तुलना म जयपुर राज्य को कम सघर्ष करने पडे। उसके शेखावटी क्षेत्र म किसानों जागीरदारो का झगडा द्वितीय महायुद्ध के समय से ही चलता था। फिर हरलालसिंह नेतराम व नरोत्तमलाल जोशी के नेतृत्व म आन्दोलन चला। किन्तु जयपुर राज्य, प्रजामडल व किसानो की सहायता मे रहा। जून 1942 मे प्र० मत्री मिर्जा इस्माइल न उदारतापूवक किसानो की माँगें मान ली। अगस्त 1946 मे आन्दोलन (भारत छोडो) के समय यहाँ प्रजामडल दो दलो म बट गया था। 44 म जयपुर म नगरपालिकाए बनी। उस समय विधान सभा तथा प्रतिनिधि सभा के चुनाव हुए। भारत स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद 27 मार्च 1948 को जयपुर म अतरिम सरकार की स्थापना हुई। दीवान वी टी कृष्णमचारी मत्री मडल का अध्यक्ष, प्रजा मडल दल के नेता हीरालाल शास्त्री मुख्यमत्री व टीकाराम पालीवाल को राजस्व मत्री का पद मिला। यह मत्रीमण्डल सयुक्त दायित्व क आधार पर काय करने लगा। 1949 की 30 मार्च को जब सयुक्त राजस्थान बना, तब यह मडल समाप्त हो गया तथा जयपुर राज्य का विलयन राजस्थान मे हो गया।

उदयपुर मे प्रजा मडल से राज्य प्रतिबन्ध 1941 म हटा। भारत छोडो आन्दोलन के समय कतिपय कायकर्ताओ की गिरफ्तारियाँ हुई। जिनमे माणकलाल वर्मा, मोहनलाल सुखाडिया नरेन्द्रपालसिंह चौधरी, रूपलाल सोमानी आदि का योगदान रहा। 1945 मे उदयपुर मे अखिल भारतीय देशी राज्य परिषद का अधिवेशन प० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता म हुआ। 47 में राज्य कमचारियो ने वेतन की माँगो के लिए आन्दोलन किया। इस समय वधानिक सुधारो के लिए बहुमत से एक समिति बनी। पर स्वतन्त्रता के बाद महाराणा ने उदयपुर को भारतीय सघ मे मिलने की घोषणा कर दी। फिर 48 से यह बृहत राजस्थान में सम्मिलित हो गया।

बूंदी मे ई० स० 1944 मे लोक परिषद बनी। इसके अध्यक्ष हरिमोहन माथुर

तथा सचिव बृजसुन्दर शर्मा हुए। इनकी बातें महाराव न मानी। मार्च 1948 में बून्दी राज्य राजस्थान संघ में मिल गया।

झालावाड राज्य में रामनिवास, गिरधर शर्मा जैसे लोगों ने राजनैतिक जागृति फैलाई। प्रजा मंडल में भैरूलाल, कालाबादल, मांगीलाल मेवा, मास्टर रामचन्द्र आदि को राज्याधिकारियों द्वारा सहयोग ही मिला। मार्च 48 में यह राज्य राजस्थान संघ में सम्मिलित हो गया।

कोटा में राजनैतिक चेतना उत्पत्ति के अग्रदूत नयनूराम शर्मा, अभिन्नहरि, इन्द्रदत्त, नाथूलाल आदि सज्जन रहे। 1938 में यहां प्रजा मंडल बना। 42 के भारत छोड़ो आन्दोलन में तीन दिन यहां का प्रजा ने शासन सभाला। जनता ने पुलिस को बंद करके नगरीय दरवाजों, कोतवाली और सरकारी भवनों पर कब्जा कर लिया एवं तिरंगा फहरा दिया। कोटा महाराव के आश्वासन पर राज्य वापिस सौंपा। 45 में पुनः भयंकर आन्दोलन एवं गिरफ्तारियाँ हुईं। स्वतन्त्रता के समय भारत में यह राज्य संयुक्त राजस्थान में शामिल हुआ।

भरतपुर में सन् 1939 में प्रजा मंडल की स्थापना हुई और 40 में प्रजा मंडल और राज्य शासन के मध्य संघर्ष छिड़ गया। सन् 42 के आन्दोलन में युगलकिशोर चतुर्वेदी, आदित्येन्द्र वगैरह गिरफ्तार किये गये। बाढ़ आ जाने के कारण शान्ति समझौता हुआ और 1943 में प्रजा मंडल ने व्यवस्थापक सभा में काफी स्थान जीते। 1947 में बेगार को लेकर आन्दोलन चला। उसे निर्ममता से दबा दिया गया। इसमें रमेश स्वामी की मौत हो गई। महाराजा ने 47 में अपनी अन्तरिम सरकार में चार लोकप्रिय मन्त्री लिए, किन्तु तब तक तो यहाँ का शासन केन्द्रीय सरकार ने ले लिया था।

अलवर राज्य में सन् 1933 में 'कांग्रेस समिति' का गठन हुआ, अनेक लोग चवन्नी सदस्य बने। उन्हें राजद्रोही मानकर सजायें दी। 1938 में कांग्रेस समिति प्रजा मंडल में परिवर्तित हो गई। 42 के भारत आन्दोलन में राज्यादेश की अवहेलना करके प्रजामंडल के शोभाराम, रामचन्द्र उपाध्याय, कृपादयाल ने वकालत छोड़ दी। शोभाराम ने अदाजन एक पक्ष अनशन रखा। 43 में रामजीलाल अग्रवाल के प्रजामंडल सचिव से काय रफ्तार पकड़ गया। प्रजामंडल में मास्टर भोलानाथ की कार्य गति भी श्लाघनीय रही। 1946 फरवरी में प्रजामंडल के सारे सदस्य-गिरफ्तार कर लिये गये। जनता ने इनके लिए एक सप्ताह हड़ताल रखी एवं दमन विरोधी दिवस मनाया। मंडल और महाराजा में हीरालाल शास्त्री द्वारा समझौता करवा दिया गया। उत्तरदायी शासन के लिए फिर आन्दोलन हुआ। राज्य भर में हड़तालें हुईं। सौ व्यक्तियों ने अपनी गिरफ्तारियाँ दी। अक्टूबर 1947 में महाराजा ने मन्त्रीमंडल में तीन लोकप्रिय मन्त्री लेने की छद्म ढंग से घोषणा की। नेता लोग इन्कार रहे और साम्प्रदायिक दंगे हुए। तब केन्द्रीय सरकार ने यहाँ का शासनाधिकार अपने हाथ में कर लिया। बाद में यह राज्य मत्स्य संघ में शामिल हो गया।

धौलपुर में मंगल सिंह जैसे कर्मठ लोगों के बल पर रामचन्द्र गौड़ व ज्वालालाल आदि ने प्रजामंडल को गतिमान किया। राष्ट्रीय ध्वज फहराने के प्रयत्न में प्रजामंडल के कार्यकर्ता पंचम पुलिस की गोली से मरे। एक सभा में लाठी प्रहार भी हुआ और स्थिति बिगड़ गई यह राज्य मत्स्य संघ में जा मिला।

करौली राज्य भी ई स 1948 म मत्स्य सघ म सम्मिलित हो गया था। यहाँ राजनैतिक चेतना जगाने का श्रेय मदन सिंह आकार सिंह चिरंजीलाल शर्मा प्रभृति सज्जनों को है प्रजामण्डल के प्रमुख वक्तव्य म रापाटरा जस स्थानो म जागीरो जुल्मो के विरुद्ध सम्मेलनो म जन सगठन खूब जूझे।

किशनगढ़ (अजमेर के काचड मीणाली) राज्य की राजनैतिक जागृति भी प्रजा मडल के कार्यकारी कान्तिचन्द्र व पुरुषोतमलाल शर्मा द्वारा शुरू हुई था।

टोंक मुसलमानी राज्य, धार्मिक आन्दोलन हीन ही थे। यहाँ के नावा ठिकाना मे महेन्द्रकुमार जन न बडे उत्साह स राष्ट्रीय कार्यक्रमो को प्रगतिवान बनाया।

शाहपुरा राज्य म प्रजामडल सन् 1938 म बना। नगरपालिका चालू एव बेगार बन्द के आदश प्रयत्न प्रारम्भ हुए। 42 के आन्दोलन म यहाँ के कार्यकर्ता पकडे जाकर अजमेर जेल भेजे गये जो गोकुललाल आसावा नादूराम व्यास लक्ष्मीदत्त थ। 47 में गोकुललाल के प्रधानमन्त्रीत्व म लोक प्रिय सरकार और विधान निर्मात्री परिषद बनी। तब उसे विधान बनान का अधिकार मिला। इसलिए यह रियासत प्रगतिशील कदम उठाने वाली कही गई। फिर 1948 म यह सयुक्त राजस्थान सघ म विलय हो गई।

सिरोही राज्य म प्रजामडल सन 1939 म स्थापित एव उसका पजीयन 1940 की मई म हुआ और 41 म फिर गडबडी और कार्यकर्ताओ को जेल। 42 के अगस्त आन्दोलन के समय वहा बडा आन्दोलन हुआ। प्रमुख कार्यकर्ता गोकुल भाई भट्ट राजपूताना प्रातीय काग्रेस कमेटी का पहला सभापति बना। भारत स्वतन्त्रता के बाद सिरोही राज्य का आबू पर्वतीय भाग बम्बई म मिला दिया। इसके लिए राजस्थान से भारी विरोध होने पर पुन सही स्थान पर ला दिया गया।

प्रतापगढ राज्य समापता के कारण उदयपुर की हलचलो मे प्रभावित हुआ। अमृतलाल यादव जसे लोगो न पिछड वग तथा भीलो को यथा समय सचेत किया।

डूगरपुर राज्य म रामनारायण चौधरी न भील सेवा सघ नाम की सस्था स्थापित की और उसके द्वारा शिक्षा सेवा तथा सुधार कार्य शुरू किये। इसलिए बडी जागृति हुई सघष चला और कार्यकर्त्ता जेल गय। सन 1945 म प्रजामडल लोक प्रिय मन्त्री मडल बने और फिर सयुक्त राजस्थान सघ म डूगरपुर राज्य भी ममा गया। भोगीलाल पाड्या यहाँ के काफी जुल्म सहिष्णु नेता प्रसिद्ध हुए।

बाँसवाडा राज्य मे भी गुजरात एव उदयपुर का जन जागृति स प्रभावित और लोग समय पर चेते। पन्नालाल भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी आदि यहाँ के अग्रणी कार्यकारी थे। भारत स्वतन्त्र होन के बाद लोक प्रिय मन्त्री मडल बना और उसका मुख्य मन्त्री त्रिवेदी हुआ। आखिरकार यह रियासत भी सयुक्त राजस्थान सघ म मिल गई।

अजमेर मेरवाडा 1938 के झगडों से दब गया था। उस समय ब्यावर मे एक राजनैतिक सम्मेलन भूला भाई देसाई जसे देश के कानूनी नर-नाहर के सभापतित्व म सम्पन्न हुआ। इसे यू० पी० राज्य म मिला देने की बात चली। यहाँ के हरिभाऊ उपाध्याय, रामनारायण चौधरी रमेशचन्द्र व्यास, ज्वाला प्रसाद रघुराजसिंह दुर्गा प्रसाद स्वामी कुमारानन्द आदि 85 नेता, गिरफ्तार किये गये, जो 1945 म छोड दिए गये। 50 म इसे उप सूबा बनाया तथा 52 म हरिभाऊ उपाध्याय के मुख्य मन्त्रीत्व म

काग्रेसी मन्त्री मंडल बना। 1956 का प्रथम नवम्बर का यह सूबा राजस्थान राज्य मे सम्मिलित कर लिया गया। इस तरह से राजस्थान के राज्यों का एकीकरण हो गया।

आजादी की भावना मे न आपसी लडाई और न ही झगडे स्फूर्ति एव उत्साह तथा प्रेम पूवक काय होते थे। स्वतन्त्रता हेतु राजस्थान के सभी जिलों मे प्रजा मंडल संघर्ष, आंदोलन और अपने अपने अलग संगठन बने। इन्ही संगठनों के द्वारा ऊपर तक क्रांतियाँ हुई तथा अंग्रेजी प्रान्त की प्रगतिशील काग्रेसी कमेटियों का राजस्थान से स्वतः भारी बल मिला। फलस्वरूप वर्तमान राजस्थान का निकाम व बनाव तथा सुख सुविधाओं का उत्कर्ष हुआ।

कालू की पुरानी दशा परिवर्तित—हर स्थान के व्यक्तियों का प्रबुद्ध चरित्र कर्त्तव्य व्यवहार और राजनतिक उत्साह आदि के सिद्धान्त सामाजिक स्थिति सुधारने मे प्रमुख साधन होते है। वैसे देश की स्वाधीनता का शौक भी राष्ट्र की काया कल्प कर देता है। कांग्रेस के राष्ट्र नायकों ने जब भारत को स्वतन्त्र करवाने का संकल्प लिया तो उनके उस सफल उद्देश्य ने राजस्थान को भी अनोखा बना दिया। यह था सामन्ती शासन हटाना वर्ग भेद को मिटाना और समता के भावों से पिछड़े हुए इस प्रदेश को खूब सूरत बनाना। कांग्रेस के नेताओं ने प्रत्येक गाँव की प्लान मे उसके विकास, निर्माण एवं सजावट मे व्यक्तिगत दिलचस्पी से काय किया। महात्मा गांधी के रामराज्य का साकार स्वप्न उदय होने गाँवों से सुमुदिन किया। किसे शिक्षा कहाँ स्वास्थ्य और किस स्थान पर सडक तथा बिजली पहले पहुँचाई जाय और किस क्षेत्र को सिंचित करके अधिक जनहितकारी भूमि मे परिवर्तित करें? ऐसी ऐसी बातें उनके मस्तिष्क मे लहरा गई। तब तत्काल कालू के जन मुख, इतिवृत्त एव संस्कृति के सजीव चित्र खिल गये। गुलामी की गम लू से झुलसी हुई यह वाटिका बसती स्वाधीनता की त्रिविध समीर से लहलाह उठी।

कालू मे हिन्दुओं की पचासों जातियां उपजातियाँ, जिनमे मुख्य पंडित[1], राजपूत वैश्य एव जाट वगैरह थे। इनका सामाजिक जीवन विविध प्रकार से अहभावी था। गाँव मे इन्हीं के द्वारा सारे काय सम्पन्न करवाये जाते थे। अन्य जाति के लोगों को इनके किये हुए कार्यों को मानना पडता था।

ब्राह्मणो की चार जातियाँ, जिनमे परीक और सारस्वत मुख्य एव अधिक संख्या वाले रहे। ये धार्मिक कार्यों के सिवाय सामाजिक तथा याचिक कार्यों से भी भाग लेते थे। ब्राह्मण यहाँ पंडित और पुजारी महाराज गुरु एव दाता पग लागू के शब्द से सम्बोधित किया जाता। उनको वृद्धो की सभा मे भी ऊपर बैठने का वश क्रमानुसार अधिकार था। पाच वष का ब्राह्मण-बालक पचास वष के अन्य व्यक्ति को तू कहकर पुकारता। किन्तु उसे वापिस मे मा जी का ही सम्बोधन मिलता। धधा उसका मुख्य आज खाना दान दक्षिणा लेना रसोई बनाना माला फेरी फेरना फिराना आदि कार्यों का था वैसे पूरी छूआ छूत, परन्तु मृत्यु भोज के समय अशुद्ध स्थान को भी इस्तेमाल कर लेता। ब्राह्मण राजपूत से जरूर भय खाता। अब ब्राह्मण पढ लिखकर व्यापार नौकरी तथा उच्च पद भी पाने लगे हैं और पुरानी वृति से नफरत करत हैं।

---

1 पण्डितास्तु कलत्रेण रमन्ते महिषा इव।
पुत्रस्योत्पादने दक्षा अदक्षा मुक्ति साधने ॥—श्री मद्भागवत महात्म्यम

राजपूत कानून में नहीं के बराबर, एक दा घर ही रहे। नरेश यहाँ के बीकानेर महाराजा, जागीरदार या भूमिपति उ ही के भाई बेटे यही (बीकानेर) रहते थे। यहा की जनता भी जागीरदार को द्वितीय भगवान या माँ बाप के नाम से सम्बोधित करती थी। राजा के बराबर तो क्या जनता के लोग इनके सामने तक बठ नहीं सकते। बालू म इनके आनदोत्सव पर दिवाली मनाई जाती थी। लोग के पर मे सोना पहनना नाम के आगे सिंह लगाना तथा विवाह म नगारा निशान चलाना आदि काय राज्यानुमति से ही हुआ करते थे। प्रजा के लिए राजा का दशन दुलभ था। वह अपन महलों की राग तरग म रहता अनेक रानिया म रहने हुए भी परिया के परिस जाकर रात्रिमात्र में रयत की गाढी कमाई का पानी की भांति बहा देता था। जस सऊदी अरब के अमीर और ईरान के पादा तेल की रायल्टी प्राप्त धन को दोनां हाथा से लुटात हैं, वैसे ही राजस्थान के राजा महाराजा, रईस और अमीर परिस का आन द लूटने जाया करते थे। इनका वहाँ एक रात का विलासित खर्चा लाख तक हो जाता। राजा महाराजाओं के महल मानो एक सजी प्रदशनी इनकी भांति भांति की ऊँचे कालर वाली भडकीली पोशाकें, उठी हुई गदनें और तने सीने देख कर आदमी अचभित हो जाया करते थे। मौज के सब साधन, कानून की कोई पाबन्दी नहीं, पत्थर की प्रतिमाएँ ? मनुष्य उनसे बोलने म अपने को असमथ पाता। महल मौसम मुताबिक प्राय —ताप-नियन्त्रित और शीत नियन्त्रित रहते थे। अधिक एय्याशी के कारण जनता बदल गई।

बीकानेर के गावो में राजपूत ठाकुरा की भी यही शान थी। पर आय कम और व्यय अधिक होने के कारण वे कजदार बने रहते थे। उनकी औरतें परदा मे रहती। अत वे काश्त आदि के कार्यों में अपने पतियों की मदद नहीं कर पाती। अब य सारी बातें सुधार पर आ गई हैं। कानू ठिकाने का विजय भवन बीकानेर के गढ ठिकानों का प्रतीक माना जाता था। विजयसिंह के ठिकाने म चौरासी चुनिन्दा उम्दा गाँव रहे। अब—"राजमहल गया ने रोडा रह्या।" है।

दरोगा जाति के राजपूत भूमिहीन होते और राजपूता के रावला म नौकरी किया करते थे। वहां इनको सरदार अनेक हीन नामो से सबोधित करत। जोधपुर राज्य ने तो प्रथम विश्वयुद्ध के समय दरोगा जाति के लोगों को सेना मे भर्ती करने से भी रोक दिया था। इस राज्य ने 11 जुलाई 1916 म दरोगो और उनके स्वामी सरदारों के सबध में विज्ञप्तिया जारी की थी, जिनके अनुसार—

मालिक (राजपूत) की जरूरत के अनुसार दरोगा, काम से इन्कार नहीं सकता, मालिक कानूनन उससे नौकरी करा सकता था।

मालिक की हैसियत से अधिक नौकरों की सख्या वृद्धि हो जाए तो वह अपनी आवश्यकता से अतिरिक्त और दरोगों को दूसरे स्थान जाने की आज्ञा दे देवें। मगर मालिक के यहा शादी मे सबको हाजिर होना पडता था तथा जब तक वह आज्ञा न दे तब तक वे जा नहीं सकते।

जिनके घर पले हुए दरोगे होते उनकी लडकिया को राजपूत अपनी लडकियो के साथ शादी के समय दहेज म दे सकते थे। हैसियत वाले राजपूत, दरोगों के घर के घर दहेज मे दे दिया करते थे।

मालिक की हैसियत दुबल हो जाने अथवा दरोगों की सख्या वृद्धि होने पर उस

घर का कोई दरागा कहीं दूसरे के साथ काम कर लेता, मगर मालिक उसकी लड़की को दहेज में दे सकता था। दरागो की स्त्रिया सामंतों की विलास सामग्री मे एक मनमानी वस्तु रहती थी। इस तरह से राजपूतानादि राज्य इ हें दास मानते एव वे भी गुलामी बंधन मे बधे रहते थे। 26 सितम्बर ई० स० 1920 म कोटा राज्य ने दरोगा की दासता के बाबत एक आदेश जारी किया था कि 'किसी जागीरदार के दरोगे को पुलिस, सेना तथा किसी राजकीय विभाग म नौकरी नही दी जावे।" स्वत त्रता के बाद राजा महाराजाओ की स्थिति गिरी, तब दरोगे भी इनसे हटकर शिक्षित बनन गय—

'वायरा वाज ठाकुर-राव नरेन्द्र बात्मा
वेगम हुम राणियाँ वजीर वणसिणियामा उड
आखा वायरो वाजे !' (समय वायरा)

वैश्य—कालू मे इस जाति के दो वग वसते आय हैं। एक ओसवाल, दूसरा माहेश्वरी। दोनो का धधा व्यापार, ब्याज सौदा सपट्टा, दुकानदारी के कारण समाज मे पूर्ण सम्मान और चाव था। ये गाँव की प्रत्येक सस्था तथा धार्मिक कार्यों में यथेष्ट तन-मन धन देते थ। यहा के काफी व्यापारी राजस्थान से बाहर कारबार करके भी कालू मे आकर द्रव्य खचते और सामाजिक राजनैतिक तथा जन जागति का वातावरण बनाते थे। जन नेताओ के राजनतिक आ दोलनो बाबत इ ही से आर्थिक सहायता मिलती थी।

व्यापार मे इनकी एक अपनी अलग रहस्यमयी (मुडिया) लिपि चलती, उसी के द्वारा ये लोग कारबारिक हिसाब किताब लिखत थे। कि तु लिपि बिना मात्रा किसी कवि नगाग्रे लिखी जाती इसलिए कभी कभी उसका उल्टा प्रभाव भी हो जाया करता था। ने इसके लिए कहा है—

वणिक पुत्र कागद लिखे, काना मात न लेत।
हींग, मिरच, जीरो लिख, हग, मर, जर कर देत॥

एक बार किसी ने अपने एक निकट सबधी को अपनी लिपि म पत्र लिखा। उसका कुछ अश दृष्टव्य है—"काकोजी अजमेर गया छ हमा रुपी लिया तुमा भी रुद लीज्यो।" पत्र पढ़ने वाले ने समाचार पढ़ा—काकोजी आज मर गया छ हम रो लिए हैं तुम भी रो-लेना।

वसत्याँ म वणिया रोपव रूडो हाटा
गाहक जठ किसाण, जका—री कूट टाटो
घाटू वाटाँ घाल लय जद वाधू वाटा
छोटा गाँवा माय मा' घनी मा'जन माटा

जाट एव किसान—खेती का मुख्य धधा करने वाले लोगों को किसान या काश्तकार कहते हैं। कालू म ऐसे जन जाट ब्राह्मण, बरागी भाट नाई खाती, नाय कुम्हार, लुहार और हरिजन आदि लोग खेतीहर हैं। ये साथ म पशु पालन का पेशा भी करते हैं। किन्तु यहाँ तो कभी कभी ही पीली बिजली चमकती है। विशेष नो सदा सफेद विद्युत ही कडकती हुई दुर्भिक्ष का भयावना दृश्य उत्पन्न करती है।

वाताय कपिला विद्यु दातपायातिलोहिनी।
पीता वर्षाय विज्ञेया दुर्भिक्षाय सिता भवेत्॥ (यानी हरी बिजली से पवन, गहरी लाल बिजली स धूप पीली बिजला स वृष्टि और सफेद स दुर्भिक्ष की सूचना मानी जाती है।)

यहाँ की भूमि के धूलि कण भी लाल और लघु रूप नहीं। किसानों का अधिकतर परिश्रम विफल ही जाता रहता। दुर्भिक्ष के समय पशु भी मरते चुकते थे। इसलिए अध और अशिक्षा से कालू के किसान दबे ही रहे। बीकानेर में सहकारी समिति थी, मगर किसानों की आर्थिक दशा नहीं सुधारी। अर्थ हीन का समाज मे आदर कहाँ?

लाग-बाग, बेठ-बेगार से कालू के किसान सतप्त थे। रूढ़िवादिता के कारण कम काण्ड वाले भी उसे हर अवसर पर चूसते और मोठ बाजरी के रूखे सूखे खाने मे भी बाधा उत्पन्न कर दिया करते थे। जाटों के सिवाय अन्य जाति के किसान भी अपने-अपने कार्यों से कर्म निपुण थे। बीकानेर राज्य में ये भी बेठ-बेगार के शिकार थे।

नायो,	खाती	नाथ,	सुनारा	और	लुहारा
अपणा	अपणा	काम,	किसब	सू	न्यारा न्यारा
दरजी,	छीपा,	भाट,	गुसाया,	जोग्या,	माम्या
कूभारां,		माच्याह	बळाया,	बोर्‌या,	वांम्यां

कालू के हरिजन—मेघवाल थोरी (नायक), ससी, भगी बांभी आदि लोग अछूतता के ढंग से रहते थे। इन सबके वास (मोहल्ले) गांव से बाहर की तरफ बसते थे। ये लोग मरे हुए पशुओं की चाम निकालते, सफाई करते, मोटे कपड़े बुनते और चमड़े के सारे काम किया करते थे। हिन्दू धर्मावलम्बी होने पर भी ये सार्वजनिक कूओं कुडों एवं मन्दिरों के दर्शनों तक से वंचित रखे जाते। ये सवर्णों के साथ उत्सवों एवं त्योहारों में भी शामिल नहीं हो सकते। समाज में इनका पूरा अनादर था। अंधविश्वास एवं रूढ़ियों के कारण हरिजन अपने अधिकारों को भी भूल चुके थे। कालू मे राजकर्मचारियों तथा जागीरदार के अधिकारियों की सेवा करने मे ही हरिजन अपना रुतबा समझते थे। बोहरा भी हरिजनों के लिए एक अभिशाप था। आर्य समाज वालों ने इनकी दशा सुधारने के प्रयत्न किये। स्वतंत्रता से बीसों वर्ष पहले महात्मा गांधी के प्रभाव से देश मे हरिजन सेवा संघ स्थापित हुआ। इस संस्था ने देश के हरिजनों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति सुधारने की पहल की। तब कालू के हरिजन भी सुख की श्वास लेकर कुछ आगे बढ सके। कालू में उस समय कविता बनी थी। उसका थोड़ा अंश—

हरिजन आखा वद्य डाक्टर
रोग न रोके - कर भलाई
रख सफाई गन्दगी मेट
कत्तव्य डटे - दिनूग सू पर्ली आवे
जन हितकारी तन मन धारी
जीवन दाता - पेट काट कर
हरिजन आखा - वद्य डाक्टर (समय वायरो)

फिर तो जून सन 1948 की बात कालू क्षेत्र के गांव गारबदेसर में दूरदर्शी ठाकुर फतेहसिंह ने मुरलीधर जी के सार्वजनिक मन्दिर मे हरिजनों का प्रवेश करवा दिया। तब गांव मे एक बवडर खड़ा हो गया। ठाकुर के भाई बन्धुओं ने मन्दिर बन्द करके चारों ओर तार दे दिये। बहुत से लोग ठाकुर को समझाने के लिए बाहर से आये। एक सम्मेलन रखा और उसमे एक बार मन्दिर प्रवेश को रोकने का निश्चय हुआ। बाहर से आये हुए लोगों में श्री जानकी प्रसाद बगरहट्टा, ईश्वरदयाल गोयल तथा धर्मपाल

(हरिजन नेता), पनानाल बारूपाल आदि थे। इन लोगों को सारी धार्मिक स्थिति समझाने के लिए मेजर उदयसिह के घर तत्कालीन विचार विमर्श हुआ। उस अवसर पर किसी सज्जन ने श्री पनालाल बारूपाल को आगे बिठाने की बात कही। तब सब लोग बारूपाल पर अस्पृश्य ढग से हँस पड़े। वही श्री बारूपाल थोड़े ही समय बाद आगे जाकर लम्बे समय तक ससद सदस्य बनता रहा।

एक जन हित सघर्षकर्ता—कालू के नाहटा परिवार में श्री सुगनमल नाहटा के आत्मज श्री रूपचद का जन्म अपनी ननिहाल, श्री डूगरगढ में तोलाचदजी मालू के घर ई० सन 1914 में हुआ था। एक माह पश्चात वह शिशु रूप बड़े उत्साह आयोजना के साथ कालू लाया गया और नाहटा घराने में बड़ी खुशियाँ मनौतियाँ मनाई गई।

लालित्य लाड़ प्यार भरी लीलाओं के साथ बालक बड़ा होकर गाव के मदरसे में विद्याध्ययन को भेजा गया। प्रवेश के समय गुरुजी ने बालक की उच्च ढग की स्वच्छता (बाल दाँत, आख कान नाखून कपड़े और जूते) देखी। वह शारीरिक स्फूर्ति, प्रत्युत्पन्न मति तथा सत्वर निर्णय लेने की क्षमता रखने वाला बालक पाया गया। कक्षा में गदगी न करना, स्लेट को थूक से बचाना तथा सफाई के साथ दोपहर का भोजन ठीक स्थान पर बठकर करने जैसी अनेक अच्छी आदतें उससे, सहपाठी छात्रों ने सीखी।

श्री रूपचद शीघ्र ही स्कूल की शिक्षा समाप्त करके अपने योग्य गुरुओं के पास पढ़े और किशोरावस्था से ही सभा-सोसाइटियों में जाने लगे। वे अधिकारों की माग करने वाली राजनैतिक सभाओं में भी भाग लिया करते थे। वि० स० 1987 में श्री रूपचद नाहटा का विवाह अबोहर के गोलछा परिवार में धार्मिक महिला श्रीमती चौथी देवी (ज०स० 1975) के साथ हुआ। जो गृह समाज तथा मा महिला सुधार आदि कार्यों में उच्च कोटि की देवियों में गणना करने के योग्य है। ऐसी सुसस्कृत सहधर्मिणी के सयोग से गाव के राजनैतिक रूप श्री रूपचद को बड़ा बढ़ावा मिला।

जवान होकर रूपचद अपने घरेलू व्यापार के सबध मे नेपाल के प्रसिद्ध व्यवसायिक शहर, विराटनगर मे गये तथा वहाँ कोइराला परिवार के नेतृत्व से प्रभावित हुए। इस तरह से कालू और विराटनगर दोनों स्थानो पर सेवा-सुधार की भावना बरतते रहे। ई० सन् 1933 में वे काग्रेस के सदस्य बन गये और बराबर अपने सिद्धान्त को निभाये चले। ई० सन् 1938 में वे श्री सेवासदन सरस्वती पुस्तकालय कालू के कार्यकर्ताओं में अग्रणी होकर पुस्तक तथा द्रव्य सग्रह करते रहे। तब सन 1942 के भारत छोड़ो आदोलन मे सामती सरकार ने उन पर सी आई डी की कड़ी निगरानी लगा दी थी। क्योंकि वे इस क्षेत्र में प्रमुख काग्रेसी कहलाते थे।

श्री रूपचद नाहटा ई० सन् 1947 मे अपने गाव के सार्वजनिक निर्माण कार्यों में आगे आये और 1948 में एक ट्रक खरीदकर उसमे पट्टिया आदि का पूरी रियासत से साथ सामान मगवाकर विद्यालीय भवन पूरा करवाने में पर्याप्त योगदान किया। ई० स 1952 के आम चुनावो की स्थिति के मध्य रहकर भी वे पीछे रह गये। विषमाधिक परिस्थितियो ने उनके साथ भारी अन्याय किया। पर नाहटा शब्द की व्याख्या 'न हटना' के अनुसार श्री रूपचद ने डट कर देखा भागा। उन्होंने घर की नहीं, पीड़ित जनता की दुविधाओं को मिटाने का भरसक प्रयत्न किया। ई० सन् 1953 मे किसान जनता को उसका हक दिलाने के लिए जिला स्तर पर अन्य नेताओं के साथ सघर्ष किया।

गेहूँ निकासी आंदोलन म भरी गोदामो का प्रकटीकरण करन हेतु सत्याग्रह म भाग लिया। आखिर सरकार के विरोध के फलस्वरूप पुन नेपाल जाकर अपने कारोबार के साथ ही कोइराला परिवार की राजनीति मे हाथ बटाने लग। श्री मातृकाप्रसाद कोइराला आदि से उनका घरेलू सम्पर्क था। मातृकाप्रसाद के अनुज श्री वी०पी०, श्री केशव, तारिणी और गिरिजाप्रसाद आदि अनेक बार श्री नाहटा के साथ कालू आकर रहे थे। बस कभी इनके (कोइराला के) पिता स्व० श्री कृष्णप्रसाद ज्यू सरदार ने भी अपने राजकीय प्रवास (देश निकाला) के समय सपरिवार काल आकर इन्ही के घर विश्राम लिया था।

ई० स० 1954 मे श्री रूपचन्द ने अपने गाँव कालू म जनता के स्वास्थ्य हितार्थ अपना एक निजू पतृक भवन पारिवारिक स्वीकृति के साथ पूणरूप से मेडिकल विभाग बीकानेर को प्रदान करवा दिया। तत्समय बीकानेर पी बी एम हास्पिटल के पी एम ओ श्री के० मेहता एफ० आर० सी० एस० (Eng) ने दि० 23 2 54 को गाँव कालू मे अस्पताल का उदघाटन करते हुए श्री रूपचन्द को बहुत बहुत धन्यवाद दिया था। फिर ग्राम सेवा संघ कालू के अध्यक्ष न गाव के प्रमुख व्यक्तियो की मिटिंग बुलवाकर श्री नाहटा का पुन आभार माना। आगे चलकर सचमुच गाव म ही नहीं, यह एक क्षेत्रीय विशिष्ट सस्था काय सिद्ध हुआ है। रूपचन्द न इस अत्युत्तम सेवा काय का श्रीगणेश—कहन की अपेक्षा करके दिखा दिया। गाव के एक भारी चिकित्सा अभाव को मिटाकर श्री रूपचन्द नाहटा फिर नपाल के प्रवासी बन गय। और अपने उद्देश्यानुसार बीकानेर की तरह नपाल म भी जनता की माँग को सरकार के सामने प्रस्तुत करने का कार्य आरम्भ कर दिया। भारत के प्रधानमंत्री स्व० श्री जवाहरलाल नहरू 1952 में नपाल पधार, तब महाराजा त्रिभुवन स प्रथम श्री नाहटा का अभिवादन स्वीकारा था। 1960 मे नेपाल महाराजा क अनुज वसुधराशाह और धीरेन्द्रशाह पटना मे नाहटा रूपचन्द के घर आये थे। किन्तु वहा के कुछ असामाजिक व्यापारियो ने मालामाल होने की अपनी कल्पना योजना को मूछित होते देखकर श्री नाहटा के विरुद्ध नपाल सरकार को भडकाया। जन अधिकार चाहन वाले एसे शेर दिल कायभावी व्यक्ति के सत्य सिद्धान्त को भी विद्रोहात्मक अपराध मानकर नेपाल सरकार न इनको अक्टूबर 1962 म नजरबद कर लिया। थोडे समय पश्चात रूपचन्द नाहटा स्वतन्त्र रूप होकर राजस्थान आये, परन्तु राजनीति एव सेवा कार्यों म स्वास्थ्य न साथ नही दिया। वे अस्वस्थ रहने लग गये और असमय मे ही (ई० स० 1978 नवम्बर मे) इस असार-संसार से चल दिये।

श्री रूपचन्द नाहटा हसमुख मुस्करित राजनीतिज्ञ पुरुष थे, जो अपने लोगो के दिलो पर ही नहीं, विरोधी जनों के हृदय को भी समय समय पर प्रभावित कर दिया करते थे। श्री नाहटा के जन सहयोगाल्लेख, लेखनी से शब्दो मे नही बाँधे जा सकते। उनके स्वगवास से कालू गाव को जरूर अपना एक आदश सेवाभावी सपूत खो देना पडा है। अब तो मात्र यही लिखा जा सकता है कि बडे राजनतिको के मडल मे प्रवेश पाने वाले कालू के देश नेता का सतत् खलन वाला अभाव हो गया है।

काया अमर न कोय, थिर माया थोडी रह।
जग मे बातॉ दोय, नामा कामा नोपला ॥

कालू मे मुसलमान—कालू म पहले मुसलमान तेली पदमे का एक घर था। वि स 1954 55 मे ठाकुर मेघसिंह ने गाँव कालू म लागें (कर) बढाई। तब नदाराम



नेपाल महाराजा श्री त्रिभुवन, स्व० प० श्री जवाहर लाल नेहरू, स्व० श्री रूपचन्द नाहटा

जाणी आदि के साथ पदमा तली भा शामिल रहा। फिर उसकी औरत गुजर गई। नूर मोहम्मद नाम का पढा लिखा एक लडका, वह भी खुदा के घर गया। इस समय पदम का बहनोई अनारव यहाँ आकर बस गया था।

इसके घर के पास दूसरा मुसलमान मौला रगारा सरदारशहर से आकर और घर (जो अब माना नाई का है) बनाकर बस गया था। थोडे दिन बाद चूरू से फाजिल खा काजी भी कालू आकर चून भाटे का काम करने लगा। वि स 1990 तक फकत इतने ही मुसलमान कालू के वाशिन्दगान थे जो हिन्दू रीति रिवाजो को भी मानते थे। मौला के वापिस चल जाने पर आलम नाम का रगारा बीकानेर से आकर बस गया।

यहाँ हिन्दू मुसलमानो म प्राय प्रेम ही रहा। धीरे धीरे आबादी के साथ साथ मुसलमान भी बढने गये। ई स 1947 म भारत विभाजन के समय इनके करीब पच्चीस तीस घर थे। मगर उस समय सब के दिल काप गये। वातावरण खराब था। गाँव के भुठिये सिगे लाग इनके सामने गडबड बाते बनाते थे। लोहारू से पाकिस्तान जाती हुई मुसलमानो से भरी ट्रेन म कतला की निमम हत्यायें हुई—सुनी। तब कालू के मुसलमान, अगस्त की एक सध्या को बिना खाये पकाय ही चुपचाप चूरू की ओर चौड खोड (जगलीय अमाग) चले गए। शाति होने पर वापिस आये। लेकिन कई लोग पाकिस्तान जाकर बस गए।

वतमान समय म मुसलमानो के यहाँ साठ सत्तर घर हैं। इन्होंने अपना धार्मिक सस्थान मस्जिद भी बनवा लिया है। उसमे अपने त्यौहार पर सब एकत्रित होते हैं और प्रेम से रहते हैं। कई लोग अच्छे कारोबारी तथा शरीफ इन्सान के रूप म कालू के नागरिक कहलाते हैं। गाँव में इनका एक अपना अलग ही मोहल्ला है। इस समय फकीरा मोहल्ले का मुखिया माना जाता है।

जातियो के आपसी सम्बन्ध—कालू म सब बिरादरी के लोग प्रेम व्यवहार के साथ रहते। इसका कारण एक दूसरे के बिना किसी का काम नही चल सकता था। यहाँ मनुष्य जन्म से ही ऐसी रीति रिवाजें लागू थी जो जन्म विवाह और मृत्यु पयन्त शृखलित रूप से क्रियाशील रहता। यहा जन्म के समय ब्राह्मण, ज्योतिषी दर्जी, नाई वैद्य, हलवाई, ढाढी, ढोली आदि की जरूरत पडती। इसलिए सामाजिक तौर पर सब जातियाँ एक-दूसरे के आश्रित थी। कालू म आर्थिक ढग से भी सब जातियाँ सम्बन्धित रहती। गाव के खाती सुथार[1] कुम्हार तथा लुहार, मेघवाल नायक, ससी आदि से किसानो का पूरा वास्ता रहता था। खेती के औजार बनाने सुथारो मे उक्त लोग किसान का काम करते थे। उन दिना कालू मे उच्च जातीय ईर्ष्या एव मान अपमान का अधिक ख्याल नही किया जाता। पर दुनिया स्वार्थी बनती जा रही थी। जिस जाति के लोग जहा उच्च पद पर होते—अपने ही आदमियो को वहाँ रखते थे। गरीब और अमीर का भेद-भाव प्रचलित हुआ तथा किसान गरीब, और धनी मालदार बनने लगा। इस तरह से

---

1 उनके काम के पीछे नाम पडे थे, जो आगे जाकर तुच्छता प्रकट करते हुए उपेक्षित रूप मे काम आने लगे। जसे—खाती काटी ! यानि लकडी काटने वाला। फकण सुनार ! अग्नि म फूक मारने वाला। मुडी नाई ! मुडन सस्कार करने वाला। गरडा ब्राह्मण ! गरुड पुराण बाँचने वाला। मोडा वरागी ! मोह को ढाहने वाला। कुम्हार टिपला ! टिपटिप करके बर्तन बनाने वाला। सेवग सरडा ! भोजक भम्गा आदि प्रसिद्ध हुए।

काल् म अनक वग एव लाग विभिन्न जातियो म बटे हुए थे। उनके धम भी अपने पृथक पृथक प्रचलित थे। जातिया के अधिकारानुसार नौकरियों और व्यापार मे जातिगत वर्गीकरण से प्राथमिकता दी जाती। फिर भी निम्न वग की जातिया बाध्य, वर्गीकृत सतोषित रहती थी। किन्तु दूसरे महायुद्ध के बाद यह सतोषावस्था उग्र हो उठी और आन्दोलन छिड गए। इसी असतोष के कारण राजशाही और सामतशाही प्राय अब समाप्त हो गई है।

कालू मे खान पान एव वश भूषा अपनी अपनी रीत्यानुसार समय तक चलती रही। विभिन्न जातियो व धर्मों के लोग अपनी जाति या धम के लोगो से ही ववाहिक सबध करते। यहाँ अपनी जातियो के अधिक घर होने के कारण कई समाजा में गाँव क गाँव मे ही सम्बध हो जाया करते। य सम्ब ध ओसवालो मे अधिक होते रहे हैं। जाटा, माहेश्वरियो और ब्राह्मणो मे भी एस सम्बध हुए है। अन्य लोग भा स्वय के गोत्र छोड कर गाँव क गाँव मे ही अपन पुत्र पुत्रियो का सम्बध स्थापित कर लेते हैं। य वैध विवाह शुभ मुहूत मे सम्पन्न होते हैं।

मुसलमानी आक्रमणो से आनकित देश म बाल विवाह का प्रचलन था। छोटी बच्चियों को थाली मे बठाकर विवाह किय जाते थे। कालू मे भी ऐसे एक दो विवाह देखे गए। प्राय सारी जातिया म यहाँ बाल विवाह हाते थे। सन् 1931 मे शारदा कानून द्वारा ऐसे बाल विवाहों पर पूण प्रतिब ध लगा दिया था, पर इस सामाजिक प्रथा म पूण सुधार नही हो पाया। फलस्वरूप विधवाओ की सख्या म वद्धि होने लगी। तब पुनर्विवाह की आवश्यकता से कुछ काश्तकार जातिया मे नाता या चूडी पहनना के नाम से विधवा विवाह होने लगे। नाता कर लेने पर विधवा का मृतक पति के परिवार से सम्ब ध विच्छेद हो जाता। उसे अपनी स तान को वही (मृतक पति के घर) छाडना पडता था। अब ब्राह्मण वणियो मे भी ऐसी विवाह प्रथा चल गई है।

राजस्थान की बेगार प्रथा—गत युगा म राजाओ तथा सामतों न बेगार लेन का एक अनोखा अधिकार बना लिया था। कुछ राज्यो म ब्राह्मणों तथा राजपूतो से भी बेगार ली जाती थी। शेष सरकारी आफिसो एव रावला मे ब्राह्मणो का भोजन बनाने और पाठ पूजा करन, नायका का पहरा देन नाइया का बतन मलने, दीपक जलान, किसाना का लकडी व चारा पाला दन, कुम्हारो को मिट्टी के बतन पहुँचान, लुहारो को लोहे का सामान बना देन आदि काय करना पडता। हरिजनो को खेत और सामतो के घर का काम भी करना पडता था। इस बेगार का आदमी आँधी पानी कभी भी टाल नहीं सकता। बगारी अपना हल चलाना, फसल काटना, घर की बीमारी के समय, मरणे परणे स्वय नुकसान उठाकर राज्य की बगार जाता था। विलम्ब से पहुँचन पर बेगारी की पिटाई भी हो जाया करती थी और अधिक श्रम के कारण मृत्यु भी। गगासिंहजी क समय एक बार बीकानर मे वायसराय आया, तब राज्य के प्रत्येक साठ व्यक्ति क पीछे एक वतनिक बेगार ली और रल पथ के दोनो ओर मशालें जलाकर हर खभे पर एक आदमी नियुक्त किया गया था। इतना सख्त राज्यादेश था कि कई बेगारी सर्दी मे ठिठुर कर मर गय। राजस्थान की यह प्रथा भारत स्वतन्त्र होने तक थी। इसस सामाजिक हीनता के साथ लोगो मे आर्थिक कठिनाई भी व्याप्त हुई। बेगार लेने वालो का नतिक स्तर गिर गया था। बगारी अपने बाल-बच्चो की सम्भाल भूलकर सामतो को

वगार देता रहा। वह ईश्वर की मरजी समझ कर पशु रूप काय करता था। उसके बच्चे बीमार हो चाहे भूखे मर गये हो, पर वह तो भूखा प्यासा बेगार में मरता रहता। कालू म ब्राह्मणो मे ता नही पर अ य लोगो से यथायोग्य वेगार ली जाती थी।

स्वास्थ्य तथा इलाज—शुष्क आब हवा के कारण यहाँ का ग्रामीण इलाका बीमारियो के बचाव का बाडा। फला फूलो और एश आराम के साधनो वाले प्राता-देशो मे जितने भयकर रोग पलते, वे यहाँ के कठोर शीत घामो की बाड़ का ताड कर हर्गिज अ दर नही आ सकते थे। पास के नगरो वाली बीमारिया भी कालू म कतई कम मरया म मिलती थी। नहरुवा—जिसे बाला भी कहते हैं वर्षा के दिनो में कई लागो के हाथ परो मे निकल आया करता था। बाला घर का रुखाला" कोई खतरा नही! घर पर पडे रहा, आदमी खेत का काय नही कर सकता। इकयातरा, तजरा चौथइया जसे साधारण बुखार चलते थे। वसे तो खण घासी (तपेदिक) और टाइफाइड (पालीझरा) राज रोग कहलाते। किन्तु कभी कभास बाड (सीमा) तोडकर आ जाते और गाँवो मे काफी गडबड फला दिया करते थे। चेचक आदि रोग भयकर, बच्चो के प्राण ले लिया करते और उनके शरीर पर कुप्रभाव छोड जाते थे। किन्तु कोई राज्य इनको रोकने म समथ नही हो सका। बीकानेर राज्य मे चिकित्सक आये, मगर राजधानी तक ही रहे। इसलिए जनता वद्यो, स्याणो व बडो बीच हकीमो पर ही निभर रहती थी। कालू मे कुछ हद तक पढे लिखे वद्य मिलते मगर ज्यादातर कुटकी चिरायतो दिलवाने वाले आडू वद्य ही होते थे। कई लोग बिना निदान किये, कुलडिये वाली उकाली दिलवा दिया करते। ये लोग साथ मे झाड फूक भी कर देते। ऐसे लोगा मे यहाँ गाम दर्जी नाई और अमरदास वरागी प्रमुख स्याने थे।

सन 1953 म कालू म क्षेत्रीय चिकित्सालय खुला। भारत सरकार न उसी वष स राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कायक्रम प्रारम्भ करके मलेरिया कम किया है तथा चेचक को भी गाँवों स भगा दिया।

क्षेत्रीय भाषा—*भडाण की मुख्य भाषा राजस्थानी जो माना अक्खड मारवाडी* थी। गावो मे क को घ और त को द बोला जाता था। जैसे—केघ ? (क्या कहता है?) जीवते ही जीवदे ही। अडता = अडदा। कानूनी कारवाइयाँ उर्दू शब्दो से सजाई जाती। लिपि अधिकतर उर्दू मयी नागरी चलती थी। कानूनो के लिए कुछ समय तक उर्दू फारसी का चलन रहा। पर स्वामी दयान द सरस्वती न राजस्थान के कई राज्यो म 1884 ई० से हिन्दी तथा फारसी लिपि का स्थान बनाने हेतु आदेश जारी करवा दिय थे। इसलिए हिन्दी के लिए यहाँ स्वामी दयानन्द वरदान स्वरूप सिद्ध हुए। धीरे धीरे अग्रेजी का भी प्रभाव प्रकट होने लगा और साधारण जनता म उसकी मातृ भाषा अपनी राजस्थानी ही बनी रही।

विद्या प्रसार—इस समय पुरुष स्त्रियो म बिना भेदभाव के शिक्षा प्रचार दिखाई देने लगा। राजस्थान म बीकानेर सब रियासतों मे अग्रणीय गिना जाने लगा। बीकानेर राज्य मे स० 28 से प्राथमिक शिक्षा अनिवाय कर दी थी। कि तु विशेष जोर न लगने के कारण दूर गावो के बच्चे काश्त तथा पशु पालन म ही कायरत रहते। हालाँकि गावो म कई बार चिट्ठी बचाने के लिए निकटीय नगरो में जाना पडता था और नूतो व चिट्ठी लिखने के समय पढे लिखे व्यक्ति की बडी कठिनाई रहती तथा कद्र की जाती थी।

अर्जी लिखवाने या तार पढवाने के लिए तो गाँवों का क्या ? कस्बा का भी किसी अन्य के समक्ष लालायित होना पडता था। तत्समय कालू मे पट्टा स्कूल था। लेखक को याद है—पाटी (पट्टी) मोटी लकडी की तेल मे चिकनी की हुई भारी तख्ती होती थी। छात्र उस पर राख लगाकर लकडी के कलमे से अक्षर लिखा करते थे। बादामी रंग के मोटे कागज और डोके (डठल) के डका को चाकू से छील बनाकर कलम करके कापी का काम किया करते। बादाम के छिलको को आग मे जलाकर महीन पीस छान कर उसमे थोडा गोद मिला करके काली स्याही बनाया करते थे। सध्या छुट्टी से प्रथम नित्य एक बडा तथा दूबों पौधा की मुहालनी हुआ करती थी। प्रार्थना करते समय छात्रो का महाराजा की मगल कामना करनी पडती। जसे—

छात्र करत यह विनय है, सुनिय दीन दयाल
अमर अकटक नित रहे श्री गगासिह नपाल

गगासिहजी के देहावसान के बाद सादूलसिहजी का नाम चलन लगा, जो अगस्त 1947 के बाद जाकर नीचे लिखे अनुसार हिन्दी के लिए परिवर्तित हो गया।

छात्र करत है विनय यह सुनिये श्री भगवान।
नित नूतन उन्नति करे हिन्दी, हिन्द महान ॥

बीकानेर राज्य की स्कूलो मे बीकानेर के भूगोल इतिहास की पुस्तकें हुआ करती थी। इससे पहले (सन् 1928 के पास) यहाँ इलाहाबाद अलीगढ आदि के शिक्षा विभागो से पुस्तकें आया करती। कहीं कही सस्कृत भी पढाई जाती थी।

16 नवम्बर स० 37 में महाराजा श्री गगासिह की स्वणजयती महोत्सव मनाया गया। उसके बाद राज्य की सारी स्कूलों म (कक्षा 1 से 8 तक) "स्वर्ण महोत्सव पाठ माला" पुस्तक के भाग 1 से 8 तक पढाये जाने लगे। इस समय सरकारी तथा गर सरकारी, राज्य मे काफी प्राथमिक पाठशालाएँ थी। राजधानी बीकानेर मे हाई स्कूल और कॉलिज भी खुल चुके थे। इनम मोहता व रामपुरियो की हाई स्कूलें अग्रणी थी। राज्य के शिक्षित युवक, बेकार बने हुए राजनैतिक आन्दोलनों में भाग लेने लगे थे। सगरिया जाट हाई स्कूल के स्नातको द्वारा भी राजनतिक जागति म अच्छा अवसर बन आया था।

इस समय कॉलिज अजमेर जयपुर जोधपुर उदयपुर कोटा अलवर आदि राज्यो मे स्थापित हो गये थे। पिलानी मे बिडला कॉलिज काफी प्रसिद्धि पा चुका था। राजस्थान के कॉलिज, हाई स्कूल प्रारम्भ म इलाहाबाद विश्व विद्यालय से सबद्ध थे। फिर कॉलिज आगरा विश्वविद्यालय से तथा हाईस्कूल सयुक्त प्रात (वतमान उत्तरप्रदेश) के बोड से सबद्ध हो गये। स० 29 म अजमेर म अलग बोड ऑफ हाईस्कूल एण्ड इटरमिजियेट एजूकेशन स्थापित हुआ। यह बोड भारत सरकार के तत्वाधान मे राजस्थान मध्यभारत अजमेर मेरवाडा, ग्वालियर, के हाईस्कलों व इटर कॉलेजो की मट्रिक व इटरमिजियट परीक्षाओ का सचालन करता। राजस्थान का प्रथम विश्वविद्यालय स० 1947 जयपुर म स्थापित हुआ। गर सरकारी सस्थाओं म विद्याभवन (उदयपुर) ग्रामोत्थान विद्यापीठ सगरिया (1917) भारतीय विद्या मदिर बीकानेर (1947) बिडला शिक्षा ट्रस्ट (पिलानी) वनस्थली विद्यापीठ कालू के पास गाधी विद्या मदिर (1950 सरदारशहर) और कस्तूरबा ग्रामोत्थान विद्यापीठ (1955 महाजन) आदि सस्थाएँ शिक्षा

क्षेत्र म काय करने लगी। उस समय भारत मे उभरने वाले विद्यापीठो मे शांति निकेतन, डॉ कर्वे का महिला आश्रम, आय कन्या गुरूकुल बडौदा, आय क या महाविद्यालय पोरबन्दर, महिला विद्यापीठ प्रयाग आदि उल्लेखनीय हैं।

ग्रामोत्थान विद्यापीठ सगरिया (राज०) स्वामी केशवानदजी के जीवन की कर्मस्थली हो गई। उनके व्यक्त विचार थे— जिस स्वराज्य के लिए हम प्राण दें, परिवार बर्बाद हो और देश स्वराज्य का अथ भी न समझें, हमे बिना प्रतीक्षा किये बालको के लिए स्कूल और प्रौढो के लिए पुस्तकालय, साक्षरता शिविर एव स्त्रियों के लिए पढाई के अतिरिक्त घरलू कार्यों की शिक्षा की व्यवस्था भी करनी चाहिए। यदि यह नही हुआ तो कौम आजादी जसी मूल्यवान वस्तु का सभाल नही सकेगी।' यही से स्वामीजी न अपन प्रत्यक विषय पर भरपूर काय किया। उन्होंने मारवाडी रिलीफ सोसाइटी कलकत्ता के सहयोग स सुनिश्चित शिक्षा योजना का निर्माण किया। इसमे निम्नलिखित कायक्रम थे —

1 *पचवर्षीय मरुभूमि सवा काय योजना सन 1944 49 तक*
2 ग्रामोत्थान पाठशालाएँ 1949 से 1953 तक
3 त्रिवर्षिक शिक्षा योजना 1954 से 57 तक

निवटीय प्रातो म 290 गाँवो म लगभग बिना भेदभाव य पाठशालाएँ चली। इनका सगरिया (राज०) केन्द्र था। इसके तहत लखक न अपने गाँव कालू के कुछ युवको की अध्यापक पदो (कुचोर, शेरपुरा आदि गाँवो मे) पर नियुक्तियाँ करवाई थी। उस समय ग्रामोत्थान सगरिया म राजस्थानी कवि उप निरीक्षक श्री भीमराज बभेरू थे। तब सन् 1928 क अनिवार्य शिक्षा अधिनियम के अतगत नगरपालिकाएँ व रियासत भी अपनी पृथक पृथक पाठशालाएँ चालती।

बीकानर राज्य म रतनगढ के सेठ सूरजमल नागरमल जालान द्वारा भी आडसर, पूनरासर सूडसर आदि अनेक गाँवो मे बहुत सी पाठशालाएँ शिक्षा कार्य सलग्न थी। ठिकाना छतरगढ म भी अपनी पाठशालाएँ विद्या प्रसार मे पूरी व्यवस्था पूवक चलती थी। इनमे कालू, कल्याणा, छतरगढ, लालगढ और विजयनगर की स्कूलें प्रमुख थी। इस तरह स भूकरका, साँखू रावतसर बीदासर महाजन आदि क ठिकानो मे भी अपनी अपनी स्कूलें शिक्षा-काय सलग्न थी। बीदासर की स्कूल म श्री मांगीलाल याचित और महाजन की स्कूल म श्री रघुनाथदास जी स्वामी, बीसो वर्षों तक आदश अध्यापन काय करते रह।

इसी भाँति बीकानर डि० बाड की तरफ से भी सेखसर रूणिया आदि गावा म स्कूलें थी। शेखसर की स्कूल मे टीकमदास एक अच्छे अध्यापक थे।

सन 59 म लोकतात्रिक विकेन्द्रीकरण अधिनियम योजना के अतगत पचायत समितियो का गठन हुआ। तब ग्रामीण क्षेत्रो का सारा शिक्षा दायित्व पचायत समितियो क अधीन आ गया। अब इन सार सेमी-गवनमेट शाला शिक्षकों को अद्ध राज्य कमचारी माना जाता है। किन्तु शिक्षको को उनके द्वारा की गई प्रशसनीय सेवाओं के लिए हर साल (5 सितम्बर को) राष्ट्रीय एव राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित करने का अवश्य प्रावधान है।

क्षेत्रीय साहित्य—इस क्षेत्र मे साहित्य रचना की प्रवृति बहुत पहले से पाई जाती है। दृषद्वती नदी के तट पर ऋषियो ने ऋग्वेद की रचनायें लिखी। वहाँ अब भी वही साहित्य परम्परा स्वरुप विद्यमान है।[1] 19वीं शताब्दी म यहाँ के चारणों म दयालदास—साहित्यकार, ख्यात काव्य सजना म विख्यात है। अन्य चारणा न भी साहित्य को व्यापक बनाया। तत्समय बीकानेर म आकर इटली के विद्वान डा एल० पी० टसीटोरी न शोध एव साहित्य का सुन्दर सृजन किया। कालू के पास—भक्त कवि श्री किसनसिंह हिम्मतराम, स्यालीराम, गोविन्ददान, पुरखाराम जैसे साहित्यकार हुए हैं।

भारत की आजादी की लडाई के साथ यहाँ के साहित्यकार भी अग्रसर हुए। उन्होंने दुबल, असहाय व पीडित जन सामान्य का राजा महाराजाओं एव ठाकुर जागीरदारो के खूनी हाथो से बचाने के लिए क्रांतिकारी साहित्य लिखा, जिसस जन जीवन को नया मोड मिला।

पद्य-साहित्य—कालू म सन् 36 से दुर्गादत्त सारस्वत और लेखक, पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से सामयिक कविताएँ लिखते। सन् 49 50 में राजस्थानी की चाह हो जाने से चारों ओर प्रगतिशाल साहित्य लिखा जाने लगा। कविता में नई चेतना स्वरूप राष्ट्रीय भावना आई। बीकानेर से श्री चन्द्रसिंह, देपावत, सेठिया आदि लोग लिखने लगे।

राजस्थान से बारहठ केसरीसिंह उदयराज उज्ज्वल नाथूदान महियारिया चतरसिंह आदि की कविताएँ अच्छी बनी। गीत गजानन मुकुल राजावत अमन, भरत व्यास भीमं पाडिया, बेकारा, बुद्धिप्रकाश पारीक आदि ने लिखे।

निबन्ध, कहानी, उपन्यास, नाटक—कालू म सस्कर्ता और बीकानेर म श्री मुरलीधर व्यास श्री विद्याधर शास्त्री, लक्ष्मी कुमारी चूडावत, श्री जोशी, नाहटा, ओझा सौकरियाजी आदि लोग लिखने लगे। राजस्थान मे विजयदान देथा, यादवेन्द्र चन्द्र शर्मा, किशोर कल्पनाकात, मनोहर शर्मा, रामस्वरूप परेश, प्रभति लेखक कहानियाँ लिखने लगे। नाटक स्व० शोभाचन्द जम्मड, निरजन नाथ आचार्य, रावत सारस्वत, श्री गुलाबचन्द निर्वाण गणपति चन्द्र भडारी आदि ने लिखे हैं। निबध म श्री कोमल कोठारी कन्हैयालाल सहल रामनारायण व्यास, शक्तिदान कविया गोवद्धन शमा आदि उल्लेखनीय हैं। इनके निबन्ध साहित्य समाज और राजनीति जसे विषयो पर लिखे हुए हैं। लोक साहित्य श्री नरोत्तमदास स्वामी नारायणसिंह भाटी, रामप्रसाद दाधीच सस्कर्ता आदि ने लिखा है।

पत्र-पत्रिकाएं—मरुवाणी ओळमा, लाडेसर हरावळ, कुरजा, विशाल मरुधर आदि राजस्थानी साहित्य की तत्कालीन सामयिक पत्रिकाएँ रही हैं।

विश्वम्भरा, प्रेरणा, प्रजा सेवक मधुमती, शोध पत्रिका नवज्योति, मरुभारती लोकवाणी, वरदा, त्यागभूमि तथा तरुण राजस्थान आदि ने भी राजस्थान मे सामाजिक व साहित्यिक स्तर का विकास किया है। श्री नरोत्तमदास, अगरचन्द नाथूरामजी खडगावत आदि बीकानेर राज्य के इतिहास लेखक हुए। राजस्थान मे श्री देवीप्रसाद

---

1 16वीं शताब्दी मे बीकानेर के पृथ्वीराज जी राठौड प्रसिद्ध विद्वान और साहित्यकार थे। उनकी बेलि राजस्थानी की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है। उन्होंने एक जोशीला पत्र लिखकर राणा प्रताप को अकबर की अधीनता स्वीकार करने से बचाया।

हरविलास, डॉ दशरथ शर्मा रामनारायण दूगड, श्री गहलात मुनिजिन विजय, ओझा आदि राजनैतिक इतिहास लेखक बनकर ऊँचे पहुँचे।

मेले—कालू म कालिकाजी का नवरात्रि मेला, सियेरा म रामदेवजी का, पूनरासर मे हनुमानजी का श्री कोलायतजी का मेला, गोगा मेडी का मेला आदि हमारे राज्य म मेले लगते रहे हैं। राजस्थान मे परबतसर, पुष्कर नागौर नाथद्वारा, तिलवाडा तथा अजमेर मे ख्वाजा साहब आदि के मेले सदा से प्रसिद्ध हैं।

कला—भारतीय कला का सारत्स है। कला जिस भूमि म उत्प न हुई है तथा जहा वह पनपी है वह धरा वास्तव म धर्मनिष्ठ है। ललित कलाओ म राजस्थान की चित्रकला की गहनता सर्वाधिक है। चित्रकला, नृत्यकला व सगीतकला म प्राचीन समय स विशिष्टता रखने वाला प्रदेश राजस्थान ही है। यहा राजा महाराजाओं ने चित्रकारों नृत्यकारा एव सगीतज्ञा को सदव आश्रय दिया है।

अग्रेजा के सम्पर्क से वास्तुकला एवं भित्ति चित्रकला में नई शली पनपन लगी थी। जो आगे जाकर गावो तक प्रचारित हो गई। बीकानेर म लालगढ महल, जयपुर मे मान गाहन क भवर और जोधपुर का उम्मेद भवनादि इसके प्रमाण हैं। इनम राजस्थानी और मुगल चित्र शली का मिश्रण पाया जाता है। यहा के कल्याणसिंह शेखावत गोवर्धनलाल जोशी आदि प्रसिद्ध कलम चित्रकारो क नाम है।

प्राचीन कालू आदर्शोज्ज्वल, वर्तमान म प्रगति पथ पर संघर्षरत हुआ। वह बहुमुखी सफलताओ की आशवस्ति लिए हर्षमग्न सस्थिति निवासित, जिले का कुशल कस्बा, स्वास्थ्य शिक्षा धार्मिक सहिष्णुता, सुधरी सांस्कृतिक अवस्था, साहित्यिक विधियो, राजनैतिक चेतनाओ तथा सार्वजनिक जन हिताय सस्थाओ की गति प्रगतियो की पावन विचारधाराओं का बनाय रखन म अपन लघु रूप म सदियो से तत्पर है। इस छोटे से कस्बे की गिनती की हवेलिया, मदिरों, धर्मशालाओ, छतरियो आदि म स्थापत्य कला क आदर्श नमूने दिखाई देते हैं। उनमे पुरानी भित्ति चित्रकारी के चित्र सयोजन, विषय वस्तु रग याजना तथा कथावस्तु के महत्वपूर्ण प्रकटीकरण दृष्टिगोचर होते है। इसका कारण कालू के लाग बीकानेर महाराजाओ के राज दरबार, दुर्गों गढो, पलेस तथा नगर का अ य हवेलियो आदि के मकानों का देख देखकर प्रभावित हुए। तभी तो उ होंने अपन इस कस्बे म काफी समय पहले ऐसी सुन्दर और गाँव क स्तर से बहुत ऊचे दर्जे की हवलिया बनान की परम्परा प्रारम्भ कर ली थी। कालू की इन प्राचीन हवलियो के मालिक सेठ वगरह जिनका आना जाना प्राय बीकानेर और राज्य म था। इनमे नाहटा, कोठारी झवर वद और गुरांजी अग्रणी रहे। उन्ही के हवेलियो और उपासरे म उत्कृष्ट भित्ति चित्र मिलते हैं। जन के आँठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभु के मदिर और मेडा की छतरी मे इनसे भी पुरानी चित्रकारी पाई जाती है। मानाजी के मदिर और सत्यनारायणजी के मदिर मे भी घोटवी कली पर प्राचीन शली के भित्ति चित्र अत्य त आकर्षक एव कलात्मक दृष्टिगोचर होते है। इनम एक अनुकरणीय भावना ज्ञात होती है कि बीकानेर के अ य बडे बडे नगरो क धनपति परिवारो मे यह परम्परा प्रचलित थी। वे उस समय राजा महाराजाओ की भाँति अपन विशाल भवनो में भित्ति चित्र, चित्रित करवाने में बडप्पन का अनुभव करते थे। उनम अभिजातीय भावना और शाही स्तरीय जीवन बनाने की सोत्कण्ठा, होड रहती। क्योंकि उनका बीकानेर के राज दरबार स गहरा सबध था। तब कालू के महा जन क्से पीछे रह सकते।

वि० स० 1972 के लगभग सेठ सुगनमल नाहटा और उनके अनुज पदमचद तथा तोलाचन्द कोठारी और आसकरण वेद का कोरणीदार हवेलियां बनी। वरणींदान फतेहचन्द बोथरा के उस समय के बने मकान में एक चित्रकार के हाथों बने मोटे चित्रों के नीचे छाटू कुम्हार के हस्ताक्षर हैं। सन् 1939 40 में सरदारशहर का मोहम्मद कारीगर नाट्य परिषद चालू के पर्दे बनाने के लिए आया था। उसने पर्दों के साथ रगमच पर सुन्दर चित्र बनाकर चालू के लोगों को आश्चर्यान्वित कर दिया। उसी वर्ष उदयचन्द भैरूदान साड ने मोहम्मद से एक दो मजिला सुन्दर कमरा बनवाया। इसके बाद सरदारशहर से आया हुआ एक अन्य मोहम्मद भी मकानों के साथ चित्र बनाता था। अलमूखाँ कारीगर ने श्री इन्द्रचन्द्र राठी के नवीन भवन में अच्छी चित्रकारी की है। उसने चालू में अनेक मकान बनवाये हैं। चालू में श्री डूगरराम स्वामी वास्तुकला एव काष्ठकला में बड़ा प्रवीण कलाकार है। आधुनिक ढग के बगले और भवनादि के चित्र बनाने में यहाँ अलमू का नाम है। डूगरगढ़ के कतिपय कारीगरों ने भी इन्द्रचन्द्र नाहटा और शिवनारायण डूडाणी के भवनों में नई चित्रकारी स्थापित की है। पर देवालयों में प्राचीन शैली के धार्मिक चित्र परिलक्षित होते हैं।

सगीतकला एव नृत्यकला—सगीतकला में पहले जयपुर के गायक बड़े प्रसिद्ध थे। बीकानेर में भी कई अच्छे सगीतकार हुए। अनूप सस्कृत पुस्तकालय बीकानेर में उनके द्वारा लिखे सगीत के अनेक ग्रथ उपलब्ध हैं। अब श्री जयचन्द शर्मा इस विषय पर अच्छा कार्य सचालन कर रहे हैं। जिले में यहाँ अनेक सगीतकार प्रसिद्धि प्राप्त हैं तथा कत्थक, शिव ताडव और रम्मत में बड़े सुन्दर नृत्य किये जाते हैं। चालू में साविक गणेना मिरासी बड़े सुभावने कत्थकादि नृत्य किया करता था। सन् 1946 में महाराज कुमार श्री अमरसिंह जी बहादुर चालू आये। तब उनके समक्ष गणेना ने कई प्रकार के नृत्य प्रदर्शन करके पुरस्कार प्राप्त किये थे।

इस क्षेत्र में पुरुषों द्वारा गीन्ड (डाडिया नृत्य) ढफ और भोपा नृत्य बड़े आनद दायक होते थे। कमूथा के थान (स्थान) पर लाइ की साँकलों से अपने सिर पर चोटें लेते हुए भोपे नाचते। गोगाजी और केसराजा कुवर के स्थानों पर भी भोपे साँकलों से नाचते थे। कालिकाजी के भोपे लाल बागा पहनकर नृत्य के साथ गोल निकालते और थाली को उछालकर डमरू के डके पर लेते तथा जमीन में त्रिशूल गाडकर करतब दिखाते। रात्रि जागरण में भी ऐसे करतब दिखाये जाते।

लूनकरनसर तहसील के गाँव हसेरा तथा चालू के कॉकड-सीमाडी आदसर में जसनाथजी के जागरण अवसर पर सिद्ध सम्प्रदाय का दर्शनीय अग्नि नृत्य, शब्द-लय एव मुद्रा का तालमेल से बड़ा विस्मय जनक होता है। गणगौर तथा अन्य उत्सवों पर पुरुष तलवारों का नृत्य भी दिखाते हैं। चालू में पहले स्व० मालूराम और अब उसका लड़का तलवार नृत्यकार है।

पहले विवाह आदि के समय चालू में कच्छी घोडी का सुन्दर नृत्य हुआ करता था और चारणों के याचक लोग कठपुतलियाँ भी नचाया करते थे।

हाली गौर जसे विशेष त्यौहारों पर स्त्रियों द्वारा लूर एव घूमर नृत्य का विशेष प्रचलन था। पहले के इन नृत्यों की यह विशेषता थी कि किसी भी नृत्य में पुरुष और स्त्री एक साथ मिलकर भाग नहीं लेते। राजा महाराजाओं की महफिलों में पेशेवर

महिलाए चीरे का न य भी नाचा करती थी। ऐसे लोक नत्यों म राजस्थान के तेरहताली रणनत्य, पाँचपदा आदि के नाम उल्लेखनीय है।

नाट्य कला—राजस्थान मे महत्वपूण कलात्मक उपलब्धि लोकनाट्य की रचना है। यहाँ के ख्याल, माच, तुरा, कलगी, रासधारी, रामलीला, रासलीला भवाई एव रम्मत कुछ विशिष्ट नाट्य प्रकार हैं।

कालू मे पहले नाटक प्रदशन कला, रासलीला, रामलीला एव होली क स्वाँग की परम्परा से शुरु हुई थी। उस समय बीकानेर के श्री जीतमल भोजक आदि की रमतें भी ख्याति प्राप्त थी। यहाँ क निकटवर्ती नगर सरदार शहर म स्व० शोभाच द जम्मड के नाटक (अभिनय) बडे प्रसिद्ध होते। चूरू मे तुलसी नाट्य परिषद तथा अ य शहरो के नाटक मडलो और रगमचो की व्यवस्थाए देख सुन कर कालू म लाधूराम नाहटा (वि स 1986) और उसके बाद श्री गिरधारी लाल भँवर (वि म 1994) क नेतत्व म भक्त सूरदास वीर अभिमन्यु श्रवण कुमार आदि नाटक खेले गए। नाटक का पहला रगमच कालू मे राजलदेसर की एक नाट्य मडली ने वि स 1985 में बनाया था। फिर बनेचन्द नाहटा की दुकान के बरामदे मे और इसके बाद भँवरो की धमशाला म बना जो आज तक चलता है।

आर्थिक परिस्थिति—उनीसवी शताब्दी से जो आर्थिक स्थिति चल रही थी, 1937 स 1947 ईस्वी तक वही बनी रही। धीरे धीरे जनता का अप व्यय बढने लगा और बेराजगारी म कतई कमी नही आई। जीवन की जटिल समस्यायें घटने के बजाय बढने लगी। हजारो बेकार शिक्षित राजनतिक आन्दोलनों मे भाग लेने लग। तब राजस्थान, साम तशाही मे मुक्त हुआ। बीकानेर म तत्समय चार हजार आठ सौ अडसठ बकार थे। यहाँ का मुख्य ध धा खेती का था, मगर पढे लिखे लोग खेती से किनारा करने लगे। तब कृषि की दशा भी कैसे सुधरती! कविताएँ बनने लगी—

> शिक्षा समाप्त हुई, आफन म जान आई
> नौकरी क लिए कही अर्जी लिखायेंगे (हि दी की एक हास्य पत्रिका स)
> नौकरी मिल गइ तो हैट बूट डट क
> होटलो में जाकर व्हिस्की उडायेंगे
> नही तो कृषि का काय नही करेंगे हम
> जगल मे जाकर धूनी रमायेंगे ॥

राजस्थान की भूमि बजड और सूखे स शीघ्र प्रभावित होने वाला तथा सिंचाई के साधन बिलकुल नही के समान। अत अन्न उत्पादन मे कमी और छिनमा जैसे अकालो की चपेट के कारण जनता की आर्थिक स्थिति महा दुबल होती गई। लूनकरनसर तहसील तो सदा से पिछडी हुई थी। क्षेत्र के बहुत स गाँवों की खारे पानी वाली कम क्षारीय जमीन में ग्वार मोठ और बाजरे के अतिरिक्त अ य चीजो का बोना असम्भव था। इस फसल उत्पादन की अयोग्य जमीन को पशुओ का चारागाह ही जाना जाता था। इसलिए सब्जी और फलो की अभाव पूर्ति केवल मतीरे काकडिया से की जाती थी। यहाँ के किसान परम्परागत पुरान औजारो से ही काम चलाते रहते। अत कृषि मे कालू की भी यही दशा बनी रही।

लूणकरणसर के पडौसी क्षेत्र श्री गगानगर म इस समय जरूर सिंचाइ के माध्यम से उन्नत खेती एवं समद्ध किसान थे। इसलिए हमारी तहसील मे भी कुछ खुशहाली हो

गई थी। किन्तु यहाँ के काश्तकार को कजदार होते हुए भी बठ बेगार तथा जागीरदारो की लाग लूण मे पिसना पडता था। अत काग्रेस अध्यक्ष स्वामी कर्मानन्द आदि ने काश्तकारो के लिए राज्य से लडाई लडनी शुरू की। सामतशाही क खिलाफ आन्दोलन हुए। तत्कालीन जोधपुर के किसानो को राहत पहुँचाने हेतु श्री नाथूराम मिर्धा न काश्तकारी कानून' बनाकर काश्तकार को खातदार तथा मालकाना अधिकार दिलवा दिए। 1950 तक किसानो के लिए ऋण, कुए और सिंचाई के साधन सुलभ करवाये गये। 1953 के बाद तो लूनकरनसर तहसील के कूओ, जोहडो की मरम्मत-खुदाई, नये औजार, उन्नत बीज और सिंचाई की योजनायें, पंचवर्षीय योजनाओ के अन्दर स्वीकृत होकर काश्तकारो को क्रम क्रम स लाभान्वित करने लगी। इस रेगिस्तानी खेती के साथ काश्तकार लोग पशुपालन मे भी भाग लेत रह। बीकानेर की भेडें ऊँट और पूगल छनगढ तथा महाजन के पास की राठी गायें देश के दूर दूर कोनो तक प्रसिद्ध थी। इस जागलय प्रदेश की स्वास्थ्य कर घास के कारण किसान लोग खेती की बजाय पशुओ से अधिक फायदा उठाते।

कालू के काश्तकार अधिक पशु पालन कर्त्ता, इनमे अेवड (रेवड) वालो की सख्या ज्यादा थी। वसे अच्छी नस्ल की गायें भसे और ऊँट भी रखते थे। अेवड वाले घर तो दिनो दिन बढते ही गये। मगर द्वितीय महायुद्ध के बाद अन्न की कीमतें बढ गई, तब कालू म भी खेती पर जोर दिया जाने लगा। इसलिए चरागाह कम पड गए और कालू जसे उन्नति शील गाँव म कुछ अग्रणी लोगो को राजनतिक आन्दोलनो मे भाग लेकर गोचर भूमि की जगह निश्चित करवानी पडी। यह गोचर भूमि गाँव के पास उत्तर की ओर थी। इसके बीड रूप स हर वष वर्षा का आह्वान होता और दुर्भिक्ष के समय पशुओ का अनायास मरन के लिए विवश नही होना पडता। इससे हजारो पशु-पक्षियो का पोषण सरक्षण होता रहता था। वृद्ध एव अनुपयुक्त (लूले-लगडे) त्यागे हुए पशुओ के स्वच्छन्द विचरण तथा उदर भरण का एकमात्र बीड ही स्थान था। वन्य पशु जहा खुले खेलते, वहा असख्य पक्षी भी पडों पर बसेरा लेते थे। यह बीड अपने कस्बे की दूषित वायु को पीकर जनता को प्राण दायक अमृत वायु भी प्रदान करता था। भ्रमण-शील जन स्वास्थ्य के लिए गोचर भूमि की हरियाली एक अनोखी वद्य स्वरूप हितैषिणी थी। परन्तु अफसोस ह कि कालू की यह गोचर भूमि कभी की अलोट कर दी गई। इसके लिए बेचारे किसान पार्टी वाले अभी तक सत्य वार्ता बताते हुए विरोध प्रकट करते हैं कि आस पास क शहरो म पशुओ के लिये अच्छे बीहड हैं, किन्तु गाव कालू का चारागाह खत्म कर दिया गया है। लोग खेत बेचते हैं पजाबियो से पसे लेकर खा जाते हैं, पर पशुओ की जानमारी पर ध्यान नहीं।

यातायात—राजस्थान के विभिन्न राज्यो में यातायात तथा सचार व्यवस्था का बडा अभाव चलता था। जोधपुर बीकानेर, बाडमेर, जसलमेर आदि जिलो म यातायात के लिए भारी आकषण के साथ इसकी प्रतीक्षा थी। जयपुर अलवर, भरतपुर म सडकें थी। बीकानेर, जोधपुर, धोलपुर जयपुर, उदयपुर के पृथक पृथक रेल रास्ते थे। जोधपुर व बीकानेर रेल्वे पहले सम्मिलित थी। किन्तु स० 1924 से अलग हो गई। हवाई यातायात प्रथम जोधपुर मे था। मगर द्वितीय महायुद्ध के समय वहा हवाई सनिक प्रशिक्षण महाविद्यालय भी स्थापित हो गया। जयपुर और बीकानेर मे भी हवाई मदान रहे हैं।

। ।" कालू म पहने बीकानेर या भटिण्डा से रेल द्वारा लाग आते जाते थे एवं लून करनसर स्टेशन पर उतरते। तब बस्ती जोगियान या वास तेलियान मे ऊंट की खोज करके मुह मांगा किराया देकर कालू पहुँच पात। पदल यत्रियो को तो सिर पर गाना का बनने लेकर यात्रा मे निकलना पडता था। ऊंटा की यात्रा म लाग, आधी रात के बाद घर म प्रस्थान किया करने थे। लम्बी यात्रा मे उनका रात्रि के प्रथम पहर म ही चलना पडता था तथा रात दिन एक करके दूर की यात्रा तय किया करते थे। किन्तु छोटी यात्रा म चार बजे के आम पास घर से निकलने। प्राचीनकाल म गाव बहुत दूर-दूर हुआ करते और यात्रियो को रास्तो का बडा ध्यान रहता था। गतव्य स्थान से पहल रास्ते मे आन वाले गाँवों मे बाहर निकलते हुए तुरन्त रास्ता पूछ लिया करते थ। प्रत्यक गाव के कूए रात को चलने रहते, यात्री लाग वहा ठहरकर होका पानी करते तथा आखिरी घर पर चिलम तम्बाखू करके रास्ते लगत थे। कभी कदा ऊंटा पर चढ़े चढ़े ही आवाज देकर चौकस रास्ता वगरह की जानकारी कर लिया करत थे।[1] इस तरह से यहा के लोगो की एकाकी या सामूहिक यात्राएँ हुआ करती थीं। आजकल रोड पथ के अतिरिक्त कालू से चारो ओर बस सर्विसें ट्रक और कारें चलती हैं।

सहकारिता और उद्योग—सबसे पहले भरतपुर राज्य ने वि स 1915 म काश्तकारों एव लघु औद्योगिको को सहायता देने के लिए सहकारी सस्थाए स्थापित की थी। बीकानेर राज्य ने स० 1926 म सहकारी समितिया खाली। इसका एक्ट बीकानेर राज्य में 1920 म पारित हो गया था, जिसका सन् 1953 म नवीनीकरण किया गया। सन 1929 म केन्द्रीय सहकारी भूमि बधक बक श्री गगानगर म स्थापित हुआ था। चूरू जिले मे सव प्रथम अप्रल 1945 म सहकारी ऋणदात्री समिति का गठन हुआ और अब जिले की जिला तहसील तथा प्राथमिक स्तरीय सहकारी सस्थाएँ सवत्र कायशील हैं। राजस्थान निर्माण तक 2676 सहकारी समितिया बन गई थी। वतमान मे हमार केन्द्रीय सहकारी बक शाखा लूनकरनसर" अपनी तहसील लूनकरनसर म कायरत है। बक प्राथमिक स्तर की सहकारी समितिया को अल्पकालीन तथा मध्यकालीन ऋण की सुविधा प्रदान करता है। क्रय विक्रय सहकारी समिति लि० लूनकरनसर अपन गठन के समय म ही सफलता पूवक अपन उद्देश्यो की पूर्ति की ओर अग्रसर है। तहसील की दुग्ध उत्पादक सहकारी समितिया लूनकरनसर चिलिंग सेंटर (अवशीतन केन्द्र) से सम्बधित है। तहसील मे भेड पालन सहकारी समिति और गृह निर्माण सहकारी समिति तथा अन्य सहकारी समितिया भी कायशील हैं।

उद्योग किसी भी देश या जाति के सुख समृद्धि का द्योतक, आज के वैज्ञानिक साधनों द्वारा भौतिक आवश्यकताओ की पूर्ति करवाने मे समथ है। राजस्थान के उद्योगपति भारत के हर स्थान में बडे उद्योगपति के नाम से सम्बोधित होते हैं। स्वतन्त्रता से पहले यहाँ उद्योग धधो की कमी थी। राजनतिक, प्रशासनिक आर्थिक एव प्राकृतिक परिस्थितियाँ ही अनुकूल नही पडती। तब यहाँ के व्यापारियो को बाहर जाकर अपने उद्योग स्थापित करने पडे। दूसरी बात, बिजली, कच्चे माल, कुशल श्रमिक राज्य

[1] रात्रि के समय चूक आने या रास्ता भूल जाने पर ध्रुव तारा तथा सप्तऋषि मडल से सही दिशा मालूम करके यात्रापूर्ण किया करते थे।

सहायता व सुरक्षा के अभाव में यहाँ कोई विशेष उद्योग या बडा काय नही खोल सका। वसे कपडे के कारखाने ब्यावर, किशनगढ, जयपुर, पाली, श्रीगगानगर मे स्थापित थे। श्री गगानगर, बीकानेर तथा भोपालसागर (उदयपुर) मे चीनी के कारखाने भी चल रहे थे। सीमेन्ट व धातु के उद्योग भी यहाँ सवाई माधोपुर और जयपुर मे थे। किन्तु लघु उद्योग यहाँ के सदव प्रसिद्ध रहे। जैसे—चमडे, जस्ते, मकराना व हाथी दात के, रगाई के मूर्तिया के, बतनो की खुदाई, नमदे कम्बलें, दरिये, लकडी आदि के खिलौने, अस्त्र-शस्त्र ओजार और वाद्य यन्त्र राजस्थान के दूर-दूर तक प्रख्यात थे। बीकानेर के नमदे-गलीचे आदि दूर-दूर जाया करते थे। गगासिहजी ने खादी उद्योग को भी अच्छा प्रोत्साहन दिया था। बीकानेर म ऊन का उद्योग तो सर्वोपरि कहलाता था। यहाँ की जेल म बन गलीचे दूर-दूर तक प्रदर्शित हाते थे। उस समय जयपुर, जोधपुर तो जवाह्-रातों के उद्योग में भी प्रसिद्ध थे। गाँवा मे खादी आदि कपडों का उत्पादन होता था। कालू के परपरित जुलाहे खाग्गे और ऊन के कम्बल तथा शाल बनाने में अपने क्षेत्र के कुशल श्रमी थे।

राजस्थान मे उद्योग और व्यापार का सदीना सम्बध चलता आया है। ऐसे उद्योग व्यापारो में अनाज-प्याज, पत्थर लक्डा-बगडा, चमडा-कपडा वगरह के काय बडे श्लाघनीय करीने से सम्पन्न हाते थे। यहाँ के बडे लोग बगाल, बिहार, आसाम, नेपाल, बम्बई, मद्रास मैसूर तथा कानपुर, अहमदाबाद आदि नगरो तक कायशील व्यापारी रहे हैं। मगर साधारण व्यापारी तो प्रत्येक गाँव म जरूरी दैनिक वस्तुओं द्वारा लेन देन करते हुए जनता से सबधित रहत। कुछ लोग मनिहारी, साग-सब्जियो का विक्रय गाँवों म घूम घूम कर किया करते थे। कालू में भी ऐसे व्यापारों का पूरा प्रभाव था। गगनहर के आगमन से अथ-व्यवस्था सुधर गई थी और इस पुराने पिछडे हुए क्षेत्र मे औद्योगिक प्रवृत्ति भी अकुरित होने लगी। इसलिए वे प्राचीन मूल्यांकन बदल गये। कालू के लोगो ने भी श्री गगानगर से सम्पर्क बना लिया था।

न्याय-कार्य और शासन—राजपूतान म सर्वोच्च न्याय काय रियासत क महा-राजा मे निहित रहता था। यद्यपि प्रत्येक राज्य मे उच्च न्यायालय हुआ करता था। तथापि कतिपय मामलों की शाही अपीलें महाराजाओ के द्वारा ही निणय सप न की जाती थी। विशेष मामलों की अपीलें सघ-न्यायालय (दिल्ली) एव प्रिवी कौंसिल (लदन) तक चली जाया करती थी। प्रत्येक राज्य के नीचे जिला एव सत्र न्यायालय तथा दीवानी व अतिरिक्त सत्र यायालय और मुसिफ न्यायालय भी हुआ करने थे। यायाधीश प्राय राजाओ के बिरादरी सबधी तथा सम्माननीय लोग नियुक्त हुआ करते। राज्यों में कई जागीरदारो को न्यायिक अधिकार प्राप्त थे। ईमान व शिक्षा की कमी म राज्य भय अधिक होता था। बीकानर महाराजा श्री गगासिह जी तो न्याय दिलवान हेतु कानून का अपने पैर तले बतला दिया करते थे। तात्पय यह है कि शासन प्राय राजाओं की इच्छा पर व्यवस्थित रहता था। कभी कदा शासन में अग्रेजो की मनमानी भी (देशी रजवाडा में) प्रवेश कर लिया करती थी। दीवान, सेनाध्यक्ष म तया विभागाध्यक्ष तक अपन अलग वेतन और अलग पद योग्यताएँ चलती थी। बीकानेर और जयपुर, जोधपुर के पडौसी राज्यों मे प्रशासन अग्रेजी प्राती के मुवाफिक बन गया था। नवयुग की माँग—व्यवस्थानुसार बीकानेर म योग्यता के, मुताबिक नियुक्ति देने के लिए लाक आयोग भी स्थापित हो गया था।

जन-सरक्षण—यहाँ पर जन रक्षाय पुलिस दल हुआ करते थे। किन्तु दक्षता एव सगठनात्मक पक्ष मे प्रत्येक राज्य की अपनी विशेषता तथा कुरूपता स्पष्ट दिखाई दिया करती थी। बीकानेर मे पुलिस दल व्यवस्था सुन्दर थी। यहा अपराधो की खोज बाबत वनानिक एव आधुनिक साधन सव प्रथम लाय गये थे। रसायनिक जाँच, छाया चित्र और अगुली छाप के काय साधन थ। कुछ कजर, ससी और बावरियो जैसी जातियाँ, जरायम पेशा तथा खानाबदाश जातियाँ पुलिस की बडी निगरानी में हाजिरी पाबद रहती थी। कालू का भागू बावरी हाजिरी मे ही मर गया, लेकिन अजुन बावरी काफी समय तक हाजिरी देता रहा। लूनकरनसर थान क थानदार श्री सालमसिंह (सन् 1939), करणीसिंह (1942) जगमालसिंह (1944), हमीरसिंह (1947) के समय कालू के इन जरायम पेशा लोगो की उपस्थिति लन वाला रजिस्टर इन लाइनो के लेखक को सौंप रखा था। आखिर 1946 म महाराज कुमार साहब कालू पधारे तब प्रायना पत्र देकर अजुन बावरी की हाजिरी माफ करवाई गई। अजुन ने हाजिरी के दुख से भगवे कपड़े पहनने शुरु कर दिये थे। उस समय राजनतिक जागृति तथा वक्तव्य देने वाले लोगो को भी परेशान रखा जाता था। इस समय रावत जाट का नाम भी स्याह सूची मे दज था।

पचायत एव स्वायत्त शासन—साम तशाही के युग म स्वायत्त शासन सस्थाओ की तरफ राज्य और समाज दाना का कम ध्यान था। वे नाम मात्र की स्थापित हुई कि पूरे अधिकार भी नही दिय। स 28 स बीकानर राज्य ग्राम पचायतें भी स्थापित हुई। सवप्रथम बीकानेर राज्य न पचायत नियम बनाकर 25 गाँवो मे पचायतें खोली। दीवानी एव फौजदारी के अधिकार केवल कागजों म ही दिये थे। ये लोकहितकारी काय नही कर पाती। लूनकरनसर म उसी समय से पचायत कायम थी, मगर अपढ जनता से बेपत्ता।

फौज—प्रत्यक राज्य अपना-अपनी सेनाएँ रखते थे। ये अग्रेजी साम्राज्य की सहायता म अधिक तत्पर रहती। प्रथम महायुद्ध के समय अग्रेजो को राजपूतान से अनेक फौजों का सहयोग मिला। इन सनाआ न वहाँ बेजोड वीरता दिखाई। चीन के युद्ध में बीकानेर के गगारिसाले और जोधपुर क घुडसवार रिसालो का उल्लेख सनिक खरातो मे किया गया। अलवर का विजयवेटरी व बीकानर तथा जयपुर की खच्चर सेना ने भी जापानियो के विरुद्ध वडे वीरतापूवक युद्ध लडे थे। इन रियासतों के महाराजाओ का अग्रेजी शासन म बडा नाम हुआ।

राजपूताने के आय व्यय के साधन—भू राजस्व, आबकारी जकात, ट्रब्यूट आदि आय के स्रोत विभाग थे। व्यय के मुख्य नाले राजमहल, सेना, सामान्य प्रशासन, शिक्षा, सावजनिक निमाण, चिकित्सा एव जन सुरक्षा आदि थे। ये खच अधिकतर राजधानियो मे ही होते थे। गाँवा के सावजनिक विकास कार्यों में अधिक व्यय नहीं होता। राजाओ के पारिवारिक देश विदेश भ्रमण और विदेशी मेहमान तथा राजमहलो के अधिक खर्चे थे। अत राजस्थान निमाण के वक्त (1949) म 1 66 करोड का घाटा था। फिर भी जयपुर, बीकानर जस कई राज्य जन कल्याणकारी कार्यो पर दिल खोलकर खच करते थे। किन्तु इस ओर जागीरदारो का ध्यान मलीन रहता था। वे मान मानी लाग बागें 'कर' की तरह वसूल किया करते। उनके घर खच बाबत अन्न फल साग घी, दूध, लकडी जसे पदाथ ग्रामीण किसान सम्मान-स्वरूप पहुँचा

दिया करते थे। फिर भी मल्बा नानवा, बाईजी का हाथ खच माताजी की भेंट, जाजम खच ढोल खच, धूआ, हल, बठिया, पान चराई व खुट व दी, कासा, कलेवा[1], कारज खच, पटडा मेख, दाना घास, नेवता (निमन्त्रण) आदि 'कर' के रूप म लिए जाते थे। कहीं कही लिखाई भी, कामदार की और वजावे की लाग भी ली जाती थी। खालसा के गाँवों मे भी रूपोटा, खोला चौथ धूआ, माछ नजराना और राज्यतिलक जसे भेंट 'कर' वसूल किये जाते थे।

राजस्थान का बन जाना—रही घणा दिन राजर बेदरज वरती।
जाती करै जुहार वणिया सू धरती॥

'माता पृथ्वी महीयम।'' यह विशाल पृथ्वी हमारी माता है। यहा कितने पृथ्वीपति बने और गय? 'अति चिर निवासेन, पिया भवति अप्पियो। (जातक—18।528।136) लम्बे सहवास से प्रिय भी अप्रिय हो जाता है। सन् 1947 तीन जन के दिन अग्रेजी लोकसभा मे वहाँ के प्रधानमन्त्री श्री एटली द्वारा आगामी 15 अगस्त 47 के दिन विभाजित भारत को स्वतन्त्रता देने की घोषणा कर दी गई। केन्द्रीय सरकार ने हाथ पर सभाले, क्योंकि अग्रेजी सरकार ने रियास्तों वाला स्वतन्त्र बखेडा भी खडा रखा था। मुस्लिम लीग वाले इसे चाहते थे, मगर काँग्रेस हस्तातरण के विरुद्ध थी। फिर भी वायसराय ने शासकों को समझाया कि—'वे किसी भी एक राष्ट्र से अपना सम्बन्ध स्थापित करलें।'' उसी जुलाई मे एक नया विभाग बना जिसके मन्त्री श्री वल्लभ भाई पटेल और सचिव वी पी मेनन नियुक्त हुए। सरदार पटेल ने राजाओं को विश्वास दिलाया कि रियासतों के घरलू मामला म किसी प्रकार से हस्तक्षेप नही होगा। उन्होंने सामान्य हित के सब विषयो मे "यथा पूव समझौता' करने को भी कहा। राजाओं ने विचार करके भारतीय सघ मे सम्मिलित होने के लिए अधिकार पत्र तथा 'यथा पूव समझौता' तयार किया।~25 जुलाई को लार्डमाउण्टबटन ने नरेन्द्र मडल के अधिवेशन म राजाओं को वहा बात कही कि आप भारत या पाकिस्तान जिसे उचित समझें, साथ मिल जायें। तत्काल बीकानेर महाराजा श्री शादूल सिंह ने राष्ट्र हिताथ सबसे पहले 7 अगस्त को सविलयन क अधिकार पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। 'यथा पूव समझौत'' पर भी समस्त राजाओं के हस्ताक्षर हुए कि उस बाबत रियासत और स्वराज्य के सामान्य हिताथ कुछ समय शासन प्रबन्ध को बनाये रखना आवश्यक था। उपरोक्त ढग से भारत स्वतन्त्र हो गया। सब रियासतें भारतीय स्वाधीनता अधिनियम 1947 के अनुसार सम्पूण प्रभुत्व सम्पन्न तथा स्वतन्त्र हो गई। जयपुर जोधपुर, बीकानेर प्राचीन,



बीकानेर महाराजा श्री शादूलसिंह

1 किसान अपने विवाह औसरादि के समय मिष्ठान की 15 20 थालियाँ परोसकर जागीरदार क गढ म भेजते।

त्रावनकोर, भोपाल, मैसूर, इन्दौर आदि भारत की 18 रियास्तो को नई सरकार न स्वतन्त्र इकाई मे रखना चाहा। किन्तु ऐसा न होकर, प्रशासन का आधुनिकरण हो गया इस तरह स चार बार मे राजस्थान क राज्यों का एकीकरण पूरा हो सका है।

जयपुर, जोधपुर और बीकानर के नरेशो की इच्छा रही कि वे अपनी रियास्तो का अलग रख लें। किन्तु बडी बडी रियास्तो का सघ मे ल ली गई थी तब वैसा नहीं हो सका। इसलिए काफी विचार विमश करके 30 माच 1949 को सरदार पटेल द्वारा एक साथ वहृद राजस्थान सघ का उदघाटन कर दिया गया। उदयपुर महाराणा को महाराज प्रमुख और जयपुर महाराजा सवाई मानसिंह राजप्रमुख बनाये गये। इस सयुक्त राजस्थान की राजधानी जयपुर बनाई गई। प्रथम नवम्बर 1956 को अजमेर राज्य, आबू रोड तथा देलवाडा तहसीलें राजस्थान मे मिलाई गई। इसी दिन राजस्थान को भारत के दूसरे राज्यो की भाति प्रमाणित माना गया। फिर राजप्रमुख पद की समाप्ति करके राज्यपाल की नियुक्ति की गई जो प्रथम राज्यपाल सरदार गुरुमुख निहालसिंह (1957 62) तथा फिर डॉ० सम्पूणानन्द (1962 67), सरदार हुकमसिंह (1967 72) सरदार जोगेन्द्रसिंह (1972 77) श्री वेदपाल त्यागी (1977) फिर अभी रघुकुल तिलक रहे।

स्वतन्त्र राजस्थान—राजस्थान का निर्माण एक नय राज्य के रूप म 1949 ई 30 माच को हुआ। रियास्ती राजाओ ने अपनी सत्ता मत्ता (शासन सम्पति) सहर्ष भारत सरकार के हवाले कर दी। इस प्रकार की सौंपी गई सम्पति में सब राज्यों से बीकानर राज्य अग्रणी रहा। बीकानेर राज्य ने भारत सरकार को उच्चतम सख्या 4 87,00 000 की नकदी भेंट की। इसके पीछे जोधपुर राज्य ने 4,75 00,000, तथा जयपुर राज्य ने 4 58 00 000 की नगद रकम राजस्थान के सब राजाओं के साथ भारत सरकार को जमा करवाई थी। इस सत्ता त्याग के उदात्त आदश बाबत राजाओ को प्रिवीपस एव कतिपय अन्य अधिकार मिले। राजाओ की निजी सम्पति जो रियास्ती द्रव्य से पथक थी, वह उन्ही के पास रही।

प्रिवीपर्स—बीकानेर नरेश न भारत सरकार को सबसे अधिक सम्पति सौंपकर, प्रिवीपस के लिए ही सन्तोष रखा। जहाँ उदयपुर महाराणा को वार्षिक बीस लाख रुपये, जयपुर महाराजा को अट्ठारह लाख रुपये, जोधपुर को साढे सत्रहलाख रुपये के प्रिवीपस मिले, वहा बीकानेर महाराजा ने सत्रह लाख रुपय का प्रिवीपस लेकर अपनी सरल एव उदात्त भावना का उदाहरण प्रस्तुत किया। इनके बाद कोटा को सात लाख रुपये अलवर को पांच लाख बीस हजार रुपये भरतपुर को 5 02000 रुपये बूदी को 2 81000 रुपए जसलमर को 2 80 000 रुपये टोक को 2,78 000 रुपए डूगरपुर 1,96 000 रुपए, धौलपुर किशनगढ व झालावाड को बराबर 1,36 000 रुपय तथा करौली और प्रतापगढ को भी प्रिवीपस मिले। लावा को मात्र 12 500 रुपए लघु रूप प्रिवीपस मिला। लेकिन इतना कुछ और विशेषाधिकारों के बावजूद भी राजा लोग अपने को शक्तिहीन जानकर सन्तुष्ट नही हो सके। अत कतिपय नरेश नये युग के रा० न० रमण योगी बनन लग और कुछ नप पुन बलधारण अभिलाषा से राजनीति के मदान मे आ खडे हुए। ऐसे चुनाव लडाक जोधपुर नरेश श्री हनुवन्तसिह, बीकानेर महाराजा करणी

सिंह, डूगरपुर नप लक्ष्मणसिंह प्रभति खड़े होकर 1952 के चुनाव लडे । लक्ष्मण सिंह हार गये, कि तु करणीसिंह लोकसभा के लिए चुने गय । जोधपुर महाराजा ने जयनारायण व्यास स चुनाव जीता मगर उसी वक्त एक हवाई दुघटना से नरेश का निधन हो गया । काग्रेस का बहुमत म त्री मडल बना, इसलिए जयनारायण व्यास का साम तों से मेल हुआ और कतिपय राजपूत काग्रेसी बन गय । कु भाराम आदि किसान दलीय नेताओ ने व्यास के विचारो का विरोध किया और सुखाडिया पक्ष से इसी मत पर अलग रहे । तब राजा एव जागीरदार काग्रेस मे प्रवेश नही पा सके ।

भारतीय सविधान सशोधन 56 के अनुसार राजप्रमुखो के पद-अस्तित्व समाप्त हुए, पर जयपुर नरेश मार्नासिह ने राजप्रमुख पद छोडकर भी चुनाव नहीं लडा । वसे 1957 के चुनाव बाबत कांग्रेस ने जयपुर एव बीकानेर महाराजाओ को कांग्रेस दल से खडे करना चाहा भी, कि तु दोनो ही दूर रहे । झालावाड का हरिश्च द्र चुनाव लडा और विधानसभा मे जीतकर पहुँचा । इस बार करणीसिंह लोकसभा मे तथा करौला का म० कु० व्रजे द्रपालसिंह (निदलीय) विधानसभा म गये और लक्ष्मणसिंह पुन हार गये ।



चुनाव के समय भूतपूव महाराजा करणी सिंह गुराजी और लेखक

सन् 1959 मे स्वत त्र पार्टी की स्थापना द्वारा कतिपय रानी राजा आगे आये । 1962 के चुनावो मे जयपुर की गायत्री देवी दौसा से म० कु० पृथ्वीराजसिंह बीकानेर के करणीसिंह झालावाड स कोटा का म० कु० ब्रजराजसिंह लोकसभा के लिए व जयपुर म० कु० जयसिंह और डूगरपुर के लक्ष्मणसिंह विधानसभा के लिए चुनाव जीत गये । हरिश्च द्र ब्रजे द्रपालसिंह काग्रेस दल से विधानसभा म चुने गये । मानसिंह भी स्वत त्र पार्टी व जनसघ के सहयोग से राज्य सभा के लिए चुना गया । भरतपुर राजा का अनुज मानसिंह डीग से लोकसभा का चुनाव हार गया । सन् 1967 के चतुथ आम चुनाव म राजा लोग कांग्रेस विरोधी अखाडेबाज उम्मीदवार बनकर चुनाव लडे । झालावाड का राजा कांग्रेस से अलग चुनाव जीता । तब ब्रजे द्रपालसिंह काग्रेस से जीत करके विरोधी

दल मे गया। किसनगढ के सुमेरसिंह और डूगरपुर के लक्ष्मणसिंह ने स्वतन्त्र दल से चुनाव जीते। जयपुर की महारानी गायत्री देवी भी लोकसभा के लिए स्वतन्त्र दल से चुनाव जीत गई। भरतपुर नरेश कृष्णसिंह कांग्रेसी राजबहादुर से चुनाव जीता। बीकानेर महाराजा निर्दलीय चुनाव लडे और जीत गये। लोहारु का नवाब कांग्रेस पार्टी से चुनाव जीतकर विधायक बन गया। हरिश्चन्द्र की मृत्यु हो जाने के बाद कोटा की महारानी उपचुनाव जीत गई। इस चुनाव मे कांग्रेस को 184 स्थानों में से केवल 88 स्थान मिले। पर सरकार कांग्रेस पार्टी की ही बनी। राजा लोग नवीन हवा से प्रभावित होकर जनता मे मिलते रहे और नई व्यवस्थानुसार राजस्थान एक सुखी समृद्ध तथा सुप्रबंधित राज्य बनता रहा है। उदाहरणत जालोर और चौमू के उपचुनावो मे कांग्रेस बहुमत से जीती, चौमू निर्वाचन क्षेत्र से भू० पू० मुख्यमन्त्री टीकाराम पालीवाल कांग्रेसी रामकिशोर व्यास से चुनाव हार गये।

स्वतन्त्र जनता ने अपने राज्य अधिकार सभाले—राजस्थान म उत्तरदायी सरकार की स्थापना के लिए संघर्षशील व्यक्ति जयनारायण व्यास, हीरालाल शास्त्री, गोकुलभाई भट्ट, माणकलाल वर्मा कुम्भाराम आर्य आदि लोग कांग्रेसी जन-नेता थे। राजस्थान मे जनतान्त्रिक सरकार के लिए मुख्यमन्त्री बनाने का सवाल आया, तब तत्कालीन केन्द्रीय सरकार के रियासती विभाग के मन्त्री सरदार पटेल ने इन्ही कांग्रेसियों को दिल्ली बुलाकर अपना नेता चुनने की बात कही। इस पर जयनारायण व्यास ने हीरालाल शास्त्री का प्रस्ताव रखा। गोकुल भाई ने अनुमोदित कर दिया और तय हुआ कि गोकुल भाई प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे तथा वर्मा और व्यास राजस्थान के मन्त्रीमडल में लिए जायेंगे। श्री शास्त्री को इनकी राय लेकर के मन्त्री मण्डल का गठन करना होगा। लेकिन शास्त्री न मन्त्री मण्डल बनाते समय वर्मा और व्यास दोनो की राय को विस्मरण कर दिया। तब ये लोग भी मन्त्री मण्डल में सम्मिलित होने से इन्कार कर गये।

हीरालाल शास्त्री ने 7 अप्रैल 1949 के दिन स्वेच्छा पूर्वक मन्त्री मडल बनाया जिसमे शोभाराम, रघुबरदयाल, भूरेलाल, सिद्धराज, वेदपाल त्यागी, फूलचन्द बाफना, प्रेमनारायण माथुर, हनुवतसिंह और नरसिंह कछवाह को लिए। इसका जयपुर जोधपुर, बीकानेर और सयुक्त राजस्थान की जिला कांग्रेस समितिया ने समर्थन नही किया। प्रदेश कांग्रेस समिति ने व्यास को अध्यक्ष चुनकर हीरालाल मन्त्रीमण्डल को स्तीफा देने के लिए बाध्य किया। किन्तु सरदार पटेल ने ऐसा करने से मना कर दिया। 1950 म पटेल का देहावसान हो गया शास्त्री को रियास्ती विभागीय समर्थन मिलना बद। इस मन्त्रीमडल ने 4 जनवरी को इस्तीफा दे दिया।

26 अप्रल 1950 का जयनारायण व्यास के नेतृत्व मे नव्य मन्त्रीमडल बना जिसमे मथुरादास, कुम्भाराम बृजसुन्दर, मोहनलाल सुखाडिया नरोत्तम जोशी जसवंतसिंह, जुगलकिशोर टीकाराम और बलवन्तसिंह मेहता को लिया गया। अनुसूचित जाति के प्रतिनिधि स्वरूप अमृतलाल उपमन्त्री बनाया गया। सन् 52 के चुनावो म जयनारायण व्यास हार गया और कांग्रेस को 160 म मे 82 स्थान मिले। कांग्रेस का बहुमत होने से दल का विधानसभाध्यक्ष नरोत्तम जोशी और नेता टीकाराम पालीवाल चुने गये। इन्होने सात माह मन्त्री मण्डल चलाया। फिर एक उप चुनाव से जयनारायण व्यास जीत कर कांग्रेस दल का नेता बना और उसने टीकाराम मोहनलाल सु०, रामकिशोर

भोगीलाल, रामकरण, भोलानाथ, नाथूराम मिधा, अमृतलाल, कुम्भाराम प्रभृति से अपना नव मंत्रीमंडल सजाया। नरसिंह कछावा और चंदनमल वैद उपमंत्री बने।

राजस्थान के विरोधी दल में मुख्यत जागीरदार थे और कांग्रेस की नीति जागीरी प्रथा को खत्म करने की थी। व्यास ईमानदार तथा सत्यनिष्ठ था, परन्तु दल को संतुष्ट नहीं कर सका। डाकुओं एवं जागीरदारों की समस्या बन रही थी। अतः उसने राम राज्य परिषद् के 22 ठाकुर (भरोसिंह सहित) राजपूतों को कांग्रेस में मिला लिया। तब कांग्रेस का किसान दल व्यास से नाराज हो गया। मतभेद बढ़ जाने के कारण 13 नवम्बर 54 में दलित परीक्षण हुआ। तब व्यास श्री सुखाडिया से हार गया। जागीरदार दल ने व्यास को और किसानों ने सुखाडिया को मत दिये। सुखाडिया ने मंत्रीमंडल बनाया जिसमें रामकिशोर दामोदरलाल, कुम्भाराम भोगीलाल, बद्रीप्रसाद, बृजसुंदर, रामनिवास अमृतलाल को लिए। शाहबुद्दीन, सम्पतराम और कमला बेनीवाल को उपमंत्री का पद मिला। सुखाडिया ने आखिर राजपूतों का समर्थन प्राप्त कर लिया और खेतसिंह को 56 में उपमंत्री बना दिया। अतः 1957 के चुनावों में जागीरदारों ने हार्दिकता के साथ कांग्रेस का सहयोग दिया।[1] तब उसे 176 में से 119 स्थान प्राप्त हुए। कांग्रेस दल ने विधान सभाध्यक्ष रामनिवास मिर्धा और अपना नेता मोहनलाल सुखाडिया को चुना।

सुखाडिया ने पहली बार मंत्रीमंडल में एक राजपूत नेता झालावाड नरेश हरिश्चंद्र को सहर्ष प्रवेश करवाया और किसान व राजपूतों में शांति-सुलह रखने का प्रयत्न किया। किन्तु इस बात पर किसान नेता कुम्भाराम और सुखाडिया का विवाद हो गया। प्रांतीय कांग्रेस समिति के चुनाव में सुखाडिया ने हरदेव जोशी को खड़ा किया, तब आर्य ने मथुरादास को खड़ा कर दिया और उसे अध्यक्ष बना दिया। परसराम मदरेणा सचिव बना जो आगे जाकर 1962 में उपमंत्री तथा 66 में मंत्री पद पा गया। इस दलबंदी के कारण स० 62 के चुनावों में कांग्रेस को 176 में से 88 स्थान मिले। निर्दलीय विधायक कांग्रेस पार्टी के हो गये, इसलिए विधानसभा में बहुमत बन गया। अतः अध्यक्ष मिर्धा और नेता सुखाडिया बने। फिर तो सुखाडिया ने कुम्भाराम को एक उप चुनाव जीताकर 1964 में मंत्री मंडल में ले लिया था। दामोदरलाल को भी उप चुनाव जीत लेने पर मंत्रीमंडल में लिया। आर्य और सुखाडिया का प्रेम फिर भी नहीं जमा। सुखाडिया ने आर्य से आगे मिधा को कांग्रेस दल का उप-नेता बना दिया और किसान दल को गडबडा देने हेतु परसराम को मंत्री तथा मनफूलसिंह, घासीराम, रामदेवसिंह को उप मंत्री बना दिया। आर्य के तत्कालीन मित्र हरिश्चन्द्र और आर्य ने मिलकर जाट राजपूत भाई भाई' का नारा शुरू किया। रामकरण, गोमाराम आदि भी इनके साथ मिले।

सुखाडिया ने हरिदेव जोशी को कांग्रेस अध्यक्ष पद से मंत्री मंडल में लेकर राम किशोर व्यास को अध्यक्ष पद हेतु खड़ा किया। किन्तु कुम्भाराम ने उसके सामने चुनाव

1 इसमें लूनकरणसर क्षेत्र से श्री रामचन्द विहानी (जतपुर) और प० सोहनलाल शर्मा (चालू) पराजित तथा भीमसेन विजयी रहे। श्री विहानी ने 1962 में भी यहीं से चुनाव लड़ा।

लडा और झगडा बढता रहा। सितम्बर 1966 की विधानसभा म छीटाकसी हो गई। अक्टूबर मे फिर किसान दल निर्वाचन समिति म हार गया। तब आय ने किसान दल का त्याग कर 'जनता दल' की स्थापना की जिसका अध्यक्ष रामकरण जोशी चुना गया और सुखाडिया सरकार हटाने का मकसद प्रकट किया।

फरवरी 1967 मे आम चुनाव हुए।[1] राजस्थान कांग्रेस को अविश्वास के सघष से जूझना पडा। कतिपय दला के 25 विधायको ने 'सयुक्त दल" बनाकर राज्यपाल से सरकार बनाने की अनुमति चाही। दल का नेता महारावल लक्ष्मणसिंह बना। किन्तु राज्यपाल ने उक्त काय कांग्रेस को ही सौंपा। तब क्षुब्ध सयुक्त दल ने आन्दोलन करने शुरू किये और जयपुर म भारी अशाति फली। अनेक व्यक्ति पुलिस की गोली के शिकार हुए। परिस्थितिवशात 14 माच को राष्ट्रपति शासन लागू हुआ। राजस्थान का शासन भार राज्यपाल के हाथो म हो गया। तब केन्द्र न उसकी सहायताथ दो सलाहकर नियुक्त किये।

राज्यपाल के कायकाल समाप्ति पर 15 अगस्त को नये राज्यपाल सरदार हुक्मसिंह आये। उसने स्थिति को समझकर 24 अप्रल को कांग्रेस दल द्वारा सरकार बनवाई और 25 अप्रैल को प्रदेश म राष्ट्रपति शासन का विसजन कर दिया। उसी दिन मुख्य मन्त्री पद हेतु सुखाडिया ने शपथ ली तथा कांग्रेस की नई सरकार गठित हुई। इसम पहले आठ मन्त्री एव 3 उपमन्त्री लिये। फिर सितम्बर व अक्टूबर म इसका विस्तार हुआ और 1967 मे सुखाडिय म त्री मण्डल बना।

मुख्य मन्त्री मोहनलाल सुखाडिया एव मत्री मथुरादास, दामोदरलाल, बजसुन्दर परसराम, रामप्रसाद लढढा नाथूराम हरिदेव जोशी, शिवचरण अमृतलाल बरकुतुल्लाखाँ भीखाभाई नारायणसिंह मसुदा और अमीनुद्दीन अहमद हुए। उपमत्री, रामदेवसिंह खेतसिंह गगाराम गव धीरसिंह हरिसिंह माधोसिंह, भीमसेन। (लूनकरनसर निर्वाचन क्षेत्र से) रामचरण, प्रद्युम्नसिंह, शिवचरणसिंह कन्हैयालाल, बजप्रकाश जसराज, मुल्कराज तथा समथलाल आदि बने। राज्यमन्त्री विश्वम्भरनाथ मनफूलसिंह जयकृष्ण, हीरालाल देवपुरा और श्रीमती सुमित्रासिंह चुने गये। राजस्थान विधानसभा के लिए कांग्रेस दलीय निरजन नाथ आचाय को अध्यक्ष तथा पूनमचन्द विश्नोई उपाध्यक्ष बनाये गय। भू पू विधान सभाध्यक्ष राम निवास मिर्धा राज्य सभा का सदस्य चुना गया। उस समय म जनता न भी शासन म समाजवाद का प्रकाश निहारा।

सन् 1972 का चुनाव और मत्री मडल—मुख्यमत्री बरकतुल्लाखा (प्रथम) और हरिदेव जोशी (द्वितीय) बने। मत्री खेतसिंह, हीरालाल देवीपुरा चन्दनमल शिव चरण, मोहन छगाणी रामनारायण चौधरी परमराम मदेरणा बन तथा राज्यमत्री श्रीमती कमला जुझारसिंह मूलचन्द मीणा, फकरूहसन मुन्शीलाल, गुलाबसिंह और बनवारीलाल आदि बने। कालू के गोपालचन्द डूढाणी न जनसघ पार्टी का तरफ से लूनकरनसर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लडा।

ई स 1977 मे चुनाव मे कांग्रेस पार्टी के पीछे रह जाने पर जनता पार्टी की सरकार बनी। मुख्यमन्त्री श्री भैरू सिंह शेखावत तथा मन्त्री प्रो० केदार शर्मा मानिकचन्द सुराना, कल्याण सिंह कालवी आदि बने। इस मत्री मडल का समय से पहले ही पासा

1 लूनकरनसर क्षेत्र से खमाराम गादारा यह चुनाव लडा था।

पलट गया और सन 1980 मे मध्यावधि चुनाव करवाये गय। जिसमे काग्रेस रा विजय हुई और सरकार काग्रेस पार्टी की ही बनी। मुख्यमन्त्री जगन्नाथ पहाडिया तथा मत्री बद्री प्रसाद गुप्ता (स्वास्थ्य) हनुमान प्रभाकर (शिक्षा) श्रीमती कमला (केबिनेट) और जूनियर मत्री नरेन्द्रसिंह भाटी, रामपाल उपाध्याय मागीलाल आय अब्दुलरहमान बने। बीकानेर क्षेत्र से प्रा० श्री बुलाकी दास कल्ला विजयी हुए और अनक पदों पर मत्री बन हुए हैं। तहसील के गाँव छाणी का मामराज गोदारा लोकदल से हारा। उसके विपक्ष मे लूनकरनसर का मालूराम लेघा अपन क्षेत्र से विधायक बन गया।

स्वतन्त्रता के पश्चात राजस्थान—आज के राजस्थान मे पहले यह प्रदेश पिछडा हुआ क्षेत्र था। यद्यपि यहाँ की धरातलीय सरचनाए प्राय इसके पिछडेपन का कारण थी तथापि पश्चिमी और उत्तरी क्षेत्रो म तो यह प्रत्यक्ष काय म पूर्ण रूप मे बाधक रही। राजस्थान के उक्त मुख्य भाग, रेगिस्तान म पानी और हरियाली के दर्शन ही शुभकारी माने जाते। आधियो के अम्बार और वर्षा की बेहद कमी तिस पर अकाल (त्रिकाली सतकाली छाया) का उमडे रहना, जन साधारण को अनेक प्रकार के सकटो व व्याधियो से जूझता रहना पडता था। यात्री जगलों मे भटक जाते और बीमार कुत्ते की मौत मरते थे। भीरु अनपढ जन दुहरे गुलाम बने जिन्दगी बिताते रहते। प्रजा पर राजा महाराजा और सामन्तों के बडे अत्याचार होते रहते थे। जागीरदारों के गाँवो मे तो यहा जनहित के बदले अधिकाश भयावने जुरम एव जन अहितकारी वारदातें हो जाया करती थी। वे फक्त रकम वसूली से ही राजी रहते थे। परन्तु खेती की खाद पानी का उन्हें कोई मतलब नही था। काश्तकार प्राय दुर्बल परिस्थिति मे होते और उदरपूर्ति के अलावा उद्योग धन्धो की बात ही कम सोच सकते। ऐसे सामन्ती युग म जनता का जीवन अनेक दुविधाओं से बोझिल रहता था।

वर्तमान में गत बत्तीस सालो से राजस्थान का जन जीवन पूर्ण रूप से परिवर्तित हो रहा है। वे सारी साम तवादी स्वेच्छाचारी तथा एकतन्त्रीय सस्थाएँ अभिनव लोकतान्त्रिक तथा कल्याणकारी राज्य के रूप मे जनता को सामाजिक योगदान करती हैं। शिक्षा स्वास्थ्य कृषि, उद्योग एव अन्य सामाजिक सेवाओ के क्षेत्र मे अपूर्व उन्नति की अवस्था बन आई है। अब राजस्थान अन्य प्रगतिशील राज्यो की होड म सुख सम्पन्नता रूपी स्तम्भ की भाति स्वय योग्य बन गया है। जनता का उच्च स्तरीय रहन सहन अभ्युदय तक पहुँचने के लिए असमर्थ रहा है।

गाव पहचाने नही जाते, उनका विकास द्रुतगति से हुआ है। शाहा बगन कोठियो जसे स्थान गाँवो म सकडो सुन्दर भवन बन गय हैं, जिनम जनता अपने भविष्य को पूर्वपेक्षा अधिक गौरवमय बनाने म व्यस्त मस्त मुदित है। उनकी दास भावनाएँ भी काफूर बन चुकी हैं। भूमि काश्तकार की है और उसको स्वामीत्व भी प्राप्त हो गया है। जागीरदार भी कम गय हैं उनकी जमीनें लेने की एवज मे मुआवजा चुकाया जा चुका है। उन सबको खुद काश्त बोलकर काफी भूमि भी दी गई है, ताकि सम्पन्न काश्तकार की तरह सुखी जीवन बीता सके। राजाओ का स्वत्व त्याग तथा भूमि छोडने के लिए प्रिवीपर्स व विशेषाधिकार के अलावा कुछ भूमियाँ भी छोडी हैं, वे भी राज्य की जनता है।

राज्य विकास अभिकरण द्वारा सशोधित परिभाषा के किय गय सर्वेक्षण के अनुसार प्रत्येक जिले म लघु कृषक सीमान्त कृषक तथा खेतीहर मजदूर हैं। राज्य

सरकार द्वारा इस वर्ग के व्यक्तियों को अनुदान देने की योजना स्वीकृत है। इसके क्रियान्वयन से जिले की जनसंख्या जहाँ अकाल की विभीषिका से मुक्त होगी वहाँ सर्वांगीण विकास का फायदा भी उठा सकेगी।

भारत 26 जनवरी 1950 से गणतन्त्र राज्य घोषित किया हुआ है और उसी दिन से नूतन संविधान लागू है। यह संविधान सबको अपने ढंग से जीवन व्यतीत करने की स्वतन्त्रता प्रदान करता है। सभी नागरिकों के अधिकार—बोलने धर्म पालन करने तथा समानता में कानूनन स्वतन्त्र हैं। छोटे बड़े धनी निर्धन, शिक्षित अशिक्षित के नागरिक अधिकार सुरक्षित हैं। धर्म जाति, लिंग तथा जन्म स्थान के लिए कोई अधिकारोपेक्षा नहीं होती। रोजगार सम्पत्ति, रीति रिवाज और शिक्षा में भी किसी की स्वतन्त्रता तथा समानता का हनन नहीं किया जा सकता। न्यायालय में इन सबकी अधिकार-सुरक्षा उपलब्ध है। सरकार के विरुद्ध भी व्यक्ति अपने अधिकार निर्धारित कराने में स्वतन्त्र हैं। न्याय प्रशासन की दृष्टि से प्रत्येक जिला अपराधिक दंड प्रक्रिया संहिता के प्रावधानों के अनुसार शासित होता है।

राजस्थान प्रदेश जनता द्वारा जनता के लिए जनता का राज्य है। सभी वयस्कों को मताधिकार तथा प्रतिनिधि चुनने का अधिकार है। क्षेत्र प्रतिनिधि संसद और विधान सभाओं में जाकर सरकारी नीति तथा कार्यवाही चलाते हैं। ग्राम पंचायत से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक प्रजातान्त्रिक व्यवस्था चलती है।

स्वतन्त्र भारत में प्रथम प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू बने थे। उनके देहावसान के बाद दूसरे प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री तृतीय श्रीमती इन्दिरा गांधी, चतुर्थ श्री मोरारजीभाई देसाई और अब पुनः श्रीमती इन्दिरा गांधी प्रधान मन्त्री पद पर आसीन हैं। अब तक के राजस्थान के मुख्यमन्त्री भी इस जनतन्त्रीय शासन में पूर्ण विश्वास रखते रहे हैं—1 हीरालाल शास्त्री (मार्च 49 से 1950 तक) 2 श्री जयनारायण व्यास (फरवरी 50 से फरवरी 52 तक) 3 श्री टीकाराम पालीवाल (मार्च 1952 से अक्टूबर 1952 तक) 4 श्री जयनारायण व्यास (पुनः नवम्बर 52 से नवम्बर 54 तक) 5 श्री मोहनलाल सुखाडिया (नवम्बर 54 से जुलाई 1971 तक) 6 श्री बरकतुल्ला खाँ (जुलाई 71 से अक्टूबर 73 तक) 7 श्री हरिदेव जोशी (अक्टूबर 73 से 77 तक) 8 श्री भैरोंसिंह शेखावत (77 मार्च से 80 तक) 9 जगन्नाथ पहाड़िया (अप्रैल 80 से जुलाई 81 तक) फिर श्री शिवचरण माथुर बने हैं।

देश के आम चुनाव सन 1952 57 62 67 72 77 और 1980 में हुए। इस प्रकार प्रजातन्त्र शासन का भार संभालते हुए इन लोगों ने पिछले बत्तीस वर्षों में अनेक दिशाओं में प्रगति की है। अपने अस्तित्व पर आने वाले संकट का सामना दृढ़ निश्चय साहस और दूरदर्शिता से किया है। सदियों से आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में जो गतिरोध पैदा हो गया था उसमें राष्ट्रीय पंचवर्षीय योजनाओं ने नये प्राण जागृत कर दिये हैं। इनके द्वारा कृषि उद्योग ही नहीं राजस्थान का चतुर्मुखी विकास हुआ है। ई० स० 1950 में योजना आयोग की स्थापना हुई थी, अतः प्रथम पंचवर्षीय योजना सन 51 से प्रारम्भ हुई। मार्च 66 तक ऐसी तीन पंचवर्षीय योजनाएँ पूरी हुई। फिर चौथी योजना में सर्वोच्च प्राथमिकता सिंचाई एवं बिजली के उत्पादन तथा विस्तार कार्यक्रमों को मिली। फिर पांचवी व छठी योजना भी चली हैं जो जन सहयोग द्वारा कार्यान्वित हुई हैं।

राजस्थान के गाव—स्वत त्रता से पूर्व यहा के गावो की दशा अत्य त खराब थी। इनम बडी कष्टदायक असुविधायें थी। अब इनम काफी सीमा तक सुख सुधार हुए हैं। हमारे गावो में नव जीवन और नई आशायें लहलहा रही हैं। पचायती राज और सामुदायिक विकास कायक्रम ने ग्रामवासियो के लिए उन्नति के नये अवसर प्रदान कर दिये हैं। पचायतो को प्रशासनिक, नागरिक और न्यायिक अधिकार मिले हैं। फौजदारी और माल के मामूली मुकदमे भी न्याय पचायतो द्वारा गावो म ही निपटा दिये जाते हैं।

ग्राम पचायतो के अन्य काय कूओ, तालाबो का निर्माण व मरम्मत सफाई रोशनी, जन्म मृत्यु व विवाह का पजीकरण, शिक्षा अकाल सहायता वाचनालय सचालन आदि हैं। न्याय म सौ रुपये तक के मुकदमे सुनना तथा तृतीय श्रेणी दडाधिकारी के अधिकारो तक का (यथा योग्य) उपयोग करना हैं।

पचो की सख्या सरपच के अलावा अब 15 होती है। सहवत मनानयन से प्रत्येक पचायत म दो महिला प्रतिनिधि एव अनुसूचित जाति व एक अनुसूचित जन जाति के प्रतिनिधि का प्रावधान रखा गया है।

पहले राजस्थान पचायत अधिनियम, 1953 के अन्तगत लूनकरनसर तहसील म भी तहसील पचायत का गठन था। तहसील की सभी पचायतों के सरपच व पच मिल कर तहसील पचायत के सरपच तथा 6 से 8 तक पचो का निर्वाचन करते थे। तहसील पचायत ग्राम पचायतो के आदेशों एव निणयो के विरुद्ध अपील सुनती थी। एक बार सन 1955 म कालू गाव का श्री रामलाल सोनी तहसील पचायत लूनकरनसर म पच चुना गया था। उस निर्वाचन म महाजन राजा रघुबीरसिंह सरपच बना था। वह सस्था अब पचायत समिति लूनकरनसर है।

लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण—राजस्थान पचायत समितिया एव जिला परिषद अधिनियम 1959 लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण योजना के तहत लागू हुआ है। प० जवाहरलाल नेहरू द्वारा 2 अक्टूबर 59 को नागौर म इसका उद्घाटन हुआ। इसके अन्तगत त्रिपदीय स्थानीय सस्थाओं की शुरुआत हुई है। इस समय 202 पचायत समितिया तथा 26 जिला परिषदो का गठन हुआ। इस योजना से ग्रामीण स्वायत्त शासन सस्थाओं का कायशील सहयोग स्वरूप जनता के लिये बडा लाभकारी है।

न्याय पचायतें—पहले पाँच सात ग्राम पचायतो पर एक न्याय पचायत की व्यवस्था बनी थी। इसका गठन प्रत्येक ग्राम पचायत से एक एक पच का निर्वाचन होता था और पाँच सात न्याय पचो से न्याय पचायत बन जाती। न्याय सरपच का चुनाव ये सदस्य स्वय करते। अब न्याय पचायत का काय क्षेत्र फौजदारी एव दीवानी दोनो प्रकार के मुकदमो की सुनवाई से सबधित है। फौजदारी मे 50 रुपये तक जुर्माना करना और वह वसूल न होने की स्थिति म उपखण्ड अधिकारी को सूचित कर देने का प्रावधान है। उपरोक्त अधिकारी इस वसूली के लिए अधिकृत है, वह अपनी अधिकार शक्ति से वसूली कर लेता है। दीवानी मुकदमो म 250 रु० तक मालियत के मुकदमे सुनने का अधिकार उक्त पचायतो को है। इनके फसले की अपील नही सुनी जा सकती रिवीजन होता है। दीवानी का मुसिफ कोट म और फौजदारी मुकदमो का प्रथम श्रेणी न्यायाधिकारी के पास रिवीजन होता है। कालू मे भी न्याय पचायत का कार्यालय था, जिसके नीचे चार पचायतें भुजटी, गारबदेसर रावसर कालू थी। इस न्याय पचायत के

अध्यक्ष क्रम से चूनाराम और बनाराम गादारा रहे। 1977 स याय पचायतें भग कर दी गई हैं।

पचायत समितिया—ग्राम पचायता का दूसरा स्तर पचायत समितिया है। यह लाकतांत्रिक विके द्रीकरण योजना का सु दर गठन है। ग्राम पचायतो के सरपच एव पच, पचायत समिति को साधारण सभा या निर्वाचक मडल का काय करते हैं। प्रधान का निर्वाचन सभी पचायता के पच व सरपच करते ह। प्रधान क साथ पचायत समिति की काय समिति का गठन सभी पचायतो के सरपचो व प्रधान द्वारा होता है। इसके अलावा एक कृषि काय कुशल सदस्य हाता ह। अ य सदस्या म महिला सदस्य दो अनुसूचित जाति व जन जाति के दा और सह सदस्य प्रशासनिक अनुभवी दो, सावजनिक या ग्राम विकास कायकता का सहकारा समितिया का प्रतिनिधि एक, ग्राम दान ग्राम का प्रतिनिधि एक आदि होते हैं तथा पचायत समिति क्षेत्र का विधायक एव सांसद भी पचायत समिति की बठको म भाग ले सकते हैं। समिति बजट बनाने तथा राज्य सरकार की योजनातगत अपने क्षेत्र की वार्षिक योजना बना देन म पूण स्वत त्र है। कृषि पशुपालन प्राथमिक शिक्षा, स्थानीय आवागमन क साधन स्वास्थ्य सफाई आदि समिति की काय योजना के मुख्य मुददे है। इसकी आय का मुख्य स्रोत राज्य सरकार का अनुदान है। दूसर—व्यक्तियो का श्रमदान मेलो का कर, व्यवसाय उद्योग, मनोरजन आदि की आमद और हड्डियो के ठेके बगरह की कई आमदनियाँ होती है। लूनकरनसर पचायत समिति के प्रधान पद पर महाजन राजा रघुवीरसिंह तथा मामराज गोदारा रहे हैं। गोपालच द डूढाणी पचायत समिति का प्राय सदस्य रहा।

लोकतात्रिक विके द्रीकरण याजना की सस्थाओ की अतिम कडी, जिला परिषद् है। इसका मुरय कार्यालय बीकानेर है। प्रमुख उपप्रमुख, जिले का सांसद, विधायक, समितिया के प्रधान जिलाधीश आदि जिला परिषद् के सदस्य होते हैं। राज्य म प्रगति शील काश्तकारी कानून लागू है अत कृषि विकास के लिए नवीनतम तरीके अपनाये जाते है। भूमि हीनो को भूमि का आबटन, जोतो का एकीकरण और भूमि विकास तथा उसकी व्यवस्था व समाजीकरण को आगे बढाया जा रहा है। अधिक अ न उपजाओ योजना की सफलता हेतु अब खेती मात्र मौसमी वर्षा पर निभर नही रही।

पश्चिमी पाकिस्तान से लगा हुई श्री गगानगर, बीकानेर एव लूनकरनसर की इस रेतीली रेगिस्तानी भूमि म राजस्थान नहर और उसकी शाखाएँ इस क्षेत्र की अथ व्यवस्था विकास क लिए सबसे महत्वपू सफल योजनाएँ हैं। खाद्या न म आत्मनिभरता प्राप्त करने हेतु हमारे लक्ष्य की सम्पूर्ति एव हमारी सीमा सुरक्षा को सुदृढ बनान म भारी सहायता मिली है। रेगिस्तान के इस विस्तृत निजन जगला को शस्य श्यामल प्रदेश में परिणत कर दिया है।

राज्य सरकार ने गावो का बिजली सुलभ करवाने हेतु भी पूरे प्रयत्न किये हैं। कालू क निकटीय नाथूसर रावांसर आडसर जसे छाट गाँवा म भी विद्युतीकरण हा गया है। भूमिगत जल निकालन क लिए अब ऊँटो बलो तथा जन शक्ति की बजाय, बिजली की लागत बिलकुल कम आती है। हर गाव मे इससे अनाज, सब्जियाँ और पेड उगाने म भारी सुविधा हुई है। कृषि और ग्रामीण उद्योग के विकास के सिवाय बिजली विस्तार स जन-जीवन का शारीरिक तथा मानसिक स्वभाव बदल रहा है। गाँवो म

रेडियो सट, पख हीटर आदि अनक बिजली सचालित शानदार सुखोपलब्धिया हाथ लगी हैं। कृषि विकास के साथ पशु पालन का विकास तो हमारे क्षेत्र का प्रकटत सर्वोपरि नूतन धधा बन गया है। दूध तथा ऊन के उत्पादन हतु यहाँ अच्छी नस्ल के पशु मगाये तथा पाले पास जाते हैं। इन पशुओ की चिकित्साथ अनेक चिकित्सालय भी काम कर रहे हैं। कालू म एक डाक्टर दा कम्पाउडर आदि है और उसका अपना सुदर भवन भी बन गया है।

गावो की सुविधाथ सडका का निर्माण हा जाना ता प्रत्यक्ष सुख पदात्री याजना के नमूने हैं। यहा के सभी जिले, तहसील केन्द्र नगर तथा गाँव सडकों से जुड गये हैं। चार हजार की जनसख्या वाले सभी गाव अब राज्य के सडक मानचित्र म स्पष्ट दृष्टिगोचर होते है। गांवा के आर्थिक विकास एव सामाजिक समृद्धि म सडका का पूर्ण सहारा है।

औद्योगिक प्रगति—औद्योगिक विकास का प्रोत्साहन दन के वास्त राज्य म अनक याजनाएँ चलाई गई है। इससे नय उद्योगपति अब राज्य की ओर आकर्षित हुए हैं। वे देखते हैं कि सरकारी विभागा, सरकार नियत्रित निगमा कपनियों एव स्वशासित सस्थाओ द्वारा की जाने वाला सब खरीद म कुटीर, लघु तथा बड़े उद्योगों का मूल्यो मे तरजीह दना राजस्थान खनिज और उद्योग विकास निगम की स्थापना व उद्योगा का पहले से प्राप्त रियायता म अधिक ढील देन आदि की आवश्यक विज्ञप्तियाँ सूचनाओ का सतत प्रसार होता है। इसलिए उद्योगो की स्थापना के लिए राज्य के हर स्थान म अनुकूल वातावरण मिल रहा है। अब कोटा ही नही चूरू जस रेगिस्तानी अनेक क्षेत्रीय

नगर औद्योगिक रूप मे विकसित हो गये हैं। बीकानेर तो ऊन व्यवसाय म सदा मे प्रगतिशील शहर रहा है वहाँ अब 1200 तकुओ की ऊनी मिल म वर्षों से उत्पादन आरम किये हुए हैं। डीडवाना मे सोडियम सल्फेट माडोकीपाल (डूगरपुर) मे फ्लोराइड शोधन यन्त्र चूरू म ग्वारगम, एल्युमीनियम व स्टीलनसस्टील के बतन होजरी हैण्डलूम गुलाबपुरा (भीलवाडा) म सूती सहकारी मिल, केशोरायपाटन (बूदी) म सहकारी चीनी मिल, टोंक म चमडे का कारखाना उदयपुर म जस्ता शोधन खेतडी मे ताम्बा शोधन, लूनकरणसर मे तेल दाल ग्वारगम एव जिप्सम शोधन के सयत्र चल रहे हैं। राज्य मे सीमेंट के कारखान भी बढाय जा रहे हैं।

खनिज उत्पादन—राजस्थान म अनेक प्रकार के खनिज पाये जाते हैं जस्ता बेंटोनाइट बराइटस फ्लोसफार केल्साइट और रॉकफास्फेट के अनुसधान काय अनेक जगह होते हैं। फ्लोराइट चूनेल पत्थर खनिज मैगजीन, काच मिट्टी जस्ता तथा वाल फ्राम के उत्पादन यहाँ तरक्की पर हैं। बराइटस लोहा भूरा कोयला अभ्रक, घीया पत्थर जसे खनिज भी खूब निकलते हैं। कालू और उसकी तहसील के कई गाँवो म पोटाश अनुसधान बाबत शीघ्र सयन्त्र चलाये जा रहे हैं।

शिक्षा के मनोरम मौके—जिला केन्द्रो पर राज्य के तीन विश्वविद्यालयों द्वारा अनेक कॉलेज सचालित हैं। राज्य का तकनीकी शिक्षा पर काफी ध्यान है। पिलानी म बिडला इन्स्टीटयूट ऑफ टेक्नालाजी भी विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा प्रदाय एव कार्यशील सस्था है। यहाँ का वनस्थली विद्यापीठ तो महिलाओ की शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय शिक्षा सस्थान बन गई है। पश्चिमी व उत्तरी रेगिस्तान के गाँवा म भी प्राथमिक शिक्षा सुलभ हो रही है। ढाई हजार तक की जनसख्या वाले गाँवो म माध्यमिक शालाएँ और प्रत्येक पचायत समिति म एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चलता है। इनमे हरेक व्यक्ति अपनी योग्यतानुसार उन्नति का अवसर प्राप्त कर सकता है।

चिकित्सा सुविधाएँ—गत बतीस वर्षों म लोक स्वास्थ्य का काफी अभ्युदय व सुधार हुआ है। मलेरिया चेचक यक्ष्मा आदि बीमारियाँ, जिनसे हर साल हजारो आदमी मरते थे अब उठ चुकी हैं। नागरिक स्वास्थ्य अभियानों म अस्पताल औषधालयो, डाक्टरो और नर्सों की पद सख्या वद्धि भी पर्याप्त उन्नतिकर हैं। आयु विज्ञान तथा एलोपेथिक महाविद्यालयो से निकले दोनो चिकित्सकों की अब गावों तक पहुँच हो गई हैं। तहसील लूनकरनसर म अनेक अस्पताल एव औषधालय स्थापित हो चुके हैं। कालू म तहसील का प्राथमिक स्वास्थ्य चिकित्सा केन्द्र चालू है। अत एव अब लोगों की आयु का मानदण्ड बढ रहा है। जनसख्या वद्धि हो रही है इसलिए इस तेजी से होने वाली जनवद्धि को रोकने के लिए हर गाँव म समाज कल्याण के कार्यक्रम भी चलाये जाते हैं।

उन्नति और समाज सुधार—जन साधारण म बालक वद्ध एव स्त्रियो तथा हरिजनादि कमजोर वर्गों और श्रमिक जनों को समुचित उन्नति व सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध हुई है। पहले विवाह उत्तराधिकार और दत्तकादि मामलो म हिन्दू महिलाओ पर प्रतिब ध था तथा उन्हे अनेक बाधाएँ घेरे हुए थी। अब हिन्दू कोड के माध्यम से हरेक स्त्री पुरुष को उपयुक्त अधिकारों म समानता उपलब्धि मिल गई है। याय और

समभाव का शासन चलता है। दहेज मागना व देना अवध है, लेकिन जनता अपनी ज्यादती से कदापि पेश नही आ रही है। भारतीय संविधानानुसार हरिजन वर्ग अब अस्पृश्य नही, अनुसूचित जातिया तथा जन जातियो के छात्रो को शिक्षा प्राप्त करने, छात्रवृत्तियाँ लेने और सरकारी नौकरियो तथा विधान सभा, लोकसभा तक स्थान सुरक्षित हैं। इनके परिवारा का नहरी क्षेत्र म जमीन, सिंचाई की सुविधाए एव ऋणोपलब्धि वरदान स्वरूप ह। राजस्थान के इन पूर्वोपक्षित लागा का उन्नति की दशा म पर्याप्त सहायता मिलती है। कालू मे अब औद्यागिक मजदूरों राजकीय कमचारियो, स्त्रियों, बच्चो के कल्याणार्थ काफी सामाजिक सुरक्षा याजनाएँ लागू हैं। कमचारी राज्य बीमा याजना कमचारी निर्वाह निधि याजना म कारखानो एव खानो के श्रमिको का आर्थिक सहायता मिलती ह जा बकारा वद्धावस्था बीमारी या किसी भी दुबल दशा से पीडित हान पर दी जाती है। महिला कमचारिया को प्रसवकालीन सहायता मिलती है। इस क्षेत्र म समाज कल्याण बाड महिलाओ का सहायताथ सामुदायिक केन्द्र और बालको की सुशिक्षा हेतु बाल बाडिया चलाता है। हर वष 14 नवम्बर को शिशु कल्याणाथ बालदिवस मनाया जाता है। वेश्यावृत्ति तथा दारोगा की कन्याओ को दहज म देने सम्बन्धी पाबन्दी है। कालू म अस्पृश्यता रूढिवादिता के रूप म मानी जाने लगी है। पुराने जरायम पशा लागा न भी कृषि आदि के धन्धे अपना लिए हैं।

आमोद प्रमोदमय जीवन—आजादी स पहले के लोग नत्य नाट्य को हेय दृष्टि से देखत थे। नाटक खेलन वाले पात्रो से लोग मजाक किया करते थे। कहते 'जोटी जचगी रे भाया, मागा'र खाआ।' अत कतिपय आभिजात्य वग के लागा को नाटक मे शामिल करना मुश्किल रहता था। आजकल तो लडकियाँ भी स्टेज पर खेलने म उत्सुक दिखाई देती हैं। अत एव नत्य नाट्य, सगीत एव कला क्षेत्र की महान सांस्कृतिक परम्परा का काफी विकास हो गया हैं। राजस्थान म सगीत नाटक एव ललित कला आदि अकादमिया स्थापित हो गई है। इनम और राजस्थानी लोक साहित्य तथा लोक नृत्य म भी शाध काय हाते हैं। चित्रकला, मूर्तिकला एव स्थापत्य कला का विकास अपनी स्थिति पर है। भाषा साहित्य की उन्नति के लिए राजस्थानी भाषा' साहित्य सस्कृति सगम बीकानेर स्थापित है। शिक्षण सस्थाओ की ओर स ग्रामीण क्षेत्रो म भी खेलकूद हान हैं। इसके लिए राजस्थान खेल-कूद परिषद् की स्थापना की गई है।



प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी

राजस्थान की प्रगति मे गतिशील कालू गत बत्तीस वर्षों म राजस्थान न जा

प्रगति की है उसम गाव कालू (बीकानर) का भी अपना महत्वपूण स्थान है। इस प्रगति का श्रेय भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू की जीवनी या पीढी से समारम्भ होता है। इनकी आत्मजा विश्वज य देवी श्रीमती इन्दिरा गाधी के कायकाल मे राष्ट्रीय उनति हुइ ह। राजस्थान म चतुमु खी विकास के लाभ का अधिकाश श्रेय जनता की गहन आस्था स श्री मोहनलाल सुखाडिया के पक्ष मे पडता है।

गाँव कालू म आजादी मे पहले स्थानीय महानुभाव कूमाराम ने निजन जगल मे प्याऊ बनाकर तथा 50 वष तक अपनी धमशाला स्कूल भवन के नितात अभाव म स्कल चलाने के लिए देकर गाँव के लोगो को शिक्षित बनन म सहयोग किया। ई० 1935 में श्री सेवासदन सरस्वती पुस्तकालय की स्थापना करवा कर श्री सूरजमल न कालू म अपना नाम चमकाया। स्वतत्रता के पश्चात शेरमल ने राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र कालू का भवन प्रदान कर क्षेत्रीय जनता को स्वास्थ्य लाभ दिलवाया है। नाहटा परिवार न अपना भवन देकर कालू मे डिस्पेन्सरी का काय चालू करवाया जिसके लिए जन विकासाथ इनका भी श्रेय मिलता है। तत्कालीन महाराज कुमार अमरसिंह ने अपना गढ, छात्रावास के लिए प्रदान करके पुरानी जन प्रीति का पालन किया। जिसके लिए असख्य विद्यार्थी उपकृत हैं। शिक्षा वद्धि का लाभ दिलान वाले श्रेयार्थी कुभाराम आय स० 56 मे मा य हैं तथा स्थानीय जल समस्या को राजकीय जल प्रदाय विभाग से सम्बधित करवाकर गाँव को निश्चित बनाने मे चौधरी रामचन्द्र न 1973 मे पूण योगदान देकर श्रेय प्राप्त किया है। कालू मे विद्युतिकरण और टलीफोन के विकास काय जनता सरकार द्वारा नवम्बर 1978 मे पूण हुए। दिसम्बर 78 म प्र० अ० करनसिंह भागव ने कोशिश करके राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय म माध्यमिक शिक्षा बोड का परीक्षा केन्द्र स्थापित करवाया है।

मदय हृदय यस्य भाषित सत्यभूषितम ।
काय परहिते यस्य कलिस्तस्य करोति किम ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार पृ० 163

(जिसका मन दयायुक्त है वाणी सत्य से अलकृत है और शरीर परहित में लगा हुआ है—ऐसे व्यक्ति का कलियुग कर ही क्या सकता है ?)

कालू का वतमान वरदीय वष 2035—इस वष गाँव कालू का जन-सामान्य जितना हर्षित हुआ उतना आजादी के गत 30 वर्षों म कभी भी प्रमुदित नही हो सका। यह महान उपलब्धियों का एक ऐतिहासिक वष था जिसने जन साधारण के लिए अधिकाधिक सुख साधनों के पथ प्रशस्त कर दिए हैं। युगो से चल आ रह अभावों को पूरा करने के जो अवसर इस साल ने बख्शे व जन मानस को सतत प्रफुल्लित रखने तथा सुख दन के लिए बडे सहायक सिद्ध हुए हैं। इससे गाँव की सवत्र प्रगति तथा परिपूणता वद्धि हुई है। बहुत से कामो का पिछडापन हट जान म अब हमारा यह कालू, पूण रूपेण गाँव स कस्बा बन गया है।

जनता भाग्य विद्युत उपलब्धि—कालू म नगर विकास कार्यों की आयोजना हतु 2035 की प्रकाश पूर्ति बडी लाभप्रद हुई। सचमुच बिजली की चुलबुलाहट एव चुलबुली माग यहाँ दो दशक से पहल ही प्रारम्भ हो गई थी। सो गाव कालू में यह महत्वपूण काय जनता राज्य का विशेष कीर्तिमान कहा जा सकता हैं।

टेलीफोन की उमग—द्रुत गति मे सूचना एव समाचार लेन-देन की दिशा में टेलीफोन का स्थापित हो जाना—गाँव कालू के व्यापारी वग को यथाथ सुविधा की उत्तम उपलब्धि हुई ह ।

दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति का भवन—इस सहकारी के अपने भवन की कमी गाँव की योग्यता मे एक खटकने वाली बात थी । शुभ सवत 2035 मे अब गाँव के बीच इस समिति का सुन्दर भवन बना है ।

स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर फुल ब्राच—पहले कालू मे यह बक वन मैन के रूप म कार्यशील था । वि स 2035 में उसके पदोन्नत होने के आदेश आये हैं

मेडिकल बोर्डिग—जिले के मडिकल विभाग ने कालू म राजकीय ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केन्द्र भवन बनाने के लिए दो लाख रुपये मजूर किय । इसके लिए श्री लालचन्द राठी ने अपनी पुरानी जमीन प्रदान की, जिस पर इसी साल उक्त भवन बना है ।

सवत् 2035 मे बीकानेर जिलाधीश श्री दीपन्द्रनाथ न कालू से वीदासर तक सडक काय चालू करने की सरकारी योजना बताई और गाँव कालू मे अप्रोच रोड बनी ।

नये प्रावधान और प्रगति—इस साल की प्राप्तिया में कुए विद्युत से चने तोस धरा की 'दुर्गा कालोनी' बसी गाँव का बपातीय जल पक्की नाला द्वारा और भी आगे निकालने हेतु बडा तालाब बना तथा पीने के पानी की समस्या हित प्रत्येक वाड म पाच सौ घडों का हौज एव पास म पशुओं के पान बाबत खेलें भी बनी । गाँव के समस्त पशुओं के लिए मस्जिद के पास पानी का एक विशिष्ट बडा कोठा और खेल (नाला) बनाये गए हैं । ये सब काय साल भर के अन्दर परिपूण हुए हैं ।

धार्मिक लहर—राजस्थान वीर भूमि पर यह धम भूमि भी है । यह प्रदेश धम और सस्कृति के लिए लम्बे समय तक सघष करता रहा है तथा यहाँ के निवासी धम भावना के साथ वीर भावना के उज्ज्वल रूप का प्रकट कर सके हैं । यहाँ के बहादुरा की वीर भावना की मूल प्रेरणा, धम भावना से प्राप्त हुई है और उन्होंने अपन जीवन मे त्याग तथा ओज के अनुपम आदश उपस्थित किये हैं ।

देश म शहरा क बहुत से लोग बडा सम्पन्न जीवन व्यतीत करते हैं और उन पर धार्मिक सन्त भी कृपावत बन छाये रहत हैं । किन्तु वहा के अथ अजीण हुए लोगों का उन आध्यात्मिक साधुओं का क्षमता पान विशेष प्रभावित नही कर सकता पर सन्त बार-बार वहीं जाते हैं । तब वहा के कुछ लोग अपन द्रव्य बल से जरूर महात्माओं की सेवा कर लते हैं । सवत 2035 मे कस्बा कालू को भी सन्त सेवाओं का मौका मिला । गरीब तबके के लोगों तक म आध्यात्मिक भावनाएँ जाग्रत हुई और वे सब धम लाभ प्राप्त कर सकें । जन तेरापथ के आचाय श्री तुलसी महाराज के आगमन हेतु कालू के लोग पन्द्रह दिना से लालायित उपस्थित हो रहे थे । दिनाक 22 दिसम्बर की सध्या एक जन साध्वी समूह, अपनी सघ प्रमुखा कनक प्रभाजी के सान्निध्य मे लूनकरन सर मे कालू आकर कमला भवन में ठहरा । उधर श्री डूगरगढ से मधुसूदन नाम के एक वष्णव सत भी माता जी के मन्दिर में आ उतरा । दूसरे रोज प्रात काल दिनाँक 23 12 78 को आचाय श्री तुलसी का आगमन हुआ । तत्समय कालू के कण कण म आनन्द व्याप्त हो गया था । तत्काल "आचाय श्री तुलसी स्वागत समिति कालू" के निम्न-लिखित पदाधिकारी नियुक्त हुए । अध्यक्ष श्री भैरू दान माड बनाय गये और अन्य मे प्रा०

जोराराम गिया स्वागत समिति, डॉ० किरण प्रोग्राम सयोजक, श्री जवरीमल व्यवस्थापक, श्री गोपालचन्द डूढानी आवास भोजन व्यवस्था समिति और सव व्यय नियन्त्रण समिति म श्री जवरीमल और गोपाल चन्द नियुक्त हुए।

आचार्य श्री तुलसी जसे क्रान्तिकारी महापुरुष क अ तर चत य, ओज एव जीवन सत्य व तप पूत व्यक्तित्व की प्रेरणा किरण स ग्राम कालू के समस्त लोगो न अपनी आत्म चेतना का विकसित करन का ज्ञानोपदेश प्राप्त किया। उन्होंने आचार्य श्री क अध्यात्म प्रधान व्यक्तित्व एव चारित्र्य मूलक सस्कृति का एक जीता-जागता निदशन अवलोका तथा उनका अणुव्रत आन्दोलन धम, भौतिकता पर आध्यात्मिकता की विजय का कीर्ति स्तम्भ व भारत की एकता का प्रतीक माना। ओसवाल भवन के मध्य विस्तृत मदान मे सकडो व्यक्तियो न सत्य-अहिंसा ईमानदारी और ब्रह्मचय व्रत की छाता ठोक कर प्रतिज्ञाएँ ली तो कालू ही नही आस पास के अनक गाँवो की जनता म भी दशना की क्षुधा उमड आई। बहुत म दर्शको न श्री तुलसी के उपदेशो से तामसिक वत्तियो का त्याग कर दिया। अत एव ग्राम कालू एव निकटीय ग्रामो की जनता न आचार्यश्री के धार्मिक आ दोलन म अच्छा सहयोग बनाया। अन्ततोगत्वा—आचाय श्री तुलसी का अ य स्थानो क लिए कालू से विहार हो गया। वे यहाँ सप्ताह भर ही ठहर सके। तब इस कस्बे के कायकर्ता सांग मत श्री मधुसूदन क सान्निध्य मे श्री विष्णु महायज्ञ' समिति का गठन करके सत्ताईस कुण्डीय महायज्ञ का मडप बनाने लगे।

अदभुत जुलूस—मैं हृद्रोग पीडित—घर भला म भला' बाहर जाने की आदत भूले रगराज की तरह फीकी पड गई। सुन रखा था गाँव में इन दिनो एक तपस्वी स त आये हुये है और दिनांक 21 1 79 से 1 2 79 तक विष्णु महायज्ञ होने वाला है। पर स० 2035 माघ महीने की कृष्ण पक्षीय एकादशी के दिन घर बठे ही गगा आ गई। कालू गाव, जिसकी जनसख्या साधारणतया दस हजार से अधिक नही होती, पर लगभग 20 25 सहस्र नर नारियो की सम्मिलन भूमि बन गया। 20 हजार मनुष्य कितन होत हैं? यह भी अनुभव करने की बात है। गाव से तिगुन अधिक नर नारी इस छोटे से कस्बे कालू मे सहष रोजाना एकत्रित होते रह। यहा सत्ताईस कुण्डिये विष्णु महायज्ञ होने वाला था, जिसका जुलूस 24 जनवरी का मैंने अपने घर द्वार आगे से निकलते हुए लोक विद एव प्रत्यक्षदर्शी होकर देखा। जुलूस का पद यात्रा ग्राम परिक्रमा हेतु हो रही थी। मेरे मोहल्ले की लम्बी विस्तृत समस्त गलियाँ गाव के और बाहर के आये हुए भक्त लोगो से तत्काल खचाखच भर गईं। मैंने अपनी कुटिया के एक किनारे ही खडे होकर देखा—भारी भीड, भगवान की झाकी निकाली गई है। सो उसके बीच घुसकर यज्ञ के जनक उस स त के दशन कर लेना खतरे से खाली नहीं दिखाई दिया। बीकानेर ही नही, चूरू और श्री गगानगर जिले तक के लोग भी आये थे। नर नारी, बच्चे-बूढ़े युवक युवतियाँ सब इस महान यज्ञ के दशनाथ गाँव कालू मे सत बाबा के साथ जुलूस की शोभा बढा रहे थे।

मैंने पहर भर एक ही जगह लकडी क सहारे खडे रहकर हजारो स्त्रियो के मुखो पर वास्तविक एव अकृत्रिम श्रद्धाभाव के स्पष्ट चिह्न देखे। वे सब इस वृहद् जुलूस म सम्मिलित होकर वस्तुत अपन ज म को सफल अनुभव कर रहे थे। जुलूस के आगे प्रथम दल श्री डूगरगढ से सभवित आया हुआ 'माणक बैण्ड' बाजे का बतक रथ एव

कलाकार समूह बड़ी शान से सु दर 'ट्डन' बजाते चल रहा था। उसके पीछे सरदारशहर से आया हुआ 'रमजान बण्ड' का दल अपने 'हूँसयान' सहित सुन्दर पोशाक में मनमोहक राग बजाता चलता था। तीसरे नम्बर मे बाबा की 'कार' के आगे छात्रो का दल और मिरासी सुलतान परिवार के लोग ढोल घुरा रहे थे। कार पर बहुमूल्य छत्र, मालायें एवं श्री भगवान की युगल मूर्ति स्वरूप प्रतिमूर्तियाँ विराजमान थी। उस युगल रूप के चरणो म शाही ठाठ से बठे हुये वे बाबा भी दशको का दृष्टिगोचर हो रहे थे। उनकी कार गाडी से लगते हुये पण्डितो, उनके यजमानो, याजी विप्रों एव सम्भ्रान्त नागरिको के समूह चल रहे थे। याज ऋषि की भांति पीत वस्त्र धारण किये हुये यज्ञ कार्यकर्ता लोग अपनी सौम्य मुद्रा म प्रमुदित एव प्रसन्नचित नजर आ रहे थे। देखा कि हजारो की संख्या में कुमारियों की टोली अपने मस्तक पर नारियल से ढके कोरे कलश (छोटे घट) लिये हुये चार पक्तियो मे चल रही थी। अपनी अपनी अवस्थानुसार की पवित्र पोशाको म महिलाओ की अनेक सुभूषित टुकडिया हरि कीर्तन की हर्षित मुद्राओ म तन मन प्रफुल्लित हुई चल रही थी। देखा तो यज्ञ के दर्शनार्थ कालू म बीस हजार से ऊपर का विशाल समुदाय समुद्र की तरह जुलूस मे लहरें ले रहा था और इतने मनुष्यो का कोलाहल भी सागर के गर्जन से कम न था। पुनीत नारो तथा तुरही के तुमुल नाद से खेसुर व अन्य खगचर भी मानो हरिहर हरिहर की ध्वनि उच्चरित कर रहे थे।

देखा श्री विष्णु महायज्ञ के लिए कालू तथा उससे मिले हुये स्थानो—करणीसर, छटासर, कागासर गारवदेशर, लापरसर, गवांसर, नाथूसर आडसर, बीकासर, खारडा सहजरासर लूनकरणसर, बस्ती जोगियान कालवास, नाथवाणा, राजपुरो, किसनासर आदि गावो के लोग ऊँट गाडा तथा मोटरो से प्रात सत्वर यज्ञ स्थल पर उपस्थित होते और सन्ध्या वापिस अपने घरो व गाँवो म चले जाते थे। कालू में दूरस्थ के सगे-सम्बन्धियो से सारे मकान भर गये। सम्बन्ध के अभाव म अधिकाश यात्री अस्थाई रूप से बनाये कम्पो, झोपडियो और देवस्थान या वृक्षो के नीचे तथा किसी इमारत के नीचे गलियों के किनारे ही ठहरे थे।

इस छोटे से कस्बे मे हजारो मनुष्यो का एकत्रित हो जाना वास्तव मे एक दृश्य बन गया था। चहल पहल आना जाना, सर्वत्र मनुष्य ही मनुष्य दिखाई देते थे। ऊँट-गाडो तथा मोटरो से प्रात सत्वर यज्ञ स्थल पर उपस्थित और सन्ध्या वापिस अपने घरो व गावो म चले जाते हैं। इस यज्ञ सम्मेलन मे आये लोगो को चार विभागो म बाट कर देखिये। प्रथम तो वे नर नारी जो पूर्ण श्रद्धा के साथ यज्ञ स्थल पर भजन कीर्तन तथा वृन्दावन की रासलीला को देखकर सचमुच अपने को धन्य मानते, इनकी संख्या हजारो की थी। गाव के और आस पास के गाँवो से ये आये तथा नियमित रूप से प्रत्येक धार्मिक कार्यक्रम मे सम्मिलित होकर पुण्य लाभ लेते गये। दूसरे वे लोग जो मेला देखने के उद्देश्य से आये। लोगो की भीड भाड मित्रो सबंधियो का मिलना जुलना, चमत्कारिक सतो के दर्शन, यज्ञ स्थल का अद्वितीय मडप, देवी दर्शन रासलीला और मौलासर की रामलीला आदि को देखकर अपनी उत्सुकता तृप्ति के उद्देश्य को सफल कर गये। तीसरे वे थे जो धन कमाने के उद्देश्य से सब प्रथम सम्मिलित हुए। सूत और जूते से लेकर हाडी मटकों तक के दुकानदार आये थे। इनमे व्यापारी ठेकेदार, फल बेचने वाले हलवाई, चाय के होटलो वाले, बिसाती गर्म मूंगफली बेचने वाले वस्त्रो, पुस्तको, बर्तनो

के एजट दलाल तथा खिलधारी जस अन्य दुकानदारो की भारी उपस्थिति रही। इन धनेच्छुको मे कतिपय लघु भिखारी भी देखे। इनके एक अवान्तर भेद में चोर उचक्के, ठग, दुराचारी, जेब कतरने वाले लोग भी होंगे, पर कालू के मन-सम्मेलन मे अप्रकट रहे। इस धार्मिक मन मे गाँव से कडी निगरानी एव चौकीदारी का इतजाम किया गया था।

चौथे वे लोग है जिनका सबध मेले के प्रबध से था। स्वय सवक, सेवा समितिया, पुलिस वाल डाक-तार व सरकारी कमचारी और माटर स्टाफ वाले, मडप मिस्त्रीवृद पानी बिजली वाले, फोटा तथा लाऊडस्पीकर वाले आदि 2 महानुभाव थे। इनकी भी एक सुसभ्य सख्या बढ गई थी।

साहस बढा मैं भी यनारभ के अवसर पर पहुँच गया। वद मत्रा के साथ पीपल आदि की लकडिया से अग्नि उत्पन्न की गई। पडिता द्वारा 27 हवन कुडो के निकट सत्ताईस जोडे (सपत्नीक) यजमान बिठाय गये। एक एक हवन कुण्ड के लिए 3 3 याजी नियुक्त किये गये। यह यज्ञ प० दुर्गादत्त जी सारस्वत के आचायत्व म हुआ।

यज्ञ दान तप पूजादिक शुभ कम जो करना मन धारो,
तो आगे पीछे ऊँ तत् सत यही शब्द शुभ उच्चारो।

(गीता, 17 अध्या, 362 श्लोक)

कालू गाव का कितना सुहावना समय था वह कि 24 जनवरी से 1 फरवरी 1979 तक के लिये यहाँ एक धार्मिक आयाजन हुआ था। इस वृहद् एव पावन कायक्रम मे 27 कुण्ड का श्री विष्णु महायज्ञ हुआ सो मैंने युगपक्ष जनवरी 25 के अक मे उसका वणन प्रथम प्रबध द्वारा प्रकाशित करवाया था। गाव के लोग उस समय उक्त आदश एव सुकाय मे तन मन धन से व्यस्त थे और उनके पडौसी गाँव वाले तथा सबधी श्रीमान भी सहयोग एव पुण्य लाभ क लेन देन म परमानद लालायित हुए बेहद हर्षित थे। अधकार प्रकाश की आर चला, हर मनुष्य पुलकित हुआ बढा तथा सभी मन प्राण, भक्ति नदी मे डुबकी लगा लगाकर अपन जीवन को सफल बना रहे थे।



कालू मे महायज्ञ

कालू गाव म महायज्ञ का कारण एक सन्त (पगला बाबा) का आगमन रहा। य महापुरुष 22 दिसम्बर सन 1978 की दोपहर को अचानक एक जीप से गाव कालू

मे आ उतरे। स्थानीय लोगो न तत्काल माताजी के मंदिर मे इनका आसन लगा दिया। बाबा यज्ञ करवाने मे बडे माहिर पाय गये। पीढियो का अनलिखा इतिहास, कालिका और कालू के सम्बन्ध की बहुत पुरानी दत कथाएँ तुरत सामने आ गई। चदा चिन्ठा शुरु हो गया और माता जी के मदान म गाँव के मन की तरह ही विशाल मडप बना दिया गया।

सब दिन एक जसे नही होते। ससार म पाप और पुण्य दोना अपन समय पर काय करवाते रहते हैं। ये सब भगवान की मर्जी से ही होते हैं। यज्ञ को जगह का ही उदय हो गया। नोहरा और मदान सदिया स बसहुरा घूरा, गोबर गदगी का घर, बेकसूर बलि दिय गये पशुओ की हडिडयो का स्थान बने रहते थे साफ सफाई, धूप दीप खुदाई छिडकाव स परम पवित्र बन कि—

पण करतारी करणी यारी कुण समझ समभाव।
ऊँधी भर, ऊँधाव सूई पाछा भळे-भगाव॥ (मम काव्य)

परम पिता परमेश्वर की महत्ती अनुकम्पा हुई कि वही जगह श्री विष्णु महायज्ञ हित मडप बनाने के काम आई। यज्ञ चालू हुआ, 27 कुण्डो पर पीत वस्त्रधारी पडित अग्निदेव क सुगधित सामग्री होमन लगे। उनके अपने अपने यजमान गठजोडा जोडे सपत्नी सामन बठे उक्त काय में सहयोग करते थे। वे अपन गुरुओ को रोजाना भेंट-दक्षिणा भी चढाते। जनता माला हाथ लिए यज्ञ के विशाल मडप की फेरी फिरती और पुरुष हरि कीतन करत मग्न भागे फेरी म चलते थे तथा औरतें अपनी पृथक टोलियो म सुन्दर भजन गाती हुई भागती चाल म चक्राकार दिन भर मडप परिक्रमा करती रहती। सकडो आदमी अपनी दनिक ड्यूटी देत। कुछ औरतें माताजी के मंदिर के चौक म बठी भजन गाती। एक महिला टाली तिलो से भरी बोरियो के पास भजन धुन के साथ ही छलनी से तिल साफ किया करती थी। कई जौ साफ करती, कुछ चावल और कइ चिटकिया बनाती थीं कि यज्ञ म एक लाख साठ हजार आहुतिया लगी। छडछडीला, नागरमोथा, कपूरकाचरी, चदन का बुरादा, अगर तगर कपूर, धूप आदि सुगंधित पदार्थो को घोल मे बठे प्रौढ पुरुष मिलाते रहते। घृत भडार वाले व्यक्तियो को दानो समय हवन के लिए ताबे की कुडो से बाल्टियाँ भर भर कर घी देना पडता था। पाँच सात खाती सुथार, मंदिर के पीछे पीपल की शुष्क लकडी पर आरा चलाते हुए अपने सामन पडे काटे हुए सामान पर फूले जात थे। कुछेक उनमे से बडी कुवाड (कुल्हाट) से सतो के धूणो म रात दिन जलने हेतु बडे ठूड (लक्कड) काटकर सर्दी म स्वेद टपकाते थ। मन्दिर के आगे के कमरे की चौकी पर सत बाबा के दशनाथ हर समय भक्तो की भीड लगी रहती। बाबा हर समय फूल मालाआ स लदे नजर आते। विद्यालय के पीछे वृदावन स आई हुई रासलीला दोनो समय चलती थी। इस लीला के लिए बडा विस्तन एव ऊँचा मच बना हुआ था। व्यवस्थापक एव स्वयसवक अपन कोट के गले नीचे बज लगाय हुए हाफते फिरते प्रबन्ध को पार लगा रहे थे। सध्या छ बजे स रासलीला स्थल पर प० पारसनाथ जी त्रिपाठी (काशी कोकिल) श्री रामचरित मानस का प्रवचन करते।

यात्री खूब जोरों से आत। उनका ट्रको पर ऊट गाडो पर, ट्रक्टरो की ट्रालियो पर, मोटरकारो एव स्कूटर साईकिलो पर आगमन होता था। रूट की बसो म तो

तिल रखन की जगह नही मिलती। न्नि भर विशेष मोटर गाडियाँ यात्रियों से लदी भरी चलती। यातायात से वचित हुए यात्री इस भयकर सर्दी म गठडी का भार लादे कबल ओढे तन ठिठुराय पन्न भी आते थे। दल पर दल टिड्डी न्ल! सब सस्था भवन भर गये। तत्समय जप तप और यग का कायक्रम 'सत्य त्रेता युग' का दश्य न्खाई देता था और हजारो नर नारी एव अबाल वद्ध इस समारोह म सम्मिलित होते थे।

घी के बडे टीन तिला एव नारियल-खापरा की बोरियाँ खाड पताशा लाडू-पेडो, रुपये पसा तथा फूलो के थना स लद हुए लोग आत और बाबा के चरणो मे अर्पित करके अपन को घ य धय मानत थे। मानो इस सुकाय मे व स्वग की राज्य लूट लूटते थे। मन्दिर के भण्डार कक्ष को घी के टीनो एव हवन सामग्री की बोरियो से अजीण हो रहा था। कायकर्त्ताओ साधुओ पडितो एव पुजारियो आदि के लिए हर रोज सामूहिक तथा परिवर्तित मिष्ठा न (महाभोज) बनने का यही पर आदश इ तजाम था। मैंने बीमार होते हुए भी इस सत्यायोजन को बार बार मडप निकट जाकर देखा था।

रात के 12 बजे तक सर्दी बेहद, कान ही नहीं—हृदय और फेफडे तक ठडे हो गय। दात बोल गये और पैरो न गूयना धारण कर ली। लेकिन इस भयकर जाडे मे भी हजारो लोग पत्थर की मूर्तिवत बठे रामलीला देखत रहते थे। भगवान की झाँकी दिखान के समय रुपयों की बौछार बरस जाती और पडितजी से रामायण का प्रवचन सुनकर भी जनता मुग्ध हो जाया करती थी। पगला बाब तो यहाँ की जनता के लिए जादू बनकर आया था। हर समय हजारो नर नारियों की अटूट एव अगाध निष्ठा के साथ भीड लगी रहती थी। नोटो की झडी लगाने वाले दूसरे गाँव के लोग भी माताजी के मदिर में बाबा से बार बार मिलते थे। यहाँ के कई लोग बाबा के हाजरिये और कई पैसे सभालने वाले दिन रात भक्त बन रहते। ये लोग केसरिया साफा झुकाये पेडे पतासे तथा मुफ्तिया माल खा खाकर मस्त मुसटडे बन गय। कई लाग बाबा आये तब से ही मनवाछित फल पा लेने के लिए चिपके रह। गाव का राजनतिक नेता तो अपने हृदय मे शासन विधायक का उच्चासन पा लेने की उम्मीद बसाय हुए था। बाबा के दशनो से सब खुश, क्योंकि यहा के कायकर्त्ताओ को काफी माल एव मान मिलता और अ य लोगो को उनकी आकाक्षाएँ फलीभूत होने का आशीर्वाद मिलता। माताजी के मदिर का मकान, बिजली की टयूब लाइटो से जगमगाता रहना और मदिर की विद्युती सजावट ग्रामीण यात्रियो का मन मोहे प्रकाशित होती थी। चहल पहल भरा रात का दश्य तो बेहद अकल्पनीय बन जाता। तत्समय लोग अनेक स्थानो पर ठहरे हुए अन्य सतो के भी दशन करते थे। मुख्य स्थानो मे सतो के शिविर पचायत भवन के अन्दर और इर्द-गिर्द थे। मगर शिवालय, जगेरी और रामदेवरा म भी सतो के धूणे लगे थे। खेजडे के बडे लक्कड जलते और भजन वाणी तथा शब्द विचार क माध्यम से चारों ओर सत्सगतें चलती रहती थी। होटलो वालो के मजदूर छोकर थरथराते हुए फिरते और एक दो बजे तक खडखडाते हुए लोग अपने अपन घर डेरो पर आकर सोते थे।

रासलीला होन का समय दिन म 12 से 5 बजे तक और रात्रि का 9 बजे से आरम्भ होती थी। इसके दशक जन को मडप का दृश्य बडा सुहावना एव विचित्र लगता था। प्रेम टेन्ट हाऊस बीकानेर के पर्दे और नीचे बडी दरिया बिछी थी। सामने ऊँचा मच और उसकी चमकीली झलरिया तथा विगें बधी हुई थी। श्री कृष्ण और राधा का

पाट करने वाले पात्रों को जनता साक्षात भगवान समझती। उनकी जरी की पोशाकों पर बिजली के बड़े पॉवर वाले बल्ब गजब ढा रहे थे। बीच बीच में बिजली अपने नये आगमन का अनुभव कराने के लिए आँखें भी मीच (बन्द कर) लेती थी। तब पेट्रोमेक्स एवं चौथी तरफ के खुले मैदान में खड़े ट्रकों की बत्तियों से प्रकाश को कायम रखा जाता था। कुछ लोग वहाँ के शिविरों में बैठे ही रासलीला देख लिया करते। कई ग्रामीण अपने ऊँट वाले बड़े गाडों के नीचे निवास स्थान बनाये 'गुदड-गुडकान' के साथ लालानंद ले लेते थे। महिलाएँ बातों में बाबा की बड़ाई करती और रोटियाँ पकाती हुई भी भजन कीर्तन कर लेती थी। सन्ध्या वंदन भी वहीं होता। पंडितजी का प्रवचन भी समय परिवर्तन से लीला मंच पर ही होता था और इसे पंचायत भवन के मैदान में ठहरे हुए लोगों को अपने स्थान से देखने का दुहरा लाभ मिल जाया करता था।

बाबा के आगमन से यहाँ सब तरह से लगभग चार लाख रुपयों की यज्ञार्थ आमद हुई तथा प्रत्येक दिन तीस-तीस, पैंतीस पैंतीस हजार रुपये आये। तभी तो बार-बार बाबा की हजारों कंठों से एक साथ गगनभेदी जय जयकार हुई।

वैसे तो जलाशय पास ही है मगर ऊँटों की कोठियों द्वारा पाईप के पानी से ड्रम भरवाये जाते थे। डॉक्टर अस्पताल बिल्कुल नजदीक एवं पुलिस चौकी भी लगी हुई एकदम निकट तथा डाक तार विभाग की पूर्ण सेवाएँ तत्समय उपलब्ध रही। परन्तु प्राकृतिक प्रकोप का पूर्ण भय बना रहा कि आकाश में बादल मंडराते थे और यात्रियों से खुला मैदान ठसाठस भरा हुआ था। श्री कोलायतजी तथा रामदेवजी के ऐसे क्षेत्रीय मेला के ढंग पर कालू में यह अनोखा तथा पगला बाबा के दर्शनार्थ हित मेला लगा था।

असत्य तथ्य एवं अफवाहें—पगला बाबा के चमत्कारों विषय में उनको असत्य बातें एवं अफवाहें दूर दूर तक फैलती चली गई। उसके प्रभाव से ही गाँवों के लोग जाड़े की इस ठिठुरती ऋतु में बाबा के दर्शनार्थ आ जा रहे थे। एक गप्प यह भी उड़ाई गई कि बाबा जब श्री डूंगरगढ़ से कालू के लिए एक जीप मोटर में बैठकर चले तो थोड़ी दूर का रास्ता तय करने पर जीप वाले ड्राईवर ने देखा कि बाबा की सीट खाली पड़ी है। वह घबराकर जीप रोकने लगा। तब साथ बैठे किसी सज्जन ने बताया कि—"डरो मत। यह बाबा का चमत्कार है।" ठीक वैसा ही हुआ। जीप ने कालू गाँव में प्रवेश किया, उससे पाँच मिनट पूर्व ही पीछे की सीट पर बाबा बैठा दिखाई दिया।

दूसरी-बाबा आये उस दिन श्री डूंगरगढ़ कालू रूट की मोटर गाडी अपनी सड़क से भीड़ भरी जा रही थी। उसके ड्राईवर आदि को बाबा के यहाँ आने का मालूम ही नहीं था। क्योंकि बस, बाबा के गाँव में आने के बाद अभी अभी लूणकरणसर से आई थी। दोनों के अलग अलग रास्ते, परन्तु माताजी के मंदिर में बैठे ही बाबा ने देखा कि मोटर गाडी गाँव से निकल गई है। तब उन्होंने हाथ का इशारा किया और बोले 'वापिस जाओ!" बस तुरन्त मुड़कर मन्दिर के आगे आकर खड़ी हो गई। बस स्टाफ वाले बाबा के पैरों में गिर पड़े। ऐसी-ऐसी अनेक अलौकिक बातें जन-समूह में चल गई।

यज्ञ मैदान के चारों ओर चार सुन्दर दरवाजे तथा आने जाने के रास्तों पर झंडियाँ टंगी हुई थी। दोनों किनारों पर दुकानें, ताल के बीच की पाल पर यात्रियों के अनेक गाड़े, ट्रक एवं जीपें खड़ी रहती। जगह जगह गाँव गाँव के डेरों में आग जल रही

तिल रखने की जगह नहीं मिलती। दिन भर विशेष मोटर गाडियाँ यात्रियो से लदी भरी चलती। यातायात से वंचित हुए यात्री इस भयकर सर्दी म गठडी का भार लादे कबल ओढे तन ठिठुराय पदल भी आते थे। दल पर दल टिड्डी दल। सब सस्था भवन भर गये। तत्समय जप तप और यज्ञ का कायक्रम 'सत्य त्रेता युग' का दश्य दिखाई देता था और हजारो नर नारी एव अबाल वद्ध इस समारोह म सम्मिलित होते थे।

घी के बडे टीन तिलो एव नारियल-खोपरा की बोरियाँ खाड पताशा लाड-पेडा, रुपये पसा तथा फूलो के थलो स लद हुए लोग आने और बाबा के चरणो म अर्पित करके अपने को धन्य धन्य मानते थे। मानो इस सुराज मे वे स्वग का राज्य लूट लूटते थे। मन्दिर के भण्डार कक्ष को घी के टीनो एव हवन सामग्री की बोरियो से अजीर्ण हो रहा था। कायकत्ताओ साधुओ पडितो एव पुजारियो आदि के लिए हर रोज सामूहिक तथा परिवर्तित मिष्ठान्न (महाभोज) बनने का यहीं पर आदेश इतजाम था। मैंने बीमार होते हुए भी इस सत्यायोजन को बार बार मडप निकट जाकर देखा था।

रात के 12 बजे तक सर्दी बेहद कान ही नही—हृदय और फेफडे तक ठडे हो गये। गान बोल गये और परो ने शून्यता धारण कर ली। लकिन इस भयकर जाडे म भी हजारो लोग पत्थर की मूर्तिवत बठे रामलीला देखते रहते थे। भगवान की झाँकी दिखाने के समय रुपयों की बौछार बरस जाती और पडितजी से रामायण का प्रवचन सुनकर भी जनता मुग्ध हो जाया करती थी। पगला बाबा तो यहाँ की जनता के लिए जादू बनकर आया था। हर समय हजारो नर नारियो की अटूट एव अगाध निष्ठा के साथ भीड लगी रहती थी। नोटो की थडी लगाने वाले दूसरे गाँव के लोग भी माताजी के मदिर मे बाबा से बार बार मिलते थे। यहाँ के कई लोग बाबा के हाजरिये और कई पैसे सभालने वाले दिन रात भक्त बन रहते। य लोग केसरिया साफा झुकाये पेडे पतासे तथा मुफ्तिया माल खा खाकर मस्त मुसटडे बन गय। कई लोग बाबा आये तब से ही मनवाछित फल पा लेन के लिए चिपके रहे। गाँव का राजनतिक नेता तो अपने हृदय मे शासन विधायक का उच्चासन पा लेने की उम्मीद बसाये हुए था। बाबा के दशनो से सब खुश क्योकि यहा क कायकर्त्ताओ को काफी माल एव मान मिलता और अन्य लोगो को उनकी आकांक्षाएँ फलीभूत होने का आशीर्वाद मिलता। माताजी के मदिर का मैदान, बिजली की टयूब लाइटो से जगमगाता रहना और मदिर की विद्युती सजा-वट ग्रामीण यात्रियो का मन मोहे प्रकाशित होती थी। चहल पहल भरा रात का दश्य तो बेहद अकल्पनीय बन जाता। तत्समय लोग अनेक स्थानो पर ठहरे हुए अन्य सतो के भी दशन करते थे। मुख्य स्थानो मे सतो के शिविर पचायत भवन के अन्दर और इद-गिद थे। मगर शिवालय, जगेरी और रामदेवरा म भी सतो के धूणे लगे थे। खेजडे के बडे लक्कड जलते और भजन वाणी तथा शब्द विचार के माध्यम से चारो ओर सत्सगतें चलती रहती थी। होटलो वालो के मजदूर छोकर थरथरात हुए फिरत और एक दो बजे तक खडखडाते हुए लोग अपने अपने घर डेरो पर आकर सोते थे।

रासलीला होने का समय दिन म 12 से 5 बजे तक और रात्रि का 9 बजे से आरम्भ होती थी। इसके दशक जन को मडप का दश्य बडा सुहावना एव विचित्र लगता था। प्रेम टेन्ट हाऊस बीकानेर के पर्दे और नीचे बडी दरियां बिछी थी। सामने ऊँचा मच और उसकी चमकीली झालरिया तथा तिरगें बधी हुई थी। श्री कृष्ण और राधा का

पाट करने वाले पात्रों को जनता साक्षात भगवान समझती। उनकी जरी की पोशाकों पर बिजली के बड़े पावर वाले बल्ब गजब ढा रहे थे। बीच बीच में बिजली अपने नये आगमन का अनुभव कराने के लिए आँखें भी मीच (बन्द कर) लेती थी। तब पट्रोमैक्स एवं चौथी तरफ के खुले मैदान में खड़े ट्रकों की बत्तियों से प्रकाश को कायम रखा जाता था। कुछ लोग वहाँ के शिविरों में बैठे ही रासलीला देख लिया करते। कई ग्रामीण अपने ऊँट वाले बड़े गाड़ों के नीचे निवास स्थान बनाये 'गुदड़-गुडवान' के साथ लीलानंद ले लेते थे। महिलाएँ वातों में बाबा की बड़ाई करती और रोटियाँ पकाती हुई भी भजन-कीर्तन कर लेती थीं। संध्या वंदन भी वहीं होता। पंडितजी का प्रवचन भी समय परिवर्तन से लीला मंच पर ही होता था और इस पंचायत भवन के मैदान में ठहरे हुए लोगों को अपने स्थान से देखने का दुहरा लाभ मिल जाया करता था।

बाबा के आगमन से यहाँ सब तरह से लगभग चार लाख रुपयों की यज्ञार्थ आमद हुई तथा प्रत्येक दिन तीस तीस, पैंतीस पैंतीस हजार रुपये आये। तभी तो बार-बार बाबा की हजारों कंठों से एक साथ गगनभेदी जय जयकार हुई।

वैसे तो जलाशय पास ही है मगर ऊँटों की कोठियों द्वारा पाईप के पानी से ड्रम भरवाये जाते थे। डाक्टर अस्पताल बिल्कुल नजदीक एवं पुलिस चौकी भी लगी हुई एकदम निकट तथा डाक तार विभाग की पूर्ण सेवाएँ तत्समय उपलब्ध रहीं। परन्तु प्राकृतिक प्रकोप का पूर्ण भय बना रहा कि आकाश में बादल मंडराते थे और यात्रियों से खुला मैदान ठसाठस भरा हुआ था। श्री कोलायतजी तथा रामदेवजी के ऐसे क्षेत्रीय मेलों के ढंग पर कालू में यह यज्ञीय तथा पगला बाबा के दर्शनों हित मेला लगा था।

असत्य तथ्य एवं अफवाहें—पगला बाबा के चमत्कारी विषय में अनेकों असत्य बातें एवं अफवाहें दूर दूर तक फैलती चली गई। उसके प्रभाव से ही गाँवों में लोग जाड़े की इस ठिठुरती ऋतु में बाबा के दर्शनार्थ आ जा रहे थे। एक गप्प यह भी उड़ाई गई कि बाबा जब श्री डूंगरगढ़ से कालू के लिए एक जीप मोटर में बैठकर चले तो थोड़ी दूर का रास्ता तय करने पर जीप वाले ड्राईवर ने देखा कि बाबा की सीट खाली पड़ी है। वह घबराकर जीप रोकने लगा। तब साथ बैठे किसी सज्जन ने बताया कि— "डरो मत। यह बाबा का चमत्कार है।" ठीक वैसा ही हुआ। जीप ने कालू गाँव में प्रवेश किया, उससे पाँच मिनट पूर्व ही पीछे की सीट पर बाबा बैठा दिखाई दिया।

दूसरी बाबा आये उस दिन श्री डूंगरगढ़ कालू रूट की मोटर गाड़ी अपनी सड़क से भीड़ भरी जा रही थी। उसके ड्राइवर आदि को बाबा के यहाँ आने का मालूम ही नहीं था। क्योंकि बस, बाबा के गाँव में आने के बाद अभी अभी लूनकरनसर से आई थी। दोनों के अलग अलग रास्ते, परन्तु माताजी के मन्दिर में बैठे ही बाबा ने देखा कि मोटर गाड़ी गाँव से निकल गई है। तब उन्होंने हाथ का इशारा किया और बोले 'वापिस जाओ।" बस तुरन्त मुड़कर मन्दिर के आगे आकर खड़ी हो गई। बस स्टाफ वाले बाबा के पैरों में गिर पड़े। ऐसी ऐसी अनेक अलौकिक बातें जन समूह में चल गई।

यज्ञ मैदान के चारों ओर चार सुन्दर दरवाजे तथा आने जाने के रास्तों पर फरिया टंगी हुई थी। दोनों किनारों पर दुकानें, ताल के बीच की पाल पर यात्रियों के अनेक गाड़े, ट्रक एवं जीपें खड़ी रहती। जगह जगह गाँव गाँव के डेरों में आग जल रही

थी। कई तो लकडिया भी लादकर साथ लाये थे। मौसम खराब हुआ किन्तु वर्षा का किसी को भय नही लगा। बीच मदान विशाल यज्ञशाला जिसके ऊपर बडी बडी मरकिया से बना टीनो की गोटामनुमा देखन योग्य छपरा था। छपरे के ऊपर मडी माने की तरह छाटा सा छप्पर मचान। गगनस्पर्शी यज्ञीय चडे इस मचान पर लगे हुए धार्मिक कीर्ति कौमुदी को लहरा रहे थे। दूर दूर तक ताड की बल्लिया बाध बाधकर खड़ उपखड बनाये गये और मुख्य खभों पर ट्यूब लाइटा का प्रकाश तथा कुछ पर लगे लाऊडस्पीकर हर समय गगन गुजाते रहते। पीछे के दोनो नोहरों मे बनते हुए भारी मिष्ठा न की महक तो परिक्रमा करने वाले थके मादे यात्रियों का मन चुरा लेती थी। पण्डिता सतो कार्यकर्ताओ तथा बाबा के हजूरिया का विविध भाति मनो, मिष्ठा न रोजाना यहीं बनता। किसी का क्या लगता? बचा खुचा शेष मात्र इन सेवकों के सहयोगी सेवको का भी भरपेट प्रसाद प्राप्ति हेतु खिला दिया जाया करता था।

देवी मदिर के आगे एक तरफ बाबा का धूणा लगा रहता। बडी भारी भीड, मदिर रोशनी से जगमगाता रहता व छोटे बल्बा के जाल से तान दिये गये थे। इच इच पर लोटिये और हरिण-खरगोश की शक्लें विद्युत प्रकाश म चौकडी भर रहे थे। उधर रामलीला चलती। एक रात तबला की तान के साथ आकाश मे बादला ने गडगडाहट और बिजली ने अपना नत्यारभ कर दिया। इस मन्दिर की बिजली की चकाचौंध म आकाशीय बिजली भी आख मिचौनी का खेल खेलन लगी। जनवरी 79 के दिनाक 28 का समय समाप्त हुआ और दिनाक 29 को 1 बजे रात्रि का समय आ गया। वर्षा शुरु हो गई। विद्यालय सफाखाने जसे अनेक सस्था भवनो को यात्रियों के लिए खोल दिये गये। आधी रात्रि के वक्त भाग दौडकर हजारों अजनबी आदमी गाव के घरा तक म जाकर वर्षा के पानी से बचे। एक यात्री परिवार ने मेरे घर आकर शरण ली। मैंने उनमे इस वर्षा मे यज्ञ के आयोजन की व्यवस्था बिखर जाने सम्बन्धी बातचीत की तो उस परिवार के मुखिया ने इस शीतकालीन असमय की वर्षा के बाबत मुझे सुनाया—

खड खूटा माणस मूवा, वाला गया विदेस।
मोसर चूको मेहडा, बरसर काह करेस॥

कालू म सत्ताईस कुण्डिया विष्णु महायज्ञ हुआ, उसमे नीचे लिखी जातिया के व्यक्ति यजमान बने थे तथा महायज्ञ के पूर्ण होने म अपनी श्रद्धा एव सामर्थ्यानुसार सहयोग दिया—

ब्राह्मण—हजारीराम सारस्वत, जगदीश तिवाडी, चूनाराम पारीक, गोरधन राम खडेलवाल श्रीराम खडेलवाल सुगनाराम खडेलवाल हरिकिशन खडेलवाल, रूपा राम गौड पोकरराम। (9)

जाट—आसूराम नण हीराराम डागवाल कुम्भाराम लेधा परमाराम सऊ नारायण झोरड, किस्तूराम मामराज। (7)

सुनार– जवरीलाल मोहनलाल। (2)

माहेश्वरी—रामचन्द्र राठी जेठमल राठी, गापालचन्द डूढानी मीताराम झवर। (4)

ओसवाल—पूनमचन्द नाहटा। (1)

बरागी—जीवणदास, भानूदास। (2)

सेवग—सोहनलाल, गोपालराम। (2)

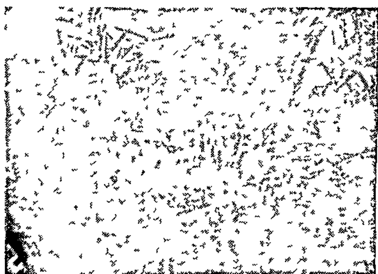
कालू गाव म सम्पन्न हुए इस सत्ताईस कुण्डीय विष्णु महायन म 110 पंडित उपस्थित थे। जिनका पारिश्रमिक स्वरूप प्रत्येक को 171 रु० दिये गय थे। विष्णु महायन में उपस्थित 37 साधु थे, प्रत्येक को दक्षिणा रूप म 51 रु० प्रदान किये गय थे। जब कि कालू के चौतरफा निकटीय क्षेत्र मे सम्पन्न हुए विष्णु महायनों म साधुओं को दक्षिणा स्वरुप इससे कम राशि ही दी गई थी। नोखा के इक्कीस कुण्डीय महायन में साधुओं को 11 रुपय तथा एक चादर दी गई थी। श्री डूगरगढ म सम्पन्न इक्कीस कुण्डीय महायन मे भी 21 रुपय तथा एक चादर दी गई थी। बीकानेर मे हुए सत्रह कुण्डीय महायन म भी साधुओं को 35 रुपये तथा एक चादर प्रदान की गई थी। नापासर के महायन म साधुओं को 11 रु० की दक्षिणा दी गई। इससे पता चलता है कि सत्ताईस कुण्डीय महायन म उपस्थित हुए साधुओं का दक्षिणा स्वरूप सम्मान सर्वाधिक किया गया।

उपलब्धियां उपसंहार—ग्राम के हर नागरिक का यह कर्तव्य होता है कि अतीत के संदर्भ म वर्तमान का पर्यवेक्षण करें और जहा उसे वांछित दिशा म महत्वपूर्ण अथवा उपयोगी परिवर्तन दिखाई दे तो उन्ह अपनी उपलब्धि मान। इस दृष्टिकोण से यदि हम वि स 2035 के वर्ष को कस्बा कालू के लिए एक वरदायक, प्रभावशाली वक्त एव युग निर्णायक वत्सर कहें तो कोई अत्युक्ति नही होगी।

अगला वर्ष वि स 2036—वि स 1956 के भयकर अकाल म स 1996 वाला चालीस वर्ष का समय लेकर वसा ही तृणाकाल पडा था और उसी चालीस साल की अवधि मे फिर स० 2036 म दुर्भिक्ष की दशा घूम आई। बड़े बूढ़ो से सुना था कि पूर्व में स० 1916 का दुष्काल था। वि स 1915 55 95 और 2035 के सम्वत् अर्द्धकाल थे।

इस वर्ष गाव कालू म श्रावण कृष्ण एकादशी को एक वर्षा हुई थी जिससे सारे तालाब भर गये और पशुओं के लिये हरा चारा उग आया। तुरत भूखे प्यासे निकटवर्ती श्री डूगरगढ तहसील के गाँव गुसाईसर और रुहोडेरों का बहुत सा पशुधन लेकर वहाँ के लोग कालू के जलाशयों पर आ गये। फिर वहा के डेलवा, घोळिया, ममन्दसर माणकरासर लिखमीदेसर, आडसर, मोमासर तोलियासर ठुकरियासर, जेतासर, लाछडसर, सुरजनसर रिडी बिग्गा हेमासर, जेसलसर धीरदेसर, बीरमसर, जाळबसर, लाघडियो, उदरासर और श्री डूगरगढ आदि के बहुत से घर यहाँ आ बसे। चारे पानी की सुविधा के कारण सरदारशहर तहसील के गाँव पातलीसर, भादासर, बनडाऊ, सोमासर, पनपालियो सोनपालसर, गोमटियो, रणाईसर कवलासर अन्मीसर, घडसीसर वगरह अनेक गाँवों के सम्बन्धी लोग तथा अन्य निरीह लोग पशु लेकर कालू आ गए। गाँव कालू के लोगो ने अपना सत्य धर्म बनाए रखा। आने वालो का खूब स्वागत सहयोग किया। जब तक बन पड़ा कालू का जन उनकी सेवा मे खडा रहा। महीने भर इतने परिवार पशु धन लेकर आये कि गाँव म समाने दुश्वार हो गये। गाँव, ग्वाड, घर नोहरे खेत बजड और धोरो-डरी मे सब जगह उनके पशु फल गए। जगह जगह डेरे डाल दिये, पर रखने तक को जगह नहीं रही। कहीं तम्बू झौंपडिया और कही गाडों की ओट म घर बार लिए गोळी लाग आ बठे। गाँव म आदमियो की टोलियाँ रोही मे सब जगह झिलमिल प्रकाश, रास्तों गलियो में गाय भसों क बाग (समूह) हर समय चलते

रहत। भेड बकरिया के रवड एव ऊँटो के टालो ने कालू ग्राम सीमा की सारी जमीन को बुरी तरह से रौंद कर रख दिया। गाव कालू का जन एव पशुधन पानी म पतासों की तरह मिल गय। फसल का नाश, वन बजड विनाश, रात दिन जबरदस्ता से कालू को उजाड डाला। क्योंकि गाँव के पशुआ से अधिक पशु, बाहर के आकर कालू की रोही पर छा गय। गारबदशर, छटासर, कागामर व करनीसर के कुछ लाग कालू के खेता से राता रात सुबह शाम घास काटकर गाडे भर भर ले गये। गाँव कालू के कूओ म ही सदा स पर्याप्त पानी रहता है। गर्मी के दिनों मे गाँव गारबदेशर और आडसर के हजारो पशुधन और मनुष्य यही से पानी प्राप्त करते रहे हैं। मगर उक्त समय ता गाव कालू के निवासी बडी दुविधा मे पड गये थे। वर्षा होने से प्रसन्नतापूवक फसल बीज दी थी। उसे आये पशुओ द्वारा खा डाली गई। अवशेष रही खेती पानी के बिना शुष्क होकर मुरझा गयी। बजड के घास एव तालाबो का पानी भी चुकत हो गया। आये हुए लोगो और अकाल दोनो के प्रकोप से उस वप (स 2036) तबाही हो गई। फिर तो दो हजार पतीस म पगलाबाबा के बताय सुकालिक परचे का भी लोग प्रत्यक्ष ठगी-पाखड' कहने लगे थे।



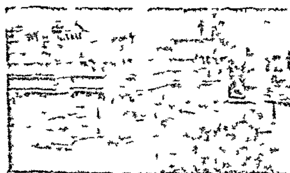
लिपट पम्पिग क जल से क्षेत्र मे खजूर

दशम प्रकरण

कालू का जिला एव तहसील

जिला—डिवीजन का मुख्य, बेजोड, भव्य एव विशाल नगर नगीना बीकानेर हमारा सदीना जिला है। यह नगर बहुत सुन्दर है और इसके घेरे मे सात किलोमीटर करीब पत्थर की बनी पच्चीस-तीस फुट तक ऊंची और छ फुट चौडी चारो ओर चाहरदीवारी है। इसमे कोटगेट सहित पाच दरवाजे और आठ बारिया हैं।[1] शहर मे लाल पत्थर की असख्य कारणीदार पुरानी हवेलिया हैं जो दर्शकों का मन लुभाती रहती हैं। यहाँ का अलख सागर तथा चौतीना कूआ का जल, जन स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद माना जाता है। अब यहाँ नहर का पानी भी पहुँच गया है।

बीकानेर मे अनेक जैन मन्दिर है। राजा प्रजा की श्रद्धा के स्थान अन्य धार्मिक मन्दिरो मे लक्ष्मीनाथ जी रतनबिहारी जी सरस्वती मन्दिर (नागरी भडार), नागणेची जी तथा रसिकशिरोमणि जी आदि के मन्दिर देखने योग्य हैं। यहा का जूनागढ अत्यन्त आकर्षक तथा नयनाभिराम है। महलो म काच की पच्चीकारी व स्वर्ण कलम का काम बडा उम्दा तरीके से किया हुआ है। गगासिंह जी ने इसम गगा निवास जैसे भव्य भवन बनाकर गढ की अधिक शोभा बढाई है। इसका करणी म्यूजियम देखने योग्य है। इसके अन्दर दो बगीचे, एक घटाघर और चार कूए हैं। सामने के पब्लिक पार्क मे श्री डूगरसिंह जी की सगमरमर मूर्ति है और थोडी आगे अश्वारूढ श्री गगासिंह जी की कासे की बनी मूर्ति (Bronze Statue) है।



लालगढ महल

स्वर्गवासी महाराजा लालसिंह जी की स्मृति म बनाया हुआ महल लालगढ[2], लाल पत्थर पर खुदाई का उत्कृष्ट नमूना है। इसके अन्दर सगमरमर के सुन्दर फर्श बने हुए हैं। यह भव्य दुर्ग बडा विशाल, सुन्दर बगीचा, सघन वृक्षा, लता कुजों रग रगीले पुष्पो और हरियाली से समयासमय शोभायमान बना रहता है। इसमें तैरने का स्थान

1 अब लोगो ने अपनी सुविधा के लिए शहरपनाह (दीवार) मे अनेक बारियाँ निकाल ली हैं। 2 लालगढ के महल का नक्शा सर स्विटन जेकब ने बनाया था।

व लालसिंह जी की मूर्ति एव घटाघर देखने के लायक हैं। इसके बाद शहर मे राजस्थान शिक्षा विभाग कार्यालय, बडी अस्पताल, अजायब घर, विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, रेल्वे कारखाना पुस्तकालय, अवशीतन कार्यालय (दुग्ध फैक्ट्री), आर सी पी कार्यालय, केन्द्रीय ऊन विश्लेषण प्रयोगशाला तथा ऊन की मिल विश्रामगृह, विश्नोइयो की धमशाला, कचहरी, सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज, महारानी सुदर्शना कॉलेज, टीचर्स ट्रेनिंग कालेज वेटेनरी कालेज पॉलीटेक्निक कॉलिज, डूगर कालेज, आकाशवाणी केन्द्र आदि स्थान महत्वपूर्ण हैं। सात कि० मी० पूर्व मे राजाओं की छत्रियो वाला देवकुड सागर व शिवबाडी आदि प्राचीन रमणीक स्थान दर्शकों का मन पूर्ण रूप से आकर्षित करते हैं। नाल का हवाई-अड्डा तथा शहर का रेल्वे जंक्शन और राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम जैसे यातायात के बहुत बडे एव महत्वपूर्ण केन्द्र हैं।

जिले के बहुत स गाँवो मे सुरधाम एव शक्तिपीठ हैं। पुराने गढ एव कोठियाँ भी काफी हैं। ये सब ऐतिहासिक एव दर्शनीय स्थान हैं। धार्मिक तीर्थ श्री कोलायतजी म कपिल मुनिस्वर, कोडमदेशर म भरवजी जागलू व मुकाम मे जाम्भोजी के स्थान हैं। देशनोक एव मोरखाणा मे प्रसिद्ध शक्तिपीठ हैं। वहाँ की करणीजी राठौडो की कुल देवी है एव सुसाणी माँ जन सुराणो की देवी कहलाती है। पदमनी की मेडी पूगल एव छत्र-गढादि पुराने गढो के साथ जिले म गजनेर पलेस भी देखने योग्य हैं। बीकानेर जिले मे दो झील और अनका तालाब हैं। राजस्थान नहर तो जहान की अद्वितीय जाह्नवी है। पलाना म कोयला, जामसर व लूनकरनसर मे जिप्सम तथा नमक, कोलायत क्षेत्र मे मेट,

BIKANER BULLETIN September 1947

प्रेसीडेन्ट श्री खुशालचन्द

लाल मिट्टी एव ककड की बहुतायत है, जो सारे देश म भेजे जाते हैं। बीकानेर के नागरिको म बहुत से ब्राह्मण बहुश्रुत एव आदश आदमी तथा डागा, दम्माणी, मूधडा, रामपुरिया और मोहता आदि महाजन भी देश प्रसिद्ध रह हैं। सेठ खुशालचद डागा ई० सन् 1947 मे बीकानेर चेम्बर के प्रेसीडे ट रहे थे।

बीकानेर मडल (जिले) म पौन सात सौ गाव हैं। सांख्यिकी 1975 मे ई० सन् 1971 की गणनानुसार औरत 2 लाख, 71 हजार, 710 और आदमी 3 लाख 1 हजार 439, कुल आबादी 5 लाख 73 हजार 149 हैं। यह आबादी बीकानेर जिले की सन 1961 की जनगणना के मुताबिक 444 515 थी।[1] इस मडल मे 1 लाकसभा क्षेत्र 4 विधानसभा क्षेत्र और चार पचायत समितियाँ हैं। समितियों के अधीनस्थ 133 ग्राम पचायतें हैं। पचायत समिति कोलायत म 23, नोखा मे 51, बीकानेर मे 33 और लून-करनसर मे 26 ग्राम पचायतें हैं। जिले मे लगभग 12 लाख पशुधन हैं।

राजस्व व्यवस्था के ढग स बीकानेर जिले का सुप्रबध तहसीलो द्वारा हाता है। प्रत्येक तहसील मे एक तहसीलदार नायब तहसीलदार कानूनगो, पेशकार गिरदावर आदि कायकारी रहते हैं। य जमीन, लगान—व्यापार, लेन देन, पजीयन चुनाव जन गणना वगरह राज्य काय सबधी सब कार्यों की व्यवस्था जिलाधीशादेश पर करत हैं। इस जिले की नीचे लिखी चार तहसीलें हैं—

1 **सदर तहसील**—यह बीकानेर नगर मे है। इसके द्वारा अपन अधीनस्थ गावो का राजस्व प्रबध होता है।

2 **श्री कोलायत तहसील**—यह बीकानेर नगर से करीब 50 कि० मी० दक्षिण-पश्चिम मे है। यहाँ इसका अपना रेल्वे स्टेशन और एक प्रसिद्ध तालाब है। जिले की मगरा नामक भूमि का सारा राजस्व प्रबध कोलायत तहसील के अधीनस्थ है।

3 **नोखा तहसील**[2]—नोखा मडी रेल्वे स्टेशन बीकानेर से लगभग अस्सी किलो-मीटर दक्षिण म है। यह अन आवक मडी है। नाखा कस्बा बडी उन्नति कर रहा है। राजस्व प्रबध इसकी तहसील द्वारा होता है।

4 **लूनकरनसर तहसील**—प्राचीन समय म यह तहसील एरिया जल आदि के लिए सदव अभावग्रस्त रहा हुआ है, किन्तु अब नहर आ जाने के कारण सब सुख सम्पन्न मडी युक्त है। इसकी जनसंख्या देखते-देखते दुगुनी हो गयी है। इसका भूमि बन्दोबस्त दो तहसीलो द्वारा होता है। लूनकरनसर रेल्व और 'राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम' द्वारा अन्य नगरा एव गावा से सम्बन्धित है। यह कस्बा अपने जिले से लगभग 81 कि मी पूर्व मे बसा है। इस तहसील म अनक विभाग एवं सस्थाएँ हैं और 210 गाँव (आबाद गर आबाद एव नष्ट हुए नाम) हैं। पहले इस गाव का नाम केवल 'सर" था और इससे पहले एक बास का नाम जोरावरपुरा बतलाया जाता है।

---

1 तहसील बीकानेर सदर की आबादी सन् 1961 के अनुसार 251 781 रही।

2 ई० सन 1940 तक यह नोखा, तहसील बनने के लायक आबाद नहीं था। तब तहसील कार्यालय सूरपुरा गाव म नियुक्त कायरत था। उस समय राज्य म सदर (बीकानेर) राजगढ सुजानगढ, सूरतगढ, गगानगर और रायसिह नगर जसे छ जिले अथवा निजामत कार्यालय भी थे।

तहसील भवन

लूनकरनसर

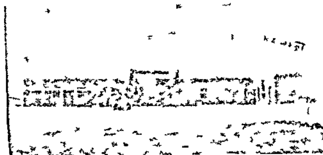
तहसील क्षेत्र का नक्शा

तहसील—कालू का तहसील लूनकरनसर है। इसमे एक राजस्व और एक उपनिवेशन दो पथक पथक कार्यालय हैं। यहा पर विकास अधिकारी कार्यालय भी सुव्यवस्थित एव सुशोभित है। इसका भवन तहसील कार्यालय के पास ही है। ग्राम पचायत भवन और बजरग भवन भी इनसे दूर नहीं हैं। राजस्व तहसील कार्यालय के पास विश्राम गह है। इस क्षेत्र की शिक्षा तथा स्वास्थ्य सबधी परमोच्च व्यवस्थाएँ तहसील के प्रमुख गाव कालू स पूर्ण होती हैं।

शिक्षा—कालू मे ई० स० 1956 से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय और छात्रावास हैं। यह विद्यालय सन् 1978 79 से माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की परीक्षाओं का केन्द्र बन गया है। अत तहसील क्षेत्रीय गावो के बालक बालिकाएँ इससे हर साल पूर्ण लाभ उठाते है। राजकीय माध्यमिक विद्यालय इस क्षेत्र मे चार हैं महाजन,

शेल्सर, और लूनकरनसर। लूनकरनसर म राजकीय माध्यमिक विद्यालय दो (छात्र विद्यालय स्थापित दि० 24 7 61 और दूसरा राज० कन्या मा० विद्यालय स्थापित सन् 1966) हैं। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय—गारवदेसर राजकीय उच्च प्राथमिक (कन्या) विद्यालय कालू सहजरामर धीरेरा मोटोलाई, कुभाणा शेरपुरा, जतपुर कपूरीसर अमरपुरा, मोहल्ला कुम्हारान लूनकरनसर, राजासर भाटियान फूलदेशर आदि गावो मे हैं। इस तहसील म लडके लडकियो के एक सौ करीब प्राथमिक विद्यालय भी शिक्षा प्रसार सलग्न हैं।

लूनकरनसर तहसील के गाव महाजन से करीब 2 कि० मी० पूव ठठ अरण्य मदान स्थित एक 'महिला विद्यापीठ ह जिसका नाम 'कस्तूरबा ग्रामोत्थान महिला विद्यापीठ महाजन ह।'



कस्तूरबा महिला विद्यापीठ महाजन

इस सस्था की स्थापना स्वामी श्री केशवानदजी एव चौधरी कुम्भाराम आय के प्रयत्ना स ई० स० 1955 मे हुई थी। नारी समाज क आध्यात्मिक सामाजिक, सास्कृतिक एव शक्षणिक विकासाथ स्वामीजी न इस क्षेत्र म महिला सस्था स्थापित करने का विचार किया। महिलाओ का शिक्षा के साथ साथ इस सस्था द्वारा गौ नस्ल सुधार दुग्धशाला, भेडपालन, पुस्तकालय औषधालय, कताइ, बुनाई, रगाइ सिलाई कला, कृषिकाय आदि के कायक्रम चलान का निणय लिया गया। इन विषयों म स्वामी केशवानदजी, चौ० कुम्भाराम आय तथा चन्द्रनाथ योगी न बठकर विचार विमश किया। इस सस्था की स्थापना एव सहाताथ महाजन ठिकाना के भू० पू० राजा रघुवीरसिह स भी सलाह का। तब राजा रघुवीरसिह न सवप्रथम इस आदश काय के बाबत 501 बीघा भूमि तथा 1001 रुपये नगद प्रदान किये। दिनाक 16 5 55 को सस्था का भवन बनना प्रारम्भ हुआ जो दिनाँक 16 8 55 का अस्थाई मकान बनकर तयार हो गया। सस्था का उद्घाटन दिनाँक 23 10-55 को महात्मा गाँधी की मुख्य शिष्या देहली राज्य विधान सभा की अध्यक्ष तथा अनक प्रांतो में होन वाले रचनात्मक कार्यों की मयाजिका सुश्री डॉ सुशीला नयर द्वारा किया गया। स्वामी केशवानदजी उद्घाटन समारोह मे स्वागताध्यक्ष थे तथा तत्कालीन प्रदेश उपशिक्षा मत्री श्रीमती कमला बनीवाल की अध्यक्षता मे कस्तूरबा ग्रामोत्थान महिला विद्यापीठ महाजन का सहष उद्घाटन सपन्न हुआ। समारोह म चौ० कुम्भाराम आय, मनफूलसिह भादू चौ० जीवणराम और हसराज आय,

चन्द्रनाथ योगी, रामरतन कोचर तथा क्षेत्र के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। समारोह मे कृषि विकास को ध्यान मे रखते हुए सस्था के अधीनस्थ कृषि फार्म चलाने का निर्णय लिया गया। कृषि फार्म हेतु राजा रघुवीरसिंह से फिर जमीन मागी गई। उन्होने उदारतापूर्वक माजी साहब भटियाणी जी के नाम की 3000 बीघा भूमि, चक भवरिया रोही मे से 1500 बीघा भूमि और सस्था को बख्शीस नामा लिख दी, जो वर्तमान समय मे भी सस्था के अधिकार म है। अब उस जमीन पर सिंचाई के लिए पानी का माधा खुलता है और वह कृषि हेतु अच्छी उत्पादक भूमि क्षेत्र प्रतिष्ठित बननी जा रही है।

कस्तूरबा ग्रामोत्थान महिला विद्यापीठ महाजन की स्थापना देश के महान शिक्षा शास्त्री सन्त श्री केशवानदजी स्वामी के पावन उद्देश्य को लेकर शुद्ध स्वच्छ खान-पान एकान्त वातावरण तथा साधारण व्यय वृति के रहन सहन द्वारा आदर्श शिक्षा सुलभ करवाने की योजनान्विति से की गई। यह महिलापीठ, वनस्थली विद्यापीठ के अनुकरण पर बनी। मगर प० हीरालाल शास्त्री की भाँति मुख्यमत्री का स्वय सहयोग न मिलने पर इसके व्यय बजट का हिसाब अस्वीकृत हो गया कि प्रबुद्ध जन भी इस सस्था को नही पहचान सके। मगर यह सस्था अपने स्थापनाकाल से वर्तमान समय तक अनेक क्षेत्रो मे अभूतपूर्व कार्य करने मे प्रयत्नशील है। यहाँ नारी शिक्षा गौ सेवा और कृषि कार्य से सबधित अन्य सत्कार्य भी स्वीकृत हुए थ। सस्था का मत्री पद श्री चन्द्रनाथ योगी सभालते हैं।

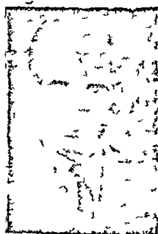
क्षेत्र का एक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय—यह विद्यालय ई० स० 1950 म लोअर मिडिल (छठी श्रेणी) बना और सन् 1952 में मिडिल हो गया। तब श्री गिरधारीलाल झवर ने इस क्षेत्र मे विज्ञप्ति प्रसारित करवा दी थी कि किसी भी गाव से आकर कोई भी कही का बालक गाँव कालू की मिडिल कक्षाओ म पढेगा तो उसे छात्रवृति दी जायेगी तथा परीक्षा पास कर लेने के पश्चात पुरस्कार भी दिया जायगा। तब बाहर के पर्याप्त बालक विद्यार्थी, छठी से आठवी तक कालू पढने आये। श्री झवर ने चार वर्ष (सन 1952 से 1955) तक यथोचित छात्रवृति तथा पुरस्कारो का सुप्रबन्ध बनाये रखा। अत छात्र वृद्धि के कारण ई० स० 1956 के जुलाई मास म कालू का राजकीय मिडिल स्कूल उच्च माध्यमिक विद्यालय के रूप म परिवर्तित हो गया। ई० सन 1954 55 के सत्र सीमा सधि के समय मिडिल स्कूल कालू म तहसील टूर्नामेंट भी करवाये गये थे। उसकी सफलता के उपलक्ष्य मे खिलाडी छात्रों तथा उनकी शालाओं से साथ आये शिक्षकों एव मित्रजनों को गाँव कालू के शाला भवन (धर्मशाला) म बडा सुन्दर एव सुस्वादु सहभोज दिया गया और प्रत्येक विजयी टीम को पुरस्कार। कालू म उसी परम्परा में हर वर्ष अनेक भाँति के पुरस्कार दिये जाते हैं। केवल वर्ष 1981 की बोर्ड की परीक्षा प्रतिभा के लिए पचायत पुरस्कारो का एक विवरण यहा प्रस्तुत है।

15 अगस्त 1981 के स्वतन्त्रता दिवस समारोह पर रा० उ० मा० विद्यालय के निम्नाकित छात्र एव छात्राओ को प्रतिभा पारितोषिक वितरण किया गया। यह ईनाम पचायत बैठक स० 33 प्रस्ताव सख्या 3, दिनाक 7 8 81 के अनुसरण म किया गया, जो समुचित राशि 1212 रुपये अक्षरे एक हजार दो सौ बारह दिये गये—

क्रमस०	नाम	कक्षा	पूर्णांक	प्राप्तांक	चैक न०	पारितोषिक राशि
1	श्री भवरलाल खीचड	11	400	316	909001	रु० 151)
2	,, दीनदयाल माहेश्वरी			294	909002	रु० 101)
3	,, भवरलाल जाणी			264	909003	रु० 51)
4	,, किशनलाल बोथरा		,,	262	नगदी रुपये	रु० 51)
5	,, शिवनारायण सेवग		,,	255	909004	रु० 151)
6	,, शिवदत्त मिश्रा	10	,,	—	909095	रु० 151)
7	मालचद नौलखा		—	—	909006	रु० 151)
8	महेशकुमार बिहाणी	,,	—	—	909007	रु० 151)
9	,, कु० प्रेम नाहटा	,,	—	—	909008	रु० 101)
10	प्रकाशवीर नाहटा		—	—	909090	रु० 101)
11	,, नन्दराम भादू	,,	—	—	909010	रु० 101)
12	,, राजेन्द्रप्रसाद सेठिया	,,	—	—	नगदी रुपये	रु० 51)

स्वास्थ्य एव चिकित्सा –तहसील स्वास्थ्य तथा चिकित्सा के लिए सुप्रसार राजकीय डूढाणी चिकित्सालय एव स्वास्थ्य केन्द्र कालू से होता है। इस सस्थान के साथ ग्रामीण परिवार कल्याण केन्द्र कालू और ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केन्द्र कालू भी सम्मिलित हैं। वसे तो चिकित्सा एव स्वास्थ्य केन्द्र कालू के अधीनस्थ तहसील का सारा क्षेत्र है, किन्तु धीरेरा, कुम्भाणा और कानोलाई आदि कई गावो म विशेष "राजकीय उप-स्वास्थ्य केन्द्र" भी चलते हैं। कानोलाई केन्द्र का अभी अपना राजकीय भवन नही बना है। ग्रामीण परिवार कल्याण केन्द्र कालू के नीचे जितपुर मोटोलाई, केलां और शेखसर परिवार कल्याण उपकेन्द्र हैं। शेखसर मे अभी उसका भवन अनिर्मित है।

चिकित्सा एव स्वास्थ्य केन्द्र कालू के अधीनस्थ कुछ टीकाकार केन्द्र भी सबधित हैं। इनमे कालू, लनकरनसर, महाजन तथा मोटोलाई मुख्य हैं। मलेरिया सर्वेक्षण निरीक्षक केन्द्र कालू महाजन लूनकरनसर तथा कुम्भाणा है। कालू का मलेरिया सर्वेक्षण कार्यकर्त्ता गारबदेसर और धीरेरा, लूनकरनसर का खियेरा, मोटोलाई महाजन का शेखसर, खानीसर गमवाग और महादेववाली का कानोलाई राजासर से कार्यशील है।



डा० ज० सांखला

राजकीय चिकित्सालय—लूनकरनसर म एक एक्सरे प्लांट राजकीय चिकित्सालय है। महाजन म भी राजकीय चिकित्सालय है, मगर वहाँ उसका अपना भवन नहीं है। लूनकरनसर म राजकीय नहर परियोजना चल (भ्रमणशील) चिकित्सालय भवन एव नियामगृह सहित है।[1] एडपोस्ट (स्वास्थ्य सहायता चौकी) केवल कुम्भाणा म है किन्तु उसका भी अपना भवन नहीं है।

1 इसम डा० जगदीश सांखला (जन्म 7 जुलाई 1943) छोटे कलेवर म कर्तव्यनिष्ठ कार्य की हृदयस्थ धारण करने वाल विमल व्यक्ति हैं। श्री जगदीश सांखला नाप तोल कर मिष्ठ वचन बोलते हुए प्रतिपल सामाजिक सेवा मे नि स्वार्थ भावना से लूनकरनसर क्षेत्र म लोक विमोहन चिकित्सक हैं। बीकानेर मेडिकल कॉलेज स एम बी बी एस

राज० आयुर्वेदिक औषधालय—लूनकरनसर तहसील म आयुर्वेदिक औषधालय काफी हैं। इनमे से जतपुर, महाजन और शेखसर के औषधालय बहुत पहले से ही जन स्वास्थ्य सेवा सलग्न तथा क्रियाशील हैं। अब नूतन—मलकीसर, करणीसर, महादेववाली और सहजरासर आदि स्थानो म स्थापित होकर चिकित्सा काय से सुप्रबधित हैं। ये प्राय न० सी' हैं।

पशु चिकित्सा प्रसार केन्द्र—पशु चिकित्सालय का मुख्य कन्द्र लूनकरनसर है, जिसक अधीनस्थ कई उपकेन्द्र भी चलते हैं। कृत्रिम गर्भाधान प्रसार अधिकारी महाजन क अधीनस्थ भी पाच उपकेन्द्र हैं। पयवेक्षक भेड व ऊन प्रसार केन्द्र लूनकरनसर और इसके नीचे कालू गारबदेशर सुरनाणा धीरेरा और खोखराना आदि गावो म पाच उपकेन्द्र भी चलते हैं। इनके अलावा स्वास्थ्य चिकित्सा हेतु महाजन, लूनकरनसर और जनपुर कालू म अनेक वद्य एव डॉक्टर अपन निजू आरोग्य प्रदाय काय करते हैं।

बक वग तहसील लूनकरनसर—(अ) स्टेट बक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर (दि० 16-2 62) की शाखा लूनकरनसर म है। इसमे अच्छा लेन-देन होता है। ऐसी शाखाएँ कालू, महाजन और शेखसर म भी हैं। स्टेट बक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर शाखा का सबध तो भारत ही नही सम्पूण ससार तक का है। इसलिए यहा तहसील भर का भरपूर लेन देन होता है। आपसी साख है पूण विश्वास है। इसकी कालू शाखा का प्रतियोगिता (1979) मे राष्ट्रीय स्तर पर प्राथमिकता मिली है।

(ब) स्टेट बक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर कृषि विकास शाखा (ए डी बी) लूनकरनसर दिसम्बर 1976 स है जो किसानो को खेती एव पशुओं के लिए ऋण देता है। इससे तहसील के सारे किसान प्रफुल्लित मन स लेन देन करते हैं। सन 1981 से कृषि विकास शाखा कालू मे भी स्थापित हो चुकी है।

(स) केन्द्रीय सहकारी बक शाखा लूनकरनसर द्वारा भी तहसील के गावो मे काफी सहायता स्वरूप रुपय दिय लिय जाते हैं।

लूनकरनसर राजस्व तहसील म उप कोषागार भी सहायता, स्वीकृति पेंशन आदि के लेन देन का अच्छा काय करता है।

जल प्रदाय विभाग—कार्यालय जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिक विभाग (सहायक अभियता सेक्टर (डी पी ए पी) का तहसील मुख्यालय लनकरनसर म है। पहले इसका मुख्य कायालय कालू मे था। लेकिन बाद म अ य गावो के जल प्रदाय सबधी प्रबध की सुविधापूण कायवाही के लिए इसका मुख्यालय लूनकरनसर स्थानान्तरित कर दिया गया। अत वतमान मे तहसील के गाँवो का जल प्रदाय प्रबध यही से होता है।

बिजली विभाग—कार्यालय सहायक अभियता बिजली विभाग बोड भी लूनकरनसर म विद्यमान है। बोड तहसील के अनेक गावों मे विद्युतीकरण एव प्रसारण की व्यवस्था करता है। इसकी शीघ्र कायवाही तथा उचित देख रेख से विद्युत प्रसारण सुव्यवस्थित ढग से होता है।

(1968) और डी आ एम एस (1975) मे का। आँखो के इलाज का आत्मिक इच्छा से प्रशिक्षण लिया और डा० सूरवीर सिंह आपरेशन एवाड (1976 म) प्राप्त किया। ये नव्य ससृति म श्रेष्ठ मानव का दीदार लिए हुए साधारण-जन से उत्तम व्यवहार करते हैं एव मानव मात्र के साथ अत्यन्त सरलता विनम्रता सहित सतत सेवक रूप ज्योति रक्षाथ गाँवो म शिविर लगाते रहते हैं।

विश्रामगृह लनकरनसर—पी० डब्ल्यू० डी० (P W D)रेस्ट हाउस लूनकरनसर में राज्य के सार आन वाने बड़े आफिसर मेहमान स्वरूप यहाँ ठहरते हैं।

आर० सी० पी० रेस्ट हाऊस लूनकरनसर—आर० सी० पी० के विभागीय रेस्ट हाउस प्रथम श्रेणी एव द्वितीय श्रेणी लूनकरनसर म स्थित हैं। ये दानो पास ही व्यवस्थित हैं।

लिफ्ट केनाल लूनकरनसर—यह सब लाव हितकारी एव सर्वोपरि सिचाई के उत्तम साधन युक्त है।

लिफ्ट पंपिग स्टेशन मलकीसर—यह भव्य एव जल प्रसारण की उत्तम व्यवस्था है। राजस्थान नहर परियोजना की पंपिग स्टेशन योजना म मलकीसर का लिफ्ट पंपिग स्टेशन भी (लून० में) सुचारू रूप से कार्यशील है।

तहसील के सिंचित गाव—लूनकरनसर सुरनाणा, दुलमेरा, हंसेरा रोंया, फूलदेसर सिणियाला उगाणा काकडवाला, लिछमीनारायणसर, हरियासर, मलकीसर, छाटा बडा गीपरा, कपूरीसर गापलान, नाथवाणा, अर्जुनसर फूलजी आदि 27 ग्राम हैं। विद्यमान मे सब सुचारू काय सचालित हैं।

मेन केनाल (फलाएरिया) के गाव—खारबारा दवासर राणेर गेघडा, समान्देसर लाखनसर तवतपुरा आदि अनेक गाव हैं।

लूनकरनसर लिफ्ट केनाल कालोनी के गाव—लूनकरनसर, महाजन, मलकीसर और अरजुनसर लिफ्ट केनाल कालानी के गाव हैं।

राज्य कृषि अनुसधान फार्म—लूनकरनसर कृषि फाम, भडाण भूमि का मानो एव लहलहाता नवयुगीय नदन कानन वरदान है। जहा लम्बी मोटी झाडियाँ, बूई, सीणियें और बावलिये के पेड़ तथा टीबा वाले जलविहीन इस क्षेत्र म कभी प्यास के कारण रास्त चलते यात्री मर जाया करते थे। आज उसी कठोर रेगिस्तान का यह भूभाग केवल गेहूँ ही नहीं, म न तव की उपज धरा मे बदल गया है और मूगफली उत्पादन का केन्द्र कहलाने लगा है। यह कृषि फाम लूनकरनसर कस्बे से उत्तर पूव मलकीसर की तरफ है। यह काफी राज्य कमचारियो की कायशीलता सहित क्षेत्रीय अन्न उत्पादन की वृद्धि कर रहा है।

पचायत क्षेत्र—लूनकरनसर तहसील मे 26 पचायतें हैं। जिनके नाम निम्नलिखित हैं—1 लूनकरनसर, 2 कालू, 3 बुजटी 4 धीरेरा, 5 हंसेरा, 6 खोखराना 7 सोढ़वाली, 8 केला, 9 मोटासर, 10 महादेववाली, 11 कानोलाई, 12 कुभाणा, 13 रोंझा, 14 काकडवाला, 15 जागीर, 16 खारबारा, 17 महाजन 18 रामबाग 19 खानीसर, 20 जैतपुर 21 सूई, 22 शेखसर 23 करणीसर 24 कपुरीसर 25 गारबदेसर, और 26 रावीसर। इनमे से कालू को छोडकर शेप समस्त पचायतो के साथ अन्य गाव भी जुडे हुए हैं।

ग्राम सेवक सेन्टर—इस तहसील में ग्राम सेवक सेन्टर 8 हैं। अब ये ग्राम पचायतो के नीचे माने जायेंगे।

उपनिवेशन तहसील लूनकरनसर मे गिरदावर सर्किल—गिरदावर सर्किल चार हैं और बीस पटवारी हलके हैं। राजस्व तहसील म गिरदावर सर्किल चार और पटवार मडल 33 स्थायी एव 13 अतिरिक्त, कुल 46 हैं।

मुन्सिफ कोर्ट लूनकरनसर—यह न्यायालय वि० स० 1936 (ई० सन् 1980) के आरभ से ही स्थापित हुआ है। इसका कार्यालय पहले लूनकरनसर सरदारशहर रोड पर स्थित श्री डूडानी परिवार कालू के मकान म स्थित था। फिर आर० सी० पी० के मकान म चला गया। तहसील के कतिपय विधि स्नातको को प्रेक्टिस करने का अवसर मिला तथा इस कोर्ट से तहसील की जनता को शीघ्र न्याय मिलना सुलभ हुआ है। अब इसका अपना भवन भी बन गया है।

बॉर रूम (Bar Room)—लूनकरनसर म मुन्सिफ कोर्ट स्थापित हो जाने के बाद वकीलो के बठने के स्थान की आवश्यकता महसूस हुई। तब वकीलों ने इसके लिए द्रव्य सग्रह करना चाहा। क्षेत्र के बडे ग्राम कालू से करीब सात हजार की शुरूआत सन 1983 म हुई। भू० पू० सरपच श्री डूडाणी के परिवार न अच्छी रकम चढाई।

तहसील लूनकरनसर क्षेत्र मे पक्की सडकें—पहली बीकानेर से श्री गगानगर वाया लूनकरनसर, जो जोधपुर मारवाड सबंधित है। दूसरी लूनकरनसर से सरदारशहर राड वाया कालू (राजमाग सबध दिल्ली) है। तृतीय लूनकरनसर से शेखसर होती हुई पल्लू सडक मे मिल जाती है। चतुथ घीरेरा से खियरा, माटोलाई होती हुई श्री विजय-नगर जाती है। अब काळवास बिशनासर और राजपुरिया की ओर भी सडकें बन गई हैं।

महावीर ऑटो ऑयल (पेट्रोल पम्प) लूनकरनसर—यहाँ स चारों ओर बसें, ट्रक, ट्रेक्टर तथा जोंगा, जीप, कार आती जाती हैं। यह तेल प्रदायक स्थान अच्छे मौके पर अवस्थित है। अत महावीर आटो ऑयल द्वारा खूब डीजल, पेट्रोल, मोबाइल आदि बेचा जाता है।

लूनकरनसर मे दो छात्रावास भवन—प्रथम, समाज कल्याण छात्रावास है। यह अपने नाम से ही ज्ञात होता है, समाज कल्याण विभाग द्वारा सचालित है। इसमे करीबन तीस-पतीस छात्र रहते हैं। द्वितीय लोक कल्याण, छात्रावास है। इसम बाहर क पच्चीस तीस छात्र रहकर कस्बे के विद्यालयो मे अध्ययन करत हैं।[1]

सब-पोस्ट ऑफिस लूनकरनसर—इसके अधीनस्थ गावो के अनेक ब्राच पोस्ट-आफिस हैं और यहाँ बाबू जमादार, पोस्टमन मेलपिऑन आदि अनेक पद हैं। इसमे टलीफोन टेलाग्राफ भी आते जात हैं और सेविंग बक के काय होते हैं। इस बक में रुपयो की रक्षाथ जिम्मेवारी गवनमेण्ट पर होती है और जमा करान वाला व्यक्ति जब चाहे अपना रुपया ब्याज सहित वापिस ले सकता है। अत सब पोस्टआफिस लूनकरनसर म तहसील के सारे कस्बो के लोग, ग्रामीण लोग और अन्य जन भी सुगमता से अपन रुपये जमा करवा सकते हैं। सब पोस्टऑफिस लूनकरनसर का अपना भवन नहीं है।

टेलीफोन एक्सचेंज लूनकरनसर—इस विभाग मे सात-आठ आदमी कायकारी हैं जो कि तहसील की जनता को आवश्यक दूरभाष वार्ता सुलभ करवाते हैं।

रेल्वे स्टेशन—तहसील लूनकरनसर क्षेत्र मे स्वय सहित सात रेल्वे स्टेशन हैं। इनम लूनकरनसर से पश्चिम में बीकानेर की ओर घीरेरा और दुलमेरा दो रेल्वे स्टेशन हैं तथा पूव मे (सूरतगढ की तरफ) नाथवाणा, मलकीसर, महाजन व अरजुनसर, चार

---

1 तीसरा छात्रावास राज० माध्य० विद्यालय के पास आम जनता के छात्रा की सुरक्षा हेतु राजकीय द्रव्य से बना है।

रेल्वे स्टेशन हैं। पहले उसम देनर रेल्वे स्टेशन था जो नहीं रहा, अब नाथवाना बन गया है।

क्रय विक्रय सहकारी समिति लि० लूनकरनसर—यह समिति तहसील क क्षेत्रवासियो को सस्ते दामो पर सामान उपलब्ध करवाती है।

कृषि उपज मडी लूनकरनसर—राजस्थान नहर उपनिवेशन विभाग (कृषि उपज) मडी लूनकरनसर क्लास 'सी' है जो रावला, रामसिंहपुर, घडसाना, टी० बी०, बेरियावाली, दतौर आदि मडियो की श्रेणी म दज है।[1]

क्षेत्र के सम्पूण विकास हेतु लूनकरनसर मे नहर निर्माण के साथ किसानो के लिए वरदान स्वरूप मडी विकास हो रहा है। मडी नियमन का वास्तविक उद्देश्य उत्पादक और उपभोक्ता के मध्य की खाई को पाटना है। जब तक यह दूरी बरकरार रहती है तब तक न तो उचित मूल्य पर कोई वस्तु मिल सकती है, न मुनाफाखोरी पर अकुश लग सकता है और न ही उत्पादक और उपभोक्ता दोनो को सतोष होता है।

मण्डी नियमन के अनुसार मण्डी खर्चा अब काफी कम कर दिया जायेगा। पूव म प्रचलित अनधिकृत कटौतिया, राज्य मण्डियो मे कर्दा, छीजत, कबूतर धर्मादा, मुनीमी मुद्दत आदि खर्चे अब समाप्त कर दिये गये हैं। वतमान नियमो के अनुसार मण्डियो म विक्रेता किसानो का कोई खर्चा नही होता। वाजिब आढत, मजदूरी व तुलाई आदि के निर्धारित खर्चे भी क्रेता द्वारा दिय जाते ह। विक्रेता किसान अपन माल की पूरी रकम लेकर घर लौटेगा।

राजस्थान कृषि उपज मडी अधिनियम 38 नवम्बर 1961 म राज्य विधान सभा द्वारा पारित है। इसके अतगत 1963 मे विस्तृत नियमो का निर्माण हुआ, जिनका प्रकाशन फरवरी 1964 म हुआ है। इससे उत्पादक किसान के अधकारमय जीवन मे सूर्योदय हुआ है और मण्डी नियमन योजना, ग्रामीण समृद्धि हेतु क्रातिकारी कदम है।

मण्डी नियमन योजना जहा किसाना को उसकी उपज का उचित मूल्य दिलवाने की व्यवस्था करती ह, वही आधुनिक सुविधाएँ जसे नीलाम वाले चबूतरे गोदामयुक्त दुकान, गोदाम वर्गीकरण, प्रयागशाला, पशु विश्रामगह, विश्रामालय फुटकर दुकानें, जलपानगह बक, डाकघर व शौचालय आदि भी उपलब्ध होंगे। मण्डी शिल्प लूनकरनसर, पयटको के लिए आकषण का केन्द्र बनेगी। गाव स्तर पर भण्डार की सुविधा, किसाना को उवरक व बीज दिलान म सहयोग खलिहान स मण्डी तक उपज पहुँचाने के लिए वाहन सहायता आदि सुविधाएँ भी किसाना के हक मे बडी अच्छी रहगी।

लूनकरनसर तहसील मे पुलिस थाने और चौकिया—पुलिस थाना (S H O) लूनकरनसर वायरलस सहित है जोकि तहसील का मुख्य थाना है। दूसरा वायरलेस मय पुलिस थाना महाजन म है।

पुलिस चौकिया—चौकिया कालू, शखसर और कुम्भाणा म हैं जो कि तहसील के मुख्य पुलिस थाना लूनकरनसर की सुरक्षा व्यवस्था म सहयाग दती है।

चिलिंग सेन्टर (उरमूलडेयरी इकाई) लूनकरनसर—लूनकरनसर म अवशीतन उरमूल डेयरी है। सारी तहसील के गांवो से दूध आकर यहा ठडा होकर (बाहर) जाता हैं।

---

1 राजस्थान नहर उपनिवेश क्षेत्र म अलाटमेंट कानून, परिशिष्ट—3 पृ०—65।

जिप्सम कार्यालय लूनकरनसर—लूनकरनसर म वर्षो से काफी बढिया जिप्सम निकलता हैं। कई लोग इसे अभ्रक कह देते हैं। यह लूनकरनसर और धीरेरा दो जगह अच्छी मात्रा मे निकलता है।

पोटाश रिसच स्थान—भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा लूनकरनसर तहसील के कुछ गावो म पोटाश आदि अलभ्य पदार्थो की खोज की जा रही है। यहाँ बहुमूल्य पोटाश केमिकल खनिज मिलने के समाचार ह। यह खोज सोवियत रूस की मशीनो के सहयोग से होती है। इन मशीनो से इस रेगिस्तानी भू भाग मे हजार मीटर नीचे तक पोटाश खोज लिया जाता है। जमीन मे नीचे निकले हुए पदार्थो को ज्यो ज्यों निकालते है जाच हेतु ऊपर (देश क वज्ञानिक सस्थान म) भेजते रहते हैं। कालू[1] हंसेरा और मलकीसर मे वर्षा से पर्याप्त व्यय पूवक यह काय चल रहा ह।

लोकेस्ट (टिड्डी फाका) कार्यालय लूनकरनसर—जब कभी लूनकरनसर तहसील के गावा म टिड्डी फाका आदि फसल के कीडे उत्पन्न हो जाते हैं, तब इस कायालय द्वारा उनको नष्ट करके फसल बचाने का सम्पूण प्रबन्ध किया जाता है। छोटे वायुयानों से जहर छिडक कर कीडों को नष्ट करते हैं। अन्य साधनो से भी फसल को बचाया जाता है।

क्षेत्रीय वन विभाग कार्यालय—लूनकरनसर में तहसील क्षेत्रीय वनों के सरक्षण हेतु क्षेत्रीय वन विभाग कार्यालय[2] स्थापित है। वनों मे वक्षारोपण वन सपत्ति की देखभाल करना तथा वन के जीव जन्तुओ की सुरक्षा करना इस विभाग के मुख्य काय हैं।

सावजनिक बावडी—राजकीय माध्यमिक विद्यालय लूनकरनसर के पास श्री जेठमल बोथरा की ओर से जल कठिनाई के समय (वि० स० 1995) मे बनाई हुई एक सावजनिक बडी बावडी है जो समय समय पर पीने के पानी के काम आती रही हैं।

औद्योगिक सस्थान—लूनकरनसर मे वैसे तो अनेक औद्योगिक सस्थाएँ हैं पर कालू जाने वाली सडक पर एक फैक्ट्री भवन स्थित है। डूढाणी, श्री गोपालचद वगरह इसके मालिक हैं। यह लघुस्तरीय शिल्प बाहुल्य का समुचित उपयुक्त सस्थान है। अब इसमें लक्ष्मीनारायण टाकीज नाम से सिनेमा हाल हैं। दूसरा यहाँ जयश्री सिनेमा गह भी चलता है।

नाटकीय मच लूनकरनसर—नाटक सभा भजन कीतन तथा किसी विद्वान पडित का कथा वाचन कथा व्याख्यान का भाषण का आयोजन होना है तब यही स्थान उपयुक्त माना जाता है। सुना है यहाँ कवि सम्मेलन के कायक्रम भी रखे जाते हैं। यह बजरग भवन के मैदान म बना हुआ है।

विभिन्न प्रकार की मिलें—तहसील लूनकरनसर क्षेत्र म नहर आ जाने के बाद तेल, दाल और रूई की मीलें भी लग गई हैं। यहाँ समय समय पर आयल व फ्लोर मीलें पूरा काम देती हैं।

लूनकरनसर कस्बे मे पींजरे—बजरग भवन के सामने ही पक्षियों के चुग्गे के रक्षाथ लोहे का एक पीजरा है। गाव मे ऐसे चार पीजरे और हैं।

---

1 कालू म अब लेखक के जेष्ठ आत्मज श्री जुगराज सस्कर्ता के खातेदारी खेत मे पोटाश रिसच काय कर्त्ताओं ने अपने आप स्थान स्थापित किया है।

2 पर गाँव कालू के पास जन साधारण द्वारा वन के हरे वक्ष अभी काटे जा रहे हैं।

तहसील क्षेत्र के ऐतिहासिक देव स्थान—इस तहसील म कालू, महाजन और लूनकरनसर तीन जगह खरतरगच्छीम जन मदिर हैं। कालू म आठवें तीथकर जैन धम के श्री चद्रप्रभु का मदिर है और लूनकरनसर मे सुपाश्वनाथजी का मंदिर बहुत पुराना है। महाजन का जन मदिर (स० 1961) भी दशनीय ह, पर गारबदेशर का जन मदिर ढह चुका है। इन सब की प्राचीनता के पूरे वत्तात जन ग्रथो म जगह-जगह मिलते हैं।

लूनकरनसर मे अनक आरामदायक कमरा सहित हनुमानजी का मदिर वडा भव्य एव मनोहर है।[1] इसका नाम श्री बजरग भवन लूनकरनसर है। इसकी स्थापना वि० स० 2007 वशाख शुक्ला एकादनी सूयवार को हुई थी। कस्बे मे यह पहली आदश सस्था है जो भारतीय सस्कृति (भगवान की भक्ति एव अतिथि सत्कार) की रक्षाथ उत्तरोत्तर अभ्युदय पथ पर अग्रसर है। वर्षों से चले आ रह यात्रियो के सकट को इस सस्था न अवश्य दूर कर दिया है। श्री विरधीचद अग्रवाल जसे अनेक भक्तजन इस बजरग भवन की देखभाल रखते हैं। श्री रामकिशन खत्री और श्री भराराम अध्यापक इसकी सच्ची सेवा भक्ति करके अपना जीवन साथक बनाते हैं। भजन, कीतन म गौड स्व० बद्रीनारायण पडा का नाम यहाँ अविस्मरणीय है। श्री फूसराज बुच्चा ने भी इसमें अच्छा काय किया था। सस्था म राज्य कमचारियो का भारी योगदान रहा है। अब श्री भगवानाराम गौड और श्री जयचदलाल खीची बजरग भवन के नियमित भजनीक भक्त हैं। कस्बे मे यहा दो शिवजी के मदिर, ठाकुरजी का मदिर जम्भेश्वर मदिर, वणापीरजी का मदिर एव वणी गोगामेडी आदि अनेक दवस्थान है। मस्जिद भवन भी यहा का प्राचीन धार्मिक स्थान है। परतु यहाँ अति पुरातन मदिर गाव के मध्य 'श्री लक्ष्मीनारायण जी' का है, जिसके पूजाकारी निरतर, स्थानीय गौड ब्राह्मण (पडे) रहे हैं। तहसील के गावो म खियरा रामदेवजी उदेसियाँ सतीदादी, कालू म कालिकाजी, गारबदेसर मे मुरलीधर जी प्रभृति के प्रसिद्ध प्राचीन देव मदिर हैं। कालू, महाजन, कालवास तथा हँसेरा मे हरिरामजी के अच्छे आधुनिक डिजाइन के मदिर बन हैं। सूई कुम्भाणा, जनपुर, कालू एव लूनकरनसर महाजन म प्राचीन छतरियाँ भी दखन योग्य हैं।

श्री महावीर शुभचितक पुस्तकालय लूनकरनसर—इस पुस्तकालय की स्थापना दि०—1 4 45 ई० म हुई थी। इस साहित्यिक चेतना का आविर्भाव सवप्रथम स्व० श्री गुमानमल बायरा स्व० श्री युधिष्ठर शर्मा ठाकुरसिंह राखेचा मगतूराम अग्रवाल फूसराज बुच्चा आदि सज्जनो म हुआ था। श्री भराराम अध्यापक श्री उदयचद व करणीदान बोथरा जोधराज वद्य, गुमानमल बाफना तथा बनवारीलाल शर्मा वगरह

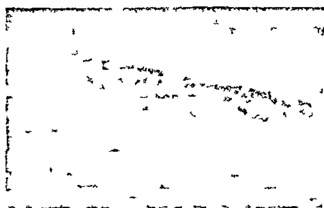
---

1 स्मरण आता है—वि० स० 2006 मे स्थापत्य कलाविद् श्री बालूराम प्रजापत गाव मामासर स आकर लूनकरनसर रहने लग थे। वे यहा के कमठाणो पर करणी का काय किया करते थे। भजनी होने के नाते मम मातुलश्री के मित्र थे। धमशाला मे उनके हौटल पर पानी का एक हौज बनाने का काय किया था। प्रभु भक्तवय श्री बालूराम ने इन पक्तियो के लेखक को साथ लिये जाकर उक्त बजरग भवन के लिए पुनीत धरा का सन् 1949 म चयन किया था तथा फिर श्रीरामजी का ध्यान करके इस भवन की नींव छोटा थान स्थापित करके अपनी आदश भावना का परिचय दिया।

मज्जन इसके प्रमुख सदस्य एव प्राचीन कार्यकर्ता रहे हैं। यह पुस्तकालय बीकानेर राज० शिक्षा विभाग द्वारा प्रमाणित भी हो गया था। तहसील के गाव कालू में ऐसा सार्वजनिक पुस्तकालय पहले से ही विद्यमान है। महाजन और जैतपुर मे भी पुस्तकालय स्थित हैं।

लूनकरनसर तहसील के राजनैतिक नेता—श्रीमालूराम लेघा मुटलाइ, मामराज गोदारा पाँडुसर ढाणी, गोपालचद डूडाणी कालू, रामचन्द्र बिहाणी जैतपुर, राजुराम चौधरी गारबदेशर रेवनराम शर्मा मकडासर, चन्द्रनाथ योगी रामबाग (महाजन) हुकमाराम गौड एव श्यामदीन पडिहार लूनकरनसर हरिराम बिश्नोई हरियासर आदि क्षेत्रीय मुख्य कार्यकर्ता हैं।

तहसील लूनकरनसर क्षेत्र के गाव व जनसंख्या—पहले इस तहसील म 210 गाव आबाद थे, जिनकी कहावतें चालते हैं। अब राजस्व विभाग के कागजो म 141 गाव आबाद रह हैं और 30 गाव गैर आबाद[1] कुल 171 गाव लिखित रूप रेखा सहित शेष हैं। उजड हो जाने पर अन्य 39 गावो के नाम राजकीय रजिस्टरो, खातो एव मप नक्शा से भी हटा दिय हैं।[1] क्षेत्र के आबाद गावो म लगभग 16000 घर मकान हैं और 114130 निवासित जन (पुरुष—59873 एव स्त्री 54257) हैं। जिनम अनुसूचित जाति के 22775 (पुरुष—11871 एव स्त्री 10901) व्यक्ति, अनुसूचित जन-जाति के 176 (पुरुष—99 एव स्त्री 77) व्यक्ति, साक्षर 14986 (पुरुष—12696 एव स्त्री 2290) व्यक्ति, काश्तकार 31773 (पुरुष—27513 एव स्त्री 4260), अन्य कार्यकारी 4902 (पुरुष—4623 एव स्त्री 279), तथा निजी व्यवसायी 494 (पुरुष—454 एव स्त्री 40) हैं।[2]



जिप्सम

भौगोलिक दृष्टि स यह तहसील सदा से अग्रणी रही ह। पहले लूनकरनसर का लूण (नमक), मनुष्य जीवन तथा सजीवन प्रदायक था। अब धीरेरा सहित यहाँ का जिप्सम अनेक उपयोगी औषधिया म मिश्रण प्रचलित है। दुलमेरा का लाल पत्थर तो

1 लेखक न 39 गावों के नाम राजकर नष्ट हुए मस्थानों क परिशिष्ट प्रमाण में दिय हैं सा द्रष्टव्य है। 2 ई० सन 1981 की जनगणना के अनुसार।

दूर-दूर नगरो मे बड़े बड़े भवन बनाता आया है। उत्तम देशर थेड के पास पक्की कंकर है। कई बार सुना कि 'यहां महाभारत कालीन चन्देरी व शिशुपाल का एक गढ था।" क्षेत्र मे कालू का चूना एक विशेष पदार्थ है, अब ईंटें भी प्रसिद्धि पा रही हैं। तहसील गावो के घी, गोद और मतीर तो अवर्णनीय एव अमृतोपम पदार्थ हैं।

लूनकरनसर कस्बे म सरदारशहर के वरनाणियो द्वारा रेलवे लाइन आने के समय से एक बडी धर्मशाला बनाई हुई है। कालू के रास्ते वहाँ के भँवरो की बनाई हुई पुरानी प्याऊ और रल्वे स्टेशन पर सूरतगढ के पेडीवालो की प्याऊ है। इस बीच कस्बे म ओसवाल भवन एक अतिथि सत्कार का स्थान है जो पहले गुराजी का जैन उपाश्रय था। जकात विभाग के पुराने कार्यालय (सायर) की जगह अब कन्या विद्यालय भवन लडकियो का माध्यमिक शिक्षा स्तर स्थान है। जकात के थाने की भूमि छिन्न भिन्न वितरण हो चुकी है। तहसील के गावो म महाजन, सूई, जतपुर, कुंभाणा और कालू के गढ राजाओं के सराहनीय एव दर्शनीय अवशेष हैं। इस तरह ऐतिहासिक ढग से भी लूनकरनसर बहुत पुराना कस्बा है। यह चौहान राजपूत ओसवाल और अग्रवाल महाजनों आदि की बस्ती है तथा यहाँ की एक विशेष जाति खरवाल (नमक निकालने वाले) हैं। बिरमेचा राखेचा बुच्चा और बोथरा यहाँ के पुराने महाजन हैं। अन्य लोगो म पहले श्री कुशलराम रावतराम पडा ह्यालीराम सारस्वत, जेठमल, ठाकरसीदास केशरीचद बोथरा, नेमचद राखेचा प्रभृति मान्य महाजन थे। राजूराम सेवग, दुगाराम डेलू, जेठाराम पडा, भीखेखा पडिहार बीदाराम सुनार भराराम नाई आदि भी कस्बे के मुखिये एव कर्मठ लोकप्रिय व्यक्ति माने जाते थे। यहा के श्री नथूराम पुत्र श्री इन्दाराम कुम्हार पहले जकात मे आफिसर थे। प्रो० चतुर्भुज, डा० मेघराज तथा जोगेन्द्र पँवार आदि अनेक यहां शिक्षित जन हैं। अब अनेक कार्यकर्त्ता तथा कर्मचारी हैं। किन्तु ग्राम पचायत लूनकरनसर का वर्तमान सरपच श्री चम्पालाल चोपडा एक नौजवान कार्यकर्त्ता व्यक्ति है। यहाँ का प्रथम सरपच स्व० श्री गुमानमल बोथरा समाज सेवी, सभ्य व रचनात्मक कार्यकर्त्ता था।

कालू और क्षेत्र के प्राचीन प्रतिष्ठित गाव—सम्माननीय ऐतिहासिक गावो म कालू राजासर, गारबदेशर कुंडियो, बडेरण, सुरनाणो, सहजरासर खियरा, ऊँचाइडो, खारडारा, खारी आदि गाव प्राचीन बीकानेर राज्य से सदैव प्रतिष्ठित रहे हैं। राज्य के प्रथम ठिकानों (महाजन, बीदासर, रावतसर व भूकरका) मे से लूनकरनसर तहसील का गाव महाजन सब मे मुख्य माना जाता रहा है। फिर कुंभाणा सूई, जतपुर और केलाँ आदि गाव भी राज्य के ठिकानों में बडे माने जाते। कालू की तरफ मोनपालसर धीरासर और घडसीसर[1] भी बीकानेर राज्य के मानीते गाव रहे हैं।

---

1 राव घडसी के वश मे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में मेजर दीपसिंह घडसीसर जो चीन युद्ध सन् 1900 म गये थे। उनके पुत्र जनरल शिवदत्त सिंह को सेनहर्स्ट (इग्लैंड) को किंग्स कमीशन मिला था तथा भारतीय सेना मे अडज्युटेंट जनरल के पद से सेवानिवृत हुए। दीपसिंह के दूसरे पुत्र श्री किशनसिंह को काश्मीर क्षेत्र मे भारत-पाक युद्ध 1947 मे वीरतापूर्वक लडने के कारण 'महावीर चक्र' प्राप्त हुआ। वे कर्नल के पद से सेवा निवृत्त हुए।

कस्बा कालू एक श्रेष्ठतम स्थान

कालू गाव की स्थापना के विषय म महा सम्वत बना दना तो मुश्किल जान पडता है—कि तु सदियों तथा युगों से आबाद गान का धारणा सत्य है। इस प्राचीनता के लिए पन्द्रवीं शताब्दी स ता कालू का नामाल्लख स्थान स्थान पर पाया जाता है। अत इसक बहुत पुरानपन की सभावनाएँ प्रकट हैं और कालू ग्राम नाम क पास पास प्राचीन वास भी अनेक ज्ञात हाते हैं। यहा कालिकाजी की स्वयभू देवली (मूर्ति) अवतारणा हुई तब से यह देवी धाम एव कालू नाम महन्न कोसा तक कीर्तिमान हुआ है। यह स्थान शक्ति का पावन पीठ ही नही, उसकी कृपा उपकरणा का वविध्य सुख प्रदायक कस्बा है। यह गाव पानी की बहद कमा वाल क्षेत्र म पानी की बहुतायत वाला अनक ताल तालाबो और खोखले नमा वक्ष सघनता का मनोहारी स्थान रहा है। वतमान कालू वास के कुए बहुत जून (प्राचीन) हैं जिनकी सुन्ढ विनानी सुघड नालें राजा सगर के पुत्रा द्वारा खादी हुई बताई जाती है। बीकानर के थली प्रदेश मे ऐस कूआ के बहुत स प्रसिद्ध गाँव हैं जो पुरान कूओ क निकट स्थित है। भारत के प्रख्यात पुरातत्व वेत्ता डा० वासुदवशरण अगरवाल का मत अक्षरश सभव जान पडता है कि "काबुल से लकर बीकानर डिवीजन क पूर्वी भाग तक प्रागतिहासिक स्थल है।'

कालू अपन दीघकालीन जावन म इसी आस पास की घम रमा पर वासा के लघुरूप नामा द्वारा हरा भरा उठता बसता रहा है। तत्समय ऐसा विश्वास या कि— सौ वष एक जगह रह लेने वाला ग्राम परिवार हर तरह से फूलता फलता नही। इसलिए पुरानन समय मे कालू के अनेक समय गुवाडे (बडे घर) गाव के इधर उधर ढाणी स्वरूप उठते बसते रहे हैं। इसक एक वास का नाम बीदासर भी था। शासन-कना भी अनक रह ह। पर वतमान मुख्य वास इन सदीनें कूओ के सुख लाभ सदव स्थायी बना रहा जिसका कही कही कालू पुरे भी लिखा मिलता है।

बहुत स लोगा का कहना है—कालू क वासा को मखा चौधरी न एक किया बसाया। कुछ लाग एक प्राचीस दत कथा के आधार पर सरसजी का नाम लेत हैं।[1] इनके अतिरिक्त अन्य लोग कालिकाजी की सहस्र युगीय मूर्ति के निकट, अपनी रक्षा हेतु कालू नामाश्रय सुसगठित आ बसन का लौकिक कारण बताते हैं जो ढाई सौ वष पुरान इस गाव के निकटीय उत्तराद थेह क प्रत्यक्ष देखे प्रमाणो म सत्य जान पडता है। जो भी हो पर आज हम इस गोकुल रूप भ य एव दिव्य कस्बे को, पीढियो से कालू कह कर पुकारते पहचानते हैं।

आभूषणो म जसे हार या माला की महत्ता विशेष मानी जाती है वस ही इस तहसील के सब गावा मे कालू कलगी स्वरूप शोभनीय तथा सम्माननीय सर्वोच्च अलकार हैं। इसम नगरा के समान कितने ही सावजनिक नयन मनोहर एव दशनीय स्थान हैं, जिनका स्वाभाविक स्नेह पूरित अवलोकन करना सभी का परमाधिकार है। यहाँ की किवदन्ती है कि कालिका के मदिर की मूर्ति किसी आदमी द्वारा स्थापित की हुई नही जमीन मे वराड (दरार) करके निकली हुई है। अत यह जागत दवी होने की बहुत बडी रयाति है। यहाँ के नागरिक देवी की दयानुकम्पा मे ही अपन को सुख

---

1 पर सरसजी ने तो सारस्वत नगर (सिरसा) को समृद्ध किया था।

साबद सम्पन्न मानते हैं, जो गोस्वामी तुलसीदासजी के नीचे लिखे शब्दों के अनुसार सही है।

जगदम्बा जहँ अवतरी, सो पुर बरनि की जाय।
रिद्धि सिद्धि सपत्ति सुख, नित नूतन अधिकाय॥

समस्त सत्य शक्ति शासन भक्ति भावना का दैविक वातावरण, आदरणीय आभा आपूरित, गहरी शोभा विलास, विमद पवित्र सैव वाणी के वरद सपूतों का कल्पनावत, परन्तु उच्च अतरग भावों से आप्लावित बड़ा अजूबा गाव काल है। यह धरा वसुधरा माता कालिका की स्वयभू मूर्ति उत्पत्ति की खान, मधु-सलिल सुखदात्री श्री सरस महाराज की पद विचरण स्थली, श्याम पाडिया से चमत्कृत पृथ्वी चूहड भामिये की चतुर्दिक चान चादनी, मेख्ने की कथा कीर्ति कारिणी, भानीनाथ की भोग विहीन भूमि गोदारो की गौरवशालिनी गाथित गगा भोपत की भाग्य विधात्री राव बीका की अमर यश ज्योत्सना मेघसिंह की मान्य महतारी, महाराज कुमार विजयसिंह की अनूठी सतत स्मृति स्वरूपा भवर अमरसिंह की परमपूज्य दर्शिनी रसा पर बसा कमचारी वर्ग का मनोहारी विमात्र वास कालू है। इसमे बाबा भानीनाथ की अमर समाधि तथा जैन धर्म के आठवें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभु का मदिर व प्राचीन शिक्षा स्थान उपाश्रय है। रामस्नेहियों का ऊँचा रमणीक एकान्तिक सत्सगति स्थान जगेरी और अन्नाणी, धन्नाणी, सूरजाणी के धन्य भाग्य से यहा के तराकी जीवन का विशद राग-अनुराग पोषित हुआ है। होली के डफ और डाडिया नृत्य, गण गौरा की ऊँट दौड़ प्रतियोगिता, घूमर तथा उत्सवी लोक गीतो की गरिमा व खेलो एव अखाड़े वाला रगीला-जुना उदात्त मानवी जीवन, अभिवादन का बेजोड नमूना कोई भी कालू आकर अवलोकन करे। माताजी की कार भगवान का अनकूट भोग और पृथ्वी परिक्रमा (कार्तिक पूर्णिमा की रात को भक्तजन गाव की फेरी फिरते हैं), ढोल टामकी और बाँसुरी वादन के सास्कृतिक लोकोत्सव तथा सरस्वती पुस्तकालय का हुआ चमत्कारी ज्ञान प्रसार, कालू ग्रामोन्नति के विशिष्ट कारण हैं। दयालदास की जागीर भूमि 'बासा' का क्षीण छत्र, भक्त किशनसिंह का काकड सीमाडी मुख्य कस्बा कालू धर्म प्राण जनता का सुदर साधानाधार है। न भूतो न भविष्यति-ग्राम सेवा सघ की समाज सेवा के कारण यहाँ प्रत्येक दवाई की दुकान का नाम ही "सघ" चल पड़ा है।

कालू बाक पटुओ का पावन स्थली रजक विशाल टाडा रग मच रगीला जन-मानस, विचित्र वर प्रदात्री विमल बसावट, अधेरा उजाला-भारत का प्रकाशमान सितारा राजस्थानी धरती की धरोहर गाँव कालू है। यहा प्राकृतिक दशा में वर्षों तगाव की आँधिया जेठ की लूए और सर्दी की लूरी, पूरी शान से आता जाती हैं। जगमग जगत मीठे जल कूप सरोवर, क्षितिज विस्तृत खेत, समतल भूमि मृग भ्रम सरिता ताला पाना की सुन्दर स्वच्छ तथा वलित कटी गलिया यहीं है बाप के राज्य वाले धर्णी विजय का गजबी गाँव कालू। बल बुद्धि के आवरण मे धारों का धनी, रेगिस्तानी रूप, पर अब रबी का रमझोला बनने लगा है। इसके पास पर्वत नहीं मगर शवन भर मतीरे होते हैं। अनेक जुझारो और सतियों का महाभाग्य मता महता का मेजबान सहस्र श्रद्धालुओ का सुवास, जनता की प्रबुद्ध शुद्ध सुर भावनाओं एव मात पूजा का पावन उपना उत्साह लिए बहु रगधाय लालायित अद्वितीय गरिमा वाला गांव कालू है। इसकी तहसील लूनकरनसर, बीकानेर जिला और जन प्रतिनिधि राजस्थान प्रदेश है। इस कालिका धाम कालू के पास

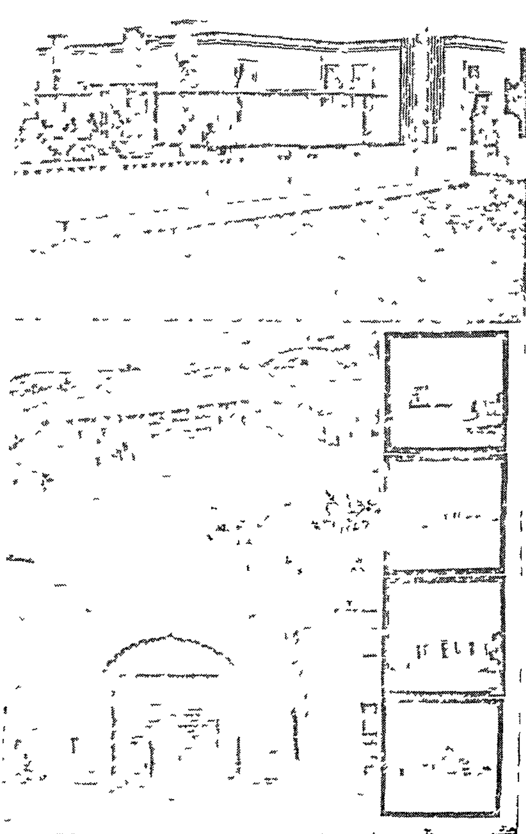
नायूसर म विष्णाई सम्प्रदाय के आदि गुरू जम्भेश्वर नाथ का साथरा वाला जाम्भा धारा परम सुख प्रदायक मुरलीधर जी के श्री मुख दशनाथ गारबदेशर और इसी के पास राजस्थान के प्रख्यात ख्यातकार दयालदास का खेडा कुबिया गाँव है। राठौड राज्य क विशिष्ट स्तम्भ पुरुष वीरमदेव जी के आश्रय स्थान कागासर व कँवलासर इसी के पास हैं।

महाभारत के उल्लेखानुमार मरु, गुजरात्रा मेदपाट, माड आदि प्रदेशो के उत्तर पूर्वी रास्ते इसी के निकटीय जगल से होकर जात थे। जन साधारण के अतिरिक्त अनक शासकीय लोग, व्यापारी और विद्वान व्यक्ति भी श्री कालिका जी के दशनाथ अपनी यात्रा रास्ते चलकर कालू आते रहते थे। वे भगवती की पूजा-अचना करके व्यापारादि के कार्यों म पूण सफल होन का विश्वास रखते। उस समय कालू या पास के गाँवा मे देवी पूजा का भारी प्रचलन था। बनजारे और व्यापारियों ने अपनी निर्विघ्न यात्रा हेतु कालू का रास्ता ही उत्तम समझ लिया था। सिंध प्रदश वाले भी व्यापारिक ढग से यहाँ आ जाया करते थे। लोक कथाओं के अनुसार सन्स जी महाराज ता अपने स्थान से रोजाना दानो टाइम देवी की पूजा करन कालू जाया करते थे। नागवशीय राजाओ के समय म ब्राह्मण की स्हाड कालू के ताल म ही गिरकर टूटी थी। श्याम पाडिय की धोती स्नान क बाद कालू गाव के आकाश पर सूका करती थी, ऐसा कथन है। बीकानेर महाराजा श्री जारावर सिंह जी वि०स० 1798 की चैतबदी एकादशी को बटे के साथ माँ देवली चढकर सना हुई उसके सत का देखन कालू आये थे। महाराजा श्री सूरतसिंह जी एक बार अपनी कठिनाई के समय स० 1850 माह सुदी 2 को कालू आये थे।[1]

उस समय लाग तीथ यात्रा बहुत किया करते थे। गगा स्नान का बडा महत्व माना जाता था। तब तमाम मारवाड जसलमेर के लाग इसी देश के कलेजे कालू रास्ते हाकर निकलत थ। इसी पथ परम्परा मे वि० स० 1889 म बीकानेर के महाराजा श्री रत्नसिंह न हरिद्वार यात्रा के रास्ते म पहले कालू म कालिका जी के पूजनाथ पडाव किया था। दहला और गुजरात का भी रास्ता यही से होकर था। इसी रास्त की उक्त यात्राथ वि० स० 1912 म महाराजा सरदार सिंह न कालू की कालिका माता के धोक चढाई थी। वि०स० 1932 म कालू हाते हुए तीथ यात्रा गय थे महाराजा श्री डूगर सिंह जी[1] वतमान समय मे ता कालू का द्वारिका नाम सुनकर बहुत से मत्री, मुख्य मत्री, महाराजा तथा अन्य महान विद्वान पुरुष इस कालिका क धरा धाम कालू आ चुके हैं।

कालू पर अ तर्राष्ट्रीय हवाई जहाज सेवा (Air Service) रास्ता गतिमान है। पश्चिमी देशो स अरब, पाकिस्तान हाकर आने वाले विदेशो के प्लेन ऊपरी आकाशमान स उडते दिल्ली पहुँचते हैं और वापिस जात हैं। लोगो ने काम पर जाने आने का समय हवाई जहाजा के समय से जोड रखा है। प्रात चार बजे से पहले दिल्ली से आने जाने वाले प्लेनो के उडते तारे दिखाई देते है और इसके बाद दिनभर आवाज पर आवाजें होती रहती हैं। जल सरावरो के चील काँवले से प्लेन आजकल आकाश उडत आते जाते हैं। इस क्षेत्र म कही भी मिलटरी के कप लगते हैं, तब कालू के सूरजाणा सरोवर क ताल म हलीकाप्टरा का बाग (पशु समूह) सा लहरा जाता है। ऊचे झाकते बच्चे टाटा करते हैं।

1 राजस्थान भारती जुलाई दिसम्बर 1974



व्यक्तित्व व लोकायोजन—कालू म कभी प० गणेशाराम जी सरल, गुणवान एव धार्मिक महानुभाव हुए परन्तु फूसारामजी उदार भी बहत थे। श्री गिरधारी लाल उच्च कोटि के सेवा भावी सज्जन, जिनका जीवन सदा बहार पेड था। किन्तु दुर्गादत्त जी उतने ही स्वाभिमानी विद्वान एव सद्धान्तिक पडित हैं। तपस्वी पडित लाधूराम जी तावनिया सरल व भावुक व्यक्ति हैं। गोपाल चन्द पुराना ग्राम काय कर्ता अधिक एव नता गिरी म कही कम हैं। पर इन्द्रचंद टच सरपच, कुशल कारोबारी है। श्री जवरीमल जीवन से जावन जोडत वाली प्रकृति का सभ्य सुधारक है तथा सस्कर्ता की सवेदनशीलता लोक अस्तित्व सम्वर्धित प्रचलित है।

सुना है कालू मे अब द्यूत व मडी मडी के निम्न स्तरीय खेल भी चलना चाहते हैं। कुछ ईर्ष्यालु, कुटिलनीति विध्वशक व्यक्तित्व उभरते नजर चढते हैं। लोलुप स्वार्थी पाखण्डी और पापी लघुरूप भी मिल जाते हैं। राजनीतिक दलीय नकारात्मक निगुणी आचार विचार विहीन और वितडावादी लोगो की भरमार हान लगी है। मगर सत व सयमी पुरुषा के जीवन यहाँ सदव शोध याग्य प्रतिष्ठित हुए है। मतलब कालू मे प्रमुख रूप स गाँव समाज के सर्वांगीण विकास हतु आर्थिक सग्रह (चदा) एव बहुत से सास्कृतिक कायक्रमो के आयोजन सदव अपनाय जाते हैं जिनसे नव्यायाम, शुद्धाचार तथा क्षेत्रीय दष्टिकोण रहन सहनाधार से उत्तम जीवन बना लेने के लिए वह बधानिक उपलब्धियाँ हुई हैं। सामान्य जनता, सरकार द्वारा उठाय गये कदमो से पूण परिचित होकर लाभान्वित होती जा रही है और कल्याण कारी समाज के निर्माण एव योजना बद्ध विकास मे सबधित जन राजी-खुशी अपना योगदान करने का तैयार रहते हैं।

कालूपुरा परम तीथ, कालूपुरा परम तप ।
कालूपुरा परमो धम, कालूपुरा परमा गति ॥

महाजन—महाजन सदा से महा जन वाला गाव है। पहले यह जोइया के प्रसिद्ध क्षेत्र सहवाण मे था तथा इतिहास मे इस गाँव का प्राचीन नाम शाहोर पाया जाता है।[1] राठौडों के राज्य मे इसके ठाकुर रत्नसिह अजुनसिह भीमसिह वरिसालसिह आदि भी वडे प्रसिद्धि प्राप्त थे। श्री शिवनाथसिह के पुत्र ठाकुर हरिसिह। (ज म वि०स० 1934) बहुश्रुत, बुद्धिमान इतिहास प्रेमा और मिलनसार नृप था। व अपन पास श्री केशरी प्रसाद नाम के एक प्रकाचक्षु विद्वान शास्त्री रखते थे।

श्री हरिसिंह का गढ बडा सुन्दर एव सुविधाजनक था। प्रथम द्वय द्वार तथा उन पर दो कक्षा मे ठिकाने के कमचारियों की कतार यथा समय काय लेखन सलग्न रहा करती थी। तत्समय गढ म रलवे के कूए की शत मुजब पानी की टकियाँ बनी हुई थी और गाँव म लघु पाइप लाइन का प्रबन्ध प्रसारित था। किले के एक कोन मे थोडी जगह पर पुष्प एव दूब की छटा भी दिखाई दिया करती थी। वहाँ एक कमरे म श्रीराम सरोवर नाम से पुस्तकालय सचालित था। दा तल्ले के एक बडे हॉल मे साधारण सग्राहलय के ढग से अनेक दुलभ तथा बेशकीमती अजूबी कला कृतियो के दशनीय नमून व्यवस्थित सुसज्जित थे। उनम एक विचित्र आइनो से मजा मजाकिया कक्ष था। उसे कोई देखता तो हँसता-हँसता लाट पोट हो जाता था। आइन के सामन दशक अपन

1 बीकानेर राज्य का इतिहास भाग द्वितीय, पृ० 641

चेहरे मे अजीबोगरीब प्रतिबिम्ब से आश्चर्याचकित होकर हँसता ही रहता। लोगो की आइनें म विभिन्न शक्लें बन जाया करती थी। महल की छत मे विलायती झाड फानूस थे और दीवारा पर सुनहरी पच्चीकारी तथा खिडकियो पर रेशमी झलरियो के पर्दे लटकते रहते थे। हॉल जगमग ज्योति व बडे बडे शीशा तथा चित्ताकर्षक तैलचित्रा मे सुशोभित रहा करता था। छत से थोडे नीचे, दीवारा पर बाघ, साँभर और अन्य शस्त्रो के वास्तविक स्वरूप भी दिखाई दिया करते थे। गढ की छोटी से लेकर बडी वस्तु पर भी हरिसिंह का नाम लिखा-खुदा रहता और वे सारी विभिन्न वस्तुएँ रजिस्टरा म भी दर्ज की हुई, हुआ करती थी। उत्तरी मैदान मे एक चबूतरे पर वर्षा नापने का यन्त्र भी लगा रहता था। महाजन जाने वाले सभ्य एव सभ्रान्त अतिथियो को गढ के भीतर प्रवेश करवाया जाता था, जो देखने की भारी उत्सुकता लिए काफी सख्या म पहुँचते रहते। बीकानेर और सूरतगढ म भी महाजन नरेश की मनोहारी कोठियाँ बनी हुई थी।

राजा हरिसिंह मेयो कालिज के पुराने छात्र थे। श्री गगासिंह जी ने उन्हे राजकीय कौंसिल म पब्लिक वर्कस कमेटी का सदस्य और विभाग का मन्त्री भी बनाया था। सन 1911 मे अंग्रेज सरकार ने उन्हे रावबहादुर की तथा फिर सी० आई० ई० के खिताब से सम्मानित किया था। सन 1912 म बीकानेर महाराजा की रजत जयन्ती पर हरिसिंह को सदा के वास्ते राजा की उपाधि मिल गई थी। वि० स० 1990 (सन 1933) में राजा हरिसिंह का निसतान देहान्त हो जाने पर उनका चाचा दुदेर का ठाकुर भोपाल सिंह महाजन का राजा बना, जो हठी, नमाजी और कठोर शासक था। वह गगारिसाले का कमाडिंग आफिसर तथा कर्नल की उपाधि युक्त था। उसके देहावसान बाद काकड वाला के ठाकुर का पुत्र रघुबीर सिंह जो लूनकरनसर पुलिस थाने का एक कर्मचारी था, महाजन का राजा बना। सन 1948 स 1950 तक लेखक (उस समय लूनकरनसर राजकीय स्कूल म अध्यापक) स उसने कई बार अपने वैध उत्तराधिकार के आधार पर महाजन ठिकाने की प्राप्ति के लिए अर्जियां लिखवाकर दिल्ली भिजवाई थी। सन 1951 52 म रघुवीर सिंह महाजन का राजा बन गया था।

महाजन के अभिलेख

श्री चन्द्रप्रभुजी रा जन मन्दिर

दादाजी के चरणों पर

सवत 1708 वर्षे वैशाख सुदि 7 दिन गुरुवारे
श्री जिनकुशल सूरीश्वर पादुके प्रतिष्ठित
उपाध्याय श्री ललितकीर्ति गणिभि
कारित श्री महाजन श्री सघेन



पहले महाजन के कुछ लाग राग रागनिया के जानकार, गवय एव कवि कमकारी भी थे। पास के गाँव घेसूरा म स्याली राम नाम क एक कवि थे। उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित था। महाजन राजा हरिसिंह कवि का आदर करता था।

राजा हरिसिंह ने अपनी रानी के गणगौर पूजनोत्सव पर महाजन का सारी विवाहित बहिन बटियो को लाड प्यार सहित ससुराल से पीहर बुलाकर अपन गढ मे भोज्य आदि से सम्मानित किया, किन्तु राजपूता म प्रचलित टीका मद्यपान और बहु विवाह आदि कुप्रथाओ का वह घोर विरोधी था।

महाजन अब भी शिक्षा, स्वास्थ्य एव सामाजिक समृद्धि म सम्प न कस्बा है। इसम सावजनिक स्थान पुरानी धमशाला ह जो श्री हरिसिंह क समय म बीकानेर क एक सेठ श्री लाभूराम ने बनवाई थी। महाजन म माहेश्वरी महाजन कारोबारी महाजन हैं और अय जातिया भी वासि दगान हैं। यहाँ का सरपच श्री करनीदान सामाता (जम सन 1951 माच) एक व्यवहारी युवक है। यज्य ममाज म यहाँ क परसुवशी स्वामी बडे मिलनसार हैं। यह लूनकरनसर तहमाल क गाँवा म नाम से ही बडा ग्राम गिना जाता है।

गढ के श्मशाना मे



स्त्री की दवली खडी, दाहिन हाथ माला बायें म पखी। ऊपर चद्र सूरज
[1]॥ श्रीगनस ॥ सम्वत् 1944 शाके 1809 व मिति चत्र सु०²द 9 ठाकुरा राज श्री 107 श्री अमरसिंहजी रा भार्या श्री³ मट्याणीजा उदे सिगाग पिवर इलाक जेसलमेर ⁴ग्राम जिजणवालीरा अस्मिन् दिन वकुण्ठ धाम प्राप्त ⁵ तस्य विधान म० 1960 मिती ज्येष्ठ शुक्ला 5 रवि दिने दिवत⁶ स्परय इय देहली प्रतिमा छत्रिका शास्त्रोक्त विधिना ⁷प्रतिष्ठा स्थापिता सा चिर तिष्ठत् ॥ शुभ भवर ॥



श्मशानों में

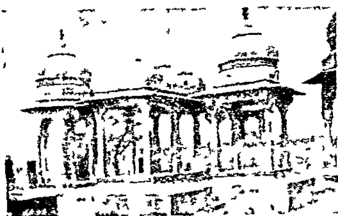
देवली अश्वारोही, ढाल तलवार बर्छी, दाहिने हाथ में माला, उपर चन्द्रमा सूर्य
॥ श्रीमन्महा मङ्गल मूर्त्तिये नम ॥ हरि ॐ ॥

[1]॥ स्वस्ति श्रीगणेश कुल देव्या प्रसादात ॥ अयास्मिन्शुभे[2] सम्वत्सरे श्री मन्नृपति विक्रमादित्य राज्यात्सम्वत् 1901 शाके 1766 तत्र पौषधवळ पक्षे तिथौ 1 तद्दिने राठोड वंशीय वि[4]का रत्नसिंगोत ठाकुरां राज श्री 108 श्री अमरसिंहजी तदात्म[5]ज ठाकुरा श्री 108 श्री रामसिंहजी ज मामूत सव सम्वत 19[6]58 शाके 1823 कार्तिक शुक्ला 6 रवि दिने श्रीलक्ष्मी नारायणजी प्रसादात वकुंठ धाम गता तस्य विधान सम्वत 1960 शाके 1825 ज्येष्ठ शुक्ला 5 रवौ घ० 2 प 30 पुष्य भे घ० 24।17 ध्रुव युजिश्व 52।9 एव पचाग शुद्धे हि वष तनु विद्यमान ठाकुरा श्री 108 [10]श्री रामसिंहजी वमरण दि य रूपस्य इय देहनी प्रतिमा देवकुला [11]मनाया छत्रिका शास्त्रोक्त विधिना प्रतिष्ठापिता सा चिरतिष्टतु ॥[12] शुभ भवतु ॥ श्रीमदग्रामशिरोमणी मरुस्थले श्री महाजनस्य[13]प्रभु । धर्मे धम सुभोपमा स्व यशसा माक्षात्मनो सस्तुत दान सूमसु[14] तोपमस्य क्षतिमासत्यत्व याधाधिप यत्कीर्त्ति नरेन्दु जीव विधित्न [15]र्यातार्हि लोकत्रय ॥ 1 ॥

राजासर उर्फ करणीसर—इस तहसील का गाँव करणीसर लूनकरनसर से पूर्व में है। वि० स० 1985 से पूर्व यह गाँव राजासर नाम से आबाद था, जो अब थेह रूप बना हुआ हैं। तत्समय इसमें माहेश्वरी अग्रवाल सुनार और पोकरणादि (बोहरा दिरासरा) विशेष वासि दगान थे। गत दो दशकों से इन सारे उजडे गाँवों के थेहों को लोगों ने जोतने शुरू कर दिये। अत इन पुराने गाँवों के नामो निशान मिट रहे हैं।

राजासर में भगवान का पूरा पक्का मंदिर था। नीम के वृक्ष एवं पक्के कुंड थे और मीठे पानी का कूआ था। रावले के पास की तिबारी (बैठक) में सती माता की रंगीन थाप लगाई हुई थी जो ज्वाला में बैठने से पहले सती माता ने अपने हाथ की

रोली (कुंकुम) लगाकर अंदर की दीवार पर चिपका दी थी। ठाकुर गुमानसिंह ने न मालूम क्यों? इसे उठाकर लगभग दो किलोमीटर दूर पूर्व में ले जाकर एक तालाब के किनारे करणीसर नाम से वि० सं० 1987 में स्थापित किया है।



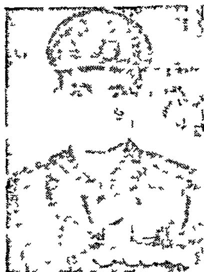
महाजन में राजाओं के श्मशानों की छतरियां

पहले महाराजा अनूप सिंह के छोटे पुत्र आनन्द सिंह के बेटे अमर सिंह के वंशधर राजासर के राजवी थे। बोगेरा के राजवी गुमानसिंह के पुत्र गुलाब सिंह को गंगा सिंह जी ने शिक्षा हेतु अजमेर मेयो कॉलेज (वि० सं० 1951 में) भिजवाया था। डिप्लोमा परीक्षा पास हुए, तब महाराजा ने अपना प्राइवेट सेक्रेटरी रखा और वि० सं० 1969 की रजत जयन्ती पर ताजीम, पैर में स्वर्ण कड़े का सम्मान किले में चौगान तक सवारी पर जाने की प्रतिष्ठा तथा राजासर की जागीर दी थी। फिर अंग रक्षकों का कमांडिंग अफसर, इन्स्पेक्टर जनरल आफ पुलिस, सिरोपाव और रावबहादुर की उपाधि, कंट्रोलर ऑफ दी हाउस होल्ड आदि अनेक पद उपाधियां प्रदान किये। वर्तमान समय में स्वतन्त्र करणीसर अच्छा अन्न उत्पादक दड़ीबंद गाँव है। यह दूध, दही या घी और मीठे पानी का स्थान है।

गारबदेसर—गारबदेसर बालू का कॉकड़ सीमाडी प्राचीन ग्राम है। यह राजपूत सरदारों, घनावशी बरागियों और महाजनों (ओसवाल माहेश्वरियों) का गाँव रहा है। इसमें "नाथों और बरागी महंतों" की बड़ी स्थानिक गद्दियाँ हैं। नाथ गद्दी के महंत श्री गणेशनाथ और उनके शिष्य श्री बख्तावरनाथ बड़े नामी नाथ हुए हैं। नाथ स्थान के सामने पहले जैन मन्दिर[1] था और महंत के स्थान अब भी बड़ा ठाकुर द्वारा है। महंत जी के दो कूए और उनके गुरु हरिरामजी पर एक साल भी बनी हुई है। गारबदेसर में इन नाथों और महंतों की काफी पुरानी जमीनें जायदाद हैं। श्री मुरलीधर का मन्दिर, गढ़ रावले के समक्ष है। वि० सं० 1921 के पास यहाँ महाजन परिवार में एक महिला, पति संग सती हुई थी उसके बावन वर्षों तक बीकानेर राज्य से मुकदमा चला। बहुत श्मशान बन्धु ता० पेनी जाने रहते थे।

1 अठारहवीं शताब्दी में यहां लक्ष्मीवल्लभ नाम के एक बड़े जैन विद्वान साधू रहे थे। आजकल प्रतिवर्ष यहां एक प्राचीन पीर की पूजा होती है।

पहले गारबदशर घडसीयान बाका का गाँव कहलाता था। राव बीका के एक पुत्र घडसी था। वि० स० 1562 म उस घडसीसर की जागीर मिली। घडसीसिंह के देवी सिंह और डूगर सिंह दो पुत्र हुए। देवी सिंह के वशधर गारबदेशर के और डूगरसिंह के वशधर घडसीसर क ठाकुर बन। य सब घडसीयान बीक कहलात है। गारबदेसर चौरासी गाँव का पट्टा कहलाता था। राव घडसी के वशक्रम म देवीसिंह राजसिंह किशनसिंह सबलसिंह जगरूपसिंह, इ द्रसिंह, छत्रसिंह, रघुनाथसिंह, खुमाणसिंह सूरजमाल सिंह तारा सिंह गिरधारी सिंह और तरहवाँ वशधर एव आखिरी ठाकुर फतेसिंह था। इसके पिता श्री अमर सिंह तहसीलदार थे। स्व० ठाकुर किशनसिंह गारबदेसर के भवितमान सुजान रत्न मान जात हैं। राव घडसी के राजवियो स सर्वाधिक महा एक और प्रसिद्ध घराना है। ऐसे घरान को पहल छुट भय नाम सबोधित किया करते थ। साम्राज्य सुरक्षा बाबत सतत सहायता पहुँचान क दृष्टिकोण से गारबदेशर मे यह परपरित बहादुर एव मिलटरीमन घराना है। इस घरान के प्रथम सनिक पुरुष श्री जुझारसिंह ई० सन 1900 म चीन के युद्ध म लडे थे। जुझारसिंह क पुत्र सूबेदार श्री शार्दूलसिंह ने सोमालीलड (अ) ई० सन 1902 से 1904 और फिर (ब) प्रथम विश्व महायुद्ध सन् 1914 18 म अग्रेज सरकार स जमादार पद स साहसिक काय हेतु 'इण्डियन डिस्टिग्विश्ड सर्विस पदक' (भारतीय विशेष सेवा मेडल) प्राप्त किया था। फिर उनक ज्येष्ठ पुत्र श्री उदयसिंह मेजर पद पर सन (1939 45) द्वितीय विश्व युद्ध में मिश्र अदन क्षेत्र के मोरचे पर साहस रत डटे रहे। अब उदयसिंह के दो पुत्र जगमाल सिंह और लक्ष्मण सिंह लेफ्टीनेंट कनल हैं। भारतीय स्थल सेना के लेफ्टीनेंट कनल श्री जगमाल सिंह राठौड भारत चीन युद्ध 1962 म भारत पाक युद्ध 1965 म तथा भारत पाक युद्ध 1971 म बीकानर क्षेत्रीय सना सहित तीन बार लडाई म गये हुए हैं। उ होने ई० सन् 1971 मे पाकिस्तान के विरुद्ध रणिहाल' मार्चे पर मजर पद स दक्षता पूवक वीरता दिखाई थी। इसलिए महामहिम राष्ट्रपति श्री वी०वा० गिरी न वीर चक्र' पदक प्रदान किया है। वतमान म श्री जगमाल सिंह 6 दिसम्बर 1977 स कमांडिग आफिसर 13 ग्रेनेडियर (गगा जसलमेर) में सवा रत हैं। श्री लक्ष्मण सिंह भी लफ्टीनेंट कनल के पद पर ग्रनेड चरम ए० पा० आ० म वही है। इसन भारत पाक युद्ध 1965 लाहौर क्षत्र म और भारतपाक युद्ध 1971 बाडमेर क्षेत्र के मोर्चे पर भाग लिया था। उनका ततीय भाई श्री रिसाल सिंह एम०बी०बी०एस० डाक्टर हैं तथा चौथा श्री जुगल सिंह सभ्य नागरिक है।



ले० कनल श्री लक्ष्मणसिंह

गारबदेशर का यह घराना शिष्ट, समझदार एव बडा व्यवहारिक है। ऐसी अनेक विभूतियो का निवास होने के कारण ही गारबदेशर अधिक प्रसिद्ध है। वतमान समय म अपन क्षेत्र का विकास, सुधार और कष्ट निवारण सहयोग करने वाला गारब देशर का सुदृढ हृदयधर डेढ दशक पुराना सरपच श्री राजूराम चौधरी हैं। पहला सरपच सेवा निवत मेजर श्री उदयसिंह राठौड थे।

गारबदेशर के भक्त किशनसिंह की लोक वार्ताएँ

सौन सँ सतालवे माह सुद नमी प्रमान।
नारायण के भगत निज, जनमे किसन सुजान ।।

गारबदेसर के ठाकुर श्री किशनसिंह जी की इस क्षेत्र म अनेक आध्यात्मिक चमत्कारिक तथा विचित्र भक्तिमयी कथाएँ जनता के हृदय पर आज भी वंजयंति स्वरुप लहरा रही हैं। उनमे से चार उज्ज्वल मुक्ता निकालकर अवलोकनार्थ नीचे लिखे हैं—

कहते हैं—ठाकुर श्री मुरलीधर भगवान के बडे भक्त थे। व प्रात काल नित्य उनका भोग लगाया करते थे। एक बार बीकानेर महाराजा के साथ रात भर से यात्रा मे चल रहे थे। रास्ते म ब्राह्म मुहूत हो गया। तब किशनसिंह जी ने घोडे पर चलते ही मुरलीधर जी का मानसिक भोग (प्रसाद) लगा दिया। ध्यान मग्न देखकर महाराजा साहब ने पूछा—"किशनसिंह जी नींद लेते हो ?" बोले—"नहीं अन्नदाता" देखा तो घोडे पर पचामृत (दूध दही, मधु मिश्री घतादि से बना पदाथ) बिखर गया।[1] महाराजा साहब ने भगवान की पूजाथ वहीं पडाव लगा दिया।

एक बार महाराजा बीकानेर के समक्ष आलोचना हुई कि ठाकुर किशनसिंह अपन पास साधारण (लकडी का) तलवार रखते हैं। महाराजा न ठाकुर साहब को तलब किया और तलवार को देखा। तब सब ठाकुर उमरावो की तलवारो से उनकी तलवार श्रेष्ठ एव सुन्दर पाई गई।

एक बार गाव गारबदेशर के ठाकुर किशनसिंह अपनी रकम (चौथ या खिराज) निश्चित समय (अक्षय ततीया) पर राज्य के खजाने म जमा नही करवा सके। काफी समय बाद भय तथा लज्जा वश रकम लेकर बीकानेर राज्य के खजाने पर उपस्थित हुए, तब राज्य के खजांची ने जमा हुई रकम की पडत रसीद दिखाकर कहा— आप तो यथा समय रकम भर चुके हैं।'

गारबदेशर का ठाकुर श्री किशनसिंह प्रात सांय नित्य प्रति एक प्रहर भगवान श्री मुरलीधर जी की माला फेरा (सध्या वन्दन) करत थे। उस समय वे अन्य कोइ भी काय नहीं करते और बिलकुल मौन तथा ध्यान मग्न रहते थे। एक बार रात्रि के प्रथम प्रहर में जब वे माला फेरने बठे तो उनके घर मे घुस कर दो चोर, टोडिया (जवान ऊँट) खोलकर ले गय। चोर जानते थ कि श्री ठाकुर न तो अब बोलेंगे और न ही प्रहर मे पहले उठेंगे। तब तक अपन बहुत दूर चले जायेंगे। क्योंकि टोडिया बहत तेज चाल म चलने वाला है। वसा ही हुआ। ठाकुर न तो माला से उठे और न ही टोडिये की चोरी की बात किसी को बताई।

उधर चोरों न टोडिये का दौडाया और एक प्रहर म काफी यात्रा कर डाली। आगे रास्ते मे एक गाव आया। चोरों ने पूछा—'कौन सा गाव है ? किसी न बताया गारबदेशर।" चोरो ने टोडिये को फिर गाव स बाहर निकाल कर बडी तज चाल स दौडाया। आधी रात के बाद रास्ते म फिर एक गाँव आया। चोरो ने पूछा 'गाँव कौन सा' किसी न कहा— गारबदेशर मारे गये! चोरो न फिर चढकर दूसरे मार्ग पर टोडिया दौडाया। आगे फिर वही गाँव गारबदेशर आया। प्रात ठाकुर माला फेरने बठे, चोर उनके घर में टोडिया खूटे बाधकर चुपके से चलते बने।

तुरी चमक भाग्यो तब डकर भरी मृग डाँण।
चूक ध्यान उघरे मचाब कूद पड्यो केराँण ।। (किशन प्रकाश)

भक्त जन भगवान के भरोसे, उनके घर अन्न का तो अभाव ही रहता है। वर्षा हो गई, खेत कैसे बीजाएँ जाय ? ठाकुर प्रातः माला फेरकर उठे तब घर पर बाजरी की छाटी आई दिखाई दी। साथ के व्यक्ति ने ठाकुर साहब से पूछा—"छाटी कठै खिणावा ?" (बोरा कहाँ गिरायें ?) ठाकुर साहब ने अपने कोठे की ओर संकेत कर दिया। वह व्यक्ति बाजरी का बोरा कोठे मे डालकर चला गया। उस सुकाल की फसल से बाजरी निकाल कर ठाकुर ने एक के बदले दो छाटिया भरवाकर अज्ञात दिशा को भिजवा दी।

कहते हैं—श्री किशनसिंह के समय मे मुरलीधर के श्री मुख से नित्य प्रति स्वर्ण उगला जाता था, जिसे ठाकुर दान कर दिया करते थे।

दूर कियो पड्दो तभी, भूप किसन कुल भाण।
मूरत उगळयो सुवरण मुख पासा सवा सुमान ॥

कुबिया—गाव कुबिया कालू से चार कोस पूर्व में है। यह गारबदेशर से कुछ पास ही रहता है। इस गाव का नाम ठिकाना मे नही आता। किन्तु यह गाव इतिहास प्रेमी, महान विद्वान साहित्यकार तथा सुकवि श्री दयालदास सिंढायच की जन्म भूमि है। इसलिए इस गाव को विशेष माना है। एक बार विपत्तिवशात् गारबदेसर के भक्त कवि किसनसिंह को गाव कुबिया आकर रहना पडा था।[1] क्योकि उसके बडे भाई बाघसिंह (पुत्र राजसिंह) ने इसको निकाल दिया था।[2] फिर बाघसिंह स्वय भी विपत्ति विधान मे आ गया और कुबिया से ठाकुर किसनसिंह को मना कर वापिस बुलवा लिया। उस समय यह गाव कूबनगर कहलाता था।[3] इसके पास खापरसर नाम का एक ग्राम बसता है वह कुबिया और चाँदसर के मध्य मे है।[4]

श्री दयालदास का जन्म लगभग वि० स० 1855 और देहावसान वि० स० 1948 का माना जाता है। दयालदास को कुबिया, माकलेरा एव वासी आदि अनेक गाव मिले हुए थे। इनके प्रपौत्र ठाकुर आवडदान और पुत्रो ने कुबिया गाव की मान-मर्यादा एक बार रोक दी थी। आखिर उसके वशधरो के इधर उधर भटक जाने पर ही कुबिया गाव अब उसी जगह पुन बसा है। श्री दयालदास सबधी एक गीत "पवार-वश-दर्पण" (सपादक—डा० दशरथ शर्मा एम० ए० डी० लिट०) से उद्धत है। यथा—
गीत—दयालदास सिंढायच रो (मातीसर मिनजी रो कहियो)

1	बसे आय कुबिया बिच, दिन त्रिय किसनदयाल। घर कूब भीयोत के कमधजराय कृपाल ॥	किसन प्रकाश ले०—गोविन्ददान
2	राय किसन बाहर रहै भ्रात असरच भूप। दिल्ली राय सग बाघ रहै, राज सभा का रूप ॥	
3	सोजन किरसण कू सज्यो, ओठी कियो उछाह। कूबनगर मिलिया किसन, कही हकीकत साह ॥	

4 बक शशि के विच वसै, असल चोर धैनाण।
सायर करसी सोमना, अय न हुवै अजाण ॥ (खापरोचोर)
—कवि श्री गोविन्ददान।

गीत साणोर

लगी चूल जरतार हाथ्या कुनण झालरी ताम सिणगार तापर ताजा।
तवा वणि भार दातार दयाला तन, रीझ भुज पूज सिरदार राजा ॥ 1 ॥
ग्रथ पढवेम कुवम कलम रख गुण, भाग वधवेस अब ब्रह्म भालै।
थली घर देस राजेस मुरतव थयो, जप गजनेस रतनस वालै ॥ 2 ॥
हाथ बज नकीवा बधारे हवेली, भुवण जस उवारै गुमर भीजा।
इण तर तने सुरतेसहर उधार थान वून वधार दान बीजा ॥ 3 ॥
चाढ ता हस्त श्री हाथ ढोले चवर, दान माली वडा आथ दीधो।
सिढायच काथ थारा वध सिरोमणि कुरब निज नाथ बीकाण कीधो ॥ 4 ॥
जबर सामाज साजा सवै जलवा, वाज कातल भडा लेर वहिया।
विद्यासिध राज खेतल तणा वेखता ममधजाधीस कविराज कहियो ॥ 5 ॥

खारडा—यद्यपि खारडा बीकानेर तहसील के पूर्वी किनार का पुराना गाव है, तथापि कालू का काकडसीमाडी पचकोसी पडोसी गाव होने के कारण उसका उल्लेख कर देना आवश्यक समझा है। जसे इसके नाम से ही विदित होता है कि गाव का पानी मीठा नही है, पर पृथ्वी माता का मजीठा गुण गौरव है। इसके समीप राजपुरा नाम का ग्राम पहले ओसवाल महाजनो का वास था। वि० स० 1944 मे राजपुरे से सात भाई नाहटा परिवार के वहां स उठकर कालू आ वसे हैं। नाहटो के साथ उनका पारिवारिक कामकारी नाई भी चला आया। एक रावतमल मालू नाम का बनिया भी उस समय राजपुरे स आकर कालू रहने लगा था। सरदारशहर के प्रसिद्ध सेठ भणाली उसी समय राजपुरा गाव छोडकर वहा गये थे।

खारडे मे सारस्वत ब्राह्मण गोदारे जाट राजपूत और रावावत स्वामी आदि जातियो के समाज हैं। यहा की भूमि अच्छी है। खेत उपजाऊ हैं और आदमी आदर्श होते आये है। खारडे के कवि प० हिम्मतराम सारस्वत जम्मू काश्मीर तक बुलाये जाते थे। उनको कई देशी रजवाडो से भी स्थाई अलाऊस (बधा पटिया वगरह) मिलता था। छदों की कविता, बुलद गूज और कवि रूप म गोबीले रईम थे। सारस्वत समाज म खारडे के पच सदा स मान्य होते आये हैं। इस समाज म श्री रामूराम तवडे व्यापारी हैं।

खारडे के प्राचीन ठिकाने के राजवी सरदार श्री मदनसिंह के पुत्र खेतसिंह को हाथ खर्च के लिए वि० स० 1905 म महाराजा रतनसिंह ने हाडला, वि० स० 1912 म महाराजा सरदारसिंह ने खारडा और महाराजा डूगरसिंह ने उसको बीरार गाव बख्शा था। गगासिहजी ने खेतसिंह के पुत्र भरूसिंह को जयसिंह देसर दिया और फिर तेजरासर गाव भी दिया था। श्री भरूसिंह को ऊँचे ऊँचे पद तथा सम्मान मिले। ये ड्योढी वाले राजवी सरदार थे जिनको महाराज व बहादुर की प्रतिष्ठा प्राप्त थी।

गाव खारडा मे शिक्षा सुविधा हेतु अब राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय है। और पचायत, पटवारी की साथ सुविधा भी सुव्यवस्थित प्रसारित होती है। वर्तमान तहसील लूनकरनसर मे भरूसिंह के पुत्र अजीतसिंह (हीरोसा) काफी काफी समय तहसीलदार रहे।

सहजरासर—सहजरासर गाव के दो वास हैं। यह कालू स नौ मील पश्चिम म है, जिनमे खारे मीठे पानी के अलग अलग कूए हैं। दोनों वासो की आपसी दूरी एक

किलोमीटर है। यहाँ प्राचीन स्तम्भ और मंदिर है। मरु देश जा श्री केशराजी कवर का अच्छा स्थान है।

महजरासर के भू० पू० ठाकुर वश मेहता जासवाल थे। उनके पूर्वजा का मूल निवास भीनमाल बताया जाता है। मंडोर पर राव चूंडा का अधिकार हुआ तब वदो ने अधीनता मानी। वि० स० 1522 म जोधाजी की इच्छा से वद महता जीराजी के साथ आये। बीकानेर राज्य स्थापित हुआ, वैद ओहदा पदा पर चढे। इनकी बीकानेरा पाँचवी पीढी मे ठाकुरसी, महाराजा रायसिंह का आमात्य था। उसके लडके मूलचन्द ने श्री सूरतसिंह जी से नोरगदेसर गाव पाया था। उसका छोटा भाई अबीरचन्द बीकानेर से दिल्ली म राजकीय वकील था। बीकानेर से मूलचन्द के बेटे हरिसिंह को राजपूताना के एजेंट गवनर जनरल के पास वकील काय हित रखा। हिन्दुमल वद मूलचन्द का दूसरा पुत्र, बडा प्रभावशाली और कुशाग्रबुद्धि का था। सवत 1896 म उदयपुर के महाराणा न हिन्दूमल को ताजीम का सम्मान दिया था। उसने उत्तरी निजन जगल का राज्य मे मिलाकर बीकानेर की सीमा वृद्धि करवाई थी।[1] वि० स० 1884 म सूरतसिंह जी ने उसको दिल्ली मे वकील नियुक्त किया था। रतनसिंह जी न अपना मुख्य मन्त्री बनाया एव महाराव की उपाधि दी। वन्हा को अनेक बार ताजीमादि सम्मान मिले। सरदारसिंह जी ने इनको मुद्रा लगाने का अधिकार दिया था। डूगर सिंह जी न समरसर, पलाना गाव दिये। इनके हरिसिंह गुमानसिंह जसव तसिंह नाम के पुत्र थे। जसवन्तसिंह के आदेशानुसार दयालदास न स० 1927 मे देश दपण की रचना की। हरिसिंह के किशनसिंह सवाइ सिंह फिर उम्मेदसिंह हुए। हिन्दुमल का दूसरा पुत्र गुमान सिंह था। सवाइ सिंह का ज्येष्ठ पुत्र रामसिंह गुमानसिंह के पुत्र जवानीसिंह के दत्तक गया। रामसिंह का पुत्र धनपतसिंह सहजरासर का अंतिम ठाकुर रहा।

उस समय महजरासर म गोधूराम पटवारी और मागजी हवलदार वर्षों तक कायशील रहे थे। इस गाव की भूमि सदा से उपजाऊ रही है तथा अब उसका कुछ भाग नहरी क्षेत्र म आ गया है। गाव का एक तालाब महजराणा' कालू के रास्त पर है। वतमान समय म सहजरासर का सरपच श्री पनराम शर्मा है जो पहले नौ गाँवों की न्याय पचायत (कायालय कालू) का पच भी रह चुका है।[2]

खारी—लूनकरनसर तहसील म खारी सदा से मीठे पानी वाले गावों म गिना जाता रहा है। पहले पहल बीकानेर से भटिण्डा रेलगाडी चली तब इजन को खारी से *पानी प्रदान किया जाता था। रेलवे ने खारी के कुए म मशीन बठाकर कूआ चलाने के* लिए अपने कई कमचारी रख दिये थे। खारी मे तालाब भी गाँव के पास ही है तथा गाँव

1 प्राचीन समय म बीकानेर राज्य और भावलपुर पजाब की सीमाएँ निश्चित नही थी। तब हिन्दुमल ने ऊँटों द्वारा वहाँ पहुँचकर कमचारियो से दूर-दूर तक कोयलो और राख से भरी हाडियाँ गडवा दी। थोडे समयोपरात उन राज्या का बन्दोबस्त हुई और बीकानेर राज्य का वहा सीमाएँ मा य रही। तब वहाँ उसके नाम पर "हिन्दूमल कोट" नाम का गाँव आबाद करवाया गया (राज्य का सत्य एव गोपनीय कथा) दयालदास की अ य रचनाओ म वद हिन्दूमल का पद्य गीत[4] है।

2 धनपत सिंह की स्नेह मयी आत्मजा च दन कुवर का विवाह वि० स० 1991 माघ मे कालू के सेठ सुगन मल नाहटा के पुत्र भीखमचन्द के साथ हर्षो लास राज्य रीति से हुआ था।

के बीच प्राचीन पक्का एक मंदिर है। एक साध्वी माई (माया नाथ) का सुन्दर आश्रम घीरेरा के रास्ते पर गाँव के पास स्थित है। खारी के ठाकुर जोधा के पुत्र तथा दूदा के पौत्र प्रसिद्ध राव जयमल मेड़तिया के पुत्र माधवदास के वंशधर रहे हैं। महाराजा डूंगरसिंह ने वि० स० 1934 में चाँदसिंह मेड़तिया राठौड़ को खारी की जागीर और ताजीम का सम्मान दिया था। श्री प्रतापसिंह यहाँ का अंतिम ठाकुर था।

चौधरी श्री मगनाराम के आत्मज भीमसेन (भू० पू० क्षेत्र के विधायक) खारी के घीरेरा स्टेशन के निवासी हैं। 'निर्याम' पत्र के संपादक श्री सूर्यप्रकाश शास्त्री रतनगढ़, उनका भतीजा प्रोफेसर ईश्वरानन्द सारस्वत (जन्म 1985) बीकानेर तथा उनकी पुत्री वाइस प्रिंसीपल डा० पुष्पलता आदि सब सज्जन खारी के इद गिर्द धीरेरा कर्णासर बंधा, मोलानियाँ आदि गाँवों से जन्म प्रतिभा लेकर बाहर गये हैं। घीरेरा स्टेशन वास मे एक अमरनाथ नाम का मनुष्य वहीं से योग शिक्षा (15 वर्ष की उम्र में) लेकर वर्षों से सफल योग साधनालीन है। खारी के साध्वी आश्रम में भी अनेक साधु सन्त विश्राम हेतु आकर ठहरते हैं। दूसरे इस गाँव में जन्मे और बालू के सन्त भानीनाथ की जगह में रहे सेवानाथ एक योगीराज थे। इन पंक्तियों के लेखक की जन्म भूमि खारी है। इस गाँव के गरिमामय पानी की विशेषता है कि निकटीय क्षेत्र में अनेक विभूतियों ने जन्म लेकर अपनी विशिष्टता दिखाई है।

सुरनाणा—सुरनाणा किसान जाटों का पुराना दटीब गाव है। यह लूनकरनसर कस्बे से 5 किलोमीटर पश्चिम में आबाद है। इस गाँव के वासिन्दगान बड़े पशुपालक एवं धनवान हैं। खेती और भेड़ पालन का धन्धा करते हैं। पहले सुरनाणा गाँव राठौड़ों का रणमलोत कममोत शाखा का बड़ा ठिकाना माना जाता था। यहाँ का भू० पू० ठाकुर भूरसिंह वि० स० 1961 से राज्य सेवा में बड़े बड़े ओहदा पर रहा। उसकी तहसीलदार, इन्सपेक्टर नाजिम कमिश्नर आदि पदोन्नतियाँ हुई। ताजीम, राव-बहादुर आदि के खिताब सम्मान मिले। वे तीन बार इंग्लण्ड गये थे। ठाकुर का पुत्र श्री जुगल सिंह तहसीलदार, बड़ा मिलनसार व्यक्तित्व का धनी था। इन पंक्तियों के लेखक (अध्यापक लूनकरनसर) का मान्यवर मित्र था। सन् 1948 50 तक श्री जुगल सिंह लूनकरनसर तहसील में तहसीलदार रहे तत्समय पट्टू (रणजीत सिंह) नाम का उनका एक लड़का स्कूल में पढ़ा करता था सो अब व्यापार के क्षेत्र में नाम कर रहा है। सुरनाणा गाँव में पहले कूआ नहीं पानी की कुइयाँ थीं। अब नहर आ जाने से पीने के पानी का तथा अन्न उपजाने की अच्छी सुविधा हो गई है। यहाँ के गोदार जाट प्रसिद्ध हैं।

खियेरां—भडाण (एक जल विहीन क्षेत्र) के मध्य खियेरा एक बड़ा गाव है। इसमें प्रतिवर्ष माघ सुदी 10 को श्री राम देवजी का बहुत बड़ा मेला लगता है। इस गाव मे कूआ नहीं पानी की कुइया हैं। कहते हैं—श्री राम देवजी महाराज की कृपा से कुइया का पानी कभी नहीं सूखता। अब नहर के जल की प्रतीक्षा है।

खियेरा के भू० पू० ठाकुर पूर्णसिया भाटी रहे। वहा के कर्नसिंह बीकानेर की फौज में लेफ्टीनेंट कर्नल थे। अंग्रेज सरकार ने उन्हें राव बहादुर की उपाधि दी और महाराजा साहब के ए०डी०सी० तथा बीकानेर राज्य के मिलीटरी सेक्रेटरी भी बने।

खियेरा, तहसील लूनकरनसर का खुशहाल गाँव है। इसकी रौनक यहा के प्रसिद्ध रामदेवरे के कारण है। यहा जानकी नाथ बाबे का बाड़ी है और अब सड़क बन गई है।

किलोमीटर है। यहाँ प्राचीन स्तम्भ और मदिर है। मप देवा श्री केशराजी कबर का अच्छा स्थान है।

महजरासर के भू० पू० ठाकुर वद मेहता जीमवान थे। उनके पूवजा का मूल निवास भीनमाल बनाया जाता है। मडोर पर राव चूडा का अधिकार हुआ तब वदों ने अधीनता मानी। वि० स० 1522 मे जाधाजी की इच्छा मे वद मेहता बीराजी के साथ आये। बीकानेर राज्य स्थापित हुआ, बड़ ओहदा पदा पर चढे। इनकी बीकानरा पाचवी पीढी मे ठाकुरसी, महाराजा रायसिंह का आमात्य था। उसके लडक मूलच द न श्री सूरतसिह जी से नोरगदेसर गाँव पाया था। उसका छोटा भाई अबीरचन्द बीकानेर से दिल्ली म राजकीय वकील था। बीकानेर से मूलचन्द के बेट नरसिंह को राजपूताना के एजे ट गवनर जनरल के पास वकील काय हित रखा। हि दुमल वद मूलचन्द का दूसरा पुत्र, बडा प्रभावशाली और कुशाग्रबुद्धि का था। सवत 1896 म उदयपुर के महाराणा न हि दूमल को ताजीम का सम्मान दिया था। उसन उतरी निजन जगल को राज्य म मिलाकर बीकानेर की सीमा वद्धि करवाई थी।[1] वि० स० 1884 म सूरतसिंह जी न उसको दिल्ली मे वकील नियुक्त किया था। रतनसिंह जी न अपना मुख्य मन्त्री बनाया एव महाराव की उपाधि दी। वहो को अनेक बार ताजीमादि सम्मान मिल। सरदारसिंह जी ने इनको मुद्रा लगान का अधिकार दिया था। डूगर सिंह जी न अमरसर, पलाना गाव दिये। इनके हरिसिह गुमानसिंह जसव तसिह नाम के पुत्र थे। जसवन्तसिह के आदेशानुसार दयालदास न स० 1927 मे देश दपण की रचना की। हरिसिंह के किशनसिंह, सवाइ सिंह फिर उम्मेदसिंह हुए। हिन्दुमल का दूसरा पुत्र गुमान सिंह था। सवाई सिंह का ज्येष्ठ पुत्र रामसिंह, गुमानसिंह के पुत्र जवानीसिंह के दत्तक गया। रामसिंह का पुत्र धनपतसिंह सहजरासर का अ तिम ठाकुर रहा।

उस समय सहजरासर म गोधूराम पटवारी और सागजी हवलदार वर्षों तक कायशील रहे थे। इस गाव की भूमि सदा से उपजाऊ रही है तथा अब उसका कुछ भाग नहरी क्षेत्र म आ गया है। गाँव का एक तालाब महजराणा' कालू के रास्ते पर है। वतमान समय म सहजरासर का सरपच श्री पनराम शर्मा है जा पहले नौ गाँवा की याय पचायत (कायालय कालू) का पच भी रह चुका है।

खारी—लूनकरनसर तहसील म खारी सदा से मीठे पानी वाले गावों म गिना जाता रहा है। पहले पहल बीकानेर से भटिण्डा रेलगाडी चली तब इजन का खारी से पानी प्रदान किया जाता था। रेलवे ने खारी के कुए मे मशीन बठाकर कूआ चलाने के लिए अपन कई कमचारी रख दिए थे। खारी म तालाब भी गाँव के पास ही है तथा गाँव

---

1 प्राचीन समय मे बीकानेर राज्य और भावलपुर पजाब की सीमाएँ निश्चित नही थी। तब हि दुमल ने ऊँटा द्वारा वहाँ पहुँचकर कमचारियो से दूर-दूर तक कोयला और राख मे भरी हाँडियाँ गडवा दी। थोडे समयोपरात उन राज्या की बन्दोबस्त हुई और बीकानेर राज्य की वहा सीमाएँ मा य रही। तब वहा उसके नाम पर "हिन्दूमल कोट" नाम का गाँव आबाद करवाया गया (राज्य की सत्य एव गोपनीय कथा) दयालदास की अ य रचनाओ म वद हि दूमल का पद्य गीत[4] है।

2 धनपत सिंह की स्नेह मयी आत्मजा चन्दन कुवर का विवाह वि० स० 1991 माघ मे कालू के सेठ सुगन मल नाहटा के पुत्र भीखमचन्द के साथ हर्षोल्लास राज्य रीति से हुआ था।

के बीच प्राचीन पक्का एक मंदिर है। एक साध्वी माई (माया नाथ) का सुन्दर आश्रम धीरेरा के रास्ते पर गाँव के पास स्थित है। खारी के ठाकुर जोधा के पुत्र तथा दूदा के पौत्र प्रसिद्ध राव जयमल मेडतिया के पुत्र माधवदास के वंशधर रहे हैं। महाराजा डूगरसिंह ने वि० स० 1934 में चाँदसिंह मेन्तिया राठौड को खारी की जागीर और ताजीम का सम्मान दिया था। श्री प्रतापसिंह यहाँ का अंतिम ठाकुर था।

चौधरी श्री मगलाराम के आत्मज भीमसेन (भू० पू० क्षत्र के विधायक) खारी के धीरेरा स्टेशन के निवासी हैं। 'निर्याम' पत्र के सपादक श्री सूर्यप्रकाश शास्त्री रतनगढ, उनका भतीजा प्रोफेसर ईश्वरानन्द सारस्वत (जन्म 1985) बीकानेर तथा उनकी पुत्री वाइस प्रिंसीपल डा० पुष्पलता आदि सब सज्जन खारी के इर्द गिर्द धीरेरा करणासर बन्धा, मालानियाँ आदि गाँवो से जन्म प्रतिभा लेकर बाहर गये हैं। धीरेरा स्टेशन वास मे एक अमरनाथ नाम का सन्त वहीं से योग शिक्षा (15 वर्ष की उम्र में) लेकर वर्षों से सफल योग साधनालीन है। खारी के साध्वी आश्रम में भी अनेक साधु सन्त विश्राम हेतु आकर ठहरते हैं। दूसरे इस गाँव मे जन्मे और बालू के सन्त भानीनाथ की जगह में रहे सेवानाथ एक योगीराज थे। इन पंक्तियो के लेखक की जन्म भूमि खारी है। इस गाँव के गरिमामय पानी की विशेषता है कि निकटीय क्षेत्र में अनेक विभूतियों ने जन्म लेकर अपनी विशिष्टता दिखाई है।

सुरनाणा—सुरनाणा किसान जाटो का पुराना दटीव गाँव है। यह लूनकरनसर कस्बे से 5 किलोमीटर पश्चिम में आबाद है। इस गाँव के वासिन्दगान बडे पशुपालक एवं धनवान हैं। खेती और भेड पालन का धन्धा करते हैं। पहले सुरनाणा गाँव राठौडा की रणमलोत कमसोत शाखा का बडा ठिकाना माना जाता था। यहाँ का भू० पू० ठाकुर भूरसिंह वि० स० 1961 से राज्य सेवा में बडे-बडे ओहदो पर रहा। उसकी तहसीलदार, इन्सपेक्टर नाजिम, कमिश्नर आदि पदोन्नतियां हुईं। ताजीम राव बहादुर आदि के खिताब सम्मान मिले। वे तीन बार इग्लण्ड गये थे। ठाकुर का पुत्र श्री जुगल सिंह तहसीलदार, बडा मिलनसार व्यक्तित्व का धनी था। इन पंक्तियों के लेखक (अध्यापक लूनकरनसर) का मान्यवर मित्र था। सन् 1948 50 तक श्री जुगल सिंह लूनकरनसर तहसील में तहसीलदार रहे तत्समय पट्टू (रणजीत सिंह) नाम का उनका एक लडका स्कूल में पढा करता था सो अब व्यापार के क्षेत्र में नाम कर रहा है। सुरनाणा गाँव मे पहले कूआ नही पानी की कुइया था। अब नहर आ जाने से पीने के पानी की तथा अन्न उपजाने की अच्छी सुविधा हो गई है। यहां के गोदारा जाट प्रसिद्ध हैं।

खियेरां—भडाण (एक जल विहीन क्षेत्र) के मध्य खियेरा एक बड़ा गाव है। इसमे प्रतिवर्ष माघ सुदी 10 को श्री राम देवजी का बहुत बडा मेला लगता है। इस गाव मे कूआ नही पानी की कुइया हैं। कहते हैं—श्री राम देवजी महाराज की कृपा से कुइयो का पानी कभी नहीं सूखता। अब नहर के जल की प्रतीक्षा है।

खियेरा के भू० पू० ठाकुर पूगलिया भाटी रहे। वहा के बनेसिंह बीकानेर की फौज में लेफ्टीनेंट कर्नल थे। अंग्रेज सरकार ने उन्हे राव बहादुर की उपाधि दी और महाराजा साहब के ए०डी०सी० तथा बीकानेर राज्य के मिलाटरी सेक्रेटरी भी बने।

खियेरा तहसील लूनकरनसर का खुशहाल गाव है। इसकी रौनक यहा के प्रसिद्ध रामदेवरे के कारण है। यहा जानकी नाथ बाबे की बाडी है और अब सडक बन गई है।

ऊँचाइडा– ऊँचाइडा गाव अपने नामानुरूप वास्तव म एक ऊँचे धोरे (टीरे) पर बसा है। यह सुरनाणा और हँसेरा स सामने दिखाई देता है। यहाँ नीचे नहर का पानी आ गया है और अच्छी खेती होती है। वि०स० 1918 (ई०स० 1861) म महाराजा सरदार सिंह न तवर लक्ष्मणसिंह के पुत्र देवीसिंह को ऊचाइडा की जागीर प्रदान की थी। जिसकी वार्ता परसगियो (सगे सम्बंधियो) म होती थी। इनके आखिरी ठाकुर मोहब्बतसिंह रहे। तभी से ऊँचाइडा तहसील का ऊँचा गाव है।

केला—केला पहले पूगलिये कल्हणोत भाटी सरदारों की जागीर थी। वहा का एक केलाणिया भूत भी दूर दूर तक प्रसिद्ध था। भूत यात्रियो का दिखाई देता था। लेकिन किसी को डराता धमकाता नहीं, मदद किया करता था। कहते हैं कि अन्न लाने वाले लोगों को ऊँटो पर छाटी (बारा) लगा दिया करता था।

बडेरण—बडेरण इस क्षेत्र का पुराना ऐतिहासिक गाँव है। राठौड राज्य का श्रेष्ठ शूरवीर स्तम्भ वीरमदेव (जन्म वि०स० 1400) वि०स० 1437 मे दल्ला जोइया के पास आकर यहाँ रहा था। यह बडा वीर, साहसी, दानी परोपकारी और उदार व्यक्ति था। वह अपने साथ बहुत सारे राजपूत रखता तथा उनके व्यय हित शाही काफिले और उनकी पेशकशा लूट लेता था। जोइया न तत्समय वीरमदेव को बडेरण गाव रहने को दिया था और अपनी आय म मे कुछ हिस्सा देना भी तय कर रखा था। जोइयो ने अपनी प्रसिद्ध घोडी की बछेरी (समाघ) जो जगमाल को माँगने पर भी नही दी थी, वीरमदेव को चढने हेतु दे दी। ऐतिहासिक ग्रंथों और ख्यातो म वीरमदेव का काफी वर्षों तक यहा रहना पाया जाता है और जोइयो द्वारा उसे लखबेरा देना भी बताया गया है। क्योंकि उस समय सिंध के शासक से जोइयों का मतभेद चलता था। इसलिए जोइये उसके (सिंध बादशाह के) भय से भयभीत होकर सहवाण क्षेत्र मे वीरमदेव जैसे बहादुर को अपने पास रखकर उसकी निडर एव निर्लोभ शक्ति का सहयोग लेते थे। ये इसके पक्ष को खेड मे जाकर लाये थे।

वीरमदेव सुदृढ राठौड राज्य के नीतिज्ञ शासक एव महान वीर मल्लीनाथ का विमाता से ज मा छोटा भ्रात भक्त भाई था। मल्लीनाथ का बेटा जगमाल[1] विध्वंसक व दुर्नीति का व्यक्ति था। उसने सहवाण सगठन के भय से चाचा वीरमदेव के साथ झूठा झगडा शुरू कर दिया और बाप के सहोदर भाई जैतमाल को मार भी दिया था। वीरमदेव की पारिवारिक स्थिति बडेरण म जमी हुई देखकर उसन एक षडयन्त्र और रच डाला। वीरमदव जैसे अल्प राजनीतिज्ञ सत्य वीर को जगमाल ने अपनी कूटनीति का शिकार बना लिया। जगमाल न जाल फैलाया और वीरमदेव उसमे फस गया। जगमाल ने अपने कुछ कुचाली आदमी वीरमदेव के पास सहवाण भेजे जिन्होंने सरल चित्त वाले वीरमदेव के मुख्य व्यक्ति बनकर जोइयों को कष्ट स आराम काटने और साजन खा जाने जसे दुश्मनी वाले अनेक बुरे काय किये। तब दल्ला जोइया के भाई मधु और देपाल, वीरमदव से नाराज हो गये और उस बडेरण स निकाल दिया। दल्ला तो वीरमदेव का अहसानमद था। पर उसके भाइयो ने साथ लेकर वीरमदेव की गायें छीन ली। तब वीरमदेव को बडेरण से कागासर, कँवलासर (कालू के नजीदीकी गाव) जाकर रहना

---

1 पग पग नेजा पाडिया पग पग पाडी ढाल।
बीबी पूछ खान न जग केता जगमाल॥

पडा था। फिर भी जाइयों से उसका झगड़ा चलता रहा और इसी जोड़यावाटी के युद्ध मे वीरमदेव (वि०स० 1440) काम आया।

बडेरण मे वीरमदेव के साथ अनेक राजपूत रहते थे और बहुत से स्थानों पर उसकी जागीरें थी। वीरमदेव की रानी मयानी साखलियानी, मांगलियानी रानियां के नाम भी आते हैं।[1] वर्तमान में बडेरन से थोडी दूर के खेह वाले कूएँ के पास इसका गढ था। वहाँ गढ का ककरीट वाला मगरा वीरमदेव के गढ का खेड है। जिसको खोदने मे हाथी घोडा की लीद वाली काली मिट्टी एव अन्य प्राचीन बरतनादि पाये जाते हैं।[2] इस तरह बडेरण इस क्षेत्र का प्राचीन गाव है। इसके पास आज भी सात खेड मौजूद है। इस स्थान का सारा वर्णन "कवि बहादर और उसकी रचनाएँ" मे मिलता है कि वीरमदेव के जीवन से राठौड राज्य और राठौर वश को कितनी सुखद उपलब्धियां हुई हैं।

सूई—गाव सूई सैंकडो घरो की बस्ती है। यहा के कूएँ का पानी मीठा नही है, इसलिए गाँव मे कुँड अधिक हैं। धार्मिक मदिर और पानी के पुराने तालाब है। सूई स्वास्थ्य कर आब हवा वाला स्थान कहलाता है। यहा की खेती अच्छी है और लोग खुशहाल हैं। पहले इस गाव मे महाजन लोग भी रहते थे। वर्तमान समय मे गाव पचायत कार्यालय, पटवारखाना, प्राथमिक शाला और पुराना गढ है। गाँव का भू०पू० ठाकुर हरिसिंह पचायत के कार्यो में पूरा भाग लेता है।

जतपुर—जतपुर गाँव, अरजुनसर रेल्वे स्टेशन से 16 मील दूर है। माहेश्वरी-महाजन, ब्राह्मण, सेवग नाई आदि अनेक जातियां के साथ मिवखवात एव ब्राह्मण विशेष जाति है। पोस्ट आफिस एव पचायत कार्यालय के काम यहाँ के सराहनीय हैं। गाँव मे अब पानी, पाइप लाइन से आता है। जतपुर तक सडक नही हैं, लेकिन मोटरें कच्चे रास्ते से आती जाती हैं। जतपुर के भूतपूर्व ठाकुर बड़े बहादुर हुए है। गाँव का प्रथम बी० ए० (सन 1946) जगन्नाथ शर्मा सकेण्डरी के प्रधानाध्यापक पद से सेवा निवृत हुआ है। यहा का श्रीरामचन्द्र बिहानी ढाई दशको से 'माहेश्वरी सेवक' नाम का पत्र निकालता है। जैतपुर से पाँच कोस दूर कालिका देवी का प्रसिद्ध धाम पल्लू ग्राम है और थोडी दूर नोहर तथा सरदारशहर की तहसीलों के गाव लगते हैं।



श्री रामचन्द्र बिहानी

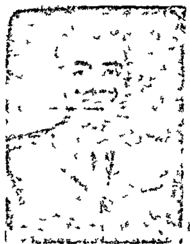
कुम्भाना—कुम्भाना लूनकरनसर तहसील का एक अच्छा गाँव है। वह लूनकरनसर से दस कोस दूर स्थित है। इस गाव का पानी (कुइया का) खारा मीठा है। गाव मे दर्शनीय मदिर देवी प्राचीन गढ पटवार हलका और पचायत भवन व पाठशाला हैं।

1 साखलियाणी मागलियाणा दोनूं धण पल्ल।
फरास नी काट ता कर बयू चल्ल॥

2 बडेरण के श्री रामरतन सवाणित पुलिस कर्मचारी द्वारा।

सरपंच प्राय यहा ईश्वरराम सोनी बना है। कु भाना के भूतपूव ठाकुर रत्नसिहात बीका कहलात हैं। यहाँ का अंतिम ठाकुर सम्मान सिरोपाव युक्त ठाकुर मेघसिह का पुत्र, दौलतसिंह राव बहादुर था। कु भाना म माहेश्वरी महाजन और सारस्वत ब्राह्मण आदि अनेक जातिया वासिन्दगान है। यातायात के लिए सडक बन न्ही हैं लेकिन प्राइवेट मोटरें कच्चे रास्त से चलती है।

कु भाना क पास मणेरा गाँव के मजर वीर पूर्णसिह पाकिस्तान के युद्ध म सन् 1965 म शहीद हुए हैं। बीकानेर मे पी०बी०एम० हास्पिटल और अजायबघर के रास्ते के मध्य चौराहे पर उनका स्टेच्यु लगा है तथा लूनकरनसर ग्राम पचायत भवन के अहाते मे भी स्व० मेजर पूर्णसिह का परिचय सहित शहीद नाम स्तम्भ है। उपरोक्त युद्ध क वक्त पाकिस्तान के सनिक इससे बडा भय खाते और इसे मूछो वाला शेर कहते थे।



अमर शहीद मेजर पूर्णसिह

संक्षिप्त जीवन परिचय—मेजर पूरण सिह का जन्म सन् 1927 मे हुआ था। माँ की अनुपस्थिति म इनका लालन पालन पिता श्री कान सिंह जी न किया। प्रारम्भिक शिक्षा अजमेर के किंग जाज इन्डियन स्कूल म हुई। सन् 1945 मे बीकानर ट्रेनिंग सेन्टर म कडेट के रूप म उनकी नियुक्ति हुई। इनका विवाह अवकाश प्राप्त सैनिक ठाकुरलाल सिंह की सुपुत्री से हुआ। 1946 मे स्टेट आर्मी के सनिक सलाहकार ने प्रभावित होकर उच्च प्रशिक्षण के लिए सैनिक अकादमी देहरादून भिजवाया जहाँ 1947 मे कमीशन मिला। इनकी प्रथम नियुक्ति करणी इन्फेन्ट्री म हुई। अपने सेवाकाल मे बहुत सी यूनिटा एवम पदो पर काय किया। 1964 म आपकी पदोन्नति मेजर रक पर हुई और 16 वी पजाब रेजीमेन्ट से तेरहवी ग्रेनेडियर रेजीमेन्ट मे तबादला कर दिया गया। वहाँ आप सी' कम्पनी कमाण्डर नियुक्त हुए और इसी साथ अनूठी वीरता का परिचय देकर 1965 मे भारत पाक युद्ध मे वीर चक्र अर्जित किया। 30 नवम्बर 1965 को दुश्मन स लडत हुए यह बहादुर वीर, अमर शहीद हो गया।

चरित्र—मेजर पूरण सिंह शौय साहस की मूर्ति थे। जोश मे समुद्र सा उफान और ज्वालामुखी सी गर्मी थी। हँसत-हँसते शत्रु से टक्कर लेना उनकी आदत थी। शत्रु उनके नाम से थर्राता था। 1950 म उन्होंने सात पाकिस्तानी डकतो को मौत के घाट उतार दिया। वे अत्य त लगन स काम करते थे। पुछ सेक्टर मे उन्होंने अपनी सूझबूझ से आठ पाकिस्तानी जासूसा का गिरफ्तार किया था। इस काय की प्रशसा जनरल बरार ने की थी।

व एक सच्च कमयोगी, व वफादार सनिक थे। उनको जो भी काय सौंपा जाता उसको वे पूरी ईमानदारी से पूरा करते। उनकी यह इच्छा रहती थी कि अधिक से अधिक शौय प्रदशन का अवसर मिले। 24 घटे के अन्दर सादेवाला पोस्ट पर अधिकार

करना तथा एक मजर सहित 22 सनिको को मौत के घाट उतार देना, वीरता की एक अनूठी मिसाल है ।

वे बचपन से ही प्रतिभावान, अध्यवसायी व्यक्ति थे । इसी कारण केवल 19 वर्ष की अवस्था म कमीशन प्राप्त करके भारतीय सेना मे लेफ्टीनेट बन गये । जहाँ भी रहते थे, अपने व्यवहार से सब मे प्रिय हो जाते थे । 1965 मे कच्छ युद्ध के समय वे गडरा रोड पर तैनात थे । वहाँ की जनता और सरपच ने सम्मान मे उन्ह अभिनन्दन पत्र और चादर भेंट की थी ।

वे अपने अधीन काम करने वालो के सुख दुख का ध्यान रखते । उनके हर सुख दुख मे शामिल होते थे । कम्पनी मे श्री पूण सिह का व्यवहार एक परिवार के मुखिया जैसा था ।

वे वीर पिता की सतान थे । उनके पिता के शब्द—"पूरण ने हमारे कुल को चमका दिया । हमारे कुल की यही रीति है" । इनके पिता भी इसी यूनिट 13 ग्रेनेडियर (गगा रिसाले) में नायब सूबेदार थ ।

क्षेत्र विशेष

लूनकरनसर तहसील के इस रेगिस्तानी क्षेत्र के सनिक सुदृढ जमकर लडने मे सदा से प्रख्यात रह हैं । इस तहसील में ठिकाना के पुरान सरदार फौज मे अफसर रहा करते थे । अ य राजपूत भी फौज में शूरवीर सैनिक माने जाते रहे हैं । यहाँ के वीरों के उच्चाभाव सदा से ओजपूण रहते आये हैं । खारबारा, सेला, महाजन, जतपुर कुम्भाना, खियेरा और गारबदेशर के ठाकुरो ने युद्ध के समय अपन कीर्तिमान स्थापित किये हैं।[1] दोनों महायुद्धों में युद्धरत (बीकानेर फौज मे) लूनकरनसर तहसील के गावों के बहुतेरे सरदार उमराव साहस एव शूरवीरता मे अग्रणी रहे थे और राज्य से ओहदे तथा पद प्राप्त किये । बीकानेर राज्य के अन्य उत्तरदायी पूण पदो के लिए भी समय-समय पर इन्ही घरानो के व्यक्ति चयनित होते रहे हैं । इस तहसील म कालू से दो कोस दूर भाडसर गाव के श्री रघुनाथसिंह फौज म मेजर रहे । उनके परिवार से डॉ० श्री हिम्मतसिंह सन 1937 से इग्लण्ड रिटन आई सजन थे । डॉ० श्री हिम्मतसिंह का एक पुत्र मानसिंह वतमान मे मिलटरी कप्तान हैं और दूसरा घनश्यामसिंह एम० बी० बी० एस०, दिल्ली में डॉक्टर है ।

लूनकरनसर तहसील के निकटीय गाव गाटा के राजवी आज से 50 वष पहले बीकानेर राज्य म बडे ऑफिसर थे । गाटा के राजवी मोनसिंह कमाडिंग चीफ थे । श्री चन्द्रसिंह तहसीलदार और केशरीसिंह नायब तहसीलदार रहे हैं । य धण्या' नाम से सबोधित किये जाते थे । गाटा के महाजन जो लूनकरनसर म आकर बस गय हैं और राजवियों को आज भी 'धण्या' कहकर फूले नही समात ह ।

---

1 यहाँ तो जाट तथा अन्य जातिया के लोग भी बडी वीरता से फौज मे भर्ती होते आये हैं । गाव कालू का किशनाराम गोदारा प्रथम विश्व महायुद्ध मे गया था तथा रामचन्द्र, द्वितीय विश्व महायुद्ध मे मदद के लिए चला गया । कालू के पास के ढाबिया गांव का दीपाराम कसवा जाट (सन् 1922 स 1945) फौज में लेस नायक रहा हुआ है । यह ई० सन् 1938 45 में ईराक के बसरा नामक स्थान पर तनात था । दीपाराम का छोटा भाई लिछमणाराम भी फौज म सनिक रह चुका है ।

इस क्षत्र क अन्य प्राचीन गाव—तहसील म भटाण क इस निजल, निजन एव विस्तृत क्षेत्र का आज से बीस वप पहले शायद ही कोई चाहता अपनाता हो। घधकते धोरे, साय साय करती हवा, भयकर शर्दी, अपार आँधियाँ, ऊबड-खाबड भूमि तथा तेज लूएँ चलन वाले इस निवास स्थान के प्रति आकपण के बजाय आतक होना स्वाभाविक ही था। मूल निवासी आदिम अवस्था म ही रह रह थे। खारा पानी, मोटा थोडा *अनाज और कपडे की जगह अधिकतर दिगम्बर जीवन ही व्यतीत करते थे।* खेती करना जगल म पशुओ को चराना और पानी के लिए दस दस कोस दूर तक भटकना तथा एक दो घडे (पानी क) प्राप्त करके खुश होना ही उनका दनिक जीवन था। कहाँ तक लिखें ? उनके घरो मे पीने का पानी एक या दो भरे घडो (मटको) स कभी अधिक नही मिलता। इन घडो के पानी को वे अपव्यय के भय से ताले भीतर छुपाकर रखते थ। फूस का टप्पर तथा द्वार की टूटी उभलाक्वाडी खिडकियो पर लम्बा लोहे का मुठिया ताला हर वक्त लटकता रहता था। व लोग दिन मे एक दो बार ताला खोलकर पानी पी लेते और फिर ताला लगा दिया करत थे। उनकी अपनी दुनिया थी और काम बँटे हुए थ। व न तो ससार को जानते और न ससार उन्ह ही! गाव के दो चार आदमी ही वप भर म एक बार झिझकते हुए से शहर जाते थे। कभी कभार कोई बटाऊ अथवा सरकारी आदमी उनके गाव आ जाता तो लोग मीठे पानी के भर अपन छोटे मटके झोंपडो म छुपा दिया करते थे वहाँ। तत्समय बीझरवाली, सोढवाला डूडीवाली, सुभलाई काहोलाइ, महादेववाली रायमलवाला जेसाँ, मुसलकी, सावेरा खियेरा, भादवा, खिलरिया, सादोलाई, बेगवाला, लखावर मकडासर हाफासर करवाली, अजीतपुरा, माना माटासर, फूलदेशर, कोकडवाला, भाडेरा, बडेरण, हसेरा उदेसिया, मोहकमपुरा, उदाना सूलेरा, सूई, भीखणेरा, मनोरिया, मणेरों खियाणा आदि ऐसे गाव थे।

लूनकरनसर तहसील म कई गाव बहुत दूर, पच्चीस तीस फुट धोरा के पार सनिवसित थे। इन गावो की यात्रा मे लोग ऊँटो का दौडान हुए रात दिन एक कर दिया करत थे। वहाँ क रास्त बडे विकट हुआ करते और यात्रिया को रास्ते के लिए बडा सावधान रहना पडता था। रास्ता खो गया मानो जीवन खो गया। बेचारे ऊँट ही अपना रास्ता पकडे चलते थे। ऐसी दूरस्थ यात्रा के क्षेत्र म लिखमीसर, हिन्दौर, *जागौर लखौर, कुम्भासर खानीसर, हाथूसर, राणेर महादेववाली घेघडा खारबारा,* तरतपुरा देवासर, भाडासर ठुईया, नाकरासर, टालीवाला सावणियाँ, रामपुरा आदि अनक गाव रह हैं।

परन्तु वतमान समय म लूनकरनसर तहसील के उपरोक्त गावा म उक्त कठिनाइयाँ नहीं रहीं। तहसील क्षेत्र म नहर आ जान से पानी की भीषण समस्या हल हो गई है। बहुत से गावो की भूमि तो सिंचित हो जाने के कारण वहाँ के लोगों की पाँचो अगुलियाँ घी म हैं।[1] राज्य सरकार द्वारा उत्तरी राजस्थान सहकारी दुग्ध उत्पादक

---

1 उदाहरणार्थ—तहसील का छोटा ग्राम मोहकमपुरा जहाँ पानी के अभाव मे पहले अपन प्रत्यक घर के पृथक-पृथक कूए हुआ करत थ। जो अब करीब 35 की सख्या म खडहर बन रहे हैं। पम्पिग नहर म पानी अधिक बढ़ जान क समय उसका सेमी नाला खोला जाता है। जो मोहकमपुरा के धोरो मे सदव दरियाव रूप लहराता है। बिजली होती है तब नहर के सब पम्पो से एक साथ पानी छोडा जाता है और उसके नहर मे न समाने पर सम नाला खोल दिया जाता है। साल मे बीसों बार

सघ लि० की स्थापना से भी तहसील क दूरस्थ गावो की यात्राएँ मुश्किल नही हैं। उरमूल डेयरी बीकानर के दूध तहसील मे सभी गावा से दूध सकलन का काय करते हैं, जिनसे यहाँ के निवासियो को यातायात की भी अच्छी सुविधाएँ हो गई हैं। राज्य सरकार द्वारा समय समय पर तहसील के गावा को उपलब्ध करवाइ जाने वाली सुविधाएँ भी इनके विकास मे सहायक सिद्ध हो रही हैं। अब लूनकरनसर क्षेत्र एव कस्बा अपनी वनानिक सुविधाओ और क्षमताओ के लिए प्रसिद्ध हो गया है।

तहसील क्षेत्र के गाँवा की नामावली—1 लूनकरनसर मय ढाणी डेलवा, 2 उच्छरगदसर, 3 जागीआसन, 4 कालडईच्छा, 5 कलक्ल मुक्लेरा 6 कालवास, 7 कालू, 8 भानीपुरा, 9 वासी चान्नान, 10 शेखसर, 11 धीरदाण 12 रोंवासर, 13 बास करणीसर (गंवासर) 14 नादसर, 15 नकोदेसर, 16 लाफरसर, 17 नाथूसर, 18 आडसर, 19 राजासर उर्फ करणीसर, 20 ढाणी पाण्डुसर 21 पच्चारा उर्फ अमर पुरा, 22 किसनासर, 23 राजपुरा हुडान, 24 मनाफसर 25 गारबदेसर, 26 छटासर, 27 कागासर, 28 बुकिया 29 कपूरीसर, 30 गोपनान, 31 नाथवाणा, 32 मलकासर, 33 भाम मलकीसर 34 पीपेरा, 35 सोड़वाली, 36 बींझरवाली, 37 घुमलाई 38 मकडासर 39 मुसलकी, 40 हाफासर, 41 किस्तूरिया, 42 डूडीवाली, 43 राजासर भाटियान 44 केला 45 सरदारपुरा, 46 कुण्डा 47 अम्बाख्ख 48 मोटासर 49 अजीतमाना, 50 लखावर, 51 मोटालाई, 52 बीरमाणा 53 करनाली 54 कुजटी, 55 खारी, 56 सहजरासर 57 धीरेरां 58 वामनवाली 59 उत्तमदेसर, 60 सांपेरा 61 मेहराणा, 62 जेसा, 63 दुलमेरा 64 हसेरा, 65 उदेशियाँ 66 शरह बुचावास, 67 नतावास 68 बीछरवाल, 69 हमीरवास, 70 जाखडवाला, 71 ऊँचाईदा, 72 सुरनाणा, 73 खाकराणा 74 गिलेरिया, 75 खियेरा, 76 रतनपुरा उर्फ भोबिया, 77 खातीया बास 78 अलोदा, 79 गाटा, 80 मुक्लेरा 81 भादवा, 82 लालेरा पट्टाखियेरा 83 महाजन, 84 चक बीड सगरेऊ, 85 चक भँवरीया, 86 लालेरा पट्टा महाजन, 87 रामबाग, 88 मिठडिया, 89 राणीसर, 90 घेसूरा 91 चक सुरजपुरा, 92 अरजुनसर, 93 चक अरजुनसर, 94 जैतपुर, 95 मावणिया, 96 टालीवाला, 97 शेरपुरा, 98 रणजीतपुरा 99 भाजरासर 100 दुदेर, 101 गुसाईणा, 102 असरासर 103 दुदेरिया, 104 जसव तसर, 105 खानीसर, 106 फूलेजी, 107 चक जोड, 108 रामसरा 109 रामपुरा 110 जगतसिहपुरा, 111 चकअसरासर, 112 कुम्भासर, 113 सूई, 114 दुलचासर 115 बखूसर 116 मनोहरिया, 117 श्योदानपुरा, 118 बडेरण, 119 रतनीसर, 120 वालादेसर, 121 कालडवाला, 122 भाडेरा, 123 उदाणा 124 तेजाणा 125 ढाणी लक्ष्मीनारायणसर, 126 खियाणा 127 सूलेरा 128 मोहम्मपुरा, 129 महादेववाली, 130 सादोलाई, 131 गौरीसर, 132 घेघडा, 133 ससार देसर, 134 कानालाइ, 135 रायमलवाला (रेणा) 136 बेरावाला, 137 राणेर, 138 सारवारा, 139 लाखनसर 140 गबना उर्फ लालावाली 141 शेरपुरा, 142 तख्तपुरा, 143 भाडासर 144 देवासर 145 चीदासर 146 नागौर 147 ठोईयाँ 148 नाकरा

ऐसा होता है। जब बिजली आने पर राजियासर की लिफ्ट से 45 फुट ऊँचा लेकर पानी छोडते ह। उसी समय मळकीसर में 80 फुट ऊँचे से पानी खालते हैं। तब पानी बढ जाता है।

सर, 149 मेऊसर, 150 काकरालिया, 151 हिंदौर, 152 लखोर बडी, 153 लखोर छोटी, 154 लिखमीसर 155 हाथूसर, 156 रोर्या, 157 फूलदेसर, 158 हुसनीवाला (सणियाला), 159 डेलाणा बडा, 160 डेलाणा छोटा, 161 चक फूलदेसर, 162 भोजावास, 163 कुम्भाणा, 164 मणेरा 165 भुंवाला 166 भीखणेरा, 167 लाडेरा, 168 रेख चूडान 169 भानाबस्ती, 170 मेघाणा, 171 अजातमाना।

तहसील के कुछ मिले मिटे गाव—उनसवी शताब्दी के मध्यकाल तक तहसील लूनकरनसर मे 210 गाँव आबाद थे। उनमें से 39 गाव दान दान शून्य हो गए और राजस्व के कागजा मे उनके नाम मिटा दिये गये। अब तहसील कार्यालय के कागजा म 141 गाव बसते हैं और 30 गर आबाद खेड-ग्रामा के नाम दज हैं। किंतु कतिपय ऐसे अभागे ऐतिहासिक गाव भी इस तहसील के अधीनस्थ आबाद थे, जिनके अब नामानिशान मिलने दुलभ हो रहे हैं। अत एव लेखक ने लूनकरनसर तहसील म 210 गाँवो की प्रचलित प्रसिद्ध कहावत के पीछे बुजुग पटवारिया प्रभृति लोगो से पूछकर उन पुराने ग्राम नामा का पता लगाया है, जो अ य ग्रामों में मिले मिटे, नीचे दिये जा रहे है—

गाँव डूमकी (ससारदेशर मे), मलकीसर छोटा व चूडाना (मलकीसर म), ढाणी छीलो और पलेर (शेरपुरा मे) छिपळाई ढाणी विस्वाळी राईकावाळी (जतपुर म) ढाणी तागवाळी और ढाणी पूरवाना (सूई मे), मिरजावाळी और दामोळाई (गणेर मे) चक रामपुरा वास (कानोलाई म) धनासर (कुम्भाणा म) माछरावाळी (भोजरासर मे), पच्चारा (पाण्डूसर के पास खेट), गवना (लाखवाळी म) रिणो (रायमल वाळी मे) राय सिंह वाला (मोटर में), हजरत पुरा (दुदेर म), करनाणा (दुलचासर मे), नापासर (राजासर-भाटियान मे) बेरा बाडीया और नाहरवाळी (सरदारपुरा मे) घूडिया मोडरा (केला मे), मिलकर अपना नाम खत्म कर चुके हैं।

कई एक एक नाम म दो ग्राम बसते हैं—जस सहजरासर अरजुनसर तथा धीरेरा एव दुलमेरा आदि रेल्वे स्टशना के पास उन्हीं पुराने गावा के नामा म आश्रित उपेक्षित बसते हैं। बुचावास, खातीवास, नेतवास भिछरवास और भोजेवास जस गाँव भी अ याश्रय हैं।

राजस्थान केनाल

इस नहर का राजस्थान की सीमा म प्रवेश मसातावली हैड (मुख्यालय) से होता है। दूसरा हैड इसका लखूवाला का है। इसके पश्चात नम्बर तीन पर बिरधवाल हैड अति विस्तृत जल भडार स्थापित है। यहाँ से अलग अलग तीन चार शाखाएँ निकलती हैं।[1] प्रथम, राजस्थान लूनकरनसर लिफ्ट केनाल शाखा प्रसारित है, जो भडाण क्षेत्र के कुछ भाग की प्यास मिटाती हुई बीकानेर नगर तक पम्प चढे पानी का बल पाकर

1 क्षेत्र के अनक गाँवा म पारदीय नहर का जल और विद्युत प्रकाश पहुँच चुका है। सूरतगढ से बीकानर बडी लाइन (रेल्वे) फौज छावनी हतु निर्माणाधीन है। तारीख 17 2 1983 ई० को महाजन रेल्वे स्टेशन पर एक बडे अधिकारी द्वारा बडी लाइन बनन का कार्यारम्भ हुआ। यह सूरतगढ से बीकानेर 182 कीलोमीटर होगी और इस पर 43 करोड का खच बताया गया है। बीच बीच नय स्टशन भी बनेंगे। छावनी का यहा एरोड्राम भी बनेगा सूरतगढ से दूसरी ऐसी बडी लाइन अनूपगढ जायेगा।

पहुँचती है। रास्ते म इसके चार पम्पिग स्टेशन हैं, वे आगे से आगे पानी का उच्च स्तरीय धल देकर प्रवाहित करते हैं। बिरधवाल से लिए पानी को राजियासर के पम्प से ऊँचा चढाकर फका जाता है, फिर मलकीसर का पंपिग स्टेशन यह काय करता है। बाद म गाव सारा पम्पिग स्टेशन। अतिम स्टेशन हुसगसर के ऊँचे टीबो की कतार पर लगा है जिसस बीकानेर नगर और मडल के बहुत से गावो को नहर का पानी मिलता है।

फिर आप एक बार बिरधवाल जल भडार की जल प्रापार देखने वापिस विस्तृत वरुण मुख्यालय पहुँचिये। वहाँ से द्वितीय शाखा "नौ लेवल ब्राच" नाम से अनूपगढ का सारा हिस्सा सींचती है। यह अनूपगढ नगर से दक्षिण की साइड को घेरती है।[1] आगे जाकर छत्रगढ का क्षेत्र मडसाना और उससे अनूपगढ़ ब्राच 81 हैड आर० डी०, बटाने वाली, कोडीबद, फूलसर, मादनर, रावला हैड, सूनीवाला को बाँटती है। किसनपुरा (रावला से आगे 365 हैड) गाइट हैड की बी० डी०" कुण्डल 32 हैड पी० एच० एम० पडिहारा, 61 हैड दमस क० डब्ल्यू० कालेवाल माइनर के० जी० डी० राजूवाला वगैरह स्थाना का बडा लम्बा रन लती है।

अब आप बिरधवाल हैड का प्रमुख मेन कनाल एव महान नहर का अवलोकन करें, जिसम बडी बडी नावें चलाई जा सकती है तथा उसके लिए जसलमेर, बाडमेर तक ले जाने की सकडों स्वण सिचित सरकारी आयोजनाएँ आबद्ध हैं। गहगाहती, गजना करती, समुद्र रूप रेगिस्तानी रास्ता लपेट सुपथगा भव्य भागीरथी बनी चलती हैं। रावडी माइनर छत्रगढ के पास सत्तासर 620 हैड स पूगल ब्रांच जो ककराला, जडा सियासर चौगान, बल्लासर 682 स आगे दतौर ब्राच आदि लम्बी शाखाएँ बनाती हैं। बडा दशनाम दृश्य है। इस विस्तत क्षेत्र म नहरा का जाल सा बिछ गया है। लेखक ई० सन् 1971 का जनरल चुनाव करवाने के लिए मियासर चौगान (नौशेरेवा) केन्द्र पर बीकानर जिलाधीश श्री जी० रामचन्द्र मीना द्वारा नियुक्त किया गया था। तब सत्तासर, कष्णपुरा, कुडल और राजूवाला, वेरियावाली आदि गाव देखे थे। किन्तु सारे इलाके का देख नही सका। एक बार बीकानर क श्री तुलसीराम मेडतिया द्वारा उधर का थोडा जबानी नहरी वणन सुना और याद रखा तथा घर आकर उसे यहा लिख दिया। फिर अपन शिष्य श्री दुर्गाराम शर्मा से इसे पुन समझकर सदेह मिटा लिया। परन्तु उधर के क्षेत्र की नहर का मुझे पूरा अनुभव नही है। सभवत उक्त विवरण मे अनेकश कमिया व त्रुटिया हो सकती हैं।

प्रादेशिक समानता—इस मस्त क्षेत्र मे विकास हेतु तहसील के गाँवो से कुछ लागा के सराहनीय यत्न प्रयास रहे हैं। फिर भी अभी इस क्षेत्र मे जो काय अधूरे पडे हैं तथा आरम्भ ही नही किय गय हैं, उन्ह गतिमान बनाने के लिए सबका सानुराग, आलस्य एव ईर्ष्या त्याग हो जाना अति अनिवाय है।

वसे तो इस प्यासे इलाके के लोगो का वतमानीय जल सुलभ जीवन बहुत हर्षित हो गया है। पेय जल समस्या के निराकरण से आम जनता हर्षित आनदित दृष्टिगोचर हो रही है। सब को ज्ञात हो गया ह कि जमाना बडा द्रुतगति से बदलता जा रहा है

---

1 अनूपगढ़, विजयनगर आदि के उत्तरीय हिस्सो म महाराजा गगासिह ने पहले ही नहर निर्माण काय करवा दिया था।

और लोक के भावी जीवन को समृद्ध एवं सुखी बनाने के लिए बड़े बड़े प्रयत्न चालू हैं। पशु आहार उपलब्धियां, दुग्ध परियोजना, मरुक्षेत्रीय विकास कार्यक्रम, विद्युतीकरण योजना, मंडी नियमन रोड विस्तार कार्य आदि के माध्यम से नव वातावरण तैयार बनता दिखाई दे रहा है। सिंचाई उपलब्धि के द्वारा मूंगफली और चने के उत्पादन ने तो लूणकरणसर क्षेत्र की काया पलट ही कर दी है। विपुल औद्योगिक क्षमताओं के संबंध में भी नये ढंग के कार्यक्रम चालू हो रहे हैं। तेल की मीलें, दाल की मीलें, कपास एवं कपड़े की मीलें भी बन गई हैं। अतः एव लूनकरनसर की अति पुरानी क्षेत्रीय असमानता मिटायी जा रही है। तहसील में प्राप्त खनिज जिप्सम चूना पत्थर की खनन कार्यवाहियां भी प्राचीन की अपेक्षा अर्वाचीन समय में बड़ी द्रुतगति से होने लगी है। इसी प्रकार गांव गांव और खेत खेत के अभ्युदय से समस्त लूनकरनसर तहसील क्षेत्र उजागर होता जा रहा है। आज के इस कस्बे को पुराने लूनकरनसर में मिलाइये तथा तत्समय के स्कूल का हाजिरी रजिस्टर (छाया चित्र) देखिये। यथा—

रजिस्टर हाजिरी बाबत विद्यार्थियान पाठशाला लूनकरणसर

[illegible]	[illegible]	[illegible]	नाम विद्यार्थी	[illegible]	हाजिरी
			कक्षा नाजिका		
१	१	१	ननुनाराम	[illegible]	[illegible]
२	२	२	गमलाल	[illegible]	[illegible]
३	३	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	४	४	[illegible]	हीरालाल [illegible]	[illegible]
५	५	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६	६	६	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	७	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	८	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९	९	९	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११	[illegible]	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२	[illegible]	१२	[illegible]	उमाराम [illegible]	[illegible]
[illegible]	१३	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४	१४	१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१५	१५	१५	पूनिया?	[illegible]	[illegible]
१६	१६	१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१७	१७	१७	[illegible]		[illegible]
१८	१८	१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१९	१९	१९	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२०	[illegible]	२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लूनकरनसर स्कूल का हाजिरी रजिस्टर

एकादश प्रकरण

खारा जल-पुण्य स्थल -

भडाण एव कलन के वास—नूणकरणसर तहसील का क्षेत्र बीकानेर मडल का महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी सभ्यता बहुत पुरानी है। तहसील का पश्चिमोत्तरीय भाग भडाण नाम से जाना जाता है। भडाण म विभिन्न जाति, धम और सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। यहाँ की घर घर की कुइया (छोटे वेरा) को देखकर लगता है कि यह क्षेत्र पहले कम पानी वाला भू-खड था। बीकानेर राज्य के इस पुराने भू भाग पर व्याप्त भडाण एरिया की अपनी एक लम्बी कहानी है, जो उसकी न किसी रूप म सस्थिति वदिक काल से प्रमाणित पाई जाती है। इसकी प्राचीन परिस्थितिया को जानने के लिए पश्चिम म सत्तासर बीकानेर, दक्षिण मे श्री डूगरगढ़, दक्षिण-पूव मे सरदारशहर पूव मे नोहर, उत्तर-पूव म सूरतगढ एव हनुमानगढ, उत्तर मे अनूपगढ और उत्तर पश्चिम मे छत्रगढ तथा वतमान केनाल नहर आदि स्थाना को साथ ले करके मध्य का जीवन्त जन-पद, यह भडाण व कळम का वासा का इलाका है। इसका अधिकांश भू भाग रेत के टीबो से ढका हुआ रहता है।

यह जांगल प्रधान गावो का क्षेत्र है। इसमे अब छब्बीस ग्राम पचायतें, सकडा शिक्षा शालाएँ, अनेक अस्पताल और औषधालय स्थापित हो गये हैं, किन्तु इसके बीच का कुछ हिस्सा समतल मैदान के रूप में सीधा सपाट बसा हुआ नजर आता है। ऐसे *तल्व भाग मे इन गांवा की कुइयाँ होती हैं। यह भडाण राजस्थानी मरुस्थल*[1] *व मम-स्थल* स्वरूप, रग-बदरग, आश्चयजनित इलाका है। इसका जलवायु गम एव शुष्कता सम्पन्न है। इस कम गहराई आद्रता वाली नमकीन जमीन के अनोखे आकर दष्टव्य है। कतिपय स्थानों में वतमान नहर के कारण तीन-चार हाथ पोली (खोखली) जमीन खोदन *पर छलछलाता पानी निकल आता है, कृषि वृद्धि के कारण पुराने बजड बीहड नष्ट* प्राय हुए जा रहे हैं। फक्त छोटे वन एव सीमित चारागाहा से ही चांस, घास उपलब्ध हैं, इससे अब पशुओ की भी कमी होती जा रही है। पक्षी वही हैं पर जहरीले जानवर घटते हटते नजर आते हैं। इस प्रदेश के उत्तर-पूर्वीय किनारे पर कभी घग्घर नाम की नदी बहती थी। उसे यहाँ 'टकडा का बहाण' भी बोलते हैं। उसके स्थान पर अब वहाँ नाली आती है।

वैसे तो यहाँ लवणदार मिट्टी की बहुतायत है, परन्तु चिकनी मिट्टी मुरड और पीली मिट्टी भी मिलती है। सूरतगढ के पास उपजाऊ चिकनी मिट्टी दुनमेरा का लाल

---

1 जसलमेर लोद्रवा से जोधपुर के मालानी और नागौर मेडता और फिर आडावळा म शेखावाटी के ल्हेला व हष की पहाडियो से पश्चिमोत्तर मुडकर लुहारू होते हुए हिसार हाँसी की परिधि छूकर भटनेर या हनुमानगढ तक की सीमा रेखाओं मे राजस्थानी मरुस्थल मानते हैं। इसी क्षेत्र म जोहियावार भट्टियार जाटायत, शेखावाटी ढूंढाड आदि मरुस्थलीय भाग हैं।

पत्थर उत्तमदनार व निकट पहाडी ककर जामसर का जिप्सम व लूनकरनसर का लवण क्षारीय खनिज स्थल है। तहसील मुख्यालय के चारो ओर सडक माग हैं और एक लम्बी रेलवे लाइन (वि०स० 1961 68) है। इसकी जनसख्या सन 1981 की जनगणनानुसार एक लाख चौदह हजार एक सौ तीस (114130) है।

वदिक कालीन प्रमाणो स सबधित इतिहासज्ञो का कथन है कि इस भू भाग पर पहले समुद्र हिलोरें लेता था। यद्यपि यह बता देना कठिन ह कि समुद्र कब हटा, किन्तु रामायण काल तक समुद्र का वणन मिलता है। रामायणकार पश्चिमी समुद्रीय क्षेत्र मे मरुध वा" और 'मरुका तार" दशो का विवरण देता है तथा द्रुमकुल्य सागर का भी स्थायीत्व मानता है।[1] पृथ्वी निकल आने का कारण और समय श्रीराम का पुनीतागमन बताया जाता है। श्रीराम के आग्नेयास्त्र से समुद्रीय जल सूख गया और स्थल पर छिद्र रुप जल स्रोत हो गया। उसके चौतरफा मरुप्रदेश या मरुका तार देश प्रसारित हुए। जिनम स यह भडाण प्रदेश श्रीराम के वरदान से पशुधन, दूध, घृत तथा अनेक औषधियो का सुखमय केन्द्र वन गया। पुराणो की सप्तद्वीप कल्पना मे पुष्कर के साथ कुरू जाँगल का भी पाठ है। श्रीकृष्ण-बलराम की सेना का द्वारिका से इन्द्रप्रस्थ का आना-जाना इसी जाँगल प्रदेश के मारफत हुआ करता था। महाभारत काल म यहाँ बसावट हो जाने के पर्याप्त आसार दिखाई देते हैं। उस समय यह प्रदेश गोपालक एव कुरू जाँगल का स्थान जान पडता है।[2] यह पहले बहुत बडा भाग था। पर सिन्धु देश के पूव में राजपूताने का यह रगिस्तान वतमान म मरूस्थल या मरुभूमि कहलाया है। प्राचीन वद्यक ग्रथ भाव-प्रकाश म भी जांगल देश की ऐसी परिभाषा है।

पहले यहाँ महान सरस्वती नदी प्रवाहित होती थी। इस क्षेत्र मे हडप्पा युग से लेकर मौय और गुप्तकाल तक विभिन्न प्राचीन सस्कृतियो का सगम होता रहा। इस महासरिता के तटवर्ती स्थानो पर पुरातत्व वेत्ताओ ने ऐसे अवशेष खोज निकाले हैं जो मोहनजोदडो और हडप्पा की ही सस्कृति के विस्तार हैं। यह भी माना जाता है कि सरस्वती घाटी और सिन्धु घाटी की सभ्यताओ में गहरा सम्बन्ध रहा था।

सरस्वती नदी या सारस्वत प्रदेश—यहाँ का समुद्रीय जल पश्चिम (अरब सागर) *की ओर गया, तब सरस्वती दृष्द्वती आदि नदियाँ भी शुष्क बन गईं।* धरती ने समुद्र जल विरह मे वध्यत्व धारण कर लिया और गहरे जल वाला दुलभ भाव वदरग, कुरू पयुक्त जीवन स्रोत ही शेष रहे। तब से यहाँ के निवासियो को मोटे छोटे खान पान और पहनावे पर ही अपना जीवन व्यतीत करना पड रहा है।[3] गेहू चावल के अभाव मे मोठ बाजरी के अन्न, वक्षो के मिष्ठ फलो के स्थान पर स्थलीय लताओ के मतीरे और महीन वस्त्रों का विस्मरण करक इकपल्ली दोवटी रेजे पर सतुष्ट रहकर सात्विक जीवन बनाया है।

सिन्धु सभ्यता क पश्चात इस क्षेत्र मे एक विशेष युग का आना पाया जाता है। उसमे सलेटी रग के विचित्र बतनो के हुए नमूने प्राप्त होते हैं। इस काल को पे टेड ग्रेवयर कल्चर' कहा गया है। फिर लेक एण्ड रेडवेयर' का युग माना जाता है। यहाँ वतना के

1 वाल्मीकि रामायण युद्ध काण्ड सग 22

2 कच्छा गोपालकक्षाश्च जागला कुरूवणका ॥ —भीष्म पव 9 56

3 श्री सरस चरित महाकाव्यम (दुर्गादत्तजी सारस्वत)

कुछ ऐसे टुकडे भी मिले हैं जो पुरातात्विक भाषा म इ वर्वेड फायरिंग प्रेशेस से पक्के माने गये हैं जिनके अन्दर का सारा हिस्सा स्याह, बाहर का ऊपरी भाग भी काला पर नीचे का हिस्सा लाल होता है। इसी स्थान म मौर्योत्तर कालीन सभ्यता का प्रतीक रग महल है और पास ही का लाखाधोरा हड़प्पन कालीन क्षेत्र है। कालीबगा भी यहा का इतिहास पिपासुओं के लिए बडा दर्शनीय स्थान है।

इस क्षेत्र मे अनेकानेक राजवश और मानव जातियों का आविर्भाव निवास हुआ हैं। सभवत मेर' लोग आडावळा मेरू की घाटिया से उत्तर तर इस मरूस्थल क्षेत्र मे पहले आये होगे। बाद मे मेव और मीना इस क्षेत्र म आकर जमे हैं। कौटिल्य ने राजा की उपाधि धारण करने वाली म लिच्छविक, वजिक, मल्लक, मुद्रक, कुकुट, कुरु और पाँचालादि लोगो का बताया है तथा काम्भोज, सुराष्ट्र क्षत्रिय, श्रेण्यादिक का वार्ता-शस्त्रोपजीवी कहा है।[1] इनके बाद यौधेय मालव साल्व, यादव भाटी साखले और जाटों का वणन मिलता है।

वसे तो यहाँ जाट जनपद के चि ह मिलते हैं, कि तु भाटी जाइया आदि के राज्या का भी पूरा पत्ता पाया जाता है। उनके साथ यहाँ के आदि भूपति प्राय जाट ही थे। सवत 1545 म बीकानेर नगर स्थापित करके बीकाजी न जाटा से हार्दिक प्रेम बनाना शुरु किया था।[2] यह राजनतिक काय पहले लूनकरनसर के तहसील क्षेत्र से ही आरम्भ हुआ था। अत यह तथ्य ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी प्रसिद्ध है कि "शेखसर के पाण्डु गोदार और सई के चोखे सियाग" ने बीकाजी का राज्य सौंपने म पहल की थी।

लूणकरणसर गाव का नामकरण—लूणकरणसर का नाम लूण (नमक) बनन के कारण पडा हो यही समव जान पडता है। पहले इस गाव को केवल सर" नाम से सम्बोधित किया जाता था। क्योंकि इस धरती के अ तर मे खारे पानी के बेहद स्रोत भरते हैं। प्राचीन समय मे उन्हीं के जल से नमक बनाया जाता था। तवारीख राज्य श्री बीकानर के पृष्ठ 245 पर लिखा है—"लोनकरणसर म नमक की आगर हैं और उनम खारी नमक पैदा होता है।' सवत् 1944 म नमक के सीगे मे तीस हजार मन नमक की आमदनी बताई है जो अग्रेजी इकरारनामे के अनुसार उसकी कीमत 69443॥। लिखी है। तत्समय सदर बीकानेर, चूरू राजगढ भादरा, हनुमानगढ, सुजानगढ, सूरत गढ के साथ यहाँ जकात महकमे का सायर कार्यालय भी बताया जाता है। नमक निकालने का व्यवसाय बद हुआ, सायर से एक चौकीदार रखा गया। किन्तु उसकी अनुपस्थिति में स्थानीय औरतें नमक के ढगल (पेपडियाँ) घास, लकडी एव छानो से ढककर चुरा लाया करती थी।

उस समय पिचोत्तरा चौधरियान, तय्यारी मकान व मरम्मत, जानवरान देवस्थान पुनश तथा मुलाजिमान, सवारान के वेतन वगैरह तहसीलीय मजूरी खच 6895।=)॥ था। तहसीलदार की तनख्वाह 50/ रुपये लगभग थी। लेकिन उसके चढ़ने बाबत एक घोडा रखा जाता था। तहसीलदार के अधीन दफेदार 1 सवार 15 जमादार 1 सिपाही 10 व कुल 39 कमचारी रहते थे। तवारीख मे लिखा है—"गिरदावर

1 कम्भोज सुराष्ट्र क्षत्रिय श्रेण्यादया वार्ताशस्त्रोपजीवन (11 1 160) आदि।
2 तवारीख राज्य श्री बीकानर पृ० 95 (मु० सोहन लाल)

दर बाबानेर क तअल्लुक लोनकरनसर भी है।' यान यहाँ के पटवारियो के काम सदर का गिरदावर जाँचता था। किन्तु अनूपगढ, सरदारशहर- रतनगढ व श्री डूगरगढ के पटवारियो का काम वहा के तहसीलदार ही देख लिया करते थे। सिवाय इन तहसीलो अन्य स्थानो मे नायब तहसीलदार भी नियुक्त थे।

रजिस्टर देहात बीकानेर के पेज 45 पर गाँव लूनकरनसर का करीब पतालीस साल पुराना वर्णन प्रकाशित है। जिसके अनुसार लूनकरनसर का रकबा 63,71 6)। खालसा मतालबा बन्दोबस्त 1 394=)।, मजरूआ=) पड़त और बजड (एक आना) लिखा हुआ है। उस समय आबाद घरो की सख्या 330 लिखी हैं। उनमे मर्द 754 और स्त्रिया 708 कुल आबादी 1462 बताई है। सभवत सन् 1941 की जनगणना के ये महत्वपूर्ण आकडे हैं। लूनकरनसर तहसील मे वि०स० 1940 तक 175 गाँव वसत थे।

इससे पहले लूनकरनसर म प्राचीन कुइयो वाले वास का पुराना नाम जोरावरपुरा सुनने म आया है। यहा 362 कुइया थी। वहा का एक बडा शमी वृक्ष जोरावरपुरे वाला खेजडा कहलाता है। जिसके पास धोरो से गाँव नायवाणे का रास्ता निकलता था। वहा के झेरे (पुराने कूए) को अब ग्राम पचायत ने भिड बधवाकर बद करवा दिया है। पर गणगौर का लोकोत्सव यही सम्पन्न होता है। वतमान समय, म मौहल्ले मे सरदार शहर राजलदेसर के काजी लोग आकर बस गये हैं।

लूनकरनसर[1] के पास बसते अन्य वास—जोगियान डलुवान, थोरियान और उच्छ गदशर आदि सब अब सम्मिलित हो गये है। काळवास अभी अछूता है। लेकिन आबादी लनकरनसर की टयूबवेल से आगे तक बढती जा रही है। नगरो की भांति महाजन लोग यहा पुराने वासिन्दगान है जो नगर वृद्धि मे अग्रणी माने जाते हैं।

सावजनिक स्थान—तहसील कार्यालय से दक्षिण डेढ कीलोमीटर बस्ती जोगियान म गोगाजी का दर्शनीय धाम गोगा मेडी" मन्दिर है। इस वास के पास ही डेलू तथा थोरी जाति की बस्तियाँ है। यही बणापीर जी का मन्दिर है। इन सबके निकट एक कूआ है, जिसको लूनकरनसर के सेठ श्री मूलचन्द बोथरा ने साठ वर्ष पहले जन हिताथ बनवाया था। फिर इसकी मरम्मत श्री जेठमल बोथरा द्वारा करवाई गई थी। कूए का पानी 'बळवळा"[2] है, पर विराइजणा (अस्वास्थ्यकर) नहीं है। यह वरूणालय कालू के पुराने रास्ते पर स्थित है।

तालाब—कालू की तफ इस रास्ते कोई तालाब नही है। पहले एक जोगियान बस्ती की काकड पर "बुडाणो"नाम की जोहडी थी। पर लूनकरनसर के मुख्य तालाब 'रायसर' और उदाणा" है। रायसर पश्चिम मे एव उदाणा कृषि फाम के रास्ते पूव म है। यहा की स्थलीय मिट्टी नमकीन होने के कारण वर्षा का पानी आते ही खारा हो जाता है। उदाणा के अन्दर एक कूआ है वह अब नहर के पानी से भरा रहता है। परन्तु रायसर पायतण के पास आर सी पी के क्वाटरस बन गये हैं। यहाँ जोगाणो तालाब

1 श्री रामचन्द्र बिहानी ने अपनी 'शिव भजनावली" पुस्तक मे बीकानेर महाराजा द्वारा गाव लूनकरनसर को जैतपुर के रावत ईश्वरसिंह को देना लिखा है, सो मैंने कहीं इतिहास में नही देखा।

2 चरपरा (पशुओं का)

तथा मूलातलाई नाम के छोटे नाडे भी हैं।

जगवाणो जगमोतियाँ, रायसरो तालाव । (प्रचलित लोकोक्ति)
फिट रे ऊदाणा तन, अेवड तिस्सो साव ॥

पुराना लोकजीवन—इस क्षेत्र म विभिन्न जाति, धम तथा सम्प्रदाय वाले लोग निवासित हैं, जो हिन्दू, मुसलमान तथा आदिवासी कहलाते हैं। पहले तसहील क्षेत्र के गावो मे ब्राह्मण, जाट और राजपूता के अनेक राजकीय ठिकाने थे। सारस्वत शासको का श्री डूगरगढ़ के पास एक किलानुमा गढ होने की वडी श्रुति कथाएँ प्रचलित हैं। ग्राम 'बामणवाली" सारस्वत राज्य का प्राचीन चिह्न है। सारस्वत कुण्डिया समाज म आज भी विरादरी पचायती अथवा अय सम्मेलन के समय, चौक जोडने की प्रथा राजाशाही और सामन्तशाही ढग पर राज्य परम्परा का आधार लिए चलती है। जाटो के राज्य स राठौड राज्य स्थापित हुआ है। कुछ वनिय ठाकुरो के ग्राम ठिकान भी यहा थे, परन्तु पुनय ठिकाने अधिकतर चारणो के थे। राजपूतो मे राठौड, चौहान साखला, भाटी, पवार, तवर प्रभृति इस क्षेत्रीय गाँवो के शासक जागीरदार रहे। पर राठौड इन सब म प्रवल व प्रमुख थे।

अन्य—इस क्षेत्र के ब्राह्मणा की अनक उपजातियाँ हैं तथा सस्कृति और पेशे भी कई तरह के अपना रखे हैं। वे तहसील के सब ग्रामो मे बसते हैं। महाजन लाग भी इस क्षेत्र के गावो म प्राचीन वासि दे हैं। व अपन-अपने ढग से गाँवो में खेती के साथ विणज (थोडा व्यापार) करते रहे हैं। अब प्राय बहुत से शहरो कस्बों मे जा बसे हैं। इनमें अनेक प्रकार की उपजातियो के लोग हैं, जो अपनी सुविधा अनुसार अलग-अलग कस्बो गावो म रहते हैं। तहसील के मुख्य ग्राम कालू म आसवाल और माहेश्वरी दो प्रकार के महाजन निवासित हैं किन्तु कस्बे लूनकरनसर मे ओसवाल और अग्रवाल हैं। अन्य गावों के वहुत से महाजन गत शती म अपना पूर्व निवास स्थान छोडकर अन्यत्र आबाद हो गये हैं उनका विवरण नीचे दिया जा रहा है—

प्राचीन निवास स्थान जहाँ निवासित थे।	उपजातिया महाजनान	वतमान निवास स्थान जिसम आबाद हैं।
1 गाव कुजटी (तह० लूनकरनसर)	साड (आसवाल)	कालू
2 " खारी ( )	बाठिया वुच्चा "	लूनकरनसर
3 " जेसा ( )	बाठिया (")	बीकानेर
4 " बीझरवाली (')	डागा (")	गगाशहर
5 ' खियेरा[1] (')	बोथरा (")	लूनकरनसर और कालू
6 " उदेसिया (')	पुगलिया (")	श्री डूगरगढ
7 ' गांटा (")	बरडिया (")	कालू अब लूनकरनसर
8 " भाडेरा (')	पारख (")	श्री डूगरगढ़
9 " कांकडवाला (')	चोपडा (")	लूनकरनसर

1 खियेरा के कतिपय वोथरा लूनकरनसर आकर बसे, किन्तु एक परिवार (श्री भूर सिंह बोथरा का) वि० स० 1987 के पास कालू का निवासी बना। काशीराम डूगरमल, मगल चन्द चौथमल श्रीचन्द आदि सात सन्तानें थी। इनके विवाह यही आय हुए।

प्राचीन निवास स्थान जहाँ निवासित थे।	उप जातियाँ महाजनान	वतमान निवास स्थान जिसम आबाद हुए हैं।
10 गाव महाजन (तह० लूनकरनसर)	रांका (ओस०)	राजलदेसर
,, ,,	छाजेड़ (")	सूरतगढ
11 " खोखराणा (")	सेठिया (")	कालू
"	दफतरी (")	प्रेम पुरा गगाशहर एव खारराणा
12 " गारब देसर (")	बोरड (")	कालू, गगानगर, पवरा डूगरगढ़
13 " कुम्भाणा (")	नवलखा (")	सरदार शहर, पीली बगा सूरतगढ श्री डूगरगढ कालू
13 " गारबदेसर (")	बाहेता बागरी (महेश्वरी)	कालू श्रीडूगरढ
	डूढानी राठी	महाजन सूरतगढ।
14 " चादसर (")	राठी (")	कालू
15 " आडसर (")	भँवर (")	काल
16 " जसव तगढ (")	कर्वा (")	कालू
17 गांव कु भाणा (तह० लून०)	लाखोटिया (माहेश्वरी)	मगरिया पाली बगा
	मूधडा (")	अजुनसर अनूपगढ
	सेवग, यति	कालू
18 महाजन (")	झवर (माहेश्वरी)	कानपुर
	सोमाणी लढाणी (,)	सूरतगढ गगानगर
19 " सूई (")	मूधडा (,)	जेतपुर।

तहसील लूनकरनसर क्षेत्र के वतमान गावा म महाजन उपजातियां निवासित हैं—

1 गाव दुलमेरा (तह० लूनकरसर)	कर्वा	(माहेश्वरी)
2 गाव शेखसर ( )	डागा	(ओसवाल)
3 गाव जेतपुर (")	राठी, पेडीवाल	
4 महाजन	बिहानी सोमानी (माहेश्वरी)	
5 गाव मलकीसर (") ( )	बोथरा	(ओसवाल)

पहल राजासर गाव म माहेश्वरी महाजन थे अब करणीसर म नहीं है। राजपुरा हुडान मे श्री रामचन्द्र अग्रवाल का एक घर था।

तहसील लूनकरनसर का गाव भाडेरा पहले उदयपुर के महाराणा की जागीरी पट्टे म था। फिर गगासिंह जी के जय ती महोत्सव पर श्री हरिसिंह (सत्तासर) को भाडेरा जागीर म दिया गया। गाव मे पहले कुइया था जिनमे कळकळा पानी था। स० 2010 म गाव के लोगो न चन्दा एकत्रित किया और थोडा दूरी पर कुआ बनवाया। स० 2012 म कूआ बनकर तयार हो गया मगर पानी खारा ही (पशुओ के पीने लायक) निकला। इस कूऐ के बनवाने बाबत श्री डूगरगढ के पारखो न ढाई हजार रुपयो का

च-दा दिया। पारख इसी गाव भाडेरा से आकर श्री डूगरगढ के निवासी बन हुए है।[1]

लूनकरनसर मे पहले चादमल, बिरधीच-द विरमेचा का घर कचेडी के आगे था। पानी के बेहद अभाव म उनके घर मीठे पानी का बडा कुण्ड[2] था और एक चौखड सुबह तथा एक शाम को नाथवाण से (मीठा पानी) लोगो को पिलाने हेतु नित्य आया करता था। अेक ऊँट और हाली (नौकर) इसके लिए नियुक्त थे। बाहर बडा चौबारा था। गाव के पुवना जन यहा दिन भर हथाई एव चोपड पासे खेला करते थे। मीठा पानी तम्बाखू और अमल दिए जाने की इस घर परम्परा थी। सेठ अच्छा कारोबारी था। दुर्भिक्ष के समय सारी भडाण पट्टी को यही ढाबता (रखता) था। दूर-दूर तक उधार चलती थी। मुनीम गुमास्तो के सिवाय चारो ओर के लिए तकाजा करने वाले लोग रहते थे। अब उनके वशज (श्री वृद्धिच-द व श्रीनेम च-द के) कालू मे बसते हैं। जिनमे श्री लूनकरन वहाँ का मुखिया एव मा य व्यक्ति कहलाता है।

यहा एक कहावत प्रचलित है कि—"शहर वस तो मानवी गाव वस तो ढोर !" अत एव इस क्षेत्र के चतुर महाजन लाग अधिकतर गावो से कस्बो मे पहुँचकर व्यवस्थित हो गये। इन लोगो को अपन छोटे छोटे गाव छोडकर चले जाने का कारण अपनी और अपने परिवार की जि-दगी बनाने का सवाल ठीक से इनके सिर चढकर जादू की तरह बोलने लगा था। सुविधा वाले स्थाना पर आये, सुरक्षित हो गये। अच्छे विवाह सम्ब-ध होने लगे। आगे कई तरह के बाजार भायाम मिल गए तथा व्यापारिक ढग से भी विडम्बना पूरी तरह से हल हो गई। नये कस्बा मे अब बडी जन-सख्या के साथ रहकर बनियो से सेठ एव साहूकार कहलाने लग हैं।

व्यापारीजन—भडाण के गावो में पानी का सवत्र सर्वोपरि अभाव था, जो नित्य प्रति दूर दूर से लाकर मिटाना पडता था। वणिक वश ! विचारशील परम्परा के कारण हर वक्त भयभीत रहना पडता था। फिर भी ये लोग "व्यापारे वधते लक्ष्मी" के अनुसार अ-य लोगा से कुछ अच्छी स्थिति म हुआ करते थे। तब चोर डाकुओ का डर भी सदव

---

1 लगभग पचास साल पहले पारखो ने श्री डूगरगढ में अपने सु-दर भवन बनवाय। तब किसी मसखरे ने ईर्ष्यावशात पारखा की साखी जोडी थी जो यथा समय वहा अब भी बोली जाती है—

> भाडेरा सू पारख आया भला चिणाया ढूढा।
> गाव साम पूठ राखी, मसाणा दिस मूढा॥

लेकिन इस कविता के पहल चरण का पहला शब्द मगलात्मक मगण (भाडेरा भडारी) है जिसका स्वामी देवता, भूमि और फल "श्री" है। दूसरे चरण का शब्द भी शुभ है। 'भ' दग्धाक्षर है कि-तु 'भा' गुरू बाकर शुभ हो जाता है तथा दूसरे चरण का मला श-द भी ुभ है। अत भ' का दाप परिहार हो गया है। पारख अच्छी स्थिति मे निवासित है। इनका गत निवास स्थान भाडेरा अब नये कूअे के पास ' हरियासर" नाम से नहर सिंचित हरा भरा मन भावना गाव हो रहा है। राजनतिक नेता श्री हरिराम विश्नोई ने इसको यहा नये ढग से ला बसाया है।

2 हर व्यक्ति मकान बनाते समय वर्षा से छत का पानी उतरने की जगह छोटा बडा कु ड बनाया करता। वर्षा होती पानी आता उसे सुरक्षित रखते हुए लोटा-लोटा लेकर साल भर काम लेते। ग-दला तथा बेस्वादु जल भी गीला (आद्र) जानकर पी जाते थे।

लगा रहता था । इसलिए गाव के ठाकुरा एव अधिकारिया से भी हर समय घायल बना रहना पडता । उनके सामने देखने की भी इनकी हिम्मत नही होती । यदि थोडा बहुत मन मुटाव बन गया तो उनके आव इशारे से घर फोडा (डाका) हो गया । डाकुओ के मुकाबले मे इनकी दुबलता कायरता की अनेक हास्य व्यग्यात्मक कहावतें प्रसिद्ध थी । यथा—

चार चोर चौरासी वाणियाँ, बे कर बापडा अेकला वाणिया ।
ठौड कुठौड गाव को गोरवा, वखत, वे वखत सूरज की उगाळा ।
मार, कुमार छाणा री मार गाळ कुगाळ आवो सा सेठा !!

(एक बार पूरे चौरासी (84)ग्रामीण सेठा को चार (4) चोर मिल गये । बेचारे वे अकेले चौरासी बनिये उन चार चारो का सामना कसे करें ? उनको वह स्थान भी गाव का गोरवा (गाव से निकट लगता स्थान) कुस्थान पडा और समय भी विपरीत सूर्योदय का था । उन बनिये महाजना को मारने पीटने के लिए चोरों के पास अरण्य के छाने (साधारण सूखा गोबर) भयावने हथियार थे तथा लुटेरे गालिया भी बडी फोस (गन्दी), सेठा के सम्बोधन से बक्ते निकालते । ऐसी विषम स्थिति म बेचारे चौरासी बनिये चार चोरो का मुकाबला कस कर सकत थे ।)

राजस्थान म जनी हो अथवा सनातनी, बनिये व्यापारी सब महाजन कहलाते हैं। इनम सरावगी श्रीमाल, माहेश्वरी, अग्रवाल पोरवाल एव बीजावर्गी सब सेठ साहूकार नाम से सबोधित किये जाते हैं । इनकी सहस्र खापें तथा गोत्र हैं । ये बडे गम्भीर, चतुर एव व्यवसायी होते हैं । देखिए यहाँ के अन्य वग जातीय रहन सहन एव रीति रिवाज भी ! यथा—

कुडिया के सारस्वत ब्राह्मण— आद्य सारस्वतो विप्र—नदा चाद्या सरस्वता"
यहाँ ब्राह्मणा म सारस्वत आदि ब्राह्मण ह और नदिया म सरस्वती का स्थान अग्रगण्य माना जाता है । सरस्वती के लिए सारस्वत ब्राह्मण काश्मीर सिंध और पजाब तक निवासित हुए ह । वे पजाब से हरियाणादि प्रदेशा मे भी आये है । लेकिन हमारा यह क्षेत्र सारस्वत, ब्राह्मणों का पुराना मुख्य स्थान है और सारस्वत प्रदेश कहलाता है । सारस्वतो की उत्पत्ति का वणन बडा विस्तृत है । वतमान सारस्वत भडाण के सिवाय रुणिया हद से गोदारा और उच्छखलदेशर के थोरी आदि अनेक जाटा के साथ मालानी की ओर भी गये हैं तथा वहाँ तमाम जाटा के पुरोहित बने हैं । पर तु यहाँ के गादारो को ये मुख्य यजमान मानते हैं । कृषि करते हैं अत तम्बाकू भी पीते हैं । पर तु इनकी बिरादरी का शासन वभव बडा राजा शाही आदश एव वैधानिक है । ये अपने पूज्य पूवज महर्षि सरस महाराज का बडा प्रताप बतलाते हैं । सारस्वा गोत्र इनमे शिरोमणि माना जाता है। बिरादरी में इन्ह राजा की पदवी है ।[1]

मारस्वा सिरदार क ऊभा बाग म
फड फट तोडे फूल क टाग पाग म
लू माळी तरवार क, मोगे हाथ म
अमलें हार उमाव क, हाकम साथ म

गौड—कुछक द्विज वशो का विकास के द्र होते हुए भी हमारे आस पास इनकी सख्या कम ही रूप म निवासित है । जनरल कनिघम ने गौड का पुराना नाम ही गौड

---

1 पहले इनका एक गढ श्री डूगरगढ की जगह स्थापत्य था वहीं के कलिय राजपूतो ने माँगकर अपने कब्जे कर लिया ।

बताने की चेष्टा की है। जाज कम्पवेल ने गौड को मारस्वत शाखा से सिद्ध किया है। इनिहासन, गालव ऋषि की इस सतान गौड को बगाल से आने का प्रमाण देने है। इनकी दूसरी शाखा गुजरगौड है। वे अपनी उत्पत्ति गौतम महर्षि से बताते हैं। गुजर गौडा की चार गोत्र और चौरासी खापे हैं। किन्तु यहाँ पत्नारिया उपाधिया शाखा गौत्र अधिक हैं।

पारीक—पारीक ब्राह्मणो की भी 103 खापे मानी जाती हैं। लकिन य अवटक (पद्या) के नाम है। इनकी उत्पत्ति पाराशर ऋषि से सिद्ध होती है। ये उत्तर पश्चिमी भागों से आकर नागौरीय क्षेत्र मे बसे हैं। ये लोग अधिकतर कृषि करते हैं। हमारे यहा इनका कुनबा बडा है जा व्यास, बोहरा, जोसी तिवाडी आदि उपजातियाँ है।

खडेलवाल—खडेलवाल महर्षि जिसके नाम पर जयपुर राज्य म खडेला ग्राम बसा है, सारे खडेलवाल वही के गिने जात हैं। इनकी 52 शाखायें हैं और य भी कृषि एव महाजनों की नौकरी करते हैं। यहाँ पीपळवा चोटिया और जोशी ही अधिक प्रसिद्ध हैं।

पुष्करणा—पुष्करणा शब्द की व्युत्पत्ति पुष्टि से है जिसका अथ समथन होता है। ये पहले पडौसी देश सिंध से मारवाड मे आये, इसलिए भाषा म विशेष उलझाव नहीं हुआ। य विशेषकर राज्य सेवा या अ य नौकरियाँ करते हैं। कनल टॉड के कथना नुसार जोधपुर महाराज तख्तसिंह के समय में, यह समाज, उ नति के शिखर पर था। इन्ही को देश दीवानादि के बडे बडे ओहदे मिलते थे। मिस्टर जान विलसन के कथना-नुसार इस जाति की उत्पत्ति बडी विवादास्पद है। पर तु 14 गोत्र और चौरासी खापा में इनका समाज प्रसरित है। पुरोहित व्यास कल्ला, बोहरा, रगा जोशी और उपाध्याय आदि जातियाँ बीकानेर मे अधिक हैं। इनके ज म विवाह और मृत्यु के नेग-रिवाज अपन अजूबे तथा पथक हैं।

श्रीमाली—श्रीमाली और पुरोहित इस क्षेत्र मे ही नहीं, सारे बीकानेर राज्य म भी अ य ब्राह्मणो की अपेक्षा कम हैं। फिर भी पुरोहितों की यजमानी, राजा महाराजाओ तथा ठाकुर जागीरदारो से सबधित है। अत यहाँ के पुरोहित जर जमीन एव सम्मान सम्पन्न रहे हैं और राजपूतो की रीति रिवाज मानत हैं तथा राज पुरोहित कहलाते हैं। ये अपने कम-काड, श्रीमाली ब्राह्मणों से करवाते हैं। इनकी खापे भी खूब होती हैं। सनाढय और का य कुब्ज ब्राह्मणो की आबादी भी यहाँ कम है। पर पालीवाल द्विज कहीं कहीं मिल जाते हैं। जोशी अथवा साचोरा ब्राह्मणो के इस क्षेत्र म नाम मात्र ही बाले जाते हैं। कनल वाल्टर ने कहा है कि ये देशी व्यापार करते हैं और इनके साथ राज्य से रिहायती व्यवहार होता है।

दायमे—छनियात ब्राह्मणो म दायम (राज० में) अधिक सख्या म पाय जाते हैं। य लोग अपनी उत्पत्ति दधीचि ऋषि से बताते हैं। इनकी कुलदेवी का नाम दधिमथी है जिसके नागौर जिले म मदिर हैं। वहा आसोज महीने मे गोठ मागलोद नामक मेला लगता है। इनकी औरता के अपन अलग रिवाज हाते हैं। इनमे प्राय पढे लिखे लोग होते हैं जो नौकरी करना पसद करते हैं। ये वेदपाठी एव कथावाचक भी होते हैं। इनके अनेक गात्र हैं जा नागौर जिले के गाँवा के नामो पर प्रसिद्ध हैं। जसे आसोपा, कासेलिया, झोडवालियाँ आदि।

जोतकी—ब्राह्मणों का एक वर्ग पंच गौड़ ब्राह्मणों के समुदाय से निकला हुआ डाकोत थावरिया, शानिसरिया, देशांतरी और भड्डली आदि नामों से पुकारा जाता है। कहीं कहीं इनको डक ऋषि की संतान भी बताते हैं। ये लोगों को दिनमान बताकर उनके मन को भाए रहते हैं। तीर्थ स्थानों में यात्रियों के सहायक का काम देते हैं तथा सम्मान पाते है। ये शकुन ज्ञान एवं ज्योतिष विद्या में निपुण शनि के उपासक होते हैं। जोतकी भयंकर दान लेने में अग्रणी कहलाते हैं। इनका यही पेशा है कि हरेक व्यक्ति पर से अनिष्ट जनक प्रभाव हटाने के लिए शनि महाराज की माला फेरते हैं और काला क्रूर दान लेते हैं। ऊँ शनैश्चर प्रीतो शांति करोतु सदैव सुख।

अचारज—पुरोहिताई करने वालों का एक वर्ग अचारज अथवा तारग कहलाता है। इसे यहां कांटिया एवं बुरिया भी कहा जाता है। वैसे तो आचार्य का अपभ्रंश रूप ही अचारज शब्द बन जाने की विकृति जान पड़ती है। किंतु मृतक व्यक्ति का क्रिया-कर्म, भोजन दान और मृतक का सब सामान ग्रहण करने के कारण ही इसे निम्न जान-कर कांटिया या बारला कहा जाने लगा है। पादरी शेरिंग का कहना है कि अचारज कानकुब्जों की मूल पारी शाखा की उपशाखा के सवालाखी नाम के ब्राह्मण हैं। हमारे यहाँ ये मृतक के क्रिया कर्म घर से बाहर बैठकर करवाते हैं। इन्हें यहाँ घृणित मानकर व्यंग मे महा-ब्राह्मण बोलते हैं। लेकिन इनकी आबादी बहुत थोड़ी होती है। कालू में इनका एक भी व्यक्ति न होने के कारण हर मृत्यु के समय गाँव गारबदेशर या सहजरासर से बुलाये जाते है।

गुरड़ा—गुरड़ा जाति के लोग मेघवालों के गुरु एवं ब्राह्मण होते हैं। वे कहते हैं हम ब्राह्मण हैं जो ब्रह्मा के पुत्र गर्ग के वंश में उत्पन्न हुए हैं। ये लोग मेघवालों के विवाहादि सब संस्कार करवाते हैं तथा बड़े विज्ञ एवं चतुर माने जाते हैं। इनकी चालीस खापें बोलती हैं। कालू के मेघवाल गारबदेशर के गुरड़ों को आध्यात्मिक गुरू मानते हैं। क्योंकि यहाँ गुरड़ों का एक भी घर नहीं है।

ब्राह्मण वेश के सेवग—सेवग सूर्य के उपासक और पुजारी होते है। यहाँ इस जाति में अनेक कवि लेखक हुए हैं। इनको भोजक भी कहा जाता है। जयपुर में ये लोग व्यास कहलाते है। संभवत प्राचीन समय में ये ब्राह्मण थे। इनमे गूजर गौड़ो, खंडेलवालों तथा पुष्करणा के गोत्र सम्मिलित हैं। ये शाक द्वीप के मग ब्राह्मण कहलाते हैं। भोज वंश की कन्या के साथ इनका वंश चला है। प्रथम सूर्य मंदिर के पुजारी बने और फिर इनके वंशज बराबर पुजारी का कार्य करते रहे। ये यज्ञोपवीत पहनते हैं पर ब्राह्मण इनको अपने से अलग मानते हैं। कारण—सेवग जैन मंदिरों के पुजारी होते हैं और ओसवालों के हाथ का बना भोजन ग्रहण करते हैं। ये ओसवालों के घर रसोई बनाने तथा निमंत्रण देने जैसे निम्न कार्य करते हैं और उन्हीं से दान दक्षिणा लेते हैं। मिस्टर इबटसन के मतानुसार यह ब्राह्मण, राजपूत तथा जोगिया की मिश्रित जाति है। (वैसे तो जातियाँ दूसरे देशों में भी मिश्रित होती रही हैं किंतु यह मिश्रण जितनी शीघ्रता विलक्षणता से मध्य एशिया में होता रहा—वैसा शायद ही कहीं रहा हो —"बौद्ध संस्कृति पृ० 227 रा० सांकृत्यायन)।

नायी—भारतवर्ष में नायी जाती की संख्या करीब एक करोड़ है। नायी शब्द उसी 'णीञ प्रापणे (Ni To Lead) धातु से बना है, जिससे नेता और नायक बने

है और तीना का अथ 'लाडर' है। प्राचीन काल म क्षौर कम, फशन के लिए नहीं, धार्मिक, सामाजिक, राजनतिक और आयुर्वेदिक कृत्यों का अग था तथा वज्ञानिक ढग से किया जाता था। इसलिए भारतीय जन समाज न नायी को (1) धार्मिक कार्यों म ★ अध्वयु (यज्ञ का नेता) (2) सामाजिक और (3) राजनैतिक कार्यों म ★सविता ('षु-प्रेरणे' धातु से सबको प्रेरणा करने वाला पथ प्रदशक) ★ग्रामणी (ग्रामा या ग्राम पचायता का अग्रणी नेता) वायु (क्षौरकार होन से प्रत्येक मे वयक्तिक सम्पक म आने के कारण सच्चा गुप्तचर, राजदूत और सामान्यदूत) और आयुर्वेदिक रूप मे देश का ★चिकि सक (भिषक और शल्य चिकित्सक) स्वीकार कर लिया था। आयुर्वेद तथा प्रत्यक गहस्थ की आन्तरिक परिस्थितियो का विशेषज्ञ और विश्वस्ततम व्यक्ति होने से यजमाना न अपनी सतान के विवाह सबध और फिर राजपूतो ने अपन ★सुधार (सूपकार पाचक) तक के काम सौंप दिये थे। इस प्रकार प्राचीन काल म नायी देश और समाज का अत्यन्त विश्वस्त एव आवश्यक व्यक्ति माना जाता था। यहाँ तक कि नन्द और मौय सम्राटा के रूप म राज्य सचालन भी किया।[1] अथव० 6168।1 म नायियों के आद्य पुरुषा वायु और 'सविता' ऋषि बताये गये हैं। (ओं आयमगात्सविता० ।।) इस वेद मन्त्र म परमेश्वर ने आज्ञा दी है कि 'हे वायो! य० सविता आ गये! आप अपने साथ छुरा (उस्तरा) और गम जल लेकर आइये और क्षौर कम कोजिये।' इस तरह से अनक धम ग्रथा ने अनेक जगह नायी को ब्राह्मण कहा है। नायी कम ब्राह्मणोचित कम है जो महर्षि अगिरा, महर्षि सविता एव महर्षि वायु तथा वशिष्ठ, सुग्रीव, नारद और हनुमान आदि न किया है।

विविध-काय व्यस्तता और कायाधिक्य के कारण नायी का विद्याध्ययन के लिए अवकाश कम रहने लगा और विद्या के अभाव के कारण इसके व्यवसायो की महत्ता और आदर में कमी आने लगी। पौरोहित्य और आयुर्वेद का महत्वपूण भाग इनके हाथ से निकलता गया और अग्रेजी राज्य के आने पर सावजनिक व्यवसायिक स्वतन्त्रता एव सजरी, रेलवे, डाक, तार, टेलीफान, समाचार पत्र, फोटोग्राफी आदि न मिलकर नायी जाति के रहे सहे जर्राही, दूत काय, विवाह सम्बन्ध विधान का अन्त कर दिया। इसके पास केवल क्षौर कम रह गया था, सो अब उसका भी सेफ्टीरेजर ने सफाया कर दिया है।

वर्तमान म क्षौरकम अन्य लोग भी करते हैं परन्तु समाज मे ब्राह्मण के पश्चात नायी की ही प्रधानता है। लोक में नायी का दिखाई देना शुभ माना जाता है। प्रो० विल्सन ने भक्तमाल के आधार से लिखा है कि "सेन भक्त नायी विष्णु का अनन्य उपासक था और उसके वशज कुछ काल तक बाधवगढ राजाओं के गुरु रहे।"

चौधरी, राजा, महत्ता एव मालक—पजाब म नायी उस्ताद व गुरु कहलाता है। वह पश्चिम मे ठाकुर महाराष्ट्र म पडित, कपिला व मेनपुरी में तथा टेरी राज्य मे पाण्डे नाम से प्रसिद्ध है। वह पत्रा पचाँग बनाता है और जनेऊ रखता है। पुरोहित के न पहुँचने पर विवाह कम करा देता है। नायी, ब्राह्मण का सहयोगी समान कर्मा कम पेशा

---

1 उपरोक्त तारांकित शब्द धम ग्रन्थो मे सस्कृत साहित्य म तथा लोक म नायी के लिए प्रयुक्त हैं

है। अनेक पूर्वी प्रदेशो म 50 और 50 के हिसाब स ब्राह्मण क साथ आधी दक्षिणा लेता है।[1] नायी यजमानो के केशो का प्रसाधन (सस्कार) करता[2], नायीनें भी यजमानिन के केशो का प्रसाधन (गु थन) किया करती थी। प्रथा थी कि नायिन केशों का गु थन कर चुकती, यजमानिन उसके परो लगा करती थी।

राजस्थान म मारू, बद और पुरबिया नायी है। पर मारू यहाँ का प्रधान रूप से आदि निवासी है और श्रेष्ठ समझा जाता है। नायी बडे चालाक माने जाते हैं। "नूत्या बामण जीमग्या नाई" अर्थात ब्राह्मण के निमन्त्रण पर नायी ने जाकर खाना खा लिया। पर अब तो नायी हरिजन भाइयों की धमकी से लाचार हैं। वे अपराधी बनाये जा रहे हैं। हिन्दू महासभाई (परिषद वाले) लोग प्रस्ताव पास करके नायियो पर जोर देते हैं कि वे इनकी हजामत बनावें। (यद्यपि साहूकार, ब्राह्मण, क्षत्रिय कहलाने वाले लोग बेरोक टोक हरिजनों के घर खान पीन लग जावें तो अछूतता एक दम नष्ट हो जाय। तथापि वसा न करके केवल नायी को दबाया जा रहा है) नायी तग एव परेशान होकर उक्त काय करत हैं। सबके खेतो की सींव वैसी की वैसी है तो नायी के घम खेत की बाड व सीव ताडकर उसका खेत क्यों उजाडा जा रहा ह ? अत्रिस्मृति मे लिखा है—

अगीकारेण नातीनां, ब्राह्मणानुग्रहेण च।
पूयन्ते तत्र पापिष्ठा महापात किनोऽपि ये॥

(अर्थात् नाति के स्वीकार कर लेन और ब्राह्मणो की कृपा स बडे बडे पापी और महापातकी भी पवित्र हो जाते ह।) इनके 'नायी ब्राह्मण' 'सविता बधु, 'सेन सन्देश' तथा सन पुत्र' आदि अनक पत्र पत्रिकाएँ निकलती हैं।

यति—जन सम्प्रदाय क आध्यात्मिक गुरू विवाहादि के समय पडितों की तरह कुछेक सस्कार भी करवा दिया करते थे। व्याख्यान देते, ब्रह्मचय की महिमा बताते और अहिंसा व्रत ग्रहण करवाने के लिए उपदेश किया करते थे। ये सिर और परा से नगे रहते। एक बडे झोले मे पात्र रखकर जनियो के घरो से गोचरी (भोजन) लाया करते थे। अपन चौबीस तीथकरा को पूजते, परन्तु श्री ऋषभनाथ, श्री पार्श्वनाथ तथा श्री महावीर स्वामी का अधिक महत्व देते। गुजरात का पालिताना इनका तीथ स्थान ह, वहाँ प्रतिवप मेला लगता ह। यति लोग हाथ की सफाई जानन क सिवाय शिक्षा तथा चिकित्सा का काय भी किया करते थे। य अविवाहित रहते और पढन लिखने के कार्यों में अग्रणी कहलाते। ये राजपूतों के भी गुरू बन जाया करते थे। इनका आश्रम उपासरा कहलाता। यतियो के यहाँ अनेक गच्छ हुआ करत थे। यहा खरतरगच्छ का अधिक प्रचलन था। पर अब इस क्षेत्र के यतियों की गद्दियाँ समाप्त है तथा उपाश्रय निराश्रय।

जोगीनाथ—जोगीनाथ भी गुरू कहलाते हैं। ये गोरखनाथ पथ के अनुयायी, शिव पूजक कमडल खप्पट, चिमटा व गोचरी से काम लेते हैं। जोगीनाथ पातजलि के वेदान्त की विचारधारा को मानने वाले होते हैं। कान फडवाते ह और एक आध ब्रह्मचारी

1 कछुक काल बीते सब भाई बड भये परिजन सुखदाई।
चूडा करण कीन्ह गुरु आई विप्र दक्षिणा पुनि बहु पाई॥ (श्री तुलसीदास)

2 नायी ब्राह्मण का नामा तर ह। "वेद व्यास नय" ये नाम ब्राह्मण के हैं। नय से नाय और उससे नायी बना हैं। (ब्राह्मण निणय पृ० 314 315)

चाकी गृहस्थी होते ह । नेपाल म इनका तीथ स्थान ह । य शव का गाडते ह और उसे समाधि कहते हैं । जोगियो के दो थोक, कनफटे और जोगेश्वर । कनफटे नाथ बडे सम्मानित होते ह । इनमे जालधर नाथ के बारहवें शिष्य न जो शाखा चलाई वह कालवेलिया कहलाई है । ये रावल जोगी निम्न स्तर के होते हैं ।

गुसाई—गुसाई अखाद्य भी सेवन कर लेते हे । शरीर मृत्यापरांत दफनाते हैं । महादेव के उपासक तथा देवी पूजक व घरबारी होते ह । इनके शव घर मे ही गाडे जाते हैं और उस पर चबूतरा बनाकर शिव मूर्ति बठाते ह । गिरी, पुरी, भारती, वन, अरण्य, पवत, सागर, तीथ, आश्रम, सरस्वती आदि दस भेदो से ये दसनामी कहलाते ह ।

स्वणकार—जसे लाहे की चीजें बनाने वाला लोहार वसे ही सोने चाँदी के कारीगर सोनी अथवा सुनार कहलाते ह । सुनारो की यहा मेड और वामनियाँ दो उपशाखाएँ ह । मेड सुनार मात पूजक तथा शक्ति धर्मावलम्बी होते हैं । किन्तु वामनिया सुनार विष्णु के उपासक कहे जाते ह । इनम अनेक लोग जनेऊ पहनते हैं और अपने का उच्च कुलीन बताते ह । ये अपनी एक अन्य भाषा बोलते ह । मेडो की कडेल, सोलीवाल तुगर, अगसइया, मशेन, लुद्र, सुरिशा देवल, राडा आदि अनेक उपजातियाँ होती हैं । वामनियाँ सुनारो मे भी काला, बदमेरा, जसमतिया, बूचा, खतोर, महेवा वगरह अनेक उपवश होते हैं । ये सब अपन व्यवसाय म बडे माहिर और पटु हैं । बनिया जसी चतुर और राजपूत जसी कठोर जातिया का य ही अपने कब्जे मे लेकर कमाते हैं । वतमान स्वणकार जाति मे गाँव काटडी की सावित्री देवी एक प्रसिद्ध सती के रूप म पूजी जाती है ।

खाती—उत्तर पश्चिम प्रदेश म बढई, पजाब म तरखान तथा गोडवार जिले म सुतार कहलाता है । जालौर जिले मे इसको विनायक नाम से पुकारते हैं । खाती शब्द की उत्पत्ति काठ से है कि काठ लकडी का नाम है जिसकी विभिन्न वस्तुएँ खाती बनाता है तथा खाती एव सुथार कहलाता है । य विश्व कर्मा को अपना आदि देव गुरू और सावित्री का कुल देवी मानते हैं । राजस्थानी साहित्य मे खाती 'रत्ना' का माहेरा एक अनूठा एव मनोहारी भक्ति काव्य है । इनम मेवारा, पुरबिया, ढल्ला असालिया आदि उपवश माये जाते हैं ।

यहा क खातिया म कुछ लाग जनऊ पहनते हैं और मास मदिरा से दूर रहते हैं तथा अपन नाम के साथ जागिड ब्राह्मण शब्द का प्रयोग करते हैं । राजस्थान के खाती लकडी लोहे और स्थापत्य कला के प्रसिद्ध कारीगर होते हैं । हमारे यहा के खाती गाँवो के लिए बडे उपयोगी कलाकार एव मस्तिष्क सम्पन्न व्यक्ति प्रसिद्ध हैं । कुछ खाती पुराना अपना काम छोडकर नेतागिरी करते हैं । वतमान समय मे बहुत से शिक्षित, जागिड ब्राह्मण पाये जाते हैं ।

कुम्हार—कुम्हार का व्यवसाय हिन्दू तथा मुसलमान दोना करते हैं । लेकिन कुम्हार शब्द की व्युत्पत्ति सस्कृत क कुम्भकार शब्द से है । हिन्दू कुम्हार अपन को प्रजापत कहते हैं । ये अपनी उत्पत्ति का सम्बध ब्रह्माजी से जोडते हैं । कुलालेभ्यो नमो"—मनुष्य समाज के लिए इनका बतन बनाने का काय बडा महत्वपूर्ण हैं । इनकी

देश वाली, पूरबी, खटेर आदि सात उपजातिया ह। पर यहा के माम कुम्हार अधिक प्रसिद्ध हैं। अब य लोग पढने लिखन भी लगे हैं। कुम्हार शिव, विष्णु और आई माता के उपासक होते है। श्री कोलायतजी मे इनका एक बडा धार्मिक स्थान है। इनकी जातीय पत्रिका पजापति जगत (मासिक) भी निकलती है।

लोहार—राजस्थान मे लोहारा का विकास राजपूत जाति से हुआ जान पडता है। ये लोह का निमाण व्यवसाय करने से लोहार कहलाते है। इनमें हिन्दू तथा मुसलमान दोनों धर्मा के लाग होते है। राजस्थान म लोहारों की गाडिया और मालविया दो उपजातिया ह। गाड़िया लाहार पहले एक स्थान पर घर बनाकर नही रहते। वे गृहस्थी का सामान अपनी गाडिया पर लादे एक गाँव से दूसरे गाव तक आते जाते हुए गाडिया लोहार' कहलाते थे। वे चित्तौड को अपना पूव स्थान बतलाते और देश को स्वत त्र करवाने की स्वम प्रतिज्ञा से महाराणा प्रताप के साथ से अपने को खानाबदोश जीवन व्यतीत करन की शपथ सिद्ध किए इधर उधर घूमते फिरते थे। अब श्री माणक्यलाल वर्मा ने इनकी उक्त प्रतिना का स्व० प्रधान म त्री श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा समाधान करवा दिया है।

मालविया, मालवा स राजस्थान म आय हुए मालूम होत हैं। य गाडिया लोहारो स पथक मान्यता लिए हैं। परन्तु काली वस्तु का व्यवसाय करने के कारण य सदा से अस्पश्य मान गये ह। जोधपुर, नागौर पाली तथा कुचामन मे अधिक मुसलमान लोहार हैं जो लोहे के अच्छे कारीगर कहलाते ह।

खेतडी के राव बाघसिंह के समकालीन भैरू नाम का लुहार एक बडा प्रसिद्ध कवि हुआ है। इसका दह क्त विलास" का य बडा सुन्दर एव लालि य पूण है।

दर्जी—दर्जी जाति नही, व्यवसायिक नाम है। बीकानेर जिले मे सारे दर्जी हिन्दू हैं और उनका पीपा वशी तथा नामदेव वशी, दो उपजातियाँ हैं। सवत 1475 म पीपा जी नामक एक खीची राजपूत ने वैराग्य धारण करके राजपूतो के नौकरा को कपडा सीने की सीख दी था। अत इनमे पडिहार, पवार चौहान सोलखी तँवर, दया, मकवाना, सिसोदिया, कछावाह, गहलोतादि वशों के लाग ह तथा पीपा वशी कहलाते हैं। बीकानेर से 'सुपथगा' और जोधपुर से श्री पीपा प्रकाश' नाम से इनकी पत्रिकाएँ निकलती है।

नामदेव वशी अपने को भक्त नाम देव के अनुयायी मानते है। नामदेव एक साधु टाक राजपूत थ। इन्होंने परशुराम से बचने के लिए पहले कपडों की छपाइ का धधा धारण किया और फिर सीन का काय करने लगे। ये छीपा दर्जी कहलाते हैं। पर कई अभी कपडा छापते हैं। काल के निवासी दर्जी इसी नाती मे कपडा छापते हुए सीने का काम धारण कर बैठे हैं।

राईका—ऊटों का टोला चरान वाला को राईका या रबारी कहते है।[1] इनके दो भेद हैं—एक मारू और दूसरा चलकिया। मारू जाति के राईके उच्च मान जाते हैं। ये ऊटा के साथ भेड बकरियाँ भी पालते हैं। य राजपूतो के साथ रहते हैं तथा उन्ही के काम आते ह। पहले ये राज्य का टाला चराया करते थ। अब सावजनिक ढग से गावो के स्याढ ऊट चराते हैं। हमारे यहाँ गाव गाडराने के राईके प्रसिद्ध हैं। अब कालू टोळे म भी दूर दूर के लाग अपने स्याढ ऊट लाते ह।

1 गाव काटासर (त० डूगरगढ) म श्री जोधा राठवा प्राचीन राजस्थानी का प्रसिद्ध भक्त कवि हुआ माना जाना है।

मोची—मोची पूर्व में चौहान, गायल और सोलंखा तथा पवार राजपूत थे। इनकी चार उप जातियां हैं और अलग-अलग काम। ये पक्के चमड़े की वस्तुएँ बनाते हैं। मियागर तलवार कटारों के म्यान, कमरपेटी बनाते हैं। पनीगर सोने चांदी के वर्क बनाते हैं। जिगर लोग घोड़े गाड़ियों के साज, जीन और काठी बनाते हैं। जोड़ीगर जूते बनाते हैं। इनकी औरतें कढ़ाई का सुन्दर काम करती हैं। कालू के मोची अपने को सोनगरा लिखते हैं।

बावरी—इनका प्राचीन इतिहास दस्युता के कारनामों से पूर्ण है। मु० सोहनलाल कृत तवारीख राज बीकानेर के पृष्ठ 63 पर बावरी मीना और थोरी को जरायम पेशा लिखा है। यहां के बावरी जगली जाति में आते हैं। मेवाड़ में मौंघिया और धार में बोहरा कहलाते हैं। ये अपनी उत्पत्ति राजपूतों से बताते हैं और कुछ लोग एक कथा सहित बावरी नाम की उत्पत्ति बावड़ी से बैठाते है। ये वहीं से दस्यु वृत्ति पर उतारू हुए हैं। पंजाब में ये लोग वर्वारिया नाम से प्रसिद्ध हैं और शिकारी कहलाते हैं। इनका प्राचीन निवास राजस्थान है। इनके विवाहादि संस्कार ब्राह्मण करवाते हैं। ये सब देवताओं तथा गौ के भक्त होते हैं। पर मांस मदिरा सेवन करते हैं। ये डकैत होते हैं तथा चोर डकैतों के खोज पहचानने का कार्य करते हैं। पहरेदारी का काम भी इन्हीं से लिया जाता है। पहले ये जरायम पेशा कहलाया करते थे। पर अब कृषि पर निर्भर रहने लगे हैं।

थोरी या नायक—थोरी लोग शिकार करने वाली जाति में आते हैं। पहले ये चोरी तथा लूट खसोट करने से भी नहीं चूकते। वैसे तो ये अपना राजपूती वंश बताते हैं। लेकिन ग्रहण के समय मांगने निकल जाते है। थोरी आहेडी (अहेरी) कहलाते हैं। प्राचीन काल मे बजारों के माल की रक्षा करते हुए उनके साथ रहा करते थे, तब से ये नायक भी कहलाने लगे हैं। ये पाबूजी के भक्त होते हैं। पवाडा गाते हैं और फड बाचते हैं। इनके वाद्य माटा और रावण हत्था होता है। ये शराबादि-खान पान एवं नाता प्रथा पालन में प्रथम मनुष्य माने जाते हैं। कर्नल टॉड ने इनको शैतान ही नहीं उसकी संतान तक कहा है। कालू के थोरी बड़े उद्यमी हैं।

चमार—चमार संस्कृत शब्द चर्मकार से बना है। इसका व्यवसाय चमड़ा बनाना, पकाना और रंगने का होता है। 'राजस्थान की जातियाँ' नामक ग्रंथ मे इसकी आदि उत्पत्ति ब्राह्मण से बताई है। पहले ये जूता बनाते और कपड़ा भी बुना करते थे। रामदेवजी के पूजक है और गंगाजी जाते हैं। पर सूअर को छोड़कर प्रत्येक पशु का मांस खाने से नहीं चूकते। भाम्बी इन्हीं का एक उपभेद है। गुरड़ा ब्राह्मण इनका पुरोहित होता है जो सब कर्मकांड करवाता है। यह चमार, बलाई, मेघवाल आदि नामों से पुकारा जाता है तथा बेगार देता है। बीकानेर में इस जाति के लालगिरी नाम के साधु ने एक धार्मिक पंथ चलाया था। आजकल हरिजन नाम से इस जाति की बड़ी उन्नति है। रुद्रसूक्त के ऋषि के शब्दों मे—"चर्म कारेभ्यो नमो।"

सांसी—सांसी को भरतपुर के एक निवासी सांसमल की संतान बताते हैं। कई लोग योरोप की हूबडी जाति से सांसिया का संबंध जोड़ते है। पर यहाँ सांसी अधिकतर मांगकर खाते हैं। किसी के भी घर भोजन, मांगने चले जाते हैं। बीकानेर जिले के सांसी कृषि भी करते हैं। सांसिया की सामाजिक स्थिति निम्न स्तर की होती है। ये

लोग, जूठन भी खा लेते ह। विवाह शादियो म बधाई मागती हुई इनकी स्त्रिया नाचती गाती हैं। मद काम करते हैं, बदले मे किसानों के खलिहानों से अनाज माग कर लाते हैं। इनका दूसरा वग गदभ की सवारी से खानाबदोश जीवन बिताते हैं। जहाँ ठहरते हैं उस स्थान को डेरा कहते हैं। ये अपने साथ कुत्ता बकरी और मुर्गे भी रखते हैं। कुछ घुमक्कड, कापडिया सासी, जो सब प्रकार की चोरियाँ कर लेते है। इनकी भाषा राजस्थानी का एक रूप है जो हरेक व्यक्ति को अटपटी व अन्य जैसी लगती। सासियों म स्त्री चरित्र का बडा महत्व माना जाता है। यदि अ य की स्त्री से दूसरे मद का अवध्य सम्बध पकडा गया तो उसे जाति से बाहर करके बिरादरी के जूते उठाये जाते है। भीख लेते हैं, दड जुर्माना से माफ करते है। शेष सारे मृतक सस्कार हिदुओ के होते हैं।

भगी—मल, कुडा करकट की सफाई करने वाली जाति को भगी कहते है। सर हेनरी इलियट के लिखन के अनुसार भगी नाम भाग पीने के कारण रहा है। पजाब म इन्ह चूहडा कहते है। भगी को हमारे यहा मेहत्तर भी कहा जाता है। मेहतर फारसी मे राजकुमार का पर्याय है। कनल टॉड ने इस जाति को निम्न बताया है। य लोग अधिक नगरों म रहते हैं और गावो म कम। सब प्रकार की सफाइ का काय करते हैं। पुराणो के आधार पर इनकी उत्पति एक ब्राह्मण विधवा स्त्री और एक अ य मद स हुई बताई जाती है। वतमान समय म भगी लोग नगरपालिकाओ की नौकरी करते है और शहर सफाई का उत्तरदायित्व सभालते हैं। इनके अपने जातीय साधू होते हैं जो पुरोहिताई ढग मे ज म विवाह और मृत्यु के काय करवाते हैं। राजस्थान मे चालीस वग के भगी माने जाते हैं। अब ये पढ लिखकर अच्छे पद पाने लगे है। लूनकरनसर के उदा और योला भगी बडे धाडायत थे। अजमेर मे निकलने वाली पालिका कमचारी पत्रिका' इनके पक्ष म है।

ढाढी—वशोच्चारक जातियो म यहा मिरासी, ढाढी ढोली भाट चारण रावल, मोतीसर आदि अनेक जातिया हैं। इनकी अनक वविध्य शाखें होती ह। परन्तु ढाढी एक गायक जाति, जिसका पेशा उत्सवो पर गाने, ढोल बजाने बदीजन एव सदेशवाहक का काय माना जाता है तथा पल्ले बधा चलता है। पहले य हिदू ढोली या भाट थे, कि तु बाद मे मुसलमान बने जान पडते हैं। ये लोग अब तक हि दू रीति रिवाजो का सम्मान करते ह। कविता करना इनका वश परम्परित व्यवसाय ह और हर वाद्य बजाने म निपुण होते हैं। सरस साहित्य के सृजक तथा सरक्षक मुख्य रूप से ढाढी ढोली होते हैं। ढाढी वाक् पटु पहले कथा वारता भी कहा करते थे। आधुनिक जमाने मे इनकी कला का आदर रेडियो सिनमा के कारण कम होता जा रहा है।

हिजडे—हिजडे लोग मद और स्त्री से पृथक एव ज म जात एक प्राकृतिक जाति के प्राणी होते ह। य नपुसक या नाजिर भी कहलाते ह। गावो मे इनको गतराडा या खोजा कहा जाता है। पुराने ग्रथों म प्रसग स्थानो पर इन लोगो का पर्याप्त प्रयोग मिलता है। कोई भी हिजडा मानव जाति मे अपभ्र श या अपाहिज नमूना होता है।

हिजडे जनाना वस्त्र पहनकर खजरी मजीरा पर ताली बजाकर नाचन गान का पेशा करत हैं। हाथों म चूडिया कानो मे बालियां और नाक म लौंग भी पहनत हैं तथा दाढ़ी मूछ कतई नही रखते। य नपुसक होते हैं। इसलिए राज्य के अ त पुर मे द्वार रक्षक का काम भी देत रहे हैं। बीकानर के महाराजा अनूपसिह स्वरूपसिह व सुजानसिह के आनदराम और ललित नाम के दो नाजिर मुसाहिब थे। नाजिर आनदराम एक कुशल

राजनतिक होन के साथ साहित्य प्रेमी एव विद्वान था।[1] उसन गीता का गद्य पद्य म रोचक अनुवाद किया था। कस्बा लूनकरनसर म एक ऐसे खोजे का आज भी निवास स्थान है।

इनके अलावा इस एरिया म विभिन्न जातियो के लोग है और उनके उतने ही समाज तथा रीति रिवाज है।

पूव काल म शिक्षा प्रसार—120 वष पहले तहसील लूनकरनसर म मदरसा नही था। महाजनान व ब्राह्मणान के लडके हर किसी पढे लिखे व्यक्ति के पास हिन्दी व शास्त्री पत्ते थे। महाजनों मे लडका हिसाब व इबारत लिखना सीख लेता उसको बही खाता, हुँडी, चिटिठया, दफ्तर के कामती हरूफ लिखन के रवत म डाल देने और अपने कारबार में लगा देने थे। पढाई कम थी बेइल्मी जियादह थी। इसलिए लूनकरनसर, अनूपगढ मिरजावाला और श्री डूगरगढ तहसीलात के सिवाय सदर बीकानेर, रेनी सुजानगढ, सूरतगढ, चूरू, सरदारशहर, राजगढ, भादरा, नोहर, हनुमानगढ, रतनगढ आदि तहसीलों म मदरसे वाले गये थे। सदर बीकानेर के मदसह मे 7 उस्ताद हैं कि जो अग्रेजी व फारसी तालीम देते हैं—5 उस्ताद हिन्दी की तालीम देन वाले हैं। सिवाय इसके बीकानर म एक मदरसह निसवा[3] भी खोला गया है उसम लडकियाँ तालीम पाती हैं—और थोडे असे मे उसकी काफी तरक्की हो गई।' 'बेरूँजात के मदारिस की निगरानी और इम्तिहान के यह सिलसिला तरक्की नही पा सकता—इसलिए इसकी तकरूरी जरूरी थी।"[4]

"अवजुमला मदारिस मे—माह दिसम्बर सन् 1889 ईस्वी तक हाजरी तुलबा[5] 378 तक थी—इस साल मे 1037 दाखिल हुए इस पर भी लिहाज होने से शौक तालीम जियादह पाया जाता है तिथ सम्बत 1945 में जुमला मदारिस के लिए हस्वजैल—

[सदर बीकानेर	रनी	सुजानगढ	सूरतगढ	चूरू	सरदारशहर
5599)	489)	583)	567)	875)	1061)
राजगढ	बहादरा	नौहर	हनुमानगढ	रतनगढ	मीजान
427)	427)	432)	334)	427)	11221)]

खच की मजूरी हुई है—हर किस्म की तालीम देने वाले 31 उस्ताद हैं।[6] इसके अनुसार लूनकरनसर में उस समय मदरसा नही था।

लूनकरनसर तहसील म गाव दूर दूर और छोटे छोटे हुआ करते। पढने वालों की सख्या भी कम रहती। काश्तकार और मवेशी चराने वाले अपनी जगह छोडकर दूसरी जगह चले जाते थे। गगासिंह जी ने ई सन 1912 को अपनी रौप्य जयती के अवसर पर[7] तहसील लूनकरनसर म भी शिक्षा वद्धि की शुभेच्छा प्रकट करते हुए तथा राज्य मे

---

1 बीकानेर राज्य के सब इतिहास लेखकों ने इन मुसाहिबों के वणन दिये हैं।

2 तवारीख राज्य श्री बीकानेर मु सोहन लाल पृ 287 288
(4 5, 6, वही त रा श्री बी)

3 कन्या विद्यालय (त रा श्री बी)

7 तहसील लूनकरनसर के गाव शेखसर निवासित चौधरी गगाजल व रामरख को श्री जासाहब ने बतौर इज्जत कडा व पाग का इनाम दिया था।
बी० राज० का इति० कन्हैयाजू देव चौथा खड पृ०-145

तालीम का होना जरूरी जानकर गांवो म मदरसे खोले । इस महकमे तालीम म एक डाइरेक्टर की खास जगह तीन साल के लिए मजूर की । मि० हबट शेरिंग (नायब प्रिंसिपल मेयो कालेज अजमेर) पहले डाइरेक्टर नियुक्त हुए थे । फिर इस पद पर अच्छे अच्छे अंग्रेज आये ।

समस्त भडाण व कलस के वासा का तहसील मुख्यालय लूनकरनसर अपन जिले से उत्तर पूव म सदा से मडी स्वरूप स्थित है । यह खारे पानी की झील के लिए इतिहास प्रसिद्ध गाव रहा है । ई सन् 1879 मे हुए अंग्रेजी सरकार के इकरारनामे के अनुसार यहा अब नमक निकाला जाना बन्द है । पहले नमक निकाला जाता था तब यहा बडी सर्दी पडती और उसके कारण पेड पौधे तक सूख जाया करते थे । व्यापारिया को इधर के रास्ते काबुल जाते समय काफी कष्ट सहन करना पडता था । लनकरनसर के नमकीन आकग मे बफ जमी हुई रहती थी । आज उस गिजगिजी सरगल मिटटी मे छपछप मीठा (नहर का) पानी छलछला रहा है । जगह जगह जिप्सम के ढेर दिखाई दे रहे है । रेलवे स्टेशन के पास की भूमि को इससे उदर आफरा चढ रहा है । तीन चार दशाब्दियो से प्राय जिप्सम भरी गाडिया जाती हैं । बडा कारखाना चलता है । काफी लोग काम करते हैं और देखने वाला की आँखें इस छिलोडी नामक पदार्थ की चूना चमक पर आश्चर्यान्वित होती हैं ।

सन् 1808 म मिस्टर एल फिन्स्टन इस तरफ स काबुल गया । उसने लिखा है— 'राजधानी स थोडी दूर का देश अरब के उजाड जगल की भाति भयावना है । वर्षा के थोडे पानी से भूमि मनोहर हो जाती है । सवत्र सुन्दर पुष्टि कर स्वादिष्ट घास उग आने से यह स्थान उत्तम चारागाह बन जाता है । (बी०रा०इ०पृ० 158 कु०क०जू० दे०)

भडाण का फल सरस मतीरा

भारत म राजस्थान प्रदश फलो की दृष्टि स अग्रणी नही कहा जा सकता । यहाँ की भूमि मे प्राय जल एव जलाशयो का अभाव है । वक्ष वाटिका फल फूल और हरियाली ये सब दशन मात्र को मिलतें हैं । वसत ऋतु ही महीने मासके लिए उदास रूप मे आकर तुरत ग्रीष्म मे परिवर्तित हो जाती है । परन्तु यहाँ के शात शुष्क रेतीले टीलो पर कोमल वेल का विकास कर मतीर जसा सुधा तुल्य मिष्ठ फल मनुष्य को लघु श्रम से प्रदान कर देना देवी प्रकृति की पीयूष वर्षिणी विचित्र अनुकम्पा का ही अलौकिक परिचय प्रमाण है । मातेश्वरी के प्रसाद स्वरूप इस मतीरे की प्रशसनीय प्रसिद्धि देश के दूरस्थ स्थानो तक प्रसारित है । श्री वियोगी हरि ने सतसई म लिखा है कि 'मतीरे वाले राजस्थान प्रदेश से अनभिज्ञ लोग ही उसे मरुदेश कहते हैं ।"

मतीरा मनुष्य का स्वादिष्ट भोजन है और उसके खान स आनद तथा रस की प्राप्ति होती है । अस्वस्थ आदमी मधुर सरस मतीरो के मिल जाने पर, अप्राकृतिक खाद्य पदार्थों स किनारा काट लेता है । कारण—इस सुस्वादु तथा तृप्तिकारक फल लाभ की तुलना कृत्रिम भोजन कदापि नहीं कर सकते । मतीरा जीवनदायी सजल फल है और प्रत्यक रोग का नाशक एव अद्वितीय दवा है ।

मतीरे की वेल इन्द्रायण फल की बेल जैसी होती है । पत्ते गोल कगूरदार और फूल हल्के पीले रग के निकलते हैं । कच्चे फल को लोइया' नाम स सब्जी बनाते हैं ।

कच्चे मतीरे की गिरी (गूदा) सफेद और पकने पर लाल एवं गुलाबी होती है। बीज धवल, लाल तथा मलयागिरी रंग के होते हैं, जिनको क्रम से बामणियां, बाणिका एवं जाटूके नाम से बोलते हैं। किसी किसी की गिरी भी उज्ज्वल होती है। यह फल हरा-सफेद, चिकना चित्रित, तरबूज से छोटा सुन्दर होता है। इसका बाह्य मजबूत होता है। इसे क्वार कार्तिक से लेकर फाल्गुन चैत्र तक रखा जाता है। इसकी भरपूर उपज दीपमालिका के आस पास होती है। 'दिवाली का दीया दीठा, काचर बोर मतीरा मीठा।" लेकिन इसकी सत्ता अगहन तक फलित प्रफुल्लित रहती है। पश्चात पौष का पाला मार जाता है।

भूख भजण अर मन रंजण, तिसिया कर सुवेल।
झोलो[1] मत ना लागज्यो, तन मतीरे री बेल॥

मतीरा ठण्डा मीठा ग्राही स्निग्ध तासीर है। मूजाक उपदंश, जलन अपस्मार, नाक का रक्तस्राव रक्तविकार, दाह, बवासीर, पेट के रोग, मुहासे मोटापा, क्षय वात क्षुधा-तृषा, थकान, नेत्र रोग तथा सिर दर्द को मिटाने वाला होता है। यह वीर्यवर्द्धक पुष्टिकारक, रुचिकारक तथा राजस्थान का अमृतोपम मन भावना फल कहलाता है। इसका रस मूत्र कारक, त्वचा को चिकना बनाने वाला, कांतिदाता स्फूर्तिदाता, कब्ज नाशक और अग्नि मंदता को दूर करने वाला होता है। इसको पैरों की झुनझुनाहट तथा पाण्डुरोग में देकर उन से मुक्ति पायी जाती है। कई लोग इसके गूदे के साथ रोटी खाते हैं। मतीरे का सबसे बड़ा लाभ यह है, कि इसके खाने से लोगों का विषला परिणाम दूर हो जाता है, और बाकापन, उदारता सहनशीलता आदि गुण बढ़ते हैं। लोग इसके सामूहिक खानपान में भेदभाव रहित होकर खाते हैं।

आंतों की सफाई अजीर्ण की दफनाई, हृदय रोग की रफू, फेफड़ा और वृक्क की सुनायी करके मतीरे का रस जुलाब का काम सफल रूप में करता है। इसे सेवन करने वाला मनुष्य कम बीमार पड़ता है। यह बूढ़ों और बालकों का अत्यन्त उपयोगी भोजन है।

राजस्थान में अमीर, किसान वृद्ध एवं रोगियों की मन वाञ्छानुसार मतीरे मिलते हैं। प्रवासी लोग प्रमोद लिए मतीरा की फसल पर आ टपकते हैं और अन्य लोगों के साथ बैठकर आनंद मनाते खाते हैं। कृषक आदमी काम के प्रत्येक विश्राम पर अपने तन नयी ताकत भरने हेतु दिन भर बेल से तोड़ते फोड़ते हैं। वृद्धगण प्रात सांय चौपाल में बैठकर बांट बांटकर मतीरे खाते हैं। पति पत्नी भाई बहन, माँ बाप बालक बालिकाएँ एवं समस्त परिवार सानंद मिलकर खेतों में रहते हैं और बेल से ताजे मतीरे मेल मेल से तोड़कर मनचाहा सुख पाते हैं।

अस्वस्थ जन सन्ध्या समय बेल संलग्न मतीरे में चाकू से छेद करके थोड़ी मिश्री भरकर बंद कर देते हैं और प्रात काल की गुलाबी ठंडक के साथ, स्वयं के हाथ मतीरा नाल से पृथक करके पथ्य लेते हैं। मतीरा खाने का श्रेष्ठ समय खाली पेट होता है। फसल के दिनों में मित्रों की मतीरा संगोष्ठी आयोजित होकर खेती की बहार सेती है और चलते राहगीर भी विश्राम के बहाने रास्ते के खेतों में बैठकर मतीरा खाते हैं। विद्यालय बंद रहने पर मस्त बालक बालिकाओं के झुंड खेतों में मतीरा खाने जाते हैं

1 झोलो — पाला।

और मतीर पर पहलियाँ बोलते हैं। जसे—

"डोलर पान डगामग डांडी, बिना कुम्हार घडोज हांडी,
बिना जमावणी जमाइज दही, मद के पेट इस्तरी[1] रही।"

पहले इसकी शराब बनती थी। यह उत्तम फल, वभव व ल्लभो का ब्रेकफास्ट, मजदूर मन का शरद पेय एव कृपका के लिए शक्तिदायक केवडा शरबत है। मतीरे का रस आदमी को फौरन ताकत दता है जिससे कमजारी का जड कटकर ताजगा की कापलें फूट निकलती हैं। किसी कवि ने कहा है— धोलाभकभूरा पठाळा, पठेघटटा सर सीकाळा सीकटेका मीठा मीठा सूजी शक्कर का सीरा है। मरुधर का मधुर मतीरा है।"

पर, सभी मतीरे मिट्टी की सुराही के पेट की तरह गोल नही होते। इनमे से कुछ खडे थरमस की भाति लम्बे पतले, बलो म लगे पडे होते हैं, जि ह लोग चाव से साज कर खाते हैं और आल' के नाम से बोलते हैं। शास्त्रोक्त रीति से देवताआ के आगे भी मतीरे की भेंट चढायी जाती है। राजस्थान म दीपावली की रात को मतीरे से लक्ष्मी पूजन करते हैं। दूसरे रोज गाव के लोग मतीरे फोडकर भगवान का प्रसाद सजाते हैं और धूप-दीप से आरती उतारते है। पुजारी के सखोदर बरसा देने के बाद, उपस्थित लोग बडे हर्षोत्साह से प्रसाद की खपरिया ले लेकर खाने लग जात हैं। मतीरो के सारे शौकीन इस धार्मिक काय म सम्मिलित हाते हैं। यह उत्सव अ नकू टका प्रसाद कहलाता है। लोग इस दिन अ नकू टका व्रत भी रखते है।

मतीरे को आदमी नही, सार पशु पक्षी और छोटे कीडे मकोडे तक जानते हैं। गाय, भस ऊँटादि पशुआ क अतिरिक्त अ य पशु पक्षी भी दूर दूर से खाने चले आते हैं। तीतर (एक चिडिया) फूल स फल बनते ही चोच मारन लग जाते है। कागडोड (पहाडी कौवे) इस फल की फसल पर उड उडकर मडराने लगते हैं। सियार, सेही और शूकर जसे जानवर खेत उजाडने पर पूर उतारू हो जाते है। चूहे, गिरगिट और टीटणिया सब मतीरे के रस पर मिलकर पलते हैं। फाका टिड्डी तथा कातरा इसकी बेल को ही खा जाते हैं।

वसे ता मतीरे का फल सारे राजस्थान म उत्प न हाता है, मगर बीकानेर जिले मे भडाण क्षेत्र का कागजी कापाबध मतीरा बहुत मीठा और मन रजन होता है। इस जिले की आस पास वाली सीमा भूमि म बेजोड जायकदार ढेरो मतीरे पैदा होते हैं। यह फल रवी की फसल के साथ क्वार मास के आखिरी सप्ताह मे अपने कच्चे, अधपके तथा पके हुए रूप मे मिलना शुरू हो जाता है। खेत के मालिक हृष्ट पुष्ट एव तगडे मद बनने हेतु सुनियोजित प्रकार से रोजाना नियम पूवक मतीरा खाते हैं। वे पहले 15 20 कच्चे अथवा अधपके बाजरे के दूधिये सिटटे (भुटटे) मसलकर उनके दाने (मोरण) करीब ढाई सौ ग्राम तक चबाते हैं और फिर झटपट ताजा मतीरा तोडकर खा लेते हैं। इसके बाद ककडी या खरबूजे की एक दो फाके खा लेते हैं। इस स्वाभाविक शीतल दनिक भोजन से उसके पिचके हुए गाल लाल हो जाते है और महीने भर म व मनुष्य धीर वीर एव मुसटडे बन जाते हैं। कमजोर आदमी मीठे मतीरे का साग बनवाकर रोटी के साथ

---

1 स्त्री = गिरी (गूदा)

मजे से खाते हैं। औरतें छोटी मतीरिया छीलकर धूप मे सुखा लेती हैं और वष पय त साग बनाने के काम म लेती रहती हैं। इनको 'सिफलती" कहते हैं। सिफलती की कढी एव छाछेती भी स्वादिष्ट हाती है। खाने से पहले चाकू या हाथ से मतीर के दो भाग किए जाते हैं, उन्हें 'खपरी' कहते हैं। खपरी का गूदा एव रस लेकर उन्हें सूखने दिया जाता है। अधसूखी खपरी उलटकर किसाना के थाली का काम देती है। फसल की समाप्ति पर खपरिया कूट उबालकर गाय भस आदि को खली बिनौला की जगह खिलाते हैं। खपरी को जलाकर घरू वैद्य घृत के साथ खुजली का मरहम भी बनाते हैं।

वतमान समय म मतीरे के बीज भी बडे उपयागी होते जा रहे हैं। बादाम, काजू पिस्ता की कमी महगाई म विवाहोत्सव पर मतीरे के बीजो की मिंगी (गोटे) स बरफी (कतलिया) बनायी जाती हैं। पसागे इन्हें ठडाई म मिलाते हैं। दुबल परिस्थिति वाले माल खान की प्रवृति पर मतीर क बीजो की खीर बनाया करते हैं। भूजे हुए बीजो पर नमक लगाकर लोग चवणी धाणाकी तरह दोपहरी करते हैं। इनमे बोरिये मिलाकर बालक बडे चाव से खाते हैं। माताएँ बीज बोरियो को ऊखली म कूटकर बुरादा चूण बना देती हैं। बालक इसको 'खोडी' के नाम से खाते रहते हैं। मतीरे के बीजो की रोटी भी बनती है, जिसे कृषक मजदूर मठे के साथ बडी रुचि से खाते हैं। मतीरे के बीजा का तेल आदमी के चम रोग एव पशुओ के कीडे मारने मे रामावाण का काम करता है। यह तेल मशीनरिया के पुर्जों मे देने के लिए भी काम आता है। इसलिए मतीर के बीज पर्याप्त मात्रा म गाडियो से बाहर भेजे जाते हैं।

मतीरा यों तो हर समय खाया जा सकता है, कोई हानि नहीं करता। किन्तु लोग बाग मिलकर भोजनापरात ही मतीरा खाते हैं। तेज धूप मे रहा गम तपता मतीरा अधिक पाले मे पडा ठडा-ठडा मतीरा एव खीर और हलवा खान के बाद खाया हुआ मतीरा, मनुष्य के शरीर म गडबड खडी कर देता है। इसलिए सर्दियो म थोडा धूप म धरकर गर्मी म से लाया हुआ छाया मे रखकर और मामूली रजन भोजन म लिया हुआ मतीरे का रस स्वास्थ्य के लिए मुफीद होता है। एसे रस भरे मतीरे को खलमला और शुष्क गूदे वाले को सूखा-पाका मतीरा कहते हैं। मतीर के विभिन्न भाग गिरी डली और कजा कहलाते हैं। राजस्थान म पृथक पृथक रग रूप के मतीरे होते हैं। इनमें भूरा, पटठाला साकाला छिवठकाला, सीकटका कोलॅघटटा जालघटटा, छोटे नकरका, पतले कापका (कागजी) प्रभति मतीर बडे मीठे एव गुणकारी होते हैं।

मतीरा वषा कालीय मधुर फल है, पर इस मौसम के विपूचिकादि सब दोपो को नष्ट कर देने म पूण समथ है। कातिक के अन्त मे होने वाले मतीरा को 'सीकटका मतीरा" कहते हैं। इसके सेवन करन स साल भर तक लू लगने या हैजा हान का भय नहीं रहता। सुरक्षित रखे मतीरा के अन्दर बीजो से फूटे अकुर घोटकर बच्चा की चेचक म घूटिया दिया जाता है। राजस्थानी जच्चा के लोक गीतो मे मतीरे के बडे गीत गाये जाते हैं।

मतीरा माने रोग नाशक, अचूक औपधि एव अनुपम मजूषा है। व्रत-एकादशी म इसका फलाहार होता है और त्यौहारो पर देव पूजन । राजा महाराजाओं, श्रीमतों तथा

हाकिमा को जुगों स मतीरे की भेंट चढती आयी है। आयुर्वेद वालो ने राजस्थान म सतरे मौममी के रस स्थान पर मतीरे का रस देकर सैकडो को जीवन दान दिया है।

पशु परिचय वृत—लूनकरनसर क्षेत्र म पशुओ से काम नेने का पेशा आज भी लोक प्रियता के साथ पनपता पतता है। भले ही यहाँ बसा, मोटरों, ट्रैक्टरो और विभिन्न विद्युत श्रेणियों ने आकर मनुष्य सेवा की सारी समस्याएँ हल कर दी हो तथा तकनीकी सुविधा वद्धि म अच्छी तत्पर मदद पहुँच रही हो। परतु प्राचीन सेवा प्रदायिनी पशु-परम्परा लूनकरनसर तहसील के गाँवों मे वतमान समय में भी मद्र भावाथ विद्यमान है।

काम घणो देवो कठण, मिनखा देण अराम।
वाँई जस थारो करा थळवट रा थे थाम॥ (च० दा० सामौर)

ऊँट यहा के किसानो का जीवन साथी है—

ऊँट सवारी देय, ऊँट पानी भर लाव।
लकडी ढोव ऊँट ऊँट गाडी ले धावें॥
खेती जोत ऊँट, ऊँट पत्थर भी ढोवें।
जो न होय इक ऊँट, लोग कर्मो को रोव॥
कवि कह धय तुव साहिबी, जसे को तसो मिले।
बिन जट्ट रू उट्ट भुरट्ट मे, कहो काम कसे चल॥

स्हाढ की प्राचीनता—

लका ऊपर धुरया निसाण जद होती हूँ टोड तिहाण।
बीकानेर बसाई बीक, जद हूँती टीळे में टीकें।
मालाणी मे रावळ मालो, जद चरती हूँ काचो पालो।
तू काई पूछ चारण जुवा, कौरव पाण्डव काल हुवा।

खोजी—तहसील लूनकरनसर मे शेरगर और रामगर नाम के दो व्यक्ति, गत शताब्दी मे जबरदस्त खोजी (ऊँटों के पद-चिह्न ज्ञाता) थे। उनकी सरकार मे मा यता थी। वे ऊँटों और चोरो के खोज बताया करते थे। कालू मे ईसरजी सारण और चाँदसर मे मोती वावरी क्षेत्रीय खोजी थे।

यहाँ घोडों का भी महत्व है कि इस क्षेत्र के उत्तरीय किनारे पर पवित्र ब्रह्मावत या आर्यावत जिसे उत्तम क्षेत्र का नाम दिया हुआ है। मनुस्मृति (917) म जिसे देव निमित देश बताया गया है। वह अश्वमेध यज्ञ स्थल भी वना था। आगे चलकर यहाँ राजपूत काल म घोडी घोडों ने जो चमत्कार दिखलाय, उनकी बातें तो बच्चे बच्चे की जबान पर हैं। इस क्षेत्र म काबुल और कधार के घोडे भी आये हैं। 'मेल सुमरणी जगी घोडा, सोख घणानें राख थोडा।'

गाय माय का दूध तो हमारे क्षेत्र म जन जन की जिह्वा पर मिष्ठ वष्टि करता है। गायें यहाँ दूधारू राठी सिधण माडेचण नागौरी, मेवाती, ककरेज आदि सब तरह की होती हैं। भसें तो खादर की प्रसिद्ध है। खाडू की भसें भी बडी मस्त होती हैं। यहाँ की भसें देखकर किसी दुबल चारण ने कहा था—

चारण मत कर चतुरभुज, भस करे भगवान।
खळ खावू, पाणी पिवू, बठू ठडी छान॥

भेड बकरिया के ता यहा सहस्र जानवर रेवड हाते हैं। क्योकि यह क्षेत्र, पशुआ का चारागाह रहा है। परन्तु बकरियो की अपेक्षा यहा भेडो का अधिक महत्व है। इस मडल का ऊनोद्योग राजस्थान म सर्वोपरि माना जाता है।

भेड़ों की विविधता—यहा मगरा नस्ल की भेड़ें अधिक होती है। इनकी आंखा के चौतरफा भूरा घेरा, पूरा पूछ और थोडे मुडे हुए कान हाते है। मादा भेड तोल म कम और नर भेड का ताल थोडा ज्यादा होता है। इनकी ऊन मध्यम दर्जे की मानी जाती है, जो मोटे गलीचे बुनने के काम मे आती हैं। ये भेडे साल मे तान लाण (कत्तर) देती हैं।

विदेशों की 'मेरिनो' जाति—भेडा की जननी चोखला नस्ल की भेडें भी इस क्षेत्र में पाली जाने लगी हैं। इनके चेहरे पर गहरे भूरे या काले रग के छिबके होते हैं। किन्तु कुछेक भेडें सफेद सादे चेहरे वाली भी यहा मिलती हैं। मादा भेड से नर भेड सुदृढ़तम होता है। फिर भी इसका पूछ व शरीर हलका माना जाता है। वष म दो बार इनसे ऊन के लाण उतरत हैं, जो सुपरफाइन व अन्य श्रेणी मे मान जात है।

यहा नाली नस्ल की भारी भेडें भी पर्याप्त सख्या मे मिलती है। इनके कान लम्बे, पूछ छोटी और ऊन चिकनी होती है। ये हल्दिया रग के दो लाण देती हैं, जो माटी ऊन कहलाती है। इस ऊन का रेशा लम्बा होता है और सुन्दर वस्तुएँ बुनने म काम आता है।

क्षेत्रीय केन्द्र—हमारे तहसील मुख्यालय पर "भेड ऊन प्रसार केन्द्र" स्थापित है। वह प्रशिक्षित प्रभारी अधिकारिया के प्रशासनिक सचालन युक्त सुव्यवस्थित कायरत चलता है। कृत्रिम गर्भाधान योजना के सघन कायक्रम के अन्तगत यहाँ 'महाजन म' प्रसार केन्द्र भी है, जिसमे भेडों को सामान्य एव सक्रामक रोगा स सरक्षित रखा जाता है। अशुद्ध नस्ल के नर भेडो का यात्रिक वधियाकरण भी यहा होता है।

हमारे (बीकानेर जिले म) बजर इलाको मे भेड पालन का सफल सरक्षण हाता है। सोवियत ग्रामीण क्षेत्र के स्तावरोपोल अचल से आई हुई भेडा को यहा की जलवायु के अनुकूल बनाया गया है, जिससे पशुआ की क्वालिटी उन्नत हुई है। इन भेडो को स्थानीय नस्लो के साथ सकरित किया गया है। चोक्ला, दिसई सलमेरी और मलपुरा नस्ला को अच्छी तरह सकरित कर दिया है, जिनके सहस्रों सुन्दर शावक हर साल सवद्ध होते हैं।

भारत कृषि मन्त्रालय के भेड पालक के मुख्य विशेषज्ञ श्री तनजा न अपनी जाँच से कहा है कि इन विदेशी नर भेडा के कान माटे और पाव मजबूत होने हैं। इनके बाल नरम सुन्दर तथा लम्बाई दस सेंटीमीटर तक हो जाती है। इन नर भेडों के चेहरे पर अधिक बाल नही होते। गदन के बाल वाले गुच्छे आसानी स कतर जाते हैं।

इनके अतिरिक्त स्वच्छ, सुन्दर एव लम्बे रेशे वाली ऊन का उत्पादन बढाना तथा ऊन की किस्मों में बारीक श्रेणी की ऊन अधिक उत्पादित करवान के कायक्रम भी यहा प्रचलित ह। विशेष भेड पालकों (रेवड वालो) को ऋण उपलब्ध करवान क प्रावधान केन्द्र द्वारा सुरक्षित हैं और इनकी ऊन को अच्छे भावों से बिकवा कर लाभ दिलवाये जाते हैं। कालू म भेड व ऊन का प्रसार केन्द्र सचेष्ट है।

स्टेट ऊन मिल बीकानेर—इसम कच्चे उन की भारी खरीद होती है जिसके कारण सकडो श्रमिक काय करते हैं । विविध प्रकार का ऊनी धागा बनाया जाता है । यहा हौजरी का धागा तयार किया जाता है और काउ ट के धागे की कताई भी होती हैं । इस मिल मे ऊन स्वच्छ करने का सयत्र और श्रेणी निर्धारण केन्द्र भी हैं । यहाँ के बने धागे की लुधियाना एव अमृतसर से काफी माग आती है । इस मिल से धागा दिल्ली, आगरा और काश्मीर तक विक्रय किया जाता है तथा सारे देश म माल नियात होता है । इस उन मिल (बीकानेर) मे श्रमिकों को सब प्रकार की सुविधाएँ दी जाती हैं। अब यह स्टेट वूलन मिल जीवणमल जग नाथ (JJ) तापडिया जसवतगढ क लीज पर है ।

औद्योगिक क्षेत्र मे यहा का सारा ध्यान ऊनी धागे पर ही केन्द्रित है । भारत वूलन मिल्स स्टेट वूलन मिल्स राजस्थान वूलन मिल्स फ्रण्डस वूलन इडस्ट्रीज गणेश वूलन मिल्स, कमल कारपेंटस जनता कार्डिग एण्ड स्पिनिग कम्पनी, ओझा वूलन मिल्स, लक्ष्मी वूलन मिल्स एव छालानी वूलन मिल्स बीकानेर वूलन मिल्स जनरल इडस्टीज गणपति वूलन मिल्स मॉडन वूलन मिल्स और अलाइड फाइबस एण्ड टैक्सटाइल्स कार्पोरेशन आदि म ऊनी धागा बनाया जाता है । इसम कच्चे माल से उन तयार होती है जो ख्याति पाप्त बीकानेरी उन कहलाती है।[1] यहा पचासो मिल्स उक्त काय मलग्न हैं ।

बीकानेर के बने कम्बल तथा दुसूतिया इसी धागे से बनाई जाती हैं । यहाँ का बना उन और ऊनी धागा देश तथा राज्य के अ य भागो म भी भेजा जाता है तथा कच्चे माल के लिए बीकानेर की मिलो को अपनी चारो तहसीलो के गावो से माल मगवाना पडता है । इसमे कोलायत और लूनकरनसर क्षेत्र भरपूर उन भेजते हैं ।

ऊन उद्योग बहुतायत का कारण—बीकानेर मडल मे पानी का मूल्य सदव ऊँचा रहता आया है और सूखे तथा अकाल के समय तो पानी दूध से भी ऊँचा उठ जाता है । किन्तु ऊनी धागे के उद्योगों म पानी की न्यूनतम आवश्यकताओ की सपूर्तिया हो जाती है इसीलिए जिले के बीकानर नगर म ऊनी धागे की अनेकों बडी इकाइया लगी हुई हैं ।

डेयरी प्रोडक्टस—दूध की चीजें बनाने वाली उत्तरीय राजस्थान दुग्ध उत्पादक सहकारी सघ लिमिटेड बीकानर है । यहाँ से दिल्ली तक दूध जाता है । इसकी बडी शाखा हमारे क्षेत्र लूनकरनसर म है । यह सहकारी सघ आस पास के स्थानो से दूध इकटठा करके दूरस्थ क्षेत्रो तक सप्लाई करता है । कालू महकारी शाखा भी बडे पमाने पर दूध एकत्रित करके बाहर भेजती है ।

जहा लूनकरनसर क्षेत्र मे उन दूध की चर्चा है, बडी भरपूर मात्रा में आवक उपज होती है । क्योंकि यहाँ के छोटे छोटे गाँवो म पशुओ के अनेक वग पोषित होते हैं व लोगो का मुख्य धधा ही पशु पालन है और वे अब इस पेशे को व्यापारिक ढग से चलाने लगे हैं । फिर भी अभी इस व्यवसाय मे काफी आधुनिकीकरण की आवश्यकता है ।

---

1 ये 60, 70 तथा 80 तक दर्जे के होते हैं, जो केवल कार्पेट के काम आते हैं । विशेषत इसकी मडी भदोही (Bhadohe) है । यह जयपुर, आगरा के अलावा सारा भदोही जाता है । कार्पेट माल विदेशो मे एक्सपोट होता । जिसकी कीमत हजारो रुपये मीटर निर्धारित है । इस काउन्ट (बीकानेरी धागे) की चमक तथा मुलायमता की मान्यता इडिया म प्रथम नम्बर पर है ।

खजूर की खोज—लिफ्ट केनाल के जल से लूनकरनसर के आस पास आज हजारों मन मूंगफली पैदा हो रही है और इस सिंचाई के बल यहां के किसान भांति भांति की फसल लगाकर समृद्ध बन रहे हैं। वैसे ही ईस्वी सन् 1978 79 में राजस्थान नहर की लिफ्ट पम्पिंग योजना का पानी बीकानेर पहुँचाया गया और मध्य मरुस्थलीय क्षेत्र की जनता को पीने का भरपूर पानी मिला। लिफ्ट केनाल के जल से यहां की जमीन के खेतों में सिंचाई शुरू हो गयी। तब यहां के कृषि शास्त्रीय वैज्ञानिक आचार्यों ने अपनी तीव्र दृष्टि दौड़ाई कि अरब जैसे धूलीय देश मीठे खजूर उपजाते हैं तो राजस्थान केनाल के इस अमृतोपम मिष्ठ जल से खजूर की खेती निपजने में क्या असफलता हो सकती है? बस! लूनकरनसर एवं बीकानेर के बीच एरिया के कुछ हैक्टेयर क्षेत्र में अच्छी जातियों के सैकड़ों पौधे अनुसंधान हित लगा दिये गये। लाखों रुपयों का व्यय हुआ और पौधे विदेशों से आयात किये गये। यहां गर्मी के कारण खजूर के पौधे अच्छे बढ़े फले और चार ही वर्षों में एक एक पौधा काफी मात्रा में फल देने लगा। यदि यहां के किसानों को खजूर की खेती करने का नुजुबा हाथ लग गया तो मान लो वे निहाल ही हो गये। इससे लोगों को अनेकानेक लाभ होंगे और ग्रामोद्योग की दृष्टि से गांवों में उसके अन्य अंग उपांगों से कुटीर उद्योग स्थापित हो जायेंगे।

क्षेत्र का ऐतिहासिक परिशिष्ट—यह भड़ाण भूमि और उसकी तहसील इनायत वीर भोग्या वसुन्धरा" के सिद्धान्त से महिमान्वित क्षेत्र है। असंख्य योद्धाओं ने इसी भूमि से प्रेरणा पाकर वीरता पूर्वक लड़ते हुए मृत्यु का आलिंगन किया है। यहां सूरवीरों एवं संत वादियों की भरपूर कथाएं मिलती हैं। यहां के भूमिगृह अनेक वीरों के लिए शांत, एकांत, गम्भीर तथा गोपनीय स्थान रहे हैं। यहां आये उत्कट वीरों का कभी कहीं भंडा फोड़ नहीं हुआ और ऐसे जांगलीय भूमिगृह (भू हर) ढके हुए वतनों की भांति बहादुरों के रहस्य पूर्ण कथानक अभी अपने हृदय में बसाये हुए हैं। वतन का अर्थ भंडा भी होता है। अत यह प्राचीन युद्ध प्रक्रिया कौशल स्थल जाधाण जैसाण के ण की भांति भंडा राजस्थान[1] की भड़ाण नाम से प्रसिद्ध हुआ है।

चौदहवीं शताब्दी की बात—जांगलू के एक राजपूत का गांव पल्लू में विवाह संबंध हुआ था। उस पल्लू के पास खरलों राजपूतों का विस्तृत राज्य था, जिसकी चारों तरफ बड़ी धाक व्यवस्था चलती थी। इस क्षेत्र पर बादशाही थाना भटनेर लगता था। किन्तु 210 गांवों की साहिबी खरलों के सरदार वेणीदास भोगते थे।[2] यह स्थान भड़ाण भूमि वलित प्राचीन क्षेत्र था। यहां भैंसों के अनेक खाडू थे और दूध दही की प्रचुरता पूर्ण बहारें यहां करती थीं। खरलों के घर गाय, भैंस और ऊँटों के अनेक वग थे। ऊँटों के रबारी बड़े हठीले, रौबीले थे, जहां चाहे वहां जबरदस्ती कर बैठते थे।

गांव जांगलू[3] का वह राजपूत पल्लू अपनी ससुराल आया हुआ था। ससुराल

1 राजधानी

2 उसके राज्य की सीमा—एक तरफ भाटियों का राज्य, एक तरफ जोइयों (यौधेय) का राज्य, एक तरफ सीहावग खीचियों का राज्य और एक तरफ पाहुवों का राज्य लगता था। खरलों के स्थान कळस व भड़ाण और सांखलों के जांगलू राज्य में अधिक दूरी नहीं थी। सांखलों के गांव सत्तासर तो खरलों के कुंवर आखरके चढ़कर सूर्योदय के समय पहुँच जाया करते थे।

3 जांगलू बीकानेर से 28 मील दक्षिण में है। बीकानेर का इतिहास, प्र० भा० पृ० 55

की स्यारी (गाव को पानी पिलान की पारी) के दिन वह कूए पर पानी की रखवाली पर बठा था। अचानक पल्लू के कूए खरला के पशु पानी पीन आये और रवारियो ने कोठे का नाला खोल दिया। राजपूत ने मना किया और नही मानने पर सग्राम छिड गया। खरला के रबारी जबरदस्त थ, उस राजपूत को जान से मार डाला। उसका कूए के पास वही दाह सस्कार कर दिया गया।

इस समाचार से क्रोधित होकर जागलू का राजकुमार कुवरसिह स्वय अपनी फौज लेकर खरला के क्षेत्र मे बर लेने के लिए जा पहुचे। वहा खरला की भूमि म खिचियो के भी अनेक गाँव थे। पता किया कि खरलों के कुवर दलवल से गाव पल्लू माताजी की जात (मनौती की यात्रा) पर है। तब कुवरसी ने वही जाकर पल्लू के कूए पर पानी पीने वाली खरला की करीब एक हजार स्हाढें अपने कब्जे म ले ली और खरला के वेणीदास के बेटे पोते तथा अनक व्यक्ति मार डाले, बचे सो भाग निकले।

खरला वेणीदास को यह खबर मिली, तब उसने कहा— ऐसा कौन है, जो मरी स्हांढें ले जाय और आदमियो को मार डाले ? साक्षात मृत्यु का निमन्त्रण दिया है उसने।" तब रबारिया न बताया कि जागलू के चरसुकाल स्वामी खीवसी का कुवरसी साखला अपन परलू विवाहित राजपूत के मारे जान के समाचार सुनकर आया है। पहले यहाँ अपन रैबारियो ने पल्लू के कूए पर पानी की रखवाली करते हुए एक राजपूत को मार डाला था। कुवरसी उसका बर लन के लिए आया और हमारे बहुत से आदमियो को मारकर सारा पशुधन ले गया है।

साँखला का राज्य जबरदस्त था, इसलिए सामी छाती (प्रत्यक्ष मे) खरलो का कुछ भी जोर नही चला। तब उपाय सोचा कि कुवरसी कभी आय हुए टीके को वापिस नही भेजता, ऐसा प्रण किय है। अपन घर विवाह योग्य भारमल (वेणीदास की कुमारी पुत्री) मोतियाबिंद से अधी है। कुवरसी के पास चुपचाप नारियल भेजा जाय। वह प्रतिज्ञा वशात्[1] इ कार नही करेगा और विवाह के समय उसका यहा जसे-तसे अत कर देंगे।

कुवरसा न टीका स्वीकार करके अपनी चतुराई से भारमल खरल का उद्धार किया। उसन कु वरसी का देखा और आँखें खुल गई।[2] कु वरसी सही सलामत वापिस घर जागलू पहुँच गय।

कु वरसी का विवाह तो भारमल के साथ हुआ, मगर बडा तजवाज एव निगरानी के साथ। खरला के आदमी कपट धोखा करने के लिए तनात थे। पर साँखलो के सरदार चवरी के समय खरलो का घर द्वार घेरे मे लेकर चारो ओर घोडो पर चढे

---

1 सिर जावो सो नाक सु, नाक न जाज्यो चख।
पाणी पुटग न जावज्यो लोही जाज्यो लख॥

2 उठै कु वरसी घाड सू उतर चवरी जाय बैठो। हथलेवो जाडियो। इसा मे परमेश्वरजी री असी आग्या हुई, जो भारमल री आरया रा पडल दूर हुग्या। कु वरसी अर भारमल री निजर असी गडी, ज्यू कामदेव री रत री निजर गड ज्यू गडी। दोनू ऐसा रूपवत, सो सारी प्रथी मे जोया न लाध। तद कु वरसी भारमल री आँरया देख दूहो कह्यो—"पारेव ज्यू रतीया मद ज्यू भीभळीया।
कही उझेल झलीया, भरमल आंखडीयां॥"

ताकते रहे। सासु की फरियाद और भारमल की अनुनय पर कु वरसी रात भर जनानी ड्योढी में रहे। कु वरसी ने नारियल लेने से लेकर ऐसे सारे रस्मों काय अपने ओज विश्वास पर किये जिनके लिए कि उसके पक्ष के तमाम परिजन हर मौके मना करते रहे।

वह रात कु वरसी और भारमल के लिए बडी सुभावनी रही। परन्तु पहर के झुटपटे ही खरना के पाच जवा पुरुष, वेणीदास के हुक्म मुजब कु वरसी का काम तमाम करने के लिए द्वार कपाट के निकट आकर खडे हो गये। उस समय भारमल ने अपने पिता की चालाकी नात करके कु वरसी को सावधान कर दिया। तब कु वरसी ने अपने जिरह बख्तर पहन कर हथियार हाथ कर लिए और घर से बाहर खडी अपनी फौज मे जाने के लिए तैयार हुए। उस समय भारमल ने अज की—'जो मन वण (वचन) देवो तो थानु घोडा पुहचाऊँ।" कु वरसी ने कहा—'किसो वण मागो ?" इस पर भारमल ने कहा— सावण की तीज के दिन पुन यहा मुझसे मिलने आओ। यहा से सवा कोस पर भर्से रखने का हमारा खाडू स्थान है। तीज के दिन मैं सब सहेलियो सहित अवश्य वहा पहुँच जाऊँगी। आप वहा जरूर पधारना।" प्रणधर कु वरसी ने विकट परिस्थिति मे भी भारमल की बात को स्वीकार कर लिया। तब भारमल ने कु वरसी का एक तरफ लेकर, नया दुशाला पहनाकर स्वय सहेली बनकर अत्यत चतुराई स छुपे रूप बाहर कर दिया। तब वह अपनी फौज मे मिलकर सत्तासर होते हुए राजधानी चले आये। कु वरसी के बच निकलने की खबर हुई तो खरल वेणीदास ने उन लोगो पर भारी क्रोध किया जो कु वरसी को नहीं मार सके।

कु वरसी के राजी-खुशी आ जाने पर जागलू मे महीने भर तक बडे राग रग हुए। केशरिया किये वेहडा वदाये निछरावलें हुई तथा गोठो के ठाठ शुरू हो गये। परन्तु राणा खीवसी को मालूम हुआ कि कु वरसी सावण की तीज पर खरल भारमल स मिलने जायेगा। तब खीवसी व उसकी राणी ने तीज का त्योहार सारे शहर मे बद करवा दिया और कु वरसी की सारी कु वराणियो को बुलाकर समझा दिया कि वे सावण की तीज आने का कु वरसी को पत्ता न लगने दे। ऐसा ही हुआ, जिससे कु वरसी दो वर्ष तक सावण की तीज के वायदे को याद ही नहीं कर सका। एक दिन शिकार में गये तब एक अन्य गाव म औरतो को सावण की तीज के गीत गाते और हीडा हीडते देखा, तब भारमल की बताई जगह और सावण की तीज का वायदा याद आ गया। कु वरसी ने तुरन्त साथ के सारे लोगो को कही, अनकही करके बहादुर राघोदास रवारी से निजू ऊँट सूहो (शुभ्र) जो जमीन का करवत कहलाता था, मगवा लिया तथा घोडे से उतर कर रवारी राघोदास के अगले आसन बैठकर भडाण के खाडू स्थान को चल दिये। साथ के सारे लोग अकेले जागलू आ गये। सारे शहर में उदासी छा गई। राव खीवसी न कु वरसी की खैर मनाने हेतु पूजा पाठ, जपादि बठा दिये।

उधर कु वरसी ने रवारी राघोदास से कहा कि ऐसा मध्य रास्ता बनाकर खरल के खाडू चला, जिससे रास्ते के गाव इधर-उधर रह जायें। सो वे ऐसे चले कि सर (लूनकरनसर) और कालवास के बीच से होकर निकले। कालासर के वड (वृक्ष) को देखकर कु वरसी न एक दोहा कहा—

'सर डाव, वड जीवण, दुहु विचाळ वट।
तींमा खडिया उठीया, कामडीया मुँह फट।"

बस्तियां टालते हुए खादू की ओर ऊँट को ऐसा दौडाया कि छिपते हुए सूय के समय जोइया की जमीन छोडकर खरलों की सीमा मे प्रवेश पा लिया, ऐसा राघ रवारी ने बताया। सध्या, साथ का खाना खा पीकर, कु वरसीं खादू पहुँचा और सहेलियों के साथ आई भारमल से मिला। फिर तो भू गह मे काफी समय गोपनीय ढग से रहे तथा बाद मे सब सीख विदाई से जागलू आ गये।

पर तु राजपूत वेणीदास के राज्याधीन कुछ गाव भडाण मे थे, जिनकी एक उत्तर दिश सीमा जोइयो (योधेय) के राज्य से सटी हुई लगती थी। जोइयों की राजधानी लखेरा (भावलपुर) सिध के मातहत थी। उ होंने खरला से युद्ध शुरू कर दिया। तब वेणीदास न मदद के लिए कु वरसी का बुलाया। कु वरसीं अपनी हजारो की फौज व बेहद शस्त्र सामान के साथ खरलो के यहाँ आया। दूसरे रोज वेणीदास की फौज के साथ अपनी फौज मिलाकर जोइया की राजधानी की तरफ कूच कर दिया।[1] नये बाण, नई बन्दूकें, जोइया को बुरी तरह परास्त कर दिया। खरल राणा न बडा अहसान माना। कु वरसी वापिस अपन राज्य जागलू के लिए रवाना हुए। तब उनके रास्ते म फिर सर (लूनकरनसर) आया था।[2]

साखला खीवसी[3] चरसुकाल[3] उसका कु वरसी साँखला कु वरसी के जेसा, जेसा के मूजा और मूजा के उदा साखला जन्मा। वि० स० 1437 म उदा ने राठौड वीरमदेव को मुसलमानो स बचाकर जागलू से दल्ले आदि जोइया के साथ सुरक्षित सहवाण (पास-भडाण) पहुँचाया था। उद साँखले के बाद साखले हल्के हो गय, किन्तु उनकी पीढी मे नापा साँखला न बीकानेर राज्य बसाने म राठौडो की मदद की थी। भडाण की उत्तरीय सीमा पर आय दिन जोइयो से झगडे लगे रहते थे। भडाण और उसके तहसील क्षेत्र का यह भव्य गुण है कि युद्ध की तयारी के लिए यह स्थान सब विशिष्ट पूज्यमान रहा है। वतमान म भी यहाँ भारत सरकार का फौज की छावनी बनान की योजना चल रही है।

यह लूनकरनसर है—याद कीजिए प्रा त के इस प्रख्यात जीवनदाता क्षेत्र को यह लूनकरनसर है। रेल आने के बाद से आज तक भारी अन्न का आदान प्रदान करता है। यहाँ की तिक्त सहिष्णु एव दढ भूमि म अनेक वीर सेवक पदा हुए हैं। ई० सन् 1846 माच म लाहौर के महाराजा और अग्रेज सरकार के सुलहनामे के समय इस क्षेत्र के सनिक सारवारा क भाटी भूपालसिंह व केला के भाटी मूलसिंह को तथा महाजन एव कुम्भाना के दीवान सरदारा को तत्परता वीरता तथा समझदारी पूण सत्य काय करने के उपलक्ष्य म ब्रिटिश गवनमट न खिलअतें भेजी और खिताब दिये थे। प्रथम महायुद्ध के पश्चात ई० सन 1918 मे गारबदेशर के श्री सादूलसिंह और सुरनाणा के श्री भूरसिंह आदि को वीरता दिखलाने के लिए सम्मान, पदक एव राव बहादुर के खिताब मिले थे। भारत व्यापी गदर के असाधारण प्रलोभन म या परिस्थिति म भी इस क्षेत्र के सनिको द्वारा किये गये अमूल्य सेवाओ के निस्वाथ कार्यों को फ्रेड्रिक कूपर न अपनी ऐतिहासिक

---

1 कृपा करीज कुवरजी, लीज मौकू सग।
राख चल्या मो मरण है, सग लिया सुख रग॥ (खरल भारमल)

2 देखिये कु वरसीं साखले की बात।

3 इसके सम्मान मे जागलू की देवली दृष्टव्य है।

4 जिसका भोजन पात्र सदैव भरा रहने के कारण सुकाल (अक्षय पात्र) कहलाता था।

पुस्तक मे एशियाई प्रतिष्ठा के उत्कृष्ट उदाहरण बताय हैं। पाकिस्तान के युद्ध के समय अपने नाम से भयभीत करने वाले स्व० मेजर पूर्णसिंह की यह बलिदानी धरती है। महामहिम श्री राष्ट्रपति स परम वीरचक्र पाने वाले लेफ्टीनेंट कनल श्री जगमालसिंह राठौड का यह तेज त्याग वाला जुझार भू भाग लूनकरनसर तहसील क्षेत्र है। यहाँ मेहमानो को घी, दूध व दही की भेंट चढाई जाती है, किन्तु बेरिया को यहा के वीरो के सामने धूल चाटनी पडती है।

यहीं था कभी प्राचीन जन मन लालसा पूर्ति का लवण भडार! यही है गारब देशर गाव को अपनी तहसील की गोद बनाने वाले सब बातन का सुखीय क्षेत्र! यही हैं कोटि कोटि श्रद्धालुओ की कालिका माता का पुनीत धाम कालू! समस्त जसनाथ सप्रदाय मे प्रसिद्ध हसेरा गाव और वहा की जीवित समाधिया! नगाडो के साथ 'ओकार ध्वनि' का आलाप उठन वाली हँसरा की सिद्ध साधना बाडी! यही है रामदेवजी का खियरा रामदवरा, जहा लाखा मनुष्यो का भीड भरा वार्षिक माघ मेला लगता है और यही होता है सास्कृतिक आयोजनो का मन भावना बजरग भवन का सालाना समारोह! यहाँ क पानी की महत्ता मिष्ठ मूगफली, दूध दही की सरिता, अमृतफल से सरस मतीरे जिन्होने खाय पिय हैं वे जानते हैं इस सुधामयी वसुधा का आनदमय निवास!

इस तहसील क्षेत्र के काकडवाला, वडेरण कु भाणा, महाजन आदि गावो से पश्चिम के गाव हसेरा साधेरा, खियरा डूडाळी, खिलेरिया उदसिया मूसलकी महादेव-वाली, गाटा, खोखराना वगैरह भटाण म हैं और कु भाणा, मणेरा सुलेरा भीखणेरा, भूवालो आदि पास पास के गाव बळस के वास कहलाते हैं। परतु कालू महाजन, जतपुर, शेखसर, सूई शेरपुरा कपूरीसर, गारबदेशर आदि जटायत के गौरवशाली बडे गाव हैं।

अब राजस्थान कैनाल नहर से दक्षिण और राजस्थान लनकरनसर लिफ्ट कनाल से उत्तर' बीच के गावो के स्थान पर छावनी बनगी। यह महाजन गाव से उत्तर पश्चिम की तरफ बडे लम्बे एरिया को घरेगी। पहले छावनी एरिया वाले स्थल से कई सार्व-जनिक सडकें निकलने वाली थी, अब वे सब बद कर दी गई हैं।

परिशिष्ट (पूरक प्रकरण)

तहसील के कुछ उपेक्षित ग्राम व सस्थाएँ—

बढ गया वक्त न सस्थाएँ दीखती हैं—
अब तक न उनके काम का साया दीख पाता। (सकलित)

किसी भी सस्था का जन सगठन, व्यवहार स्नेह एव शासनप्रबध वहाँ के कार्य-कर्त्ताओ की पावन सेवा भावनाओं पर प्रगतिरूप आधारित रहता है, जिनसे वे स्थान, निवास अथवा नगर, सभ्य शिष्ट तथा सुसस्कृत माने जाते हैं। राज्य एव समाज के प्राचीन नीति नियम, लोकधम के परम्परित रीति रिवाज तथा सेना समृद्धि वाले व्यव हरित अधिकार और उनकी मर्यादित परिपाटी सस्थाओ द्वारा परिशृ खलित रहती आई है। वे जनसाधारण मे सुखद कामों का निर्वाह करती हुई जनजागति का प्रतीक कहलाती है। परतु हन!! हमारे तहसील क्षेत्र के कस्बा मे अनेक पुरानी सस्थाए वहाँ के नाग-रिको की देखभाल के अभाव मे नष्ट प्राय हुई जा रही हैं और कई हो भी चुकी हैं। इन सबके गुणो, उपकारो एव लाभा को आधुनिक राजनीतिपरक लोग विस्मरण किय हुए हैं।

बस्तिया टालते हुए खाडू की ओर ऊँट का ऐसा दौडाया कि छिपते हुए सूय के समय जोइया की जमीन छोडकर खरलों की सीमा मे प्रवेश पा लिया, ऐसा राघ रवारी ने बताया। सध्या, साथ का खाना खा पीकर, कु वरसी खाडू पहुँचा और सहेलियों के साथ आई भारमल से मिला। फिर तो भू गृह मे काफी समय गोपनीय ढग से रहे तथा बाद में सब सीख विदाई से जागलू आ गये।

पर तु राजपूत वेणीदास के राज्याधीन कुछ गाव भडाण मे थे, जिनकी एक उत्तर दिश सीमा जोइयो (योधय) के राज्य से सटी हुई लगती थी। जोइयों की राजधानी लखेरा (भावलपुर) सिध के मातहत थी। उ होने खरला से युद्ध गुरु कर दिया। तब वेणीदास ने मदद के लिए कु वरसी को बुलाया। कु वरसी अपनी हजारों की फौज व बेहद शस्त्र सामान के साथ खरला के यहाँ आया। दूसरे रोज वेणीदास की फौज के साथ अपनी फौज मिलाकर जोइयो की राजधानी की तरफ कूच कर दिया।[1] नये बाण, नई ब दूकें, जोइया को बुरी तरह परास्त कर दिया। खरल राणा ने बडा अहसान माना। कु वरसी वापिस अपन राज्य जागलू के लिए रवाना हुए। तब उनके रास्ते मे फिर सर (लूनकरनसर) आया था।[2]

साखलो खीवसी[3] चरसुकाल[4] उसका कु वरसी साँखला, कु वरसी के जेसा, जेसा के मूजा और मूजा के उदा साखला ज मा। वि० स० 1437 म उदा ने राठौड वीरमदेव को मुसलमानो से बचाकर जागलू स दल्ले आदि जोइया के साथ सुरक्षित सहवाण (पास भडाण) पहुँचाया था। उद साँखले के बाद साखले हल्के हो गय, कि तु उनकी पीढी म नापा साँखला ने बीकानेर राज्य बसाने म राठौडा की मदद की थी। भडाण की उत्तरीय सीमा पर आये दिन जोइयो से झगडे लगे रहते थे। भडाण और उसके तहसील क्षेत्र का यह भव्य गुण है कि युद्ध की तयारी के लिए यह स्थान सब विशिष्ट पूज्यमान रहा है। वतमान म भी यहाँ भारत सरकार का फौज की छावनी बनान की योजना चल रही है।

यह लूनकरनसर है—याद कीजिए प्रा त के इस प्रख्यात जीवनदाता क्षेत्र को यह लूनकरनसर है। रेल आने के बाद से आज तक भारी अ न का आदान प्रदान करता है। यहाँ की तितिक्षा सहिष्णु एव दढ भूमि मे अनक वीर सेवक पदा हुए हैं। ई० सन् 1846 माच म लाहौर के महाराजा और अग्रेज सरकार के सुलहनामे के समय इस क्षेत्र के सनिक सारवारा क भाटी भूपालसिह व केला के भाटी मूलसिह को तथा महाजन एव कुम्भाना के दीवान सरदारा को तत्परता वीरता तथा समझदारी पूण सत्य काय करने के उपलक्ष्य म ब्रिटिश गवनमट ने खिलअतें भेजी और खिताब दिये थे। प्रथम महायुद्ध के पश्चात ई० सन 1918 मे गारबदेशर के श्री सादूलसिह और सुरनाणा के श्री भूरसिह आदि को वीरता दिखलाने के लिए सम्मान पदक एव राव बहादुर के खिताब मिले थे। भारत व्यापी गदर के असाधारण प्रलोभन म या परिस्थिति म भी इस क्षेत्र के सनिको द्वारा किये गये अमूल्य सेवाओ के निस्वाथ कार्यो को फ्रेड्रिक कूपर न अपनी ऐतिहासिक

---

1 कृपा करीज कुवरजी लीज मोकू सग।
राख चल्या मो मरण है सग लिया सुख रग॥ (खरल भारमल)

2 देखिये कु वरसी साखले की बात।

3 इसके सम्मान मे जागलू की देवली दृष्टव्य है।

4 जिसका भोजन पात्र सदव भरा रहने के कारण सुकाल (अक्षय पात्र) कहलाता था।

पुस्तक म एशियाई प्रतिष्ठा के उत्कृष्ट उदाहरण बताये हैं। पाकिस्तान के युद्ध के समय अपने नाम से भयभीत करने वाले स्व० मेजर पूर्णसिंह की यह बलिदानी धरती है। महामहिम श्री राष्ट्रपति से परम वीरचक्र पाने वाले लेफ्टीनेंट कनल श्री जगमालसिंह राठौड़ का यह तेज त्याग वाला जुझार भू भाग लूनकरनसर तहसील क्षेत्र है। यहाँ मेहमानों को घी, दूध व दही की भेंट चढाई जाती है, किन्तु बेरियो को यहा के वीरो के सामने धूल चाटनी पडती है।

यही था कभी प्राचीन जन मन लालसा पूर्ति का लवण भडार! यही है गारब देशर गाव को अपनी तहसील की गोद बसाने वाले सब बालन का सुक्षेत्र क्षेत्र! यही हैं कोटि कोटि श्रद्धालुओं की कालिका माता का पुनीत धाम कालू! समस्त जसनाथ सप्रदाय मे प्रसिद्ध हसेरा गाव और वहाँ की जीवित समाधियाँ! नगाडो के साथ "ओकार ध्वनि" का आलाप उठने वाला हँसेरा की सिद्ध साधना वाडी! यही है रामदेवजी का खियेरा रामदेवरा, जहा लाखा मनुष्या का भीड भरा वार्षिक माघ मेला लगता है और यही होता है सास्कृतिक आयोजना का मन भावना बजरग भवन का सालाना समारोह! यहाँ क पानी की महत्ता मिष्ठ मूगफली, दूध दही की सरिता, अमृतफल से मरस मतीरे जिन्होंने खाय पिय हैं वे जानते हैं इस सुधामयी वसुधा का आनदमय निवास!

इस तहसील क्षेत्र के काकडवाला, वडेरण, कु भाणा, महाजन आदि गावो से पश्चिम के गाव हसेरा, सावेरा, खियरा डूडाळा, खिलेरिया, उदेसिया, मूसलकी, महादेव-वाली, गाटा खोखराना वगरह भटाण मे हैं और कु भाणा मणेरा सुलेरा भीखणेरा भूवालो आदि पास पास के गाव कळम के बास कहलाते हैं। परन्तु कालू महाजन, जतपुर, शेखसर, सूई शेरपुरा, कपूरीसर गारबदेशर आदि जटायत के गौरवशाली बडे गाव हैं।

अब राजस्थान केनाल नहर मे दक्षिण और राजस्थान लनकरनसर लिफ्ट केनाल से उत्तर' बीच के गावो के स्थान पर छावनी बनगी। यह महाजन गाव से उत्तर पश्चिम की तरफ बडे लम्बे एरिया को घरेगी। पहले छावनी एरिया वाले स्थल से कई सार्व-जनिक सडकें निकलने वाली थी अब वे सब बद कर दी गई हैं।

परिशिष्ट (पूरक प्रकरण)

तहसील के कुछ उपेक्षित ग्राम व सस्थाएँ—

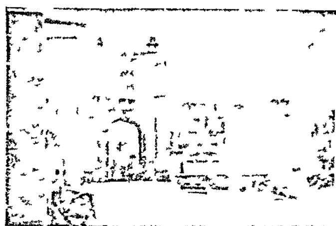
बढ गया बवन न सस्थाएँ दीखती हैं—
अब तक न उनके काम का साया दीख पाता। (सकलित)

किसी भी सस्था का जन सगठन, व्यवहार स्नेह एव शासनप्रबध वहाँ के कार्य-कर्ताओ की पावन सेवा भावनाओ पर प्रगतिम्य आधारित रहता है, जिनसे वे स्थान, निवास अथवा नगर सभ्य शिष्ट तथा सुसस्कृत माने जाते हैं। राज्य एव समाज के प्राचीन नीति नियम, लोकधर्म के परम्परित रीति रिवाज तथा सेना समृद्धि वाले व्यव हरित अधिकार और उनकी मर्यादित परिपाटी सस्थाओ द्वारा परिष्कृत रहती आई है। वे जनसाधारण म सुन्दर कार्यों का निर्वाह करती हुई, जनजागृति का प्रतीक कहलाती है। परन्तु हत!! हमारे तहसील क्षेत्र के कस्बा मे अनेक पुरानी सस्थाए वहाँ के नाग-रिको की देखभाल के अभाव मे नष्ट प्राय हुई जा रही हैं और कई हो भी चुकी हैं। इन सबके गुणा, उपकारो एव लाभों को आधुनिक राजनीतिपरक लोग विस्मरण किये हुए हैं।

चमन म सौ तरह की जब बहारें हमने लूटी हैं,
नो आँखों से न देखा जायेगा जुल्मे खिजाँ हमसे।

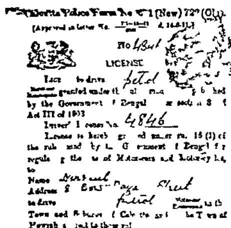
इसलिए मात्र कस्बों, गाँवों और उन सस्थाओं का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। लूनकरनसर—तहसील मुख्यालय के कस्बा लूनकरनसर की सावजनिक सस्थाओं मे सब प्राचीन धमशाला भवन (सरदारशहर के करनाणियों द्वारा निर्मित वि० स० 1961) और वहा के सब उपकारी बडे कुण्ड। द्वितीय सब हितकारिणी "बावडी" (ई० सन् 1939) एव महावीर सुरुचि तक पुस्तकालय (1 4 45 ई०) जसी अनेक सस्थाओं का आत्मिक उपयोग लेने मे लूनकरनसर के निवासियों का नाम आदरणीय रहा है। यद्यपि यहाँ के लोगों ने इन सस्थाओं से पर्याप्त लाभ लिये हैं। परन्तु मधुमक्खी वृति मे सस्था पुष्पावली का रस चूसकर अब बिल्कुल त्याग कर दिया है जो मानव धम मे बाहर की बात है।

महाजन—महाजन भी तहसील का प्रसिद्ध गाव है। इसका सुन्दर एवं ऐतिहासिक गढ अब असुरक्षित तथा नष्टता के कगार पर कपायमान स्थिति मे खडा है। पडित



[राव लूनकरन के कुवर रत्नसिंह को ई० 1505 म महाजन ठिकाना मिला। रत्नसिंह ने बीकानेर की फौज म सागा (कछवाहा) की सहायता कर सागानेर बसाने मे प्रसिद्धि पाई। महाराजा जतसिंह के साथ जोधपुर की लडाई मे नागौर के खान को बरछी का वार दिखाया। उसके पुत्र अर्जुनसिंह ने मेडते की सहायता म बीकानेर की फौज (1545 ई०) मे भाग लिया। रत्नसिंह व अर्जुनसिंह का पौत्र उदयभान बीकानेर महाराजा के आदेश से जोइयों से लडा। उदयभान के पुत्र जगतसिंह ने लडाइयों म हाथ दिखाये। प्रतापसिंह (उदयभान के भाई) और उसका पुत्र मोहकमसिंह भी देश भक्त थे। फिर भीमसिंह भगवान सिंह तथा शिवदान सिंह और उसके पुत्र शेरसिंह, वैरीसाल सिंह हुए। उसके उत्तराधिकारी अमरसिंह और रामसिंह राज्य के बागी कहलाए। हरिसिंह नीतिवान भोपालसिंह कठोर शासक और राजा रघुवीर सिंह सभ्य सरदार थे। धोंकलसिंह छुटभाई थे। महाजन का गढ सबकी स्मृति लिए खडा है। पहले इस गढ मे उत्तर मुख एक भीम प्रोल था। गगासिंह जी महाजन पधारे, तब 'गगा प्रोल' नाम से उक्त दरवाजा (जिसकी तस्वीर है) बनाया गया। गढ का गौरव और भय था, पर अब इसकी हालत खस्ता है, पशुओं तक के आने जाने का रास्ता है।]

केशरीप्रसादजी शास्त्री जसे विद्वान इसी सरोवर क ज्ञानामृत पान हेतु सदव पिपासु बन रहते थे। मगर वक्त की विकट विपदाओं म उस पुस्तकालय की प्राचीन पुस्तकों के पन्नों मे आजकल रेलवे स्टेशन एव बस स्टण्ड पर यात्री लाग कचौरियाँ खात दृष्टि गोचर होते हैं। इन पन्ना की पुस्तका का सुरक्षित करवा देन वाला काई मानविक हृदय महाजन नाम का साथक करेगा, यही आश्वस्ति है। यहा का श्री कस्तूरबा ग्रामोत्थान महिला विद्यापीठ भी शिक्षित सज्जन वग को तरस भरी दृष्टि से ताक कर अपने पास बुला रहा है कि विद्वानों के काय केन्द्र, सरस्वालय ही तो होते हैं।



Calcutta Police Form No. 1 (New) 72° (Old)
No 4841
LICENSE
[illegible] to drive Petrol
[illegible] granted under [illegible] by the Government of Bengal [illegible]
Act III of 1903
License No. 4846
License is hereby granted under ru. 15 (1) of the rules made by the Government of Bengal for regulating the use of Motorcars and Motorcycles, to
Name [illegible]
Address 8 [illegible] Street
to drive Petrol [illegible]
Town and Suburbs [illegible]
Howrah [illegible]

गढ का खवास श्री रिडमल पंवार सन 1913 मे मोटर ड्राइवर
(कलकत्ता का लाइसेंस बंगाली का लिखा रिडमल = निमल)

राजासर उर्फ करणीसर—राजासर महाजन राजाओं के नातले राजविया का ठिकाना था। वहाँ के किशनसिंह जगमालसिंह आदि ठाकुरों के रहते हुए ही अपनी रजत जयती के अवसर पर श्री गंगासिंहजी ने यह ठिकाना पुरान ठाकुरों स उतारकर गुलाबसिंह जी को दे दिया। उसन लागा को थाडी दूर ले जाकर करणासर बसा लिया। परन्तु वहाँ का पुराना कूआ, मन्दिर सतीजी की देवली और हाथ की छाप वही नष्ट हो गय।

गारबदेसर—इस गाव म क्षेत्र के प्राचीन वराग मडल का एक वहद ठाकुर द्वारा है। जिसके चारों ओर बडी दीवार तथा चारा कूटो म बडे बुज बन हुए थे। यात्रियों के ठहरन हेतु बडे बरामदे एव जल सुविधा के लिए बडा कुण्ड था। लेकिन अब वह मदिर खडहर रूप लटा दिखाई दता है। भगवान की पूजाथ नागरिकों को अपना मेहनत की महक प्रसरित करना चाहिए। यहा क जन मदिर की जगह भी थड रूप रह गई है और अभी हरिदासजी की साल पाल तो सही ह।

भानीपुरा—भानीपुरा के थेह में एक कूआ (सिल कोठे सहित) और कुण्ड हैं जो रेत में दबे जा रहे हैं।

बासी—बासी का पुराना कूआ तो सोमाणे धारे की धूल म समा गया है, मगर खिलेरे तालाब वाला मीठे पानी का कूआ अपनी नव्य दशा मे रहता हुआ भी बर्बादी की स्थिति म जूझ रहा है।

कालू—कालू में स्थानीय गरजती हुँकारती राजनीति में नागरिकों की संस्थाओं के प्रति विस्मरण वृत्ति से यहाँ की कतिपय सुहासनी संस्थाएँ उपेक्षित बनी हुई सिसकत श्वास ले रही है। इनमें सर्वप्रथम रमणीक एवं अत्यन्त चित्ताकर्षक रामस्नेहियों की जगेरी (वि० स० 1815), नेहरू छात्रावास (ई० सन 1953), श्री सरस्वती पुस्तकालय (ई० सन् 1935), जैन उपाश्रय (वि० स० 1905) और जैन मंदिर (पन्द्रहवीं शती) आदि मुख्य हैं। वैसे श्री भानीनाथजी की समाधि जगह भी अपनी पुरानी भव्य व्यवस्था का स्मरण करा रही है। यदि इन ऐतिहासिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक लाभ दान प्रदायक संस्थाओं के बिखराव में समय पर विशिष्ट संयोजन नहीं हुआ तो समस्त क्षेत्र की विकास प्रतिष्ठा तथा परम्परित शीतल सुरभित सेवा क्रिया की कीमत चुक जायेगी।

फकत इस आसरे पे रात काटी शमा ने रोकर।

कि शायद सुबह तक जिन्दा मेरा परवाना हो जाए॥ (उर्दू काव्य कुसुमावली)

कालू की समाप्त हुई संस्थाएँ—

1 मेखा गोदारा की छत्री (वि० स० 1843 म स्थापित, वि० स० 1990 म समाप्त) तथा गोदारा जाटों का ठाकुर द्वारा (वि स 1855 मे स्थापित 1992 मे समाप्त)।

2 श्री सरस्वती नाट्य परिषद (इ० सन 1936 मे स्थापित 1964 म समाप्त)।

3 श्री सनातन धर्म सभा (इ० सन 1943 म स्थापित सन 1953 म समाप्त)।

4 श्री ग्राम सेवा संघ (स्थापित ई० सन 1950 मे तथा सन् 1960 म समाप्त)।

5 श्री गोचर भूमि राही उतरादी मे (प्राचीन समय से व सन 1951 मे स्थापित सन 1962 म समाप्त)।

6 श्री स्वामीजी वाला कूआ (निर्माण 1975 76 म तथा 2033 मे समाप्त)।

7 श्री धन्नाणा तालाब की पाल (प्राचीन समय म स्था०, सन् '73 म समा)।

8 श्री अन्नाणा तालाब के ताल सुरक्षा के तार (1962 64 मे सन 1966 मे)।

9 चारों कूओं के सारण (प्राचीन समय से निर्माणकाल) 1966 मे समाप्त)।

10 जाहड़े की साल (वि० स० 1996 मे स्थापित वि० स० 2038 मे समाप्त)।

तहसील के उपेक्षित एवं समाप्त ग्राम एवं संस्थाओं के संबंध में प्रयास—लूनकरनसर चुनाव क्षेत्र से विजयी होने वाले सामन्त सदस्य विधायक एवं जिले का राजस्व विभाग अगर चाहे तो यह अपनत्व प्रयत्न कर सकते हैं कि—हमारे क्षेत्र की कुछ परम्पराएँ लुप्त हो गई हैं उन्हें पुनर्जीवित करें। किन्तु विडम्बना यह है कि तहसील के नेता सरपंच तथा राजनैतिक नागरिक तो फकत अर्थ और निरे नाम कमाने की दौड़ लगा रहे हैं। अपने इस अंचल की संस्थाओं सार्वजनिक स्थानों एवं गांवों की सुगंध तक से परहेज करते हैं। वे सब सज्जन, मत के सिवाय अन्य दान की कोई भी सार्वजनिक सहमति मानने में अपना अपमान समझते हैं। अब उजड़े हुए गांवों सांस्कृतिक संस्थाओं और सार्वजनिक स्थानों आदि के लिए जन-साधारण को सचेत एवं विह्वल होकर रहना होगा और मृत संस्थाओं का शोक उपनिषद आयोजित करके उन राजनैतिक लोगों से दो मिनट का मौन चिंतन व माला पाठ भी करवाना आत्मिक संतोष प्रदान करेगा।

नोट—स्थानीय विकास कार्यों बाबत जिन संस्थाओं का ह्रास होता है, वह दोष निवृत्ति का उज्जवल हेतु है, किन्तु स्वार्थ, कमजोरी तथा उपेक्षावृत्ति धारण करने वाले

लोग सामाजिक अपराध के महाभागी बनते हैं। जैसे तहसील के 171 गावो मे से कुभाणा, मुटळाई, मणेरा आदि लगभग 30 गावो को उठाकर फौज की छावनी बनाने की सरकारी योजना है। अत तहसील के औद्योगिक कार्यों म क्षति होन की सभावना बन गई है। मगर राष्ट्र की यह महत्वपूर्ण काय योजनाएँ सपन्न होने की खुशी भी कम नहीं है। वसे राजस्व अधिकारियो द्वारा छत्रगढ का 'तहसील स्थापन' चुनाव हो जाने पर लूनकरनसर तहसील के कुछ गाव फिर उसमे मिल जायेंगे, उनमे भी सतोष ही होगा।

लूनकरनसर क्षेत्र के सत और सम्प्रदाय

जसनाथी सम्प्रदाय और हंसेरा—हंसेरा बीकानेर रोड पर पहला मुकाम है। यहाँ जसनाथ सम्प्रदाय की रमणीक एव प्रख्यात नवन निष्पद वाडी है। इसके गूदी एव जाल वृक्षो म मयूरादि पक्षी मस्त विचरण करते हैं। यहा पानी क कुण्ड और चुग्गे का पूरा प्रबन्ध रहता है। बाडी म मनोहर नाथ आदि तीन सता की जीवित समाधिया हैं।[1] यह गांव, जसनाथ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध सत हासोजी की नाम परम्परा मे बसा हुआ जान पडता है।

बींकजी भगती करी, बीकानेर धाम।
मया करी हमराजजी, हंसेरा पर नाम ॥[2]

श्री हासोजी के नाम पर सम्प्रदाय म अनेक किवन्तिया प्रचलित हैं। किन्तु श्री जसनाथजी के समाधिस्थ होन (वि० स० 1563) के बाद सिद्धाचाय के सेवका ने श्री हांसोजी का ही उनका प्रतिनिधि रूप मानकर सेवाराधना की। ये श्री जसनाथजी की सांसारिक वश लता मे ही अवतरित हुए थे। इसलिए कहा जाता है—

हियाळी हासाजी प्रगटया निकळग रे दिवाण।
हरमल हामा भेळा हुआ, भरिया अयग निवाण ॥"

हासाजी न लोकहित भावना से मडल के अय भागों का भी भ्रमण किया, जिनम तालियासर, लिखमादेसर स्थल बिग्गा आदि के नाम आते हैं। इनके आध्यात्मिक चमत्कारा से प्रभावित तत्सामयिक लोक, विनीत भाव श्रद्धालु रहे हैं। जसनाथी साहित्य मे इनकी प्रशसा एव प्रार्थना म बहुतेरे शब्द उपलब्ध होत हैं और अनेक शिष्यों के नाम भी।

इस तरह तहसील क्षेत्र म गाँव बाडसर और हंसेरा दो गावों म सिद्ध सम्प्रदाय के जसनाथी लोग बसते हैं। य अपने मस्तक पर भगवा पहनते हैं और सिद्धों के नियम पालन करते हैं। जसनाथी पर्वों पर सुगधित द्रव्य युक्त घन का हवन करते हैं जसनाथ जी की भेंट (ओगरा) बनाते हैं और पक्षियों के लिए चुग्गा डाल देते हैं। हवन करते समय एक विशेष प्रकार की राग से उदात्त ध्वनि उच्चरित "सिंभूधडा' तथा 'कोडों" के पाठ बालते हैं। इनकी जसनाथी बाड़ी म रात्रि जागरण के साथ अग्नि नृत्य का आश्चय जनक कार्यक्रम रहता है। जसनाथी सम्प्रदाय के लोग अपने पृथक सस्कार पालते हैं। य शव को जलाते नहीं गाडते हैं।

मापूसर का जाम्भा धोरा—जस कुंवियां गाँव, प्रसिद्ध विद्वान सिद्धायच दयालदास की जन्म भूमि होने के कारण लूनकरनसर तहसील क्षेत्र का प्राचीन साहित्यिक ग्राम है, वैसे

1 पास के गाँव मलकीसर में भी इस सम्प्रदाय के सतों की समाधियाँ बनाई जाती हैं।
2 सिद्धचरित्र, पृ० 11 (श्री सूयमल)

ही उसके नजदीकी ग्राम नायूसर का 'जाम्भा धोरा' भी यहां का परम पुनीत एवं धार्मिक धुर स्थान है। लगभग वि०सं० 1565 के पास प्रचलित लोक मुख्याएँ हैं कि इस जाम्भे धोरे पर कुछ समय के लिए विष्णोई सम्प्रदाय के आदि गुरु जम्भेश्वर महाराज ने अपना धर्म विस्तार प्रवृति हित प्रवास किया था। देश के विभिन्न भागों की यात्राओं के सुकाय कारी ज्ञानोपदेश की लोक मंगलकारी आत्मिक लहर में भक्तजनों की प्रार्थना पर श्रीजाम्भोजी महाराज आकर कुछ समय के लिए यहाँ ठहरे थे। तभी से यह स्थान जाम्भा धोरा' कहलाता है।

श्री जाम्भोजी का भ्रमण, आस पास ही नहीं बहुत दूर-दूर के स्थानों तक हुआ करता था। वे अपने सागिड्द व्यक्तियों सहित जिस स्थान पर कुछ समय ठहरकर ज्ञानोपदेश करते, वे साथरी (साथी सत्संगति अथवा सत चर्चा आयोजन) नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। हमारे गांव चाँदसर से आथूण (पश्चिम), नायूसर खेह से दक्षिण और रावासर से पूर्व में (इन सब ग्रामों के मध्यस्थ) जाम्भे धोरे का स्थान साथरी परम्परा का पावन प्रतीक माना जाता है। उनकी (जाम्भोजी की) शान कथाएँ यहां सभी धर्मों, वर्गों एवं व्यवसायों के लोगों के हित हुई थी। उन्होंने सभी जातियों के लोगों का आध्यात्मिक तौर से मार्ग दर्शन किया था ऐसा सुना जाता है।

गाँव नायूसर एवं चांदसर रोहड़िया शाखा के बारठ आसोजी का मिले हुए थे। वे श्री जाम्भोजी की सद्प्रेरणा लेकर विशिष्ट संत बन और ब्रह्मचारी कहलाते थे। डिंगल भाषा के करुण रस प्लावित मार्मिक दोहे लिखने में सिद्धहस्त कवि थे। उन्हीं के वात्सल्य भाव कारण से इस क्षेत्र में श्री जम्भेश्वर भगवान का पदार्पण हुआ था। आसानंद का भतीजा भक्त कवि ईसरदास भी शब्द वाणी से प्रभावित होकर नदी (लूणी) के किनारे कुटिया बनाकर रहने लगा था।

भारत के इतिहास में पन्द्रहवीं शताब्दी का समय यहाँ पाप पुण्य मिश्रण खिचड़ी कथाओं का विषय ज्ञात होता है। राठौड़ राज्य से पहले बालू के पास का इलाका गोदारे जाटों के अधिकार में था। उनका जोइयों और भाटियों से विरोध रहता था। कुछ स्थानों पर यहां मुसलमानों का अधिकार चलता था। किन्तु सारे शासकगण एक दूसरे से शत्रुभाव पूरा पालने और प्रतिद्वन्द्वी के अधिकृत क्षेत्रों की प्रजा पर लूट मार खसोट एवं आगजनी जैसे प्रताड़ित व्यवहार किया करते थे। ऊपर बादशाही की धार्मिक कट्टरता तथा निरंकुशता भी निरीह जनता को भयभीत कर रही थी। तब यहां की जाट राठ और भाटी आदि जातियां जीव हिंसा और मदिरा पीने में प्रवृत्त हो गई थी। धार्मिक सध्योपासना पर कुकृत्यों का प्रबल जोर पड़ रहा था। इन दुर्व्यसनों में रंगे सबल लोग बलात्कार तक की वारदातें कर लिया करते थे। तब बादलों की गर्जना, आंधी में वर्षा की संभावना प्रकट हुई और राजस्थान में बहुत से संतों ने जनता की भाषा में काव्य रचना रची। वे भगवान की विनय प्रार्थनाएँ थी, जिनका धार्मिक आयोजनों में सुर ताल से उच्चरित कर लोगों का मानव धर्म बचाने की राह दिखाई। दुनिया ऐसे संतों के चरणों में ढुल पड़ी। सारा इलाका उलट आया। बहुत से समझदार, विद्वान एवं असाधारण बुद्धि के लोग भी उनके अलौकिक शिक्षा प्रभाव के सामने झुक गये। तब निर्भय धर्मपथ, सद्धर्म तथा समृद्ध मानव सम्प्रदाय बनने लगे। श्री जाम्भोजी का विचरणमय, विचक्षुधर तपस्वी व्यक्तित्व प्रेरणास्पद कर्मठ जीवन एवं शंका समाधान करने की सामयिक ओजाभिव्यक्ति ही विश्नोई सम्प्रदाय की लोक ससिद्धि हुई। गांव नायूसर प्रवास का समय उनका सर्वतोभावेन ज्ञानोपदेश काल था, जो सत्संगति, शब्द वाणी तथा हवन-

स्थल के उस उच्च स्थान का नाम ही जाम्भा धारा सस्कारित हो गया। मतो के इन धार्मिक आयोजना से कटक डाकुओ की भी रुचि बदली और उन्होंने साधुओं का कहना माना। अत एव जनता को अपने गाँवों म साधु-न्यावर बसाने के दोहरे फल मिलने लगे।[1]

नायूसर गाव के नवयुवक भोगते कवि आसोजी की श्रद्धा प्रार्थना पर कुछ समय के लिए उक्त धोर पर (निकट नायूसर) श्री जाम्भोजी न ज्ञानोपदेश किया। उस समय पास बसते चारो ओर के गावा से भक्तजनो की भीड लगी रहती और वहा आश्रम, कुण्ड तथा चौकियाँ बनादो गई थी। किन्तु 'भूखे भजन न होय गोपाला।" बीकानेर के वास प्राय अकालों की भूख प्यास के लिए पुरा प्रसिद्ध हैं। ऐसे समय में उन्होंने यहा बहुत से दुबल स्थितिजनों को नाज ही नही अन्न भी वितरण करवाया था।[2] किसी को औंढे मेढे (विवाहादि अवसरो) हेतु रुपयों की जरूरत पडती, उन्ही से जा मागते। तब श्री जम्भेश्वर महाराज अपने हाथ के इशारे से दूर दिखाई देता कोई फोग बूजा या बाँठ (बोया) बता दिया करते कि "उसके पास फला दिन मुठत हाथ (अकूणी हाथ के मध्य जोड से मध्यमा अगुली तक) जमीन खोदकर रुपये निकाल लो और ले जाओ।" भक्त-जना को वसा उपाय करन पर (ठीक उसी नाप से धरती खोदने पर) अपनी माग के मुताबिक रुपयों का भरा मगनिया कुल्हडिया या छाटी हडिया आदि अय मिट्टी का द्रव्य भरा बतन मिल जाया करता था।[3]

श्री जाम्भोजी इस धारे पर यथा समय रह और जाने के पश्चात पुन लौटकर नही आय। पर भक्त लोग काफी समय तक हर अमावस्या के दिन वहा (जाम्भा धारा) पर एकत्रित होकर हवन, नाम चचा तथा सत्य नियम पालन के पाठ दुहराते रहे। शमी, फाग वक्षा के अतिरिक्त स्वण बालुकामय उक्त जाम्भे धारे पर जाल नीम और कूमटे आदि के बडे पड थे। वहीं एक कुण्ड स्तम्भ और साल (मकान) का होना भी बताया जाता है। परमेश्वर विष्णु के अवतार मानव अभिलाषा पूर्ण करने वाले श्री जम्भेश्वर नाथ के गुमागमन स पवित्र हुई इस आदश वसुन्धरा के लोग आज भी उनकी बेजोड चमत्कारी बातें श्रुति स्मृति करके सुख दुख के समय गदगद हो जाते हैं और उनका परम वाक्य बोलत हैं— विष्णु विष्णु तू भण र प्राणी।"

(नोट—चादसर के धार्मिक सज्जन स्व० हरखचन्द राठी, नायूसर के भक्त कवि स्व० गोविन्ददान बारहठ रावासर क प० श्री सत्यनारायण सारस्वत प्रभृति महान पुरुषा से मैं जाम्भा धारे के विषय मे ऐस धार्मिक वनान वर्षों से सुनता रहा हू। रोहिडा शाखा की वश परम्परा म अनक वद्ध बारहठ अर्वाचीन समय म भी अपने गाव की उक्त वार्ता बतलाते हैं।)

---

1 (क) समय के बाद जाम्भा धोरे से कोस भर पश्चिम बसने (स्थित) गाव रावासर के जाटा ने कटक के डर से लूगरगर नाम के एक साधु को बुलाकर अपने गाव के किनारे बठाया था और उसको हजार बिगा डोळी (जमीन) सम्मानाथ दी थी। (लिछमणाराम थोरड द्वारा।)

(ख) प्राचीन समय में कालू के पास गाँव बींझार, गुसाईसर और ल्होडेरा के मध्य म लाखी बाबा नाम के एक वृद्ध सत रहते थे। उसकी जगह वतमान विद्यमान है।

2 बीकानेर इतिहासानुसार, गेहूँ उस समय 12 मन, चावल 10 मन और दाल 16 मन प्रति रुपय के भाव थे। पर उनके बन्दोबस्त का रूप परम दैविक था।

3 भेंटादि से मिले रुपयो क अलग अलग (20, 30 50 और 100 तक के) बतन निश्चित जगह पर रखवाते थे।

बैराग मण्डल और महन्त

इस क्षेत्र म गाव गारबदेशर के सुप्रसिद्ध महत साधुओ की गद्दी बडी पुरानी एव सम्माननीय है। यह धनावशी वरागियो के विस्तृत क्षेत्र म पूजनीक हैं। गद्दी के महत धनावसी वरागियो म ता शिरोमणि है ही, पर इनकी गणना पहुँचे हुए पारगत साधुओ मे भी हाती रही है। इस गद्दी की स्थापना का पत्ता बहुत पुराना है।

स्वामी श्री रामानुजाचाय जी (स 1073 1194) के श्री सम्प्रदाय मे य शिरोमणि सत होत हुए विष्णु या नारायण की उपासना करत हैं।[1] इसम अनेक शाखाएँ और अच्छे अच्छे साधु हुए हैं जिनकी शिष्य परम्परा, भक्ति के सम्यक्य प्रसार हतु देश म बराबर फलती हुइ जनता को भक्ति माग की ओर आकर्षित करती रही है। विक्रम की 14वी शताब्दी के अन्त मे काशी के आचाय श्री राघवानन्द जी इस सम्प्रदाय के प्रधान थे, जिनकी गद्दी क शिष्य भारत के प्रसिद्ध पयटक श्री रामानद जी हुए। वे उपासना के क्षेत्र म किसी प्रकार का लौकिक प्रतिब ध (भेदभाव) नही मानत थ। उन्होने विष्णु के अनक अ य रूपा म स केवल "राम रूप' को ही लोक के लिए अधिक कल्याणकारी मानकर (स० 1575 80 मे) एक सबल सम्प्रदाय का सगठन किया था। उसी से सबधित यह गारबदेशर के महता की गद्दी है। मगर 18वी शताब्दी स गाव गारबदेशर म इसका समृद्धावस्था म उल्लेख मिलता है। उन्नीसवी शताब्दी म स्वामी मानदास के शिष्य हरिदास का बीकानेर राज्य तक सम्मान था। तत्कालीन महत ने जन हिताथ दो कूए और एक तालाब बनवाकर गाव को दिए थे और इनकी जमीन म ही गारबदेशर का आथूना (पश्चिमी) बास है। कूओ करमाणो और नडकी तलाई भी इ ही की जमीन म है। उसम चारो बुर्जो वाला भगवान का बडा मदिर और रहने के लिए आज भी अनक स्थान (भग्नावस्था म) दिखाई देते हैं। महत की जमीन म बसने वाले गुवाडे (घर, राजपूतो और ब्राह्मणों क) महाराजा सूरत सिंह जी के ताम्र पत्र (स० 1852) के अनुसार जकात, मापो, मुकातो गाव मुजब देते थे। यहा महत की जमीन बीघा तीन सौ, नौ सौ और सात सौ पचास—कुल 2025 बीघा थी जो अब तक उ ही के मदिर पीछे शिष्य भोगते है। स्वामी हरिदास के देहावसान के स्थान पर एक मकान है और चरण पादुकाएँ। महत हरिदास वरागियो म दादा नाम से पुकारे जाते थे। बालको का झड्ला उनके उसी भवन म उतरता है और विवाह शादी के समय लोग दशनार्थ जाते हैं। श्री हरिदास महत तकडबध एव राजवी की भाति जमीन जायदाद वाले थे। बीकानेर क महाराजा उनसे मदद लिया करते थे।[2]

---

1 गन म कठी की भाति तुलसी की माला और मस्तक पर रामानुजी लम्बे तिलक धारण करते हैं। द्वारिका जाकर अपने शरीर पर विष्णु के चिह्न स्वरूप शख, चक्र गदा तथा पद्म का आकृति छपवा लेते हैं। छापें अग्नि म तपाकर लाल लोहे से लगाई जाती हैं, तब कहावतें हैं—"धरणीधर की चेललो, तो तीन लोक मे खेललो। (याने जो द्वारका जाकर तेज तपे हुए लोहे की छाप को सहन कर लेगा, वह विष्णु भवन, सवत्र निडर घूमता फिरेगा।) ये महत ब्रह्मचारी रहते हैं और निहग साधु कहलाते हैं।

2 देखिये चूरू मडल के इतिहासोल्लेख।

एक बार गाव कालू के गादारा जाटा ने मेला (धार्मिक आयाजन) किया था। इसलिए गारबदेसर के महंत से एक बडा तिरपाल मांगकर लाय। दुर्भाग्य से वह तिरपाल कालू मे ही जल गया। तब जाट लोग भयभीत हुए। महत के पास तिरपाल की बात बताने गय और क्षमा-याचना मागा, महत न माफ कर दिया। किन्तु कालू के जाटा न तिरपाल के एवज मे जमीन बीघा सात सौ पचास (खेत 5 की) महत को अर्पित कर दी, जिसका तामापत्र (स॰1852) म पूरा उल्लेख है।

महत हरिदास का शिष्य अमरदास और अमरदास के शिष्य बद्रीदास हुए। बद्रीदास का भी जमीन बाबत लगान आदि का ताम्रपत्र बीकानेर महाराजा रतनसिंह तथा सरदारसिंह न महता लीलाधर से लिखवाकर (स० 1900 मे) दिया था। बद्रीदास के शिष्य सेवादास न (वि० स० 1974 म) गाव कालू आकर अपना धाम बसाया था और मदिर तथा कूए का स्थापना का थी।[1] सेवादास के शिष्य मेघदास और मालूराम हुए। मालूराम ता छोटी अवस्था म ही चले गय। लकिन मेघदास जी न अपन ठाकुर द्वारे की अच्छी व्यवस्था बनाये रखो। अपने गुरु की भाति समाज की मर्यादा हतु दूर-दूर के गावों तक सेवका क विशेष आयोजन अवसरा पर जाकर सम्मिलित होने और गुरुमत्र देकर दक्षिणा प्राप्त करने थे। य वहाँ रात्रि जागरण भी करवाया करते और नाडी देखकर दवा-दारु भी दिया करते थे। इनके साथ अपन बहुत से आदमी भी जाया करते थे। इनके आग राजा महाराजाओ की भाँति कई व्यक्ति तुर्री बजाते हुए चलते थे। ये वहाँ जाकर उतरते तब उस घर का मुख्य आयोजन आरम्भ होता था। उस घर म इन्हीं के द्वारा सारा लेन देन और शिक्षा उपदेश हुआ करता था। एसी ही सामाजिक प्रथा परम्परा प्रचलित थी जा आज के युग म सिसकती श्वास भर रही है।

गारबदेशर के महत जब कालू आकर बस तब वहा स वरागियो के करीब बीस घर इनके साथ आकर बस थ। इन्होन ठिकान न कई गाँवों की स्वीकृति ले ली थी। जस, कालू म इनके अपने मदिर के आग टप, डाडिया (घींदड) न य और रास रमत के खेल बीसा वष तक होते रहे।

मघदास जी के शिष्य श्री विष्णुदास महत जो अब अच्छी सवा पूजा के अलावा रामायण पाठी एव आदश भजनीक हैं। वैसे तो महत श्री सवादास जी न कालू मे आकर अपना कूआ मदिर आदि बनवा लिये थे। किन्तु वे गारबदेशर से आधाचार रखते हुए कालू रहा करते। खेती, पशुओं और लेन देन की आय से जितना अधिक जोडते (सचय करते) उतना ही द्रव्य, दान धम क कार्यों म व्यय कर दिया करते थ। इसके बाद मेघदास जी कालू के मदिर मे ही रह और श्वास छोडन पर ही भक्तो ने इनके पार्थिव शरीर का गारबदेशर ले जाकर दाह-सस्कार किया था। इस गद्दी के वतमान महत श्री विष्णुदास अब यही रहते हैं। आपन अपने कूए की जमीन और खेली, कोठो के पत्थर चौकों से बालिका विद्यालय भवन कालू बनवाने मे (सन 1975 म) अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया है। इन्होंने अपन मदिर के कडाह टोकणा, परात थालिया आदि बतन बिरादरी पचायत को दे दिये हैं। क्योकि ये एक जगह नही रहते और रमते राम की तरह दूर-दूर की यात्रा कर आया करते हैं। तब बिरादरी के विवाहादि के कार्यों म

---

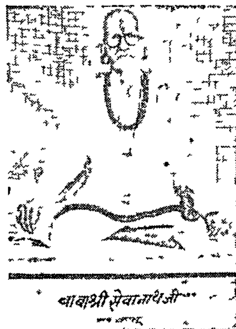
1 गाव कुजटी मे भी इन्होंने कूआ और मदिर बनवाये थे। गाव छटासर और कागासर में भी इनके बनाये हुए मदिर थे।

सुविधाएँ बनी रहती है। मदिर की साविधि विधान पूजना होती है और गाँव के लोग ठाकुर जी के दर्शनों से पूण लाभाविंत होने रहते हैं।

कालू म श्री सेवानाथ जी—

ज म—वि०स० 1964 गाव खारी

स्वगवास—स० 2029 गाव हीयादेशर। गुरु—गगानाथजी के आश्रम म आध्यात्म भाव भी वाणियो को भानीनाथ जी के समाधि घूणे पर मनोहारी ढग से गाने वाल जनपदीय सतो मे सेवानाथ का यहा विशिष्ट स्थान माना जाता है। गाव खारी मे ज मे श्री खेतनाथ के आत्मज सेवानाथ बाल्यकाल से ही सत भावना ओत प्रोत व ससार विरक्त रहे। पहले आप पूनरामर म धूणी लगाकर वर्षों तक तपे। फिर गाव कालू मे भानीनाथ जी की जगह को आपने अपना साधना क्षेत्र माना और वर्षो तक वाणियाँ गा-गाकर जन जन को आत्म कल्याण का उपदेश दिया। वसे तो आप कई बार भ्रमणाथ भी चले जाते, मगर अधिकतर निगु ण ब्रह्म की साधना म ही लीन रहते। जब ये गाने बैठते, सामाजिक लोग मत्र मुग्ध से इनकी वाणिया का श्रवण करते। परन्तु बाणियाँ विशेषकर भानी नाथ जी की ही बोलत थ। इनक द्वारा गायी जान वाली दो भानीनाथ की वाणियो का रूपक भावाभि यजन देखिय। तथा—



श्री सेवा नाथ

1 ए सु दर काया हसलो थारो मितर कोनी थारो,
एक परदेशी हसो भी आयो तन से अक्न कुवारो।
उण हसलरो ब्याव रचायो, सूप दियो घर सारा ॥1॥
काट मे ल्याई कटारो भी ल्याई फिर फिर ल्याई उधारो।
इण हसले ने भूखो कदे न राखयो ठग खायो जुग सारा ॥2॥

तू तो कहे यो हसा सग चलूगा, छोड चल्यो मझधारो ।
तेरै जिसी काया भोत ठगी है, यो ही है काम हमारो ।।3।।
उड गया हस टूट गयी टाटी, माटी म मिल गयो गारो ।
भानी नाथ सरण सतगुरु री, निवस गया बोलण हारो ।।4।।

2 थारी काया कमेडा नार, इता अे काई नखरो ।
थारै सिर पर घूम काळ उचक लेसी सिकरो ।
थारी लगन चुगे के माय, काम नहीं दुसरो ।
थानै इतनी कै लागी भूख भजन ने बिसरो ।
थारे पाँख पाँख पर पाप, झूठ को झगडो ।
थारै रूप रग म बर भाव को चगडा ।
थार नणां आयो लोभ चाच म चुगरो ।
थार मुख मतलब री बात हिय म छनरो ।
गुरु ज्ञान की आँगी पहन, नाम को घघरो ।
सतसग री चूनड ओढ घूघरियो मरम रो ।
यू गावे भानीनाथ, मनो थारो नुगरो ।
हरजस की डूगी चढ, पार थ उतरो ।

शेख फरीद और दरगाह

वस तो भारत म सूफी मत का विशिष्ट प्रचार प्रसिद्ध सूफी अल्हुज्विरी के आगमन काल (12वी शताब्दी) से मा य है, पर तु वह 9वी शताब्दी से आरम्भ होकर 10वी तथा 12वी शताब्दी म अपना आदश रूप दिखलान लगा था। उस समय साम्प्रदायिक सगठनो क लिए मठ या आश्रमो की स्थापना करत हुए सूफी मत का प्रचार काय आरम्भ हुआ। यह इस्लाम का भावात्मक दाशनिक सम्प्रदाय था। पूण मानव की मान्यता हेतु मुरसिद, मुरीद का साथ लेकर प्रचार करन लग। इसम सबसे विख्यात चिश्तिया सम्प्रदाय, जिसकी सातवी पीढ़ी म ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती हुए। वे कई दशो मे प्रचार काय करते हुए लाहौर म हजरत दातागज की समाधि के निकट ठहर कर प्रचार करन लगे। इन्होंने अपने अ तिम समय म अजमेर को अपना प्रचार स्थान बनाया। इनके शिष्या मे ख्वाजा कुतुबुद्दीन काकी ने उनके उत्तरदायित्व को झेला। कुतुबुद्दीन को सम्राट अल्तमश को दीक्षित करने का गौरव भी मिला। ये सगीत के द्वारा अपना मत प्रचार किया करत थे। शेख फरीद इ ही (कुतुबुद्दीन) के मुरीद थे। मुरसिद कुतुबुद्दीन को अपन शिष्य फरीदुद्दीन 'शकरगज स बडी सहायता मिली। शकरगज के दो शिष्य क्रमश निजामुद्दीन औलिया और अलाउद्दीन साबिर हुए। उन्होने अपने निजामिया और साबरिया सम्प्रदाय चलाय। आग जाकर भारत म सूफी मत प्रचार के लिए कई शाखाएँ चली। अवरिकुल मारूफ ग्रथ सभी सूफी शाखाओं का प्रमाणिक तथा मान्य ग्रथ समझा गया तथा सूफियो के दशन को "तसव्वुफ" कहा गया है।[1]

शेख फरीद उत्तरी भारत मे प्रधानत पजाब के प्रमुख सूफी सत थे। एक समय लूनकरनसर क्षेत्र का शेखसर गाँव भी शेख फरीद से प्रभावित हुआ, जो अब भी उनकी दरगाह धीरदान मे भक्तजनो द्वारा पूजित है।

---

1 ससार की आसक्ति से मुक्त होकर ईश्वर प्राप्ति की साधना करने वाला सम्प्रदाय।

सूफीमत म पीर या सदगुरु की प्रतिष्ठा अधिक है । आपका पीरी वश क्रम ख्वाजा माईनुद्दीन चिश्ती की पवित्र चमक परम्परा से शृ खलित था । ख्वाजा साहब के मुरीद (शिष्य) हजरत कुतुबुद्दीन बख्त्यार काकी थे, जिनका मजार महरौली (दिल्ली) म कुतुबमीनार के निकट स्थित है । यहाँ आज भी रोजाना हजारो श्रद्धालु जन दरनाथ पहुचकर याचना अज गुजारते हैं और मनौतियाँ मनाते हैं ।

शेख फरीद कुतुबुसाहब के मुख्य मुरीद थे । छाटी उम्र के पार विचारा से प्रभावित हाकर कुतुबुद्दीन ने बालक फरीद को नान दिया व दीक्षित कर लिया था । इमलिए फराद साहब का सारा बाल्यकाल कुतुबुसाहब की स्नेहशील कृपा छाया म ही व्यतीत हुआ । लेकिन फरीद तो प्रकृति से ही सत, मानव म अल्लाह के दीदार की पूण अभिव्यक्ति स्वीकारते थे । अत आगे चलकर खुद 'वली' या 'पीर' के नाम से सबोधित किय जान लगे । सूफी सत, गुरु का अनुसरण करते और हुक्म बजाते । उनम धम प्रचार की भावना अधिक थी । पीर, औलिया आदि की उपासना, मत प्रचार एव मजार की पूजा तथा तीथ यात्रा पर भी सूफियो का विश्वास था । अत हजरत कुतुबुद्दीन ने अपने शिष्य शेख फरीद को नान धम का प्रचार प्रसार करने हेतु पजाब प्रदेश के अजोधन नाम के स्थान मे भेज दिया । उनके वहा रहने से उस जगह का नाम पाक पटन शरीफ' पड़ा । (अब यह स्थान पाकिस्तान मे है ।)

तत्सामयिक 'पाक पटन शरीफ' से अजमेर का रास्ता बिल्कुल रेगिस्तानी था । साढे सात सौ वष पहले के उस युग मे यातायात के साधन नाम मात्र के थे । सतो, पीरा तथा महात्माओ के सफर अधिकतर काफिला के रूप मे पदल ही हुआ करते थे । ऐसी विस्तृत यात्राओ के सिलसिले मे एक बार कुतुबुसाहब के शिष्य हजरत फरीद ने अजोधन स सघ बनाकर भावलपुर, छनगट, लूनकरनसर एव शेखावाटी के रास्ते से नान प्रचार करते हुए अजमेर के लिए प्रस्थान किया । उनकी यह यात्रा गतव्य स्थान तक कई महीनो म पूरी होन वाली थी । उस समय रास्ते के अन्न जल की सुविधा वाले बडे गावो से होकर गुजरना पडता था । रात को ठहरने, वे मुसाफिरा के पडाव कहलाते । फरीद साहब इस जागलीय यात्रा के अनेक सघर्षो मे जूझते हुए एक ऐसे खारी पानी के स्थान (लूनकरनसर क्षेत्र) म जा पहुँचे, जो निजल स्थान के नाम से मशहूर था । उस समय वहा मीठे पानी का एक सुखचनपुरा" नाम का एक गाव बसता था । सत फरीद का सघ गांव का नाम पूछता हुआ उसके निकट जा पहुँचा । शेख साहब स्वय गाव मे प्रवेशित हुए । वहाँ कूए पर उनको एक लडका पानी लेता हुआ दिखाई दिया । दोपहर का समय था बाबा शेख ने प्यास मिटाने हेतु बच्चे से पानी लेना चाहा । परन्तु पानी खींचने वाले लडके न कहा, 'पानी खारा है' कहकर सत के आदेश को टाल दिया ।

मकसद माजरा ऐसा था कि वह गाव (शेखसर) उस समय पजाब, पेशावर जमरूद आदि मुख्य स्थानो को, अनक स्थानों मे जाने का सुमाग सुस्थान था । आने जाने वाले यात्रियो का पानी की सुविधा हेतु वहा प्राय समेल बना रहता । पानी मीठा था पर उसकी उपलब्धि गाव बाबत यथोपयुक्त एव अल्प मात्रिक थी । इसलिए गाँव के पयवेक्षक प्रमुख पुरुष ऐरे गैर यात्रियों को मीठे पानी को खारा बताकर आगे के गावों की ओर टरका दिया करते थे । लेकिन उस वक्त गावों मे केवल बच्चो एव वद्धो के सिवाय अब समझदार वयस्क स्त्री पुरुष, खेतो पर काम करने गये हुए थे । तब उस बच्चे ने गाँव की रटी रटाई वाणी म सत को भी पानी खारा बता दिया । पर पीर पगम्बर तो सवज्ञ

होते हैं। मीठे का खारा कैसे मानते ? उन्होंने यात्रियों के साथ किए जाने वाले गाव के इस दुर्व्यवहार को मिटाने के लिए भरसक सबक दे देने की बात मन में विचार ली। बोले—' माना हुक्म है अल्लाह का, कहता शेख फरीद ! इस कूएँ का पानी खारा है।' इतना कहकर सत फरीद आगे चल दिए और गाँव से थोड़ी दूर जाकर पेड के नीचे विश्राम करने बैठ गये। लेकिन उस कूएँ का पानी बिल्कुल खारा हो गया। इस घटना के लिए गाव के लोगों में हाहाकार मच गया कि कूएँ का पानी खारा हो गया। फिर लडके ने बाबा शेख फरीद के प्यास चले जाने का सारा हाल बता दिया। तब गाव के कतिपय सज्जन लोग उस बचन सिद्ध सत की तलाश म निकल पडे।

शाम का समय किसान खेतों से घर आ रहे थे। वे रास्ते म एक अजनबी फकीर को बैठे देखकर विभिन्न सवाल करते हुए अविश्वास के भाव से उसे वहाँ से चले जाने को मजबूर करने लगे।

सत ने कहा— मैं प्यासा और थका हुआ मुसाफिर हू, ठडा समय होता जानकर थोडा आराम कर लेता हूँ। फिर सूर्यास्त तक स्वय सफर शुरू करना पडेगा।'

लेकिन वे सगठित लोग, शेख फरीद की बात मानने को कतई तयार नही हुए एव उन्हें जबरन खदेडने लगे। सत फरीद खडे हुए, पेड और पत्ते डोल पडे। औलिया ने अल्लाह का नाम लेकर पेड को सबोधित किया कि—"थोडी दूर छाया करता हुआ वह उनके साथ चले।' वसा ही हुआ, पेड सत के साथ चल दिया। पेड को साथ जाते देखकर उपस्थित जन भौंचक्के रह गये। उनको पहचान (परिचय) मिल गया कि— सत ऐरा गैरा नहीं, पहुँचा हुआ है।'

वे पीछे दौडे, आगे गये और सामने होकर माफी मागने लगे। उनकी बहुत बहुत मिन्नता के बाद बाबा और पेड दोनों ठहर गये तथा सब लोग सभी सतत पेड के नीचे बैठ गये। थोडी देर बाद गाव मे प्यासे चले गये साधू-बाबा के पीछे सुखचैनपुरा के कुछ व्यक्ति भी जगल के रास्ते जा पहुँचे और उनके पास जाकर अपने कूएँ का पानी खारा हो जाने की अपनी गल्ती वाली बात क्षमा याचना सहित अर्ज करने लगे। उस पर वहाँ बाबा फरीद ने परामर्श हेतु अल्लाह से दुआ की। उधर तत्काल उस कूएँ में अत्यधिक मिष्ठ जल के स्रोत खुल गये। इस पर लोगो ने बाबा को वापिस अपने गाव ले जाने के लिए बहुत आग्रह किया। लेकिन वे तो नहीं गये और उनकी अत्यधिक अनुनय पर थोडे समय के लिए वहीं डेरे डाल दिए। बस उसी स्थान पर धीरदान (धय प्रसाद) नाम से ग्राम आबाद हो गया। मतलब उनके ज्ञान प्रभाव से जो आनद प्रस्फुटित हुआ वह प्रज्ञा और प्रेम का प्रसार कहलाया।

सत फरीद यहाँ की जनता में घुल मिल गये। जियारत के लिए दूर दूर के लोग आने लगे। आपकी विद्यमानता इलाके की अपढ जनता पर वरदान स्वरूप सिद्ध हुई। अल्लाह के हुक्म से आपने झाड फूक तावीज, दुआ आदि के चमत्कार बल पर अपने सत की पीर परस्ती, कुरान, नमाज वगरह का प्रवेश अनेक हिंदू घरों तक पहुँचा दिया।[1] इस अर्से मे शेख फरीद कई बार ख्वाजा गरीब नवाज के अजमेर दरबार मे उपस्थित

1 गत शताब्दी तक गाँव दूदेर के ठाकुर भोपाल सिंह मशहूर नमाजी थे। वे शेख फरीद की दरगाह पर कई बार शुक्र के रोज शक्कर का प्रसाद चढाकर वितरित किया करते थे। उसने जामसर मे एक पीर का मजार बनवाया था।

होने के वास्ते तयार होकर चले। लेकिन वहाँ के लोगो न हर्गिज आपको एसा नहीं करने दिया। आखिर बहुत समय गुजरन क बाद तमाम रयत को रजामद करके सत फरीद अजमेर को रवाना हो गय। मगर उनकी अनुपस्थिति म वहा दरगाह की मा यता और अधिक बढ गई। मुसीबत या कठिनाई क समय लोग दरगाह पर आकर अपनी नक वांछा की पूर्ति हेतु बाबा फरीद का नाम स्मरण करन लगे। शेखसर व इद गिद के अनेक गाँवों म कसम सकल्प, याय तपास तथा हर काय का शुभारम्भ दरगाह व शेख फरीद की दुहाई द्वारा करवाय जाने लगे। गाव वालो ने हजरत फरीद के हुक्मानुसार जल के लिए कभी किसी को इ कार नहीं किया। मुल्चनपुरा ग्राम शेख शब्द मे परिवर्तित, मीठे पानी की बहुतायत के कारण सर' (समुद्र) शब्द से सयुक्त होकर शेखसर कहलाने लगा। गाव का वह प्राचीन कूआ आज तक भरपूर मीठा पानी देता है। अब पाइप लाइन द्वारा निकटीय तेरह गांव इस वरूणालय से सतुष्ट लाभा वित हैं। प्रत्येक प्राणी खुले नल जल पीता है।

बाबा फरीद व दरगाह क विषय म यहाँ अनेक चमत्कारी किंबदतियाँ सुनी जाती है। 95 वष के एक स्थानीय वद्ध इस्लाम अलारख खा न बताया कि "बचपन की बात मुझे याद है, यहा के लाग वर्षा के लिए दरगाह पर जाकर दुआ करते और तुरत वर्षा हो जाया करती थी।

यदि कोई धरस बागज दरगाह का धोक बाल देता और काय हो जान पर मुकर जाता तो उस तत्काल दण्ड रूप मजा मिल जाता। मैंने खुद एक बार सफर करते समय दरगाह पर हाजिर होने का वादा किया था और यात्रा पूरी करके सीधा घर आने लगा। बेहोश होकर रहाड से नीचे गिर पडा। स्वय शर्मि दा होकर दरगाह गया और माफी तलाफी की। तब ठिकान पहुँच पाया था।

पुवता सरपच हीराराम गोदारा शेखसर (उम्र 92 वष) का कहना है कि "हम कुछ यक्ति दूर से अन्न की कतार लेकर आ रहे थे। अचानक दरगाह के पास से निकलते हुए मेरा ऊँट गिर पडा और उसका पर टूट गया। साधारण उपाय करने के उपरात साथी लाग मुझे वहीं छोडकर चले गये। मेरे पिता को इस घटना का पता लगा। उ होने भाई को दूसरा ऊँट देकर मेरे पास भेजा। मैंने इससे पहले ही बाबा फरीद का स्मरण किया। ऊँट स्वस्थ हो गया। मैं सवार होकर गाँव को चलने लगा। सामने भाई मिले मैंने सारी चमत्कारी दास्तान सुनाई। मेरे इस परचे से गाँव के सारे लोग प्रभावित हुए।"

चौधरी ने दूसरा किस्सा यह भी बताया कि—' वि० स० 1975 के वष सारा देश प्लेग के भयकर प्रकोप से पीडित हो रहा था। आदमी मर रहे थे, गाव के गाव खाली हो गय थे। उस समय हमारे गाव के लोक ने बाबा फरीद की मिन्नतें मानी और उस महामारी से बिलकुल बच निकले। उस वष बहुत से स्थानीय बुजुर्गों ने अनेक बार एक सफेद पगडी और सफेद दाढीधारी अश्वारूढ वद्ध पुरुष को शेखसर के चारो ओर रात्रि के समय पहरा लगाते हुए देखा था। जितने गाव एरिया का वह अश्वारोही वृद्ध चक्कर लगाता, उतने क्षेत्र मे सवत्र सुख शाति रही। किसी प्रकार से जान माल की हानि नही हुई। तब से लेकर आज तक बाबा फरीद और उसकी दरगाह को कठिनाई के समय लोक सश्रद्धा पूजते हैं।

शेख फरीद की यहाँ संगीतात्मक कई मजलिसें हुई थी। उनको चालीस दिनों तक परमात्मा के ध्यान और प्रार्थना में निरत एकान्त स्थान में रहना पड़ता, जिसे चिल्ला[1] कहा जाता था। उस समय रंगीन वस्त्र और सिर पर बड़े बाल रखे जाते। शेख फरीद का मन वश में था। वे अपने गले में पत्थर का एक टुकड़ा लटकाये रखते, जो अधिक भूख के समय चटका भरने का (खाने का) प्रयास किया करते। इसलिए रहस्यवादी साधकों के लिए यह स्थान बड़े व्यापक भाव से लोकप्रिय हो गया और इसका नाम चिल्लाह (चेहल यानि चालीस बैठक), मजार, मस्जिद न रहकर दरगाह् पड़ गया। क्योंकि यहां के अधिकतर मुसलमान अनेक दरगाहों की भाँति यहाँ तीर्थ करने आने लग गये थे।

हजरत बाबा शेख फरीद एक अलौकिक महापुरुष थे। उन्होंने इस प्रदेश को एक ऐसा संदेश दिया जो सैकड़ों वर्ष बीत जाने पर भी हर इन्सान के लिए प्रकाश प्रदाय है। मनुष्य चाहे कैसी भी विषम परिस्थिति में हो, फरीद साहब और उनकी दरगाह के स्मरण विश्वास से वह अपने लिए सुख मार्ग प्रदर्शन प्राप्त कर सकता है। इसलिए इस दरगाह को दूरस्थ लोक भी आत्मिक धोक देते हैं और मनवांछित कामना की सिद्धि प्राप्त करते हैं। धोरदान, शेखसर, खोडाला, गोपल्यानादि गांवों में बाबा फरीद का थेऊ रखते हैं और पूर्णिमा के रोज जागरण करवाते हैं। इसलिए यह दरगाह एक ऐतिहासिक महत्व का स्थान है, जो हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रतीक है।

क्षेत्रीय प्राचीन कला और शिल्प संदर्भ

वैसे तो कला की प्रेरणा प्रकृति से मिली हुई है। परन्तु मनुष्य ने आदि काल से ही पार्थिव वस्तुओं को आध्यात्मिक बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया है। दैवी विश्वासों के बल ने उसके विचारों को रंग रूप, वाणी और व्याप्ति प्रदान की है। तब से उसका उद्देश्य लोक को असीमित बनाकर दैविक आनंदानुभूति उपलब्ध करवाना रहा है। कलाकार ने घर, गगन, गृह, नक्षत्र, पर्वत—नदियों एवं सर्दी गर्मी प्रकृति के रहस्यमय रूपों को किसी अदृश्य शक्ति की कल्पना से संबंधित कर अद्भुत कला क्षमता से मूर्त किया है। ऐसी काल्पनिक आकृतियों का निर्माण करने में प्राचीन कलाकारों की अधिक अभिरुचि दिखाई देती है।

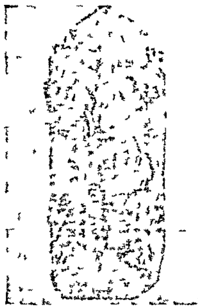
---

1 सूफी सम्प्रदाय में संगीत की प्रधानता है। संगीत के द्वारा साधक का भावाविष्टावस्था (हाल) की प्राप्ति होती है। 'हाल' की दशा में साधक अपनी ओर से निरपेक्ष होकर अपने आपको ईश्वर को समर्पित कर देता है। संसार की अनित्यता को समझाते हुए एक सूफी संत का संगीत है—

> जब चलते चलते रस्ते में, यह गौन तेरी ढल जायगी।
> एक बधिया तेरी मिट्टी पर, फिर घास न चरने आयेगी॥
> यह खेप जो तूने लादी है सब हिस्सों में बट जाएगी॥
> धी, पूत, जमाई बेटा क्या, बंजारन पास न आएगी।
> सब ठाठ पड़ा रह जाएगा, जब लाद चलेगा बंजारा॥

अन्त में जब बंजारा लादकर चलेगा अर्थात् तेरा अन्त समय निकट आयेगा, उस समय तूने जो यह ऐश्वर्य उपार्जन किया है वह यों ही पड़ा रह जाएगा। उस समय तेरे निकट पुत्री, पुत्र और जमाता का तो कहना ही क्या है स्त्री तक नहीं आयेंगी। अतएव तू चेत और कुछ परलोक की चिन्ता कर।

कला से सौन्दर्योत्पत्ति होता है, अत एव सु दरता का मूत एव अमूत रूप कला मे रहता आया है। सौन्दय के प्रतिमान देश, काल और परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित हो जाते हैं। तब कला का स्वरूप भी यथा समय दश, काल हेतु बदल जाता है। नवी शताब्दी स तेरहवी शताब्दी तक का मध्य युग मूर्तिया के निर्माण म बडे उच्च स्तर से स्थापित है। इस काल की राजस्थानी मूर्ति कला जिस भूमि म उदभूत होती है तथा वह जिस पृथ्वी पर पनपी ह, वह वसुधा मूलत धमनिष्ठ है। वह आत्म लब्धि की प्रक्रिया के द्वारा प्रकृति की खोज का सत्य प्रयास है। सरस्वती नदी इस क्षेत्र स गई वहाँ के निवासियो पर वातावरण का प्रभाव पडा। वहाँ के कलाकार न मनुष्य समाज को व्यथा पाडित निहार कर सरस्वती की सगमरमर की असामा य मूर्ति क दशन करवाये, जिसम क्षेत्र की तत्सामयिक आरामदेह सामाजिक व्यवस्था को कुछ राहत मिली।



सरस्वती देवी

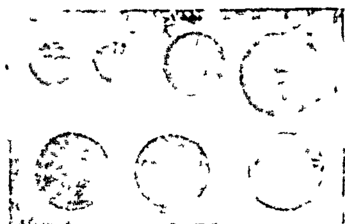
वतमान समय म एसी जूनी जानकारी देने वाला प्रख्यात स्थान पल्लू है जो लूनकरन-सर तहसील क्षेत्र की सीमा भूमि से दो कोस दूरस्थ पूजमान स्थापित गाँव है। पल्लू विशिष्ट सरस्वती प्रतिमाओ के कारण पुरातत्व विभाग सम्ब धी एक विख्यात स्थान है। यहाँ की मिली मूर्ति के हाथ म कमण्डल है जो अ य के हाथ में नहीं[1] पल्लू उच्च विस्तत थेह पर स्थित है। जहाँ सरस्वती मूर्तियाँ ही नहीं अ य प्रस्तर एव मृमूर्तिया मृद्भाण्ड ताम्ब एव स्फटिक के आभूषण तथा ताम्र रजत मुद्राएँ भी मिली हैं। यह अनुसधान सव सामा य इण्डो ग्रीक काल से लेकर अब तक के पल्लू पर लगभग दो हजार वर्षों का मनोहारी ठप्पा लगाता है। इन मुद्राओ पर दखने योग्य खरोष्ठी एव ग्रीक लिपि के विचित्र लेख एव चित्र खुदे हुए हैं। अ य मुद्राओ म कूफी लिपि, फारसी लिपि आदि अनक प्राचीन लिपिया भी हैं। दिल्ली सम्राटो के सिवाय अ य रजवाडो की ताम्र मुद्राएँ भी पल्लू से प्राप्त की गई है। बीकानेर के महाराजा सूरतसिंह की सात तथा रतनसिंह की नौ यथा सामयिक मुद्राएँ मिली हैं।[2] जयपुर जोधपुर राज्य की मुद्राएँ पल्लू के थेह से उपलब्ध हुई हैं। पल्लू इण्डो ग्रीक काल से कुशानो एव सासानियन आदि अनेक प्राचीन शासन समयो को देखने वाला गाँव है। पृथ्वीराज एव विविध मुसलमान शासको तथा

1 इस जल कमण्डल का मतलब हुआ सरस्वती नदी के जल का यहा से चले जाना।

2 कला और शिल्प का बीकानेर केन्द्र 17वी शताब्दी म पर्याप्त विकसित हुआ है। (आजकल वष 11 अक 1 पृ० 33)

मुगलों के शासन के वैभव का भी देश भूखा है। रविदासानी राठौड़ राज्य में रह सन के बाद सब सबकी निशानियों के रूप में अनेकों मुद्राएँ दी हैं।

प्राचीन काल से ही लेन-देन की सहज सुविधा हेतु इस देश में सिक्का चलन प्रचलित था। ग्रन्थों आदि में स्वर्ण मुद्राओं तक के प्रमाण हैं। किन्तु धातु के सिक्कों के



प्राचीन सिक्के

सिवाय मिट्टी, लकड़ी, चमड़े, काष्ठ और कागज के सिक्के भी यहाँ चले। इन पर चित्र, सन् संवत तथा शासकों के नाम एवं गाथा अंकित हैं। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई में चित्रलिपि लिखित पत्थरवाली मुद्राओं या मुहरों (Seals) पर हाथी, गैंडा, गाय, घोड़ा, बैल, शिकारी, व्याघ्र वगैरा के चित्र पाए मिले हैं, जो संभवतः अपने नाम के बदले में चित्र सादृश्य अथवा रूप से काम लिया करते थे। बीकानेरी (गर्दहिन) प्राचीन मुद्राओं पर सशस्त्र योद्धा की मूर्ति पाई जाती है जो यौधेयगण नामक गणराज्य की निशानी है। क्योंकि यौधेय लोग प्रसिद्ध योद्धा हुआ करते थे। सूरजमल सिंह की मुद्राओं पर सूर्य, चन्द्रसिंह के लिए चन्द्रमा तथा राजसिंह के लिए हाथी के चित्र मिलते हैं। नाग (संस्कृत में अहि) से अहिच्छत्रपुर की मुद्राएँ हुआ करती थीं।

कालू का परिशिष्ट वृतान्त

महानता के अस्तित्व

कालू मे कतिपय धार्मिक एव सेवाभावी घराने हैं, जिनका गाँव निमाण प्रगति तथा ग्राम सुधार म चार पाँच पीढ़ियों से निरन्तर योगदान रहता आया है। उनकी देन वृति नही, अनोखी सूझ बूझ एव दूरदर्शिता भी बडी महत्वपूर्ण रही है। इसलिए गाव के इतिहास मे उनका उल्लेख किया जाना अत्यतावश्यक माना जायेगा।

वि०स० 1843 (ई० सन् 1786) म जब गाव कालू का वतमान निवास पहले से ही बडा था और गोदारो का स्थान कहलाता था। गाव के उत्तरादे खेह की जनता के आगमन से कालू के इस बडे वास मे और भी बढोतरी हुई। गोदारो क पास उनके भानजे जान्दु भी आकर यहाँ रहने लगे। गादारा ने अपनी सुख सुविधा के लिए भक्त मेला की छतरी समाधि के निकट और अपने कूए के पास भगवान का मदिर भी बनवा लिया। जान्दुआ ने भी गाव के बीच एक कूआ अपन प्रभुत्व म कर लिया। मगर गाव के भादुआ और जान्दू जाटा का गाव मे मन्य कोई मन्दिर नहीं बना, वे केवल कूओं और ज्होडा पर ही अपना अधिकार कायम कर सके। कालू म जाणी जाट गाव वाडेला से पारीक ब्राह्मणों के साथ आकर यहाँ बसे थे। जाणी जाट तत्कालीन जान्दुआ के भाणजे थे तथा गाव के भादू जाट जाणिया के भाणजे थे। इस तरह से कालू गाव के इन चौध रिया के आपसी गहरे सम्ब ध थे, जिससे इनकी कायकुशलता, कमठता, धय शालीनता तथा पर दु ख कातरता की बडी महत्ता रही है।

श्री विजयसिंह जी के शासन समय तक कालू मे यहा के चौधरिया का अभ्युदय बना रहा और उन्होने मदद इस गाव की उन्नति देखभाल तथा न्याय नीति के चलान में पूर्ण सहयोग दिया। उनके द्वारा धार्मिक, सामाजिक और दीन दुबला की सेवा रक्षाथ बहुत सराहनीय काय होते रहे। उक्त समय मे कालू की पूर्वी कांकड में 8 मील दूर गांव गारबदेसर और 13 मील उत्तर पश्चिम म लूणकरणसर प्रसिद्ध एव ऐतिहासिक गाव रहे हैं। राजपूताने की उच्चतम परम्परानुसार गाव कालू भी धम, चरित्र सेवा तथा दान-वीरता मे अग्रणी रहा है। यहाँ के चौधरिया न जहाँ अपना तन मन लगाकर जन सहयोग किया वही यहाँ क दानवीरों ने अपने धन से अनेक मन्दिरा, कूआ, प्याऊ धमशाला एव सुरम्य सरोवरा का निमाण करवाकर अपनी अपरिग्रह भावना का पुण्य परिचय दिया है। कालू के कमठ तथा व्यवहार कुशल व्यापारिया न भारत के विभिन्न भागो मे जाकर अपनी विशिष्ट प्रतिभा क परिचय से गौरव प्राप्त किया है। आज भी बहुत से चतुर पुरुषोत्तम देश के चारो भागा म प्रवासी बने गाँव की आदश परम्परा का भरसक निवाह कर रह हैं। स्कूल, अस्पताल और कूआ ज्होडा के कार्यो म चन्दा तथा धार्मिक सेवाए देने वाले बहुत से लोग इस गाव म पदा हुए हैं, जिनका इस ग्रथ म यथा प्रसग वणन किया गया है।

देव स्थान एव सावजनिक सस्थान बनाने वाले महान हृदय—कालू अपनी तहसील का मुख्य कस्बा है। यह सदा से उन्नतिशील एव सुखदायक निवास कहलाता आया है। इसके चार बास थे और अब अनेक बास बस चुके हैं। इसमे प्राचीन चार कूए, तालाब

और अनगिनत सरोवर हैं। मेखा की छतरी और पूहड भोमिये का मदिर (स 1551) स 1850 से पहले के हैं। जन मदिर और उपासरा बहुत पुराने सस्थान हैं। यहाँ के मदिरो मे पचायती का मदिर भी प्राचीन गिना जाता है। इसे श्रीमती शेरा देवी राठी ने बनवाया था। यह मदिर गाव के बीच म है और जाणियो की मोहल्ला रेखा मे होने से जाणियो वाला मदिर भी कहलाता है। कालिकाजी का मदिर वि०स० 1956 मे नये ढग से गाव के द्रव्य से बना है। रामदेव जी का मदिर एव सलग्न ठाकुर द्वारा[1] भी उसी समय के सावजनिक सस्थान हैं। धमशाला और सत्यनारायण जी का मदिर तथा लूनकरणसर रास्ते का प्याऊ प्रामाद, अनाणा तालाव आदि (वि०स० 1964 72) के बने है। स्वामी जी वाला ठाकुर द्वारा और उनका कूआ वि०स० 1974 76 मे महत ने गारबदेशर से आकर बनवाये। पट्टे का गढ वि०स० 1967 मे बीकानेर राज्य द्वारा बना था। पारीकों की धमशाला उन्हीं की बिरादरी द्वारा बनी हुई है। रा०उ०मा० विद्यालय वि०स० 2007 8 मे गाँव की ओर से बना हुआ है। उसम एक कमरा वि०स० 2018 मे शेरमल डूढाणी ने अपने पिता की स्मृति म बना के दिया है। एक कमरा सुगनी देवी साड ने स० 2026 मे बना कर दिया। एक कमरा श्री रामचन्द्र, इद्रचन्द राठी द्वारा बनाया हुआ है। एक कमरा सन 1978 मे लडकियो के लिए श्री इन्द्रचन्द राठी ने और बनाकर दिया है।[2]

जून 1983 के प्रथम सप्ताह म रा०उ०मा० विद्यालय कालू म तीन बडे कमरे बनवाने के लिए द्रव्य सग्रह हेतु ग्राम के गण मान्य नागरिकों ने एक सभा बुलवाई। इसमे सत्तर हजार रुपए सग्रह करने का लक्ष्य रखा। इसके पूण होन पर अब निर्माण काय शुरू हो गया है। इसमे श्री गोपाल चन्द की तामीरी पूरी दखरेख है। रा०प्रा० पाठशाला मे भी कई महानुभावो ने कमरे बनवाकर दिये हैं जिनमे सव श्री दीपचन्द डूढाणी, श्री शेरमल डूढाणी (अपनी माता की स्मृति मे) श्री छगनलाल जी झवर सूरतगढ (4101) श्री रामदेव सिंह जी कन्ट्राक्टर उडीसा (4000) और श्री रामकिशन श्रीराम खडेलवाल आदि मुख्य हैं। कन्या पाठशाला भवन ग्राम पचायत कालू की ओर से बना हुआ है। उसमे श्री गोपाल राम स्वणकार ने प्याऊ कक्ष बना कर दिया है। कालू म रा०प्रा० स्वास्थ्य केन्द्र श्री शेरमल डूढाणी न अपने पिता की स्मति म निर्मित करवा कर जनहिताथ राज्य सरकार को वि०स० 2021 म अपित किया है। उसके साथ उसी साल डॉ० का निवास गह भी अपनी धर्म पत्नी के नाम पर बना कर दिया है। श्री माताजी का पूर्वी गेट व पानी का बडा कुड किसी अनात सम्बन्धी के द्रव्य से बद्रीनारायण झवर ने वि०स० 2009 मे बनवा दिया था। तत्समय इस भवन के अन्दर स्व० मूलचन्द मूधडा

---

1 ठाकुर द्वारा की मूर्तियाँ पचायत के मदिर मे आ चुकी हैं।

2 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कालू म विज्ञान प्रयोगशाला के लिए एक कक्ष बाहर के कतिपय फर्मों से आये द्रव्य से बना, उन के नाम एव द्रव्य दृष्टव्य हैं—

(क) श्री गनेशदास हजारीमल (कलकत्ता) राशि 2101 रुपये
(ख) ,, बशीलाल, मदनलाल राशि 1101 ,
(ग) ,, इस्ट इन्डिया ट्रान्सपोर्ट एजेन्सी राशि 1101 ,,
(घ) बन्शीधर होशियारीलाल धूपगुरी राशि 2101 ,

वालू द्वारा पत्थर का एक गेट बनाया हुआ है। फिर उसके पास श्री तोलाचन्द साड की धर्म पत्नी ने वि०सं० 2026 मे अनेक कमरे बनवाकर मदिर दरवाजे की शोभा द्विगुणित बढाई है। दरवाजे से दक्षिण उत्तर की तरफ के दो कमरे सरदार शहर के निवासी श्री किशनलाल बोरड न बनवाये हैं। उन ने देवी के मदिर की उत्तर की ओर खाली पडी विस्तृत भूमि के चारों ओर बडी पट्टियाँ गडवाकर परकोटे जसी चहारदिवारी बनवा दी है। देवी के मदिर के अहाते मे ही ब्रह्माणी देवी का मदिर ढहजाने के बाद पुन श्री शेरमल का बनवाया हुआ है।

वतमान प्राथना भवन—पहले इस मदिर के एक भाग को रामदेव जी का और दूसरे भाग को श्री भगवान का मदिर मानते थे। पत्थर चूना इसका पक्का था कि कही वर्षों बाद भी टूट फूट नही आई। अनगढ पहाडी पत्थर की भाति प्राचीन कला सुदरता को सुदृढ बनाये अकेला खडा था। भक्तजना की भक्ति मे चेतना आई, तब सन 1971 से मदिर की पूरी मरम्मत तथा लिपाई पुताई करवाकर नवीनता उत्प न कर दी। पानी के लिए हौज और आगे चौकिया भी बनवा दी हैं। अब सुबह शाम प्रतिदिन पूजा प्राथना का सुप्रबन्ध है।

यहा प्रात साय नित्य प्रति भगवान की प्रायना एव आरती गाइ जाती है। लाऊड स्पीकर का पूण प्रब ध है और धार्मिक भजना गीतो की रिकाड भी पर्याप्त उपयोग म आती हैं। यह आरती अचना काय राजाना भादानी परिवार व टीकू मेघवाल के परिवार द्वारा अबूकचर्या स्वरूप सम्पन्न होता है तथा यथा समय रामदेव पूजा भवन म अनेक भक्त गणा द्वारा समारोह रूप मे महव किया जाता है। मदिर के भीतरी सभा मदिर म राधा कृष्ण और रामदेवजी की नव्य भव्य मूर्तियाँ हैं, जो श्री धनराज मगलचन्द भादाणी द्वारा नय ढग से स्थापित की हुई हैं। मूर्तियाँ वस्त्राभूषणा से सुसज्जित तथा सिंदूर प्रलेपित हैं।

ओसवाल ओसध पचायत—ओसवाल समाज के व्यक्तियो ने पहले अपनी जातीय पचायत की स्थापना की थी वह गाव में आज ओसवाल श्री सघ पचायत के नाम से जानी जाती है। वि०सं० 1955 56 म पचायत द्वारा एक भवन निर्माण करवाया गया था, जिस भवन म तेरापथ सम्प्रदाय की साध्विया (कान कवर जी छोगाजी कुमकुमजी लिछमाजी) का प्रथम चातुर्मास वि०सं० 1960 मे हुआ। इसके बाद कुछ द्रव्य एकत्रित करके पचायत ने बतन आदि का सामान क्रय करके विवाह तथा दूसरे आयोजन उत्सवा पर साधारण किराये स दिय जाने का काय प्रारम्भ किया। ओसवाल पचायत का भवन ग्राम मे बरात वगहर ठहराने के काम म भी आता रहा है। स० 1996 म इस भवन का सुन्दर गट बनवाया गया जो दो वष तक अटका रहकर[1] विलम्ब से सपूण हुआ है। सन 1975 76 म इस भवन को नये ढग मे बनवाया गया है तथा इसम काफी नूतन सामान जसे ढालिए—बतन आदि बनाये गए हैं। पचायत के पास हजारो का अपना सामान जिसम ताम्बे की बडी बडी कूडें टब नूलिए चौमुखी, थाल थालियाँ, पाटे पातिये दरियाँ तिरपाल और लोहे क नग भी काफी हैं। गस, बनिया एव अन्य वस्तुएँ विशेष समारोह अवसरा पर काम आता है। वतमान म स्थानीय जन मदिर भी इसी सस्था की देखरेख मे जन धमलाभ प्रदाय पूजमान है।

---

1 आथूण रखायो बारणो, दिखण रखाई पोळ।
खाटू सू सिला मगाई पड यो पचायती मे गोळ॥

गुराजी का उपासरा—कालू म प्राचीन काल से ही खरतरगच्छीय मदिर मार्गी जन सम्प्रदाय का उपासरा ज्ञान धम कायशील रहा है। इसके सस्थापक यतिवन्द गुराजी हुए हैं। चमत्कारी यतियों का यहाँ काफी नाम है। इनकी ओर से तालाव पर दो कमरे बने हुए हैं। उपासरे को नूतत ढग से बनाने और समद्ध करन का श्रेय गणेशलाल गुराजी को है। इनके देवलोक गमन के पश्चात उपासरे की देखरव ओसवाल पचायत श्री सघ के अधीनस्थ होती है, जो ट्रस्ट बनाकर सारी व्यवस्था करते हैं। इस ट्रस्ट के कायकर्ता भैरुदान सांड, मोतीलाल नाहटा हसराज कोठारी, गोपालचद डूढाणी और रेंवतमल गोलछा (कोषाध्यक्ष) आदि हैं। महिला सदस्यो म श्रीमती तीजादेवी और श्रीमती भवरी[1] बद हैं। अब य उपासरे भवन म एक औद्योगिक सस्थान और दूसरा आयुर्वेदिक औषधालय स्थापित करन की व्यवस्था सलग्न हैं।

श्री जैनश्वेताम्बर तेरापथी सभा—इस सस्था की स्थापना वि०स० 2005 मे सेठ सुगनमल नाहटा के कमरे म हुई थी। उस समय श्री तोलराम साड ने आगम व सूत्र दने के वचन दिय थे। तब जन श्वेताम्बर पुस्तकालय की स्थापना भी हुई। पुस्तकालय वाचनालय के लिए भवन नही है। अत ओसवाल पचायत श्री सघ के भवन म ही दोना सस्थाएँ स्थित हैं। पुस्तकालय म विभिन्न विषयो से सबधित सहस्र लगभग पुस्तकें हैं। पत्र पत्रिकाएँ भी अनेकश आती हैं। सभा की अन्य शाखाओ म श्री महिला मडल कालू अच्छी उन्नति कर रहा है। तेरापथी महासभा कलकत्ता के तत्वाधान मे सचालित जन साहित्य की धार्मिक परीक्षाओ का केन्द्र भी यहाँ कायरत स्थापित है। महिला मडल कालू की पुत्री शाखा श्री कन्या मडल है जो अध्ययन अध्यापन के अलावा अपनी आत्मनिभरता, वाक्पटुता तथा अन्य धार्मिक विचारों का आदान प्रदान करती है। महिला-मडल कालू का भवन अर्से से नाहटा कोठारियों के मोहल्ले मे निर्मित है। इसमें सभा-सम्मेलन और शिक्षा आदि की उपयुक्त सामग्री उपलब्ध है। इसकी स्थापना उत्साही महिलाओं, कन्याओं एव उनके अभिभावकों द्वारा वि०स० 2017 मे की गई थी, जिसका 2026 मे आकर भवन बना है। यह महिलाओ को सुधार ज्ञान की प्रेरणा देने वाली कालू में मुख्य सस्था है। इसके द्वारा पर्दा प्रथा दहेज प्रथा आदि रूढियोंका बहिष्कार किया जाता है और समाज के आध्यात्मिक सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शक्षणिक आयोजन सम्पन्न होते हैं।

पुराने देव स्थानों में भरू जी (तोलियासर) का स्थान यहाँ सदीना है। इस स्थान पर पुत्र प्राप्ति की कामना हेतु प्राय स्त्रियाँ नित्य प्रति धोक देने आया करती हैं। यह स्थान तोलियासर की तरफ पहले गाँव से बाहर एक बडे खेजडे के अधीनस्थ था। अब गाव की आबादी के बीच में आ गया है। भैरूजी की सुन्दर देवली, लेखक के पिता श्री भरारामजी सेंस्कर्ता जो दुलमेरा की खान म सुपरवाइजर थे ने वि० स० 1969 चत सुदी 14 को अपने ज्येष्ठ पुत्र बालूराम के स्वास्थ्य लाभ हतु उसकी ननिहाल तक कधे पर ले जा कर बिना मुह मे अन्न पानी लिए नौ कोस भूखे प्यासे पदल कालू आकर स्थापित की थी। इसके बहुत समय बाद कुछ सज्जनों द्वारा इस स्थान का पक्का परकोटा भी बनवा दिया गया है।

---

1 श्रीमती भवरी देवी बैंद ने अपना नवनिर्मित अतिथि भवन दिनाक 16 6 83 को जन-श्वेताम्बर तेरापन्थी सभा कालू को शुद्ध भावना सहित प्रदान किया है।

हरिरामजी का मन्दिर—श्री तालाराम साहू ने सन 1974 76 मे बनवाया। बभूता महाराज का स्थान यहाँ अन्य वीर भोमिया की भांति एक शताब्दी से पूजमान है। श्री बभूता की साल पहले श्री बनचद नाहटा द्वारा बनवाई गई था। फिर गाव स सार्वजनिक रूप म बनी और अब स० 2026 मे शेरमल डूढाणी ने इसी स्थान पर सुन्दर साल बनवाई है। कालू मे सांप के काटे व्यक्ति को बभूता के स्थान पर लाकर दैविक उपचार किये जाते है। ऐसा करने पर सांप के काटे हुए बहुत कम व्यक्ति मरे हैं। गाव म पहले वैद्य-डॉक्टरो की कमी होने से जहरीले जीवो के काटे जाने पर बभूता महाराज की उपासना ही जीने का आधार मानी जाती था। यहाँ भाद्रपद सप्तमी को बभूता की पूजा होती है। कालू मे क्रम से अष्टमी और नवमी के दिन सर्पों के देव केसराजी कवर और गोगाजी महाराज की पूजमान तिथियां मानी जाती हैं। गोगाजी का स्थान हरिजन बस्ती म उन्ही की बिरादरी द्वारा ब्होडी जादुवान पर बनाया हुआ है। वहीं ताल के किनारे हरिजनो की सुविधार्थ रमजानखाँ ने एक रामदेवरा भी बनवाकर दिया है। वसे जाणी जाटो का गुसाँई व गोदारो के गुसाँई के भी अपने स्थान उन उन जाटो के पुराने मढ बनाये हुए है। अब तो भोमिया के भी कई स्थान बन गये हैं। कारिये बास म रामदेवजी के पटे लाधूराम हरिजन ने अपना मदिर बनवा लिया है।

इस्लामी धर्म स्थान—इसकी स्थापना एक युग पूर्व नव जागति की लहर म यही के मुसलमानो द्वारा हुई है। भारत विभाजन (1947) के बाद इन लोगो की यह ख्वाहिश रही कि इस्लाम धर्म के लिए अपना भी एक सगठन होना चाहिए। फकीरा, रजाकसा, मागूखा और तूफल काजी इस काय को पूर्ण करवाने म तन मन धन से अग्रणी रहे हैं। विशेषकर फकीरा के एक सबधी (जो इराक मे रहता है) से भी समय समय पर आर्थिक सहायता मिली है। वह हाजी शौकतअली फतेहपुर का निवासी है तथा कावत म अपना धधा करता है। हाजी ने मस्जिद हेतु 24 000 रुपये प्रदान किय है, जिनसे सन 1973-74 मे मस्जिद का भवन बनाया गया है। अब भी ये लोग चदादि एकत्रित करके इस भवन की बढोतरी तथा रग रूप सज्जा करना चाहते हैं।

प्राचीन छतरियां—गोदारो के मदिर म एक सुन्दर छतरी चौधरी मेखा पर उसके पारिवारिक लोगो द्वारा बनाई हुई थी। वह सवत 1990 की वर्षा मे गिर गई। दूसरी प्राचीन छत्री अब लूनकरनसर से सरदारशहर की सडक पर खडी है वह किसी शासक की श्मशान भूमि पर उसक वशजो द्वारा बनाई हुई जानी जाती है।[1]

गाव के ताल मे अनेक पुराने चौक चबूतरे बने हुए हैं। कालू से चार किलोमीटर लूनकरनसर सडक के किनारे मास्टर केशरमल गोदारा के दुर्घटना स्थल पर उसके नाम एक स्मारक, सडक के प्रथम ठेकेदार द्वारा बनाया हुआ है और उस पर ध्वजा फहराती है। उन्ही के द्वारा छवरों की प्याऊ पर बना हनुमानजी का मदिर स्थान है।

सारस्वतों की मावडियाजी का स्थान—इन मावडियो (माताओ) का सदीना मदिर सारस्वतो के पश्चिमी बास मे स्थित है। इस बास के सारस्वा ईसराणी कहलाते हैं। लगभग तीन सौ वर्ष पहले इनके हरिदास नाम के पूर्वज को खेत जोतते समय एक

---

1 स्थानीय ससी कहते हैं यह छतरी हमारी है, लेकिन ससिया की छतरियो के प्राचीन आकार प्रकार अन्य साधारण तरीका के होते हैं। मुझे ऐसा चूरू के श्री सुबोध कुमार जी अग्रवाल ने बताया है।

सदूव म मावडियों की मूर्ति और पावडियाँ मिली थी। मावडियो का हुक्म हुआ कि कालू में तालाब के पास मेरा स्थान बना देना। हरिदास ने वसा ही किया। तब उस बूढे के दो पुत्र हुए। प्रचलित कथा के अनुसार एक का नाम ईसर और दूसर का नाम रूपा रखा गया। ईसर के वशज ईसराणी और रूपा के वशज रूपाणी कहलाते है। आथूणे वास मे अब ओना के भी परिवार हैं, लेकिन अगूणे (पूर्वी) वास मे रूपाणी ही निवासित हैं। ये दोना वास मावडिया को सश्रद्धा पूजते हैं। माही मात्यू को मावडिया जी की पूजन तिथि है, जिसमे पहले रोज दोनों वासों की महिलाएँ इस मदिर को मगल गीतों के साथ लीप पोत कर सुसज्जित करती हैं। सप्तमी को हर सारस्वत परिवार म मावडियों का प्रसाद बनता है एव भोग चढाया जाता है। अब नया मदिर प० सोहन लालजी न बनवाया है।

पानी के कुण्ड एव प्याऊ—राजपुरा और कालू तथा लूनकरनसर एव सारवदेसर चौरास्ता पर कालू से करीब दस किलोमीटर दूर राजपुरा नामक खेत मे सवत 2010 मे श्री मूलाराम पारीक की ओर से प्याऊ का कुण्ड एव साल स्थापित की गई। ऐसी ही बराबरी की दूसरी प्याऊ का स्थान गाव राजासर करणीसर के रास्ते पर कालू म सात किलोमीटर दूर सोएत नाम के खेत मे श्री धनाराम पारीक द्वारा उसी साल निर्मित एव वतमान म व्यवस्थित है।

जल की घडोइया—प्राचीन समय मे धार्मिक जन वशाख जेठ के महीना मे पक्षियों के जल पीने हेतु घरो की ऊँची दीवारा पर ठीकले तगरे (मिट्टी के बतन) रख दिया करते थे। जिनसे उडते प्यासे पक्षी पानी पी लेते। हरिण आदि जगल के पशुआ के लिए भी गाव के लोग ऐसा धार्मिक कृत्य करते हुए शाम को अपने कधा पर पानी के घडे ले जाकर गाव से बाहर नित्य हमेशा तगरो मे पानी भरने जाया करत थे। धनी-मानी व्यक्ति पक्की घडोइया बनवा कर जल पूरित करवा दिया करते थे। वि० स० 1980 म सूरजाणे जोहडे के ताल म गिरदावर अमरनाथ ने एक पक्की घडाई बनवाकर पानी भरवाने का सुप्रबध किया था। लेकिन विधान उलटा हो गया और वहा अय पशुआ की तरह भेडिये भी पानी पीने आने लगे और ताल में बठी हुई गाया का मारन लगे। तब पानी भरवाने का बदोबस्त बद कर देना पडा। अब न यहा भेडिय हैं और न ही कोई पानी भरवाता है। केवल वह शुष्क घडोई ही ऐसे आदश कामो की याद साख बताती है। निहराणे जोहडे पर गुसाँईजी के स्थान आगे भी ऐसी एक घडाई गोस्वामी द्वारा बनाई हुई है।

जल स्टण्ड—ई० सन् 1979 मे ग्राम पचायत कालू द्वारा अपनी आमदनी से अनक मोहल्लो मे जल स्टण्ड (कोठा खेन और हौज) बनवाय गये है जो जल सकट मिटाने म हर वक्त समथ हैं।

गाव में चुग्गे के लिए पक्षी पींजरे—कालू गाव के अनेक मोहल्लो म पक्षियों की सुरक्षा हेतु दाना चुगने के लिए कुछ व्यक्तियों ने लोहे के अनेक पींजरे स्थापित करवा रखे हैं, जिनमे पक्षियो को रोजाना गाँव म चुग्गा डलवाया जाता है। पींजरा प्रथम माताजी के मदिर आगे गाँव स सावजनिक रूप से बना हुआ है। पीजरा द्वितीय पचायती के मदिर आगे श्री शेरमल डूडाणी का बनाया हुआ है। पीजरा तृतीय हनुमानजी के मदिर आगे श्री रायचद नाहटा भ्रातवृद द्वारा बनाया हुआ है। पींजरा

चतुथ रामदेवजी के मन्दिर आगे धनराज भादानी द्वारा बनाया हुआ है। पीजरा पाँचवा श्री स्वामीजी के मन्दिर आगे बरागिया की बिरादरी द्वारा बना हुआ है और षष्टम सुव्यवस्थित पींजरा रामा मडी म बना है। इस तरह गाँव म अनेक पीजरे गाँव के लोगो न समय समय पर बनवाकर स्थापित किय है।

गाव नाथूसर और कूआ—वि स 2011 स पहले नाथूसर गाव कुछ असुविधाजनक स्थान पर स्थित था। इसलिए वहाँ के मुखिय लोगो ने सवत 2009 में श्री लाल चद राठी क सहयोग से कालू की कांकड पर स्थित काँजरवाली जोहडी पर कूआ खुदवाना आरम्भ किया। उपरोक्त सज्जनो के उत्साह जनक श्रमदान स धरती माता न जल भी मीठा प्रदान कर दिया। अत एव उक्त समय म नाथूसर गाव उठकर जोहडी पर आ बसा है।

कालू मे यात्री विश्रामालय—ई सन 1978 की अगस्त म यह सावजनिक सस्थान भवन ग्राम पचायत के द्रव्य से सरपच द्वारा विशेष दिलचस्पी के साथ बनवाया गया है। यात्री आवभगत की पुनीत भावना से अनुप्राणित यह सस्था बीच बाजार बस-स्टण्ड पर स्वागताथ प्रतीक्षा व्यवस्थित सवा रत है। यह आरामदायक विशाल भवन नित्य प्रति यात्रियो को सब सुविधायें सुलभ करवाता है।

जकात थाना परिवर्तित पटवारखाना—इसकी स्थापना ई० सन् 1951 52 मे श्री भीखाराम थानदार (नाहर) द्वारा हुई थी। इससे पहले जकात थाना कार्यालय धमशाला भवन क बाहरी कमरे म स्थित रहता था। श्री भीखाराम ने जकात थाना कालू की आमदनी जमा रखकर अपने महकम से स्वीकृति लेकर यह सरकारी स्थान कायम करवा दिया। सन 1954 के बाद जकात विभाग की समाप्ति के आसार बने, तब राजस्व विभाग वालो न इस स्थान को अपने अधिकार मे ले लिया जो आज तक उन्हीं के पास पटवार मडल कार्यालय क नाम से सबोधित होता था।

वि स 2038 (ई स 1980 81) म ग्राम पचायत ने पथक पटवार भवन बना दिया है। तब स इस जगह पर (पचायत व्यवस्थित) तीन दुकानें बनी हैं। और वहाँ नये पटवार भवन के सलग्न अनुरूप दूसरा मकान ग्राम सेवक के लिए भी बनवाया गया है। धनाणा ताल के दक्षिण पश्चिमी छोर पर सरकार ने पशुओ का बडा अस्पताल सन् 1980 81 म बनवाकर तयार करवाया है। उसका क्वाटर भी बना दिया गया है। सन 1982 म इस पशु चिकित्सालय के निकट कालू सहकारी समिति के लिए अध्यक्ष के मारफत सरकार न एक बडा गोदाम तयार करवाया है।

ईस्वी सन 1983 म 'हुडको' योजनान्तगत कई कालोनियाँ एव अनेक मकान ग्रा० पचायत कालू के माग दशन द्वारा बन रहे हैं।

पुण्य सस्मरण—श्री ताजाराम के सुपुत्र प० श्री गणेशाराम जी सारस्वत (जन्म वि स 1939, प्रथम श्रावण कृ० 4 मगलवार, स्वगवास 2000 श्रावण कृ० 2 सोमवार प्रात 5 बजे) कालू के जाज्वल्यमान नक्षत्र थे। उनका जीवन विद्वता प्रधान, आध्यात्मिक, कमठता उदारता, परोपकार और जन सेवा के लिए एक आदशमय जीवन था। यद्यपि वे कालू गाँव क रहन वाले थे परन्तु ! चूरू, बीकानेर ही नही, उनके गुणो की पहचान बम्बई, कलकत्ता मे भी थी। उन्होने वेद उपनिषद, व्याकरण पुराण ज्योतिष और आयुर्वेद का गहरा अध्ययन अन्वेषण किया था। अपन युग मे वे अपन विषय के अद्वितीय

विद्वान थे। मेरी नियुक्ति अध्यापक पद पर हो जाने के तीन वर्ष के बाद ही वे इस संसार से चल बसे, किन्तु मेरे कार्य में उनकी सौजन्यता का फल मिल गया।

अध्यापक बन जाने के दो वर्ष पश्चात (सन् 1942) ग्रीष्मावकाश के समय तीर्थ स्नान के लिए मैं अपनी माताजी के साथ सप्ताह भर से हरिद्वार में ठहरा हुआ था। पंडितजी वैसे तो वहां अनेक संस्थाओं के साथ सम्बंधित थे, परन्तु जीवन के अंतिम दिनों में आप श्री बस्तीराम पाठशाला कनखल (हरिद्वार) के व्यवस्थापक मण्डल में अध्यक्ष रह रहे थे। तब मैं माता जी सहित पण्डितजी के चरणों में उपस्थित हुआ तो हमें देखकर वे गद् गद हो गये। गाँव के कुशल-समाचार पूछे और अपनी अस्वस्थ स्थिति बतलाई। हमने पत्र पुष्पम् भेंट—चढावा करना चाहा, उन्होंने मुश्किल से स्वीकार किया। अस्तु हम तो उनसे आशीर्वाद लेकर वापिस घर लौट आए। उसी वर्ष विद्यालय खुलने के पश्चात उनका देहावसान हो गया। इस दुखद संवाद से उस रोज कालू का बाजार, दुकानें, विद्यालय पुस्तकालय बंद रहे।

"शब्द ब्रह्मणि निष्णात पर ब्रह्माधि गच्छति।" जो महानुभाव शब्द ब्रह्म को जान लेता है उसे पर ब्रह्म प्राप्त हो जाता है। श्री गणेशारामजी वस्तुतः एक विलक्षण योगीराज महापुरुष थे। जितने महान थे, उतने ही सरल, जितने बड़े, उतने ही विनम्र। उनमें अपनी पंडिताई का तुच्छ मात्र भी अहं नहीं था। धन का बहाव चलता रहा, किन्तु उसका लोभ उन्हें छू तक नहीं सका। उनकी वृत्ति विशुद्ध ब्राह्मण वृत्ति थी। अर्थ उत्पादन तो गृहस्थ धर्म जान कर ही प्राप्ति के साधन अपनाते थे। अर्थ लाभ हो जाता-उसका स्वागत करते, किन्तु ऐसे अर्थ लाभ के लिए कोई अनुचित या अनैतिक कार्य कर लेना उनके लिए सम्भव न था। वे गऊशाला और कबूतरों के चुग्गे का सदैव ध्यान रखते थे। गणेशाराम जी का कई जगह करोडपति फर्मों में प्रभाव था। कलकत्ता में सूरजमल नागरमल (जॉलान बाजारिया) के यहां खास होने हुए भी उनका आना जाना बिड़लों तक बना रहता था। खेमका पोद्दार, जॉलान जाज्जू जैसी पार्टियाँ उनका विश्वास करतीं। कलकत्ता से कालू आते तब वापिस जल्दी पहुँच जाने के लिए पंडित जी को वे रिटर्न टिकट करवा दिया करते। कलकत्ता के प्रवास में अपने निवास स्थान कालू लौटते तब वे पारिवारिक जिम्मेदारी का अनुभव लिए बड़ी तत्परता से उसका निर्वाह किया करते थे। बड़े परिवार में तुरंत भाई-बंधु मिलने आते। तब पंडितजी किसी को धोती कोट कपड़ा, घुस्से-बंधम्बर तथा अन्य जरूरी वस्तुएँ वितरित किया करते थे। वे सबको सौगात प्रसाद देते। किसी धर्माय खाते में आय द्रव्य को वे अलग रखकर तत्काल दुर्बल स्थिति वाले समाज में अन्न की बोरियां वितरण करवा दिया करते। विवाह् अवसरादि के समय गाँव या समाज वाले कतिपय लोग आवश्यकतानुसार प्रायः इनसे रुपये लिया करते, पर वापिस लौटाते समय पंडित जी ने कभी किसी पर ब्याज के लिए दबाव नहीं डाला। गारबदेसर के रास्ते (तीन केलियों के स्थान) पर उनकी ओर से सदैव अष्टमासी प्याऊ लगवाई जाती थी। यद्यपि वे अधिकतर बाहर रहते, किन्तु अपने गांव के प्रति उनका अगाध प्रेम था। कोई भी व्यक्ति किसी प्रकार का कार्य लेकर इनके पास पहुँच जाता तो वे आधी रात को भी उसके साथ हो जाया करते और साधारण व्यक्ति के कहने पर ही उसके घर के धर्मकाण्डी पंडित तथा वैद्य बन जाया करते थे। ग्रामीण जनों के नामकरण संस्कार से लेकर राज्य सरकार के कामों तक में राय देते रहते। वे सचमुच निष्काम सेवा भावी नागरिक पंडित थे।

उस समय गाव मे वद्य डॉक्टर व औषधियो की भारी कमी थी और निमोनिया, टाइफाइड, तेजरा, चौथया जसे भयकर रोग सामा य लोग को हर समय दबाये रखते थे। हरिजनो को छूना भारी पाप गिना जाता था। पर तु समय का कोई अछूत व्यक्ति अपने जन की बीमारी की करुण कहानी लेकर पडित जी के समक्ष उपस्थित हो गया तो पडित गणेशाराम जी अहिचक झटपट उसके घर रोगी को देखने चले जाया करते थे और वे उन रोगियो को नि शुल्क दवा भी दिया करते थे।

पडित जी के घर आँगन मे दो रसोईघर बने हुये थे। उनका और घर वालों का नित्य पृथक्-पृथक् भवना म भोजन बनता था। भोजन वे अपने हाथ से बनाते अथवा श्री राम, मोमाराम तथा दुर्गादत्त आदि जिज्ञासु छात्र बना दिया करते थे। कि तु पडित जी के औरता का बनाया और कढाई म पकाया हुआ भोजन कदापि नही चलता। उस समय जल उत्पादन भारी मुश्किल, पर वे अपन विद्यार्थी जीवन से ही डोर जल पिया करते थे, चाम जल नही। कलकत्ता आदि की यात्रा के समय रेल मे अपने हाथ से भरे बादले का जल ही व्यवहार म लाते और सूके चने (भुगडे) चबाकर पाच पाच, सात सात दिन की यात्रा कर लिया करते थे। न तो वे दूसर क हाथ का बनाया खाना खाते और न ही नल का पानी पीते। ये एक सद्धा तिक स त थे मगर साथ म पूरे यथार्थवादी भी। दया और सेवा उनका मुख्य धम था वे अधिकतर परोपकार के लिए ही सग्रह करते थे।

सामाजिक कार्यों एव वार्षिक त्यौहारो पर पडित जी का नाम-नामून था। गढ के सारे आफिसर मुखिय, सेठ-साहूकार उनके घर आया करते थे। पडित जी भी बिरा दरी वाले लोगो के साथ उत्सवादि म सहष सम्मिलित होते। अपने घर के मुअवसर पर तो वास एव समाज के सारे लोग बडे अपनत्व के साथ सम्मिलित किए जाते। इस तरह के अवसर पर पडित जी के घर सारे लोग, बडे बडे मिष्ठा नो द्वारा तृप्त किए जाते थे। उनके घर सुधारवादी ढग के विवाहादिक काय सम्पन होते। न नत्य गान गाने और न ही कभी गालिया गाई जाती।

पडित जी लम्ब तडके व्यक्ति, दिव्य गोरा चेहरा, ब्रह्म तेज से प्रदीप्त आखें एक न्यायाधीश की प्रतिमा लिए दृष्टिगोचर होते थे। किसी भी अपरिचित जगह जाकर ठहरते उनकी विद्वता का अपन आप आदर हो जाया करता था। शाम को प्राय नित्य ही उनके पास पुराण, महाभारत, रामायण और योग वाशिष्ठ आदि की कथाएँ चल जाया करती थी। वे सारे गाव और समाज म समादत थे। सारस्वत कुडिया समाज म उनका स्थान बेजोड था। वे किसी को डराते धमकाते नही हार्दिक भावनावश लोग उनका आदर करते थे। कोई भी सावजनिक या क्षेत्रीय काय होता उसम पडितजी का रहना प्राय अनिवाय समझा जाता था। आज भी उनके परिवार म कितने ही मनुष्य प्रात काल उठकर गणेशराम जी का नाम लेते है जिसस कि उनका वह दिन सुख से कट जाय।

प० श्री गणेशाराम जी के सहयोग से वि०स० 1988 माघ सुदी म अखिल कुण्डिया सारस्वत समाज न गाव कालू म पचायती का एक बडा आयोजन रखा। जिसम हजारो आदमी चार दिन तक कालू म रहे। घर वालो न प द्रह दिन पहले ही खाद्यान्न, समान, बतन, स्थानादि अपन हाथ वश करन आरम्भ कर दिय थे। क्योकि सम्मेलन के सारे व्यय का भार पडित जी ने वहन करने का कह रखा था। पर तु कलकत्ता से कालू आने मे पडित जी को एक दिन अधिक लग गया, जबकि समाज के लोग ठीक समय पर कालू पहुँच

गये थे। पारिवारिक लोगो न पडित जी के नाम से भोजनादि की सारी व्यवस्था करदी थी। इसलिए वे कालू पहुचे तब उन कुटुम्बियो को बहुत बहुत धन्यवाद दिया, जिन्होने उक्त काय को सम्हाल लिया था। उन्होने तो बाहर से आये हुए पचों वगैरह से भी माफी माँग ली कि—"मैं एक दिन लेट हो गया हूँ।" इस प्रकार परोपकारी, प्रभु भक्त एवं धर्मानुरागी प० श्री गणेशाराम जी का जीवन अपने भरे पूरे परिवार के साथ आदशमय था, परन्तु भगवान इनकी परीक्षा लेने के कठिन अवसर निर तर प्रस्तुत करने लगा। सुपुत्र बद्रीनारायण दीर्घायु न होने के कारण स्वल्प आयु म ही चल बसा। इस आकस्मिक दुख को पडित जी ने बडे धैय के साथ सहा था। प० जी के छोटे भाई श्री देदाराम भी वि०स० 1975 म चले गये। स० 1989 मे उनकी माता जी का देहावसान हुआ, तब उनके पीछे पडित जी ने बडा मेला (भोज सम्मेलन) किया। कि तु बारहवें दिन मेले का काय सलटना ही चाहता था कि उनकी धमपत्नी परलोक वास कर गई। फिर वही मेला करना पडा। इस शोकावसर पर आई हुई एक सबधिन भी उनके घर से परलोक वासिनी बन गइ। परन्तु पडित जी घबराये नही और सामाजिक एवं धार्मिक प्रथानुसार सब के पीछे ब्रह्म भोज किये। वि०स० 1992 चैत सुदी 3 का भाई देदाराम का जवान लडका रेडाराम भगवान को प्यारा हुआ। पडित जी का दूसरा लडका रामचन्द्र (सोलह वष) जिसका गत साल लाडनू विवाह किया था, बीमार पड गया। उसके लिए वद्य श्री भरव दत्त जी आसोपा को बुलाया। लकिन रामचन्द्र नही बचा। वह रिडमाल से चार दिन बाद चेत सुदी 8 के दिन चल बसा। फिर उसी चत सुदी 9 को मझले भ्राता श्री गोधूराम का स्वगवास हो गया। परन्तु पडित जी इन सारे दु खो को मन ही मन सहते गये। भादवा सुदी 15 (स० 1994) को इनके दामाद मानाराम जी स्वगवासी हो गये। पडित जी अत्यधिक दु खी हो उठे और उनका मन एक बार फिर ससार से कुछ सीमा तक विरक्त हो गया। कि तु ससार दु खो का सागर है एवं सुख दु ख ईश्वर प्रदत्त हैं, यह समझकर पडित जी सारे दु खो को एक महर्षि की भांति सहते हुए अपने जीवन को तीर्थों की तरफ ले जाने के लिए तयार हो गये। पर एक पुत्र सोहन दूसरी पुत्री जेठी, इन को अविवाहित छोडकर तीर्थों म जा बठना व्यवहारिक वर्ताव नही समझा। स० 1996 माह सुदी 5 को पुत्री का विवाह किया और उसी पुराने सम्बन्धियो के वहा लाडनू म सोहनलाल को विवाहित करके व हरिद्वार चले गये। उन्होने वहा पर अपने शरीर का त्याग किया।

काया अनित्य होती है परन्तु पुण्यात्माओ की कीर्ति अमर होती है। पडित गणेशाराम जी के आदश जीवन की कहानी, उनके गाव काल के निवासी चिरकाल तक स्मरण करेंगे, जो उन्हे प्रेरणा देने वाली है—

हे देवरूप, उदात्त पुरुष, तुम पिघल रहे पर दु ख देख।
हे धम धनी हे त्यागमूर्ति कालू में खींची पुण्य रेख।।

धार्मिक व्यक्तित्व—गाव कालू के आस पास वाले क्षेत्र तथा बीकानेर नापासर डूगरगढ सरदारशहर, सूरतगढ के पुराने माहेश्वरी फर्मो मे ऐसा कौन होगा जो श्रीफूसा रामजी धवर के नाम को न सुन सका हो? वे कालू निवासी थे। उनके पिता का नाम श्री रामसुखदास जी था और दादा का नाम गुमानीरामजी धवर। गाव चाँदसर के राठी परिवार मे ननिहाल थी, वही से आप कालू आये थे। श्री गणेशमल देवचन्द राठी आपके मामे के बेटे भाई थे। आपका विवाह गाव धनरू (चूरू) म हुआ था। आप मुख्य रूप से आत्मनिर्भर गाव के बनाये जाते हैं।

फूसारामजी (ज म वि० स० 1916 तथा देहावसान वि० स० 1976) गाव कालू मे रामस्नेहियों की जगेरी मे पढे लिखे हुए थे। आगे जाकर उ ही धार्मिक विचारो मे प्रनशाली बने। उनके गुरु रामस्नेही सत न बगाल जाकर व्यापार करन के लिए मुहूत और माग व्यय बाबत बीस रुपये भी उनके नाम लिख कर दिये थे। उसी मुहूत मे रवाना होकर फूसाराजी भटिण्डा की रेल से बगाल के लिए विदा हो गये। वहाँ जाकर व्यावसायिक क्षेत्र मे यथेष्ट सफलता प्राप्त की। उनकी फम का नाम फूसाराम रामनारायण था। फूसारामजी ने वहा अपने व्यापार को अच्छा फैलाया और काफी कीर्ति अर्जित की। इनका बडा बासा (कार्यालय) कमारजानी (रगपुर) था। कमारपाडा, सोमागज, गाईबादा, लखीपुर और फूलबडी आदि स्थान, इनके सख्या म इक्कीस (21) मुकाम थे। कलकत्ता 46 स्ट्राड रोड म गद्दी थी। पाट और कपडे का कारोबार था, परतु साथ म जोत जमीन व जागीरदारी भी थी जो झवर ईस्टेट के नाम से प्रसिद्ध हुई। फूसारामजी जिस मुकाम मे जाते, वहाँ एक हाई स्कूल और एक कूआ बनवाकर व्यापार शुरू किया करते थे। उनके उक्त स्थाना म श्री डूगरगढ, बीदासर, दडीबा और टमकार आदि गावो के अनेक कायकत्ता रहते थ। आप कालू के लोगो का भी अपने मुकामा म रखते थे। गणेश लालजी राठी मुनीम थे। नीमाराम सारस्वत चौथाराम पारीक आदि कमारजानी मे वरिष्ठ कमचारी थे। हरखचदजी कर्वा एव तोलाच द करनाणी भी आपके कारोबार में अच्छे कायकर्त्ता थे। फूसारामजी ने ज्या ज्या अपनी आर्थिक उन्नति की, त्यों त्या दान देने का कायक्रम भी बनाए रखा। रगपुर म पहले-पहल कार माईकल कॉलिज स्थापित हुआ। अग्रेजी सरकार के समय फूसारामजी से 10000/ (दस हजार रुपये) लेकर उनको स्कूल कमेटी का पहला आजीवन सदस्य बनाया था। कार माईकल (अग्रेज) वहा का कलेक्टर (जिलाधीश) था जो कालेज बनन के बाद कमिश्नर बनकर गया।

वि० स० 1962 म फूसारामजी ने अपने गाव कालू और लूनकरनसर के बिकट रास्ते मे प्याऊ की नीव लगाकर जगल म मगल कर दिया। कालू वासी गारबदेसर, आडसर रावासर कूबियो चादसर, छटासर कागासर कवळासर, अडसीसर पनपाळियो, सोमासर लादडियो उदरासर, लोडेरा बींझासर धीरासर आदि अनेक गावो के लोग इस रास्त से धान (अन्न) की छाटी लाने के लिए लूनकरनसर आत जाते रहते और पानी की लोटडियाँ साथ रखते। फूसारामजी ने बडा कुड बनवाकर पानी का अभाव निवारण कर दिया। उनकी अ न की भरी बोरिया वषा के दिना म भीग जाती इसलिए प्याऊ के साथ टीन का बडा ढाळिया (छाटी उतारने के लिए) बनवा दिया। अनेक गावा का आवागमन होने के कारण पहले प्यास के मारे इस रास्ते मे यात्रियो की बुरी हालत रहती थी। एक लखारा का लडका रास्ते चलता प्यास मर गया। उसके माता पिता वही जाकर जलने को तैयार हो गये। लोगों ने उनको समझाकर जलन नहीं दिया। फिर भी एक बार गाव महाजन से आती हुई श्री गणेशमल पुत्र शिवलाल राठी की बहु को सदूराम खडेलवाल अपने ऊट पर कालू लिवाये ला रहा था। प्याऊ के पास बुडाणी पर चोरों न उन्हे लूट लिया और सदूराम का ऊट भी लेते गये। अत तत्कालीन स्थिति मे प्याऊ यात्रियो के लिए बडा सुरक्षा स्थान बन गया। स० 1964 मे प्याऊ और भवन बनकर पूरे हुए, तब सेठ झवर ने वहाँ एक बडे ब्रह्मभोज का समायोजन किया। चारो तरफ के गावो से आये हुए ब्राह्मणो को भोजनोपरान्त एक एक

रुपया दक्षिणा दी ।

प्राचीन समय से कालू के मध्य राज्य का एक बडा गढ (दुर्ग) था । उसमे बाहर के कर्मचारी गण रहा करते । उनमे हर समय गाव के लोग आतंकित रहते थे । फूसारामजी ने वि० स० 1968 मे गढ की जमीन खरीदकर वहाँ पर एक बडी धर्मशाला की नीव लगवाई जो स० 1972 म बनकर तयार हो गई । उस समय गाव के सभी ब्राह्मणो को भोजन करवाकर दक्षिणा दी गई । धर्मशाला के साथ श्री सत्यनारायण भगवान शीतला माता शिवजी हनुमानजी के मंदिर भी बनवाये गये । बीच बाजार जमीन लेकर धर्मशाला बनवाने के लिए फूसारामजी को महाराजा गगासिंहजी तक जाना पडा था ।

महाराजा के सामने उन्होने गाव कालू का तालाब पक्का बनवाने की सहायतार्थ रुपये दस हजार (10000) की हुँडी देकर उक्त कार्य को सरल एव सम्मानित बनवाया । धर्मशाला और प्याऊ के लिए पट्टे से काफी जमीन प्रदान की गई और फूसारामजी को कायदे से सनद बख्शी गई थी । धार्मिक कामो म अधिक ध्यान देने से तथा व्यापार औरो के भरोसे छोडने का फल आगे जाकर दुर्बलावस्था रहा । स० 1976 म उदारमना श्री फूसाराम झवर का देहावसान हो गया, सारे गाव म शोक छा गया । पर बद्रीनाथ धाम मे अभी इनका एक भवन बोलता है ।

फूसारामजी न अपने घर का कच्चा रखकर गाव म अनेक सार्वजनिक सस्थाएँ बनाई हैं । ये गट्टाळा अगरखी पगडी मोटी धोती और देशी जूते पहनते थे । बोली पक्की (हिन्दी) बोलते जिससे इनका व्यक्तित्व पूरा खिलता रहता था । ये विद्वानों एव पडितो का आदर सम्मान करन मे कभी पीछे नही रहते ।

फूसारामजी के तीन पुत्र सर्वश्री रामनारायण, बालचद और तुलसीराम हुए । तीनों भाई उद्योगी व्यवसायी और बडे धर्मात्मा थे । उन्होने अपने जीवन मे खूब सफलता प्राप्त की श्री रामनारायण और तुलसीराम के एक एक पुत्र तथा बालचद के पाच पुत्र हुए । वतमान समय म भी झवर परिवार के व्यक्ति बडे दानी और उदार हैं । उक्त परिवार की बनाई हुई गाव तथा बाहर मे अनेकों सस्थाएँ हैं । उन सस्थाओं का सुप्रबध झवरों का पर्यवेक्षण हैं । फूसाराम के घराने में श्री बालचद के बडे पुत्र स्व० श्री गिरधारीलाल हुए । य अपने छोटे से जीवन मे बडे बडे सस्थानिक लोकोपयोगी काय करने म अग्रणी रूप से समय रहे । गिरधारीलाल अपने दादा श्री फूसाराम की तरह मिष्ठभाषी मनोहर तन मिलनसार स्पष्ट वक्ता तथा दूसरो के दुख मे पडने वाले भद्र पुरुष थे । *ये अभिनयकर्ता, सतरज के खिलाडी, मजाकिय स्वभाव, बूढे वकील की तरह* वाकपटु तथा मस्तिष्कवान सज्जन थे । सार्वजनिक कामो मे बडी रुचि एव लग्न रखते । इसलिए गिरधारीलाल की गाव म सब श्रेष्ठ लोकप्रियता रही है । इन्होंने गाव कार्यों के लिए अपने घर से वेतन द देकर लोगो मे वर्षों तक सार्वजनिक काम करवाये हैं । एक बार कालू और आडसर की जनता न गिरधारी लाल को सरपच का चुनाव भारी बहुमत से जीताया था । आज भी इस धार्मिक फर्म (फूसाराम रामनारायण) का कालू मे महत्वपूर्ण स्थान है । जब कभी किसी प्रकार का चन्दा चिटठा होता है तो पहले इसी घराने से शुरुआत की जाती है । गिरधारी लाल का मझला लडका स्व० श्रीराम भी कालू का एक अनोखा व्यक्तित्व था, दीपक की भाति बुझ गया । लेकिन उपकार के ओजस्वी कार्यों म बार बार उसका नाम आता है ।

इस भवर फमिली के लोग गाव के सावजनिक कार्यो म अब भी सतत प्रयत्नशील है। सवा सौ वर्षो से भी ज्यादा पुरातन सेवाभावी हाने के कारण इस घराने का कालू के निकटीय क्षेत्र मे पूरा सम्मान है। वतमान ममय म श्री मोहनलाल झवर, उक्त घराने का एक सावजनिक एव उज्ज्वल व्यक्तित्व है।

ब्रह्मा विष्णु साथ साथ चले है कलास माथ।
कहे हर उमा गाथ, बोले जुग आइये ॥ 1 ॥
तब दोनो देव कहे कालू नाम सुन रहे।
नाथ हम हाथ गहे, गाव वो दिखाइये ॥ 2 ॥
रेगिस्तान रग राजे, इ द्र वन सुख छाजे।
नर गुण, सुर साजे, निवासी मिलाइये ॥ 3 ॥
धमशाला लियो बास, फूसाराम भगत म्हाश।
हाल्ट हेत हरि भास, मदिर बनाइय ॥ 4 ॥ (कळायण ह० लि० पत्रिका)

सुख पूर्णा देवी झवर—श्रीमती सुखी देवी का ज म वि० स० 1967 कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुदशी को जयमलसर (बीकानर) निवासी श्री लक्ष्मीनारायण जी राठी के घर हुआ। धार्मिक परिवार के सुसस्कारी कारण लिए, बाल्यकाल से ही आपके विचार ध्यान, धम पुण्य के प्रति विशेष सजग बन गय। व्रत उपवास, पूजा पाठ एव हरिस्मरण हतु हर समय आस्थावान रहने सती आपका जीवन वास्तव म श्रीराम भगवान की ओर अधिक उ मुख एव गतिवान बन गया। आपका विवाह (स० 1978 वशाख सुदी 3 को) इग्यारह वष की लघुवय मे गाव कालू के प्रमुख सेठ श्री फूसारामजी झवर क तृतीय आत्मज श्री तुलसीरामजी के साथ क्षेत्रीयोत्साह सहित सम्प न हुआ। साढे चार वष बाद स० 1982 माह बदी 5 के दिन आपके एक पुत्र रत्न उत्प न हुआ, जो आगे चलकर श्री मोहन लाल नाम से वनराजा की तरह सहसा मे मन राजा बना है। वह स्वय श्रम साधना स सफल व्यवसायी, कुशल उद्योगपति विशद विचारक एव उदात्त समाजसेवी पुरुष है। उसकी गौ सेवा तथा मातृ सेवा भावना अति प्रबल एव अनुकरणीय है।



सुखीदेवी झवर

सचमुच झवर परिवार मे श्रीमती सुखी देवीजी ने निश्चित सौभाग्य के मूल्य पर उदारता अजित की है। आपको सुख पूर्णा देवी कहा जाता है कि कोई अत्युक्ति नही है। आप शाति व प्रकृति की कामलता का उज्ज्वल उदाहरण, त्याग तथा सेवा की

प्रति मूर्ति, पवित्रता की प्रतिमा और आदर स्नेह एवं वात्सल्य प्रेम की जीवित प्रतीक हैं। सं० 2032 के चैत्र शुक्ल पक्षीय 1 को आपके पति श्री तुलसीरामजी का शरीर शान्त हुआ, तब से आप मौन एवं मालाधीन अधिक रहने लगी हैं। जहां कहीं कोई धार्मिक आयोजन सामाजिक प्रश्न शैक्षिक संग्रह अथवा सत्साहित्य सृजन आपकी नजर चढ़ जाता है तो अपने मौलिक मन से दत्त चित्त होकर अवश्य उसमें आर्थिक भाग लेती हैं।

समदर सी गम्भीरता, पावण गंगा नीर।
बरसा ज्यों सुख बरसणी, मेर जिसा मन धीर॥

सज्जन परिवार—सेठ बद्रीदास के पुत्र रघुनाथ दास जी (वि० सं० 1925 81) सरल-स्वभाव के सज्जन, मिलनसार तथा धर्मात्मा व्यक्तियों में अग्रणीय थे। सामाजिक कार्यों में भाग लेने की बड़ी इच्छा रखते और पवित्र चतुर भी बहुत थे। अपने पिता के चतुर्थ पुत्र (सबसे छोटे) होने के कारण सेवा और आदर सम्मान के महत्व का स्वानुभव से समझते थे। गांव में सभी सार्वजनिक कार्यों में आपका पूर्ण सहयोग रहता। अभिमान तो आपको छू तक नहीं गया क्योंकि आपकी नीति परम्परा "नागौर राठी" अभिन्न मानी गई है।

श्री रघुनाथ दास का प्रथम वंश वास यद्यपि बीकानेर में सम्बद्ध है तथापि कालू से पहले वि०सं० 1800 में इस परिवार का पूर्वज दीपचन्द राठी गुसाईंसर (तेजरासर के पास) में निवासित था। दीपचन्द का पुत्र अमरचन्द और पौत्र श्रीकिशन हुआ। श्री किशन का विवाह मडदा गौत्र के यहां गांव बिग्गा में हुआ था। उसका लड़का देव चन्द गौव आडसर बाहेतियों के ब्याहा गया। यह कालू का प्रथम महाजन बगार क्षेत्र के बमोरी स्थान पर रुई आदि का व्यापार करता था। इसके आत्मज श्री बद्रीदास की पंजाब में कारबारिक साख थी। बद्रीदास प्रख्यात, शांत तथा विनयशील हुए। राठी परिवार की कीर्ति-वृद्धि में आपकी धर्मपत्नी ने भी पूरा हाथ बटाया था। उनने गोदारोंके बास वाले भगवानजी के मन्दिर पूजाकारी लाल दाड़ी के व्यंग पर पचायत वाले मन्दिर को बनवाकर गांव कालू की तत्कालीन जनता को परमेश्वर के दर्शन लाभ सुलभ करवाये थे। आपकी कोख से चार पुत्र—गंगाजळ शिवलाल, राजाराम रघुनाथ दास हुये। बद्रीदास की एक बहिन सजाबाई बगला फाजिल्का के पेडीवाल परिवार में ब्याही हुई थी। सैंजाबाई स्वभाव से सौम्य, हृदय से ईश्वर भक्त और व्यवहार से स्नेह मयी थी। वह जब कभी भी अपने पीहर के गांव कालू में आती, उसका रिकॉर्ड रहा, ब्रह्मपुरी (ब्रह्मभोज) किए बिना वापिस ससुराल नहीं लौटती। वह अपने भाई बद्रीदास के पांच वर्ष के पोते गोवर्द्धन दास राठी को पढ़ाने हेतु अपने साथ ले गई। आगे जाकर गोवर्द्धन दास वहां (बगला फाजिल्का) का मानद मजिस्ट्रेट (Honeatry Majistrate) नियुक्त हुआ। गोवर्द्धन दास का गौव कालू वाला घर भानजे मोहन लाल बागडी को दिया गया है। क्योंकि उसके कोई सन्तान नहीं थी। सं० 1968 में उनकी मृत्यु हो गयी। गोवर्द्धन दास सदासुख और गणेश लाल ये तीनों भाई शिवलाल के बेटे थे। शिवलाल के बड़े भाई का नाम गंगाजळ था और छोटे भाई क्रम से राजाराम और रघुनाथ दास थे। राजाराम के मात्र एक पुत्र मूलचन्द हुआ। रघुनाथ दास के मोती च द लाल चन्द दो। स्व निःसन्तान रहने के बाद भी सदासुख के दुलीचन्द काशीराम और मूलचन्द

के कालूराम नाम का एक पुत्र है। इनके साझें का व्यापार पहले गाईबादा सादुलापुर नलडागा, रगपुर आदि मुकामा म रघुनाथ दास सदासुख के नाम स चलता था। रघुनाथ दास राठी का व्यावसायिक सीर (साझा) ताराच द आसाराम झवर (श्री डूगर गढ वाला) क साथ दीनहट्टा और सादुलापुर म था।

श्री रघुनाथ दास बडे उदारमना व्यक्ति थ। म० 1968 म रघुनाथ दास न अपनी दो पुत्रिया के विवाह गाव गारबदसर के बागडी एव बाहेती गोडत्रा म बडी धूम-धाम से किए। तत्कालीन आस पास के बहुत से सम्मानीय ठाकुर उमराव बरात म आय। राव बहादुर महाजन राजा भी इस विवाह क मौके म सम्मिलित हुए थे। तीसरा लडकी की शादी श्री डूगर गढ, चादसर वाले झवरो के यहाँ की। सात दिना तक बरात रही और उनके द्वारा गाँव कालू मे बडी जीमनवार के बाद कागजो के फूला की वाग वाडियाँ लुटाई गई था। रघुनाथ दास न 56 वप की अवस्था मे अपने पुत्र द्वय मोतीच द (ज म 1952) लाल च द (ज म 1959) को पीछे छोडकर आकस्मिक अवस्था मे शरीर छाड दिया। आगे जाकर इनके पुत्र श्री लाल च द पिता जसे ही सेवाभावी निकले। उना अपने पिता क पीछे सारे गाव को शहर सारिणी (महाभोज) करके धार्मिक वत्ति का बनाये रखा। आर्थिक दष्टि से निश्चित न होने के कारण उ होने नौकरी नही की। उनका जीवन, व्यापार के सिवाय समाज सेवा एव धार्मिक कार्यो म ही लगा रहा। मोतीच द और उनक कनिष्ठ सहोदर लालच द का परस्पर बडा मेल रहा। इनने अपने विशिष्ट गुणा के कारण यथष्ठ धम लाभ कर स्वर्गीय पुरखाओ का गौरव बढाया है। इनके पारिवारिक भाग्य म करोडपति बन जान के योग तो नही आये पर फिर भी लगभग एक शताब्दी तक कालू गाव की बहुविध धार्मिक तथा सामाजिक गति विधियो पर इस परिवार का नाम छाया रहा है।

ईश्वर कृपाय धन सम्पत्ति मिल जाया करती है बहुत से लोगा को, किन्तु उसके साथ ज्ञान, सुमत्ति, सदाचरण सत विचार आध्यात्मिक भावना एव परमाथ वत्ति जसे आदश गुण ता उत्तम जनो का ही मिलते है। स्वनाम ध य श्री लालच द एक और जहाँ उच्च विचारा के धनी बने, वहा धमवीर और अध्यात्मवादी भी! परमाथ इनके जीवन मे पूण रूप स समाया हुआ है। इसलिए मोती च द लाल च द फाम का ध्यान अहर्निश सेवा हिताय कार्या म लगा रहता है। गउआ का घास डलवाना पक्षियो को चुगा चुगाना तथा असहाय जन की सहायता आदि काय ता इनकी दिन चर्या के प्रमुख प्रतीक है। इन धार्मिक कृत्या के साथ साथ आप व्रत अनुष्ठान तथा यनादि कार्यो म भी पूण दिलचस्पी लेते रह हैं। दोनों भाइयो ने छुट पुट रूप से अनेक लोकोपयोगी काय सम्पन्न करवा कर अपनी राठी परिवार की परपरित कीर्ति को उज्ज्वल बनाया है।

श्री मोती च द के एक पुत्र स्व० लक्ष्मीनारायण था। दीर्घायु न होने के कारण वह अपने माता पिता और समस्त परिवार पर दु ख का पहाड गिराकर स० 1990 मे इस ससार स चल बसा। इस दु ख ने मोतीच द का धम ध्यान मन एव अधिक ईश्वरो मुख बना दिया। पुत्र वियोग का असह्य जानकर उ होने अपने अनुज लालच द के पुत्र न दलाल को गोद ले लिया। आरम्भ तथा सेवा भावी परिवार क नाते श्री मोती च द ने नदलाल को कलकत्ता विश्व विद्यालय स सन् 1961 मे B Com करवाकर कुल परम्परा एव उच्च प्रतिष्ठा के अनुकूल बडे गौरव उत्साह स उसका विवाह किया। श्री मोतीच द अपना कारोबार अपने और अपन भाई के सुयोग्य एव व्यवहार विद बेटो—जेठमल, न द

साल पर छोडकर स्वग सिधार गये। उनसे सात वष छोटे लघु भ्राता लालचन्द हैं। श्री लालचन्द बडे श्रद्धालु ईश्वर भक्त हैं। अहर्निश धार्मिक ग्रन्थ अनुशीलन एव श्री विष्णु चर्चा करते रहना ही आपकी दिनचर्या है। लब्ध प्रतिष्ठ परिवार म जन्म लेन एव उपकार भावना के वातावरण म लालन पालन होन के कारण सेवा भक्ति आपका पतृक परम्परा म मिली है। आपकी शिक्षा मोडिया अक्षर ज्ञान वाणिकादि घर पर और हिन्दी अग्रेजी स० 1973 74 मे लेखा पद्धति लीलावती के प्रकाड विद्वान प० गुरुदत्तजी के चरणो म बैठकर हुई। सन 1947 मे भारत को स्वाधीनता मिलने का सौभाग्य दिवस आया, तब बगाल स्थल पर जबरदस्त आघात हुआ। पूर्वी पाकिस्तान क नाम से पूर्वी बगाल का सम्पूण हिस्सा बग भूमि से छीन लिया गया। उस समय राठी परिवार के साथ कालू के बहुत स माहेश्वरी प्रवासियों को स्वाधीनता का वरदान अभिशाप बनकर मिला। सारे लोग लुट गय। तब श्री लालचन्द द्वारा स0 2004 स 132 कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता म अपनी गद्दी निश्चित स्थित है। पर आप अब घर रहकर गीता तथा विष्णु सहस्र नाम के पाठ करत ह और अपन पास पहुँच जान वाला को सब तरह से सहारा देते हैं। कलकत्ता हो चाहे कालू गाव के जन सामान्य सावजनिक कार्यो मे सदव आपस सहायता लेकर समस्या सुलझवाते हैं। आप उनकी समस्या सुलझवाने मे कोई कसर नहीं उठा रखते। सवत 2009 मे गाँव नाथूसर के बारहठ कूए की समस्या को लेकर पहुँचे। आपन उनको अपना पूण सहयोग दिया।

जाहडी पर कुआ बना, पानी मीठा मिला और स० 2011 म उसक पास नाथूसर ग्राम बस गया। कूए की पूणता हेतु राजकीय रकम व्यवस्था श्री जेठमल द्वारा हुई थी। सवत 2009 म श्री लालचन्द जी यहा के बहुत से वृद्ध-वृद्धाओ के सघ को लेकर बद्रीधाम के दशनाथ गये। तीथ यात्रा म इनकी आत्मिक स्फूर्ति सदैव विशिष्ट कोटि की रही और हार्दिक सेवा भावना के साथ अपन सुखानद का बिल्कुल विस्मरण करके अनेक साधारण जन को ये सफल धम लाभ करवा लाय। प्रभु विश्वास और कर्त्तव्य परायणता क लिए इस क्षेत्र मे आपका उज्ज्वल नाम है।

श्री लालचन्दजी के एक भानजे श्री शकरलाल बाहेती इनके प्रधान सलाहकार सौम्य एव गम्भीर विचारक हैं। य व्यावसायिक क्षेत्र प्रतिष्ठित कलकत्ता जसे नगर में धार्मिक तथा सेवाभावी कार्यों म निरन्तर भाग लेत रहत हैं।

पाकिस्तान छूट जान के पश्चात् राठी परिवार का कारोबार प्राय बरिया क्षेत्र मे कायम का रहा है। वतमान मे ये बरौनी (बिहार) के स्थान मे एलोपेथिक, सूचिवेध[1] (इजेक्शनो) के लिए ग्लूकोज की बोतलें बनाने का कारखाना चलाते हैं। उक्त कारखाना मे दनिक तीन हजार के करीब बोतलें बनती हैं तथा साथ मे अन्य औषधियो का उत्पादन भी होता है। गोहाटी, भटिण्डा और जयपुर म भी इसदवाका काम है। लालचद के द्वय सुत जेठमल नदलाल व्यावहारिक कायकर्त्ता हैं। गाव कालू के पचासों व्यक्ति इनके उद्योग सस्थान मे काम करते हैं।

यद्यपि इस परिवार का मूल रूप से सज्जन पुरुष दीपचन्द था, परन्तु यह घराना श्री बद्रीदास राठी क सुपुत्रों (गगाजल, शिवलाल, राजाराम और रघुनाथ दास) के समय म अधिक प्रख्यात हुआ है। श्री दीपचद (स० 1805) से लेकर अब तक इस

---

1 सूइ, जिसकी सहायता से मनुष्य के शरीर म दवा का प्रवेश करवाया जाता है। (व्रत भपण)

परिवार की नवम पीढ़ी (पुश्त) है और यह गाव कालू तथा उसके पास वाले गावो में "सात पीढ़िया सज्जन घराना" कहलाता है।

नाहटा कोठारी—काल का नाहटा परिवार गाव राजपुरे (सारडे के पास) से आया हुआ है। केसरीचद, आसकरन, तिलोकचद, डूगरसीदास, घमडीराम जेतमल और गुलाबचद प्रभति सात भाइया की सताना के कुटब वि० स० 1944 में कालू आकर निवासित हुए थे। इससे पहले सब भ्रातगण सयुक्त परिवार में सम्मिलित थे। कि तु कालू आकर बसे तब पथक पथक ढग से प्रतिष्ठित एव प्रवेशित हुए। अब इस परिवार में अनक व्यक्ति और घर हैं, जो अपने पूर्वज श्री सवाईसिंह नाहटा के वशज कहलाते हैं।

इस वश के बडे भाई श्री केसरीचन्द के यहाँ फतेचद और चतुभु ज नाम के दो लडके थे। चतुभु ज के चादमल और लालचन्द दो पुत्र हुए तथा फतेचन्द के चुनीलाल और लिखमीचन्द। आगे चलकर चुनीलाल के एक सूनकरन और लिखमीच द के आठ पुत्र हुए हैं। लिखमीचन्द के द्वितीय पुत्र स्व० श्री चम्पालाल, चतुभु ज के आत्मज लालचद के गोद चले गये। अब श्री लालचन्द के दत्तक पुत्र चम्पालाल का परिवार और लिखमीचन्द का परिवार दोनों आपस में बडे प्रेम से रहते हैं तथा राजमल इनमें ज्येष्ठ कार्यकर्त्ता व सज्जन व्यक्ति हैं।

द्वितीय भ्राता श्री आसकरण के रामलाल, शभूराम और बींजराज नाम के तीन पुत्र थे। श्री रामलाल नि सतान गये और शभूराम के मगलचन्द एव प्रतापमल दो पुत्र थे। शभूराम के पौत्र मनोपचन्द का परिवार सवृद्धि है परन्तु प्रतापमल का वश नही है। आसकरण के तीसरे पुत्र श्री बींजराज के सुगनचन्द, बनेचन्द और पदमचन्द नाम के तीन पुत्र हुए। श्री सुगनचन्द के लाधूराम रूपचन्द भीखमचन्द, मानिकचन्द नाम के चार पुत्र थे। अब वे चारो ही इस ससार मे नहीं रहे। मगर उनके उज्ज्वल व्यवहार और उदात्त भावनाओ के कारण ग्राम मे उनके नाम बहुत प्रसिद्ध हैं। श्री बनेच द का बडा लडका बुधमल भी बडा व्यवसायी था अब इहलोक में नही है। सुगनचन्द के द्वितीय आत्मज श्री रूपचद का परिवार सुसम्पन्न एव अग्रगण्य है।

सवाईसिंह के तीसरे बेटे तिलोकचन्द का वश नही चला, पर चौथे डूगरसिंहदास के पाँच पुत्र थे। उन पाचो मे से तीन तो नि स तान गये कि तु खुमाणचन्द और चुनीलाल नामक दो भाइयो के क्रमश जुहारमल पनेचन्द तथा बालचन्द के भरे पूरे परिवार बसते हैं। इन भाइयो की पक्ति में पाँचवाँ भाई घमडीराम कुशल व्यवसायी था। उसके दो बेटे कालूराम और गणेशमल थे। कालूराम का वश नही चला परन्तु गणेशमल के तोलाराम, टीकमचन्द और पूनमचन्द नाम के तीन पुत्र हुए। तोलाराम का सम्पन्न व नामी परिवार कालू में निवासित है, पर टीकमचन्द, पूनमचन्द के वशज श्री डूगरगढ में बसते हैं।

षष्ठम भ्राता जेतमल नाहटा के चेतनराम, मघराज नाम के दो लडके हुए, पर आगे वश नहीं चला। सप्तम भ्राता श्री गुलाबचन्द के भी हजारीमल सरदारमल दो लडके थे और हजारीमल के जेठमल जन्मा फिर वश वृद्धि बद रही।

गाव कालू में कोठारी वश सदा से मुख्य माना जाता रहा है। श्री भरूदान, जीतमल कोठारी नाम का काम प्राचीन समय से ही जनता के हित मे रहता आया है।

उसका देश (कालू) में भी व्यापार चलता था। वे विवाह शादी, लोमर मासर और मौके-बेमौके लोगों को अनाज, रुपये आदि दिया करते थे। उधर भैरूदान कोठारी के भूवा का बेटा भाई बीचराज नाहटा भी (समय का चतुर व्यक्ति) राजपुरे मे रहता हुआ अपना थोडा बहुत कारबार किया करता। कालू में ममेरे भाई श्री भैरूदान न बीचराज नाहटा को अपने साथ व्यापार करन के लिए बुलवा लिया। बीचराज क पीछे उसका सारा परिवार ही कालू मे आकर बस गया।

श्री बीझराज का कालू गाव, आते ही बडा लाभदायक सिद्ध हुआ। उसी साल उसके पुत्र सुगनचन्द का जन्म (1944) हुआ और भैरूदान बीचराज के नाम से सम्मिलित दुकान का श्रीगणेश भी हो गया। कालू म इनकी दुकान अच्छी चली। य गल्ला, कपडा और बिसायत का बहुत सारा सामान रखते थे। उस समय विवाह शादी की मोळी, महदी, खारक, खापरे आदि चीजें उनके यहा कालू म ही मिल जाया करती थी। ये शहरी सामान भी रखत थ और बीकानेर का माल सीधा कतार बध ऊंटो स आया करता था।

कालू के श्री भरूदान काठारी (जन्म 1912 देहावसान 1966) फक्त 54 वष जीवित रह। वे बडे अच्छे स्वभाव के सज्जन पुरुष थे। आपको गाव के कार्यों का पूण करन म बडी रुचि रहती थी। गांव के हरक व्यक्ति के साथ आपकी मैत्री थी। गाव के गणमान्य सेठ श्री फूमाराम चवर के साथ आपका धर्मेला (धम के भाई) बना हुआ था। गाव म लोकोपकारी कार्यों म आप दाना की प्राय सलाह हाली रहती थी। स० 1955 के पास कालू के ठाकुर श्री मेघसिंह न गाव के किसाना पर एक नया लगान लगा दिया। तब भैरूदान काठारी न गाव के लोगा की इच्छा मुजब आगे होकर लगान देने से इन्कार करवा दिया। इस पर ठाकुर काठारी पर बडा नाराज हुआ और अपना भारी जोर दिखाया। तब श्री भरूदान काठारी ने चौधरी नदाराम जाणी का साथ लेकर एक रात मे घर घर जाकर सारा गाव खाली करवा दिया। लोग अपन हितैषी के कहन पर तत्काल सारा माल-असबाब धनपशु लेकर अपन अपन रिश्ते नाते वाले अन्य गांवा म चले गये। श्री भरूदान न गाव कालू खाली हो जाने की शिकायत बीकानेर महाराजा को पेश कर दी। महाराजा बीकानेर न गाव कालू को ठाकुर मेघसिंह से उतार (छीन) कर खालसे म ले लिया, तब वे सारे किसान लोग वापिस कालू आये। ठाकुर मेघसिंह ने भैरूदान से माफी भी मागी, मगर—"फिर पछताये होत क्या" वाली कहावत शेष रही।

परन्तु हत, श्री भरूदान का बडा लडका लूनकरन (जन्म 1936 मृत्यु 1963) छोटी उमर म पिता के सामन ही ससार छोड गया। अत एव भरूदान बहुत अस्वस्थ हो गया। श्री लूनकरन बडे रोब दाब वाले व्यक्ति व्यवसायिक क्षेत्र मे यथेष्ठ सफल व्यापारी थे। दिसावर की सारी दुकानें भी श्री लूनकरण ही सँभालते थे। वहाँ फाम का नाम बीचराज लूनकरन चलता था। लूनकरन जमाने का सभ्य और शौकीन व्यक्ति था। पाट मी लाख के घाटे तक गया कि घराने को ठेस लग गई। लूनकरन अपन पीछे एक छोटे शिशु मगतमल (जन्म 1959) का छोडकर भगवान का प्यारा बने। तब श्री भैरूदान कोठारी पर भारी विपत्ति आ पडी। इनका छोटा लडका श्री तोलाचन्द व्यापारिक काम म कतई होशियार नही था। जगल के बाघ की भांति गाव रूखवाला म

बहादुर रहने वाले श्री भरूदान अब बिल्कुल कमजार हो गये। आस पास के गावो से दुकान पर पेशगी स्वरूप मतीरो काकडियो से भरे ऊँट आया करते थे। तब भाई बीझराज नाहटा आधे फल भेरूदान जी के घर भिजवाते। मगर उन ने तो पुत्र शोक मे सब कुछ छोड रखा था। वे केवल अपने पौत्र मगतमल का पन्ाने निभाने की चि ता चर्चा ही किया करते थे।

कालू में इस फम (भरूदान बीयराज) का कारोबार बराबर बीस वर्षों तक साथ चला और य दोनो भाई लाखा की मम्पत्ति के मालिक बन गय। दिसाव~ म बीयराज लूनकरन फम के नाम से फारबिस गज कसूमाहाट आदि स्थाना म इनकी दुकानें थी। स० 1962 63 मे दोनो भाई, भरूदान बीयराज अलग हुए। तब 96×96 हजार रु नक्द एकूक की पाती (हिस्से) म आय थे तथा भरूदान लूनकरन और सुगनचन्द बन चद नाम के पृथक पृथक दो फाम बने थे। श्री लूनकरन के आत्मज श्री मगतमल काठारी होशियार बुद्धिमान एव चौकस चतुर। बाल्यावस्था से ही अपना जीवन सभ्य एव सुधारवान बना लिया। समाज म तथा परिवार मे शिक्षा की सुव्यवस्था करना और पुरातन प्रथा का पूण त्याग कर देना श्री मगतमल ने अपन जावन म मुख्य माना है। आपका सारा परिवार पाय सुशिक्षित है। आपको पुत्रिया और दामाद भा इसी श्रेणी के मिले हैं। आपका 50 वर्षो से सीधा नवयुग से सम्पक रहा है। शिक्षा और सुधार के कार्यों म भी आप सोत्साह भाग लेते रह हैं। पर्दा प्रथा और दहज प्रथा मे आपका बिल्कुल विश्वास नही है। औसवाल समाज के धार्मिक सगठन म आपकी यथेष्ठ दिलचस्पी है। गाव के धार्मिक राष्ट्रीय, सामाजिक तथा सास्कृतिक कार्यों म आप अनिमन्त्रित भाव से सतत सम्मिलित होत रहते हैं। आपके श्रीचद वगरह चारा पुत्र भी आपकी ही नीति पर चलन वाले हुए हैं। कालू के कोठारी परिवार म आपका कुटुम्ब भी युग शोभा अग्रणी होकर चलता है इसलिए नाहटा काठारिया का माहल्ला मान्य ढाई बिगा वास कहलाता है।

तपस्या प्रिय श्रीमती तीजा देवी कोठारी—आप कस्बा कालू म तरा पथी सभा, महिला मंडल अणु व्रत समिति आदि अनेक धार्मिक सामाजिक एव सास्कृतिक सस्थाओ की एक विशिष्ट कोटि की सदस्या हैं। उक्त सस्थाओ की उन्नति हेतु आप अहर्निश लग्नशील रहती हैं। प्रतिक्रमण व दना चचा तथा पच्चीस बोल बाल्यावस्था से आपको कठस्थ हैं। महिला मडल का प्रगत करन के लिए आप उत्तरोत्तर सम्पूण तत्पर रहती ह। कालू म आप उस समय से नि सकोच पर्दा (घूघट) विहिन महिला हैं, जब कि अ य सौभाग्यवती महिलाएँ काफी हिचकिचाया करती था।



श्रीमती तीजा देवी कोठारी

श्रीमती तीजा देवी की तपस्या परम्परा बडी विस्तृत है। आप द्वारा किये गए 'एकान्तर तप' के तीन वर्षों की सानद परिसम्पन्नतावसर पर हँसराज बच्छराज ने "दैनिक उपासना" की

परिचय पुस्तिका प्रकाशित करवाकर वितरण की सुव्यवस्था की थी। (उक्त तप छः साल से सतत चलता है।) उसमें आपकी समस्त तपस्याओं का पूरा विवरण है तथा अनेक सूत्र, वंदना, सामयिक पाठ, स्तवन गीत एवं अनुपूर्वी पाठय विधियां लिखी हुई हैं। आप तपस्यारत रहते हुए भी गृह काम हेतु हार्दिक सजगता के साथ सुख वृद्धि करने में अटूट विश्वास और दुख से अविचलित रहने की शक्ति रखती हैं। समाज को आप जैसी त्यागमयी व कमठ महिलाओं की अत्यन्त आवश्यकता तथा आशा रहती है।

अतिथि सत्कारी—नाहटा वंश के अनेक परिवारों में से एक घराना गांव कालू के लिए माना एवं सदी से सुव्यवहारकर्ता, उदात्त एवं सेवाभावी परम्परायुक्त रहता आया है। यह घराना है—आसकरण नाहटा के सुपुत्र श्री बीजराज और पौत्र श्री सुगनचन्द नाहटा (फर्म बीजराज सुगनचन्द) जिनकी सेठाई (उदारता) की ख्याति गांव कालू के आस पास प्रायः धार्मिक कथाओं की भांति अपने समय में पूर्ण प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी थी। बीकानेर के महाराजा गंगासिंह जी के शासनकाल में इस परिवार का राज्य में सम्पर्क था। इन्हें सरकार से छड़ी मिली हुई थी।

ई० 1931 के लगभग नेपाल के सुप्रसिद्ध देशभक्त कोइराला बन्धुओं के पिता श्री कृष्णचन्द्र ज्यू सरदार पहले पहल गांव कालू में सेठ सुगनचन्द नाहटा के घर आकर सपरिवार स्थान प्राप्त कर सके थे। इन पर नेपाल राज्य की दृष्टि क्रूर हो गई थी। तब इन्होंने अज्ञात वास की अवधि कालू के उक्त परिवार में अतिथि बनकर व्यतीत की थी। आगे जाकर मातृका प्रसाद कोइराला व बी पी कोइराला बगैर नेपाल के क्रमशः प्रधान मंत्री बने किन्तु वे बीकानेर राज्य के इस कालू गांव को कदापि नहीं भूल सके।

नेपाल के भू०पू० प्रधान मंत्री श्री मातृका प्रसाद कोइराला ने वहाँ की स्मारिका लिखी, उसके व्यवसायिक प्रसंग में कालू के इस नाहटा परिवार का प्रथम बताया है। तत्परिवार सुपुत्र श्री लाधूराम नाहटा मोरंग मर्चेन्ट एसोसियेशन के अध्यक्ष भी रहे और इसलिए श्री सुगनचन्द जी के एक पौत्र विजयसिंह आज भी नेपाल का नागरिक आदेशित (1982) है।

धनार्जन के लिए इस वंश में श्री बीजराज नाहटा का नाम मुख्य तौर से लिया जा रहा है जो अपने जमाने में लखपति बने। इन्होंने द्रव्य कमाने की कामना से कालू गांव से बाहर पूर्व की भी यात्रा की थी। फारबिस गंज, वसूमाहाट और विराट नगर में इन्होंने अपनी दुकानें खोली थी।

सं० 1971 में श्री बीजराज नाहटा का देहावसान हुआ। तब इनके पुत्रों ने सारा कारबार संभाला जो क्रमशः श्री सुगनचंद बनेचंद एवं पदमचंद नाम से कार्यकर्ता थे। आगे जाकर वि० सं० 1985 तक बीजराज बनेचंद फर्म के नाम से आर्मेनियन स्ट्रीट कलकत्ता में इनकी गद्दी भी रही और सं० 1974 तक देश का तथा 1984 तक परदेश का सब कार्य व्यापार दोनों भाइयों का साथ गतिशील रहा। श्री सुगनचंद (जन्म वि० सं० 1944 तथा मृत्यु सं० 2007) बड़े दिलदार सेवाभावी एवं ग्राम में आने वाले अतिथियों की आत्मिक आवभगत करने वाले वास्तविक सेठ थे। ये उक्त कार्य के लिए अपने धन को व्यय करते हुए मन को बहुत उच्च स्तर तक ले गये। बढ़त बढ़न सम्पति सलिल, उर सरोज बढि जाय—वे जल कमल की तरह संसार में रहे एवं अपने परिवार,

समाज तथा गाव के सावजनिक कार्यों म दिल खोलकर द्रव्य खच किया। विवाह-शादियो के दिनो मे हरिजन वग के लागा तक का अपने घर का वस्तुए देन की फरमाइशें अपने आप टहल घूमकर कर दिया करत थ। बिना भेदभाव के आदरपूवक भाईजी के सम्बाधन से बुलाकर या रास्ते चलत का ठहरा कर बान बनोरे के रुपये देते हुए पूछ लिया करते कि—"थार विवाह कद रा है ?" निश्चित तिथि बतला दने पर सेठ श्री सुगनचद नाहटा अपनी हवेली की सारी चीजो की सूची उस व्यक्ति क समक्ष बयान कर दिया करते थे। वे कडाहे कडाई, तोई पातिये तिरपाल गस बतियाँ चूडी-बाजो, चादी के थाल कटोरियाँ, पीतल के चौमखी नूलिए तया चूल्हे परात, माँचे ढोलिए सिरख पथरने जाजम चादणी और चक्ले बलणो तक की ववाहिक उपयोग की वस्तुएँ पसद करवा करवा कर दिया करते। एसे कार्यों मे वे रुपये पसे के मामले मे भी कभी पीछे नही हटते। स्वय पूछताछकर बिना लेखा पढी करवाये ही मुनीम-गुमास्ता से रुपये दिलवा दिया करत थे। खाद्य सामग्री व अय वस्तुओ के लिए भी वे अपनी दुकान बता देते और कहते—"कोई चीज का फोडा (सकट) मत देखना।" ववाहिक और ओसर जस कार्यो मे व कभी लोभ लालच तथा अपने नुकशान का भय नही रखते।

कालू म दविक सवा, त्याग और प्रेम भाव की त्रिवेणी म स्नान कराने वाले सेठ श्री सुगनचद इस युग म 'जब लाग मागने पर भी अपनी चीजें अवसर पर नही देते हैं" याद आ ही जाते हैं। जसे उनका तकिया कलाम था— समझ्याक कोनी!' लोग आपस म ज्यादातर इकार करने वाले सेठ की हसी उडाते हैं—अरे वाह! सेठ समझ्याक नी।

आजकल धन धन, अपना पराया और वर ईर्ष्या म लगे हुए राक्षस वति के धनपति मानव प्रेम को क्या जान ? धम, भगवान और मानवता का तो नाम ही नहीं जानते। केवल अपने को जन सनातनी एव वष्णव बताते हुए नवयुगी कृपण एव बर भावना के ये भूत थाड दिन ससार म रहकर जल्दी अपना नाम नष्ट करके चले जाते हैं।

श्री सुगनचदजी नाहटा सच्चे जनी धर्मी मानव थ। व दिन मे तीन बार समाई (भगवान नाम स्मरण) किया करते थे। वे जन प्रभुओ के साथ अपनी जनता जनादन की स्थिति को भी स्मरण कर लिया करते थे। अपने घर के विवाहादि अवसरो पर किसी को नही भूलन। नूता, सिगरी नूतो थाला और बडी हाति आदि की भेंट द्वारा गाँव के सारे व्यक्तियो स अपनत्व की परम्परा बनाय रखते थे ? वे रास्ते चलत अपरिचित बटाऊ (राहगीर) को बुलाकर उसके ऊँट को चारा खिलाकर उसे अपनी हवेली म भोजन करवाते। भोजन भी ऐसा वसा नही, तुरत गर्मागम दो तीन सब्जी एव खाँड घी के साथ गद्दी पाटे सहित थाल लगाया जाता था। सेठानी लक्ष्मी रूप, भोजन के समय गेहूँ के चुपडे फुलको की जेट (रोटिया का ढेर) लगवाय रखती थी। घर के नौकर आदि जब इच्छा होती खाने बठ जाया करत थ। साधु सतो की सेवा और अतिथि सत्कार सेठ के जीवन का व्रत था। व नित्य प्रात साय सब अतिथि और आये गय तया हवली क अय लागा का भोजन करवाकर बचे खुचे शेष ठडे बेस्वादु भोजन स्वय करके ही दोनो (सेठ सेठानी) प्रसन्नचित्त रहा करते थे। आखिरी दिनो में कम आय और अधिक व्यय के कारण इधर उधर स व्यवस्था करते हुए भी सतो, मेहमानो और अफसरो का पातिया लगाना तो उनका पूणरूपण कायम रहा। गुराजी की गोचरी और सतो की भावना के लिए सेठ सतत साष्टाग विनयी बने रहते थे। जयपुर, जोधपुर

और बीकानेर आदि स्थानों को जाते, तब अनेक परिचित लोगों को अनुनय सहित भोजन करवाया करते। अतः श्री सुगनचंदजी का नाम कालू में ही नहीं दूर दूर तक फैल गया। किसी भी लड़ाई झगड़े या आपसी विवाद में लोग कह दिया करते थे कि— "देखा तेरे को बड़ा सुगनचंद नाहटा।" तथा 'देखो रे लखपति का बच्चा कालू का सेठ सुगनचंद बनकर बातें करता है।' तत्कालीन समय की लोक दृष्टि में सेठ सुगनचंद नाहटा ही दुनिया में सब प्रकार से आदर सम्मान करने के योग्य थे।

सेठ के घर हर समय घोड़ी बघी रहती, परन्तु वे ऊँट की सवारी श्रेष्ठ मानते थे। घर पर विभिन्न सब्जियां बनती, किन्तु वे मोठ का मोगर (धोवा दाल), सांगरी-केरिये का साग तथा छाछेनो करी ही पसंद किया करते थे। श्री सुगनचंदजी के साथ अनेक आदमी रहते और उनका खर्च भी उस समय हजार रुपयों से ऊपर चला जाया करता था। वे देशी जूते लंबा कोट, चोला तथा सफाचट करवाये हुए मस्तक पर गोल पगड़ी बांधा करते थे। उनकी जेब में वेस्ट एण्डवॉच घड़ी और हाथ की अंगुली में चांदी ताम्र की गंगा जमना अंगूठी हर वक्त रहती थी। नगरों की यात्रा मुसाफिरी में जाते तब साथ वाले लोगों के फोटो खिंचवा दिया करते परन्तु आपने कभी अपना फोटो नहीं करवाया। दूसरों को खेल-तमाशा देखने हींडा हींडने और शहर देखने बाबत पैसे देकर स्वयं बड़ी समाई ले लिया करते थे। सेठ सुगनचंद की धर्मपत्नी का देहावसान हो जाने के बाद द्वितीय विवाह हुआ। पहली पत्नी से एक पुत्र श्री लाधूराम हुए, जिन्होंने बड़ा गंभीर एवं महान जीवन व्यतीत किया। दूसरी पत्नी से तीन पुत्र एक पुत्री क्रमशः श्री रूपचंद—राजनिष्ठ सूझ बूझ के धनी भीखमचंद—बड़े लोकप्रिय एवं नगरसेठ, चांदूबाई मां की कोख उजागर और माणकचंद का जन्म हुआ। ये पांचों ही भाई-बहिन पोनडों के अमीर सज्जन और स्वनाम सेवाभावी हुए। महत्ता और सभ्यता की भावना अधिक मात्रा में पनप जाने के कारण उदारता की भावना का स्रोत सारे परिवार में प्रवाहित हो गया। उनके विवाह बड़े ठाट बाट से हुए। आज कहावत रूप में सुना जाता है—"श्री सुगनचंद नाहटा ने अपने पुत्रों के एक-एक विवाह में बनोरी का दस दस बोरी गुड़ गांव के लोगों को एक-एक रात में बटवा दिया था।" उनके ज्येष्ठ पुत्र की ऊँटों की बारात बारह कोस (कालू से आडसर) तक में पंक्तिबद्ध विस्तृत होकर चली थी। कोई भी व्यक्ति रास्ते में मिल गया, सेठ ने ससम्मान बारात में साथ मिला लिया। ऐसे-ऐसे अनेक उदारतापूर्ण एवं महान कार्य करते हुए सेठ सुगनचंद विमल यश पर्याप्त सम्मान और बड़ा परिवार छोड़कर सं० 2007 में शिवलोक वासी हो गये। उनके दाह स्थान पर स्मारक के रूप में एक बड़ा चबूतरा बना हुआ है।

सेठ श्री सुगनचंद के परिवार में आज अनेक पौत्र पढ़े लिखे नौजवान हैं। कई व्यापारी पदाधिकारी, योग्य कार्यकर्ता तथा अपनी वंश परम्परा के अनुसार सभी सभ्य व्यवहारी कहलाते हैं। गाँव के सार्वजनिक कार्यों में घराने का सदैव पूर्ण सहयोग रहता आया है। पर सेठ सुगनमल की सरस शब्द स्मृति गांव कालू में अभी गुंजायमान है। यह सं० 2007 के श्री ग्राम सेवा संघ कालू से निकलने वाले 'विकास" नाम के पत्र में प्रकाशित हुई थी।

सरस-शब्द-स्मृति

गया ग्राम में सूनो कर थे, रोटी घालण राम।
आगत री स्वागत कुण करसी? देसी कुण विश्राम?

वगत बटाऊ दुखडो करसा, गुण थांरा प्रयाण !
ऊँटडला नीरो नीं चरसी, भरियो रसो ठाण !!
इण गुण थांरी गादी खाली, कुण बठसो लाल ?
अठ किसो अधिकारी होसी ? काळू बड बेहाल !!
नगरी बिलखी, जनता बिलखी, कम्पा क्षण क्षण बीच !
क्रूर काल तत्काल ले गयो, निष्ठुर निरदै नीच !!
मान धरम मुरजादा भूल्या, विनै विचार निरास !
भगती सेवा बेहद छूटे, सत ठिकाण पास !!
अडी आतमा न थे दीज्यो, बठ सात सुख नाथ !!
अठ सान्त्वना कुटुम्ब्यां न, धीरज बळ रै साथ !!
म' मानां रो मान रियो नी, गयो गाँव रो रूप !
'समझ्याकोनी" शब्द स्मृति, रही सुगन मल भूप !!

(सुगनमल जी के स्वगवास पर हस्त लिखित विकास मे छपी)

समाज सेवी पुरुष—प्रत्यक बिरादरी मे धर्मात्मा, उदार और राष्ट्रप्रेमी जन मन ज म लेत आये हैं। परन्तु कालू के पारीक ब्राह्मणा की पुण्य प्रवति, त्याग-तपस्या, उच्च सयम सस्कारा के लिए विशेष आदरणीय मानी जाती है। गाव म सादगी श्रम मितव्ययता, पवित्रता, निव्यसनता और समाज हित की भावना का अधिक विकास पारीका के मोहल्ले से ही प्रसारित हुआ है। वसे ब्राह्मण सब, केवल धार्मिक एव पवित्रता पसद होते हैं, पर यहाँ के पारीक ब्राह्मण तो प्राचीन काल से निर्लोभी, स्पष्टतावादी एव श्रम सहिष्णु रहते आये हैं। यहाँ पारीको की तिवाडी, जोशी, बोहरा, व्यास, पंडिया, पुरोहित आदि अनेक उपजातियो मे गाव वाडेला (श्री डूगरगढ़) से आये हुए तिवाडी तो कालू के लिए महत्वपूण काम करन वाले उद्यमी नागरिक प्रख्यात है। जिन्होंन समय समय पर अपना तन मन धन देकर इस गाँव का गौरव बढाया है। इसलिए ख्याति प्राप्त करने वाले ऐसे घरानों मे विद्यमान समय मे श्री मूलाराम पारीक का नाम बडे आदर के साथ लिया जाता है।

कालू म पारीका का एक अपना अलग सुखानी वास कहलाता है। श्री सदाराम का सुखाराम यहाँ आकर बसा था। उसके साँवतराम, लालूराम, भागूराम आदि वशज हुए और इन्ही के वशधरो की चारा ऐलें (शाखाएँ) इस बास म निवासित है। श्रीमूलाराम के पडदादा नदराम के स्योजीराम और गगाराम दो लडके थे। स्योजीराम के मोतीलाल मघाराम और गगाराम के रामलाल दूलाराम हुए। पारीको के इस वास का वश विस्तार यही है।

करीब तीन शती पहल श्री मूलाराम का पुराना वश पडदादा, गाँव वाडेला से आकर कालू के वतमान पारीकान वास वाले स्थान पर बसा था। वह अपने साथ जाणी जाट, जो उसका यजमान था, को भी वाडेला से साथ लेकर आया था। वही जाणी कालू के वतमान जाणिया का पूवज था, जिसने अपने पारीक दादा (कुलगुरु) के साथ गाँव गरिमा सवद्धि म सतत सहयोग बनाये रखा। नये होने के नाते ये दोनों घराने सकडो वर्षों तक कटक आने के अवसर पर ग्राम बसाने के हित मे जूझते रहे तथा अन्य निवासियो को समझाते बुझाते हुए कूओ के किनारे बसते बसाते रहे। गुरु शिष्य परम्परा का

प्रेम सगठन अपनाने के कारण सयम, सरलता, ज्ञान, सुव्यवहार आदि के लिए राज-समाज में इन दोनो वशधरा का महत्वपूण स्थान बन गया था।

श्री नदराम तिवाडी का पुत्र स्योजीराम ईश्वर भक्त होन के साथ साथ व्यापारिक स्वभाव का व्यक्ति भी था। वह खेती, पशुपालन और लेन देन का धधा करता था। यद्यपि बीच बाजार मे बठकर दुकान नही की, तथापि विभि न लेन देन करत रहन के कारण सतान परम्परा म व्यापारिक बुद्धि प्रसार की शृ खला बन गई। इसलिए स्योजी राम के आत्मज मघाराम और उनके अनुज गगाराम के पुत्र दूलाराम के वशज वर्तमान समय मे भी कालू के सुप्रतिष्ठित कारबारी व्यक्ति कहलाते हैं।

श्री मघाराम के सुगनाराम, मूलाराम नाम क दो पुत्र हुए और दूलाराम क हरि राम तथा रूपराम, जो अपनी परपरित वृति से गाँव म आज भी दोनों परिवार आदश निष्ठा के साथ व्यापार रत हैं। इनके घरान कृषि काय म भी किसी से कम नही है।

श्री मूलाराम अपने पिता मघाराम क द्वितीय पुत्र है। आपका अत्यधिक जीवन गाँव की पच-पचायती तथा समाज सेवा म सलग्न रहा है। ब्राह्मणो मे अग्रणी होन के कारण स्पष्टवादिता के साथ कठोर वति म भी आप आदशमान रहे हैं। आधुनिक शिक्षितो की भाति मूलाराम जी ने विशिष्ट नान तो प्राप्त नही किया, कि तु अपन घरलू लेन देन के साथ सदा से बीच बाजार म दुकान करत आये हैं। स० 1996 तक सुगना राम मूलाराम फाम के नाम से एक दुकान चलती थी, जिसम रावन राम सूईवाले मुनीम रहते थे। अब वह फाम हनुमानराम शर्मा के नाम से चलता है। इनका पौत्र वशी लाल पारीक कलकत्ते के राजस्थानी समाज मे एक व्यापारिक नौजवान व्यक्ति है।

मूलाराम धार्मिक वति के व्यक्ति, इनके ज्येष्ठ भ्राता श्री सुगनाराम भी बडे सरल, विनयी दयालु और उदात भावना वाले थ। इ होंने अनेक धार्मिक कार्यों के अति-रिक्त लोकोपयोगी कार्यों मे भी सदव भाग लिया। मनुष्य समाज ही नही पशु पक्षियों के प्रति भी इनके हृदय मे उदार भावना बनी रही। श्री मूलाराम न अपन जीवन मे जब जब अकाल पडे, गायो के लिए घास का खूब प्रब ध किया। कबूतरा के चुग्गे की नियमित व्यवस्था तो सदीना आपकी दुकान से होती आई ह। एसे कार्यों क लिए श्री मूलाराम जी से काई भी व्यक्ति सहयोग ले सकता है।

कालू प्राय अकालवास ही कहलाता है। ऐसे कठिन समय म गावो मे पानी की स्थिति विकट हो जाया करती है, जिसे तत्रस्थ निवासी तथा इस क्षेत्र स सबधित लोग ही समझ सकते है। गाँव किसनासर राजपुरे के रास्ते वाले बाट राजपुरे नाम के खेत आपको सदा से प्यारे रहे हैं। उ ही खेतो म से लूनकरनसर गारबदेशर और कालू से किसनासर राजपुरे का चौरास्ता बनता है। वष में यहा हजारों व्यक्तियो का आवागमन हाता है। पहले इन राहगीरा को पानी के लिए बडी मुसीबत का सामना करना पडता था। श्री मूलाराम का कामल हृदय राहगीरो की इस मुसीबत से द्रवित हो गया और उनकी सुविधा हतु उ होन चौरास्ते पर एक प्याऊ बनवाने का निश्चय किया। स०2010 म गाँव से 9 मील दूर के स्थान पर बडा कुण्ड और एक कमरा बनवा दिया। गर्मी के दिना म हजारो यात्री इस प्याऊ से पानी पीते हुए आपका ध यवाद देते हैं।

श्री मूलाराम जी खादी की धोती, सफेद पगडी, गटटे कसकी अगरखी एव देशी जूते पहनत हुए परोपकारी जीवन जुडे हुए हैं। व 80 वर्षों की आयु में भी समाज सुधार

के कार्यों में नवयुवकों से किसी कदर कम नहीं दिखाई देते। राम स्नेही साधुओं की जमीरी की बाड टूट गई तो मूलाराम जी की चिंता बढ गई। जब तक शारीरिक कार्य में संलग्न रह सके बाड छपवाते रहे। गांव के बीच स्थानीय शिव मंदिर की कांटों की बाड भी उनको हर समय अखरती रहती थी। सज्जन ठहरते सत्संगत होती मूलारामजी बाड देखते तब उनके हृदय में बाड हटाने का सतत संकल्प उठ जाया करता था। आखिर एक बार उनकी दुकान में कालू के समस्त ब्राह्मण समाज की सामूहिक आई हुई अनेक विवाहों की भूर राशि (एक प्रकार की धार्मिक दक्षिणा जो चंवरी के समय ब्राह्मणों का एक साथ दी जाती है) बडे गांव के नाते हजारों की संख्या में एकत्रित हो गई। मूलारामजी ने प्रत्येक ब्राह्मण समाज के व्यक्ति को समझा बुझाकर अपने अपने हिस्से की राशि त्यागकर देने की सहमति ले ली और उससे नाथजी की गुफादि की मरम्मत व शिव मंदिर की चहारदिवारी बनवा दी गई। जगह का स्वरूप सुंदर बन गया।

इस प्रकार निरंतर परोपकार करने वाले श्री मूलाराम को केवल पारीक समाज ही नहीं, कालू के निकटवासीय गांवों के लोग भी धार्मिक पुरुष एवं समाज सेवक के रूप में जानते मानते हैं और आपके अनुभव, सेवाभाव तथा योग्यता से प्रभावित अन्यों के लिए कहते हैं—

> येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।
> ते मृत्युलोके भुवि भारभूता मनुष्य रूपेण मृगाश्चरंति ।।

सेवा प्रवृति और ग्राम प्रगति—कस्बा कालू में आजकल कुछ आदर्श प्रवृति वाले परिवार माने जाते हैं। किन्तु कहा जाता है कि विकास एवं पंच पंचायतों के कार्यों को करने की जैसी दिलचस्पी डूंगानी परिवार में है, वैसी अन्यत्र कहीं नहीं मिलती। गत शताब्दी में इनके पूर्वज गायाटूंडा के रहने वाले थे। वहां से वे प्रथम मन्शारशहर आकर रहने लगे और फिर गांव गारबदेसर के मावे संबंध वास से कालू आये। इनके पूर्व पुरुष श्री चेतनराम जो श्री दीपचंदजी के दादा कालू आकर निवासित हुए थे। श्री चेतनराम के दो पुत्र थे—श्री जीवणराम और छोगमल। श्री जीवणराम के श्री दीपचंद धनराज और शेरमल तीन पुत्र हुए तथा छोगमल के भी शोभाचंद दुलीचंद एवं आसकरण तीन पुत्र जो सब पढ लिखकर बंगाल में जाकर कारोबारी बने। परिवार वृद्धि हुई तब जीवणराम और छोगमल के पृथक पृथक दो गृहस्थ बस गये।

श्री दीपचंदजी डूंगानी का जन्म माघ सुदी 4 सं० 1953 में हुआ था। आपके पिता श्री जीवणरामजी एक प्रतिष्ठित नागरिक तथा व्यापारी, जो अपनी निर्भीकता, बुद्धिमता और आदर्श विचारों के लिए प्रसिद्ध थे। श्री जीवणराम ने अपने बड़े पुत्र श्री दीपचंद को तत्सामयिक प्रचलित परिपाटी के अनुसार काम चलाऊ पढाई लिखाई सिखाकर 9 वर्ष की अवस्था में ही दुकानदारी में लगा दिया था। श्री दीपचंदजी वि० सं० 1962 में कालू से 'दिवानतोला' नाम के स्थान पर दिसावर गये। संयोग की बात कि श्री दीपचंद को वहां एक तेजस्वी, विचारवान तथा उच्च व्यवसायी फार्म मिल गया। किन्तु चार वर्ष बाद सं० 1966 में ही इनके पिता श्री जीवणरामजी का स्वर्गवास हो गया। साहस रखा, घबराये नहीं क्योंकि श्री दीपचंद जन्म से ही कमठ, कुशल और लग्नशील रहे हैं। थोड़े समय बाद उस फार्म में पूर्ण मनोयोग और निष्ठा से कार्य आरम्भ

करके आप शीघ्र ही मुनीम के पद पर प्रतिष्ठित हो गये। फिर तो लाभ पर लाभ होते गये। तब श्री हनुतराम ताराचद (श्री डूगरगढ वाले) फर्म के मालिक ने एक मुनीम के नाते में आपका साझा रख दिया। इसके बाद तो आप उत्तरोत्तर उन्नति करते रहे और अपने पिता श्री जीवणरामजी के स्वभावानुसार ही उदार बन गये।

वि० स० 1975 मे श्री दीपचदजी की माता का देहावसान हो गया, जिस अवसर पर आपने अपने घर हार्दिक भावना के साथ गहरमारिणी (सारे गाव के लोगो को मृत्यु भोज देना) का आयोजन किया और ब्राह्मण वर्ग के लोगो को प्रत्येक व्यक्ति रुपया के हिसाब से दक्षिणा वितरित की। उस समय ठिकाने का पातिया करवाने पर 251 रुपये भेंट देना पडता था। श्री दीपचद ने अपने दिल से उक्त कार्य भी किया। जब से लेकर अब तक इनके घर जीमनवारिया एव मेहमानदारिया परम्परित रूप से होती रही हैं। पर कभी दुहरे (दुभात) वाले भोजन का आपके घर नाम तक नही आता। इनके अधिक धर्मेले ओसवालो मे होने के कारण वसी ही सुस्वादु खान पान प्रवृति का य पालते रहे हैं।

एक बार बीकानेर से श्री हीरालालजी नाजिम नहर के सिलसिले मे कालू मे राजकीय बॉड वितरित करने के लिए आये और गाव के मुखिया लोगो को ठिकाने के गढ मे सामूहिक रूप से बुलवाये। तब सारे ब्राह्मण सेठ साहूकार और चौधरी वगैरह इकट्ठे होकर अपना मुखिया श्री दीपचदजी को बनाकर नाजिम साहब के आगे पेश हुए। लोगो की इच्छा नहर बाबत चदा देने की थी बॉड लेने की नहीं। इस बात का स्पष्ट उत्तर श्री नाजिम को दीपचदजी ने दिया। उस पर नाजिम साहब नाराज होकर लौट गये। दूसरी बार वि० स० 1982 मे अन्य नाजिम के आने पर गाव के सब दने योग्य लोगो के एकत्रित रुपये 19000) अक्षरे रुपये उन्नीस हजार श्री दीपचद के हाथो से ही राजकीय नहर के बाबत दिये गये। तब ज्ञात हुआ कि यह कर्ज लिया गया है। इन रुपयो का राज्य से छः छः महीनो के बाद ब्याज मिलता रहा और तीन साल से पूरे रुपये भी मय-ब्याज के वापिस लौटा दिये गये। पर पहली बार गाव के लोग श्री दीपचदजी के साफ उत्तर से भयभीत हो गये थे। कुछ समय बाद श्री दीपचदजी ने जिला रगपुर के मुकाम महीगज मे अपना निजू कारबार स्थापित कर लिया था जो भारत विभाजन के समय तक समृद्धावस्था मे प्रगतिशील रहा। इनके पुत्र श्री कन्हैयालाल, केशरीचद का नाम भी वहाँ आदर्श कार्यों के लिए अच्छा जम गया था।

श्री दीपचद डूढाणी बहुत ही सीधे-सादे, मिलनसार स्पष्टभाषी और सार्वजनिक कार्यों मे अन्तःकरण के साथ भाग लेने वाले सज्जन है। आपके अनुज धनराज निःसतान परलोक गामी बन गये, मगर श्री शेरमल आपकी तरह ही शात तथा विनयशील हैं। डूढाणी परिवार की उत्तरोत्तर यशोवृद्धि मे श्री शेरमलजी अपने ज्येष्ठ भ्राता दीपचदजी से भी आगे बढते जा रहे हैं। गाव मे बडे बडे सार्वजनिक सस्थाओ के भवन बनवा कर कालू के निर्माण कार्यों मे श्री शेरमल पूर्णरूप से सहयोग कर रहे हैं।

श्री दीपचदजी डूढाणी का पुत्र स्व० श्री कन्हैयालाल गाव का प्रभावशाली व्यक्ति था। अन्य श्री केशरीचद, मदनलाल और गोपालचद तथा पौत्र शिवनारायण, जेठमल वगैरह सभी योग्य और गाव के विभिन्न सार्वजनिक कार्यों मे पूरा भाग लेने वाले हैं। पर श्री शेरमल डूढाणी के कोई पुत्र नहीं केवल एक पुत्री हुई, जिसका परिवार श्री शेरमल की वश वृद्धि व देखभाल सहयोग मे सलग्न हैं।

कालू के इस डूढाणी घराने का गाव के प्रति सदा से मानविक व्यवहार रहता आया है। इसी सद्व्यवहार और उदार प्रवृति के कारण श्री दीपचन्द के आत्मज गोपालचन्द को आज तक पाच बार कालू म सर्वोच्च सरपच होने का छत्तीस वर्षीय सम्मान प्राप्त है। तहसील के जन-सामान्य उसको क्षेत्रीय या ग्राम प्रधान मानकर पूर्ण विश्वास करते हैं। लेखक न 55 वष पहले गाव की बहुधा पचायता म देखा है कि श्री दीपचदजी को भी माहेश्वरी समाज का मुखिया मानकर गाव की किसी भी पचायती का काय आरभ किया जाता था। इस घराने की यह विलक्षणता रही है कि वे अपने पद और गौरव के अनुरूप ही काय करते हैं। इस समय धन और योग्यता के हिसाब से गाव म कई घराने उनसे आगे निकल गये हैं, परन्तु पचायत के इस काम म डूढाणी घराना ही सवप्रधान है। पच पचायती म इस घराने के व्यक्तियों का स्तम्भ रूप रहना परम्परित है।

अस्पताल के अभाव पर मानव करुणा से प्रेरित होकर श्री शेरमलजी न अनेक सस्था भवनो के साथ उक्त सस्था के लिए भी बडा भवन बनवा कर बेजोड काय किया है जो कालू म परिवार का नाम स्मरण दिलाने के लिए युग युगों तक विद्यमान रहेगा। इन सबके अतिरिक्त वि० स० 2024 मे एक कमरा श्री बद्रीनारायणजी के मदिर म और दूसरा स्वर्गाश्रम मे (गीता भवन के माफत) वि० स० 2029 मे आपने बनवाया है। अब आप दोनो भाइयों का जीवन वाणिज्य व्यवसाय के कार्यों से अवकाश प्राप्त तथा स्वाध्याय सेवा भाव और ईश्वर चिन्तन मे व्यतीत होता है जो इस युग म ऋषि तुल्य कहा जा सकता है।

बीकानेर जिले के भूखड म कस्बा कालू अति प्राचीन है। इसलिए वह उदारात्माओ, ज्ञान साधको सेवाभावी नागरिको तथा धम भीरू सदगृहस्थो से सतत भरा पूरा रहता आया है। चूकि डूढानी परिवार न केवल कालू, किन्तु आस पास के समस्त क्षेत्र के उपकार भावना वाले कार्यों म सलग्न रहा है। अत स्पष्ट है कि वह कालू की लोक व्यवस्था में विनम्र भावेन सेवारत एव भिन्न कोटि का परिवार माना जाता है। श्री शेरमल इस क्षेत्राकाश का सुधा कर रूप मानव है।

प्रबुद्ध युवक—छोटी ऊमर म अपनी विचित्र समृद्धि करन वाले श्री गणेशलाल राठी के आत्मज त्रय श्री रामचन्द्र, श्रीराम एव इद्रचन्द राठी कालू निवासी हैं। इनके पूवज स० 1955 अर्थात ईस्वी सन 1898 के आस पास गांव चौंदसर से कालू आकर बसे थे। इनके पिता श्री गणेशमल का विवाह श्री डूगरगढ के मूधडा परिवार म श्रीमती लिछमा देवी (जन्म वि०स० 1953) के साथ स० 1965 म हुआ था। विवाह के बाद श्रीमती लिछमा देवी अपने परिवार मे सामाजिक काय करने के लिए अथक परिश्रम के साथ तत्पर रही। वास्तव म इन्हीं सब कामा से इनका वतमान जीवन सुख सम्पन्न है।

श्रीमती लिछमा देवी इस समय 84 वष की आयु मे हैं। अत्यन्त मिलनसार एव सादगीपूण जीवन के साथ आप सदा से खुश रहती रही है। आपका सुपुत्र रामचन्द्र (जन्म स 1983 काती बदी 1) तीनो म बडा भाई है। मझला भाई श्रीराम (जन्म स० 1986 श्रावण) वर्षों से अलग कारोबारी है। इनका अनुज इद्रचद (जन्म स 1988 माह सुदी 6) व्यवसायिक क्षेत्र म गाँव का यथेष्ठ सफल व्यक्ति है। इनके दो बहनें भी हैं जो सभी भाइयो से बडी है।

स० 1992 चैत सुदी 14 को गणेशलाल जी का देहावसान हुआ, तब इन भाई-बहिनों की उम्र छोटी छोटी थी। इनकी माताजी के पास खेत बोजवाने और गायें रखने के सिवाय व्यापार आदि के अन्य काय नहीं थे बराबर हो गये। तब अपनी माताजी के साथ भाई बहिन खेत का काय करते, किन्तु सबसे छोटा भाई जो अब देस वर्षों से कचनपुर टी कम्पनी लि० का मनेजिंग डाईरेक्टर नियुक्त है। वह स्कूल की छुट्टी के दिन जंगल म घर के बछड़े बछड़ियाँ चरा कर लाया करता था। साथ म लकड़िया का तथा सेवण (घास) की भरौंटी लाने का भी कभी लाभ सवरण नही करता। परन्तु अपने परिवार म सम्पत्ति का सुन्दर वरदान लेकर ही इन तीन भाइयो का यहाँ जन्म हुआ था। इन भ्राताओ की अल्पावस्था मे ही इनके पूज्य पिता गणेशलाल जी का स्वगवास हो गया था। तब आपके बाबा श्री देवचन्द जी राठी न परिवार की पूरी देखभाल की। मझले भ्राता श्रीराम को देवचन्द जी ने गोद ले लिया और यथावत तीनों भाइयों को पढाते रहे। श्री देवचन्द की धार्मिक भावना बडी तीव्र थी और आचार व्यवहार पवित्र था। यद्यपि इस घराने के मूल पुरुष श्री गणेशलाल बडे अच्छे कारोबारी व्यक्ति थे। परन्तु उनके तीनों सुपुत्रों ने तो अपने कुशल व्यापार के कारण सुदूर पूव तक मे कालू के अपने नवयुवक राठी परिवार को प्रख्यात कर दिया है।

स० 1998 में बडा भाइ श्री रामचन्द्र 15 वष की आयु म बगाल गया और फिर स० 2004 म वह अपने बहनाई श्री तेजमाल बागडी के साथ श्री मदन मोहन राइस मिल भोटपटी म रहा। इसके बाद सिलीगुडी के प्रसिद्ध फम श्री रतीराम तनमुख राय के साझे में मिला। मझला भ्राता श्रीराम 'मदन मोहन राइस मिल' भोटपटी मे साझेदार हुआ और फिर वि०स० 2006 में इन्द्रचन्द जलपाईगुडी के शोभाचन्द फूसराज नाहटा चाय फाम मे कायकर्ता बन गया। इसके बाद श्री इन्द्रचन्द स० 2010 से कस्तूरी टी सिण्डीकेट मे 2016 तक मनेजर रहा। फिर ईस्वी सन् 1959 म इन्द्रचन्द ने हिन्दू टी ट्रेडस सिलीगुडी नाम से चाय की दुकान खोलकर अपना अलग कारोबार आरभ कर दिया और दिनादिन उन्नति करता रहा है।

चाय व्यवसाय में ध्यानमग्न होने के कारण नवयुवक राठी भया रामचन्द्र इन्द्रचन्द ने स० 2018 म गोल्डन टी सिण्डीकेट सगरिया स० 2019 मे गोल्डन टी सिण्डीकेट मडी डबवाली, स० 2020 म प्रदीप टी कम्पनी जयपुर और स० 2021 मे राठी ट्रेडिंग कपनी श्री गगानगर आदि नाम के फर्मों द्वारा अनेक स्थानो मे व्यापारिक कारोबार स्थापित किये। व्यवसायिक उन्नति होने के कारण इनकी धार्मिक एव उदार भावना को प्रोत्साहन मिला। जिससे इन्होंने अपने गाव कालू के सावजनिक निर्माण एव विकास कार्यों तथा धर्मार्थ कार्यों हेतु समय समय पर द्रव्य प्रदान किया है। वसे सावजनिक क्षेत्र म आजकल ये राठी दिखाई देन लगे हैं।

चाय व्यापार म उन्नति करने के लिए ई० सन 1971 जनवरी म श्री इन्द्रचद का कचनपुर के एक चाय बागान का ओर ध्यान आकर्षित हुआ। उसने दि० 4-11-71 को कचनपुर टी कम्पनी लि० के डाइरेक्टर पद का भार सभाला और मैनेजिंग डाइरेक्टर के रूप म प्रतिष्ठित होकर व्यवसायिक सगठनो मे भी सम्मान पाया। उक्त कम्पनी का 2515 ग्रोस एकड का चाय बागान आसाम सिलचर कच्छार म है और सारा कारोबार श्री रामचन्द्र इन्द्रचद राठी (भ्राता द्वय) के बराबर पक्ष में अधिकृत रूप स चलता है।

मझला भाई श्रीराम वि०स० 2006 से 2026 तक श्री मदन मोहन राइस मिल भोटपटी का साझेदार तथा मुख्य व्यवस्थापक बना रहा। इसके बाद वह सगरिया

(राजस्थान) म भारत इ इस्ट्रीज के नाम स राइस एव आयल मिल लगाकर अपना पृथक व्यवसाय करता है। इसने सरल जीवन, व्यापारिक ध्यान और अपना ही मान-स्वाभिमान, का स्तर बना लिया है।

फिर भी इस राठी परिवार की समृद्धि, प्रगति और सौभाग्य प्राप्ति का सारा श्रेय ज्येष्ठ भ्राता श्री रामचन्द्र की प्रतिमा तथा उदात्त भावना को है। यह लग्नशील, गंभीर एव कमठ कार्यकर्ता व्यक्ति है। इसके अध्यवसाय, विमल बुद्धि, कार्यकुशलता पारिवारिक प्रेम एव उज्ज्वल भावना के कारण ही परिवार की प्रसिद्ध समृद्धि है। इस समय तीनों भाइयो के अपने-अपने स्वतंत्र एव भव्य भवन हैं जो सब तरह से अभिनव तथा आरामदेह हैं। श्री रामचन्द्र, इद्रचन्द का बारबार प्रिय इद्रचन्द[1] राठी बड़ी योग्यता एव युगीय उत्साह से प्रोन्नत करने मे तन मन से काय सलग्न है।

बौद्धिक-जन—कालू का खडेलवाल पीपलवा परिवार शेखावाटी के ठेठू गाँव ठट्ठाणे[2] का निवासी है। श्री रामकिशन के पड़दादा श्री जेसराज वि०स० 1943 के पास जवान अवस्था म ही कालू आये थे। इनके पुत्र जीवणराम जी न कालू मे पूण रूप से जमकर परिश्रम पूवक काय किया। ये कृषि काय एव पशु सेवा म दत्तचित रहकर विशिष्ट व्यक्ति कहलाने लगे। फिर धार्मिक ग्रंथो का पाठ और श्रीमद्भगवतचर्चा करते रहने से गाव म आप मुख्य भगवद् भक्त बन गय। जीवणराम जी के श्री चूनाराम (वि०स० 1938 1985) व नेनकराम नाम के पुत्र हुए। श्री चूनारामजी घर काय के साथ श्री गणेशलाल करनाणी स हिसाब किताब सीखकर बगाल गए। वहाँ इधर उधर की पूछताछ के पश्चात अपनी योग्यतानुसार अच्छे व्यापारिक प्रतिष्ठान म मुनीम का पद मिल गया। इन दिनों गाँव कालू म श्री डूगरगढ जाकर बसे हुए भादाणी परिवार का कूचबिहार जिले म पर्याप्त जमींदारी एव व्यापार प्रसरित हो रहा था। चूनाराम जी को पुराने परिचय से भादाणियो ने अपने यहाँ एक स्थान की मानो ध्रुववत गद्दी सौंप दी।

श्री चूनाराम जी न सत्यव्रत लेकर अहर्निश बुद्धिबल स काय किया। जिससे भादाणियो का कारोबार जगमगा गया। श्री चूनाराम वहाँ शत शत बडे व्यापारियो से मिले, मेहनत पूवक सलग्न रह कर समझे और व्यापारिक चर्चाओ से प्रेरित होकर विज्ञ बन गये। उन्होंने अपने अधीनस्थ गुमास्तो, नौकरो चाकरो तथा ग्राहको के साथ पूरा ईमान-सम्मान रखकर अच्छा प्रेम व्यवहार बना लिया। चूनारामजी म अधिक जन-ससग के कारण बडी व्यवहारिकता, सभा चातुरी और नीति निपुणता आ गई थी। वे मानव समाज के सिद्धान्तो को मानने लगे। अपनी लायकी के कारण चूनारामजी का प्रभाव इतना बढ गया था कि सेठोंके सामने कोई भी बडा सकटीय विषय उपस्थित होने पर उसका उपाय निणय चूनारामजी की सम्मति लेकर किया जाता अथवा दुविधा निवारण काय उनके ऊपर ही छोड दिया जाता था। इस समय तक इनके अनुज श्री नेनकराम भी इनके पास पहुँचकर कामरत हो गये थे।

---

1 गाव म सपन्न हुए सन् 1981 के ग्राम पचायत के चुनाव मे इन्द्रचन्द राठी सरपच पद का प्रत्याशी बनकर विजयी हुआ है।

2 ठटठावता या ठठाणा शेखावाटी का यदि एक ही गाव हो तो वहाँ का ठाकुर हरिसिंह बिदावत वि० स० 1890 (ई० स० 1833) के लगभग बडा उपद्रवी, गाव उजाडक हुआ था, तब श्री खडेलवाल कालू आये हैं ?

एक बृद्ध सज्जन ने बताया था कि श्री चूनारामजी वहाँ पर व्यापारिक क्षेत्र के धार्मिक पञ्च माने जाते थे। वहाँ के लोगों ने बोलचाल मे उनको परीक्षित की उपाधि से विभूषित किया था और विलक्षणता यह थी कि वे अपने पद और गौरव के अनुसार ही काय करते थे।

चूनारामजी वहाँ नित्य प्रात चार घडी के तडके उठ जाया करते। नित्य कर्मों से निवत होकर पूजा पाठ और हरिस्मरण के पश्चात गद्दी पर बैठ जाते। कूचबिहार मायाभागा फालाकाटा मे उनका निरीक्षणार्थ आना जाना बना रहता था। उनका एक नियम था कि व्यापार मे जो लाभ होता, उस द्रव्य म मे कुछ लघु अश पुण्यार्थ खाते मे पृथक जमा करवा दिया करते थे और उस सचित राशि को गरीबो मे वितरण करवाकर बडा आनद प्राप्त किया करते थे। दीन दु खियो के दु खमोचन हेतु वे सदैव तत्पर रहते। विद्वानों का सत्कार और अतिथि सेवा उनके जीवन का व्रत था। चूनारामजी कायकीर्ति, धार्मिक विचार और पूरा परिवार छोडकर वि० स० 1985 मे स्वगवासी हो गये। पर उस क्षेत्र के धार्मिक लोग आज भी उनकी काय पद्धति को स्मरण करते हैं।

चूनारामजी के थी हुक्माराम, रामाकिशन, श्रीराम और सदासुख चार पुत्र अपन स्वर्गीय पिता के आदश पर उन्हीं सेठो के वहाँ व्यापार करते हुए योग्य कार्यों मे भाग लेने लगे। वश की चिर सचित बडाई के सनद्धक श्री हुक्माराम उन्ही भादाणिया की गद्दी मे मुनीम बन गये। किन्तु अन्य ने स्वय का अलग व्यापार काय आरभ कर दिया।

श्री नेनकरामजी के पुत्र शिवप्रताप महादेवराम और पौत्र भवरलाल भी भले पुरुष थे। श्री रामेश्वरलालजी तहसीलदार और श्री गौरीनकर जोशी एम० ए० (प्र० अ०) मोमासर, नेनकरामजी के क्रम से दामाद एव दोहिते हैं।

ब्राह्मण समाज के लोग धम-सम्मान के विषय म अग्रगण्य होत हुए भी व्यापार के क्षेत्र मे प्राय पिछडे हुए रहते हैं। आनद की बात है कि श्री रामाकिशन एव उनके अनुज श्री श्रीराम (जन्म स० 1976) खडेलवाल ने अल्पवय मे ही व्यापार पर पूरा ध्यान देकर अच्छी उन्नति की है। धन समृद्धि हो जाने पर राजस्थानी समाज में शिक्षितों की सख्या अधिक वृद्धि पर नही पहुँच पाती। बालू म बहुत से ऐसे भाइयों के होनहार बालक, अपने अभिभावको की अनभिज्ञता कृपणता तथा लापरवाही के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वचित रह रहे हैं। यह अवस्था सारे क्षेत्र म विद्यमान है। पर इस परिवार ने गाव व समाज की इस दुर्बलता को महसूस करके अपने अनक बालकों को उच्च शिक्षा दिलाने की जिज्ञासा सम्मति से सफलता प्राप्त की है। यदि ये द्वय भ्राता अपन को अनुदार बना लेते तो आज इनके दुलारे बी० ए०, एम० ए०, एम० एस० सी० एम० बी० बी० एस०, एल० एल० बी० आदि परीक्षाएँ कदापि उत्तीण नही कर सकते तथा सतान के प्रति इनका कत्तव्य अधूरा रह जाता। किन्तु गाव म शक्ति रास्ता बना दिया है— 'तमसो मा ज्योतिगमय' अपनी सतान को 'अज्ञान के अधकार से विद्या के प्रकाश म लाइये।"

परिवार म इस समय श्री रामाकिशनजी सबसे वयोवद्ध और सुलझे हुए विचारों के विमद जन हैं। समाज सुधार के तौर पर आप रूढ़िवाद के विरोधी हैं, पर सनातन धम के सिद्धातों की रक्षा करत हुए जो सुधार काय किये जा सकत हैं, उनके लिए आप पूरे हिमायती हैं। आप पवित्रता प्रेमी गायत्रीश्री के उपासक, दढव्रत एव कम्के के

समझदार सज्जन हैं। सावजनिक कार्यों क लन देन म भी कभी पीछे नही रहत। आपका घर सुधीजनो के लिए आनददायक माना जाता है। आप उत्कृष्ट सेवाभावी, विद्या व्यसनी और आयुर्वेद के ज्ञाता हैं। नि शुल्क चिकित्सक के लिए गाव मे आपका सेवायोग सराहनीय है।

विलक्षण प्रतिभावान जन—गाव कुजटी (तह० नूनकरनसर) म उदयच द क पुत्र मघराज और पौत्र अखयचन्द साड का एक परिवार था। उनके देवचन्द रामलाल, किस्तूरच द तथा उदयचन्द नाम के चार पुत्र हुए। वि० स० 1969 मे इस परिवार वद्धि के पाच घर कालू म आकर बस गए। एक दो वष तो ये इधर-उधर रहत रहे, पर स० 1972 मे इ होने मघा, सागर आदि ढाढियो से और लालचद नाहटा का एक नोहरा लेकर अलग अलग अपन मकान बनवा लिए। फिर तो इनके मकान इस तरह फलते गये कि अब कालू मे साडो का एक बास कहलाता है और करीबन पच्चीस तीस समृद्ध परिवार बसायमान हैं। कतिपय परिवार इनके अन्य स्थानो पर भी जाकर बस गय हैं।

कुजटी मे य कृषि और पशुपालन व्यवसाय कायरत रहा करते थ। वहा चौधरियो एव अन्य लोक के साथ ही इनका भाईचारा एव सामाजिक विरादराना था। एक दूसरे के विवाह शादी पर काम आते हुए थोडा बहुत लेन देन भी कर लिया करते थे। स 1947 48 म किस्तूरचद बगाल गये और वहा कूचबिहार म मूरजमल हजारीमल फम मे गुमास्ता रह गये। श्री किस्तूरचद कमठ और सचर्यी पुरुष थे। कपडे आदि के काम मे वहाँ अपनी अच्छी साख जमा ली। स 1951 म उनन अपनी निजी दुकान खोल ली और दूसरी बार मे शन शन अपन भाइया को भी वहाँ बुलवान लगे। आपके बडे भाई देवचद *गाव कुजटी मे (स 1967 मे) ही स्वगवासी हो गय थे,* पर उनके वेगराज और जतरूप नाम के लडको को भी आपने वहाँ बुलवा लिया।

स 1973 म श्री रामलाल का देहावसान हो गया, मगर फाम रामलाल किस्तूरचद ही चलता रहा। यद्यपि इस फम के प्रतिष्ठाता किस्तूरचद साड थे। परन्तु उत्तरोत्तर उ नति हात रहने के कारण परिवार के लोगो न कई स्थानों मे अलग अलग अपना काय कर लिया जिनकी गिनती अब बडो म होन लगी है।

श्री रामलाल के स 1965 आसाढ वदी 1 को पुत्र हुआ। वह श्री तोलाराम नाम से सेठ बना। इसी महीने उदयचद के पुत्र हुआ जो कालू म भरू दान नाम से मधुर मिलनसारी व्यवहार मे प्रसिद्ध सज्जन है। श्री किस्तूरचद के पाच पुत्र और इनके भतीजे वेगराज जतरूप का भी होशियार परिवार अच्छे कारोबार म सलग्न है। श्री जतरूप का पुत्र श्री अलायचद साड सुयोग्य कायकर्त्ता और अपने कपडे आदि के व्यवसाय मे यथा समृद्ध है।

श्री तोलाराम गाव कालू मे एक सम्माननीय व्यक्ति हुय। उनका लोक व्यवहार बडा उच्च तथा प्रत्यक्ष था। वे स्वण व रत्न ही नही, मोती माणक के गहने बनवाने म भी पटु थे। स्थापत्य काय करवाने, काष्ठ कोबी काय का हिसाब बताने कपडे की जानकारी, मिठाई बनवाने का नाप ताल, भोजन आयाजन या सभा का सुप्रबध, अभिनय म चमत्कारी पाठ प्रदशन आकषक लोक कथाएँ कहना, साधु सतो की सवा और सबसे बडा गुण उनका सावजनिक कार्यों म भाग लेकर नाम मावना से द्रव्य देने का था। परतु वे चन्दा बहुत सूझ-बूझकर देते थे आँखें व द करके नही। इसलिए उस समय कभी कदा लोग उन्हें कृपण एव कठोर भी कह दिया करते थे। वे हँसमुख काय कुशल तथा

प्रभावशाली सज्जन थे। उनका सेठवाला व्यक्तित्व देखने योग्य था। वे पूर्ण पारखी थे और मानव भावना को पहचानने मे चेष्टावान भी। लोग कहते हैं—

साखा लोहा चम्मडा, पहले किसा वखाण।
बहू वछेरा डीकरा, नीवडिया परवाण॥

किन्तु तोलाचदजी न अपनी पाच पुत्रियो के लिए जो बालक रूप मे वर देखे—वे पाचो जवान होकर एक से एक बढकर उन्नतिशील निकले। तब कहना पडता है कि अपने गांव, राज्य और समाज मे श्री तोलाराम साड सच्चे सलाहकार के रूप म रहते थे।

श्री तोलारामजी म एक विशेष गुण यह था कि व अपने निकट और विकट सम्पर्क के सभी सबधी वर्ग तथा कुटुम्बियो को समान रूप से आदर देते हुए व्यवसाय प्रगति मे यथा साध्य उचित स्थान एव पत्र पुष्प लाभांश देने का ध्येय बनाये रखते। इन्होंने रामलाल तोलाराम फर्म म बार बार अपने पारिवारिक बधुओं को पास रखकर अपनत्व प्रकट किया। व्यवसायी दामाद श्रीमानो को भी अपनी दूकानो का कार्य सौंप रखा है। इनके बड़े दामाद कूचविहार की दूकान का काय आज तक समालते हैं।

तोलारामजी ने बगाल म धन कमाकर फिर अस्वस्थ अवस्था मे कालू आकर रहना शुरू कर दिया था। यहाँ बहुत सी जमीन मकान खरीदे और बनवाये। साथ म गोदारो के कूए पर कमरे, कोठा, माताजी के मदिर म बरामदा स्नानघर, रसोईघर कमरे (स 2025), पत्नी के नाम स्कूल म कमरा और हरिरामजी का मदिर अस्थायी पोस्ट आफिस भवन आदि अनेक सार्वजनिक मकान बनवाकर अपनी उदारता का परिचय दिया। इनके भतीजे श्री अलायचद साड ने भी गाव का वर्तमान पोस्टआफिस भवन बनवाकर दिया है।

गाव के जन समाज मे धार्मिक सुधार हेतु पचासो वर्षों स बराबर चर्चाए चलती रहती थी जिनके फलस्वरूप जन श्वेताम्बर तेरापथी सभा कालू स्थापित हुई। उसके प्रथम प्रधान स्तम्भ सेठ सुगनमल नाहटा और तोलारामजी साड ही थे। सस्था म आगम और सूत्रो जसे दुलभ ग्रथ मगवाने के वचन और प्रयत्न तोलारामजी ने ही किये थे।

श्री तोलाराम, तेराप थ के आचार्य प्रवर तथा साधु-साध्वियो के दर्शनार्थ हर साल उनकी सेवा म उपस्थित होने वाले कालू के एक दढव्रत श्रावक थ। उन्होंने अनेक चातुर्मास तथा मर्यादा महोत्सवो म सम्भवित सम्मिलित होकर वहाँ के आयोजित धार्मिक कार्यक्रमो मे आत्मिक भाव से भाग लिया था। वे पजाब, हैदराबाद, जयपुर, जोधपुर कलकत्ता, बबई हासी, हिसार, सरदारशहर सुजानगढ लाडनू बीदासर, चुरू, राजगढ गगाशहर भीनासर और बीकानेर आदि स्थानो पर अनेक बार सपरिवार आचार्य श्री की सेवा मे पहुँचकर सौभाग्यशाली बने। उनके चचेरे भाई भैरू दान ने भी बडे दृढचित्त स महीने महीने डेढ डेढ महीने की तपस्याओ के पश्चात आचार्य श्री की सेवार्थ अनेक बार दर्शनार्थ यात्रायें की हैं।

श्री तोलाचन्द के विचार, घर आये व्यक्ति का अतिथि सत्कार तथा खातिर-तवज्जे करने म महान थे। जब से वे अपनी अलग दुकान (फर्म—रामलाल तोलाराम) स्थापित करके बठे तब से बगाल म उस जिले के बडे बडे आफिसर इनके पास मुलाकातिया आने लगे। देश का आ जाये चाहे विदेश का! भोजन चाय, बिस्कुट, पान, सिगरेट आदि सदाव्रत रूप खुले सम्मान थ। चीफ मिनिस्टर तथा सिविल जज की इनसे मित्रता चलती थी। वहा के कांग्रेस कायकर्ता इनको पार्टी ... नकर—

"तालाराम बाबू ! तोलाराम बाबू !" कहते नही थकते । कूचबिहार मार्केट कमेटी के मे प्रेजीडेन्ट रहे और आस पास के गावो तक वे उलझे काम भी इनके द्वारा निर्णीत हुआ करते थे । सुडौल तन वदन, जन मन के हाकिम रूप रौब-दाब वाले मधुर वाक् व्यक्ति थे । ये अनेकरूप तोलाराम—धोती पगडी से सरल सेठ टाई, प ‍ हैट से अंग्रेज ऑफिसर तथा कोट साफे से सभ्य राव उमराव से दिखाई दिया करते थ ।

श्री तोलारामजी साड अपने पीछे सेठ स्मृति, विस्तृत भवन और पांच पुत्रिया वे समृद्ध परिवारा को छोडकर वि स 1936 मे स्वगवासी हो गये ।

वाकपटुमानस—सारस्वत पटिलो म आयूणे वास के दो परिवार पीढियो से प्रबुद्ध एव कुशल कायकर्ता स्वरूप ग्राम पचायती म अग्रणी रहते आये हैं । य ईसराणी सम्बद्ध आदश परिवार हैं । प्रथम—श्री जाधाराम, भोमाराम, तारूराम, ‍घाराम की वश परम्परा मे काशीराम वतमान समय मे बिरादरी पच रहे । काशीराम के चादाराम और हरलाल अच्छे कारोबारी पुत्र हैं । चादाराम श्री हुकमाराम के गोद चले गये । पर हरलाल अपने पिता की पीढी पद सँभाले हुए हैं । इस परिवार के व्यक्ति जा‌दुओ के वास मे वासिन्दा रह कर जाट जा दुओ के गौरवान्वित गुरु कहलाते हैं ।

द्वितीय परिवार के पूवज श्री रामदयाल एक वक्ता पुरुष थे । गाव के प्रत्येक सावजनिक कायम उसकी पूछ रहती थी । गाव का पडा हुआ कोई भी झाड झपोड राम दयाल की राय से ठीक रास्त लगना था । उसके सदाराम पुरखाराम और ब नाराम नाम के तीन पुत्र हुए । वे अपने पिता के समान ही कायकुशल एव वाकपटु थे । ग्राम कार्यो मे उनकी भी पूछ होने लगी थी । कहते हैं—रामदयाल के दूसरे पुत्र पुरखाराम के मुँह सरस्वती बोलती थी । वे अपने जमाने के आशु कवि थे । चूक हो जाने पर पुरखाराम स्वय काम सुधार कर द्विज भाइया से भी सम्मान ले लिया करते । यथा— "सत भाइया रे पुरख नें पाघ बधाइया ।" स० 1955 मे गाव की ओर से श्री कालिका जी का भवन सुन्दर एव सुदढ बनाने की बात निश्चित हुई । इस काय को उपयुक्त मनोहर एव ‍यवस्थित ढग से सम्पूण करवाने की जिम्मेवारी श्री चौथाराम (जेताराम) को सौंपी गई । श्री चौथाराम ने अपनी नतिक निष्ठा तथा महत्ता लगन मे भवानी के भवन को तयार करवा देने मे सालभर तक अपना सात्विक जीवन लगाकर काय सफलता का यश लाभ प्राप्त किया । इसके पश्चात चौथाराम गाव कालू म बडे लाकप्रिय बन गए । उस समय उन्होंने रामस्नेहिया की जगेरी के पक्के एव सुन्दर मकान बनवाने में भी कालू गाव से काफी मदद पहुँचाइ थी । इसलिए सावजनिक कार्यों मे उस समय श्री चौथाराम के साथ रहकर श्री पुरखाराम भी बडे माहिर कहलाने लगे थे । आस पास के लोग उन्हें गाँवाऊ काम म सवप्रथम बुलवाकर सलाह लेने मे अपना वस य समझन लगे । परन्तु अफसास इस बात का रहा कि गाव के सावजनिक कार्यों की चिन्ता तथा कविता वार्ताओ के चिन्तन सृजन से सलग्न रहकर सतति प्राप्ति म बिल्कुल पीछे रह गये । इस लिए आपने अपन बडे भाई श्री सदाराम के पुत्र ऊमाराम को विशेष स्नेह पूवक पढा लिखाकर कविता आदि बनाने म यथा योग्य पटु बना दिया । आगे चलकर श्री ऊमाराम ने गाव मे ऐसा मनारजक एव विविध कविताएँ बनाई हैं जो आज भी सुनते ही बनती है । दो एक नमूने मात्र बता दूँ तो सम्भवत अप्रासगिक नही होगी ।

श्री ऊमाराम का वयस्क दोस्ताना दूसरे वास के श्री कानदास बरागी से था । कानदास उन्ही वर्षों म गाव गारबदेसर से आया हुआ एक युवक तथा मिलनसार मित्र

व्यक्ति था। दोनो मे आपसी प्रेम और दिलखुश गप्पें हुआ करती थी। एक दिन श्री कानदास ने बातो ही बातो म श्री ऊमाराम से कह दिया कि "तुम क्या कविता बनाते हो ? मेरी कविता बनाओ तो जानू !" इस पर ऊमाराम को अपने वश परम्परित सरस्वती वरदान की याद आ गई और वह कानदास की व्यक्तिगत नही, उसकी जाति सम्बन्धी कविता कहने लग गये। तब तक बोलते गय कि लोगो ने श्री ऊमाराम को वाह वाह, करके बन्द नही किया। उनम से मात्र एक दो पद नमूने स्वरूप लिखता हूँ—

मोडा मित्र न कीजिये वरागी वकार।
काम पड़े जद स्त्री, काम सरया भरतार॥

एक बार—श्री ऊमाराम, रेखच द काठारी की बरात म गाव बिझरवाली गय और खारे पानी के स्पश दशन से ही अनेक पद बोल उठे—

भू चाल्या भूखा मरया, घर रा छाडया काम।
बिझराळी तरा रूखडा, नीज दिखाळै राम॥

श्री ऊमाराम की ऐसी अनेक सु दर छन्द, रस एव अलकार पूण स्फुट तथा 'ढूढी रासा' काव्य की[1] कविताएँ आज भी कालू गाँव के वद्धजनों की जबान पर चढी हुई हैं। वतमान समय मे इनकी विधवा धमपत्नी ग्राम पचायत मे महिला पच रह चुकी है।

श्री पुरखाराम के लघु भ्राता श्री कनाराम भी अपने समय के सभ्य व्यक्तियो मे से एक थे। उसके बेटे आदूराम हुए। श्री आदूराम ज्योतिष शास्त्र के जानकार कम काडी पडित थे। वह अपने शिष्य जना एव यजमानो मे चमत्कारी पडित माने जाते। उन पर लोक का विश्वास था, पडितपन सम्मान था। श्री आदूराम के इन्तजार में पश्चिम राजस्थान के लोग अपनी पलकों के पावडे बिछाये रहते थे। आदूराम के हजारी राम एव रामधन नाम के दो लडके हुए। रामधन बडा दिमागी होशियार—कक्षा 8 म पढता था। ई०स० 1960 के आस पास भगवान के घर गया। किन्तु कमठ हजारीराम अपनी बल बुद्धि से ग्राम कार्यों में प्रमुख बन रहा है। वह साक्षर दिल दिमाग स दबग एव उदीयमान राजनीतिज्ञ युवक है। कालू के बहुत से लोग हजारीराम को अपना समझते हैं और नि सकोच हर समस्या को लिए उसके पास जाते हैं। सुना है वह भी उनकी समस्या सुलझाने मे हर वक्त तयार रहता है। हजारीराम एक बार ग्राम पचायत कालू म निर्विरोध उप सरपच पद पर भी रह चुका है। इसके दो लडके ओम प्रकाश और शिव प्रसाद व्यवसायिक लाइन म सर्विस सलग्न हैं तथा तीसरा अभी कालेज मे पढ रहा है। हजारीराम का घडत भाव, विनोदी हृदय एव मखौलबाजी वाला मन सतत स्वस्थ प्रसन्न है।

श्रद्धा वचन—ई०स० 1975 की 28 फरवरी के दिन अवस्थानुसार वद्ध श्री कालू राम वर्मा का शरीर शात हुआ ता गाव के बुजुर्गों, वृद्ध महिलाओ, नौजवानो और

---

1 (क) ऊमो कहे ढूढियां, इतरो थामे खोट।
पुण्य करता नै पाल द्या, बडी गजब की चोट॥

(ख) पाटी बाधें ढूढिया पेट भरण के काज।
भटकत भटकत यू फिर ज्यू तीतर पर बाज॥
ज्यू तीतर पर बाज बात कर सभी काली।
पाटी बाध्या हरि मिल नो, म्हैं बाध न्यू राती॥

निकट के गावो के लोगा से उनकी स्मृति मे अनेक प्रकार के श्रद्धा वचन अर्पित किय गए। महत श्री विष्णुदास जी की भजन मडली ने उनके घर पर सत्सगति एव भजन कीतन का आयोजन चलाया। मडली के लागा ने कहा— श्री कालूराम जी एक महान व्यक्ति, सच्चे ग्राम मुखिया और अच्छे सलाहकार थे। उन्होंने आजीवन भजन नीति को अपने प्राणा से अधिक प्रिय बनाये रखा और गाव की तमाम आध्यात्मिक सभाओ म एक अगुआ नेता की भूमिका अदा की।"

प० श्री दुर्गादत्त जी शास्त्री, पहले (अस्वस्थता के समय) और देहावसान के बाद, दोनों बार श्री कालूराम जी के घर आये एव उनकी स्मृति म उठे लोगा को बताया कि 'कालूराम भाई" महाभारत रामायण ही नही, श्री गीता और गायत्री भगवती की महिमा चर्चा भी किया करते। कही भी वदिक बातें चली हा चाहे ज्योतिष की, कालूराम भाई ने उनम अपने सुवाक्य सुबोल से यत्किचित भाग लिया। वे असाधारण प्रतिभायुक्त व्यक्ति थे। उनम असीम लोकाचार था। गाव मोहल्ले म ही नही, उनका अभाव अपने क्षेत्र भर म खलता रहगा।"

गाव के महामना बुजुग श्री मूलाराम जी और रावतराम जी पारीक दोना साथ बर्मा के घर पारिवारिक जना स मिलने हेतु आये। उन्होंने कहा— कालूराम के निधन से हमारे सावजनिक जीवन का एक पूरा जमाना समाप्त हो गया है।' आदरणीय समवयस्क बद्ध सेठ श्री दीपचन्द जी डूगाणी, तोलाचन्द जी साड भैरूदान जी साड तोनाचन्दजी नाहटा, वालचन्द बोथरा, (बालचन्द कोठारी, तो गाने में लग गया) रामकृष्ण जी खडेलवाल सुभाणचन्द बोड आदि मिलने आये। राजमल नाहटा और नेमचन्द दूगड काल आये तब उनके परिजनो से मिले। उन्होने श्री कालूराम जी को एक बुद्धिमान मानव समाजसेवी ओजस्वी वक्ता और उत्तम गुण गम्भीर व्यक्ति बताया।

गाँव काल के प्रथम बस कन्ट्रावटर श्री लालूराम जी गुसाँई वद्य रमाकात त्रिपाठी श्री रामचन्द्र दर्जी और प्राइवट डॉ० श्री रामसिंह उनके घर सवेदना प्रकट करने आये। उन्होने श्री कालूराम जी को गुरु गुण रूप आयुर्वेद सुनाता एव सभा विशारद भजनीक बताते हुए उनका सत्सग अहसान माना तथा ग्राम एव बिरादरी का एक सलाह स्तम्भ खो गया कहा। इन सज्जनो ने श्री वर्मा जी का सौजन्य पूर्ण जीवन सावजनिक सेवाओ से ओत प्रोत अर्पित हुआ बताया। उस समय बहुत से युवकों ने 'काका गये कह कर आहें भरी। श्री डूगरराम खाती ने मिष्ठ स्मित भाव मे 'कालूराम काका' कहकर इश्वर का धन्यवाद किया। विधायक श्री भीमसेन जी तथा साथ कतिपय क्षेत्रीय नेता—श्री कालूराम जी के घर सवेदित बनें आये और उन्होने उनको गाव का एक वद्ध एव सेवाभावी सज्जन बताया। तत्समय सरपच श्री गोपालचन्द समेत ग्राम पचायत का स्टाफ मिलन व्यवहार हित आ पहुँचा और श्री कालूराम जी को अपने पचायत सस्थान का पुरातन ग्राम पच बताया। इन लोगो ने कहा—'कालूराम जी सन 1951 52 सन के चुनाव मे पच बने थे और कुछ समय पश्चात उसम गडबडिया होती देखी तब निष्कलक निष्कपट रहकर बीच म ही त्याग पत्र द दिया।

श्री नानूराम सोहनलाल सारस्वत, गोपालराम सूनार, श्री मगतूराम जाणी, हुकमाराम जाणी, कालूराम डागवाल, तोलूराम जा दू, नत्थूराम नाई, हरलाल सारस्वत, राधाकिशन भादू रामनारायण गादारा गारधन महाराज शिवनारायण पारीक, सदा सुख शर्मा भवरलाल सूनार श्री आसदास गुमानदास बरागी फूमाराम गोदारा, धन-

राज जागिड, आसूराम नैण आदि लोग उनके घर पर नाइ बैठक मे बैठने आये। इन के अलावा दूर-दूर से तार पत्र और बिरादरी भाइयो की श्रद्धांजलिया आई तथा उनके घर पर सारे सबधियो के समूह ने शोक सम्मेलन का स्वरूप धारण कर लिया। अधिकारी एव कर्मचारी वर्ग म श्री लक्ष्मणदत्त शर्मा प्रधानाध्यापक रा०उ०मा०वि० कालू मय स्टाफ, डा० श्री कुवरलाल जी बारठ पटवारी भवरला रघुवीरसिंह ग्राम सेवक, श्री रमेशजी पोस्टमास्टर चन्द्रकात जे० इ० एन० जलदाय विभाग, पशु चिकित्सालय के श्री स्वामी आदि मिलने आए। *गाव टाडरिया मे भवन बारठ श्री कुशलदान, श्री मनीराम* जी तहसीलदार और लेखक के अभिन्न श्री रेवतमल जी गाड (रेल्वे हनुमानगढ जक्शन) श्री कालूराम जी का देहावसान हुआ सुनकर तत्काल उनके परिवार को धैर्य देने हेतु कालू आये।

महिलाओ म सुविन सबोधित बहिन बाली नावणिया, मालीवाड स्वणकार उन के स्नेह सबोधित भनीजी चुन्नीदेवी नैण घोटाबाई नोपाबाई पारीक, मनोहरी देवी बोयरादि तथा मौहल्ले की तमाम प्रौढ महिलाएँ उनकी सेवा भावना से वचित हुई घर पहुँची। अस्तु ये सब सद्गुण सम्पन्न महिलाएँ एव सभ्यजन सज्जन एक ऐसे गुणवान व्यक्ति के प्रति शोकरत हुए उनके घर आये थे, जो अपने जीवन के अधिकाश भाग म प्राणी मात्र के हित समथन रूप प्रसिद्ध रहा था।

श्री कालूराम वर्मा ने जिस काल म जन्म लिया वह भयकर दुर्भिक्ष का समय था। देश के कोने कोने में त्राहि त्राहि और क्रदन का नाद हो रहा था। अत्यधिक अभाव के वातावरण मे श्री वर्मा का जन्म वि० स० 1956 आसोज शुक्ला पूर्णिमा (शरद) के दिन कालू म हुआ था। एक साल के बाद इनके सिर से पिता का साया उठ गया। ऐसे उदासीन समय में बहिन ने सहोदर प्यार सहित शिशु से किशोर तक के खेल, खेलाये। वह सकरुण और उदार शुभ्र व्यक्तित्व की धनी सदैव अपने भाई पर अपरिमेय स्नेह भाव बनाये रही। माता एक मर्दानी महिला मेहनत मजदूरी करके भी अपने बालको का सम्पूर्ण वात्सल्य पालन करने मे हर समय समर्थ बनी रही। लेकिन वर्मा के मदरसे का चाव उसे मिटा देना पडा। क्योंकि उसके घर म पौरुषेय कार्यों के लिए श्री वर्मा पर ही सारी आशाएँ लगी हुई थी। अत तेज मस्तिष्क एवं सहज गुणों का धनी होने पर भी उन्ह मातृ आज्ञा से शिक्षा वचित रहना पडा। लेकिन स्वय लग्न अच्छे साक्षर बन गये। बहनोई जी ने इनका विवाह गगाशहर के एक *प्रतिष्ठित घराने मे सुनिश्चित कर दिया।*

आगे चलकर श्री वर्मा बडे हुए और उनके हृदय म मानव जीवन की उपलब्धिया प्राप्त करने की व्याकुलता बढ गई। चारो ओर की दिशाओ म निकल पडे और अनेक विविध कलाओं मे परम प्रवीण बन गये। जिसके कारण गाव कालू मे ही नही, दूर दूर के गावों-नगरो तक श्रीकालूरामजी की बडी पूछ कद्र होने लगी थी। पचायती के स्तम्भ शादी गमी के खानी सलाहकार तथा जन साधारण के सच्चे हितषी बन गये थे। इसलिए गाव म कोई भी बिरादरी या काय हो कालूराम जी की कलित कुशलता सदैव प्रथम बनी रहती थी।

उन्होंने अपने बोहरी लेन देन भ्रमण के बाद वि० स 1988 मे पसारी की दुकान[1]

1 उनका कहना था—मर्णा आव, भरी र भावाविक। गरीबों को मुफ्त या कम दाम दवा दिलवाते।

माडकर व्यक्तिगत व्यापार आरम्भ किया था। यह दुकान धमशाला भवन मे, जो वतमान म रतन मेडिकल स्टोर है, थी।

कालू की दुकोन में बीकानेर से माल आता—पसारी बाजार म श्री सिद्धकरण सुराणा की दुकान से किराणा मे सुपारी भडार (भीखाराम बद्रीप्रसाद) से, मनिहारी मे लक्ष्मी नारायण अग्रवाल और नत्थू मगतू तथा फकीरुदीन आदि की दुकानो से व तिल्ली मखाणा मिश्री म कालूराम कन्दोई से कामठी की बीडी दियासलाई और पान, कोट गेट बाजार से खरीदे जात थे। मोहता रसायनशाला एव झडू फार्मेसी भी श्री वर्मा के औषधि लेन क परिचित ठिकाने थे। उक्त स्थानो से वर्मा क नाम काई उधार भी तुलवा सकता था।

मनिहारी की दुकान, मिठाई की दुकान आदि भी कालूराम नानूराम क नाम कालू गाव मे चलती थी और लूनकरनसर म (सन् 1948 से 58 तक) पहले पहल चाय का होटल खोला था। इनमे भामाराम शर्मा चम्पालाल कोठारी लूनाराम सारस्वत आदि व्यक्ति रहे। लेकिन श्री कालूराम अधिक बाहर रहते और कणक आदि अन्न के कोठे (सन् 1932 स 55) तथा इलाज किया करते थे। नीचे लिखे फर्मो म श्री वर्मा जी की आढत चलती थी—

1 श्रीगापाल चन्द लक्ष्मीनारायण श्रीगगा नगर (जनरल मर्चेंटस एण्ड कमीशन एजेन्टस)

2 श्रीपन्नालाल विजय कुमार श्रीगगानगर (,)

3 श्रीब्रजमोहन सुशील कुमार, भटिण्डा (,,)

4 श्रीपदम चन्द गगाजल हनुमानगढ (, ,,)

इसके अलावा बीकानेर क पुरान बाजार म वमा जी रूई की गाठो और चादी की सिलियो का काम श्री देवीलाल मन्नालाल बोथरा की आढत म किया करते थे। श्री वर्मा सब प्रिय व्यक्ति थे जहा जाते मान सम्मान पाते। स्वास्थ्य विज्ञान के अनुभवी वद्य होने के कारण उन्ह कई स्थाना स उपाधिया आई थी। जिनके नाम ये हैं—

1 दी सिलवर जुबली मडिकल कॉलेज कलकत्ता स 1953 ई० म "वद्य राज" की उपाधि मिली।

2 बोड आफ इन्डियन मडिसन राजस्थान जयपुर रजिस्ट्रेशन न० 3152 से प्रमाणित बी श्रेणी क वद्य थे तथा कालू म श्री सेवा सदन औषधालय के नाम से चिकित्सा काय किया करते थे।

श्री वर्मा जी कुशल चिकित्सक थ। यद्यपि वे पशेवर वद्य नही थ, तथापि रोग का निदान करन म बेजोड व्यक्ति मान जात थ। वे औषधिया स्वय बनाते और चिकित्साथ धनवानों की अपेक्षा गरीबो के घर जाना पसन्द करत थ। दवाई निशुल्क अपनी इच्छा से देने और फीस लेने के मामले म बिल्कुल निर्लोभी थे।

श्री दुर्गादत्त जी सारस्वत ने अपने आदि पुरुष श्री सरस महाराज का जीवा अनुसधान करने के प्रसग म मुझे बताया कि 'कालूराम भाई के पूवज सरस महाराज के साथ अजमेर की ओर से आय थ। इसलिए हमारे देवी देवताओ (मावडियाजी आदि) की प्रसाद प्राप्ति म आज भी उनकी औलाद का हिस्सा बताया जाता है।'

ढाढी ढोली उन्हे "आशा, भानावत रा पोता" कहकर शुभराज किया करते और बही भाट मूळम्य[1] आतमज कालूराम कह कर शुभ वचन कहा करते थे। वि० स० 1990

1 वद्य क्रम आसाराम, भानी राम मूलाराम, कालूराम
श्री वर्मा के पन्दादे आसाराम ने कालू मे बडे सुकाय (बिरादरी मेले) किये थे।

में श्री कालूरामजी की सलाह सहमति से गंगाशहर भीनासर और सिथल म क्रमश विराट विरादरी सम्मेलन हुए। तत्समय हजारो आदमियो के मध्य म श्री वर्मा बिठाये जाते। वे पच पन मे भाषण करते तब सहस्र नर-नारी मूर्तिवत शात होकर सुनने तथा इन्ही के कथनानुसार अधिक प्रस्ताव पारित हुआ करने थे। इन आयोजनो म काफी आदमी इस समय इनकी हाजरी मे रहा करते। भोजन के समय अन्य लोगों के दिये कव ग्रासा से ही ये छक लिया करते थे। इनके पातिये के पास वतुए परोसने वाले लगाये जाते।

श्री कालूराम जी चदा देन म बडे उत्साही रहा करते थे। एक बार स० 2001 मिति आषाढ वदी 8 को श्री मानाराम नाई पोह माटी और जियाराम जाखड दोनो सूरतगढ के श्री मेन मन्दिर की मरम्मत वृद्धि आदि करवाने बाबत श्री कालूराम जी के पास रुपये लेने के लिए कालू आये। श्री वर्मा जी समझदार आय समाजी हम दोनों के नाम से डेढ सौ डेढ सौ गिनवा दिये। फिर श्री कोलायत जी म मन्दिर बनवाने हेतु श्री डूगरगढ के निराणाराम मचनाणा और सभवत श्री मीवाराम या घनाराम इनके पास कालू आये दोनो के मिलाकर तीन सौ रुपये चन्दा दिये। इस तरह धार्मिक कार्यों के लिए देने तथा अन्य मेवा के लिए वे कभी पीछे नही रहते। यही मे दने का ऐसा मितिवार हिसाब है।

न्याय नीति, बात पोषक एव सत्य प्रिय महानुभावी श्री कालूराम जी गाव कालू की मिट्टी मे उदित हुए, हिले मिले पले और उनके प्राणान्त भी वहीं, बेमालूम बीमारी एव सन्देहास्पद कारणों से हो गया। पर अंतिम सस्कार उसी बस्ती वसुधरा की रज मे 28 जनवरी 1975 को ससम्मान सम्पन्न हुआ। वे मम मातुल प्रवर थे, अतएव मैंने पी बी एम, हास्पिटल बीकानेर मे उनका पहले तीन बार डॉ० कालीचरण माथुर डॉ० आर के अग्रवाल आदि से इलाज करवाया था और उनमे से एक बार मैं, उनकी भयकर बीमारी के समय, समाचार पाकर आसाम से तत्काल चला आया था। परन्तु अब की बार वे 15 दिन पहले ही अपने जेष्ठ पौत्र के प्रपच म पडकर उसके साथ श्री गगा नगर की ओर चले गये। वहा बीमार पडे, तब पोता तो सत्वर गदभ सिरसींग जिमि गायब कि वह अपने को महातालीम यापता पूरक मेट्रिक पास फाम मे मुलाजिम पद (क लि) के अहम् वशात् मुह छिपाकर लुक छिप गया।[1] तार समाचार मिला, तब मैं सूरतगढ जाकर दिनाक 27 जनवरी को रेल द्वारा उन्हे अपने गाव कालू मे आया।

26 जनवरी 1975 के दिन स्टेडियम मे जिलाधीश बीकानेर श्री अरुण कुमार माथुर द्वारा मुझे राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किये जाने का विशेष आयोजन था। मैं 25 जनवरी को बीकानेर जाने के लिए तयार होकर बस स्टण्ड पहुँचा। तब उनके बीमार होने का तार मिल गया। श्री जिलाधीश को मेरे न पहुँचने बाबत फोन करके मैं सूरतगढ जा पहुँचा आगे गया देखा—वह असाधारण व्यक्तित्व, "जिसने अपनी महनीयता को बहुजन के मध्य बडे प्रेम से पचेहत्तर वष प्रमुदित किये रखा था" उस चालाक पौत्र द्वारा भर्ती करवाया हुआ, सरकारी हास्पिटल म अकेले, बेड पर बेहाल पडे पाया।[2] अंतिम समय मे जसी सेवा तत्परता तथा धय आश्वासन की आवश्यकता उन्हें थी, वह पूरी तरह वहा प्राप्त नही हुई। उनका बडा बेटा रामेश्वर जो उनके द्वारा विशेष व्यय

---

1 नीचस्य विद्या पाप कमणि योजयन्ति।
पय पानमपि विषवधन भुजगस्य नामृत स्यात॥

2 डॉ एस बी क्षवर ने मुझे कहा घर ले जाओ, बच नहीं सकते पोइजन फल गया है।

एव लाड प्यार स पाला हुआ था, सुबह शाम (दो बार) मभाल लने के बाद नशा वश शहर मे इधर उधर घूमता रहा। श्री वर्मा जी 26 जनवरी को मेरी आवाज पर कुछ महोश हुए और उन्होने मुझे प्रत्यक बात से अवगत कराया कि मुझे मेरी अनिच्छा के बावजूद भी आज तक यहा रोके रखा। तब मैंने उनकी आभा को निहारा, जो सत्य वादी, सतोषी और सर्वोपरि भजनीकात्मा मीठी मुस्कान क साथ तुच्छ कथन करके साधना की उच्च स्थिति मे पुन लीन हो गये। हरि ओम तत्सद्।

कल्याण मूर्ति हे कष्ट जयी, पर दुख भजम व्रत हृदय धार।
हे पुण्य श्लोक तुम धय धय तुम जिये सदा बन कठ हार॥

प्रकद्र के कुहासे मे—लगभग पतीस वर्ष पहले की बात है कि उस वक्त कालू नागरिको म सावजनिक सेवा भावना का प्रेम पूर्वक प्रादुर्भाव होन जा रहा था। उसी समय गाव के कुछ सेवा परायण उत्साही नवयुवको न प्रत्येक काय म भाग लेने का इरादा बनाकर अपने जीवन को लगाया। सबके साथ श्री डूगरराम खाती ने भी अपने इस युग के अनक कामो मे भाग लेने का निश्चय किया और वे आगे जाकर बडे तेजस्वी मिस्त्री पुरुष प्रमाणित हुए हैं। गाव का विकासमान बनाने मे उसका प्रयत्न सदव सफल रहा है। सत्य पुरुष डूगरराम को कालू का विश्वकर्मा कहते है।

मनुष्य अपने कुछ असाधारण गुणो के कारण ही प्रकाश म आकर सेवा कार्य करता है। श्री डूगरराम उन कतिपय कायकर्त्ताओ म है जो अपनी मस्तिष्क विशेषता सद प्रयत्न एव कला कारीगरी के कारण कालू के सभी आदश लोगो का प्रिय भाजन बना हुआ है। वह सन् 1945 से 54 तक एक सुपटु कारपेंटर के रूपम काय करता रहा। उस समय म कालू क प्राय सभी व्यापारियो, कमचारियो, सुशिक्षितो तथा स्थापत्य कला के कारीगरो से सम्पर्क बनाकर अपनी प्रबुद्धता से सबको परिचित कर दिया। इसने अपनी लगन निष्ठा और प्रत्युत्पन्नमति की विशेषताओ के कारण लोक प्रियता प्राप्त की है। ई० स० 1955 से श्री डूगरराम गाव की जल समस्या को मिटान म जी जान स लग गया। गाव क सारे पुरान कूओ मे बोरिंग करवाने जस कार्यों म डूगरराम ने निरतर तीन साल तक अहर्निश कूओ मे व्यतीत करके अपन डूगर नाम को अडिग रूप म साथक कर दिया। लोग इसे छोड चुके। एक दो दुघटना ग्रस्त हुए तथा गाव के मुखिये सज्जन भी इस भारी कठिनाई के समय डूगरराम क पूरे शत्रु बन गय और गालियाँ तक देने लगे। मगर इसन एक युग तक कूओ म सूयवत आने जाने की अपनी दनिकचर्या नही छोडी। जी तोड परिश्रम कर अपना काय निभाया। आखिर सत्य अध्यवसाय क समक्ष सफलता उपस्थित हुई और कालू की आती हुई जल कठिनाई एक बार बिल्कुल नष्ट हो गई।

श्री डूगरराम एक निडर एव निर्लोभ व्यक्तित्व का धनी है। उसने कालू क कूओ मे पड कर मरने वाले अनेक नर नारियो के भयावने शवो को वखत बेवखत रात के समय भी क्षुद्र साधनो द्वारा बाहर निकालकर मुक्त किय हैं। इसकी ऐसी भावुक करुण एव वज्रमयी दोगुणी छाती की बारम्बार बडाई किये बिना हम लोगो को हर्गिज खुशी नही होती।

तुलसी निज कीर्ति चहे पर कीर्ति को खोय।
तिनके मुह मसि लाग ही मुवे न मिटिय धोय। (श्री तुलसीदास)

आजादी के बाद कालू मे जितने भी सावजनिक भवन बने हैं डूगरराम की सस्ती सलाह सेवा उनमे अवश्य काम आई हैं। डूगरराम इस एरिया का एक काबिल एव अनुभवी आदमी है।

गांव गुसाईसर से आये आसलिया उपवश के एक साधारण परिवार में जन्मे श्री डूगरराम के पिता का नाम पन्नाराम और दादा श्रीकिसन थे। स० 1982 असाज सुदी 13 के दिन श्री डूगरराम का जन्म गांव कालू में हुआ। अल्पवय में इनके पिता के चल बसने पर बाबा के अधीनस्थ इसने साधारण लकडी के किवाडादि बनाने सीखे। तत्कालीन रानगढ से कालू आये श्री उदयराम जागिड जैसे उत्तम कलाकारों के ससर्ग में रहकर डूगरराम ने कोरनी, नक्काशी तथा नूतन नक्शे पमाने बनाने में कालू के सभ्यजनों को आश्चर्यान्वित कर दिया। अपनी व्यक्तिगत कल्पना हस्तलाघवता तथा महीन कार्य-कुशलता के कारण काष्ठ कलाकारों का ही नहीं वास्तु विद्या एवं मकेनिक ज्ञान में भी प्रवीण बनकर इंजिनियरों तक का मन मोह लिया। अब यह जीप घडी, रेडियो, हारमोनियम और विद्युतीकरण के कार्यों में अच्छी जानकारी वाला मिस्त्री है।

स्थापत्यकला और काष्ठ कला का सबध पुराना एवं परमावश्यक रहता आया है। स्थापत्य कला के साथ काष्ठ कलाकार की जरूरत रहती है। नगरीय सभ्यता में बडे बडे महल प्रासाद बनाने और उनके द्वार वातायन झरोखे आदि हवा रोशनी के हिसाब, अनुभव योग्यता व्यक्ति ही नियमन साज सज्जा कर सकता है। कालू गांव मे आधुनिक सुन्दर सस्था भवन तथा अन्य नव्य बगला के बनाने में कारीगरों के कारीगर श्री डूगरराम ने अपनी सम्मति प्रतिभा से अधिक उत्तरदायित्व निभाया है। साथ मे कोरणीदार मजबूत किवाड, चौखट एवं लाहू सिमेंट निर्मित जाली झरोखा मे कला-मकता उभारने के लिए हर एक व्यक्ति को श्री डूगरराम से सलाह मशविरा लेना पडता है। कालू के सार्वजनिक आयोजनों में गेट महफिलें, मडप व मच इसके पर्यवेक्षण में ही सपूरित होते हैं। 13 सितम्बर 1976 में मुख्य मन्त्री के आगमन पर बनाये विस्तृत मडप मच तथा 2035 मे सत्ताईस कुडीय महायज्ञ हेतु बना विस्तृत मडप बडे भव्य एव दर्शनीय थे। कुआ का सुधार करवाकर जल सुख उपजाना, आबादी भूमि के रास्ते, चौराहों की सुन्दरता बाबत कस्बे का नक्शा बनाना, गलियों की पाइप लाइन वृद्धि के नक्शे समेत छात्रावास के ऊँचे धोरे पर बडी टंकी की योजना बताना आदि ग्राम सुख की प्रक्रिया के परिचय डूगरराम के सिवाय यहां कौन देने वाला है। यह व्यक्ति मशीन के कामों मे इंजिनियरों का सहयोगी रह चुका है। क्षेत्र की आयल मिलस् फ्लोर मिलस् और ऊनों की, आइस क्रीम की, आटे की मशीनों के लिए श्री डूगरराम का दिमागी चाबुक कारगर होता है।

एक बार स० 1967 की बात लेखक का शोध प्रबंध टाइप हो रहा था। महीने भर के लिए प० अमृतराम के भरोसे टाइप मशीन घर लाई हुई थी कि पडित बीच में ही रूठ गया। तब मैं मूलचद सोनी को उक्त काम बाबत बुलाने गया। पीछे बालकों ने खाली पडी मशीन पाकर गडबड कर डाली। वह ऐसी बिगडी कि किसी को कुछ पत्ता ही नहीं पडा। स्कूल के अन्य बाबुओं को दिखाने पर सबने बीकानेर ले जाने की सलाह दी। लेकिन मुझे अचानक डूगरराम याद आ गया। मिस्त्री डूगरराम ने मशीन को अच्छी तरह देखभाल कर चालू कर दी।

कालू में पहले न्याय पचायत की व्यवस्था थी। तत्समय ग्राम पचायत की तर्फ से लोकप्रिय श्री डूगरराम का न्याय पच पद के लिए चुनाव हुआ। फिर पाच न्याय पचों द्वारा मिस्त्री डूगरराम को उपन्याय पच बनाया गया। इस न्यायिक क्षेत्र मे श्री जागिड ने सबसे आगे होकर फौजदारी व दीवानी दोनो प्रकार के मुकदमो की सही

सुनवाइ व्यवस्था प्रारभ की। ये वष 1977 तक इस पद पर लोक विश्वासी याय पच रहे और निष्पक्ष याय युक्त अनेक मामले सलटाये। जो लोग राजनीतिर मामला में श्री डूगरराम से अलग रहते हैं, वे भी इसको निर्भीक एव कुशल कलाकार मानते हैं।

लेखककीय वशक्रम और सांकेतिक परिचय

गावा म एक दो ऐसे सभ्य एव पुख्ता परिवार भी होते आये हैं, जो सावजनिक प्रश्नों को गले मे लटकाने की अपेक्षा पावन व्यवहार सहित उनको अपनी आ मा मे वसा लते हैं। यद्यपि जितनी पब्लिसीटी आ दोलनात्मक कायकर्त्ताओ की होती है, उतनी इन मौन समाज सेवकों की कदापि नहीं हो पाती। तथापि ये अपने कायक्षेत्र म आत्म सयम आरूढ होकर निर तर जागरूक रहते हैं और श्रम स्वाध्याय से लोक हित, सन चिन्तन करके सेवा भाव निभाये चलते हैं। ऐसे लोक हितषी सावजनिक कायकर्त्ता, अपने क्षेत्र रूपी भवन के नीव वाले पत्थरो की भाति होते हैं जो कभी किसी के नजर नहीं चढते। परन्तु आन्दोलनात्मक कायकारी लोग उस भवन के कगूरे बनकर कोसा से लोक ध्यान को अपनी ओर खीच लेते हैं। फिर भी भवन, नीव के इन्हीं पत्थरा पर ठहरा रहता है, कगूरा पर नहीं।

ऐसे प्राचीन समय के सावजनिक कार्यों म सलग्न रहने के लिए ग्रथ लेखक के पूवजा का नाम अग्रगण्य गिनाया जाता है। उनके पिता श्री भैरारामजी आये गये का काम करते और सादर खिलाया पिलाया करते थे। उनके घर हर समय बटाऊ जीमते रहते तथा न्याय तपास के काय हुआ करते थे। स्व० श्री गणेशाराम ओझा ने बताया कि—'मेरा ससुराल गाव बामनवाली था। मुझे वष म दो चार बार खारी होकर वहा जाना पडता। मैं आते जाते वक्त खारी मे खातिरी के साथ ठाट से भैराराम जी के घर ठहरता और बडे आराम की यात्रा कर आया करता था। भैराराम जी शिक्षित, परोपकारी और गुणीजनों का आदर करने वाले सज्जन थे। पास पडौस के गाँवो मे उनका बहुत नाम था। अपने गाव में हेदकी (वद्यक) करत तथा तिथि वार ही नहीं, घडी-पुल भी बताया करते थे। मनुष्य का सम्मान केवल धन से नहीं उपकार व्यवहार मे भी होता है। ऐसा मैंने उनके चरित्र मे जाना जिससे अनेक शिक्षाएँ मिलती हैं।" 'श्री परमानराम सारस्वा" हमाराम व गगाजल गोदारा स्वामी मेघदास जा महत और कालूराम वमा आदि लोग श्री भैराराम जी के गुणा की प्रशसा करते थे।

लेखक का परिवार चार पीढ़िया स शिष्ट शिक्षित एव विमद वश कहलाया है। यह गाव खारी और कस्बा कालू मे आय समाजी, बौद्धिक काय कुशल जन हैं। अपने पूवजा का ये मूल निवास स्थान पूगल मानते हैं।[1] वहा क राजा लखणसेन के पुत्र भाटी राणगदे तक विबुध सेवा-पूजा हित फूल सचय कर देवताओ की भेंट चढाते रहने के कायहित इस वश का सम्माननीय खिताब सुनाम पुष्पभाटी एक पावन खाप के रूप में बन गया।[2] ये लोग भाटी केल्हण और शेखा के आमात्य बनकर भी काफी समय तक

---

1 यादव वश शाखा का मूल पुरुष भाटी या भट्टिक था। उसने भटनेर का दुग बनाया। श्री नरोत्तमदास स्वामी ने तवारीख जसलमेर" का अवलोकन कर लिखा है—'उसने सवत भी चलाया था।" जिसका आरम्भ वि स 680 है। नणसी की ख्यात भाग 2 मुजब सरदार भाटी से देवराज तक नौ राजा हुए। फिर "करण' (स 1340)[1] करण का पडदादा जसल था, उसने 1212 म जसलमेर बसाया था।

2 ग्यारहवी शताब्दी के आरम्भ म महमूद गजनवी सोमनाथ पर आक्रमण करने जा रहा था। वह जसलमेर से पाच कोस पश्चिमोत्तर लोद्रवा से निकल रहा था। वहाँ

सुजन बने रहे और उनके साथ मारवाड, सिंध, पजाब हरियाणा तथा गुजरात तक फैल गये।[1] जैसे जसे केल्हणोत भाटी सरदारो का बीकमपुर राज्य मे विस्तार हुआ, फूल चढाने वाले पूजाकारी वशधर भी इनके साथ इधर उधर आकर निवासित हो गये। य पूगल से केहरोर, देरावर, मरोठ, मम्मणवाहण आदि स्थानो मे अपने स्वामियो के साथ जा बसे। बीच बीच म राव और ठाकुर भी कहलाये तथा इन कुछ के नाम दो चार गाव भी गणराज्य काल मे पाये बसाये हुए थे।

इस वश के लोग अधिकतर जैसलमेर, मारवाड के राज्याधिकारियो की पुष्प सेवा मे लगे रहे। लेखक की वतमान पितृवशीय शाखा म श्री डूगरराम के पुत्र जयराम और पौत्र जोधाराम के तीन पुत्र प्रेमाराम, चतुराराम और पूणराम थे। श्री पूणराम के भराराम उत्पन्न हुए। विस्तृत वृत्तात के अभाव मे मारवाड के हमार भाट जीवणराम तेजाराम की प्राचीन वहियो के अनुसार यहा लेखक के वश का श्रवण वणन लिखा गया है कि श्री भैराराम सस्कर्ता का जन्म गाव खारी (दुलमेरा) म वि स 1936 और देहपात स 1974 म हुआ। उनके बडे पुत्र श्री वालूराम (जन्म वि म 1965 और स्वगवास स 1987) आधुनिक युग के निर्भीक सुधारक एव प्रबुद्ध सज्जन थे। य लघु जीवन मे विद्याध्ययन की लालसा लग्न रहे। श्री बालूराम जी[2] स्वामी दयानद सरस्वती के विचारो के प्रचारक प्रसारक तथा काग्रेस सगठन के कायकर्ता थे। उनके द्वारा सग्रहित किये गये सामाजिक, आयुर्वेदिक एव राजनीतिक साहित्य से लेखक को बडी प्रभाविक सहायता प्राप्त हुई है। वे असमय म ही ससार त्याग चले, परन्तु अपने क्षेत्र के नव युवको मे राष्ट्रीय भावना व जन जागृति की सयमित ज्योति प्रज्वलित कर गय। इनके द्वय छोटे भ्राता (किसनाराम उमाराम) इनसे पहले ही चल बसे थे।

श्री बालू राम के देहावसान के समय इनके सबसे छोटे भाई (लेखक) श्री नानूराम (जन्म वि स 1973 श्रावण कृष्णा सप्तमी—21 जुलाई सन 1916) 13 वष की आयु मे प्रवेश कर रहे थे। जिनका जन्म तेरह मास मा के उदरस्थ रहने के उपरान्त हुआ था। इसलिए 'जन्म कुण्डली' यथा समय बनवाई गई। जन्म का नाम नारायण रहा। मगर सब भाइयो से छोटे होने के कारण, धीरे धीरे वह 'न हराम' मे परिवर्तित हो गया। स 1974 की बात, एक साल तक बडे दु ख और अनेक आपतियो के साथ घर का लेन-देन समेटने

के भाटी राजपूतो न गजनवी व दल को रोकन की चेष्टा की। किन्तु उसने सब क्षत्रियो को मार पीटकर उनके गढ किले ले लिय। उस समय आततायियो के भय से भाटी क्षत्रियो ने देवताओ की पूजा आरम्भ की। अनेकश ब्राह्मणो को जल, पुष्प, प्रसाद चढानें और आरती करनें हेतु जीविकाए वृतिया उपाधियां तथा सम्मान दिय गये। उक्तवश के आदि पूवज नान वल्लभ आचाय सम्माननीय पडित थे तथा भाटी राज्य म उनका प्रभाव था। वे पूजाकारी द्विज अपने राजाओं के साथ देव पूजाथ दूर दूर तक फलते गये और उनकी पहचान भी स्वामियो के वश गोत्र युक्त गौरवान्वित मानी जानें लगी।

1 लोद्रवा का विजराज बडा बहादुर उसनें अन्य मुसलमानो को रोका और "उत्तर दिस भड किवाड' की उपाधि पाई। उसका भाई जसल (1170) फिर जतसिंह और भाटी घटसिंह जसलमेर के राजा हुए।

2 इनका यज्ञ हवन म बडा विश्वास था।

के लिए इनकी पूज्य माता जी को छोटे बालकों सहित लेखक के ज म स्थान गाव ारा मे रहना पडा । वे बालकों पर अपरिमेय उदार एव करुण भाव से वहा रही ।

नराराम जी मस्रता बहुत लोकप्रिय और उच्चकोटि के समझदार व्यक्ति थे । वे ज्योतिष विद्या के विश्वस्त प्रेमी जा महजगमर उधा व बामणवाली जमे पास पडौस के पडिताई सस्कारो वाले विशिष्ट नागरिको के सपर्क से वसे ही सस्कार ग्रहण किए हुए थे । बचपन से ही धार्मिक भावना और शास्त्रो के प्रति उनकी बहुत श्रद्धा थी । कम बोलते सत्य बोलते और असत्य पर अफसोस ही नहीं उपवास तक कर लिया करते थे । स 1961 मे राजकीय खान दुलमेरा मे सुपरवाईजर नियुक्त हुए, पर उनका मन प्राय ज्योतिष सेवाभाव और ललित कलाओ म ही रमा रहता । ऐसी अभिरुचि हनु उनकी विविध सग्रहित कुछ वस्तुएँ हमारे घर मिलती हैं । उनम से मो वष पहले के ो पचागो के भवानी भरव सवाद दृष्टव्य हैं—

1 पचाग—वि०स० 1941 शक 1806 का भैरव भवानी वाक्य अथश्रीधरकृत भरव भवानी वाक्य प्रारभ —

प्रश्न—भावी भाव भविष्य की वक्ता कर्ता माय ।
भरव पूछै भाव सू, साच कहो जे थाय ।।1।।
वत्सर इकताळीस[1] म होय सुभासुभ काज ।
श्रीधर साची रीत सौं पूछ भरव राज ।।2।।

उत्तर—व्यौपारा वद्धी घणी, होसी समता भाव ।
समत म सुख भोगव कहा रक कहा राव ।।1।।
लायक बाधै पागडी नालायक सिर धूल ।
राज तेज परजा सुखी सवत है भरपूर ।।2।।
कचरघाण[2] करमा तणा, भोग आपो आप ।
सुमति विचारया सपदा कुमति विचार्या पाप ।।3।।

2 पचाग—वि०स० 1943, शक 1808 का भवानी भैरव वाक्य [1] अथ प० श्रीधर कृत भवानी भैरव वाक्य—

दोहा—भैरव प्रश्न—तेताळीसो[3] तीखो रहसी मदो रहसी माल ।
परजा र हित कारण, पूछै भैरवलाल ।।1।।

भवानी उत्तर—तीखा मदा येकसा,[4] झगडा थटा होय ।
तेतालीसा म करे वतब सुख दुख होय ।।1।।
भागवान सुख भोगसी दुख अभागया साथ ।
राज तेज प्रजा सुखी श्रीधर साची बात ।।2।।
राजा मत्री यकसा, तीखा रहसी तेज ।
घन वरषै हरष प्रजा विच बिच करसी जेज[5] ।3।

इस तरह से देव नत्या म भोपा का नचाने के लिए लोहे की साकल, ख्याल-तमाशा के लिए उच्च प्रकाश हुतु बडा दीवट, राम भजन माला और ख्याल की अनेक पोथिया खाखले बास की कलम कुटीर, कडी कूटे वाली पीतल की दवात, लमछड मदूक, पत्थर काय करने के हथियार, पत्थर की बनाई वस्तुओ क सु दर नमूने आदि भी हैं । प० हिम्मता राम जी ने बताया कि ढाढी उनकी (भराराम जी की) कविता

1 वि०स० 1941 2 व्याधि 3 वि०स० 1643 4 एक जसा 5 विलम्ब ।

बोला करत थे—

'मनुगारी मुरजाद रा आयप बकी भर ।
जिनना जागन नेह जग, नाही स्होवन शेर ।।

न० 1974 क पास अधिक लेन देन और खेत उनका हरी भरी फसल से गमकता रहता । श्री हीरालाल बुच्चा[1] के साझे से म्हाड़े टाले मे रहती थी । घर पर कताई-बुनाई का काय भी करवाया करते थे । परन्तु इसी साल के श्राद्ध पक्ष मे रक्त विकार मे उनका अचानक देहान्त हो गया । घर परिवार पर आपत्ति के बादल छा गये ।

श्री भराराम जी की मृत्यु क डेढ महीने बाद लेखक की माताजी ने फसल का काय सलटवाया । उजड़त बिगड़ते मात्र साठ मन मोठ घर आये । कई लाग लेन देन म गडबड कर गये । अत आठ दस महीने वहा ठहर कर माताजी ने फिर अपने छोटे भाई के साथ, सात आठ ऊंट[2] वालू से बुलवा लिए और दो बार मे अति आवश्यक सामान लदवाकर अपनी मा की आज्ञानुसार सवाल परिवार गाव वालू आकर अपने पीहर मे सयुक्त परिवार बना लिया ।

लेखक के बडे भाई और स्वय का, मामाजी द्वारा योग्य अभ्युदय शिक्षा दीक्षा और शादी विवाह हुए । वे बडे नीति परायण और भजनीक व्यक्ति थे । किन्तु लेखक के जवान होने से पहले दो बडे भाइयो का देहान्त उनकी आखो के सामने हुआ, तीसरा तो समझ से पहले ही चला गया था । चारों भाइयों मे से केवल लेखक ही जीवित रहें । इस तरह की बातें उनकी विलखनी महामना माताजी (श्रीमती शृगारी देवी) बतलाया करती थी ।

आपकी शिक्षा की नाव बडे भ्राता के स्वगवास से पहले ही लग चुकी थी । ग्राम वासी होते हुए भी वे (बडे भाई साहब) पूर्ण साक्षर थे । उन्होंने ही लेखक को गाव की पाठशाला म प्रवेश दिलवाया । वे स्वय पढ़ने म रुचि लेते थ । अक्षर ज्ञान के समय लेखक

1 श्री हीरालाल बुच्चा के वशज लूनकरनसर में निवासित हैं ।

2 ऊंट श्री धोकल मया शेरा नण कानदास बरागी, पुरखाराम परमान राम सारस्वत, हेमाराम गोदारा के लिवाने गये थे ।

की कुशाग्रता देखकर अध्यापक बडा आश्चय किया करते। आप छ माह मे पहली दो कक्षाओ की पुस्तकें याद कर चुके थे। आठ वष की अवस्था के समय आपने दो वर्षो म म चार श्रेणियो की पढाई पूरी कर ली थी। उक्त समय श्री दुर्गादत्त जी, गिरधारीलाल आदि अनेक शिक्षितो से आपका सम्पक बना।

आपकी तीसरा व चौथी श्रेणी की पुस्तक म प्रथम महायुद्ध क अनेक सचित्र पाठ थे। प्रथम युद्ध वीरता के लिए विक्टोरिया क्रास क तमग और खुली हवाई जहाज के चित्र बडे चाव स देखे जाया करते थे और उन पुस्तको के पन्ना पर गाधी जी आदि की जल छापें उतार चिपका लिया करत थे। भाषा ज्ञान आपका अच्छा था। रामजीलाल शर्मा द्वारा सपादित इडियन प्रेस लि० प्रयाग म ई० सन 1925 म छपी बाल विनोद पाचवा भाग' पुस्तक का अध्ययन अधूरा छोडकर लखक को कुछ समय के लिए पढने से पूरा छुट्टी ले लेनी पडी थी। बडे भ्राता बालूराम जी का दु खद स्वग वास हो जाने से उक्त समय कृषि काय म जुट जाना पडा।

गाव स ब्राह्मणो क बालक धार्मिक छात्रवलिया लेकर सस्कृत पढने बाहर गये। अ य कुलीन वग के छात्र पस क बल शहरो म कालेज पढने गये और सपन्न परिवार के पुत्र भी खेती क काम मे मुक्त रहकर नियमित पढने लगे। तब आपका भी जी अकुला गया और सहपाठियो की भाति आपके मन म भी पुन ज्ञान प्राप्ति की उत्कठा जागत हुई। सन 1931 धमशाला म रतनगढ के प० श्री गुरुदत जी पढाया करते थे। समय पाते ही आप उनस पढ़ते और शाम को सभी विद्यार्थियो के साथ जाकर छत पर सोते। वहा गीता क प्रथम चार अध्याय और शिव महिम्न क श्लोक याद करते रहते। प्राय गुरुजी सहित कुछ शिष्य खतलाई तालाब म स्नान करके आते। कहानी हो चाहे निबध हर समय पढते रहते। फुसत के समय आप रामसनेही सम्प्रदाय के स्थान या गुराजी के उपाश्रय म जाकर कविता पाठ का अभ्यास किया करत। रामायण महाभारत और सस्कृत का पठन भी इसी समय किया। श्री गुरुदत्त जी स लघु सिद्धान्त कौमुदी की पच सधि के सूत्र कठस्थ करके सस्कृत प्रथमा की परीक्षा उत्तीण की। जकात थानेदार गिरदावर पटवारी के ससग म रहकर तथा गुराजी और प० श्री गणेशाराम जी के आध्यात्मिक व्याख्यानो स आपने अपने ज्ञान म उत्तरोत्तर वद्धि की। उसी समय आपने पजाब यूनीवर्सिटी स हिन्दी की परीक्षा दी तथा ई स 1940 म आपकी अध्यापक पद पर नियुक्ति हो गई। इस समय आपकी राजस्थानी जनमत (कलकत्ता), शारदा (काशी) मीरा तथा राजस्थान (अजमेर) आदि पत्र पत्रिकाओ म रचनायें छपती थी। *सन् 1946 म महाराज कुमार श्री अमरसिंह जी कालू आये तब आपने अपनी 'कळायण"* नाम की पुस्तक भेंट की। उस पर राज्य की ओर स सनद और पुरस्कार मिले। वह पुस्तक सन 1948 म प्रकाशित हुई। कळायण के सबध म राजस्थानी साहित्य के विद्वानो की धारणा बनी, श्री चन्द्रदान जी के शब्दो म इस प्रकार लिखी गई—' जिस प्रकार कवि कुल गुरु कालिदास के मेघदूत" म 'आषाढस्य प्रथम दिवसे बादल को देखकर यक्ष का हृदय आदोलित हो उठा था उसी प्रकार श्री सस्करता की प्रथम काव्यकृति "कळायण' ने राजस्थानी काव्य प्रेमियो को हर्षो मत बना दिया।" विद्वद्वय प० श्री विद्याधर जी शास्त्री नरोत्तमदास जी स्वामी और ठा० श्री रामसिह जी तो कळायण काव्य पर मुग्ध हो उठे थे। बीकानेर राज्य डिवीजन शिक्षा विभाग के लोकप्रिय इस्पेक्टर श्री चन्द्रदीपसिह, सी०पी० कपूर एव श्री आर०सी० कल्ला और सी०बी० शाह

आदि महानुभावो ने श्री सक्सेना श्री सक्सेना की सृजनशीलता के लिए प्रोत्साहन दिया।

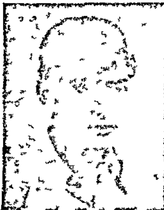
ई० सन 1948 म गवनमट मिडिल स्कूल नोखा मे आपका स्थानान्तरण हो गया। उमी सान गवनमट मिडिल स्कूल लूनकरसर म फिर स्थानान्तरण हुआ। सन् 1951 म आप गवनमट लाअर मिडिल स्कूल कालू म आ गये। यहाँ आपने ग्राम सेवा सघ व श्री सरस्वती पुस्तकालय मे काफी समय तक अध्यक्ष एव मत्री का कायभार सभाला। उक्त सस्थाओं से आपने पत्र पत्रिकाएँ निकाली। हिन्दी विशारद, हिन्दी प्रभाकर की परीक्षाएँ दी तथा फिर साहित्य रत्न और साहित्य महोपाध्याय की परीक्षाए दीं। राजकीय हायर सकेण्डरी स्कूल कालू की उच्च कक्षाओ म आपने निरन्तर अध्यापन काय किया तथा काफी समय तक माध्यमिक बोड के परीक्षक रहे। राजस्थान सा० अ० उदयपुर के सन 1951 मे सदस्य हैं और केन्द्रीय साहित्य अकादमी दिल्ली के त्रिवर्षीय निर्णायक भी रह चुके हैं। साहित्य सजन म सलग्न रहने मे निरन्तर पुस्तकें छपती रही जिसमे बडे बडे विद्वानो की सम्मतियाँ पुरस्कार तथा सम्मान भी हुए। आपकी रचनाएँ राजस्थान विश्व विद्यालय के पाठयक्रम म लागू हुई तथा समय समय पर आकाशवाणी केन्द्र म प्रोग्राम प्रसारित होते रहे हैं।

राजस्थान के शोध प्रबन्धो, शब्दकोषो और जीवनियो मे भी जगह जगह इनके साहित्य की चर्चाए हैं। डा० श्री कन्हैयालाल सहल ने अपने शोध प्रबन्ध (1952) म कलायण का उल्लेख किया है। पदम भूषण श्री सीताराम जी ने राजस्थानी शब्द कोष मे ग्होयी तथा दस देव आदि पुस्तको म शब्द लेने बताये हैं। डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया और डॉ ऋषभ भडारी आदि ने श्री सक्सेना के साहित्य का योगदान माना है। स्व श्री लालबहादुर शास्त्री प्र० म० भारत के बडे व्यक्तित्व ग्रथ म इनकी एक कविता सग्रहित हुई है। वि० स० 2024 म शिक्षा विभाग के अपर निदेशक श्री अनिल बोर्दिया के आदेशानुसार राज्य शिक्षा विभाग द्वारा सचालित राजस्थान के विद्वान व सजनशील शिक्षको के साहित्य को प्रकाशित करने की योजना के अन्तगत लेखक का "राजस्थान का लोक साहित्य" नामक ग्रन्थ प्रदेश प्रतिनिधि के रूप म प्रकाशित हुआ है। विभाग ने अपनी प्रसन्नता को इस प्रकार व्यक्त किया कि— 'राजस्थान के लोक साहित्य के विभिन्न बिखरे हुए कार्यों को एक सूत्र म पिरोने का प्रयास श्री सक्सेना के इस ग्रन्थ मे हुआ है।'

इसलिए सचिवालय राजस्थान के विभागीय आई० ए० एस० आफीसर श्री भगवतसिहजी मेहता, श्री जे० एस० मेहता, अनिल बोर्दिया भूपेन्द्र हूजा चौ० गोवधन सिंह श्री इन्द्रजीत खन्ना, श्री अरुण कुमार माथुर श्री ललित किशोरजी (समाज शिक्षा) श्री लक्ष्मी नारायणजी गुप्ता उम्मेद सिंहजी, श्री विनय व्यास आदि अनेक उच्चाधिकारी तथा शिक्षा आयुक्त श्री सक्सेना से प्रभावित हुए तथा कृपावत बने रहे हैं। स्व० ठाकुर श्री रामसिंहजी डाइरेक्टर सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीटयूट श्री नाथूरामजी खडगावत निरजननाथ आचाय (अध्यक्ष विधान सभा) सेठ श्री गोविन्ददास मालपाणी (ससद सदस्य), डा० दशरथ शर्मा मोतीलालजी मेनारिया डा० सत्येन्द्र, और श्री सत्यनारायणजी पारीक (निदेशक भारतीय विद्या मदिर शोध प्रतिष्ठान) श्री चन्द्रदानजी चारण (प्रिंसिपल) भारतीय विद्या मदिर और प० जगदीश प्रसाद जी तिवाडी

(सुपरिंटे डे ट, डाक तार विभाग, बीकानेर) श्री द्वारका प्रसादजी जोशी एडवोकेट आदि विद्वानो ने श्री सस्कर्ता को यथासमय, यथायोग्य सद्विचार प्रदान किय हैं।

दामाद



देशनोक के श्री प्रेमशकरजी मन्त्री बी ए बी एड और च्होटी के सुजानदान बारहठ दानो आपके अभिन्न मित्र हैं तथा श्री रामचद्रजी मोलकी एम ए बा एड एव स्व श्री रेंवतमलजी वशिष्ठ (प्र० श्रेणी रेल्वे गाड) इनक प्रेमी सुहृदवय रहे हैं। 'मित्रता तथा शत्रुता बराबर वाला से करें" बाल्मीकिजी क इस नीति कथन के अनुसार श्री सस्कर्ता ने ता साल्की और वशिष्ठ के परिवारा म निज सतान रत्न दन लेन का सुदढ व्यवहार भी बना लिया ह।

चिरायु कुवर कालिचरणजो वशिष्ठ

इ० सन 1976 म आप 36 वष निष्ठा श्रम लग्न एव सुदक्षता पूवक शिक्षाध्यापन करने के पश्चात सवा निवत हुए। तब ग्राम स, शिक्षा सस्था तथा गाव की अ य सस्थाओ से आपका भ य सम्मान हुआ। सन 1977 म आपके हाट अटक हा गया और फिजिशियन डा० श्री हेमच द्र सक्सेना द्वारा श्रद्धा पूवक सफल इलाज हुआ। पर तु साहित्य सजन आपका रुका नहीं और अभी तक आप साधना सलग्न है।

सन 1978 म राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर ने लकाण धणी' काव्य पर आपको दो हजार रुपयो का श्रेष्ठ राज्य पुरस्कार अपण किया और उसका सम्मानायोजन भरतपुर म सूर पचशती' के समय सन् 1979 माच म आपको बुलाकर किया गया। आप सस्कृत प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी राजस्थानी गुजराती तथा उदू के अनुभवी विद्वान है। आपकी प्रमुख रचनाएँ मातृ भूमि भापा और साहित्य से सबधित होती हैं। उनके नाम है—कळायण (पुरस्कृत), बटोही, समय वायरो दस देव म्होयो गाय पुराण बोट बावनी दस दोख दम दात राजस्थानी लोक साहित्य घर की रेल, घर की गाय, छप्पय सतसई (पुरस्कृत) साकळ सधाण लकाण धणी (पुरस्कृत), गोपीचद स्यामजा गाव गिगरथ, ढाई बिग्धा खाडे का विवाह ' उपरोक्त उल्लेखानुसार आज तक आपकी राजस्थानी और हिन्दी मे कृतियाँ प्रकाश म आ चुकी है तथा अनेक पाडुलिपिया अभी तक अप्रकाशित पडी हैं।

लेखक न बचपन म दु खद लूएँ सहन की, ईश्वर कृपाय उ ह वद्धावस्था म पारिवारिक सुखद समीर शीतलता पहुँचा रही है। वतमान समय म अनेक सुशिक्षित शिष्यगण, सेवाभावी सज्जन और पुत्र पौत्र उनकी सेवा सुश्रूषा म हैं। आपकी सतान जुगराज तीथराज, शिवराज और राजबहिन राज्य सेवा म अच्छे व्यावहारिक व सावजनिक कायरता हैं।

लेखक का परिवार (ई० सन 1968 का चित्र)



नानूराम की पूजनीय माताजी और पुत्र जगराज तीयराज शिवराज
तथा पुत्री राज बहिन संस्कर्ता

अब आप सेवानिवृत्त अध्यापक कहलाते हैं। खेड रपट" ग्रंथ हेतु आपने कठिन अनुसंधान करा एवं उसे प्रकाशित करवाने के लिए अस्वस्थ अवस्था में भी दूर-दूर की यात्राएँ की हैं। आपकी कर्मठ भावना अनुकरणीय है। आपने इस कार्य ने कालू क्षेत्र के सब नागरिकों को प्रभावित एवं गर्वोन्नत किया है।

श्री संस्कर्ता के सृजनशील स्वभाव की क्षमता दक्षता वीक्षण परीक्षण की परिधि में पूर्ण रूपेण सम्माननीय है। आपका कृतित्व कुछ और है, व्यक्तित्व कुछ और। वह साहित्यिक मना के शब्दों में प्रत्यक्षदर्शी लोकविद, सफल अध्यापक एवं कुशल कृतिकार हैं, किन्तु आप में विज्ञापन के कृत्रिम ढोंग से बिल्कुल अनभिज्ञ।

स्वभाव की पवित्रता, चित्त की सरलता, वैचारिक दृढ़ता, व्यवहारिक मृदुलता, शास्त्रीय प्रवीणता, कार्य संपादन में दक्षता, साहित्य योजना में दूरदर्शिता, लक्ष्य प्राप्ति के लिए कर्मठता और आदर्शता में उदारता स्थापन आदि सद्गुणों से युक्त मम्रना को विश्व नियंता ने एकीकृत रूप विशिष्ट व्यक्ति बनाया है।

इनका जीवन आशा, जागृति और विजय का संदेश है। वह सिद्ध करता है कि साधना के अभाव में भी व्यक्ति अपने उद्देश्यों की संपूर्ति कर सकता है। केवल दृढ़ निश्चय और कार्य करने की देर होती है। साधन और सहायक फिर आप से आप एकत्रित हो जाते हैं। अतः हम संस्कर्ता को शतजीवी होने की कामना करते हैं।

चित्रों की अनुक्रमणिका

राजस्थानी रूपाग

पलो पड़तग

दूजो पड़तग

तीजो पड़तग

चौथो पड़तग

हिन्दी विभाग—प्रथम प्रकरण

द्वितीय प्रकरण

तृतीय प्रकरण

चतुर्थ प्रकरण

पचम प्रकरण

षष्ठम प्रकरण

सातवा प्रकरण

आठवा प्रकरण

६५६२